

तमसो मा ज्योतिर्गमय

SANTINIKETAN
VISWA BHARATI
LIBRARY

18.5
N 341



श्री नेमिचंद्राय नमः ।

श्रीमन्नेमिचंद्र-सिद्धांतचक्रवर्ति-वि चित

त्रिलोकसर ।



स्वर्गीय पंडित प्रवर श्रीटोडरमल्लजीकृत
भाषा वचनिका सहित

सम्पादक और संशोधक,
पं० मनोहरलालजी शास्त्री, पाठमनिवासी ।

प्रकाशक—

हिन्दी जैनसाहित्यप्रसारक कार्यालय;
हीराबाग, पो० गिरगाँव—बम्बई ।

प्रकाशक,
बिहारीलाल कठनेरा
प्रोप्राईटर—हिन्दी जैनसाहित्यप्रसारक कार्यालय;
हीराबाग पो० गिरगाँव—बम्बई ।



मुद्रक,
मंगेश नारायण कुलकर्णी
कर्नाटक प्रेस, नं० ४३४ ठाकुरझार रोड मुंबई.

निवेदन ।

यह महान् ग्रंथ हमने स्व० पंडित-प्रवर टोडरमलजीकृत भाषा-बचनिका सहित ही छपाया है। संस्कृत टीका इसमें इस लिए नहीं दी कि वह 'माणिकचन्द्र ग्रंथमाला'में मूलसहित छप चुकी है। कुछ लोगोंकी राय है कि पुरानी भाषाके ग्रंथ वर्तमान हिन्दीमें परिवर्तित कर दिये जाने चाहिये; परन्तु हमें भाषाकारके गौरवकी रक्षा करना इष्ट था; अतएव हमने उसका परिवर्तन कराना उचित नहीं समझा।

हमारी बड़ी इच्छा थी कि इसके यंत्र-भागको ग्रंथके साथ ही लगा दिया जाता; परन्तु कुछ ऐसे कारण उपस्थित हो गये जिनसे तत्काल यंत्रोंका तैयार करवाना कठिन हो गया। यंत्रोंके तैयार करानेमें कुछ विलम्ब अवश्य होगा; परन्तु तैयार होते ही उन्हें हम सब ग्राहकोंके पास पोष्ट द्वारा भेज देंगे। हम उन सज्जनोंसे प्रार्थना करते हैं कि जिन जिनके पास यह ग्रंथ पहुँचे वे एक कार्ड द्वारा अपना पता लिख भेजनेकी कृपा करें।

इसका सम्पादन तथा संशोधन-कार्य श्रीयुत पं० मनोहरलालजी शास्त्रीने किया है। हमें जहाँ तक विश्वास है पंडितजीने अपनी जिम्मेवरीका ध्यान रख कर ही इस कार्यका सम्पादन किया है; और इस लिए दृष्टि-दोषकी साधारण भूलोंको छोड़ कर सैद्धान्तिक भूलोंका रहना बहुत कम संभव है। अतःपर भी कोई भूल रह गई हो तो उसका संशोधन कर हमें भी उसकी सूचना देनेकी कृपा करें; जिससे दूसरी आवृत्तिमें उसके संशोधनका ध्यान रक्खा जाये।

उदयलाल काशकीवाह

हमारी छपाई पुस्तकें ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—स्व० पं० सदासुखजीकृत भाषाटीकासहित । श्रावकाचारसम्बन्धी भाषा-टीकाके जितने ग्रंथ इस समय मिलते हैं, उन सबसे यह बहुत बड़ा ग्रन्थ है । यह खुले पत्रोंमें, जाड़े कागज पर, मोटे टाईपमें बड़ी सुन्दरतासे छपाया गया है । पृष्ठ संख्या ५७५ के लगभग है । मूल्य पाँच रुपया ।

पुण्यात्रव—इसमें मनोरंजक और धार्मिक भावोंसे परिपूर्ण कोई ५६ छोटी-मोटी कथायें हैं । हमने अब यह दूसरी बार छपाया है । पृष्ठसंख्या ३४० के लगभग । मूल्य तीन रुपया ।

भक्तामर कथा—(मंत्र-यंत्र-सहित) यह ग्रन्थ स्वर्गीय ब्रह्मचारी रायमल्लके बनाये भक्तामरके आधार पर बड़ी मीठी-साधी हिन्दी-भाषामें छपाया गया है । अन्तमें मंत्र, ऋद्धि और उनकी साधनविधि तथा अड़तालीस यंत्र भी दिये गये हैं । मूल्य कपड़ेकी जिल्दका एक रुपया छह आने, सादी जिल्दका एक रुपया ।

चन्द्रप्रभचरित—महाकवि—श्रीवीरनन्दी आचार्यकृत, संस्कृत जैन-काव्योंमें यह उच्च कोटीका काव्य है । इसमें आठवें तीर्थकर श्रीचंद्रप्रभ भगवानका पवित्र चरित वर्णन किया गया है । मूल्य कपड़ेकी जिल्द सवा रुपया; साधी जिल्द एक रुपया ।

नेमिपुराण—यह ब्रह्मचारी नेमिदत्तके संस्कृत नेमिपुराणका हिन्दी अनुवाद है । इसमें वावीसवें तीर्थकर नेमिनाथ भगवानका पवित्र चरित है । मूल्य कपड़ेकी जिल्द सवा दो रुपया, सादी जिल्द दो रुपया ।

सम्यक्त्वकौमुदी—यह भी कथाका एक सुन्दर ग्रन्थ है । इसमें सम्यक्त्वके प्राप्त करनेवाले, राजा उदितोदय, सुयोधन, अर्हदास, चन्दनश्री, विष्णुश्री, नागश्री, पद्मलता, कनकलता और विद्युलताकी आठ कथायें हैं । मूल्य कपड़ेकी जि० एक रुपया छः आने, सादी जि० एक रुपया दो आने ।

सुदर्शनचरित—यह सकलकीर्तिकृत संस्कृत सुदर्शन चरितका हिन्दी अनुवाद है । सुदर्शन बड़ा दृढ़-निश्चयी था, कामी स्त्रियोंके साथ अनेक प्रकारकी बुरी चेष्टायें कीं उसे शीलधर्मसे गिरानेका खूब ही प्रयत्न किया परंतु सुदर्शन अपने शीलधर्म पर सुमेरुका अचल-अडिग बना रहा । मूल्य नौ आने ।

नागकुमारचरित—पद्मभाषा कवि चक्रवर्ती मल्लिषेण सूरिके संस्कृत ग्रंथका अनुवाद । मूल्य छः आने ।

यशोधरचरित । महाकवि वादिराज सूरिके एक सुन्दर संस्कृतकाव्यका हिन्दी अनुवाद । इसमें यशोधरका सुन्दर चरित वर्णन किया गया है । पुस्तक करुण-रससे भरी हुई है । पढ़ते पढ़ते हृदय भर आता है । मूल्य मात्र चार आना ।

पवनदत्त (काव्य) कालिदासके मेघदूतके सञ्चान रचा गया है, हिन्दी भाषामें है । कीमत चार आना ।

श्रेणिकचरितसार । ब्रह्मचारी नेमिदत्तके संस्कृत श्रेणिककथासारका यह अनुवाद है । मूल्य तीन आने ।

अकलंकचरित । इसमें अकलंक-स्तोत्र और उसका भावार्थ तथा हिन्दी पद्यानुवाद भी शामिल कर दिया है । मूल्य तीन आने ।

सुकुमालचरितसार । इसके बनानेवाले ब्रह्मचारी नेमिदत्त हैं । उन्हींके ग्रन्थका यह अनुवाद है । मूल्य डेढ़ आना ।

पंचास्तिकाय-समयसार । मूलग्रन्थके बनानेवाले भगवान कुन्दकुन्दाचार्य हैं । उस पर स्व० पं० हीरानन्दजाने दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदिमें छन्दोबद्ध टीका लिखी है । कीमत एक रुपया ।

चौबीसठाणा-चर्चा—यह गोम्मतसारके आधार पर लिखी गई है । इसमें चौबीस दण्डक भी शामिल कर दिये हैं । मूल्य आठ आने ।

छहढाला—(सार्थ) स्व० पं० दौलत रामजी कृत । ब्र० शीतलप्रसादजीकृत अर्थसहित है । तीन आने ।

नियमपोथी—इसे भी ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने संग्रह किया है । मूल्य आधा आना ।

हिन्दी-भक्तामर—यह संस्कृत भक्तामरका खड़ी बोलीकी कवितामें सुन्दर अनुवाद है । मूल्य सवा आना ।

हिन्दी-कल्याणमन्दिर । भक्तामरके समान यह भी खड़ी बोलीकी कवितामें संस्कृत कल्याण मंदिरका अनुवाद है । मूल्य एक आना ।

कर्मदहन-विधान । इसमें कर्मदहन पूजा आदि सब छपे हैं । मूल्य पाँच आने ।



भाषाटीकाकार पंडितवर
टोडरमल्लजी लिखित

भूमिका

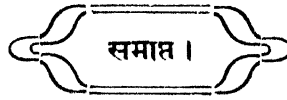


इस शास्त्रकी संस्कृत टीका पूर्वे भई है तथापि तहां संस्कृत गणितादिकका ज्ञानविना प्रवेश होइ सकता नाही । तातैं स्तोक ज्ञानवालोंके त्रिलोकके स्वरूपका ज्ञान होनेके अर्थ तिसही अर्थको भाषा करि लिखिए है । याविषै मेरा कर्तव्य इतना ही है जो क्षयोपशमके अनुसार तिस शास्त्रका अर्थको जानि धर्मानुरागतैं औरानिके जाननेके अर्थ जैसे कांज' मुखतैं अक्षर उच्चारि करि देशभाषारूप व्याख्यान करै तैसें मैं हस्ततैं अक्षरनिकी स्थापना करि लिखोंगा । बहुरि छंदनिका जोडना नवीन युक्ति अलंकारादिकका प्रगट करना इत्यादि नवीन ग्रंथकारकनिके कार्य हैं तैतौ मोतैं बनै ही नाहीं । तातैं ग्रंथका कर्तापना मेरें है नाहीं । इहां कोऊ कहै तुम तौ अमूर्ताक आत्मा हौ तुम करि लिखनेका कार्य कैसें बनैगा । ताका समाधान । मैं जु हों आत्मद्रव्य सो अनंत गुण पर्यायनिका पुंज हों तिन विषै श्रुतज्ञान अर धर्मानुराग अर शक्तिपना इन मेरे पर्यायनिके निमित्ततैं लिखनेरूप कार्य बनै है । तातैं कारणविषै कार्यका उपचार करि मैं लिखोंगा । ऐसा व्यवहार मात्र वचन जानना । निश्चय विचारतैं मैं मेरे ज्ञानादि भावनिर्हाका कर्ता हौं । लिखनेका कर्ता मैं नाहीं हौं । बहुरि प्रश्न । इनके निमित्त नैमित्तिक संबंध कैसें होइ है सो कहौ ? तहां कहिए है । मेरा ज्ञान स्वभाव है सो ज्ञानावरणके निमित्ततैं हीन होइ मतिश्रुत पर्यायरूप भया है । तहां मतिज्ञान करि शास्त्रके अक्षरनिका जानना भया । बहुरि मोहके उदयतैं मेरे आपाधिक भाव रागादिक पाईए है । तहां प्रशस्तराग करि मेरे ऐसी इच्छा भई जो शास्त्रका अर्थ भाषारूप अक्षरनि करि लिखिए तौ इस क्षेत्रकालविषै मंद बुद्धि घने है तिनका भी कल्याण होइ । अर इस कार्यको करतैं अप्रशस्त भावके अभाव करि किछु धर्म प्रवृत्ति होनेतैं मेरा भी कल्याण होइ । तातैं जैसे ताका लिखना बनै सो करना । बहुरि प्रदेशनिकों चलावनेरूप शक्तिपनां मेरे पाईए है । तहां तिस इच्छाके वशतैं जैसे तिस कार्यकी सिद्धि होइ । तैसें मैं मेरे प्रदेशनिकों चंचल करौं हौं । ऐसे इतने पर्याय तौ मेरें होइ हैं । बहुरि पुद्गल द्रव्य भी सक्रिय है । अर शरीर है सो पुद्गलपरमाणुनिका पिंड है । अर नामकर्मके निमित्ततैं शरीरके अर मेरें एक बंधान है । तातैं मेरे प्रदेश चंचल होनेतैं तिनकी साथि हस्तादिक शरीरके अंग भी चंचल हो हैं । बहुरि हस्तादि अंगकरि प्रेरे हुए लेखनी आदि पुद्गल रंक्ष हैं ते जैसे अक्षर लिखे जांय तैसे क्रियावान् होइ प्रवतैं । तव अक्षरनिका आकार पत्रादि विषै स्थापन हो है । ऐसें यहू निमित्त नैमित्तिक संबंध जाननां । ऐसें ही

अन्यकार्यनि विषै भी यथासंभव निमित्त नैमित्तिक संबंध जानने । यथार्थ आपा परका भेद विज्ञान हो है । सो इहां लिखनेका कार्य विषै मेरे ज्ञानादि पर्याय कारण भए । बहुरि व्यवहार विषै कारण कार्यके संबंध जानि परस्पर उपचार करिए है । तातैं व्यवहार करि जैसे घटकी कर्ता कुंभकार कहिए है तैसें मोकों लिखनेका कर्तापना जानना । निश्चय करि लिखना आदि कार्य हैं ते पुद्रलके हैं मेरे नाही । तातैं इस शास्त्रविषै कर्तापुनेको लीएं अहंकार मेरे नाही है । बहुरि इहां कोई पूछे है कि इस कार्य होने विषै अपना अर अन्य जीवनिका कल्यानके आर्थ तुमारे इच्छा भई सो कल्यान तौ धर्म साधनतैं होइ सो इस शास्त्रविषै कोई निश्चय व्यवहाररूप धर्मका तौ निरूपण है नाही । या विषै तौ क्षेत्रादिकका प्रमाण वा स्थाननिका आकार वा नारकादि जीवनिका आयु काय इत्यादि निरूपण है ताकरि धर्म साधना कैसें होइ ? ताका उत्तर । मोक्षके कारण सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र धर्म हैं । तहां सम्यक्त प्रथम धर्म है सो सम्यक्तकी प्राप्ति संशय दूरि भए होइ । सो त्रिलोकका स्वरूप जानें अधो मध्य ऊर्द्ध विषै जे जे जीव जिन स्थाननि विषै जैसे जैसे पाईए हैं वा जैसी जैसी लोक विषै रचना है सो सर्व जानें तत्र संदेह न रहै । बहुरि अन्यवादी लोकका स्वरूप कल्पित वर्णन करैं हैं । लोकका कर्ता ईश्वरकों वा ब्रह्माकों बतावैं हैं बहुरि लोकका स्वरूप पुरुपाकार कहै है । बहुरि लोक रचना विषै काछिवाकी पीठि ऊपर आठ हस्ती बतावैं हैं । शेषनागकों बतावैं हैं ता ऊपर पृथ्वी बतावैं हैं । ताका प्रमाण तुच्छ कहैं हैं । ताविषै सात द्वीप सात समुद्र कहैं हैं । तहां जंबूद्वीप विषै नवखंड औरनिविषै सात खंड बतावैं हैं । बहुरि जंबूद्वीपके बीचि मेरुगिरि कहैं हैं । ताकी दशौंदिशानि विषै दश दिक्पालनिकी नगरी बतावैं हैं । तहां यमकी नगरी त्रिषै चउथीस नरक कुंड बतावैं हैं । तहां जीव मरि करि जाय है । तत्र उनका न्याय करना कहैं हैं । बहुरि अन्न जल अग्न्यादिककी नगरी कहैं हैं । बहुरि ज्योतिर्लोक विषै ऋषिनिका वा भक्तनिका स्थान कहैं है । बहुरि उपरि वैकुण्ठ धाम बतावैं हैं । इत्यादि रचनाके विशेष उनके शास्त्रनि विषै लिखे हैं । सो जिनमत विषै कहा त्रिलोकका जानें ते अन्यमतका कहा लोकका वा पुन्य पाप रूप आश्रव वंधके फल नर्क स्वर्गादि कहे तिनका विशेषकों जानें वा तिनके अभावतैं संवर निर्जरा होइ ताका फल मोक्ष हो है । ताका स्थानादि विशेषकों जानें तौ तत्र श्रद्धान विषै संशय रहै नाही तत्र सम्यक श्रद्धान दृढ होइ । बहुरि दूसरा सम्यग्ज्ञान धर्म है सो इस शास्त्रका अभ्यास करनेतैं मिथ्यात्वकी वा कषायनिकी वा हिंसादि पापनिकी वृद्धि न हो है, हानि ही हो है । तातैं याका अभ्यास आप ही सम्यग्ज्ञान रूप है । बहुरि तीसरा सम्यक चारित्र धर्म है सो सराग वीतराग भेदकों लीएं है सो अशुभ प्रवृत्ति छूटि शुभ प्रवृत्ति भए सराग चारित्र हो हैं । सो इस शास्त्रतैं अशुभका फल नरकादिक जानें । शुभका फल स्वर्गादिक जानें तौ हिंसादि पापकों छोडि व्रतादि शुभ विषै प्रवर्तैं । बहुरि राग द्वेष जातैं उपजैं ऐसा विचार दूरि भए वीतराग चारित्र हो है । सो लोकका स्वरूपका विचार करतैं किछू इस पर्याय संबधी प्रयोजन नाही । अर विना प्रयोजन राग द्वेष काहेकों उपजैं तातैं वीतराग भाव स्वयमेव ही होइ । इहां कोऊ कहै इतना विकल्प लीएं वीतरागता कैसें रहै ? ताका उत्तर । जड भए

धेकल्प दूरि होइ । ज्ञानका स्वरूप तौ सविकल्प ही है । काहू ज्ञेयकों जानेहीगा तातैं ज्ञेय जाननेके विकल्पतैं वीतरागताका अभाव न हो है । जिसतैं राग द्वेष उपजै ऐसे विकल्पनितैं वीतरागताका अभाव हो है । ऐसैं इस शास्त्रतैं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र धर्मकी प्राप्ति हो है । तिसतैं जीवका कल्याण हो है । तातैं याकों लिखनेकी इच्छा भई है । ऐसैं इहां प्रश्न उत्तरका प्रयोजन यहू है । इस शास्त्रके अभ्यासकों कार्यकारी जानि याका पठना वाचना सीखनां सुननां इत्यादि अभ्यास विषैं तत्पर रहना योग्य है । बहुरि इहां कोऊ कहै तुहारी बुद्धि तौ हीन है ऐसे गंभीर शास्त्रकी टीका कैसे करौगे । ताका उत्तर । मूल शास्त्र कर्तातैं टीकाकारकी बुद्धि हीन होय ही है । परंतु सर्व टीकाकार अपनी बुद्धि अनुसार टीका करैं हैं तैसैं मैं भी अपनी बुद्धि अनुसार टीका करौंगा । बहुरि कोऊ कहै कहीं चूकौंगे तौ दोष लागैगा । ताका उत्तर । जैसे यत्नाचारी मुनिकें प्रमत्त योग विना हिंसा होतैं भी दोष नाही लागै है तैसैं जिन आज्ञाकों प्रमाण करनेहाराकैं विपरीत अभिप्राय विना कोऊ सूक्ष्म अर्थ विषैं अन्यथापना होतैं भी दोष नाही लागै है । ऐसैं विचार करि टीकाका प्रारंभ करौं हों । इस श्रीमत् त्रिलोकसार नाम शास्त्रके सूत्र नेमिचंद्रनामा सिद्धांत चक्रवर्ती करि विरचित हैं । तिनकी संस्कृत टीकाका अनुसार लेइ इस भाषा टीका विषैं अर्थ लिखौंगा । कहीं कोई अर्थ न भासैगा ताकों न लिखौंगा । कहीं समझनेके अर्थ वधाय करि लिखौंगा । ऐसैं यहू टीका बनेगी ता विषैं जहां चूक जानों तहां बुध जन संवारि शुद्ध करियो । छदमस्थकें ज्ञान सावर्ण हो है तातैं चूक भी परै । जैसे जाको थोरा सूझै अर वह कहीं विषम मार्ग विषै स्वल्पित होइ तौ बहुत सूझनेवाला वाकी हास्य न करै । दयालु होइ तिस अर्थकों शुद्ध ही करौंगे । बहुरि वाल स्वभावी हास्य करौ तौ करौ । प्रयोजन वाला तौ क्रिया करैहीगा । उनके भयतैं अपना कार्य करनां छोरैं नाही । ऐसे विचारतैं इस टीका करने विषैं भेरैं उत्साह ही वर्तै है । अब इस शास्त्रके वक्ता श्रोता कैसे चहिए सो कहिए है । प्रथम तौ जिन वचनके श्रद्धानी होंहि । जो श्रद्धानी न होहि तौ प्रत्यक्ष अनुमानतैं अगोचर त्रिलोकका स्वरूप ताकों सत्य कैसे जानें । बहुरि धर्म बुद्धि होहि । जो धर्म बुद्धि न होहि तौ शारीरक प्रयोजन तौ यामें किछू है नाही काहेकों या विषैं लगै । अर जो पांडित्य प्रगट करनेकों लागै तौ कषाय भावतैं उलटा बुरा हो है । बहुरि गणितादि ज्ञान सहित होइ जो ऐसे न होइ तौ इस ग्रंथका अर्थ पर्याय न भासै । बहुरि प्रश्न उत्तर करिकैं कथनका निर्णय करि तत्त्वज्ञान दृढ करनेहीका अभिप्राय जिनके होइ कोई वादादिकका अभिप्राय न होइ ऐसे होंहि । जो ऐसैं न होइ तौ ग्रंथ अभ्यासका फल उपयोग निर्मल करना ताकों न पावैं । बहुरि क्षमा संतोष न्याय प्रवृत्ति आदि गुण सहित होहि । जो ऐसे न होंहि तौ शोभा न पावैं । इत्यादि गुण सहित वक्ता श्रोता जाननें । बहुरि कोऊ कहै इस शास्त्रकी प्रमाणता कैसे करिए । ताका समाधान । संभवद्वाधक प्रमाणके अभावतैं याकों प्रमाण करिए । जिस अर्थका निषेध करण हारो कोई प्रमाण संभवता होइ ताका नाम संभवद्वाधक प्रमाण है । सो इस शास्त्र विषैं जो व्याख्यान है सो कोई प्रमाण करि विरुद्ध न भासै है । तातैं याका प्रमाण कीजिए है । बहुरि प्रश्न जो कीया कि प्रमाणता किस प्रमाण करि होइ ।

ताका उत्तर—जो अर्थ प्रत्यक्ष अनुमान गोचर होइ ताको तौ प्रत्यक्ष अनुमान करि प्रमाण करनां । बहुरि जो प्रत्यक्ष अनुमानतैं अगोचर होइ ताको आगम प्रमाण करि मानना । कोऊ कहै है कि अन्यमतके आगम अप्रमाण तुम्हारा आगम प्रमाण ऐसा कैसे मानिए ? ताका उत्तर । आगम विषै केई अर्थ प्रत्यक्ष अनुमान गोचर हैं केई अगोचर हैं । तहां प्रत्यक्ष अनुमान गोचर अर्थ करि आगमकी परीक्षा करनी । जिस मतके आगम विषै प्रत्यक्ष अनुमान गोचर ही अर्थ विरुद्ध भासै तौ तिसका कह्या अगोचर अर्थ कैसे प्रमाण करिए । अर जिस मतका आगम विषै प्रत्यक्ष अनुमान गोचर अर्थ सत्य ही कहै भासै तौ तिसका कह्या अगोचर अर्थ भी सत्य ही होसी सो ऐसै परीक्षा कीए अन्यमतके आगम अप्रमाण जैनमतके प्रमाण प्रतिभासै हैं । सो यहू शास्त्र जैनमतका आगम है तातैं प्रमाण है । या प्रकार इस शास्त्रको फलदायक जानि वक्ता श्रोताका लक्षण युक्त होइ वांचो सुनो अर प्रमाणीक जानि याका श्रद्धान करो । याके अभ्यासतैं तत्त्व श्रद्धानी होइ तत्त्व-ज्ञानको वधाइ रागादिकको घटाइ मोक्षमार्गी होऊ । बहुरि तिस साधनतैं तुम्हारे निरुपाधि आत्म-स्वभावकी सिद्धि है लक्षण जाका ऐसा सिद्ध अवस्था प्रगट होऊ ।



त्रिलोकसारकी विषयसूची ।

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
लोकसामान्याधिकार ॥ १ ॥			
मूल शास्त्रविषयै मंगलाचरण करि	२	गिक अर्द्धछेदादिके विधानके जाननेको करण सूत्र कहे हैं ।	५१
तहां पंच अधिकारनिकी सूचना करि	४	लोकके व्यासादिकका अर जहां जितना व्यास पाईए ताका वर्णन	५३
सर्व आकाशविषयै लोकाकाशका वर्णन करि लोक- का स्वरूप आकार	५	अधोलोकका आठ प्रकार करि ऊर्द्ध लोकका पांच प्रकार करि क्षेत्रफलका वर्णन है	५५
तहां प्रसंग पाइ राजू आदिका वर्णन	६	तहां चतुरघ्वादि क्षेत्रके क्षेत्रफल करनेका विधान वर्णन है	५६
मानका वर्णन है तहां ताके लौकिक अलौकिक मेदनिके मेद कहि	७	बहुरि लोकका परिधिका वर्णन है तहां करणा- दिक जाननेके करण सूत्र है	६२
अलौकिक मानविषयै संख्यामानके जघन्य संख्या- तादिक इकईस मेदनिका वर्णन	८	बहुरि वानवलयनिका वर्णन है । तहां तिनके वर्णादिकका अर तिनकी जहां जैसी मुटाई है ताका अर इनकरि जेता क्षेत्र रोक्या है ताका वर्णन है	६३
तहां जघन्य परीत असंख्याताका ल्यावनेको कुंडनिका क्षेत्रफल	९	बहुरि तनुवातवलयमें सिद्ध विराजे हैं तिनकी अवगाहनाका वर्णन है	७१
तहां सरसोंका प्रमाण कहनेको खात क्षेत्रफल ...	११	बहुरि त्रसनालीके स्वरूप स्थान प्रमाणादिका वर्णन बहुरि ताके अधो भागविषयै सात पृथ्वी हैं तिनके नामका	७२
सूची क्षेत्रफलसरसोंनिका वेध इत्यादिकों कारण करणसूत्र	१२	अर तहां पहली पृथ्वी विषयै तीन भाग हैं तिनके नाम अर मुटाईके प्रमाणका अर पहला भाग विषयै सोलह पृथ्वी हैं तिनके नामका अर तीनों भागनि विषयै जे वर्से है तिनका अर छह पृथ्वीनिकी मोटाईका वर्णन है... ..	७४
श्रुत ज्ञानादिकके विषयनिका प्रमाणका वर्णन... संख्यामानके विशेष लीणं सर्वधारा आदि चौद- ह धारानिका वर्णन । तहां तिनके स्थाननिका अ- नुक्रमका अर जिस धाराका स्थानविषयै जाका प्रमाण आवै ताका अर सर्व स्थाननिके प्रमाण वर्णन तिन विषयै द्विरूप वर्ग आदि तीन धारा है तिनके स्थाननिका विशेष वर्णन है	२३	बहुरि पहली पृथ्वीका तृतीय भाग अर छह नीचली पृथ्वीनि विषयै नारकनिके विल है । तहां तिन पृथ्वीनि विषयै पटलनिकी वा विलनिकी वा तहां शीत उष्ण विलनिकी वा इन्द्रकादिक विल- निकी संख्याका वर्णन है	७५
तहां द्विरूप वर्गधाराका कथनके अनंतरि अर्द्ध- छेद वर्ग शलाका जाननेके करण सूत्र	३५	बहुरि इन्द्रक विलनिके अर तिनके समीप श्रेणी- बद्ध हैं तिनके नामका वर्णन है	७७
अर द्विरूप घनाघन धारा विषयै अमिकायिक जीवनिका प्रमाण विशेष करि कह्या है	३८	बहुरि श्रेणीबद्धनिकी संख्या ल्यावनेका विधान है । तहां समान चयकरि वधता गच्छका जोड देनेका वा पृथ्वीनि विषयै इन्द्रकनिकी संख्या ल्यावनेका कारण सूत्र कहे हैं	८०
उपमा मानके पल्यादिक आठ मेदनिका वर्णन ...	४२	बहुरि प्रकीर्णकनिकी संख्याका वर्णन है । बहुरि विलनिका विस्तार अर वाहुल्य अर अंतरालका वर्णन है ।	८१
तहां पल्यके रोमानिकी संख्या जाननेको सूक्ष्म खात फल करनेके करण सूत्रका अर रोम अंगुला- दिकका प्रमाणकी उत्पत्तिका अनुक्रमका वर्णन है	४३		
अक्षर संज्ञाकरि अंक जाननेका उक्तंच सूत्र भाषा विषयै कह्या है ।	४५		
सागरोपमकूं सार्थक कहनेके अर्थ लवण समुद्र- का क्षेत्र फलादिकका वर्णन है ।	४७		
सूच्यंगुलादिकका वर्णन है ।	४९		
पल्यादिककी वर्ग शलाका अर अर्द्धछेदके प्रमा- णका वर्णन । तहां तिनके जाननेको वा प्रासं-			

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
बहुरि पृथ्वीनिका अंत आदि पटलनिका अंतराल अरविलनिका तिर्यक अंतराल अर आकारादिक तिनका वर्णन है ८५	८५	बहुरि भवन वासी व्यंतरनिका आयुका वर्णन बहुरि भवनवासीनिके कुलभेदविषै अर तिनकी देवी अर तिनके अंगरक्षादिक तिनके आयुका विशेष कह्या है । ११०	१०९
बहुरि तहां दुर्गधताका अर उपजनेके स्थानका अर तिन स्थाननिके प्रमाणका अर उपजनेका स्वरूपका अर तहांते पडि उछलनेके प्रमाणका अर नवीन पुराण नारकीनिका कर्तव्यका अर तिन विलनि विषै क्रूर पर्वत नदी आदि पाइए है तिनका अर तहां नारकीनिकी प्रवर्तिका अर बाह्य दुःख साधनका अर तिनके दुःखका अर तिनके आहारादिकका अर तीर्थकर सत्त्ववालाकें तहां जब दुःख निवारण हो है ताका अर नारकीनके मरणका वा दुःख मेदनिका वर्णन है ।	८७	अर तिन कुलनिविषै उश्वास आहारका अनुक्रम अर तिनके शरीरकी उचाईका वर्णन है । ... १११	११०
बहुरि पृथ्वी प्रति वा तिनके पटल पटल प्रति नारकीनका जघन्य उत्कृष्ट आयुका अर शरीरकी उचाईका वर्णन है । ९२	९२	व्यंतरलोकका अधिकार ॥ ३ ॥	
बहुरि नारकीनके अवधि क्षेत्रका अर नारकी निकसि जहां उपजै अर जे पद न पावै ताका अर जे जीव जिस पृथ्वी ताई उपजै ताका अर तिनके दुःखकी अधिकताका वर्णन है ...	९३	तहां तिनकर प्रमाण करि गर्भित मंगल करि तिनके कुलनिका अर तिन कुल भेदनि विषै वर्णका अर चैत्य वृक्षकर अर तहां प्रतिमा मानस्तंभादिका वर्णन है । ११३	११३
ऐसैं नरक वर्णन करि लोकका सामान्य वर्णन समाप्त कीया है । ९८	९८	बहुरि तिनके कुल भेदनि विषै भेद पाइए हैं तिनका अर कुलनिके इंद्र हैं तिनकी देवीनिके प्रमाणका अर कुलभेदनिविषै भेद हैं अर तिन विषै जे इंद्र अर इंद्रनिकी महादेवी हैं तिनके नामका वर्णन है । ११५	११३
भवनाधिकार ॥ २ ॥		बहुरि इंद्रनिके जुदे नाम कहि तिनकें गणिका महत्तरी हैं तिनके नामका अर सामानिकादि देव-निकी संख्याका तहां अनीकके विशेषका वर्णन है	११६
तहां मंगल करि भवनवासीनिके कुल भेदनिके नामका अर तिनके इंद्रनिके नामका अर परस्पर ईर्षा जिनकें है ताका अर अमुरादिकनिके जे चिन्ह हैं तिनका अर चैत्यवृक्षनिके भेदनिका वा तहां प्रतिमा मानस्तंभादिकका अर तिनके भवननिकी संख्याका व स्वरूपका व स्थानका वर्णन है । ९९	९९	बहुरि इंद्रनिके नगरनिका स्थान नाम आयामका अर तिनके कोटादिकका वर्णन है । ... १२१	११६
बहुरि देवनिके इंद्रादिक दश भेद हैं तिनका अर तिनके संभवनेका वर्णन है । बहुरि भवनवासी-निविषै इंद्रादिक दशभेद पाइए हैं तिनकी संख्या-दिकका वर्णन है । १०३	१०३	अर गणिकानिके नगरनिका अर कुल भेद अपेक्षा स्थाननिका वर्णन है । १२२	१२१
तहां सेनाकी संख्या ल्यावनेको गुणकाररूप जो स्थान तिनके जोड़ देंनेका करणसूत्र कह्या है ।	१०६	बहुरि नीचोपपादादि वान व्यंतरनिका स्थान नाम आयुका वर्णन है । १२३	१२२
बहुरि इंद्रनिके वा अन्य देवनिका प्रमाणादिका वर्णन है । १०७	१०७	बहुरि व्यंतरनिके रहनेके निलय तिनके भेदका अर व्यंतरनिके सर्व क्षेत्रका अर ते निलय जैसे पाइए है ताका अर निलयनिके व्यासादिकका वा स्वरूपका अर व्यंतरनिके आहार उश्वासका वर्णन है । १२४	१२३
		ऐसैं द्वितीय अधिकार समाप्त हो है । ... १२६	१२४
		ज्योतिष्कोकाधिकार ॥ ४ ॥	
		तहां ज्योतिष्क विवनिका प्रमाण गर्भित मंगल करि ज्योतिष्कनिके पंच भेद कहि प्रसंग पाइ तिनके आधार भूत केते इक द्वीप समुद्रनिके नाम कहि सर्व द्वीपसमुद्रनिके बलयव्यास सूची-व्यास ल्यावनेके विधान वा प्रमाणका अर तिनकी वादर सूक्ष्म परिधि अर वादर सूक्ष्म	१२६

विषय.	पृष्ठ.
क्षेत्रफल ल्यावनेका विधान प्रमाणादिकका वा जंबूद्वीप समान औरनिके खंड प्रमाण ल्यावनेके विधानका वा समुद्रनिके रसादिक विशेषका अर तिन विषै भोगभूमि कर्मभूमि क्षेत्रके विधानका अर कर्म भूमिविषै उत्कृष्ट अवगाहना लीएं एकेंद्रियादिक जीवनिके प्रमाणादिकका इत्यादि वर्णन है ।	१२७
बहुरि प्रसंग पाइ पृथ्वीकायादिकका आयु वा वेदनिका वर्णन है । ऐसै प्रासंगिक वर्णन है । ...	१३७
ऐसै प्रासंगिक वर्णन करि ज्योतिष्कनिका स्थानका अर तारानिका अंतरालका अर बिंबनिके स्वरूपका अर चौडाई मोटाईके प्रमाणका अर किरणनिके प्रमाणका चंद्रमाकी वृद्धिहानि होनेके विशेषका बिंबनिके चलावने वाले देवनिके प्रमाणका गमन करनेके विशेषका जंबूद्वीपादि विषै तिनके प्रमाणका वर्णन है । ...	१४१
तहां प्रसंग पाइ राजुके अद्धेद पडनेके स्थान कहि सर्व ज्योतिष्कनिका प्रमाणका वर्णन है ...	१४९
बहुरि एकचन्द्रमाके परिवारका प्रमाणका अठ्यासीग्रहनिका नामका जंबूद्वीपके तारानिके विभागका चन्द्रमा सूर्यका अंतराल वा चारक्षेत्रका अर दिन रात्रिके प्रमाण ल्यावनेके विधानका तहां ताप तम फलनेका वा सूर्य दीखनेका इत्यादि अनेक वर्णन है । ...	१५८
बहुरि चन्द्रमा सूर्य ग्रहनिके नक्षत्र भुक्ति ल्यावनेका विधान अर अयन तिथि मासादिकका विधान अर नक्षत्रनिके तारा आकारादिक तिनका वर्णन है	१८३
बहुरि चंद्रमादिकके आयुका अर देवीनिका वर्णन है	२०२
बहुरि भवनत्रिक विषै उपजनेवाले जीवनिका वर्णन है ऐसै तृतीय अध्याय समाप्त हो है ...	२०४
वैमानिक लोकका वर्णन ॥ ५ ॥	
तहां मंगल करि स्वर्गादिकके नाम वा स्थान अर तहां विमाननिकी संख्या वा नाम स्थान वा तिनका विस्तारादिकका प्रमाण वर्ण आधार अर इन्द्रनिका स्थान वा चिह्न अर इंद्रनिका नगर आवासादिक अर इन्द्रनिके सामान्यादि देवनिका प्रमाण अर नगर विषै रचना विशेष अर इंद्रादिककी देवी आदिका प्रमाणादिक अर इंद्रनिका आस्थान मंडप मानस्तंभादिक अर इंद्र वा	

विषय.	पृष्ठ.
देवांगनाके उपजनेके स्थान अर वैमानिकनिके प्रवीचार विक्रिया अवधिज्ञान अंतराल अर तहां उपजनेवाले जीव अर तिनका आयु । अर लौकांतिक देवनिका स्थान कुलादिक अर देवीनिका आयु देवनिके शरीर उश्वास आहारादिकका प्रमाण अर स्वर्ग जाने आवनेवाले जीव एका भवतारी जीव शलाका पुरुषनिकी आगति देवनिके उपजने रहनेका विधान बहुरि सिद्धनिका स्थान स्वरूप इत्यादि अनेक वर्णन है । ...	२०५
मनुष्य तिर्यग्लोकका अधिकार ॥ ६ ॥	
तहां मंगल करि पंच मेहनिका स्थान कहि भरतादि क्षेत्र अर हिमवत् आदि कुलाचल अर कुलाचलानिके उपरि द्रह द्रहनिविषै कमल, कमलनिके उपरि मंदिरनिविषै परिवारसहित वसती देवी अर द्रहनितै निकसी गंगादि नदी अर नदीके पडनेके कुंड अर नदीनिका गमन अर समुद्रविषै प्रवेश द्वारादिक तिनका स्वरूप स्थानादिकका वर्णन है । ...	२४३
बहुरि क्षेत्र कुलाचलानिका प्रमाण ल्यावनेका विधान कहि अर मेरुगिरि अर ताके वन अर वननिविषै मंदिरादिक तिनके प्रमाण स्वरूपादिकका वर्णन है । ...	२५६
बहुरि परिवार सहित जंबू आदि दश वृक्षनिका स्थान स्वरूपादिकका वर्णन है । ...	२६९
बहुरि भोग भूमि कर्मभूमिक विभाग अर यमक गिरि अर सीता सीतोदा विषै पाईए है वीस द्रह अर तिनके निकटि कांचन गिरि अर दिग्गज पर्वत गजदंत पर्वतनिका वर्णन है । ...	२७२
बहुरि विदेह क्षेत्रके देशनिका विभाग अर बक्षार गिरि विभंगा नदी देवारण्य वन तिनका वर्णन	२७६
बहुरि विदेह क्षेत्रनि विषै ग्रामादिक अर उप समुद्र अर मागधादि तीन देव अर तहां वर्षादिक प्रवृत्ति अर तीर्थकरादि होनेकी संख्याका वर्णन है ।	२७९
बहुरि प्रसंग पाइ चक्रवर्ति वा राजादिक वा तीर्थकरकी विभूतिका वर्णन है ...	२८१
बहुरि विदेह देशनिके नाम अर तिन विषै पाईए हैं षट खंड अर विजयाद्वी अर नदी तिनका स्थानादिकका वर्णन है । ...	२८३

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
बहुरि विजयाद्वकी श्रेणी विषे नगरादिक हे अर म्लेच्छ खंड विषे त्रपभाचल है । अर आर्य खंड विषे राजधानीके नगर हैं । बहुरि भोग भूमि विषे तिष्ठते नाभिगिरिनका स्थान प्रमाणादिक अर कुलाचलनिके कूट वा वनादिक तिनका वर्णन बहुरि जंबू द्वीप विषे पर्वत नदीनिकी संख्या वा तिनकी वेदीनिकी संख्याका वर्णन है । बहुरि भरत ऐरावतका विजयाद्वके कूट अर गजदंतनिके कूट अर वक्षार गिरिनके कूट तिनका नाम प्रमाण स्थानादिक अर तिन कूटनि उपरि वसै है तिनके नामादिक तिनका वर्णन है । ...	२८५	पलटै है ताका वर्णन है ३२०	३२०
बहुरि गंगादि नदीनिकी परिवार नदी अर सर्व नदीनिका प्रमाण वर्णन है ।	२९९	बहुरि द्वीप समुद्रनिका अंत विषे चौगिरिद वेदी है ताका वर्णन है । ऐसै जंबूद्वीपका वर्णन पीछे लवण समुद्रका वर्णन है ।	३४६
बहुरि पूर्व पश्चिम अपेक्षा मेरु आदिका व्यास वर्णन बहुरि धातुकी खंड पुष्कराद्व विषे मेरु भद्रशाल विदेह देश गजदंत हैं तिनके व्यासादिकका वर्णन है	३००	तहां ताके अभ्यंतर पाताल है तिनका अर ताके जलकी उचाईका वधने घटनेका अर ताके व्यासका अर ताका जलके अर चंद्रमा सूर्यके अंतरालादिकका अर पातालनिके अंतरालका अर तिस समुद्रविषे वेलंघर नागकुमार वसै हैं तिनका अर पर्वतादिक हैं अर तिन विषे देव वसै हैं तिनका अर द्वीप है तिन विषे वेलंघर नागकुमार वसै हैं तिनका अर तीन द्वीप हैं तिन विषे मागधादि देव वसै हैं तिनका अर द्वीपनिविषे कुभोगभूमियां वसै हैं तिनका स्थान नाम प्रमाणादिकका वर्णन है ।	३४९
बहुरि जंबूद्वीपविषे देवकुरु उत्तरकुरु अर कुलाचल अर क्षेत्र अर भरत ऐरावत संबंधी विजयाद्वे तिनका धनुः पृष्ठ वाण जीवा वृत्त विष्कंभ चूलिका पार्श्व भुजाका प्रमाण वर्णन है । ...	३०१	बहुरि धातकी खंड पुष्कराद्वका वर्णन है तहां च्यारि इक्ष्वाकार पर्वतनिका अर तहां पाईए है कुलाचल आदि तिनके प्रमाणका अर कुलाचल क्षेत्रनिके आकारका अर तिन द्वीपनिका परिधिका प्रमाण ल्याय कुलाचल क्षेत्रनिके व्यासका अर विदेह देशादिकके आयामका अर कुरु वृक्ष अर नदीनिका गमन विशेष है ताका वर्णन है । ...	३५२
तहां अनेक प्रकार जीवादिल्यावनेके करण सूत्रनिका वर्णन है ।	३०३	बहुरि मानुषोत्तर पर्वतके प्रमाणादिकका अर ताके उपरि कूट है तहां देवादि वसै हैं तिनका वर्णन है	३७३
बहुरि भरत ऐरावत क्षेत्र विषे कालादिक पलटनि हो है । अर तहां जैसे प्रवृत्ति हो है ताका वर्णन तहां इस भरत क्षेत्र विषे इस अवसर्पिणी काल विषे चौदह कुल कर चौबीस तीर्थकर वारह चक्रवर्ति नव नारायण प्रतिनारायण बलभद्र ग्यारह रुद्र भए तिनिका नाम आयु आदिकका अर ए कब भए ताका अर तीर्थकरका वंश वर्णका अर दुखमाकाल विषे शक अर कल्की हो है ताका अर आदि अंतके कल्कीका कर्तव्यका अर दुखमा कालके अंति धर्मादि नाश होनेका अर दुखमदुखमा कालकी प्रवृत्तिका अर ताके अंति प्रलय होनेका तहां केई युगल वचनेका अर बहुरि दुखमाकाल होइ ताके अंति चौदह कुलकरिनिका अर दुखम सुखमा काल विषे तीर्थकर चक्रवर्ति नारायण प्रतिनारायण बलभद्र होसी तिनके नामादिकका अर जहां काल जैसा अवस्थित है अर म्लेच्छ खंडादि विषे जैसे काल	३०५	बहुरि कुंडलगिरि रुचक गिरिका स्थान प्रमाणादिकका अर तिनके उपरि कूट है तिन विषे जे वसै हैं तिनका वर्णन है ।	३७४
	३१६	बहुरि द्वीपसमुद्रनिके स्वामीनिका वर्णन है ...	३८०
		बहुरि नंदीश्वर दीप विषे वावन पर्वत तिन उपरि चैत्यालय अर सोलह वावड़ी चौसठि बन हैं । तिनका स्थान प्रमाणादिकका वर्णन है । तहां अष्टाहिक पर्वका महोत्सव देव करै हैं ताका अर चैत्यालयनिके जघन्यादि प्रमाणका अर चैत्यालयनि विषे अनेक रचना है ताका अर जिन बिंबके स्वरूपका वर्णन है ।	३८०
		बहुरि अंतमंगल करि कर्ता अपनां नाम सूचन करि पंच परम गुरुतै अभीष्ट फल कीया वाकरि ग्रंथ समाप्त हो है ।	३९३
		बहुरि अंतविषे केई समाचार कहि ग्रंथ पूर्ण । ऐसै इस शास्त्र विषे वर्णन है ।	३९४

त्रिलोकसारका परिशीष्ट ।

अब इस ग्रंथके अर्थ जाननेको गणितका ज्ञान अवश्य चाहिए । जातेँ यहू करणानुयोग-रूप शास्त्र है, या विपैँ जहां तहां गणितका प्रयोजन पाईए है । तातेँ पहलैँ गणित शास्त्रनिका अभ्यास करनां । सर्व शास्त्रनिका ज्ञान होनेको कारणभूत दोय विद्या है । एक अक्षरविद्या एक अंकविद्या । सो व्याकरणादि करि अक्षर ज्ञान भए अर गणितशास्त्रनि करि अंकज्ञान भए अन्य शास्त्रनिका अभ्यास सुगम हो है । पहले श्रीऋषभदेवजी एक पुत्रीको अक्षरविद्या एक पुत्रीको अंकविद्या सिखाई । सो दोऊ ही विद्या कार्यकारी हैं । तहां जे तुच्छबुद्धी व्याकरणादि ज्ञानरहित हैं तिनके अर्थि यहू भाषा रचना करी । अब इस विपैँ जे जीव गणितज्ञानरहित हैं तिनके अर्थि इहां प्रयोजनमात्र शास्त्रोक्त गणित विधान वर्णन करिए हैं । बहुरि अन्य शास्त्र-नितैँ विशेष जाननां । तहां एकादिक गणनां अर तिनके अंक मांडनेका विधान प्रवृत्ति विपैँ प्रसिद्ध है सो सीखलेनां । बहुरि प्रवृत्ति विपैँ पहले अंकका नाम इकवाई दूसरे अंकका नाम दाहाकी तृतीयादि अंकनिका नाम सैंकडा हजार दशहजार लाख दशलख कोडि कहिए है । संस्कृत विपैँ इनका नाम एक दश शत सहस्र अयुत लक्ष दशलक्ष कोटि ऐसे नाम हैं । बहुरि याके उपरि दशकोडी शतकोडि सहस्रकोडि इत्यादि नाम जोडिलेनैँ । बहुरि अंकनिका वाई तरफसौं गति हैं । तातेँ इकवाईका अंक लिख ताके पीछे पीछे दाहाकी आदिकके अंक लिखनें । जैसेँ दोयसैँ छप्पन लिखनें होइ तहां इकवाईका छक्का लिखना ताके पीछे दाहाकीका पांचा अर ताके पीछे सैंकडाका दूवा लिखनां । बहुरि तहां छक्काको पहला अंक कहिए पांचको बूसरा अंक कहिए दूवाको अंतका अंक कहिए ऐसैँ परिपाटी जाननी । बहुरि परिकर्माष्टकको सीखना । सो संकलन १ व्यवकलन १ गुणकार १ भागहार १ वर्ग १ वर्गमूल १ घन १ घनमूल इनको परिकर्माष्टक कहिए है । तहां प्रवृत्ति विपैँ जाका नाम जोड देनां है ताका नाम इहां संकलन जाननां । जाको जोडिए ताका नाम धनराशि कहिए, जाविपैँ जोडिए सो मूटराशि जाननां । सो मूटराशिको धनराशितैँ अधिक कहिए । बहुरि मूल राशिके उपरि धनराशि लिखिए जैसेँ पांच अधिक पिचाणत्रैँ ऐसैँ लिखिए ५३ तहां मूटराशि धनराशिके अंकनिको यथास्थान जोडिए । इकवाईका अंक दाहाकीका अंक विपैँ दाहकीका ऐसे क्रमतेँ जोडिए जो इकवाई आदिकके अंक जोडैँ अधिक प्रमाण अर्थि ताँ तहां इकवाईका अंक मांडि दाहकी आदिकका अंक अवशेष रहैँ ताको दाहकी आदिकके अंकनि विपैँ जोडि दीजिए । याका नाम प्रवृत्ति विपैँ हाथिलागा कहिए है । इहां उदाहरण । जैसेँ दोयसैँ छप्पनविपैँ चौरासी जोडना होइ तहां इकवाईके अंक छह च्यारि जोडैँ दश भए तहां इकवाईकी जायगा विंदी मांडि अवशेष एका अर दाहकी के अंक पंच आठ जोडैँ चौदह भए सो एकाके पीछे दाहकीकी जायगा चौका लिखि अवशेष एका अर दोय जोडैँ तीन भए सो ताके पीछे सैंकडाकी जायगा लिखनां । ऐसैँ इनका जोड तीनसैँ चालीस ३४० भया । अथवा दूसरी तरफसैँ जोडिए ताँ सैंकडाकी

जायगा दूवा मांडि दाहकीके अंक पांच आठ जोड़ें तेरह भए सो दाहकीकी जायगा तीया लिखि एक सैकड़ा विपै जोड़ें ऐसा भया ३३। बहुरि इकवाईका छह च्यारि जोड़ें दश होइ तहां इकवाईकी जायगा विदी लिखि एक दाहकीका अंक विपै जोड़ें ऐसा ३४० भया। या प्रकार औरनिकाभी संकलन जाननां। बहुरि व्यकलन नाम राशि विपै घटावनेका है प्रवृत्ति विपै याका नाम वाकीका काढना है। तहां जाको घटाई ताका नाम ऋण राशि है। जाविपै घटाईए ताका नाम धनराशि है वा मूलराशि है। तिस ऋणराशि करि मूलराशिकों हीन वा सोधित इत्यादि कहिए। सो मूलराशिके उपरि ऋणराशिकों लिखि ताके आगैं पूछड़ीकासा आकार बिंदी सहित करिए जैसे दोग घाटि दोगसे ऐसैं लिखिए ३०० अथवा मूलराशिके आगैं ऐसैं — सहनानी करि आगैं ऋणराशि लिखिए। जैसे ताहीकों ऐसैं लिखिए २००—२ अथवा मूलराशिके नीचै विदी लिखि ताके नीचै ऋणराशि लिखिए जैसे ताहीकों ऐसैं लिखिए ३०० बहुरि अन्यत् प्रकार भी लिखना हो है। तहां मूलराशिके अंकनिमेंस्थौ धनराशिके अंक यथास्थान क्रमतैं घटाईए इकवाईके अंकनिमेंस्थौ इकवाईके अंक दाहकीके अंकनिमेंस्थौ दाहकीके अंक ऐसैं क्रमतैं घटाईए। बहुरि जो इकवाई आदिका अंक मूल राशितैं ऋणराशिका अधिक होइ तौ मूलराशिका दाहकी आदि अंकमेंस्थौ एक घटाइ इकवाई आदि अंकविपै दश जोड़ि तामें ऋणराशिका अंक घटाईए। इहां उदाहरण—जैसे तीनसैं चालीसमेंस्थौ चौरामी घटावना होइ तहां इकवाईकी जायगा मूलराशिकी विदीमें ऋणराशिका चौका घटै नाहीं तातैं दाहकीका अंक मूलराशिका चौकामें एक घटाइ इकवाई विपै दशकरि तामें च्यारि घटाए छह रहे सो इकवाईकी जायगा लिखै। बहुरि दाहकीका अंक मूल राशिका तीया रखा तातैं ऋणराशिका आठका अंक बधता सो घटै नाहीं तातैं मूलराशिका सैकड़ाका तीनका अंकमेंस्थौ एक घटाइ दाहकीका तीया विपै दश जोड़ें तेरह भए तामें ऋणराशिका आठा घटाए पांच रहे सो दाहकीकी जायगा लिख्या। बहुरि मूलराशिका सैकड़ाका अंक दूवा रखा तामें घटाने योग्य ऋणराशिका अंक सैकड़ाका कोई नाहीं तातैं सैकड़ाकी जायगा दूवा लिख्या ऐसैं अवशेष बाकी दोगसे छप्पन रहे २५६। अथवा ऐसैं ही अंतादि अंकनिस्थौ विधान करिए तोभी इतना ही प्रमाण आवै है। जैसे मूलराशिका सैकड़ाका अंक तीया तामें ऋणराशिका सैकड़ा कोऊ घब्या नाहीं तातैं तीया रखा। बहुरि इसही मूलराशिका चौकातैं ऋणराशिका आठा घटै नाहीं तातैं सैकड़ाका तीयामें एक घटाय तहाँ दूवा करनां। तिसकी दशदाहकी चौकेमें मिलाए चौदह होय तामें आठ घटाए छह रहे तव ऐसा भया २६ बहुरि इकवाई विपै मूलराशिकी विदी विपै च्यारि घटै नाहीं तातैं दाहकीका छक्कामें एक घटाय तहां पांचा करनां ताका दश विदीमें मिलाए दश ही भए तामें च्यारि घटाए छह रहे ऐसैं कीए २५६ दोगसे छप्पन ही प्रमाण आवै है। ऐसैं ही अन्यत्र भी विधान जाननां। बहुरि गुणनेका नाम गुणाकार है। जैसे प्रवृत्ति विपै रुपैयानके टके फलाईए हैं। बहुरि एकादिककी पाटिनिकी पद्धति है सो गुणनरूप जाननी जैसे पच्चीस आठ दोगसे, ऐसा कह्या तहां पच्चीसकों आठकरि गुणें दोगसे हो हैं। ऐसैं अर्थ जाननां। तहां जाको गुणिए ताका नाम गुण्य है।

जाकरि गुणिए ताका नाम गुणक वा गुणाकार है । बहुरि गुण्य हूवा राशिका नाम गुणित वा हत वा घ्न इत्यादि जानने । सो गुण्य आगै गुणककों लिखिए जैसे चौसठि गुणां एकसो अठाईसकों ऐसै लिखिए १२८।६४ अब गुणनेका विधान कहिए हैं । गुणकारके अंकनिकरि पहलै गुण्यका अंत अंककों गुणिए तहां गुणकारका इकवाईका अंक करि गुणें अंक आवै तिन विपै इकवाईका अंककों तिस अंत अंकके उपरि लिखिए । दाहकी आदिके अंक आवै तो ताके पीछै पांछै लिखिए । बहुरि जो गुणकारका अंक दाहकीका होइ तो तिसकरि तिस गुण्यका अंत अंककों तैसे ही गुणिए तहां पूर्वै इकवाईका अंक आया था ताके पीछै तिसकों लिखिए । वा पूर्वै तहां अंक होइ तो जोड़ दीजिए । बहुरि ऐसे ही गुणकारके सैकड़ा आदि अंक होइ तो तिनकरि क्रमतै गुणि जो प्रमाण आवै ताकों पीछै पीछै लिखिए वा जोड़िए । ऐसै अंत अंकका गुणन किया । बहुरि जो गुण्यके अनेक अंक होइ तो तैसे ही उपांत आदि अंकनिकों क्रमतै तहां गुणें इकवाईका अंक आवै सो तो पूर्व इकवाईका अंक लिख्या था ताके आगै लिखिए अर अन्य अंक आवै तिनकों पूर्व अंकनि विपै अनुक्रमतै जोड़ते जाइए । ऐसै कांए जो प्रमाण आवै सो गुण्य हूवा राशि जाननां । इहां उदाहरण । जैसे एकसो अठाईसकों चौसठि करि गुणना तहां प्रथम गुण्यका एकाकों चौसठि करि गुणिए तहां गुणकारका चौका करि गुणें च्यारि भया सो एका उपरि लिख्या छक्का करि गुणें छह भया सो ताके पीछै लिख्या तब ऐसा भया ६३ । बहुरि गुण्यका उपांत अंक हूवा ताकों चौसठि करि गुणिए । तहां चौका करि गुणें बतीस होइ तहां हूवा तो पूर्व अंकनिके आगै लिख्या अर हाथिलगे तीन सो पूर्व अंकनि विपै जोड़्या । बहुरि छक्का करि गुणें अठतालीस होइ सो पूर्व अंकनि विपै जोड़िए तब ऐसा भया ६३ ऐसै गुण्य हूवा प्रमाण इक्यासीसै वाणवै भया । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि अन्य विधान कहिए हैं । गुणाकारके अंकनि करि गुण्यके प्रथम अंककों गुणें जो प्रमाण आवै सो जुदा लिखिए अर गुण्यका द्वितीय अंककों गुणें जो प्रमाण आवै ताके आगै एक बिंदी देइ जुदा लिखिए ऐसै ही क्रमतै गुण्यका चतुर्थादि अंकनिकों गुणें जो जो प्रमाण आवै ताके आगै च्यारि आदि बिंदी देइ जुदे जुदे लिखिए । बहुरि तिन सबनिकों जोड़िए जो प्रमाण आवै सो गुण्य हूवा राशि जाननां । जैसे चौसठि करि एकसो अठाईसकों गुणनां तहां गुण्यका आठाकों गुणें पांचसै बारह भए सो लिख्या अर हूवाकों गुणें आगै एक बिंदी दीए बारहसै असी भए सो लिख्या अर एकाकों गुणें आगै दोय बिंदी दीए चौसठिसै होई इनकों जोड़ें ३३ सोइ इक्यासीसै वाणवै आवै हैं । अथवा यंत्रविधान करि गुणन हो है सो जेते गुण्यके अंक होइ तितनी पंक्तिनि विपै जेते गुणकारके अंक होइ तितने तितने कोठे करनै । बहुरि तिन कोठानिकों ड्योढे चीरिए बहुरि गुणकारके प्रथमादि अंकनि करि गुण्यका प्रथम अंकको गुणें जो जो अंक आवै तिनकों प्रथम पंक्तिके प्रथमादि कोठेनिविपै लिखिए । तहां गुणें जो एक ही अंक आवै तो जो कोठा ड्योढा चीराथा ताका उपरिम भागविपै बिंदी अर नीचला भागविपै अंक लिखिए अर जो दोय

अंक आवै तौ दाहकीका अंक उपरिम भाग विषै इक्वाईका अंक द्वितीय भाग विषै लिखिए । बहुरि ऐसैही गुणकारके प्रथमादि अंकनि करि गुण्यके द्वितीयादि अंकनिकों गुणि द्वितीयादि पंक्तिनि विषै लिखने । बहुरि तिम यंत्रका ड्योटा जोड दीजिए जो प्रमाण आवै सो गुणित राशि जाननां । उदाहरण—जैसे एक अठाईसको चौसठि करि गुणना होइ तहां ऐसा यंत्र करिए । बहुरि याकों ऐसै ड्योटा चीरिए.....बहुरि याविषै छक्का चौका करि गुण्यका प्रथम अंक एकको गुणि प्रथम पंक्ति विषै द्वितीय अंक दूवाको गुणि तृतीय पंक्ति विषै लिखने..... बहुरि इनका ड्योटा जोड दीजिए तब दूवाका दूवा लिख्या अर आठ तीन आठको जोडे उगणीम ताका पीछै नांवां लिख्या हाथ एकलागा सो अर च्यारि दोय च्यारि जोडे ग्यारह भए ताका ताके पीछै एका लिख्या बहुरि हाथि लागा एक अर एका छक्का जोडे आठ भया सो वाके पीछै लिख्या ऐसै इक्यासीसै बाणवै प्रमाण आवै हैं । अथवा संभेदन करि गुणन हो हैं । तहां जैसे सुगम गुणन होय तैसे गुण्यका वा गुणकारका खंडकरि जुदे जुदे तिन खंडनिकों गुणि जोड दीजिए । उदाहरण । जैसे एकसौ अठाईसको चौसठि करि गुणना होइ तहां चौसठिकों दोय खंड कीये साठि अर च्यारि तहां साठि करि गुणें छिहंतरिसै असी होइ अर च्यारि करि गुणें पांचसै बारह होइ, बहुरि ताकों सोलह करि गुणें इक्यासीसै बाणवै ही होइ । बहुरि जहां गुण्यगुणकार बहुत होइ तहां परस्पर गुणन करना । जैसे च्यारि सोलह चौसठि दोय ऐसै च्यारि राशि ४।१६।६।४।२ गुण्य गुणकार हैं । इनको परस्पर गुणि तहां च्यारिकों सोलह करि गुणें चौसठि बहुरि याकों चौसठि करि गुणें च्यारि हजार छिनवै याकों दोयकरि गुणें इक्यासीसै बाणवै । अथवा गुण्य गुणकारनि विषै काहूका गुणकार रूप संभेदन करिए । काहूको किसी करि गुणि लिख दीजिए पीछै तिनको परस्पर गुणि । जैसे तिन गुण्य गुणकारनि विषै चौसठिका संभेदन करि च्यारि गुणा सोलह लिख्या । बहुरि पूर्वे च्यारिका अंक था ताकों इस च्यारिका अंक करि गुणें सोलह भए । ऐसै कीएं ऐसा १६।१६।१६।२ राशि भया इनको परस्पर गुणें भी इक्याससीसै बाणवै होइ । ऐसै विधान जानना । संभेदनादि करनेका प्रयोजन इस शास्त्र विषै आवैगा तिसतै इहां स्वरूप दिखाया है । ऐसै वा अन्य प्रकार भी गुणन विधान जानना । बहुरि इहां इतना जाननां गुण्यगुणकार विषै कोई राशि विषै एक घटाईए वा वधाईए तो अन्य राशि एक ही होइ तौ तितनेही घटै वधै । अर अन्य राशि बहुत होइ तौ तिनको परस्पर गुणें जितने होइ तितने घटै वधै । जैसे चौसठि करि एकसौ अठाईसको गुणें इक्यासीसै बाणवै होइ अर जो चौसठिमैस्यो एक घटाईए वधाईए तौ तिस प्रमाणमैस्यो एकसौ अठाईस घटै वधै । अर एकसौ अठाईसमैस्यो एक घटाए वधाए चौसठि घटै वधै । बहुरि जैसे च्यारि सोलह चौसठि दोय ऐसै गुण्य गुणकार होइ तिनको परस्पर गुणें इक्यासीसै बाणवै होइ । बहुरि जो सोलहमें एक घटाए वधाए अन्य राशि च्यारि चौसठि दोय इनको परस्पर गुणें जितने होइ तितने घटै वधै । बहुरि एक घटाए वधाए जेता प्रमाण घटै वधै तहां आधा आदि वा दोय आदि घटाए वधाए तिस प्रमाणतै आधा आदि

वा दूणां आदि प्रमाण घट्टै वधै ऐसा जानना । ऐसै और भी विशेष अनेक प्रकार हैं । ते यथा-संभव जानने । बहुरि भाग देइ प्रमाण ल्यावनेका नाम भागहार है । जैसे प्रवृत्ति त्रिपै टकानिके रूपै फलाइए । बहुरि राशिके वट करनेकी पद्धति है । सो भाग हार रूप जाननी । जैसे दोयसैका आठ वट कीए पचीस कहा तहां दोयसैको आठका भाग हार जानना अर जाको भाग दीजिए ताका नाम भाज्य है वा हार्थ्य है । जाका भाग दीजिए ताका नाम भाजक वा हार वा भागहार इत्यादि कहिए हैं । बहुरि भाग दीए राशिका नाम भक्त वा भाजित इत्यादि कहिए । बहुरि लिखनेमें भाज्यको ऊपर लिखिए भाजकको ताके नीचे लिखिए । जैसे इक्यासीसै वाणवैका चौंसठिवां भागको ऐसै लिखिए १६^२ । अब याका विधान कहिए हैं—भाज्य राशिके अंतादिक जेते अंकनिकरि भाजक राशितै प्रमाण वधता होइ तितने अंकरूप राशिको भाजकका भाग दीजिए । बहुरि जिस अंक करि भाजकको गुणै जाको भाग दीया था तामे घटाइ अवशेष तहां लिख दीजिए अर वह पाया अंक जुदा लिखिए । बहुरि जेठै भाज्यके अंक रहे तिनके अंतादि अंकनिको तैसै ही भाग देइ जो अंक आवै ताको तिस पाया अंकके आगै लिखिए । ऐसैही यावत्सर्व भाज्यके अंक निःशेष होइ तावत् विधान करै तहां पाए अंकनिकरि जो प्रमाण आवै सो तहां भाग दीए जो राशि भया ताका नाम लब्धराशि है ताकर प्रमाण जानना । इहां उदाहरण । इक्यासीसै वाणवैको चौंसठिका भाग दीया ६३^२ तब याको दोय आदि अंक करि गुणै तौ बहुत प्रमाण होइ तातै एक करि गुणै चौंसठि दूवा ताको इक्यासीमें घटाय तहां सतरह लिख्या अर पाया अंक एका जुदा बहुरि वह राशि ऐसा १७९२ भया तहां आदि तीन अङ्क करि एकसौ गुण्या भाजकतै वधता प्रमाण होइ ताको चौंसठिका भाग दीजिए ३५६^३ तब तीन आदिकरि ताको गुणै जो वधता प्रमाण होइ तातै भाजकको दोय करि गुणै एकसौ अठाईस होय सो घटाए तहां इक्यावन रखा सो लिख्या अर पाया अंक दूवा तिस एकाके आगै लिख्या । बहुरि वह राशि ऐसा ५१२ भया ताको चौंसठिका भाग दीजिए ६३ तहां ताको आठ गुणा कीए पांचसै वारह होइ सो भाज्यमेंस्यौ घटाए राशि निःशेष होइ अर पाया अंक आठ तिस दूवाके आगै लिख्या ऐसै पाया अंकनिकरि लब्धराशि एकसौ अठाईस होइ ऐसै ही अन्यत्र जानना । बहुरि जहां भाग टूटि जाय भाजकको किसी अंक करि गुणै भाज्यके अंक आवे पहले ही अंक निःशेष होइ जाय तहां अंक घटनेतै भाग टूट्या कहिए सो जहां भाग टूटे तहां पाया अंकके आगै विंदी लिखि बहुरि तैसै विधान करना । जैसे छह हजार च्यारिसै चौईसको आठका भाग दीया ६४२^४ तहां चौंसठिको आठका भागदीए आठ पाया सो आठको आठकरि गुणै चौंसठि होइ सो चौंसठिमें घटाए निःशेष भया तहां पाया अंक आठके आगे विंदी लिखि बहुरि चौईसको आठका भाग दीए तीया पाया सो लिख्या तब लब्धराशिका प्रमाण आठसै तीन आया । ऐसै ही अन्यत्र जानना । बहुरि कहीं भाग देते भाज्यराशि निःशेष न होइ कि अवशेष रहिजाय तहां लब्धराशि प्रमाणके आगे अवशेषको भागहारकर भाग लिख देना । जैसे इक्यासीसै चौराणवैको चौंसठिका भाग दीया ६३^३ तहां

पूर्वोक्त प्रकार एकसौ अठारस लब्धराशि भया । अर भाज्य विषै दोग रहे ताकों चौंसठिका भाग तिसके आगै लिखना १२५३ ऐसै ही अन्यत्र जानना । बहुरि कहीं सुगम करनेके अर्थि अपवर्तन करि भाग देना भाजकों भाग दीए जो प्रमाण आवै सो तौ भाज्य लिखना । अर तिसही प्रमाणका भाजकों भाग दीजिए जो प्रमाण आवै सो भाजक लिखना । ऐसै समप्रमाण करि भाज्यभाजकों अल्प करिए ताका नाम अपवर्तन है । जैसे इक्यासीसै चौराणवैकों चौंसठिका भाग होइ तहां दोगका अपवर्तन संभवै है । जातै इक्यासीसै चौराणवैकों दोगका भाग दीए भाज्यराशि च्यारि हजार सत्याणवै भया, अर चौंसठिकों दोगका भाग दीए भाजकराशि बत्तीस भया २०३३ तहां पूर्वोक्त विधान कीए लब्धराशि एकसौ अठारस अर एकका बत्तीसवां भाग आया सोई पूर्वे प्रमाण आया था तहां दोगका चौंसठिवां भाग अधिक कह्या था । अर इहां दोग करि अपवर्तन करनेतै एकका बत्तीसवां भाग कह्या सो दोऊनिका एकार्थ है । ऐसै ही अन्यत्र जानना । बहुरि कहीं भाज्यराशि वा भाजकराशि विषै गुण्यगुणाकार होइ तहां जिसका जिसकरि अपवर्तन संभवै तिसका तिस ही करि, अपवर्तन करनां । जैसे चौंसठि सत्ताईस पांच तीन इनकों परस्पर गुणें जो होइ सो तौ भाज्यराशि अर तीन नव सत्रहकों परस्पर गुणें जो होइ सो भाजकराशि ६४३११३ तहां भाज्यका तीन अर भाजकों तीनका अपवर्तन कीए दोऊ जायगा तीनका अभाव भया अर भाज्यका सत्ताईस अर भाजक नव इहां नवकरि अपवर्तन कीए सत्ताईसकी जायगा तीया भया नवकी जायगा एका भया । ऐसै करते ए भया ६४३११३ इहां गुणन कीए भाज्य नौसै साठि भाजक सत्रह होइ १६३ अथवा भाजकका तीन अर नवका अभाव होइ तहां ऐसा होइ ६४३१३ तहां भी गुणन कीए पूर्वोक्त भाज्य भाजक होइ १६३ तहां पूर्वोक्त विधान करि लब्धराशिका छप्पन अर आठका सत्रहवां भाग आवै है ५६३ ऐसै अनेक प्रकार अपवर्तन हो हैं सो यथा संभव जानना । बहुरि कहीं सुगमता होनेके अर्थि भाज्य भाजक राशि विषै दोऊ जायगा समान प्रमाण करि गुणनादि कीजिए जैसे पूर्वोक्त राशि ऐसा ६४३११३ इहां भाज्यका पांचकों दोगकरि गुणि दश कीजिए । अर भाजकका तीयाकों दोग करि गुणि छह कीजिए । तब ऐसा होय ६४३१३ बहुरि भाजकका छह नवकों परस्पर गुणें चौवन होइ अर भाज्य सत्ताईस इनका अपवर्तन कीए भाजक विषै छह नवकी जायगा दूवा भया अर भाज्य विषै सत्ताईसका अभाव भया तब ६४३१३ ऐसा भया । बहुरि इहां चौंसठि भाज्य विषै है ताकों भाजक विषै दोग है ताकरि अपवर्तन कीए भाज्य विषै चौंसठिकी जायगा बत्तीस रह्या अर भाजक विषै दोगका अभाव भया तब ऐसा भया ३१३३ इनकों परस्पर गुणें नौसै साठिकों सत्रह भाग आया १६ ऐसै ही अन्यत्र जहां जैसा विधान संभवै तहां तैसा जानना । इस शास्त्र विषै अपवर्तनादिकका प्रयोजन आवैगा तातै इनका स्वरूप दिखाया है । बहुरि समान रूप दोग प्रमाणनिका परस्पर गुणना ताका नाम वर्ग है । जैसे प्रवृत्ति विषै समान लंबाई चौडाईका मुकसर १ करिए है । बहुरि बड़ा एकानिकी पाटी सो वर्ग रूप है । जैसे पच्चीस पच्चीस छसै पंचीसां कह्या तहां पचीसका वर्ग छसै पचीस जानना । ऐसै ही अन्यत्र जानना । ऐसै समान दोग राशिनिका परस्पर गुणनेका नाम वर्ग है वा

कृति है । बहुरि वर्ग कीए जो प्रमाण आवै ताकों वर्गित कहिए तहां एक राशि मांडि ताके आगै दूसरा राशि लिखिए । जैसे चौसठिके वर्गकों ऐसै लिखिए ६४।६४ अब याका विधान कहिए हैं—जो गुणाकार विषै विधान कह्या सोई वर्ग करने विषै विधान जानना जातै दोय राशि समान लिख्या तिन विषै एक राशि गुण्य अर एक राशि गुणकार स्थापि तहां गुणकार करि गुण्यकों गुणें जो प्रमाण आवै सोई वर्गित राशिका प्रमाण जानना । जैसे चौसठिकों चौसठि करि गुणें च्यारि हजार छिनवै ४०९६ सोई चौसठिका वर्ग जाननां । बहुरि इतना जाननां । वर्ग राशिके गुणकार वा भागहार वर्गरूप ही हो है जैसे च्यारि हाथ लंबा च्यारि हाथ चौडा क्षेत्र तहां च्यारिका वर्ग सोलह हाथ मुकसर क्षेत्र भया । अब याके अंगुल करने सो एक हाथके चौईस अंगुल हो हैं तातै चौईस करि गुणना । सो वह सोलह प्रमाण वर्ग रूप है तातै याका गुणाकार चौईस सो भी वर्गरूप ही जाननां । तातै चौईसका वर्ग कीए पांचसै छिहत्तरि होइ ताकरि सोलहकों गुणै । १६।५७६ तिस क्षेत्रका नव हजार दोयसै सोलह अंगुल हो हैं । बहुरि जो इतने अंगुल प्रमाण क्षेत्रके हाथनिका प्रमाण करनां होइ तहां चौईसका वर्ग पांचसै छहत्तरि ताका भाग दीए ३३३ लब्धराशि मात्र तिस क्षेत्रके सोलह हाथ हो हैं । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि समानरूप तीन राशिनिका परस्पर गुणना ताका नाम घन है । जैसे प्रवृत्ति विषै समान लंबाई चौडाई उंचाई विषै मुकसर करिए । तहां च्यारिका घन ऐसा करिए तहां च्यारिकों तीन जायगा मांडि परस्पर गुणें चौसठि होइ सो च्यारिका घन है । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । तहां तीनों राशि बरोबरि लिखिए । जैसे चौसठिका घनकों ऐसै ६४।६४।६४ लिखिए । अब याका विधान कहिए है । जो गुणकार विषै विधान कह्या सोई घन करने विषै विधान जाननां । जातै तीन राशि समान लिख्या तिन विषै एक राशि गुण्य अर दूसरा राशि गुणकार स्थापि तहां गुणकार करि गुण्यकों गुणिकरि बहुरि गुणें जो प्रमाण भया ताकों गुण्य स्थापनां अर तीसरा राशिकों गुणाकार स्थापनां तहां गुण्यकों गुणकार करि गुणें जो प्रमाण होइ सोई तहां घन राशिका प्रमाण जाननां । जैसे चौसठिका घन करनां तहां चौसठिकों चौसठि करि गुणें च्यारि हजार छिनवै होइ । बहुरि इनकों चौसठि करि गुणें दोय लाख बासठि हजार एकसौ चवालीस होइ सोई चौसठिका घन जाननां २६२१४४ बहुरि इतना जानना । घन राशिके गुणाकार भागहार घनरूप ही होइ । जैसे च्यारि धनुष लंबा च्यारि धनुष चौडा च्यारि धनुष उंचा क्षेत्रका क्षेत्रफल कीया तव चौसठि धनुष हूवा । याके हाथनिका प्रमाण करनां तहां एक धनुषके च्यारि हाथ होइ तहां च्यारि करि गुणना । परंतु वह राशि घनरूप है तातै याका गुणकार च्यारि सो भी घनरूप जाननां । सो च्यारिका घन कीए चौसठि होइ तिस करि ताकों गुणें ६४।६४। च्यारि हजार छिनवै हाथ होइ । बहुरि च्यारि हजार छिनवै हाथ प्रमाण घनक्षेत्रके धनुष करने तहां च्यारिका भाग देनां परंतु वह राशि घनरूप है तातै वाके भागहार भी घनरूप होइ तातै च्यारिका घन चौसठि करि ताकों भाग दीए । ४३३ लब्ध राशि चौसठि धनुष होइ । ऐसैही अन्यत्र जाननां । बहुरि जो राशि याका

वर्ग कीएं होइ तिसका सो वर्गमूल जाननां । जातैं दोयसैं छप्पन हैं सो सोलहका वर्ग है । अब यांका विधान कहिए हैं । जिस राशिका वर्गमूल करना होइ तिस राशीके पहला अंक विषम दूजा सम तीजा विषम चौथा सम ऐसैं जे अंक होइं तिन उपरि विषम समकी ऊंभी आडी लीककी सहनानी करनी जैसैं च्यारि हजार छिनवैके अंकनिकी ऐसी ४०९६ सहनानी कीजिए । बहुरि तिन विषै अंतका विषम अंक विषै अथवा जो अंत विषम न होइ तौ अंतका सम अर उपांत विषम इन दोऊ अंकनि विषै कृति छोडिए । कृति छोडना कहा ? जिस अंकका वर्ग उस प्रमाणतैं बधता होइ तिस अंकका वर्ग करि उस प्रमाणमेंस्यो घटाय दीजिए । बहुरि जाका वर्ग कीया था तिस अंकों जुदा लिखिए बहुरि घटाइए पीछैं जै अंक रहे तिनके आगैं सम अंक होइ तिन करि जो प्रमाण भया ताको जो अंक जुदा लिख्या था तातैं दूणा प्रमाणका भाग दीजिए जो लब्ध अंक होइ ताको तिस जुदा लिख्या अंकके आगैं लिखिए अर तिस अंक करि जाका भाग दीया था ताको गुणें जो प्रमाण आया सो जाको भाग दीया था तामें घटाय अवशेष तहां लिखिए । बहुरि अवशेष रहे अंक अर ताके आगैं विषम अंक होइ तिन विषै जो वह लब्ध अंक आया था ताका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ सो घटाइ दीजिए अवशेष तहां लिखिए । बहुरि अवशेष रहे अंक अर तिनके आगैं सम अंकनितैं दूणा प्रमाणका भाग दीजिए । जो लब्ध अंक होइ ताको जुदे लिखे अंकनिके आगैं लिखिए तिस अंक करि भागहारको गुणें जो प्रमाण होइ सो भाज्यमें स्यो घटाय अवशेष तहां लिखनां । बहुरि अवशेष अंक सहित तिनके आगैं विषम अंक होइ ताविषै लब्ध अंकका वर्ग घटावनां । बहुरि पूर्ववत् विधान यावत् राशि निःशेष न होय तावत् करना । ऐसैं करते जुदे लिखे अंकरूप वर्गमूलका प्रमाण जाननां । इहां उदाहरण । जैसैं च्यारि हजार छिनवैका वर्ग-मूल काढना होइ तहां ताके च्यारि अंकनिके उपरि विषम समकी ऐसैं ४०९६ सहनानी करि बहुरि इहां अंत अंक विषम नाहीं तातैं दोय अंक ग्रहे चालीस प्रमाण है । तहां सतादिकका वर्ग तौ बहुत होइ तातैं छहका वर्ग छत्तीस तामें घटाए च्यारि रहे सो च्यालीस एका जायगा लिख्या तब ऐसा ४९६ छक्का सू जुदा लिख्या । बहुरि अवशेष अंक चौका अर ताके आगैं सम अंक नौवां इनको ग्रहे गुणचास ताको जुदा लिख्या अंक छक्का तिसतैं दूणा प्रमाण वारह ताका भाग दीएं च्यारि पाए सो छक्काके आगैं लिखै ६४ अर च्यारि करि वारहको गुणें अठतालीससो गुणचासमेंस्यो घटाएं एका रह्या सो तहां लिख्या तब ऐसा १६ भया । बहुरि अवशेष अंक एका रह्या आगैं छक्का तिन करि सोलह तामें पाया अंक चौका ताका वर्ग सोलह घटाए राशि निःशेष भया । जैसैं जुदे लिखे अंकनि करि च्यारि हजार छिनवैका वर्गमूल चौंसठि । बहुरि दूसरा उदाहरण । जैसैं पैसठि हजार पांचसै छत्तीसका वर्गमूल करना तहां ऐसा ६५५३६ सहनानी करि इहां अंतका छक्का विषम है तातैं यामें दोयका वर्ग घटाएं दोय रहे । अर दूवा जुदा लिख्या बहुरि अवशेष सहित आगिला सम पचीस तामें जुदा अंकतैं दूणा च्यारिका भाग दीएं छह पावै परंतु आगैं विषम सहित अंकनि विषै इस पाया अंक याका वर्ग

घटावनेका निर्वाह नहीं ताँ पांच पाया ताकरि च्यारिकों गुणें बीस घटाए तहां पांच रहे । बहुरि पाया अंक पांचा तिस दूवाके आगें लिख्या । बहुरि इस पांचाका वर्ग पच्चीस ताकों तिस अवशेष सहित आगिला सम पचावन तामें घटाए तहां तीस रहे । बहुरि जुदा लिख्या पच्चीसतैं दूणा पचास ताका भाग तिस अवशेष सहित आगिला सम तीनसे तीन ताकों दीए छह पाया तिस करि पचासकों गुणें तीनिसे भए सो घटाए तहां तीन अवशेष रखा । बहुरि पाया अंक छक्का सो जुदा तिस पांचके आगें लिख्या बहुरि याका वर्ग छत्तीसकों तिस अवशेष सहित विषम छत्तीस विषै घटाए राशि निःशेष होइ । ऐसैं पूर्वोक्त प्रमाणका वर्गमूलके जुदे अंक लिखे तिन करि दोयसै छप्पन हो है । बहुरि जिस राशिका वर्गमूल कीएं वह राशि निःशेष होइ तहां अवशेष रहैं ताका अंक करि पूर्वोक्त विधान करिए । जैसैं सत्रहका वर्गमूल करना तहां ऐसा लिखि १७ इहां अंत विषमके अभावतैं दोऊ अंकनि विषै च्यारिका वर्ग सोलह घटाए तहां एक रखा अर च्यारि जुदा लिख्या । बहुरि तिस एककों जुदा लिख्या अंकतैं दूणा प्रमाण आठका भाग दीएं अष्टमांश पावै । परंतु आगें इस पायाकी वर्ग छोडनेका निर्वाह नहीं ताँ किंचित् ऊन अष्टमांश अधिक च्यारि तिसका वर्गमूल जाननां । सामन्यपने किंचित् ऊनकों न गिनिए तौ अष्टमांस अधिक च्यारि हो हैं । ताँ सत्रहका वर्गमूल किंचित् ऊन जाननां । बहुरि इतना जाननां । जिस राशिका जो वर्गमूल होइ तिस राशिका सो तौ प्रथम वर्गमूल कहिए । अर प्रथम वर्गमूलका जो वर्गमूल होइ ताकों तिसही राशिका द्वितीय वर्गमूल कहिए ऐसैं द्वितीयादि वर्गमूलनिकों तृतीयादि वर्गमूल कहिए हैं । जैसैं पैसठि हजार पांचसै छत्तीसका प्रथममूल दोयसै छप्पण द्वितीयमूल सोला तृतीयमूल च्यारि चतुर्थमूल दोय जाननां । ऐसैं वर्गमूल कखा । बहुरि जो राशि जिसका घन कीएं होइ तिस राशिका सो घनमूल जाननां । प्रवृत्ति विषै याकी प्रगटता थोरी है जैसैं चौसठि च्यारिका घन कीएं होइ ताँ चौसठिका घनमूल च्यारि है । अब याका विधान कहिए है । जिस राशिका घनमूल करना होइ तिसका प्रथम अंक घनस्थान दूजा तीजा अघनस्थान ऐसैं एक घनस्थान दोय अघनस्थान तिनकी सहनानी ऊभी आडी लोक अंकनिके ऊपरि करनी । जैसैं एक कोडि सडसठि लाख सतहतरि हजार दोयसैं सोळाका घनमूल काढना होइ तहां पहलें ऐसैं सहनानी करनी १६७७२९६ बहुरि अंतका घन अंक विषै वा अंतका घन अंक न होइ तौ अंत अर उपांत दोय अंकनि विषै उपांत भी घन अंक न होइ तौ अंतादिक तीन अंकनि विषै जाका घन कीएं उन अंकरूप प्रमाणतैं वधता प्रमाण न होय तिस अंककों घनका जो प्रमाण सो घटाईए अवशेष तहां लिखिए । अर तिस अंककों जुदा लिखिए । बहुरि तिस अवशेष सहित अगला अघन अंकरूप प्रमाणकों जुदा स्थाप्या अंकका वर्ग करि तिससैं तिगुणे प्रमाणका भाग देनां जो लब्ध अंक होइ ताकों तिस जुदा स्थाप्या अंकके आगें लिखनां अर इस अंकतैं गुण्य हूया भागहारकों भाग्य विषै घटाइ अवशेष तहां लिखनां । बहुरि इस अवशेष सहित अगला अघन अंकरूप प्रमाण विषै तिस लब्ध अंकका वर्ग करि ताकों पूर्वे पंक्ति विषै लिखे अंकनि करि गुणि ताकों तिगुणा कीएं जो प्रमाण आवै

सो घटाइ अवशेष तहां लिखनां । बहुरि इस अवशेष सहित अगला अघन अंकरूप प्रमाण विपै तिस लब्ध अंकका वर्ग करि ताको पूर्वे पंक्ति विपै लिखे । लिखे अंकनि करि गुणि ताकों तिगुणा कीएं जो प्रमाण आवै सो घटाइ अवशेष तहां लिखनां । बहुरि इस अवशेष सहित अगला घन अंकरूप प्रमाण विपै तिस ही लब्ध अंकका घन कीएं जो प्रमाण होई सो घटाय अवशेष लिखनां । बहुरि इस अवशेष सहित अगिला अघन अंकरूप प्रमाणकों जे जुदे पंक्ति विपै अंक लिखे थे तिनका वर्गकों तिगुणा करै जो प्रमाण होइ ताका भाग देनां । तहां जैसे पूर्ववत् घटावेनका निर्वाह होइ तैसें संभवता लब्ध अंक पूर्वे जुदे लिखे अंकनिके आगै लिखनां । अर इस अंक करि भागहारकों गुणें भाज्यमें घटाय अवशेष लिखनां । बहुरि पूर्ववत् घटावेनका विधान करनां । ऐसै यावत् राशि निःशेष होइ तावत् करनां । तहां जो जुदे पंक्ति विपै अंक लिखे तिस प्रमाणरूप घनमूल जाननां । इहां उदाहरण । जैसे पूर्वोक्त राशि ऐसा १६७७७२१६ इहां उपांत अंक घन हैं तातैं दोय अंक रूप प्रमाण सोलह विपै तीन आदिकका घन तौ बहुत होइ तातैं दोयका घन आठ घटाए तहां अवशेष आठ लिखे अर मूल अंक दूवा जुदा लिखा बहुरि अवशेष सहित अगला अघन सित्यासी ८७ ताकों जुदा स्थाप्या । दूवाका वर्ग च्यारि ताकों तिगुणा कीएं बारह ताका भाग दीए सात पावै परंतु आगै घटावेनके विधानका निर्वाह नाही तातैं पांच पाए सो जुदा लिख्या दूवाके आगै लिख्या । या करि बारहको गुणें साठि भए तहां अवशेष सत्ताईस रहे इस सहित अगिला अघन दोयसै सतहत्तरि २७७ तामें पाया अंक पांच ताका वर्ग पचीस ताकों पूर्व अंक दूवातैं गुणें पचास ताकरि तिगुणां ज्योढसैं घटाए तहां अवशेष एकसौ सत्ताईस रहे इस सहित अगिला घन बारहसै सतहत्तरि १२७७ तामें पाया अंक पांचका घन एकसौ पचीस घटाए अवशेष ग्यारहसै बावन रहे । इस सहित अगिला घन बारहसै सतहत्तरि १२७७ ग्यारह हजार पांचसै बाईस ११५२२ याकों जुदा पंक्ति विपै अंकरूप प्रमाण पचीस ताका वर्ग छसैं पचीस ताकों तिगुणा कीएं अठारहसै पिचहत्तरि ताका भाग दीएं जैसे अगिला विधान निर्वाह होइ तैसें छह पाए याकरि भागहारकों गुणें ग्यारह दोयसै पचास सो भाज्य विपै घटाए तहां दोयसै बहत्तरि अवशेष रहे । बहुरि तिस सहित अगिला अघन दोय हजार सातसै इकईस २७२१ यामें पाया अंक छक्का ताका वर्ग छत्तीस ताकों पूर्व अंक पचीसतैं गुणें नवसै ताका तिगुणां दोय हजार सातसै घटाए अवशेष इकईस रहे । बहुरि इस सहित अगिला घन दोयसै सोलह २१६ तामें पाया अंक छहका घन दोयसै सोलह घटाए राशि निःशेष होइ । ऐसैं जुदी पंक्ति विपै लिखे अंकनिका प्रमाणरूप दोयसै छपन दूवा सोई एक कोडि सतसठि लाख सतहत्तरि हजार दोयसै सोलहका घनमूल जाननां । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि घनमूल कीएं जहां राशि निःशेष न होय तहां अवशेषके अंश करि तहां पूर्वाक्त विधान करना । जैसे नवका घनमूल दोय आवै एक अवशेष रहै । ताकों दूवाका वर्ग तिगुणां भाग दीएं । एकका वारहवां भाग आवै परंतु अगले विधानका निर्वाह नाही तातैं तहां किंचित् ऊन जाननां ऐसैं नवका घनमूल

किंचित् ऊन एकका बारहां भाग अधिक दोग जाननां । ऐसैं परिकर्माष्टकका वर्णन कीया । अब भिन्न परिकर्माष्टक कहिए है । अंशहाररूप गणनाका नाम भिन्न गणित है । तहां जेते अंश होइ तिनका नाम अंश कहिए वा लव कहिए अर जेथवां अंश होइ तिनका नाम हार कहिए वा हर कहिए वा छेद कहिए । जैसे पांच छठा भाग कछा तहां पांचका नाम अंश है वा लव है । अर छहका नाम हार है वा हर है वा छेद है । इहां पांचका छह भाग विषै एक भागका नाम पांच छठा भाग जाननां । अथवा एकका छह भाग करिए तामें पांच भाग होइ ताका नाम पांच छठा भाग जाननां दोऊनिका अर्थ एक है । बहुरि अंशकों उपरि लिखि ताके नीचैं हार लिखिए जैसे पांच छठा भागकों ऐमैं लिखिए $\frac{5}{6}$ अत्र इनका संकलनादि करनेका विधान कहिए हैं । तहां भिन्न संकलन व्यवकलनके विधान विषै भागजाति प्रभागजाति भागानुबंध भागापवाह ऐसैं च्यारि प्रकार हैं । तिन विषै इहां विशेष प्रयोजनभूत जानि समछेद विधान करि संकलन व्यवकलन कहिए हैं । अनेक राशिनिके जैसे छेद समान होइ तैसे विधान करनां सो समछेद विधान जाननां । तहां अनेक राशिनिके जुदे जुदे अंश हार लिखि तिन विषै एक एक राशिके अंश हारनिकों अन्य राशिनिके हारनिकरि गुणिए । तहां छेदनिका परस्पर गुणन होनेतैं सव-निके छेद समान होइ । बहुरि जो संकलन करनां होइतौ एक राशिके अंशनि विषै अन्य राशिके अंशनिकों जोड दीजिए । अर व्यवकलन करनां होइ तौ महत राशिके अंशनि विषै अन्य राशिनिके अंश घटाइ दीजिए । इहां उदाहरण । जैसे पंद्रह आठवां भाग अर च्यारि तीसरा भाग दोग छठा भाग इनका संकलन करनां $\frac{1}{2} + \frac{2}{3} + \frac{3}{4}$ तहां पंद्रहकों अन्य राशिके हार तीन अर छह तिन करि गुणि दोगसे सत्तरि होय अर च्यारिकों अन्य राशिनिके हार आठ छह तिनि करि गुणें एक सो वाणवै होइ अर दोगकों अन्य राशिनिके हार आठ तीन तिन करि गुणें अठतालीस होइ । बहुरि आठ तीन छह हारनिकों परस्पर गुणें सर्वत्र एकसौ चवालीस भया । ऐसैं समान छेद लीएं तीनों राशि ऐमैं $|\frac{3}{4} + \frac{1}{2} + \frac{3}{4}|$ बहुरि तीनों राशिके अंश जोडें पांचसै दश होइ । अर छेद समान है तातैं पांचसै दशकों एकसौ चवालीसका भाग दीजिए इतना जोड तिन तीनों राशिका हो है सो तीन अर अठहत्तरि एकसौ चवालीसवां भाग इतना प्रमाण आया । इहां छह करि अपवर्तन कीए अठहत्तरिकी जायगा तेरह भया अर एकसौ चवालीसकी जायगा चौईस भया ऐसैं तीन अर तेरह चौईसवां भाग $3\frac{3}{4}$ इतना तिनका जोड आया । बहुरि जैसे पंद्रह आठवां भाग विषै च्यारि तीसरा भाग दोग छठा भाग घटावना होय तहां पूर्ववत् समछेद करि महतराशि $3\frac{3}{4} - 1\frac{3}{4} - \frac{3}{4}$ के दोगसै सत्तरि अंशनि विषै एकसौ वाणवै अर अठतालीस घटाए तीस रहे । अर भाग हार एकसौ चवालीसका है ही $\frac{3}{4}$ तहां छहकरि अपवर्तन कीएं पांच चौईसवां भाग प्रमाण अवशेष रखा $\frac{3}{4}$ ऐसैं ही अन्यत्र जानना । बहुरि कहीं अन्य प्रकार भी समान छेद होइ तौ अन्य प्रकार समछेद करिलेंने । जैसे च्यारि तीसरा भाग विषै दोग छठा भाग जोडना होइ $2\frac{1}{2}$ तहां तीन हारनिकों दूणा कीए छह हार होय तब दोऊनिके समान छेद होइ । तातैं तीन हारनिकों अर याके च्यारि अंशनिकों

दूणा करि तहां आठ छठा भाग मिल्या $\frac{1}{4}$ या विषै दोय छठा भाग मिल्याए दश छठा भाग तिनका जोड भया । याका दोय करि अपवर्तन कीए पांच तीसरां भाग प्रमाण हो हैं । अथवा छह हारनिकों आधा कीए तीन हार होइ तत्र समान छेद होइ तातैं छह 'हारनिकों अर याके दोय अंशनिकों आधा करि तहां एकका तीसरा भाग लिख्या $\frac{1}{3}$ याका च्यारि तीसरा भाग विषै मिलाए पांच तीसरा भाग मात्र प्रमाण आया । बहुरि हजार चवालीसवां भाग विषै दोयसै बाईसवां भाग पच्चीस ग्यारहवां भाग घटावना होय $\frac{1}{18} = \frac{1}{27} + \frac{1}{54}$ तहां बाईसकों दूणा कीए ग्यारह, ग्यारहकों चौगुणा कीए समान छेद होइ । तातैं दोयसै अंश अर बाईस हार इनके दूणे कीए च्यारिसै चवालीस भाग भए अर पच्चीस अंश ग्यारह हार इनकों चौगुणे करिए सब चवालीस भाग भए $\frac{1}{3} = \frac{1}{9} + \frac{1}{9} + \frac{1}{9}$ बहुरि च्यारिसै अर सत्र जोडे पांचसै भए सो हजारमें घटाए अवशेष राशि पांचसै चवालीसवां भाग हो है । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । इहां इतनां जाननां । अंश अर हार इन दोऊनिकों समान प्रमाण करि गुणें समानका भाग दीए जेतका तेताही प्रमाण रहै है । जैसैं जो पंद्रह आठवां भागका प्रमाण सोई दोयसै सत्तरि एकसौ चवालीसवां भागका प्रमाण है । दोऊ जायगा अष्टमांश करि हीन दोय प्रमाण हैं । इहां अंश अर हारनि विषै दोऊनि विषै अठारहका गुणाकार वा भागहार है । बहुरि समान छेद करनेका प्रयोजन यहू है सो समान छेद भए पीछैं समानरूप अंश होइ जाय तहां पीछैं अंशनिकों अंशनि विषै मिलावना होइ तौ जोड दीजे । घटावना होइ तौ घटा दीजे । बहुरि जहां कोई राशिकें हार न होय तहां हारका प्रमाण एक कल्पना । जातैं ऐसा कथा है 'कल्पो हरो रूपमहारराशेः' जैसैं दश अर पांच तृतीय भागका समछेद करनां होइ तहां दशके नीचैं एकका हार लिखना $\frac{1}{10}$ बहुरि पूर्वोक्त विधान कीए तिनका जोड पैतीस तृतीय भाग आया । अर दश विषै पांच तृतीय भाग घटाए अवशेष पच्चीस तृतीय भाग प्रमाण आवै है । बहुरि जहां ऐसी राशि गुणकारादि विधान विषै होइ तहां पहलें ऐसैं विधान करि पीछैं गुणनादि करनां । जैसैं गुणकारादि विषै कोई राशि एकका सोलहवां भाग अधिक पंद्रह प्रमाण होइ तहां समछेद विधानतैं पंद्रह विषै एकका सोलहवां भाग जोडे दोयसै इकतालीसका सोलहवां भाग हो हैं सो तहां स्थापि गुणनादि करनां । बहुरि भिन्न गुणकार विषै गुण्य गुणकारकों अंशनिका अंशनि करि अर हारनिका हारनि करि गुणन करनां । जैसैं पंद्रह आठवां भागका पांच तृतीय भाग करि गुणनां होइ $\frac{1}{18} \times \frac{1}{3}$ तहां पंद्रह अंशनिकों पांच अंश करि गुणें पिचहत्तरि अंश होइ अर आठ हारकों तीन हार करि गुणें चौईस हार होइ ऐसैं तिनका गुणन कीए पिचहत्तरि चौईसवां भाग आया । बहुरि एक हजारकों दोय तृतीय भाग तीन दशवां भाग करि गुणनां होइ तहां एक हजारकें भाग हार नाही हैं तातैं तहां एक भागहार कल्पि $\frac{1}{100} = \frac{1}{20} + \frac{1}{20}$ तहां अंशनिकों अंशनिकारि हारनिकों हारनि करि परस्पर गुणन कीए छह हजारका तीसवां भाग आया दोयसै है । बहुरि एकका तृतीय भागकों एकका अष्ट भाग करि गुणना होइ तहां पूर्वोक्त विधानतैं एकका चौईसवां भाग प्रमाण आवै है । इहां इतना जाननां एकतैं हीन करि गुणन कीए गुण्य राशिका प्रमाणतैं घटता प्रमाण

आवै है । बहुरि जैसे एकका चौथा भाग अधिक बीसकों पांच कारि गुणनां होइ तहां समछेद विधानतैं बीस विषै एकका चौथा भाग जोड़ें इक्यासीका चौथा भाग भया अर पांचके भाग हार नाही है । तहां एक भाग हार कल्पि पूर्ववत् गुणन कीएं च्यारिसै पांचका चौथा भाग प्रमाण हो हैं । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि भिन्न भाग हार विषै भाज्यके अंश हार होइ तिनकों तौ तैसै ही रखिए अर भाजकके अंश हार होइ तिनकों पलटि दीजिए । अंशनिकों हार कीजिए अर हारनिकों अंश कीजिए । ऐसै स्थापि अंशनिकों अंशनि करि अर हारनिकों हारनि करि गुणिए यों करते जो प्रमाण आवै सो लब्ध राशि जाननां । जैसे पिचहत्तरि चौईसवां भागकों पांच तृतीय भागका भाग देना ३३/३ तहां भाजकके पांच अंशनिकों हार कीजिए अर तीन हारनिकों अंश कीजिए ३३/३ बहुरि अंशनिकों अंशनि करि अर हारनिकों हारनि करि गुणन कीजिए तब दोयसै पचीसकों एक सौ बीसका भाग आया । तहां पंद्रह करि अपवर्तन कीएं पंद्रह आठवां भाग प्रमाण लब्धराशि आवै है । बहुरि दोयसैको दौय तिहाई अर तीन दशव भागका भाग देनां ३००/३३ तहां पूर्ववत् दोऊ भाजकनिके अंशहारनिकों पलटनां अर दोय सैके हार हैं नाहीं तातैं तहां एक हार कल्पनां ३३/३ ऐसै स्थापि अंशनिका अंशनि करि हारनिका हारनि करि गुणन कीएं छए हजारका छठा भाग आया सो एक हजार लब्ध राशि जाननां । बहुरि जैसे एकका चौईसवां भागकों एकका आठवां भागका देनां २३/४ तहां पूर्ववत् भाजकके अंशहार पलटि ३३/४ गुणन कीएं आठका चौईसवां भाग हो है । बहुरि इहां आठ करि अपवर्तन कीएं एकका तृतीय भाग मात्र लब्धराशि हो है । इहां इतनां जाननां एकतैं घाटिका भाग दीएं भाज्य राशितैं लब्धराशिका प्रमाण बहुत आवै है । बहुरि जैसे दोयसैको सात सोलहवां भाग अधिक सोलहका भाग देनां होइ तहां दोयसैके नीचै भागहार नाही तातैं तहां एक भागहार कल्पना अर सात सोलहवां भागकों सोलह विषै समछेद विधानतैं जोड़ें दोयसै तरैसठिका सोलहवां भाग भया सो लिखनां ३३/२६ बहुरि भाजकके अंशहार पलटि पूर्ववत् गुणन कीएं बत्तीससैको दोयसै तरैसठिका भाग आया सो लब्धराशि जाननां । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि भिन्नवर्ग विषै जेतेका वर्ग करनां होइ ताका अंश अर हार दोऊ दोय जायगा मांडि गुणकारवत् अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन करनां जैसे पच्चीस छठा भागका वर्ग करना तहां तिस प्रमाण दोय राशि मांडि २५/४ अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन कीएं छसै पचीसका लत्तीसवां भाग भया ताका तेरह छत्तीसवां भाग अधिक सतरह प्रमाण वर्ग भया ३०/३ बहुरि एकका आठवां भागका वर्ग करना ३/४ तहां पूर्ववत् विधान कीएं ताका वर्ग एकका चौसठिवां भाग हो है । बहुरि दोयका आठवां भाग अधिक तीनका वर्ग करनां तहां समछेद करि तिनकों जोड़ें छत्तीसका आठवां भाग भया ताका पूर्ववत् विधान कीएं छसै छिहतरिका चौसठिवां भाग भया ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि भिन्न घनविषै जेतेका घन करना होइ ताका अंश अर हार दोऊ तीन जायगा स्थापि गुणकारवत् अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन करनां । जैसे पच्चीसका चौथाईका घन करनां होइ त

तीह प्रमाण तीन राशि स्थिति ११:११:११ अंशानिकों अंशानिकरि हारनिकों हारनिकरि गुणें पंद्रह हजार छसै पञ्चसका चौसठिवां भाग प्रमाण घनराशि हो है । ११:११:११ बहुरि एकका आठवां भागका घन कीएं ११:११:११ पूर्ववत् विधानतैं एकका पांचसै बारहवां भागमात्र ११:११:११ घनराशि हो है । बहुरि चतुर्थ भाग अधिक दोगका घन करना । तहां समछेद करि जोड़ें नवका चतुर्थ भाग भया ताका पूर्ववत् घन कीएं ११:११:११ सातसै गुणतीसका चौसठिवां भाग मात्र ताका घन भया । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि भिन्न वर्गमूल विपै जाका वर्गमूल करना होइ ताके अंशनिका वर्गमूल काढें जो प्रमाण आवै सो तो ताके वर्ग मूलविपै अंश जाननां । अर हारनिका वर्गमूल काढें जो प्रमाण आवै सो तहां हार जाननां । इहां भी वर्गमूल काढनेविपै विपम समकी सहनानी करि अंत विपम विपै वर्ग घटावनां इत्यादि पूर्व विधान कथा सोई जाननां । जैसे छसै पञ्चसका छतीसवां भागका ११:११:११ वर्गमूल करना तहां पूर्ववत् विधान कीएं छसै पञ्चस अंशनिका वर्गमूल पञ्चस सो तो अंश अर छतीसका वर्गमूल छह सो हार ऐसैं ताका वर्गमूल पञ्चस छठा भाग मात्र ११:११:११ आवै है । बहुरि जहां राशि निशेष न होय तहां अवशेषके अंश करने जैसे दोगसैका छठा भागका वर्गमूल करना होइ तो पूर्वोक्त विधानतैं दोगसैका वर्गमूल चौदह अर किंचिदून च्यारिका अठाईसवां भागमात्र आवै है । तहां अपवर्तन कीएं एकका सातवां भाग मात्र भया ११:११:११ इहां समछेद करि जोड़ें किंचिदून निन्याणवैका सातवां भाग मात्र आया सो ११:११:११ तौ अंश जाननां अर छहका वर्गमूल किंचिदून दोग अर दोगका चौथा भाग आवै है । इहां भी अपवर्तन करि अर समछेदतैं जोड़ें पांचका दोग भाग मात्र आवै है सो हार जाननां ११:११:११ अर इहां निन्याणवैका पांच अर सात दोऊ हार भए तातैं तिनकों परस्पर गुणें पैतीस तौ हार हूवा अर भागहारका भागहार राशिका गुणकार होइ इस न्याय करि निन्याणवैको दोग करि गुणें एक सौ अठ्याणवै अंश हूवा । ऐसैं तिस राशिका वर्गमूल किंचित ऊन एकसौ अठ्याणवैका पैतीसवां भागमात्र हो है । ११:११:११ ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि भिन्न घनमूल विपै जाका घनमूल काढना होइ ताके अंशनिका घनमूल कीएं जो प्रमाण आवै सो तो ताके घनमूलके अंश अर हारनिका घनमूल कीएं जो प्रमाण आवै सो तहां हार जाननां । इहां भी घनमूल काढनेका विधान पूर्व जैसे घन अघनकी सहनानी करि अंत घनस्थानतैं घन घटावनां आदि विधान कथा था सोई जाननां । इहां उदाहरण—जैसे च्यारि हजार छिनवैका सताईसवां भागका घनमूल काढना होइ ११:११:११ तहां पूर्वोक्त विधानतैं च्यारि हजार छिनवै अंशनिका घनमूल काढें सोलह आए सो तो अंश अर सताईसका घनमूल काढें तीन हार भए ऐसैं ताका घनमूल सोलहका तृतीय भागमात्र आया ११:११:११ बहुरि जहां राशि निशेष न होइ तहां अवशेष विपै अंश कल्पनां जैसे वर्गमूल विपै कही थी तैसैं इहां यथा संभव करनां । या प्रकार भिन्न परि कर्माष्टक जानना ॥ अब शून्य परिकर्माष्टक कहिए हैं । इहां विदीका संकलनादि जाननां तहां संकलन विपै अंक अर विदीका जोड दीएं अंक ही रहै कछू वधै नाहीं । जैसे पचावन विपै दश जोड़े एकस्थानीय पांचा विपै विदी जोड़ें पांच ही रखा अर दशस्थानीय पांचा अर एका जोड़ें छह भया ऐसैं पैसठि हो हैं । अर विदी विपै विदी जोड़ें विदी ही रहै

जैसे दश विपै बीस जोड़िए तहां एकस्थानीय विंदीविपै विंदी जोड़ें विंदी होइ । अर दशस्थानीय एक अर दोय जोड़ें तीन होइ ऐसे तिनका जोड़ तीस हो है । बहुरि व्यक्तकृतन विपै अंक विपै विंदी घटाएं अंक ही रहै । कछु घटै नाही जैसे पैंसठि विपै दश घटाएं एकस्थानीय पांचा विपै विंदी घटै पांच ही रह्या अर दशस्थानीय छक्का विपै एक घटै पांचा भया ऐसे अवशेष पचावन रहै हैं । बहुरि विंदी विपै विंदी घटाएं विंदी रहै है । जैसे तीस विपै दश घटाएं एकस्थानीय विंदी विपै विंदी घटाएं विंदी रहै । अर दशस्थानीय तीन विपै एक घटाएं दूवा रह्या अवशेष बीस रहै हैं । बहुरि गुणाकार विपै विंदीको अंक करि वा अंकको विंदी करि गुणें विंदी ही हो है । जैसे पचासको पांचकरि गुणना ५०।५। तहां गुण्यका अंत अंक पांचताको गुणाकार पांच करि गुणें पचास भया अर ताके आगै विंदीको पांचकरि गुणें विंदी भई ऐसे दोयसे पचास भया । अथवा जैसे पांचको बीस करि गुणना ५ २० तहां दूवा करि पांचको गुणें दश भया अर आगै विंदी करि पांचको गुणें विंदी भई ऐसे एक सौ दूवा । बहुरि विंदीको विंदीकरि गुणें विंदी ही होइ । जैसे बीसको तीस करि गुण्या तहां दूवाको तीस करि गुणें साठि दूवा । अर विंदीको गुणें विंदी भई सो आगै लिखी ऐसे छहसै भया । बहुरि गुण्यराशि अर गुणकार राशिनके आगै विंदी होइ तां तिन सर्व विंदीनको मिलाय करि आगै लिखिए अर जे अवशेष गुण्य गुणकारनिके अंक रहै तिनको परस्पर गुणें जो प्रमाण आवै ताको तिन विंदीनिके पीछै लिखिए । ऐसे गुणित राशि आवै हैं । जैसे बीस अर पांचसै इनका गुणन करना २०×५०० तहां दोऊ राशिकी एक दोय विंदी मिलाएं तीन विंदी भई सो आगै लिखी । अर दूवा पांचको परस्पर गुणें दशभया सो तिनके पीछै लिख्या ऐसे गुणित राशि दश हजार प्रमाण आया । बहुरि जैसे आठ अर दोयसै अर पंद्रह लाख परस्पर गुणन करना ८×२०००×१५०००००० तहां इनकी विंदी मिलाएं सात विंदी भई सो आगै लिखी अर अंकनिको परस्पर गुणें दोयसै चालीस दूवा सो पीछै लिख्या । ऐसे दोयसै चालीस कोडि प्रमाण गुणित राशि हो है । ऐसे ही अन्यत्र जाननां । बहुरि भागहारविपै विंदीको अंकका भाग दीएं विंदी ही होइ । जैसे पचासको पांचका भाग दीया तहां भाज्य राशिका पांचको पांचका भाग दीएं एका पाया सो लिख्या बहुरि ताके आगै विंदीको पांचका भाग दीएं विंदी होइ सो लिखी ऐसे लब्ध राशि दश आवै है । बहुरि अंकको केवल विंदीका भाग दीएं अवक्तव्य प्रमाण है । जातै एकतै घटता प्रमाणका भाग दीएं लब्धराशि भाज्य राशितै बधता होइ सो एकका लाखवां भागका भाग दीएं लब्धराशि भाज्य राशितै लाख गुणा होइ । एकको कोडिवां भागका भाग दीएं कोडि गुणा होइ । ऐसे भाग हार घटतै लब्धराशि बधता होता जाय । जहां विंदीका भाग दीया तहां भागहार अवक्तव्य-पनै घटता भया तहां लब्धराशिका प्रमाण अवक्तव्य हो है । याको खहर कहिए । ख कहिए विंदी सो है हर कहिए भागहार जाका ऐसा यहू राशितै इतना कहिए । बहुरि विंदीको विंदीका भाग दीएं विंदी ही आवै है ताका उदाहरण आगै वर्गमूल घनमूलके कथनविपै लिख्या है सो जाननां बहुरि जहां भाज्य वा भागहार राशिके आगै विंदी होय तहां जेती विंदी भागहारके आगै होय

तितनी विदीनका अपवर्तन करना । जैसे बारह हजारको आठसैका भाग होइ ५२१०० तहां दोय विदीनिका अपवर्तन कीएं एकसौ बीसको आठका भाग रखा तहां लब्ध राशि पंद्रह आवै है ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि वर्ग अर घनविषै गुणकारवत् विधान जाननां । जातै दोय जायगा समान राशि मांडि परस्पर गुणन कीएं वर्ग हो है । तीन जायगा राशि मांडि परस्पर गुणन किएं घन होइ है । जैसे दोयसै एकका वर्ग चालीस हजार च्यारसै एक हो है, बहुरि एकसौ एकका घन दशलाख तीस हजार तीनसै एक हो है । बहुरि जिस राशिके आगे विदी होय तिस राशिका वर्ग करना होय तौ अंकनिका वर्ग करि आगे जेती विदी थीं तिनतै तिगुना विदी लिख देंनीं । जैसे दोयसैका वर्ग करना होय तहां दोयका वर्ग च्यारि लिखि आगे दोयतै दूणी च्यारि विदी लिखनी अर तिनका घन करना होय तौ दोयका घन आठ लिखि आगे दोयतै तिगुनी छह विदी लिखनी । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि वर्गमूल अर घनमूल विषै पूर्वै जैसे सहनानी करि वर्गमूल घनमूल काढनेका विधान कहा था सोई जाननां । इहां जहां विदीको अंकका भाग आवै तहां विदी लिखि देंनी । जैसे चालीस हजार च्यारिसै एकका वर्गमूल काढना होइ तह ३००० अंतविषम चौकाका मूल दोय लिख्या ताके आगे सम विदी ताको पाया अंक दोय ताको दूणा करि चौकाका भाग दीएं विदी पाई बहुरि इस विदीका वर्ग विदी ताको च्यारिमें घटाएं कछु न घब्या बहुरि अवशेष चौका सहित अगिला सम चालीस ताको जुदी पंक्ति विषै बीस थे तिनतै दूणें चालीसका भाग दीएं एका पाया बहुरि अवशेष एका रखा तिस विषै एकका वर्ग एक घटाएं राशि निशेष भया । ऐसै ताका वर्गमूल दोयसै एक हो है । बहुरि जैसे दसलाख तीस हजार तीनसै एकका घनमूल काढना ३३३३३ तहां अंतघन एकका घनमूल एका लिखि एका दूरि कीया आगे घनविदी ताको पाया अंक एकाका वर्गतै तिगुणा तीन ताका भाग दीएं विदी पाई सो तिस एकाके आगे लिखी बहुरि ताके आगे अघन ही तीया ताविषै पाई जो विदी ताको पूर्वै एका था ताकरि गुणें विदी भई ताको तिगुणा किएं भी विदी रही ताको घटाएं भी तहां तीन ही रखा । बहुरि इस अवशेष सहित आगे घन तीस ताविषै पाई विदी ताका घन भी विदी सो घटाएं तीस ही रखा । बहुरि इस सहित अगिला अघन तीनसै तीन ताको जुदी पंक्ति विषै दश थे तिनका वर्ग करि तिगुणा कीएं तीनसै हूवा ताका भाग दीएं एका आया सो दशके आगे लिख्या । अवशेष तहां तीन रखा । बहुरि इस अवशेष सहित अगिला अघन तीस तामे पाया अंक एकाको पूर्व पंक्ति विषै तिष्ठते दश करि गुणि तिगुणा कीएं तीस होय सो घटाएं तहां किलू न रखा । बहुरि ताके आगे घन एक ताविषै पाया अंक एकका घन एक घटाएं राशि निशेष भया । ऐसै ताका घनमूल एकसो एक आवै है । बहुरि जिस राशिका वर्गमूल वा घनमूल कीएं राशिके अंक तौ निशेष होय जाय और विदी ही रहि जाय तौ तहां वर्गमूल विषै तौ जेती विदी अवशेष रहै तातै आधी विदी जुदी पंक्तिके आगे लिखनी अर घनमूल विषै तिहाई विदी लिखनी । इहां उदाहरण । जैसे—चालीस हजारका वर्गमूल काढना होइ तहां वर्गमूल काढें दोय पाया । अर च्यारि निशेष हूवा । तहां आगे च्यारि विदी थीं ताकी आधी दोय विदी

दूवा आगैं लिखनीं । ऐसैं दोयसैं वर्गमूल आया । बहुरि सत्ताईस हजारका घनमूल काढना होइ तहां घनमूल काढैं तीया पाया अर सत्ताईस निःशेष दूवा । आगैं तीन विदी थीं ताकी तिहाई एक विदी तीयाके आगैं लिखनी ऐसैं घनमूल तीस आया सो पूर्व विधानतैं भी ऐसैं ही सिद्ध हो है । परंतु सुगमताके अर्थि एक यहू भी विधान कहा है । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । या प्रकार सून्य परिकर्माष्टक कहौ ॥

बहुरि अज्ञात राशि आदि जाननेके अनेक विधान गणित ग्रंथ विषैं हैं सो इहां विशेष प्रयोजन न जानि न कहा । बहुरि त्रैराशिकका स्वरूप इस शास्त्र विषैं प्रयोजन भूत जानि कहिए हैं । तहां प्रमाण फल इच्छा ए तीन राशि जाननै । जिस प्रमाण करि जो फल निपजै सो तौ प्रमाण राशि अर फल राशि हैं । बहुरि जितनी अपनी इच्छा होइ ताका नाम इच्छा राशि है । इहां प्रमाण राशि इच्छा राशिकी तौ एक जाति है । अर फल राशिकी अन्य जाति है । सो ऐसैं ए तीन राशि स्थापि तिन विषैं फल राशिकों इच्छाराशि करि गुणिए बहुरि ताकों प्रमाण राशिका भाग दीजिए जो प्रमाण आवै सो इहां लब्ध प्रमाण जाननां । फल राशिकी अर इस लब्ध राशिकी एक जाति जाननी । इहां उदाहरण । जैसे च्यारि हाथके छिनवै अंगुल होय तौ दश हाथके केते अंगुल होय । ऐसैं त्रैराशिक किया । इहां प्रमाण राशि हाथ च्यारि अर अर फल राशि अंगुल छिनवै अर इच्छा राशि हाथ दश । तहां दशकों छिनवै करि गुणि च्यारिका भाग दीएं दोयसैं चालीस अंगुल लब्ध राशि भया । बहुरि जैसे तिहाई अधिक पंद्रह रुपैयानिका सवा पचीस मण अन्न आवै तौ आध पाव दश रुपैयोंका केता आवै इहां भिन्न गणित आश्रयतैं अंशनिकों जोडै प्रमाण राशि छियालीसका तीसरा भाग फल राशि एकसौ एकका चौथा भाग इच्छा राशि इक्यासीका आठवां भाग प्र. १६/३. १२/३. इ. १२/३ इहां भिन्न गणित विधानतैं फलकों इच्छा करि गुणै आठ हजार एकसौ इक्यासीका बत्तीसवां भाग भया याकों प्रमाणका भाग दीएं चौईस हजार पांचसै तियालीसकों चौदहसै बहत्तरिका भाग आया । ताका सोलह अर किंचिदून दोय तिण मात्र प्रमाण आया । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि जहां जिस राशिका प्रमाण वधै फल थोरा होइ प्रमाण घटै फल बहुत होइ तहां व्यस्त त्रैराशिक हो है । इहां प्रमाण राशिकों फल करि गुणि इच्छाका भाग दीएं लब्ध राशिका प्रमाण हो है । जैसे जिस वस्तुका दोय वरस पुराणीका सौ रुपैया आवै तो दश वरस पुराणीका केता रुपैया आवै । इहां प्रमाण राशि दोयकों फल राशि सौ करि गुणि इच्छा राशि दशका भाग दीएं बीस रुपैया अथि सो लब्ध-राशि जाननां । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि पांच राशि सप्तराशि आदि विषैं प्रमाणराशि संबधी दोय तीन आदि राशि होय सो तो एक तरफ नीचै नीचै लिखिए अर वाहीके नीचै फल राशि लिखिए । अर इच्छा राशिसम्बन्धी दोय तीन आदि राशि होइ सो दूसरी तरफ लिखिए । बहुरि प्रमाणका फल राशि होइ ताकों इच्छा राशिकी तरफ लिखि दोऊ तरफ जे राशि होइ तिनका जुदा परस्पर गुणन करि बहुत प्रमाणको स्तोक प्रमाणका

भाग दीएं जो प्रमाण आवैं सो इच्छा राशिका फलभूत लब्धराशि जाननां । इहां उदाहरण । जैसे एक मास विषै सौ रुपयोंका दोय रुपये व्याज आवैं तौ पांच मासविषै दोयसै पैसठि रुपयोंका कितना व्याज आवैं । ऐसै पंचराशिक भया । तहां एक अर सौ तौ प्रमाण राशि ताकों एक तरफ लिखै अर ताके नाचै दोय फलराशि लिखै अर पांच दोयसै पैसठि इच्छाराशि सो एक तरफ लिखै । ३३ ॥ ३३ ॥ बहुरि फलराशिकों तहांतै दूसरी इच्छाकी तरफ लिखै ऐसा ३३ ॥ ३३ ॥ बहुरि परस्पर दोऊनिकों जुदे जुदे गुणें एक तरफ सौ भये एक तरफ छबीससै पचास भए । बहुरि बहुत राशिकों तुच्छ राशिका भाग दीएं साढा छबीस रुपैया आए सोई इच्छा राशिका फलभूत लब्धराशि जाननां । बहुरि जो प्रमाणादि अंश अर हाररूप होइ तौ तहां पूर्ववत् फल राशिकों पलटि पीछै दोऊ तरफके हारनिकों परस्पर पलटि दीजिए । बहुरि दोऊ तरफके जुदे जुदे हार अंश होहिं तिनौं परस्पर करि गुणि बहुत राशिकों अल्पराशिका भाग दीएं । लब्ध राशिका प्रमाण आवैं है । इहां उदाहरण । जैसे—सवामास विषै साढासात रुपयोंका आधा रुपैया व्याज आवैं तौ साढा छह महीना विषै सवावारह रुपयोंका केता व्याज आवैं । इहां भिन्न गणिततै अंश अंशनिकों मिलाएं प्रमाणराशि पांचका चौथा भाग अर पंद्रहका दूजा भाग भया फलराशि एकका दूजा भाग है इच्छा राशि तेरहका दूजा भाग अर गुणचासका चौथा भाग भया । सो ऐसै लिखि ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ फलराशिकों पलटि हारनिकों पलटै ऐसा भया ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ १ बहुरि अंश हारनिका गुणन कीएं एक तरफ तौ बारहसै ३३ ॥ ३३ ॥ आए । एकतरफ पांच हजार छिनवै आया । बहुरि बहुत राशिकों अल्प राशिका भाग दीएं किंचित उन सवा च्यारि रुपैया लब्धराशि आया उनका प्रमाण एकका तीनसै भाग कीजै तामें एक भागमात्र जाननां । ऐसैही अन्यत्र जाननां । बहुरि इसही विधानतै सप्तराशिक नवराशिक एकादशराशिक हो है । सो इहां विशेष प्रयोजन न जानि नाहीं लिखै हैं । बहुरि मिश्रक व्यवहारका विशेष प्रयोजन इहां नाहीं लिख्या हैं । कहीं प्रयोजन आवैगा तो तहां ही वर्णन लिखैगे ॥

बहुरि श्रेढी व्यवहार लिखिए है । जहां अनेक राशिनि विषै समानरूप वधता व घटता प्रमाण होइ अथवा गुणकार होइ तहां श्रेढी व्यवहार गणितका विधान हो है । जैसे आदि विषै पांच अर स्थान प्रति च्यारि च्यारि वधता वा घटता होइ अथवा च्यारिका गुणाकार होइ । ऐसै दशस्थान होइ तहां आदि श्रेढी व्यवहार गणितका विधान हो है तहां संज्ञा कहिए हैं । जो आदि विषै प्रमाण होइ ताका नाम आदि हैं वा मुख है वा प्रभव है । बहुरि अंत विषै प्रमाण होइ ताका नाम अंत है वा भूमि है । बहुरि स्थान स्थान प्रति जितना वधै वा घटै ताका नाम चय है वा उत्तर है । बहुरि जो स्थान स्थान प्रति गुणकार होय तौ जेतका गुणकार होय ताका नाम उत्तर है वा गुण है । बहुरि चयकरि वधता वा घटता अथवा गुणकाररूप जेतै राशिरूप स्थान होइ ताका नाम पद है वा गच्छ है । बहुरि सर्व स्थानानिके जोड़का नाम सर्वधन है वा पदधन है । बहुरि चयनिकों जुदे राशि आदि स्थान प्रमाण सर्व स्थान स्थापि तिनके जोड़का नाम आदि धन है । बहुरि सर्व चयनिकों जोड़ें जो प्रमाण होय

ताका नाम चयधन है वा उतरधन है । बहुरि मध्यस्थान विपै जेता प्रमाण होइ ताका नाम मध्यधन है । इत्यादि ऐसै संज्ञा जाननी । बहुरि अनेक प्रमाण जाननेके साधनभूत करणसूत्र गणित शास्त्रनि विपै कहे हैं तहां जानने । अर इस शास्त्र विपै जाका प्रयोजन आवैगा ताका करणसूत्र इस शास्त्र ही विपै लिखे हैं । तातैं जहां प्रयोजन आवे तहां ही तिनको जानि लेंने । बहुरि क्षेत्र व्यवहार कहिए है । इस शास्त्र विपै क्षेत्रका अधिकार है तातैं क्षेत्रव्यवहारका ज्ञान अवसि चाहिए । तहां प्रथम संज्ञा कहिए है । लंबाई चौडाई उचाई इन तीनां विपै जहां एक ही की विवक्षा होइ दोयकी न होइ तहां सूची क्षेत्र कहिए । बहुरि जहां दोयकी विवक्षा होइ एककी न होइ तहां प्रतरक्षेत्र कहिए वा वर्गरूप क्षेत्र कहिए । बहुरि जहां तीनांकी विवक्षा होइ तहां खात क्षेत्र कहिए वा घन क्षेत्र कहिए । ऐसैं तीन प्रकार क्षेत्र कहा । तिनमें सूची क्षेत्र विपै तौ आकारादि विशेष वा क्षेत्रफलादिक विशेष हैं नाहीं । जेता लंबाईका प्रमाण सोई तिस सूची क्षेत्रका प्रमाण है । जैसे—पच्चीस हाथ डोरि कहिए । बहुरि प्रतर क्षेत्र विपै आकार विशेष है सो कहिए है । तीन च्यारि कूणें जिनमें पाईए तिन क्षेत्रनिका क्रमतैं त्रिकोण चतुःकोण नाम जानने । बहुरि एक कोणतैं दूसरा कौण पर्यंत जेता क्षेत्र होइ ताका नाम भुजा है सो त्रिकोण क्षेत्रविपै तीन भुजा हो हैं तातैं ताका नाम त्रिभुज भी कहिए । चतुःकोण विपै च्यारि भुजा हैं तातैं ताका नाम चतुर्भुज भी कहिए । बहुरि इन भुजनि विपै काहूका नाम भुज वा काहूका नाम कोटि भी कहिए है । जैसे त्रिभुज क्षेत्र विपै एक भुजाको कोटि कहिए दोय भुजानिकों भुज कहिए । चतुर्भुज क्षेत्र विपै सन्मुख दोय भुजानिका नाम कोटि कहिए । अवशेष दोय भुजानिका नाम भुजा कहिए । बहुरि इन त्रिभुज आदि क्षेत्रनिका तिस्र चतुस्र आदि भी नाम है । भाषा विपै तिकूटा चौकोर इत्यादि नाम हैं । बहुरि ए त्रिभुजादिक क्षेत्र अनेक प्रकार हैं । तहां जिस त्रिभुज क्षेत्रके दोय भुजा सूधी एक ठेडी ऐसी..... होय ताको जाति त्रिभुज कहिए । तहां जो यहू ठेडी भुजा है ताका नाम कर्ण है वा श्रुति है । जैसे पांच हाथ ऊंचा वांसके उपरितैं सूत्र लगाय तिस वांसतैं सात हाथ परैं पृथ्वी विपै सूत्र स्थाप्या तिस सूत्रका जेता प्रमाण ताका नाम कर्ण जाननां । बहुरि जहां एक भुज सूधी दोय ठेडी होय तहां.....सिंघाडाकासा ऐसा त्रिभुज क्षेत्र होइ । याका मध्यतैं दोय भाग करिए सो दोय जाति त्रिभुज होइ जाय । बहुरि इन तीनों भुजानि विपै समान प्रमाण होइ वा अधिक हीन होइ तौ तहां सम विषम संज्ञा यथासंभव जाननां । बहुरि चतुर्भुज क्षेत्र विपै जहां समान प्रमाण लीएं च्यारौं भुज ऐसैं होइ.....ताका नाम सम चतुर्भुज कहिए । बहुरि लंबाई चौडाई विपै एकका प्रमाण हीन एकका अधिक ऐसा.....होइ ताका नाम आयत चतुरस्र कहिए । बहुरि जहां च्यारौं भुजानि विपै काहूका प्रमाण हीन काहूका अधिक ऐसैं.....होइ ताका नाम विषम चतुर्भुज है । बहुरि जिस क्षेत्रके पांच कूणे छह कूणे आदि होइ ताका नाम पंचकोण षटकोण कहिए । भाषाविपै पंच पहलू छह पहलू इत्यादि नाम हैं । तहां पंच कोणादि क्षेत्रनि विपै सम प्रमाण भएँ समसंज्ञा विषम प्रमाण भएँ विषम संज्ञा इत्यादि संज्ञा जाननी । इन क्षेत्र-

निके गिरदका जो प्रमाण ताका नाम परिधि है । बहुरि जहां गोलाकार लिये क्षेत्र ऐसा होइ । ताका नाम वृत्त क्षेत्र वा गोलक्षेत्र कहिए । तिस क्षेत्र विषै वीचमें जेता प्रमाण ताका नाम वृत्त विष्कंभ है वा विस्तार है वा व्यास है । बहुरि इसके गिरदका जेता प्रमाण होइ ताका नाम परिधि है । बहुरि जो गोलक्षेत्रके चौगिरदा गोलक्षेत्र ऐसा होइ तहां याके अभ्यंतर तटतै वाह्य-तटपर्यंत जेता प्रमाण होइ ताका नाम वलय व्यास है । बहुरि अभ्यंतर दोऊ तटनिके वीचि जेता प्रमाण होइ ताका नाम अभ्यंतर सूची व्यास है । अर बाह्य दोऊ तटनिके वीचि जेता अंतराल ताका नाम बाह्य सूची व्यास है । बहुरि अभ्यंतर तटके गिरदका जो प्रमाण ताका नाम अभ्यंतर परिधि है । बाह्य तटका गिरदका जो प्रमाण ताका नाम बाह्य परिधि है । इत्यादि संज्ञा जाननी । बहुरि जो धनुपके आकार ऐसा.....क्षेत्र होइ ताका नाम धनुपाकार क्षेत्र कहिए वा चापक्षेत्र कहिए तिसक्षेत्र विषै जो सूया प्रयंचावत् लंबाईका प्रमाण ताका नाम जीवा है वा ज्या है । बहुरि तिस जीवाकी एक तरफतै लगाय दूजी तरफ धनुपकी पीठिवत् आधा गोल क्षेत्रकी परिधि रूप गिरदका प्रमाण ताका नाम धनुःपृष्ठ है । बहुरि तिस जीवाकी मध्यतै लगता धनुःपृष्ठका मध्यवर्त्तपर्यंत वाणवत् सूया क्षेत्र ताका प्रमाणका नाम वाण है । बहुरि जो जीवाकी चौडाई बहुत होय तौ तिस जीवाकी छोटा तटतै बड़ातट दोऊ तरफ जितनां जितनां बवता होइ ताका नाम चूल्का है । बहुरि बड़ा तटतै छोटा तटपर्यंत जेता परिधिका प्रमाणरूप धनुः पृष्ठ रूप होय ताका नाम पार्श्वभुजा है । इत्यादि संज्ञा जाननी । बहुरि अन्य अनेक आकार लीएं क्षेत्र हैं तिनका स्वरूप संज्ञादिक गणित शास्त्रनि विषै क्षेत्रव्यवहार विषै कह्या है वा इस शास्त्र विषै जाका वर्णन होइना ताका तहांही स्वरूप संज्ञादिक लिखेंगे ते जाननै । बहुरि ऐसै जे ए क्षेत्र हैं तिनिका विवक्षित योजनादिरूप चौडा लंबा खंड कल्पना करि प्रमाण कीजिए ताका नाम क्षेत्र फल है । प्रवृत्ति विषै याका नाम मुकसर करना कहिए हैं । जैसे च्यारि हाथ लंबा पांच हाथ चौडा क्षेत्र ताका क्षेत्रफल वासहाथ हूवा । तहां ऐसा भाव जाननां । तिसक्षेत्रके एक हाथ लंबा एक हाथ चौडा ऐसे खंड कीजिए तौ वीस होइ । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । ऐसै प्रतर क्षेत्रका स्वरूप संज्ञादिक कहे ॥ अब घन क्षेत्रका कहिए है । जहां ऊंचाई तथा ओंडाई भी होइ तहां घन क्षेत्रहो हैं ऊंचाई ओंडाईका भाव एक है । नीचेतै ऊपरकी विवक्षा होइ तौ ऊंचाई कहिए । ऊपर तै नीचेकी विवक्षा होइ तौ ओंडाई कहिए । सो याका नामा वेध है वा खात है वा उच्चत्व है इत्यादि नाम हैं । बहुरि जो याका क्षेत्रफल करिए ताका नाम खात फल वा घन फल जानना । इहां विवक्षित चौडा लंबा ऊंचा खंड कल्पना करि प्रमाण कीजिए । जैसे च्यारि हाथ लंबा च्यारि हाथ चौडा पांच हाथ ऊंचा क्षेत्रका खात फल अस्सी हाथ होइ तहां ऐसा भाव जाननां । एकहाथ लंबा एक हाथ चौडा एक हाथ ऊंचा ऐसै खंड कीजिए तौ अस्सी होइ । बहुरि जो समभूमि उपरि अन्नादिकका राशि करिए ताका क्षेत्रफलको सूची फल कहिए है । बहुरि कोई गिंदडीके आकारि क्षेत्र होई कोई वावडाके आकार होइ इत्यादि घनरूप विषै भी अनेक आकार पाईए है । ऐसै ही और भी संज्ञा स्वरूप जाननां । बहुरि जो क्षेत्र अनेक आकार लीएं होइ तिसक्षेत्र विषै

संभवते जुदे जुदे आकार कल्पना करने । जैसे ऐसा.....आकार रूप क्षेत्र विषै एक चतुर्भुज एक त्रिभुज.....ऐसै द्योय खंड कल्पने बहुरि तिन खंडनिके जुदे जुदे क्षेत्रफल करि जोडै तिसका क्षेत्रफल हो है । बहुरि कहीं त्रिभुज क्षेत्र विषै अनेक प्रकार खंड कल्पना करि तिनके क्षेत्रफल करि जोडि तिस क्षेत्रका क्षेत्रफल कहिये है । ऐसै क्षेत्र व्यवहार विषै केती इक संज्ञा वा तिनका स्वरूप इहां कह्या बहुरि इन विषै किसीका प्रमाण जानि किसीका प्रमाण जाननेके अर्थि करणसूत्र हो हैं । जैसे त्रिभुजक्षेत्र विषै भुजकोटि कहि करण जाननेकों करणसूत्र कहिए । वा गोल क्षेत्रविषै व्यास कहि परिधि जाननेकों करणसूत्र कहिए सर्व विधि क्षेत्रनि विषै प्रमाण जानि क्षेत्र फल जाननेकों करणसूत्र कहिए । सो करणसूत्र गणित शास्त्रनि विषै कहे हैं । अर इस शास्त्र विषै जिनका प्रयोजन पाईए है ते करणसूत्र इस ही शास्त्र विषै भी कहे हैं । सो जहां वर्णन होइगा तहां तिनकों जानने । ऐसै क्षेत्र व्यवहार कह्या । या प्रकार कळू गणित वर्णन इहां लौकिक गणित अपेक्षा कीया ॥

बहुरि अलौकिक गणित अपेक्षा अलौकिक गणितनिकी संदृष्टि वा संकलनादिककी संदृष्टिका वर्णन गोमट्टसार शास्त्रकी भाषा टीका विषै संदृष्टि अधिकार कीया है तहां लिखी है सो तहांतै जाननी । उहां विशेष प्रयोजन जानि विशेष लिखी है । इहां स्तोक प्रयोजन जानि स्तोकसा वर्णन लिखिए है । तहां अलौकिक गणित लिखनेमें ऐसी संदृष्टि जाननी । सामान्यपनै संख्यातकी ऐसी....असंख्यातकी ऐसी....अनंतकी ऐसी ख । विशेषपनै जघन्य संख्यात द्योय ताकी ऐसी २ मध्यम संख्यातकी अनेक प्रकार उत्कृष्ट संख्यातकी ऐसी १५ अथवा ऐसी १६ । इहां जघन्य परीतासंख्यात विषै एक घटावनेकी ऊपर सहनानी है ऐसै ही अन्यत्र जानना । बहुरि जघन्य परीता संख्यातकी ऐसी १६ मध्य परीतासंख्यातकी नाना प्रकार उत्कृष्ट परीता संख्यातकी ऐसी २ जघन्य युक्तासंख्यातकी ऐसी २ यहू ही आवलीकी सहनानी हैं । मध्य युक्तासंख्यातकी नाना प्रकार उत्कृष्ट युक्तासंख्यातकी २ जघन्य असंख्यातासंख्यातकी ऐसी ४ सोई प्रतरावलीकी सहनानी हैं । मध्य असंख्यातासंख्यात विषै आठ उपमा प्रमाण पाईए है । तिन विषै पत्यकी ऐसी ५ सागरकी ऐसी सा सूच्यंगुलकी ऐसी २ प्रतरांगुलकी ऐसी ४ घनांगुलकी ऐसी ६ जगच्छेणीकी ऐसी—जगत्प्रतरकी ऐसी=घनलोककी ऐसी ≡ बहुरि इहां ही जगच्छेणीकों सातका भाग दीएं श्रेणीरूप राजू हो है ताकी ऐसी ७ जगत्प्रतरकों गुणचासका भाग दीएं प्रतर राजू हो है ताकी ऐसी ८ घनलोककों तीनसै तियालीसका भाग दीएं घनरूप राजू हो है ताकी ऐसी ३३ बहुरि अन्य भेदनिकी अनेक प्रकार उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातकी ऐसी २५५ अथवा ऐसी २५६ बहुरि जघन्य परीतानंतकी ऐसी २५६ मध्य परीतानंतकी नाना प्रकार उत्कृष्ट परीतानंतकी ऐसी ज ज अ जघन्य युक्तानंतकी ऐसी ज जु अ मध्य युक्तानंतकी नाना प्रकार उत्कृष्ट युक्तानंतकी ऐसी ज जुं अ ब जघन्य अनंतानंतकी ज जु अ व मध्य अनंतानंत विषै जीव राशिकी ऐसी १६ इहां भी संसारी जीव राशिकी ऐसी १३ सिद्ध राशिकी ऐसी ३ पुद्गल राशिकी ऐसी १६ ख अन्य भेदनिकी यथा योग्य अनेक प्रकार उत्कृष्ट अनंतानंतकी केवलज्ञान प्रमाणरूप ताकी ऐसी (के) ऐसै अलौकिक

गणित विषै संदष्टि जाननी । बहुरि इनके संकलनादि विषै जैसे लौकिक गणित विषै लिखनेका विधान कथा तैसे ही इहां जाननां । जैसे पंच अधिक हजार ऐसे लिखिए १०००, तैसे ही सूर्यगुल अधिक जगद्वेणीको ऐसे लिखिए २ । बहुरि जैसे पांच गुणा हजार ऐसे १०००।५ लिखिए तैसे ही असंख्यात गुणा लोक ऐसे लिखिए ∞ १ इत्यादि जाननां । बहुरि राशि ऊपर किंचित् मिलावनां होइ तहां उपरि ऊभी लीक करि दीजिए । जैसे किंचित् अधिक लोककी संदष्टि ऐसी ∞ बहुरि राशि विषै किंचित् घटावना होइ तहां आगे आडी लीक करि दीजिए । जैसे किंचित् नून जीव राशिकी संदष्टि ऐसी १६—बहुरि गुणकारादि विषै जैसे लौकिक गणित विषै वर्णन किया है तैसे ही जाननां । विशेष इतनां इहां जैसा जहां संभवै तैसा तहां अलौकिक संदष्टि रूप प्रमाण जाननां । बहुरि कहीं अक्षरादि रूप सहनानी है । जैसे अर्द्धछेदनिकी संदष्टि ऐसी (छे) बहुरि अन्य अनेक प्रकार लौकिक संदष्टि जाननी । ऐसे अलौकिक गणित विषै सरूप दिखाया सो इस शास्त्रविषै जहां प्रयोजन आवैगा तहां लिखन होगा सो जाननां ॥



इति परिशिष्ट समाप्त.

श्रीमन्नेमिचंद्राचार्यविरचित

त्रिलोकसार

पंडितवर श्रीटोडरमल्लकृत हिंदीभाषाटीका सहित ।

दोहा—त्रिभुवनसार अपारगुन, ज्ञायक नायकसंत ।
त्रिभुवनहितकारी नमौ, श्री अरहंत महंत ॥ १ ॥
तीनभवनके मुकुट मनि, गुन अनंतमय शुद्ध ।
नमों सिद्ध परमात्मा, वीतराग अविरुद्ध ॥ २ ॥
तीनभुवनधिति जानिके, आप आपमय होय ।
परतें भये विरक्त अति, नमों महामुनि सोय ॥ ३ ॥
तीनभुवन मंदिर विषे, अर्थ प्रकासन हार ।
जैनवचनदीपक नमों, ज्ञानकरन गुनधार ॥ ४ ॥
तीनभुवनमहिं जे लसैं, चैत्यचैत्यग्रहसार ।
ते सब वंदौं भावजुत, सुभकारन सुखकार ॥ ५ ॥
ऐसें मंगलरूप सब, तिनके वंदे पांय ।
अब किछु रचना कहत हौं, नानाविधि सुखदाय ॥ ६ ॥

अथ मंगलाचरण करि श्रीमत् त्रिलोकसार नाम शास्त्रकी भाषाटीका करिए हैं । अब संस्कृत-टीका अनुसार लिए मूलशास्त्रका अर्थ लिखिए हैं ।

कवित्त—तीनभुवन शशि जिनपतिकों अति भक्तिभावतें करि नति सार,
ग्रंथ त्रिलोकसारकी टीका परकासों विधितें सुखकार ।
किंचिन्मात्र ज्ञानके धारी भव्य जीव जे हैं रुचिधार,
तिनके संबोधनकों कारण ऐसा जानहु भव्यविचार ॥ १ ॥

अडिळ—अकलंकादिक सूरि भूरि गुणमंत हैं, अतुलधर्मके धारक जगि जयवंत हैं ।
जिनमततें विपरीत कुमतमत वादधर, वादिसमूह नमाए जैन उद्योतकर ॥ २ ॥
जातें सर्व बुधनिकों विस्मयकारिणी, जाकी भई प्रवृत्ति महागुन धारिणी ।
दोष रहत जिनमतसो दूरि करो सदा, सघनकुमतितम पुंज वहुदि होइ न कदा ॥३॥

१ यहाँसे आगे “इस शास्त्रकी संस्कृतटीका पूर्वे” इत्यादि पाठ परिशिष्टमें लगाया जायगा । पाठक-गण वहाँ ही देख लें ।

ऐसे संस्कृत टीकाकार मंगल्यचरण कहैं हैं । श्रीमान् बहुरि काहूकरि हय्यां न जाइ बहुरि प्रतिमान जो मर्यादारूप प्रमाण ताकरि रहत बहुरि प्रतिपक्षी कर्मकरि रहत बहुरि इंद्रियसहायकरि रहित बहुरि इंद्रियवत् अनुक्रमतैं जाननेतैं रहत ऐसा जो केवलज्ञानरूपी तीसरा नेत्र ताकरि अवलोकै हैं सकल पदार्थनिका समूह जिहिं ऐसा, बहुरि संसारदुःखतैं राखे हैं देवेन्द्रनरेंद्र मुनींद्रनिका समूह जिहिं ऐसा, बहुरि तीर्थकर प्रकृतिरूप पुण्यकी महिमाका अवलंबनतैं उत्पन्न भया है समवसरण आठ प्रातिहार्य चौतीस अतिशय आदि बहिरंग लक्ष्मीकी विशेष जाके ऐसा, बहुरि निर्मूल कीए हैं अठारह दोष जाने ऐंसा, बहुरि सर्वांगपनें करि आलिंगनरूप करी है अनंत चतुष्टयादिक गुण समूहरूप अंतरंग लक्ष्मी ताकरि प्रकट किया है परमात्मस्वरूप प्रभाव जानैं ऐसा जो श्रीवर्धमान नामा तीर्थकर देव तीह तो सर्व भाषामई दिव्यध्वनि करि जाका अर्थ किया है । बहुरि सात ऋद्धिनिकरि संपूर्ण जो गोतमस्वामी समस्त विद्याका परमईश्वर केवली तीह जाका शब्दरचनाका विशेष रच्या है । बहुरि तिस अर्थका ज्ञान अर कवित्वादि विज्ञानकरि संयुक्त बहुरि पापतैं भयभीत ऐंसा जु गुरु तिनकी परंपराका अनुक्रमतैंकरि विच्छेदरहित प्रवृत्तिरूप है । बहुरि सूत्रका अर्थ अन्यथा होइ नष्ट न भया है तातैं केवल ज्ञानहीके समान है-ऐसा जु करणानुयोग नामा परमागम ताहि कालके अनुसार संक्षेपरूपकरि निरूपण करनेका है अभिलाष जाका ऐसा जो भगवान नेमिचंद्र नामा सैद्धांतदेव चारि अनुयोगरूपी चारि समुद्रनिका पारगाभी सो चामुंडरायके संबोधनेका मिसकरि समस्त शिष्यजननिके संबोधनेके अर्थ त्रिलोकसार नामा ग्रंथको रचतासंता ताकी आदिविषै प्रथम ही निर्विघ्नपनें शास्त्रकी समाप्तता होइ इत्यादि फलसमूहको विचार विशिष्ट जो अपना इष्टदेवता ताहि स्तवै है;—

बलगोविंदसिहामणिकिरणकलावरुणचरणणहकिरणं ।

विमलयरणेमिचंद्रं तिहुवणचंद्रं णमंसाभि ॥ १ ॥

बलगोविन्दशिखामणिकिरणकलापारुणचरणनखकिरणम् ।

विमलतरनेमिचंद्रं त्रिभुवनचंद्रं नमस्यामि ॥ १ ॥

अर्थ—कहिये हैं । **नमस्यामि** कहिए नमस्कार करौं हौं । किसहिं नमस्कार करौ हौं । **विमलतरनेमिचंद्रं** विगत कहिए विनष्ट भया है मल कहिए द्रव्यभाव भेदको लिए आत्माके गुणका घातक कर्म वा शरीरका मल धातु जातैं सो विमल जानना । बहुरि आप विशुद्धताका जु उदय ताकी परम उत्कृष्टताको प्राप्त होतसंता अन्य जे आपको आश्रित भए भव्य जीव तिनिके भी कर्ममलके दूरि करनेको कारण हैं तातैं अतिसय करि विमल है सो विमलतर जानना । इस विशेषणकर अपाय अतिशय प्रगट किया । अपाय नाम नासका है सो इंद्रादिक भी जाके नाश करनेको समर्थ नाही ऐसे कर्ममलका नाश किया ऐसा अतिशय भगवंतविषै ही है । ऐसा इस विशेषणका अभिप्राय है । बहुरि नेमिनाथ नामा बावीसवां तीर्थकर परमदेव सो नेमिचंद्र जानना । विमलतर जो नेमिचंद्र ताहि नमस्कार करौं हौं । कैसा है विमलतर नेमिचंद्र । **त्रिभुवनचंद्रं** त्रिभुवन कहिये तीन लोक तिनका चंद्र कहिए चंद्रमावत् प्रकास करनहारा है । **भावार्थ**—तीन लोकके

स्वरूपका उपदेस दाता है वा तीन लोकके स्वरूपका ज्ञाता है । इस विशेषणकर वाक् अतिशय वा प्राप्ति अतिशय प्रगट किया है । तहां वाक् नाम वानीका है, सो गणधर इंद्रादिकनिके वचनतैं अगोचर ऐसा तीन लोकका स्वरूप वानीकरि कहिये हैं ऐसा वाक् अतिशय भगवंत विषैं है । बहुरि प्राप्ति नाम लाभका है सो गणधर इंद्रादिकके ज्ञानतैं अगोचर ऐसा तीन लोकका ज्ञायक केवल ज्ञानका लाभ भया है ऐसा प्राप्ति अतिशय भगवंतविषैं है । बहुरि 'त्रिभुवनचंद्र' ऐसा विशेषण इस अवसर विषैं योग्य है जातैं तीन लोकके स्वरूपका निरूपण विषैं किया है उद्यम जानैं ऐसा जो आचार्य ताकैं शब्द ज्योतिकरि वा ज्ञानज्योतिकरि तीन लोकके स्वरूपका प्रकाशककों ही नमस्कार करना योग्य ही है । बहुरि कैसा है विमलतर नेमिचंद्र । **बलगोविंदशिखामणिकिरणकलापारुण-चरणनखकिरणं** बलगोविंद कहिए अपने चरणकमलकों नमस्कार करते जे बलभद्र नारायण तिनका शिखामणि कहिए मुकुटका अप्रभागविषैं लगा हुआ पद्मरागमणि ताकी जु किरणकलाप कहिये प्रभातका सूर्यवत् किरणनिका समूह ताकरि अरुण कहिए अतिरक्त भया है चरणनखकिरण कहिए चरणकमलके नखनिकी किरणनिका पुंज जाका ऐसा है । इस विशेषणकर भगवंतका पूजा अतिशय और अतिशयनिका सहचारी प्रगट किया । पूजा नाम पूजनेका है सो जिनको लोकविषैं पूज्य मानिए हैं ऐसे बलभद्र नारायण तेऊ भगवंतके चरणकमलकों पूजैं हैं ऐसा पूजा अतिशय भगवंतविषैं है । इहां प्रासंगिक श्लोक कहिए हैं " अपाय " इत्यादि । याका अर्थ—अपायप्राप्ति वाक् पूजारूप अतिशय बहुरि निरालंब विहार वा स्थिति वा आहारादिक विना शरीरकी प्रवृत्ति इत्यादिक ये प्रगट जिनदेवके अतिशय हैं । अथवा अन्य अर्थ कहिए हैं 'नमस्यामि' कहिए नमों हों । काहि " विमलतरनेमिचंद्र " नेमि ऐसा नाम चक्रधुरा जो पद्माकी धुर ताका है । सो जैसे चक्रधरा रथके चलनेकों कारण है तैसे धर्मरथके प्रवृत्तनेकों कारण है तातैं नेमि कहिए । बहुरि चंद्रयति कहिए तीन लोकके भय जीवनिके नेत्र अर मनकों आल्हाद करै है तातैं चंद्र कहिए । **भावार्थ**—इंद्रादिककैं भी न संभवे ऐसा जो रूप अतिशय ताकरि संयुक्त हैं । नेमि अर सोई चंद्र सो नेमिचंद्र अर विमलतर कहिए अतिशयकर निर्मल ऐसो जो नेमिचंद्र सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए । अथवा नयति कहिए यथार्थ पदार्थ ताकौ जानैं ऐसा जु नेमि कहिए ज्ञान बहुरि विगत भया है मल कहिए अज्ञान जातैं सो विमल अतिशय कर विमल होइ सो विमलतर कहिए । विमलतर जो नेमि सो विमलतर नेमि सकल विमल केवलज्ञान जानना । तिंह करि संयुक्त जो चंद्र कहिए आल्हादकारी सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए । अथवा विमलतराः कहिए रत्नत्रयकर पवित्र भया है आत्मा जिनका ऐसे जु आचार्यादिक तेई भए नेमि कहिए नक्षत्र तिनका चंद्र कहिए जैसे नक्षत्रनिका स्वामी चंद्रमा है तैसे जो स्वामी सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए । ऐसैं विमलतर नेमिचंद्र जो अंतका वर्द्धमान तीर्थकर देव वा चौबीस तीर्थकरनिका समुदाय ताहि नमों हों । कैसा है । त्रिभुवनचंद्र त्रिभुवन कहिए तीन लोकविषैं तिष्ठता विनयवान् तिनका चंद्रमावत् अज्ञान अंधकार नाश करै हैं ऐसा है । बहुरि कैसा है ।

' बलगोविंद ' इत्यादि, जंबूद्वीपका परिवर्तनरूप जो पराक्रम सामर्थ्य सो बल अथवा प्रती-द्रादिक देवनिका सैन्य सो बल वा अतिमनोहर रूप सो बल जाके पाइए ताकौ बल कहिए । यहां

प्रासंगिक श्लोक “ बल ” इत्यादि है । याका अर्थ—शक्ति अर सैन्य अर स्थूलपनौ अर रूप इनका नाम बल है सो यह बल शब्द नपुसंकलिंगी है बहुरि बल वीर्य अर दैत्य अर काक अर बलवान् इनका नाम बल है । सो यह बल शब्द पुरुषकलिंगी है सो यहां बलशब्द करि शक्ति सैन्य रूप—ए तीन अर्थ ग्रहे । बहुरि गां कहिए स्वर्ग ताहि विंदति कहिए पाळै सो गोविंद देवनिका इंद्र जानना । बल अर सोई गोविंद सो बलगोविंद ताकी शिखामणिकी किरणनिका समूहकरि अरुण भए हैं चरणनिके नखनिका किरण जाकी ऐसा है । भावार्थ—भक्तिके समूहतैं नम्रीभूत भए इंद्रादिक समस्त देव तिनिकी मुकुटमणिकी किरणनिकी पंक्तिकरि रक्त किया है चरणके नखनिकी किरण जाकी ऐसे भगवंत हैं । अथवा अन्य अर्थ कहैं हैं । नमस्यामि कहिए नमौं हौं । कांहि ? विमलतरनेमिचंद्र पञ्चीसमलरहित सम्यक्ततै युक्त हैं वा विशुद्धज्ञानकरि पूर्ण है वा अतीचार रहत मनोज्ञ चारित्र करि पवित्र भया है तातैं विमलतर कहिए । विमलतर जो नेमिचंद्र नामा आचार्य सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए ताहि नमौं हौं । ऐसैं चामुंडराय अपने गुरुकों नमस्कारपूर्वक इस शास्त्रकों प्रारंभै है । कैसा है । ‘ त्रिभुवनचंद्र ’ तीनलोकके जीवनकैं चंद्रमासमान धर्मरूपी अमृतके श्रवनेतैं चंद्रमा समान है । अथवा चंद्र सोनां तिह समान आदर करने योग्य है । बहुरि कैसा है । “ बल ” इत्यादि, बल कहिए बहत्तरि नियोगकी प्रवृत्तिरूप पराक्रम वा हस्ती आदि सैन्य जाके पाइए ऐसा चामुंडराय बहुरि गां कहिए पृथ्वी ताहि विंदति कहिए पाळै ऐसा गोविंद कहिए राचमल्लदेव राजा इन दोउनिकी मुकुटमणिकी किरणनिका समूह करि लाल किया हैं चरणनिके नखनिकी किरण जाकी ऐसा है । ऐसैं प्रथमसूत्रका अर्थ जानना ॥ १ ॥

आगैं पहली दूसरी जो दोय गाथा तिनकरि किया जो जिन अर जिनबिब अर जिनमंदिरनकों नमस्कार तीहकरि अहंत सिद्ध आचार्य बहुश्रुत साधु जिनवच जिनधर्म जिनबिब जिनमंदिर—ए जो नवदेवता तिनकों नमस्कार करता संता इस ग्रंथविषै पांच अधिकार हैं ताकी सूचना करता संता गाथा कहै है;—

भवणर्विन्तरजोइसविमाणणरतिरियल्लोयजिणभवणे ।

सव्वामरिंदणरवइसंपूजियवंदिए वंदे ॥ २ ॥

भवनव्यंतरज्योतिर्विमाननरतिर्यल्लोकजिनभवनानि ।

सर्वामरेंदणरपतिसंपूजितवंदितानि वंदे ॥ २ ॥

अर्थ—भवनवासीनिके भवन बहुरि व्यंतरनिके स्थान बहुरि ज्योतिष्कनिके विमान बहुरि मानुषोत्तरके अभ्यंतर मनुष्यलोक, बाह्य तिर्यचलोक इनविषै जे जिनभवन हैं सर्व देवेंद्र अर नरपति राजा तिनकरि पूजनीक हैं अर वंदनीक हैं तिनकों मैं वंदौं हौं । इस ही क्रमतैं इस ग्रंथविषै भवनवासी व्यंतर जोतिषी वैमानिक मनुष्य तिर्यच लोकका वर्णनरूप पांच अधिकार जानने । बहुरि पहले जो (भूमिकामें) मान आदिकका वा लोकादिकका वा नारकनिका वर्णन किया है सो प्रसंग पाइ किया है ॥ २ ॥

आगैं तिन जिनमंदिरनिका आधारभूत लोक सो कहां है ऐसी आशंका होत संतैं सूत्र कहैं हैं;—

सन्वागासमणतं तस्स य बहुमज्झदेसभागग्ग्हि ।

लोगोसंखपदेसो जगसैट्ठिघणप्पमाणो हु ॥ ३ ॥

सर्वाकाशमनंतं तस्य च बहुमध्यदेशभागे ।

लोकोऽसंख्यप्रदेशो जगच्छ्रेणिघनप्रमाणो हि ॥ ३ ॥

अर्थ—सर्व आकास अनंत प्रदेशी है ताका बहुमध्यदेशभागे, वहवः कहिए अतिसयरूप वा रचनारूप असंख्याते जे आकासके मध्यप्रदेश सोई भाग कहिए आकाशका खंड तिह विपै लोक है अथवा बहु कहिए आठ जे गऊका स्तनके आकारि आकाशके मध्यप्रदेश ते हैं मध्यदेशविषै जाके ऐसे खंडविषै लोक है । लोकके प्रदेश समरूप गिणती लिए हैं तातैं मध्यविषै एक प्रदेश होइ नाहीं तातैं दोय प्रदेश मध्य कहनें । अर लोक घनरूप है तातैं दोय प्रदेशनिका घनरूप क्षेत्र आठ प्रदेश प्रमाण होइ तातैं आठ हैं मध्यप्रदेश जाके ऐसा लोक कहा है । जैसे सौ हाथ चौडा सातसै हाथ लंबा चौदासै हाथ ऊंचा क्षेत्रविषै मध्यवर्ती आठ हाथ ही होय तैसे जानना । सो लोक असंख्यात प्रदेशी है सो आगे जाका स्वरूप कहिए हैं ऐसी जो जगच्छ्रेणी ताका जु घन तीह प्रमाण जानना ॥ ३ ॥

आगे लोकके स्वरूपका अन्यथा श्रद्धान दूर करनेकौ कहैं हैं;—

लोगो अकिट्ठिमो खलु अणाइण्हणो सहावणिव्वत्तो ।

जीवाजीवेहिं फुटो सन्वागासवयवो णिच्चो ॥ ४ ॥

लोकः अकृत्रिमः खलु अनादिनिधनः स्वभावनिर्वृत्तः ।

जीवाजीवैः स्फुटः सर्वाकाशावयवः नित्यः ॥ ४ ॥

अर्थ—लोकका तो अधिकार था ही बहुरि लोक शब्दका ग्रहण किया है सो लोककौ वारंवार कहि शून्यवादीके दूषनेके अर्थ लोक है ऐसा कहा है । इस विशेषण करि लोकका अभावको मानें है जो शून्यवादी ताका निराकरण किया । कैसा है लोक । अकृत्रिमः कहिए काहूकरि किया नाहीं है । इस विशेषण करि लोकका ईश्वरकौ कर्ता मानें है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । अनादिनिधनः कहिए आदि अंतकरि रहित है । इस विशेषण करि जो सृष्टि संहार माने है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । स्वभावनिर्वृत्तः कहिए सहज स्वभावतें निष्पन्न है । इस विशेषण करि परमाणुनिकरि लोकका आरंभ हो है ऐसे माननेका निराकरण किया है । बहुरि कैसा है ? जीवाजीवैः स्फुटः कहिए जीव अजीव द्रव्यनिकरि भर्या है । इस विशेषणकरि मायामई लोककौ माने है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । सर्वाकाशावयवः कहिए सर्व आकाशका अंग है । इस विशेषणकरि अलोकाकाशका अभाव मानें है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । नित्यः कहिए सास्वत है । इस विशेषणकरि लोककौ क्षणिक मानें ऐसा क्षणकमतका निराकरण किया । इतना कथनकरि लोक्यते कहिए जाविषै षट्द्रव्य देखिए सो लोक ऐसें षट् द्रव्यका समुदायकौ लोकपना कहा है ॥ ४ ॥

आगे तिस षट् द्रव्यका समुदायका आधारभूत आकाशकै लोकपना कहिए हैं;—

धम्माधम्मागासा गदिरागदि जीवपोग्लानं च ।

जावत्तावल्लोगो आयासमदो परमणंतं ॥ ५ ॥

धर्माधर्माकाशा गतिरागतिः जीवपुद्गलयोः च ।

यावत्तावल्लोक आकाशं अतः परमनंतम् ॥ ५ ॥

अर्थ—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य अर जीव पुद्गलनिका गमनागमन अर चकारतें कालाणू जे ते आकाशकों अभिव्यापक होइ वतें तितनैं आकाशकों लोक कहिए, याके परैं अलो-काकाश हे सो अनंत हे संख्यातादिरूप नाहीं हे ॥ ५ ॥

आगैं अन्यवादीनिकरि कल्पना किया हुवा लोकका आकार ताके निराकरण करनेकों कहैं हैं;—

उद्विभयदलेक्कमुरवद्धयसंचयसण्णिहो हवे लोगो ।

अद्दुदयो मुरवसमो चोदसरज्जूदओ सव्वो ॥ ६ ॥

उद्दूतदलैकमुरजध्वजसंचयसन्निभो भवेत् लोकः ।

अर्धोदयः मुरजसमः चतुर्दशरज्जूदयः सर्वः ॥ ६ ॥

अर्थ—ऊभी करी हुई आधी मृदंग सहित ऐसा ड्योड मृदंगके आकारि लोक है। कोऊ जानैगा जैसे मृदंग बीचमें सून्य हे तैसें लोक भी शून्य होगा तहां कहैं हैं कि ध्वजानिका जु समूह ताके समान मध्यविषैं भरितावस्था लिएं लोक हे । तहां अर्धमृदंगका उदयसमान अधोलोक अर एक मृदंगका उदयसमान ऊर्ध्वलोक मिलि सव लोक चौदह राजू ऊंचा जानना ॥ ६ ॥

आगैं प्रसंग पाइ राजूके स्वरूपकी प्रतीतिके अर्थ सूत्र कहैं हैं;—

जगसेदिसत्तभागो रज्जू सेढीवि पल्लेदाणं ।

होदि असंखेज्जदिमप्पमाणविंदंगुलाण हदी ॥ ७ ॥

जगच्छेणिसप्तमभागः रज्जुः श्रेणिरपि पत्यच्छेदानाम् ।

भवति असंख्येयप्रमाणवृदांगुलानां हतिः ॥ ७ ॥

अर्थ—अंकसंदष्टि दिखावनेके द्वारि गाथाका अर्थ वर्णिए हैं । जगच्छेणीका सातवां भाग प्रमाण रज्जु है । ऐसे अंकसंदष्टिकर जैसे जगच्छेणीका प्रमाण बादालकरि गुण्या हुवा एकट्ठी प्रमाण ताकों सातका भागदिएं एक भाग प्रमाण रज्जु होइ १८=४२=३ बहुरि जगच्छेणी कहा सो कहिए हैं । पत्यके जेते अर्धच्छेद हैं तिनकों असंख्यातका भाग दिएं एक भागविषैं जो प्रमाण आवै तितनैं घनांगुल मांडि तिनकों परस्पर गुणें जगच्छेणी हो है । अंक संदष्टिकरि जैसे पत्यका प्रमाण सोलह ताके अर्धच्छेद चारि ताकों असंख्यातकी सहनानी दोय ताका भाग दिएं पाया दोय तहां घनांगुलका प्रमाण पणट्ठी करि गुण्या हुवा बादाल प्रमाण इनकों दोय जायगा मांडि परस्पर गुणें बादालकरि गुणित एकट्ठी प्रमाण जगच्छेणी हो है ॥ ७ ॥

आगैं घनांगुलका स्वरूपकी प्रतीतिके अर्थ कहैं हैं;—

पल्लिदिमेत्तपल्लानण्णोणहदीए अंगुलं सूई ।

तव्वग्गघणा कमसो पदरघणंगुल समक्खादो ॥ ८ ॥

पत्यच्छेदमात्रपत्यानामन्योन्यहत्या अंगुलं सूची ।

तद्वर्गघनौ क्रमशः प्रतरघनांगुले समाख्याते ॥ ८ ॥

अर्थ—पत्यके जेते अर्धच्छेद होहि तिनतें पत्य मांडि तिनकों परस्पर गुणें सूच्यंगुल हो हे । जैसे पत्यकौ प्रमाण सोलह ताके अर्धच्छेद चारि सो चारि जायगा सोला सोला मांडि इनकों परस्पर गुणें ६५५३६ होइ सोई सूच्यंगुलका प्रमाण जानना । बहुरि सूच्यंगुलका जो वर्ग सो प्रतरांगुल जानना । जैसे पण्णट्टीका वर्ग वादाल होइ सो प्रतरांगुल है । बहुरि सूच्यंगुलका घन घनांगुल जानना । जैसे पण्णट्टीका घन है सो पण्णट्टी करि गुणा हुवा जो वादाल तिह प्रमाण हो है सो घनांगुल होय । ऐसे क्रमतें कहें हैं । इहां एकट्टी आदिक वा अर्धच्छेद आदि जे कहें हैं तिनका स्वरूप आगे कहिएगा सो जानना ॥ ८ ॥

आगें मानकी प्रतीतिके अर्थ प्रक्रिया कहैं हैं;—

माणं द्विविहं लोगिग लोगुत्तरमेत्थ लोगिगं छद्धा ।

माणुम्माणामाणं गणिपडितप्पडिपमाणमिदि ॥ ९ ॥

मानं द्विविधं लौकिकं लोकोत्तरमत्र लौकिकं षोढा ।

मानोन्मानावमानं गणिप्रतितत्प्रतिप्रमाणमिति ॥ ९ ॥

अर्थ—मान दोय प्रकार है लौकिक मान अर लोकोत्तरमान । इहां लौकिकमान छह प्रकार है—मान, उन्मान, अवमान, गणिमान, प्रतिमान, तत्प्रतिमान, ऐसे जानना ॥ ९ ॥

आगें इन छहौंनिकी दृष्टांतपूर्वक उतपत्ति कहैं हैं;—

पथ्तुलचुलयएगप्पहुदी गुंजातुरंगमोच्छादी ।

द्व्वं खित्तं कालो भावो लोगुत्तरं चदुधा ॥ १० ॥

प्रथ्तुलाचुलकैकप्रभृति गुंजातुरंगमूल्यादि ।

द्रव्यं क्षेत्रं कालो भावो लोकोत्तरं चतुर्धा ॥ १० ॥

अर्थ—प्रथ जो माणी इत्यादिककौं मान कहिए जैसे पाई माणी इत्यादिक करि अन्नादिकका प्रमाण करिए । बहुरि तुला जो ताखडी इत्यादिककौं उन्मान कहिए । जैसे ताखडीकरि तौलि प्रमाण करिए । चुलुक जो चट्ट इत्यादिककौं अवमान कहिए, जैसे चट्ट प्रमाण जल है इत्यादिक कहिए । बहुरि एक इत्यादिककौं गणिमान कहिए, जैसे एक दोय तीन आदि गणना करि प्रमाण करिए । बहुरि गुंजा जो चिरमटी इत्यादिककौं प्रतिमान कहिए, जैसे रत्ती मासा इत्यादि प्रमाण करिए । बहुरि तुरंगमोलि जो घोडेका मोल इत्यादिककौं तत्प्रतिमान कहिए, जैसे अवयवादिक देखि घोडेका मोल करिए । ऐसे लौकिकमान जानना ॥ बहुरिलोकोत्तरमानके भेद अब कहिए हैं । द्रव्य क्षेत्र काल भाव—ऐसे लोकोत्तरमान चारि प्रकार है ॥ १० ॥

आगें तिन चारोंकी क्रमतें जघन्य उत्कृष्टकी प्रतीतिके अर्थ चारि गाथा कहैं हैं;—

परमाणु सयलद्व्वं एगपदेसो य सव्वमागासं ।

इगिसमय सव्वकालो सुहुमणिगोदेसु पुण्णेषु ॥ ११ ॥

परमाणुः सकलद्रव्यं एकप्रदेशः च सर्वमाकाशम् ।

एकसमयः सर्वकालः सूक्ष्मनिगोदेषु अपूर्णेषु ॥ ११ ॥

अर्थ—द्रव्यमानविषै जघन्य एक परमाणु उत्कृष्ट सर्व द्रव्यसमूह, क्षेत्रमानविषै जघन्य एक प्रदेश उत्कृष्ट सर्व आकास, कालमानविषै जघन्य एकसमय उत्कृष्ट सर्वकाल, भावमानविषै जघन्य सूक्ष्मनिगोदिया लब्धिअपर्याप्तकके पर्यायनामा ज्ञान जानना ॥ ११ ॥

णाणं जिनेसु य कमा अवरवरं मज्झिमं अणेषु विहं ।

द्वं दुविहं संखा उवमपमा उवम अट्टविहं ॥ १२ ॥

ज्ञानं जिनेषु च क्रमात् अवरं वरं मध्यमं अनेकविधम् ।

द्रव्यं द्विविधं संख्या उपमाप्रमा उपममष्टविधम् ॥ १२ ॥

अर्थ—बहुरि उत्कृष्ट भावमान जिनेद्रविषै केवलज्ञान—ऐसे क्रमते जघन्य उत्कृष्टमान है । बहुरि मध्यममान अनेक प्रकार है, तहां भी द्रव्यमान दोय प्रकार है—संख्याप्रमाण, उपमाप्रमाण । तहां उपमाप्रमाण आठ प्रकार है । थोरा कहना होय सो पहलै कहिए इस न्यायकरि जैसे क्रमते नाम कहा था तैसे स्वरूपवर्णनविषै अनुक्रम छोड़ि उपमाप्रमाणके भेद कहिए हैं । जो उपमा आठ प्रकार है ॥ १२ ॥

बहुरि कारणस्वरूप पहलै जाने कार्यका स्वरूप जानिए इस न्यायकरि उपमाको भी छोडै हैं;—

तं उवरि भणिस्सामो संखेज्जमसंखणंतमिदि तिविहं ।

संसंतिह्लदु तिविहं परित्तजुत्तंति दुगवारं ॥ १३ ॥

तां उपरि भणिष्यामः संख्येयं असंख्यं अनंतमिति त्रिविधम् ।

संख्यं अंतिमद्विकं त्रिविधं परीतं युक्तं इति द्विकवारम् ॥ १३ ॥

अर्थ—तिस उपमा प्रमाणको आगै कहेंगे बहुरि अवशेष भेद कहिए हैं—संख्यात, असंख्यात, अनंत ऐसे तीन प्रकार संख्यामान है । तहां अंतका दोय जो असंख्यात अर अनंत सो तीन प्रकार है—परीत, युक्त, द्विकवार । **भावार्थ**—संख्यात तौ एकप्रकार ही है बहुरि असंख्यात तीन प्रकार है—परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात, असंख्यातासंख्यात । बहुरि अनंत हू तीन प्रकार है—परीतानंत, युक्तानंत, अनंतानंत । ऐसे सात भेद भए ॥ १३ ॥

ते अवर मज्झ जेठं तिविहा संखेज्जजाणणमिच्चं ।

अणवत्थ सलागा पडिमहासला चारि कुंडाणि ॥ १४ ॥

तानि अवरं मध्यं ज्येष्ठं त्रिविधा संख्येयज्ञाननिमित्तम् ।

अनवस्था शलाका प्रतिमहाशला चत्वारि कुंडानि ॥ १४ ॥

अर्थ—ते साती ही स्थान जघन्य मध्यम उत्कृष्ट भेद करि तीन तीन प्रकार हैं । ऐसे इक-धीस भेद भए । तहां संख्यात ज्ञानके अर्थ अनवस्था, शलाका, प्रतिशलाका, महाशलाका ऐसे चारि कुंड कल्पना करि जानने ॥ १४ ॥

आगे इन चारों कुंडनिका व्यासादिककी प्रतीतिके अर्थ कहै हैं;—

जोयणलखवं वासो सहस्समुस्सेहमेत्थ सव्वेसिं ।

दुप्पहुदिसरिसवेहिं अणवत्था पूरयेदव्वा ॥ १५ ॥

योजनलक्षं व्यासः सहस्रमुत्सेधः अत्र सर्वेषाम् ।

द्विप्रभृतिसर्षपैः अनवस्था पूरयितव्या ॥ १५ ॥

अर्थ—लाख योजन प्रमाण व्यास अर हजार योजन प्रमाण उत्सेध तिन कुंडनिका जानना । कुंड गोल हैं । तहां वीचिते चौडाईका नाम व्यास है, उंडाईका नाम उत्सेध है बहुरि तिन कुंडनविषै दिय आदि जे सरसों तिनकरि अनवस्था नामा कुंड भरणा ॥ १५ ॥

दोय आदि सरसों कहे सो कहा इस संदेहको दूरि करता संता सूत्र कहै हैं;—

एयादीया गणणा बीयादीया हवंति संखेज्जा ।

तीयादीणं णियमा कदित्ति सण्णा मुणेदव्वा ॥ १६ ॥

एकादिका गणना द्रयादिकाः भवन्ति संख्याताः ।

त्रयादीनां नियमात् कृतिरिति संज्ञा मंतव्या ॥ १६ ॥

अर्थ—एककों आदि दैकरि तौ गणना है गिनती एकतैं लगाय करिए हैं । बहुरि दोयकों आदि दैकरि संख्यात हैं, जघन्य संख्यातका प्रमाण दोय है । बहुरि तीन आदिकनिकी कृति ऐसी संज्ञा नियमकरि है । जाकी कृतिविषै वर्गमूलकों घटाय अवशेष रहै ताका वर्ग किए बधै सो कृति कहिए, जैसे तीन विषै संभवता वर्गमूल एककों घटाएं अवशेष दोय रहै ताका वर्ग किए च्यारि होय ऐसैं वृद्धिकों पावै । बहुरि एक अर दोयविषै कृतिका लक्षण न संभवै है । तहां एककै तो कृतिपणों संभवै ही नाहीं जातैं एकमें एक घटाएं शून्य होइ जाइ । बहुरि दोयकैं अवक्तव्य कृति पणों है जातैं दोयमें संभवता वर्गमूल घटाएं एक अवशेष रहै ताका वर्ग किए एक ही होय किहू बधै नांही । तातैं तीन आदिक विषै ही कृतिका लक्षण संभवनेतैं कृति पणों कह्यौ ॥ १६ ॥

आगे कह्या जो लक्षयोजन व्यासकों लीएं कुंड ताका समस्त क्षेत्रफल जाननेकों कहै हैं;—

वासो तिगुणो परिही वासचउत्थाहदो दु खेत्तफलं ।

खेत्तफलं वेहगुणं खादफलं होइ सव्वत्थ ॥ १७ ॥

व्यासस्त्रिगुणः परिधिः व्यासचतुर्थाहतस्तु क्षेत्रफलम् ।

क्षेत्रफलं वेधगुणं खातफलं भवति सर्वत्र ॥ १७ ॥

अर्थ—व्यासके प्रमाणकों तिगुणा कीएं परिधिका प्रमाण होइ, गोलक्षेत्रका गिरदका जो प्रमाण सो परिधि कहिए । सो इहां लक्ष योजनका व्यास है ताकों तिगुणा कीएं तीन लाख योजन परिधिका प्रमाण भया । बहुरि व्यासकी जु चौथाई ताकरि परिधिकों गुणें क्षेत्रफल होई । सो इहां व्यासकी चौथाई लाख योजनकों गुणें क्षेत्रफल होई । एक एक योजनका लंबा चौड़ा खंड कीएं इतने होहि । बहुरि क्षेत्रफलकों वेध जो उंडाईका प्रमाण ताकरि गुणें खातफल हो है । सर्वत्र ऐसा विधान जानना । सो इहां कह्या जो क्षेत्रफल ताकों हजार योजन उंडाई करि गुणें खातफल होई । एक एक योजनका लंबा चौड़ा ओंडा खंड कीएं इतने होहि सो खातफल इतना भया ३ ल

ल x x १००० यो । इहां तीन लक्षकी सहनानी ऐसी ३ ल, लक्षकी चौथाईकी ऐसी ३ ल, हजारकी ऐसी १००० इनकी चौथाईतै परिधिकौ गुणें क्षेत्रफल कहा सो ताका विधान-रूप वासनाका वर्णन संस्कृत टीकातै जानना ॥ १७ ॥

आगें स्थूल खातफलविषें जे प्रमाण योजन कहे तिनका व्यवहार योजन करता संता सूत्र कहे है;—

थूलफलं व्यवहारं ज्योणमवि सरिसवं च कादृचं ।

चउरस्ससरिसवा ते णवसोडस भाजिदा वट्टं ॥ १८ ॥

स्थूलफलं व्यवहारं योजनमपि सर्षपश्च कर्तव्यः ।

चतुरस्रसर्षपास्ते नवषोडश भाजिता वृत्तम् ॥ १८ ॥

अर्थ—तारतम्य विना स्थूलपनै करि जो क्षेत्रफल होइ सो स्थूलफल कहिए । सूक्ष्म परिधिकरि सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है सो ताका विधान आगें वर्णन होईगा । इहां स्थूल क्षेत्रफलकी अपेक्षा ही वर्णन है सो इहां स्थूल क्षेत्रफलविषै प्रमाण योजन इतने हैं—३ ल ३, १०००। तहां एक प्रमाणयोजनके पांचसै व्यवहार योजन होइ तौ इतने योजननिका कितने व्यवहार योजन होइ ऐसै त्रैराशिक विधिकरि इनके व्यवहार योजन करने । तहां अंगुल तीन प्रकार है—उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल, आत्मांगुल । तहां उत्सेधांगुलतै जहां योजनका प्रमाण होइ सो व्यवहार योजन जानना, बहुरि प्रमाणांगुलतै योजनका प्रमाण होय सो प्रमाणयोजन जानना । सो उत्सेधांगुलतै प्रमाणांगुल पांचसै गुणा है तातै योजनविषै भी पांचसै हीका गुणकार कहा । बहुरि अपि शब्दतै त्रैराशिक-विधिकरि ही एक योजनके च्यारिकोश, एक कोशके दोय हजार धनुष, एक धनुषके च्यारि हाथ, एक हाथका अंगुल चौवीस १, ४, २०००, ४, २४, इनकौ परस्पर गुणें एक योजनके सात लाख अडसठि हजार अंगुल भए, ते करने । बहुरि एक अंगुलका आठ यव, एक यवका आठ सरसौं करने सो घनराशिके गुणकार वा भागहार घनरूप ही होइ, जैसे एक हाथ लंबा चौडा क्षेत्र होई ताकी अंगुल करिए तब एक हाथकी चौईस अंगुल । सो इहां चौईसका घनकीए जो प्रमाण होइ तितना एक अंगुल लंबा चौडा जंडा खंड होइ तैसै इहां भी जो ए गुणकाररूप राशि कहा तिनका घन करना सो घन करनेके अर्थ तीन तीन जायगा मांडि परस्पर गुणन करना । तहां क्षेत्रफल ऐसा ३ ल । ३ । १००० याके गुणकार ऐसे ५००, ५००, ५०००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, ८, इनकौ परस्पर गुणें चौकोर सरसौंका प्रमाण होइ, इनकौ नवका सोलहां भाग ३ दिए वृत्त जो गोल सरसौंका प्रमाण होइ । सो “ हारस्य हारो गुणकोशराशेः ” इस वचनतै भागहारका भागहार सो राशिका गुणकार होइ । जैसे हजारकौ सौका चौथा भागका भाग देना होइ तहां हजारकौ च्यारिकरि गुणिए अर सौका भाग दीजिए सो इहां नवका सोलहां भागका भाग है सो पूर्वोक्त राशिकौ सोला गुणांकरि नवका भाग देना तातै सोला भी गुणकार ही भया । ऐसै करतै सर्व गुण्य गुणकार ऐसा भया ३०००००, १०००००, १०००, ५००, ५००, ५००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, ८,

१६ इनको परस्पर गुणनां अर याके नीचै चारिका अर नवका भागहार देना ४, ९। तहां गुणाकारके अंकनिविषै जहां आठका अंक था तहां दोगकरि विरलन करि आठका जायगा तीन दूवा मांडिए २, २, ९, जातै इनको परस्पर गुणें भी आठ ही हो है। बहुरि इनि तीनों दूवानिकरि तीन जायगा पांचसै माड्या था तिनको गुणें तीन जायगा हजार हजार हुवा, हर एक आठका गुणाकारका लोप हुवा तब ऐसा हुवा ३०००००, १०००००, १०००, १०००, १०००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, १६। बहुरि इन विषै जे इकतीस विंदी हैं तिनको तौ जुदी काटिए अर एकका गुणकारतै किछू वर्षे नाहीं तातै एक जहां होइ ताका लोप करिए तब ऐसा होइ ३, ७६८, ७६८, ७६८, ८, ८, ८, ८, ८, १६, विंदी ३१। बहुरि इन विषै एक आठका अंकको दोगकरि फेरि विरलन करि तहां जे तीन दूवा भए तिन करि आठका जे तीन अंक तिनको गुणें आठका अंककी तीन जायगा सोलह सोलहका अंक होइ अर एक आठका अंकका लोप होइ अर एक सोलहका अंक गुणकारविषै था ही। ऐसै चारि जायगा सोलहके अंक भए १६, १६, १६, १६। इनको परस्पर गुणें पण्टी होइ। पैसठि हजार पांचसै छत्तीसको पण्टी कहिए हैं। तब ऐसा भया ३, ७६८, ७६८, ८, ६५५३६, विंदी ३१। बहुरि तीन जायगा सातसै अडसठिका अंक था तिनकी जायगा दोगसै छप्पन अर तीनका अंक करना, जातै दोगसै छप्पनको तीन करि गुणें सातसै अडसठि होइ। बहुरि तीन जायगा दोगसै छप्पन लिखे तिन विषै दोग जायगाके दोगसै छप्पनको परस्पर गुणें पण्टी होइ अर एक आठ पण्टी थी, इन दोउनिको परस्पर गुणें बादाल होइ। चारिसै गुणतीस कोडि गुणचास लाख सतसठि हजार दोगसै छिनवैको बादाल कहिए। ताकी सहनानी ऐसी ४२=। ऐसै करते ऐसा भया ३, २५६, ३, ३, ३, ८, ४२=, विंदी ३१। बहुरि दोग जायगा तीनका अंक है तिनको परस्परगुणें नव होइ। बहुरि एक जायगा आठका अंक है ताको भागहारविषै चारिका अंक था तीहकरि अपवर्तन कीए आठ की जायगा दोगका अंक भया तीहकरि नवको गुणें अठार भए, तब ऐसा २५६, ३, ३, १८ ४२=, ३१ विंदी। बहुरि दोग जायगा तीनका अंक है तिनको परस्पर गुणें नव भए, ताको भागहारविषै नवका अंक था ताकरि अपवर्तन कीए लोप भया। ऐसै करतै ऐसा भया ४२=, २५६, १८, विंदी ३१। या प्रकार बादालको दोगसै छप्पन अर अठारहकरि गुणि आठै इकतीस विंदी दीजिए। इतना सर्व गोल सरसौनिकरि सो कुंड भरिए हैं ॥ १८ ॥

आगे नवका सोलहं भागका भाग दीएं गोल होइ इसका वासनारूप निपज्या खातफलको कहै हैं;—

वासद्धघनं दलियं नवगुणियं गोलयस्स घनगणियं ।

सव्वेसिपि घणाणं फलत्तिभागप्पिया सूई ॥ १९ ॥

व्यासार्द्धघनः दलितः नवगुणितः गोलकस्य घनगणितम् ।

सर्वेषामपि घनानां फलत्रिभागात्मिका सूची ॥ १९ ॥

अर्थ—जितना व्यास होइ ताके आधाका घन करिए बहुरि ताको आधा करिये। बहुरि नव करि गुणिए ऐसै करतै गोल वस्तुका घनफल होइ। तहां विवाक्षित व्यास एक ताका आधाका

घन (३ ३ ३) कीएं एकका आठवां भाग भया याकौं आधा किएं एकका सोलहवां भाग भया, याकौं नवगुणा कीएं नवका सोलहवां भाग भया। ऐसैं करि नवका सोलहवां भागका भाग चौकोरकौं दीएं गोल वस्तुका घनरूप फल जाननां । बहुरि सर्वही घनक्षेत्रनिका फलकै तीसरै भाग प्रमाण सूचीफल हो है । इहां सूचीफल नाम शिखाफलका जाननां । पृथ्वीकै उपरि भीति इत्यादिकका सहारा विना आकाश विषै अन्नादिकका जो राशि करिए अथवा खाडा इत्यादिक भरि करि तहां पीछैं ताकै उपरि जो आकाश विषै अन्नादिकका राशि करिए सो राशि जितनें आकाशकौं रोकै तिसका नाम सूचीक्षेत्र वा शिखाक्षेत्र कहिए । ताका घनरूप क्षेत्र कहिए । ताका घनरूप क्षेत्रफलका प्रमाण करना सो सूचीफल वा शिखाफल कहिए । बहुरि नवका सोलहवां भागका भाग दीएं गाळे कैसैं होइ ताकी वासनाका विधान संस्कृत टीकातैं जानना । बहुरि तहां नवका सोलहवां भाग प्रमाण चौकोर सरसौंका एक गोल सरसौं भए पूर्वोक्त प्रमाण चौकोर सरसौंनिका कितनां गोल सरसौं होइ ऐसैं त्रैराशिक विधान करि नवका सोलहवां भागका भाग दीया है। बहुरि त्रिभुज क्षेत्र चतुर्भुज क्षेत्र वृत्तक्षेत्र इनका 'मुह भूमी जोगदले' इत्यादि सूत्र करि । बहुरि 'भुज कोटि' इत्यादि सूत्र करि । बहुरि 'वासो तिगुणो परिही' इत्यादि सूत्रकरि अनुक्रमतैं क्षेत्रफलकौं अणाइ ताकौं तीनका भाग दीएं जो जो प्रमाण आवैं सो सो तिस तिस क्षेत्रका सूचीफल जानना । जातैं क्षेत्रफल तौ उचाई विषै समानता अपेक्षा भया । इहां सूचीफल विषै उचाई क्रमहीन तीखी हैं । तातैं तीसरे भागि सूचीफल कहा है ॥ १९ ॥

आगैं तिस कुंडका स्थूल क्षेत्रफलविषै जैते सरसौं माए तिस राशिकौं कहै हैं:—

बादालं सोलसकदिसंगुणितं दुगुणवसमम्भत्थं ।

इगितीससुण्णसहियं सरिसवमाणं हवे पढमे ॥ २० ॥

बादालं षोडशकृतिसंगुणितं द्विगुणनवसमम्भस्तम् ।

एकत्रिंशत्शून्यसहितं सर्षपमानं भवेत् प्रथमे ॥ २० ॥

अर्थ—बादाल ४२=कौं सोलहका वर्ग दोयसै लम्पन तीहकरि गुणिए बहुरि ताकौं दूणा नव अठारह तीह करि गुणिए बहुरि आगैं इकतीस विंदी करि संयुक्त करिए । इतनां सरसौंनिका प्रमाण प्रथम कुंड विषै हो हैं । सो वर्णन पूवैं कीया ही था । ॥ २० ॥

आगैं ऐसैं कीएं कहा प्रमाण होइ सो कहै हैं;—

विधुणिधिगणवरविणभणिधिणयणबलद्धिणिधिखराहत्थी ।

इगितीससुण्णसहिया जंबूए लद्धसिद्धत्था ॥ २१ ॥

विधुनिधिगणवरविणभोनिधिणयणबलद्धिनिधिखरहस्तिनः ।

एकत्रिंशच्छून्यसहिताः जंबौ लब्धसिद्धार्थाः ॥ २१ ॥

अर्थ—यहां पदार्थनिके नामतैं तिन पदार्थनिकी जो संख्या तिस संख्यारूप अंकका ग्रहण करना । सो विधु जो चंद्रमा सो एक बहुरि निधि नव बहुरि नग जो पर्वत सो सात बहुरि नवका अंक बहुरि रवि जो सूर्य सो राशि अपेक्षा बारह बहुरि नभ शून्य बहुरि निधि नव बहुरि नयन

अर्थ—व्यासका जो आधा प्रमाण ताका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ ताकौं तिगुणा करिए बहुरि वेध जो कुंडकी उंडाई ताका प्रमाण करिये ग्यारहको गुणें जो प्रमाण होइ तीह सहित जो व्यासका प्रमाण ताकरि गुणिए । ऐसैं करतैं जो प्रमाण होइ ताकौं ग्यारहका भाग दीजिए । तब विवक्षित कुंडनिका कुंडफल अर शिखाफलके मिलावने रूप उभय फल हो हैं । सो प्रथम कुंड विषैं व्यास लक्ष योजन ताका आधा ऐसा (१ ल ÷ २) ताका वर्ग ऐसा (१ ल ÷ २, १ ल ÷ २) बहुरि याकौं तिगुणा कीए ऐसा होइ (३ ल ३ ल ३) बहुरि याकौं वेध जो कुंडकी उंडाई हजार योजन ताकौं ग्यारह हजार भए । तिनकौं व्यासका प्रमाण लक्ष योजन विषैं जोडें ऐसा भया १११००० तीह करि गुणे ऐसा ३ ल, १ ल, ३, १११००० भया याकौं ग्यारहका भाग दीएं अनवस्था कुंडका उभयफल ऐसा भया (३ ल, ३ ल, ३, १११०००) सोई कहिए हैं वासो तिगुणो 'परिही' इत्यादि सूत्र करि कुंडका खात फल ऐसा (३ ल ३ ल) याकौं परिधिका ग्यारह्वां भाग करि गुणें तीनका भाग दीएं सूचीफल ऐसा हो है (३ ल ३ ल ३ ल ÷ ३) बहुरि कुंडका खात फल अर सूची फल दोऊ मिलावनां तहां गाथाका अनुसार करि पूर्वोक्त दोऊ राशिनिकौं तीन करि भेदिए जहां तीनका अंक लिखाथा तहां तौ एक का अंक करिए अर आगैं तीनका गुणकार करिए तब ते दोऊ राशि ऐसे होइ (खातफल ३ ल, ३ ल ३।१०००। सूचीफल ३ ल ३ ल ३ ल ÷ ३) बहुरि अब इन दोऊनिकौं जोडनैं तहां सूचीफल विषैं तीनका ही भाग हार जानि अपवर्त्तन करि दोऊनिका लोप करिए । बहुरि भिन्नगणितकैं अनुसारि समछेद विधान करिए तहां लकारका लकार अर अंकका अंक समान दोखि सूचीफल विषैं अधिक रह्या जो एक लाखका ग्यारह्वां भाग खातफल विषैं अधिक रह्या एक हजार ताकौं ग्यारह करि समछेद कीएं ग्यारह हजारका ग्यारह्वां भाग भया ताकौं मिलाए एक लाख ग्यारह हजारका ग्यारहवां भाग मात्र गुणकार कीएं उभय फल ऐसा होई (३ ल ३ ल ३।१११०००) इसकौं देखि 'वासुद्व कदी' इत्यादि करण सूत्र आचार्यनैं कुंडनिका उभय फल करनैका कह्या । बहुरि कह्या जु यह प्रमाण योजनरूप क्षेत्रफल ताके पूर्वोक्त प्रकार करि व्यवहार योजन अंगुल यव सरसौं गोलसरसौं करनैं ॥ २६ ॥

ऐसैं करते जो राशि होइ ताकौं कहै हैं;--

बादालमष्टघणइगिहीणसहस्साहदं एगारहिदं ।

इगितीससुणसहियं जंबूदीबुभयसिद्धत्था ॥ २७ ॥

बादलमष्टघनैकहीनसहस्त्राहतं एकादशहितम् ।

एकत्रिंशच्छून्यसहितं जंबूद्वीपोभयसिद्धार्थाः ॥ २७ ॥

अर्थ—बादाल ४२=कों आठका घन पांच सै बारह तीह करि गुणिये बहुरि एक घाट हजार (९९९) करि गुणिए ग्यारहका भाग दीजिए आगैं इकतीस सून्य सहित करिए ऐसैं करतैं जंबूद्वीप समान कुंड अर ताकी शिखाका क्षेत्रफल विषैं सरसौंका प्रमाणरूप सिद्ध भए अर्थ जाननैं । ४२=५१२।९९९।३१ शून्य ॥ २७ ॥

द्वितीये प्रथमं कुंडं गच्छः तृतीये तु प्रथमद्वितीयद्विकम् ।

इति सर्वपूर्वगच्छाः तैः तैः सर्षपाः साध्याः ॥ ३१ ॥

अर्थ—सरा कुंड विषै माए हूए सरसौनिका प्रमाण ल्यावनैकै अर्थि पहला अनवस्था कुंड विषै जेते सरसौ भरे गए तीह प्रमाण गछ जाननां । बहुरि तीसरा कुंड विषै सरसौनिका प्रमाण ल्यावनैकै अर्थि पहला दूसरा अनवस्था कुंड विषै जेते सरसौ भरे गए तीह प्रमाण गछ जाननां । ऐसैही चौथा आदि अनवस्था कुंडनि विषै सरसौनिका प्रमाण ल्यावनैकै अर्थि सर्व पहला पहला प्रथम द्वितीय तृतीयादि अनवस्था कुंडनि विषै जेते जेते सरसौ भरे गए तीह प्रमाण गछ जाननां । बहुरि तिन गछनिका प्रमाण करि सरसौका प्रमाण साधनां । तीह तीह गछफा प्रमाणकौं प्रहि करि आगै कहिएगा जो 'रूजणाहियपद' इत्यादि करण सूत्र तीह करि सूची व्यासका प्रमाणकौं ल्याइ तिनका सूची व्यासका प्रमाणकौं ल्याइ तिनका सूची व्यास प्रमाण तिन द्वितीयादि कुंडनिका व्यासका प्रमाण जानि । बहुरि पीछै 'वासो तिगुणो परिही' इत्यादि पूर्वै करण सूत्र कहे तिन करि तिस तिस कुंड विषै सरसौनिका प्रमाण शिखासहित साधनां । इहां सन्मुख दोऊ तटनि विषै बीचिका जेता अंतराल ताका नाम सूचीव्यास जाननां ॥ ३१ ॥

आगै तिस कीया हूवा दूसरा अनवस्था कुंडकौं भरे कहा हो है सो कहै है;—

विदिए वारे पुण्णं अणवट्टिमिदि सलागकुंडमिह ।

पुणरपि णिक्खिविदव्वा अवरेगा सरिसवाण सला ॥ ३२ ॥

द्वितीये वारे पूर्ण अनवस्थितमिति शलाकाकुंडे ।

पुनरपि निक्षेप्तव्या अवरेका सर्षपाणां शलाका ॥ ३२ ॥

अर्थ—दूसरी वार किया जो अनवस्थित कुंड सो तिन सरसौहीनि करि पूर्ण कीया तब शलाका कुंड विषै और एक दूसरी सरसौ नांखणी ॥ ३२ ॥

आगै ऐसै कीए भी कहा सो कहै है:—

एवं सलागभरणे रूवं णिक्खिवदु पडिसलागमिह ।

रिक्कीकदेवि भरिदे अवरेगं पडिसलागमिह ॥ ३३ ॥

एवं शलाकाभरणे रूपं निक्षिपतु प्रतिशलाकायाम् ।

रिक्तीकृतेपि भृते अपरैकं प्रतिशलाकायाम् ३३ ॥

अर्थ—ऐसैही बधता बधता व्यासकै लिए हजार योजनके उंडे, अनवस्था कुंड एक एक करि भरिए । तब एक एक सरसौ शलाका कुंड विषै नांखते जाईए । तहां अनवस्था कुंडके सरसौनिका ग्रहण करि जिस द्वीप वा समुद्रकी सूचीव्यास समान अनवस्था कुंड कीया तिस द्वीप वा समुद्रतै अगले द्वीप वा समुद्रनि विषै एक एक सरसौ गेरते जाईए जहां समाप्त होइ तहां तै लगाय जंबूद्वीपपर्यंत सर्व द्वीप समुद्रनिकै समान नवीन अनवस्था कुंड करि भरिए एक सरसौ शलाका कुंड विषै गेरिए बहुरि पूर्वोक्त प्रकारही कार्य करनां । ऐसैही करतै करतै पहला अनवस्था कुंड विषै जेता सरसौनिका प्रमाण कहा था तितनै अनवस्था कुंड भए शलाका कुंड भरे तब एक सरसौ

प्रतिशलाका कुंड विषै गेरिए । बहुरि तिस शलाका कुंडकौं रीता करि पूर्वोक्त प्रकार करि ही बधता बधता व्यासकौं लीए अनवस्था कुंड करि करि भरिए तब एक सरसौं शलाका कुंड विषै गेरिए । ऐसै करतै करतै दूसरी बार भी शलाका कुंड भरै तब एक सरसौं और प्रतिशलाका कुंड विषै निक्षेपण करनां । ऐसैही एक एक बार शलाकाकुंडकौं रीता करि करि भरिए तब तब एक एक सरसौं प्रतिशलाकाकुंड विषै नांखते जाईए ॥ ३३ ॥

आगै ऐसै भए भी कहा सो कहै है:—

एवं सावि य पुण्णा एगं णिक्खिव महासलागमिह ।

एसावि कमा भरिदा चत्तारि भरंति तक्काले ॥ ३४ ॥

एवं सापि च पूर्णा एकं निक्षिप महाशलाकायाम् ।

एषापि क्रमाद्भूता चत्वारि भ्रियंते तत्काले ॥ ३४ ॥

अर्थ—ऐसैही क्रमतै पहला अनवस्था कुंड विषै जेते सरसौं भरे गए थे तिस प्रमाणका वर्गकै समान अनवस्था कुंड भए प्रतिशलाका कुंड भी भन्या जाय तब एक सरसौं महाशलाका नामा कुंड विषै नांखिए । बहुरि तिस प्रतिशलाका कुंडकौं भरि ताकरि पूर्वोक्त प्रकार अनवस्था कुंडनिके भरणें करि तौ शलाका कुंडकौं अर शलाका कुंडनिके भरणें करि प्रतिशलाका कुंडकौं एक एक बार भरि एक एक सरसौं महाशलाका कुंड विषै गेरते जाईये । ऐसै करतै जब महाशलाका कुंड भी भन्या जाय तीह काल विषै च्यारयौ ही कुंड भरिये है । पहला अनवस्था कुंड विषै जेते सरसौं भरे गए थे तिस प्रमाणका जु घन ताकै समान अनवस्था कुंड भए महाशलाका कुंडका भरण हो है । सो ए सर्व अनवस्थाकुंड बधता बधता व्यास प्रमाणकौं लीए हैं । जातै अनवस्था कुंडके सरसौं ग्रहण करि अगले अगले द्वीप वा समुद्र विषै एक एक सरसौं दीए जिस द्वीप वा समुद्र विषै ते सरसौं समाप्त होइ तिस ही द्वीप वा समुद्रका सूची व्यासकै समान नवीन काया हूवा अनवस्था-कुंडका व्यास हो हैं । यातै ही याका नाम अनवस्थित कुंड है । उंटाई सर्व कुंडनिकी हजार योजन हीकी जाननी ॥ ३४ ॥

आगै इतनै भरनें करि कहा सो कहै है:—

चरिमणवट्टिकुंडे सिद्धत्था जेतिया पमाणं तं ।

अवरपरीतमसंखं रूऊणे जेठ संखेज्जं ॥ ३५ ॥

चरमानस्थितकुंडे सिद्धार्थाः यावति प्रमाणं तत् ।

अधरपरीतमसंख्यं रूपोने ज्येष्ठं संख्येयम् ॥ ३५ ॥

अर्थ—तहां अंतका जो अनवस्थित कुंड तीह विषै जेते प्रमाणकौं धरें सिद्धार्थाः कहिये सिखा सहित सरसौं भरे गए तीह प्रमाण जघन्य परीतासंख्यात जाननां । यामै रूप कहिए येक घटाएं उक्कष्ट संख्यात जाननां ॥ ३५ ॥

आगै इसहीकौं धरि असंख्यात अनंतकी उत्पत्तिको भेद वा भेदनिके भेद तिनकौं सोलह गाथानि करि कहै है:—

अवरपरित्तस्सुवरिं एगादीवड्डिदे हवे मज्झं ।

अवरपरित्तं विरलिय तमेव दादूण संगुणिदे ॥ ३६ ॥

अवरपरीतस्योपरि एकादिवर्द्धिते भवेन्मध्यम् ।

अवरपरीतं विरलय्य तदेव दत्त्वा संगुणिते ॥ ३६ ॥

अर्थ—जघन्य परीतासंख्यातकै उपरि एकादि बधाएं मध्य परीतासंख्यात होइ बहुरि जघन्य परीतासंख्यातकौ एक एक करि विरलन करि रूप प्रति तिस ही जघन्य परीतासंख्यातकौ देइ परस्पर गुणन करिए । जैसे च्यारिकौ विरलन करिए तब च्यारि जायगा एक एक मांडिए । १।१।१।१ । बहुरि रूप प्रति च्यारिकौ दीजिये तब एक एककी जायगा च्यारि च्यारि लिखिए ४।४।४।४ । अब इनका परस्पर गुणन करिए तब दोयसैं छप्पन होइ ऐसैंही इहां विधान जाननां ॥३६॥ सो ऐसैं गुणनकीएं कहा सो कहै हैं:—

अवरं जुत्तमसंखं आवलिसरिसं तमेव रूऊणं ।

परिमिदवरमावलिकिदि दुगवारवरं विरूप जुत्तवरं ॥ ३७ ॥

अवरं युक्तमसंखं आवलिसदृशं तदेव रूपोनम् ।

परिमितवरं आवलिकृतिद्विकवारावरं विरूपं युक्तवरम् ॥ ३७ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त विधान कीएं जघन्य युक्तासंख्यात होइ यहू ही आवली समान हैं । जातैं जघन्य युक्तासंख्यात समयनिका समूहकौ आवली कहिए हैं । सोई यहू एक घाटि हूवा उत्कृष्ट परीतासंख्यात जाननां । बहुरि आवली जो जघन्य युक्तासंख्यात ताकी जु कृति कहिए वर्ग कीऐं जो प्रमाण होइ सो जघन्य असंख्यातासंख्यात हैं । सोई जो घाटि होइ तौ उत्कृष्ट युक्तासंख्यात हो हैं ॥ ३७ ॥

अवरे सलागविरलणदिज्जे विदियं तु विरलिदूण तहिं ।

दिज्जं दाऊण हदे सलागदो रूवमवणिज्जं ॥ ३८ ॥

अवरे शलाकाविरलनदेये द्वितीयं तु विरलय्य तस्मिन् ।

देयं दत्त्वा हते शलाकातः रूपमपनेतव्यम् ॥ ३८ ॥

अर्थ—जघन्य असंख्यातासंख्यातकौ शलाका विरलन दीयमान रूप करि तीन प्रकार करिए तहां दूसरा विरलन राशिकौ विरलन करि तीह एक एक विरलित विषै एक एक दीयमान राशिकौ देइ परस्पर गुणन करिए ऐसैं करतैं शलाका राशितैं रूप काटि लीजिये ।

भावार्थ—जघन्य असंख्यातासंख्यातके समान तीन राशि करिए । शलाकाराशि, विरलन-राशि, देयराशि तहां विरलनराशिकौ एक एक करि जुदा जुदा बखेरि दीजिए, बहुरि तिस एक एक जायगा देयराशिकौ दे जाईएं तहां तिनि देयराशिनिकौ परस्पर गुणिए । ऐसैं विधान करिकैं शलाका राशिमैस्यौ एक घटाय दीजिए । जैसे च्यारि प्रमाणकौ लीएं शलाका विरलन देय तीन राशि करिए तहां विरलन राशिकौ एक एक करि लिखिये । १।१।१।१ । बहुरि एक एक प्रति देयराशिकौ दीजिए ।

४१४।४।४ । इनकौं परस्पर गुणिए तब दोयसैं छप्पन्न होइ । ऐसैं विधान करि शलाका राशिका प्रमाण च्यारि था तामैं एक घटाइ दाजिए । ऐसैंही इहां विधान जाननां ॥ ३८ ॥

तत्शुष्पणं विरलिय तमेव दाऊण संगुणं किच्चा ।

अवणय पुणरविं रूवं पुव्विल्लसलागरासीदो ॥ ३९ ॥

तत्रोत्पन्नं विरल्य्य तदेव दत्त्वा संगुणं कृत्वा ।

अपनयेत् पुनरपि रूपं पूर्वतनशलाकाराशितः ॥ ३९ ॥

अर्थ—जहां परस्पर गुणन कीएं भया था जो राशि ताकौं विरलन करि रूप प्रति सोई देय करि परस्पर गुणन करि पूर्वशलाका राशितैं बहुरि एक घटावनां ।

भावार्थ—पूर्वें परस्पर गुणन कीएं जो राशि भया तीह प्रमाण विरलनराशि वा देयराशि करिए । विरलनराशिकौं एक एक करि बखेरिए । बहुरि एक एक जायगा एक एक देयराशि दीजिए । बहुरि तिनि देय राशिनिकौं परस्पर गुणिए । ऐसैं विधान करि पूर्वें जो शलाकाराशि था तामैं एक पहलैं घटाया था अब एक और घटावनां । जैसें पूर्वें परस्पर गुणन कीएं दोयसैं छप्पन हूवा तिनकौं विरलन करिए दोयसैं छप्पन जायगा एक एक लिखिए । बहुरि एक एक की जायगा दोयसैं छप्पन होय तामैं एक आगैं घटाया था अब एक और घटावनां । ऐसैं ही इहां विधान जाननां ॥ ३९ ॥

एवं सलागरासिं णिट्ठाविय तत्थतणमहारासिं ।

किच्चा तिप्पडि विरलणदिज्जादी कुणदि पुव्व व ॥ ४० ॥

एवं शलाकाराशिं निष्ठाप्य तत्रतनमहाराशिम् ।

कृत्वा त्रिःप्रति विरलनदेयादि करोति पूर्व व ॥ ४० ॥

अर्थ—याही प्रकार एक एक संगुणन कीएं जो जो प्रमाण होइ तीह तीह प्रमाण विरलन देय राशि करि पूर्वोक्त प्रकार संगुणन करि करि एक एक रूप पूर्वोक्त शलाका राशिमैं घटावतैं घटावतैं शलाकाराशिकौं निष्ठापन करि पूर्ण करि तहां निपज्या जो अंत विषे परस्पर गुणन कीएं महाराशि तीह महाराशिप्रमाण शलाका विरलन देय राशि करि पूर्वोक्त प्रकार एक एक वार विरलन देय करि परस्पर गुणें एक एक शलाका राशिमैं स्यौं घटावतैं घटावतैं दूसरा शलाका राशिका निष्ठापन होइ समाप्तपनां होइ । तहां अंत विषे जो परस्पर गुणन कीएं प्रमाण होइ तीह प्रमाण शलाका विरलन देय राशि करि पूर्वोक्त प्रकार एक एक वार विरलन देय करि परस्पर गुणें एक एक शलाका राशिमैंस्यौं घटावतैं घटावतैं तीसरा शलाका राशिका समाप्तपनां होय । ऐसैं शलाकात्रयका निष्ठापनकौं करैं ॥ ४० ॥

एवं बिदियसलागे तदियसलागे च णिट्ठिदे तत्थ ।

जं मज्झासंखेज्जं तद्धिमेदे पक्खिवेदव्वा ॥ ४१ ॥

एवं द्वितीयशलाकायां तृतीयशलाकायां च निष्ठितायां तत्र ।

यत् मध्यासंख्यातं तस्मिन् एते प्रक्षेप्तव्याः ॥ ४१ ॥

अर्थ—या प्रकार दूसरी शलाका बहुरि तीसरी शलाकाकौं निष्ठापनरूप होत संतै तहां जो मध्य असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण भया तीह प्रमाण विषै ए आगै कहिए जु हैं राशि ते प्रक्षेपण करनें मिलावनें जोड़नें ॥ ४१ ॥

धम्माधम्मिगिजीवगलोगागासप्पदेसपत्तेया ।

तत्तो असंखगुणिदा पादिष्ठिदा छप्पि रासीओ ॥ ४२ ॥

धर्माधर्मैकजीवकलोकाकाशप्रदेशप्रत्येकाः ।

ततः असंख्यगुणिता प्रतिष्ठिताः षडपि राशयः ॥ ४२ ॥

अर्थ—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य एक जीवद्रव्य लोकाकाश इन च्यारबौनिका प्रदेशनिका प्रमाण बहुरि अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति जीवनिका प्रमाण तिस लोकाकाशके प्रदेशनितै असंख्यात गुणां । बहुरि तातै भी प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पती जीवनिका प्रमाण असंख्यात लोक गुणां ए छहौं राशि पूर्वोक्त मध्य असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण विषै मिलाइ दीजिए ॥ ४२ ॥

तं कयतिप्पडिरासिं विरलादिं करिय पढमविदियसलं ।

तदियं च परिसमाणिय पुव्वं वा तत्थ दायव्वा ॥ ४३ ॥

तं कृतत्रिःप्रतिराशिं विरलादिं कृत्वा प्रथमद्वितीयशलाम् ।

तृतीयां च परिसमाप्य पूर्वं वा तत्र दातव्याः ॥ ४३ ॥

अर्थ—तिनकौं मिलाएं जो मध्यम असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण भया तीह प्रमाण त्रिः प्रतिराशिं कहिए शलाका आदि तीन राशि करि बहुरि विरलादिं कृत्वा कहिए विरलन देय करि परस्पर गुणें शलाका राशिमें एक एक घटाइ प्रथम शलाका राशिकौं समाप्त करि बहुरि तहां जो प्रमाण होइ तीह प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार शलाकादि करि द्वितीय शलाका राशिकौं समाप्त करि बहुरि तहां जो प्रमाण होइ तीह प्रमाण शलाकादि करि पूर्वोक्त प्रकार तृतीय शलाका राशिकौं निष्ठापन करि तहां जो प्रमाण होइ तीह विषै ए राशि दैनै मिलावनें ॥ ४३ ॥

कप्पठिदिबंधपच्चयरसबंधज्जवसिदा असंखगुणा ।

जोगुक्कस्सविभागप्पडिच्छिदा विदियपक्खेवा ॥ ४४ ॥

कल्पस्थितिबंधप्रत्ययरसबंधाध्यवसिता असंख्यगुणाः ।

योगोत्कृष्टाविभागप्रतिच्छेदाः द्वितीयप्रक्षेपाः ॥ ४४ ॥

अर्थ—उत्सर्पिणी अवसर्पिणी मिलिकरि भया जु कल्पकाल ताके समयनिका प्रमाण संख्यात पल्यमात्र । बहुरि तातै स्थिति बंधाध्यवसायस्थान असंख्यात लोक गुणां, बहुरि तातै योगका उत्कृष्ट अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यात लोक गुणां ए च्यारि राशि दूसरा प्रक्षेप जाननें । दूसरी बार ए च्यारि राशि मिलावनें ॥ ४४ ॥

तं रासिं पुव्वं वा तिप्पडि विरलादिकरणमेत्थ किदे ।

अवरपरित्तमणंतं रूऊणमसंखसंखवरं ॥ ४५ ॥

तं राशिं पूर्वं वा त्रिःप्रति विरलादिकरणं अत्र कृते ।

अवरपरीतमनंतं रूपोनमसंख्यासंख्यवरम् ॥ ४५ ॥

अर्थ—तीन चारयौ राशिकौ मिलाए जो प्रमाण भया ताकौ पूर्वोक्त प्रकार त्रिः प्रति कृत्वा कहिये शलाकादिरूप करि बहुरि विरलन आदिका करनां ताकौ करिए अर तीन शलाकानिका निष्ठापन करिए । ऐसै करतैं जो प्रमाण होइ सो जघन्य परीतानंत जानना । सो जो एक घाटि होइ तौ उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात जाननां ॥ ४५ ॥

अवरपरित्तं विरलिय दाऊणेदं परोपरं गुणिदे ।

अवरं जुत्तमणंतं अभव्यसममेत्थ रूऊणे ॥ ४६ ॥

अवरपरीतं विरलयित्वा दत्त्वा इदं परस्परं गुणिते ।

अवरं युक्तमनंतं अभव्यसमं अत्र रूपोने ॥ ४६ ॥

अर्थ—बहुरि जघन्य परीतानंतकौ एक एक करि विरलन करि रूप प्रति तिसही जघन्य परीतानंतकौ देइ तिस राशिकौ परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ सो जघन्य युक्तानंत जाननां । सो यहु अभव्य सम है ॥ अभव्य जीवनििका इतनां प्रमाण है । यामैं एक घटावतैं सतैं ॥ ४६ ॥

जेष्टपरित्ताणंतं वर्गे गहिदे जहण्णजुत्तस्स ।

अवरमणंताणंतं रूऊणे जुत्तणंतवरं ॥ ४७ ॥

ज्येष्ठपरीतानंतं वर्गे गृहीते जघन्ययुक्तस्य ।

अवरं अनंतानंतं रूपोने युक्तानंतवरम् ॥ ४७ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट परीतानंत होइ । बहुरि जघन्य युक्तानंतका वर्ग ग्रहण कीएं जघन्य अनंतानंत होइ । जघन्य युक्तानंतकौ जघन्य युक्तानंत करि गुणें जघन्य अनंतानंत हो हैं । यामैं एक घटाएं उत्कृष्ट युक्तानंत हो है ॥ ४७ ॥

अवराणंताणंतं तिप्पडि रासिं करित्तं विरलादिं ।

तिसलागं च समाणिय लद्धेदे पक्खिंवेदव्वा ॥ ४८ ॥

अवरानंतानंतं त्रिःप्रतिराशिं कृत्वा विरलनादि ।

त्रिशलाकां च समाप्य लब्धे एते प्रक्षेपव्याः ॥ ४८ ॥

अर्थ—बहुरि जघन्य अनंतानंतरूप राशिकौ पूर्वोक्त प्रकार त्रिः प्रति कृत्वा कहिए शलाकादि रूप करि बहुरि विरलन आदिक क्रमतैं प्रथम शलाका द्वितीय शलाका तृतीय शलाकाकौ पूर्वोक्त प्रकार समाप्त करि इहां जो मध्य अनंतानंतरूप लब्ध प्रमाण भया तामैं ए राशि प्रक्षेपनैं मिलावनें ॥ ४८ ॥

सिद्धा णिगोदसाहियवणप्फदिपोग्गलपमा अणंतगुणा ।

काल अलोगागासं लुच्चेदेणतपक्खेवा ॥ ४९ ॥

सिद्धा निगोदसाधिकवन्नस्पतिपुद्गलप्रमा अनंतगुणाः ।

काल अलोकाकाशं षट् चैते अनंतप्रक्षेपाः ॥ ४९ ॥

अर्थ—सिद्ध राशि जीव राशिके अनंतवै भागि प्रमाण । बहुरि तातै अनंतगुणां पृथ्वी कायिकादिक च्यार । बहुरि प्रत्येक वनस्पति बहुरि त्रसराशि अर तीनि विना संसारी राशि प्रमाण निगोद जीवनिक प्रमाणरूप निगोदराशि । बहुरि यातै प्रत्येक वनस्पतीका प्रमाण अधिक कीए वनस्पती राशि । बहुरि जीव राशितै अनंत गुणा पुद्गराशि । बहुरि तातै अनंतगुणां कालके समयनिका प्रमाणरूप कालराशि । तातै अनंतगुणां प्रदेश प्रमाणरूप अलोकाकाश राशि ए छह राशि अनंतरूप प्रक्षेप हैं । इन छहौनिका प्रमाणकौ पूर्वोक्त प्रमाण विषै मिलाईए ॥ ४९ ॥

तं तिण्णिवारवर्गिदसंवर्गं करिय तत्थ दायव्वा ।

धम्माधम्मागुरुलघुगुणाविभागप्पडिच्छेदा ॥ ५० ॥

तं त्रिवारवर्गितसंवर्गं कृत्वा तत्र दातव्याः ।

धर्माधर्मागुरुलघुगुणाविभागप्रतिच्छेदाः ॥ ५० ॥

अर्थ—तिन छहौ राशिकौ मिलाएं जो राशि भया ताकौ तीन वार वर्गित संवर्ग रूप करि विरलनादिक विधानतै गुणनादि करि प्रथम द्वितीय तृतीय शलाकाकौ पूर्वोक्त प्रकार समाप्त करि तहां जो प्रमाण भया तिस राशि विषै धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्यका अगुरु लघुगुणाका अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण देनां मिलावनां ॥ ५० ॥

लद्धं तिवार वर्गिदसंवर्गं करिय केवले णाणे ।

अवणिय तं पुण खित्ते तमणंताणंतमुक्कस्सं ॥ ५१ ॥

लब्धं त्रिवारं वर्गितसंवर्गं कृत्वा केवलज्ञाने ।

अपनीय तं पुनः क्षिप्ते तमनंतानंतमुद्गुष्टम् ॥ ५१ ॥

अर्थ—मिलाएं जो लब्ध राशि भया ताकौ तीन वार वर्गित संवर्ग करि, भावार्थ-यहु जो पूर्वोक्त प्रकार विरलनादिक विधान अर तीन शलाकाकौ निष्ठापन करि जो प्रमाण होइ ताकौ केवलज्ञानका अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाणमैस्यौ घटाइ बहुरि ज्यूका त्यू सो प्रमाण केवलज्ञान विषै मिलाइ दीएं जो राशि केवलज्ञान मात्र होइ ताकौ उत्कृष्ट अनंतानंत जानहु ।

भावार्थ—पूर्वोक्त क्रिया करतै भी केवलज्ञान समान प्रमाण न भया तातै पूर्वोक्त प्रमाण केवलज्ञानमैस्यै घटाइ ज्यूका त्यू मिलाय केवलज्ञानके समान उत्कृष्ट अनंतानंत कहा । ऐसै इकईस भेद संख्यामानके जानने ॥ ५१ ॥

आगै श्रुतज्ञानादिकका विषयरूप स्थानकौ निरूपण करै हैं:—

जावदियं पच्चक्खं जुगवं सुदओहिकेवलाण हवे ।

तावदियं संखेज्जमसंखमणंतं कमा जाणै ॥ ५२ ॥

यावत्कं प्रत्यक्षं युगपत् श्रुतावधिकेवलानां भवेत् ।

तावत्कं संख्येयमसंख्यमनंतं क्रमात् जानीहि ॥ ५२ ॥

अर्थ—यावन्मात्र विषय युगपत् प्रत्यक्ष श्रुत अवधि केवलज्ञानके होंहि तावन्मात्र संख्यात असंख्यात अनंत क्रमतै जानऊ ॥

भावार्थ—श्रुतज्ञानका संख्यात, अवधिका असंख्यात, केवलका अनंत प्रमाणकौ लीएं युग-
पत् प्रत्यक्ष प्रति भासनेरूप विषय जाननां ॥ ५२ ॥

आगै चौदह धारानिके नाम कहै हैं:—

धारेत्थ सव्वसमकदिघणमाउगइदरवेकदीविंदं ।

तस्स घणाघणमादी अंतं ठाणं च सव्वत्थ ॥ ५२ ॥

धारा: अत्र सर्वसमकृतिघनमातृकेतरद्विकृतिवृंदम् ।

तस्य घनाघनमादि अंतं स्थानं च सर्वत्र ॥ ५२ ॥

अर्थ—धारा हैं ते इस शास्त्रविषै निरूपिए हैं । सर्वधारा, समधारा, कृतिधारा, घनधारा, कृतिमातृकधारा, घनमातृकधारा, बहुरि समादिक धारातैं प्रतिपक्षी विषमधारा, अकृतिधारा, अघन-
धारा, अकृतिमातृकधारा, अघनमातृकधारा, जाननी । बहुरि द्विरूप वर्गधारा, द्विरूपघनधारा, द्विरू-
पघनाघनधारा, ऐसैं ए चौदह धारा हैं । इनके आदि अर अंत अर स्थान भेद हैं ते सर्वत्र धारानि-
विषै कहिए हैं ॥ ५२ ॥

आगै सर्वधाराके स्वरूपकूं निरूपण करै हैं:—

उत्तेव सव्वधारा पुवं एमादिगा हवेज्ज जदि ।

सेसा समादिधारा तत्थुप्पण्णेति जाणाहि ॥ ५४ ॥

उक्तैव सर्वधारा पूर्वं एकादिका भवेत् यदि ।

शेषा: समादिधारा: तत्रोत्पन्ना इति जानीहि ॥ ५४ ॥

अर्थ—कही सोई सर्व धारा है । जो पूर्वे एकादिक होइ तौ ।

भावार्थ—संख्यातादिक केवलज्ञान पर्यन्त जे सर्व संख्याके स्थान ते सर्व धारामयी हैं ॥
विशेष इतनां तहां दोगतैं लगाय कथन कीया था, इहां एक तैं लगाय एक एक वधता केवलज्ञानपर्यंत
सर्व धाराके स्थान जाननें । इस सर्व धाराके स्थान अंक संदृष्टि करि ऐसैं हैं । १,२,३,४,५,६,
७,८,९,१०,११,१२,१३,१४,१५ । केवलज्ञान १६ । इहां अंकसंदृष्टि करि केवलज्ञानरूप
उत्कृष्ट अनंतानंतका प्रमाण सोलह जाननां । बहुरि अवशेष समधारा आदि धारा हैं ते तिस सर्व
धाराही तैं उत्पन्न ऐसा तू जानि जातैं जे सर्व इस विषै गर्भित हैं ॥ ५४ ॥

आगै समधाराकौ कहै हैं:—

वेयादि विउत्तरिया केवलपज्जंतया समा धारा ।

सव्वत्थ अवरमवरं रूज्जुण्णस्समुक्कस्सं ॥ ५५ ॥

द्वयादि द्वयुत्तरिका केवलपर्यंतका समा धारा ।

सर्वत्र अवरमवरं रूपोनोत्कृष्टं उत्कृष्टम् ॥ ५५ ॥

अर्थ—दोगकौ आदि दैकरि दोग दोग वधते रूप केवलज्ञान पर्यंत समधारा कही हैं । सर्वत्र
संख्यातादि संख्यामानके भेद पूर्वे कहे तिनविषै सर्वधारा विषै तिष्ठता ऐसा जो जघन्य भेद सो
तो इहां जघन्य जाननां । बहुरि सर्व धाराकौ प्राप्त ऐसो एक घाटि उत्कृष्ट भेद सो इहां उत्कृष्ट

जाननां । जैसे संख्यातका जघन्यभेद दोय असंख्यातका अंक संदृष्टि अपेक्षा सोलह सो समसंख्या-
रूप है । तातैं तिनका जघन्य जो सर्वधारा विषै है सोई इस धारा विषै जाननां । बहुरि संख्यातका
उत्कृष्ट अंकसंदृष्टि अपेक्षा पंद्रह असंख्यातका दोयसै पचावन सो ए विषम संख्यारूप है । सो
इस धारा विषै बनै नाहीं तातैं तिनमैं एक घटाएँ चौदह वा दोयसै चौवन रहैं सो इस धारा विषै
संख्यातादिकका उत्कृष्ट जाननां । ऐसैं भावार्थ जाननां । अंकसंदृष्टि करि याके स्थान ऐसैं २,४,६,
८,१०,१२,१४, केवलज्ञान १६ ॥ ५५ ॥

आगैं विषम धारा कहिए हैं:—

एगादि विउत्तरिया विसमा रूऊणकेवलवसाणा ।

रूवजुदमवरमवरं वरं वरं होदि सव्वत्थ ॥ ५६ ॥

एकादि द्वयुत्तरा विषमा रूपोनकेवलावसाना ।

रूपयुतमवरमवरं वरं वरं भवति सर्वत्र ॥ ५६ ॥

अर्थ—एककौ आदि दैकरि दोय वधतारूप विषम धारा हैं सो एक घाटि केवलज्ञान पर्यंत
जाननां । जातैं केवलज्ञानके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण समसंख्यारूप है । तामैं एक घटाएँ
विषमधाराका अंत होइ । बहुरि सर्व धाराकौ प्राप्त भये जो संख्यातादिक भेद तिनका जघन्य भेद
विषै एक मिलाएँ इहां तिनका जघन्य भेद होइ । बहुरि तहां जो उत्कृष्ट भेद है सोई इहां उत्कृष्ट
भेद होइ । जैसे संख्यातका जघन्य भेद दोय । असंख्यातका जघन्य भेद अंक संदृष्टि अपेक्षा
सोलह । ते ए समधारारूप हैं सो इस धारा विषै बनै नाहीं । तातैं इन विषै एक मिलाएँ तीन वा
सत्रह होइ सो इस धारा विषै संख्यात असंख्यातका जघन्य भेद जाननां । बहुरि उत्कृष्ट भेद अंक-
संदृष्टि अपेक्षा संख्यातका पंद्रह असंख्यातका दोयसै पचावन सो ए विषमरूप हैं । सो इस धारा
विषै बनै नाहीं हैं तातैं तहां जो संख्यातादिकका उत्कृष्ट भेद कहा सोई इस धारा विषै संख्याता-
दिकका उत्कृष्ट भेद जाननां । ऐसा इहां अर्थ जाननां । इस विषम धाराके स्थान अक संदृष्टि विषै
ऐसैं हैं । १,३,५,७,९,११,१३, एक घाटि केवलज्ञान १५ ॥ ५६ ॥

आगैं समधारा विषमधाराके स्थाननिका प्रमाण बहुरि ताके ल्यावनेका विधानकौ कहैं हैं:—

केवलणाणस्सद्धं ठाणं समविसमधारयाण हवे ।

आदी अंते सुद्धे वड्ढिहिदे इगिजुदे ठाणा ॥ ५७ ॥

केवलज्ञानस्यार्थं स्थानं समविषमधारयोर्भवेत् ।

आदौ अंते शुद्धे वृद्धिद्वते एकयुते स्थानानि ॥ ५७ ॥

अर्थ—केवलज्ञानका जु प्रमाण ताका आधा स्थान समधारा अर विषमधारा विषै जाननैं ।
तहां स्थान ल्यावनेका विधानविषै करणसूत्र आदी अंते सुद्धे इत्यादि जाननां । आदिका स्थान अर
अंतका स्थान इनकौ शुद्ध करिए जाका अधिक प्रमाण होइ तामैं हीन प्रमाणकौ घटाइ अवशेष
राखिए । बहुरि वृद्धि जो स्थान स्थान प्रति जेती जेती वधती होइ ताका भाग दीजिए । जो लब्ध
होइ ता विषै एक मिलाय दीजै यों करतां जो प्रमाण आवै सोई स्थाननिकौ प्रमाण जाननां । सो

इहां अंक संदृष्टि अपेक्षा समधाराविषै आदिस्थान दोय अंतस्थान सोलह तहां सोलह मैं दोय घटाएं रहे चौदह याकीं स्थान स्थान प्रति वृद्धिका प्रमाण दोयका भाग दीएं पाए सात यामैं एक मिलाएं पाए आठ, सो आठ समधाराके स्थान हैं । बहुरि विषमधारा विषै आदि स्थान एक अंतस्थान पंद्रह आदिकौं अंतमैं घटाएं अवशेष चांदह वृद्धि दोयका भाग दीएं सात तामैं एक मिलाएं आठ स्थान जाननें । ऐसैं ही जहां समान प्रमाणकौं लीं स्थान स्थान प्रति चय वधती होइ तहां स्थानकनिका प्रमाण ल्यावनैकौं करणसूत्र जाननां ॥ ५७ ॥

आगैं कृतिधाराकौं कहैं हैं:—

इगि चादि केवलंतं कदी पदं तप्पदं कदी अवरं ।

इगिहीणतप्पदकदी हेट्टिममुक्कस्स सँवत्थ ॥ ५८ ॥

एकं चत्वार्यादिः केवलांता कृतिः पदं तप्पदं कृतिः अवरं ।

एकहीनतत्पदकृतिः अधस्तनमुत्कृष्टं सर्वत्र ॥ ५८ ॥

अर्थ—एक च्यारि इत्यादि केवलज्ञानपर्यंत कृतिधारा हो हैं । एक आदि एक एक वधता केवलज्ञानका प्रथम वर्गमूल पर्यंत जे वर्गमूल तिनका वर्ग कीएं जो जो राशि होइ सो सो इस धाराके स्थान जानने । सो वर्गमूलनिका प्रमाण केवलज्ञानका प्रथम वर्गमूल प्रमाण जाननां । तितने ही इस धाराके स्थान हैं । बहुरि इस धारा विषै संख्यातकौं आदिदैं करि संख्याके भेद तिनका जघन्यभेद तौ वर्गस्थान स्वरूप ही है । बहुरि संख्यातादिकनिका जो जघन्य भेद ताका वर्गमूलमैं स्थौं एक घटाय अवशेष रहै ताका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ सो इस धारा विषै तिस संख्या भेदके अधस्तनवर्ती जो संख्यातादिक तिनिका उत्कृष्टपनां जाननां । उदाहरण । जैसे अंकसंदृष्टि अपेक्षा जघन्य असंख्यातका प्रमाण सोलह सो तौ च्यारिका वर्गस्थानरूप है ही । बहुरि सोलहका वर्गमूल च्यारि तामैं एक घटाएं तीन रहे ताका वर्ग कीएं नव भए सो असंख्यातकै नीचैं जो पहलैं भेद संख्यात सो इस धाराविषै संख्यातका उत्कृष्ट नव ही है । यद्यपि दसकौं आदि दैं करि पंद्रह पर्यंत संख्यात हीके भेद हैं तथापि ते भेद इस धारा विषै संभवै नहीं । तातैं इहां उत्कृष्ट नव ही कहा । ऐसैं ही अन्यत्र भी जाननां । अंकसंदृष्टिविषै याके स्थान ऐसे १,४,९, केवलज्ञान १६। इहां एकका वर्ग एक सो प्रथम स्थान दोयका वर्ग च्यारि सो दूसरा स्थान तीनका वर्ग नव सो तीसरा स्थान केवलज्ञानका वर्गमूल अंकसंदृष्टि करि च्यारि ताका वर्ग सोलह सो अंतस्थान जाननां ॥ ५८ ॥

आगैं अकृतिधारा कहिए हैं:—

दुप्पहुदि रूववज्जिदकेवलणाणावसाणमकदीए ।

सेसविही विसमं वा सपदूणं केवलं ठाणं ॥ ५९ ॥

द्विप्रभृति रूपवर्जितकेवलज्ञानावसानमकृतौ ।

शेषविधिः विषमा वा स्वपदोनं केवलं स्थानम् ॥ ५९ ॥

अर्थ—दोयकों आदि दै करि एक घाटि केवलज्ञानपर्यंत अकृतिधारा है । बहुरि या विषै अवशेष विधान संख्यातादिकका जघन्य उत्कृष्टपनां-सो विषम धारावत् जाननां । जघन्य भेद विषै एक मिलाएं इहां, जघन्यभेद होइ । उत्कृष्ट भेद जो है सोई इहां है । जातैं इस धाराविषै वर्गरूप स्थानकनिका रहितपनां है । बहुरि इस धाराके सर्व स्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल करि हीन ऐसा केवलज्ञान प्रमाण जाननां । अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसे हैं । २,३,५,६,७,८,१०,११,१२, १३,१४, एक घाटि केवल १५ । इहां सर्व धाराके स्थानकनि विषै कृतिधाराके स्थान दूरि करि अवशेष अकृतिधाराके स्थान कहे हैं ॥ ५९ ॥

आगैं घनधारा कहिए हैं:—

इगिअडपहुदिं केवलदलमूलस्सुवरि चडिदठाणजुदे ।

तग्घणमंतं विंदे ठाणं आसण्णघणमूलं ॥ ६० ॥

एकाष्टप्रभृति केवलदलमूलस्योपरि चटितस्थानयुते ।

तद्घनमंतं वृंदे स्थानं आसन्नघनमूलम् ॥ ६० ॥

अर्थ—एक आठकों आदि दै करि १,८,२७ अंत घन स्थान जाईये ।

भावार्थ—एकका घन एक सो याका प्रथम स्थान दोयका घन आठ सो याका दूसरा स्थान तीनका घन सताईस सो याका तीसरा स्थान ऐसैं अनंत घनस्थान जाइ करि केवलज्ञानका आधा प्रमाण है सो घनस्थानरूपही है । ताका जो घनमूल ताकै उपरि चटितस्थान कहिए, उपरि उपरि प्राप्त भए जो घनमूलके स्थान तिनकी संख्या तिस घनमूल विषै मिलाएं जो प्रमाण होइ सो इहां आसन्न घनमूल कहिए ताका घन कीएं जो प्रमाण होइ सोई इस धाराका अंतस्थान जाननां । जातैं आसन्न घन तैं एक अधिकका भी घन ग्रहें केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ सो है नाहीं । इस कथनकों अंकसंदृष्टि करि दिखाईए है । जैसे केवलज्ञानका प्रमाण पण्ठी ६५५३६ ताका आधा ऐसा ३२७६८ । सो यहु घनस्थानरूप हैं । याका घनमूल बत्तीस । ३२ । ताकै उपरि घनमूल स्थान ऐसे ३३,३४,३५,३६,३७,३८,३९,४० । ए आठ स्थान बत्तीस में मिलाएं चालीस हूवा याकों इहां आसन्न घनमूल कहिए । याका घन ६४००० । सोही इस धाराका अंतस्थान है । जातैं आसन्न घनमूल तैं एक अधिक इकतालीस ४१ । ताका भी घन ग्रहें अडसठि हजार नौसैं इकईस होय सो केवलज्ञानतैं अधिक राशि उपजै तातैं आसन्न घनमूलका जु घन ६४००० सोई घनधाराका अंतस्थान है । इसकों आसन्नघन कहिए है । याका घनमूलकों आसन्न घनमूल कहिए है । बहुरि इस धाराकै सर्वस्थान केवलज्ञानकै आसन्न घनमूल प्रमाण जाननें ॥६०॥

आगैं केवलज्ञानका अर्द्धप्रमाण घनधारास्वरूप कैसें जानिएं, ताका व्यवस्थानकों पूर्व आधा सूत्र करि दिखावता संता उत्तर आधासूत्र करि अघनधाराकों कहे हैं:—

समकादिसल विकदीए दलिदे घणमेत्थ विसमगे तुरिए ।

अघणस्स दु सव्वं वा विघणपदं केवलं ठाणं ॥ ६१ ॥

समकृतिशला द्विकृतौ दलिते घनः अत्र विषमके तुरिये ।

अघनस्य तु सर्वे वा विघनपदं केवलं स्थानम् ॥ ६१ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै जिस वर्गस्थानरूप राशिकी वर्गशलाका सम होइ, दोय च्यारि इत्यादिरूप होइ तिस राशिका आधा प्रमाण घनरूप होइ ही होइ । दोयका वर्ग तैँ लगाय पूर्वपूर्वका वर्ग करतैँ जेतीवार होइ तितनां ही ताकी राशि सोलह ताकी वर्गशलाका दोय सो समरूप है ताका आधा प्रमाण आठ सो दोयका घनरूप हैं । बहुरि राशि पण्ठी ताकी वर्गशलाका च्यारि सो समरूप है, ताका आधा प्रमाण बत्तीस हजार सातसैं सडसठि सो बत्तीसका घनरूप है । ऐसैं ही एकट्टी आदि विषै भी जानि लेनां । बहुरि इस ही द्विरूप वर्गधारा विषै जिस राशिकी विषमरूप वर्गशलाका होइ तिस राशिका चौथा भाग घनराशिरूप हो है । जैसें द्विरूप वर्गधाराविषै राशि च्यारि ताकी वर्गशलाका एक है सो त्रिपमरूप है । याका चौथा भाग एक सो एकका घनरूप है । ऐसैं ही बाटालादिक विषै भी जानना । ऐसैं कव्वा जु न्याय तीह करि केवलज्ञानकी वर्गशलाका समरूप ही हैं, तातैं तीह केवलज्ञानका आधा प्रमाण घनस्थानरूप है ऐसा सिद्ध भया । बहुरि केवलज्ञानकी वर्गशलाका समरूप हैं ऐसा कैसें जानिए ? तहां कहिए हैं । जो केवलज्ञानकी वर्गशलाकारूप राशि भी द्विरूप वर्गधारा ही विषै उत्पन्न है, द्विरूप वर्गधारा विषै जो राशि है सो समरूप ही है । बहुरि प्रश्न, जो केवलज्ञानकी वर्गशलाका द्विरूप वर्गधारा विषै ही हैं ऐसा कैसें जानिए ? तहां कहिए हैं जो ‘अवरा खाइयलद्धी वग्गसलागा तदो सगद्धलिदी’ ऐसा सूत्र आगैं कहिएगा, तिस सूत्र करि केवलज्ञानकी वर्गशलाका द्विरूप वर्गधारा विषै ही कहिएगी । बहुरि अब घनधारा कहिए है । अघनधाराके स्थान आदि प्रक्रिया सर्वधारावत् जाननी । इतनां विशेष, विघनपदं कहिए जो घनधाराविषै जे जे स्थान हैं ते ते धारा विषै नांही हैं और सर्वस्थान सर्व धारावत् जाननें । बहुरि काकका नेत्रका गोलक जैसें एक ही नेत्र विषै पाईए, तैसें जे सर्व धाराके स्थान हैं तिन विषै जो स्थान घनरूप है सो अघनरूप नांहीं, अघनरूप है सो घनरूप नांहीं, तातैं इस धारा के सर्व स्थान घनस्थानकनिका प्रमाण रहित केवलज्ञान समान हैं । अंकसंदष्टि विषै याके स्थान ऐसैं हैं २,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३,१४,१५,१६ ॥ ६१ ॥

आगैं वर्गमातृक धाराकौ कहै हैं:—

इह वग्गमाउआए सव्वगधारव्व चरिमरासी दु ।

पढमं केवलमूलं तद्धानं चावि तच्चेव ॥ ६२ ॥

इह वर्गमातृकायां सर्वकधारा इव चरमराशित्तु ।

प्रथमं केवलमूलं तत्स्थानं चापि तदेव ॥ ६२ ॥

अर्थ—इस वर्गमातृक धारा विषै सर्वधारावत् स्थानादिककी प्रक्रिया जाननी, विशेष इतना याका अंतस्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल जाननां । जातैं वर्गके उपजावनेकौ समर्थ ऐसैं संख्या विशेष इस धारा विषै पाईए तातैं याका नाम वर्गमातृक धारा है । सो एकतैं लगाय केवलज्ञानका प्रथम मूलपर्यंत सबनिका वर्ग होइ सकै है; ताकै उपरि एक भी बधतीका वर्ग कीजिए

तौ केवलज्ञानतै उलंघि प्रमाण होइ सो है नाहीं, जैसे केवल ज्ञानका प्रमाण सोलह ताका वर्गमूल च्यारि तहां पर्यंत तौ वर्ग होइ अर उपरि पांचका वर्ग करिए तौ केवलज्ञान तै अधिक प्रमाण होइ जाय । तातै याका अंतस्थान केवलज्ञानका प्रथम मूलही कहा । इस धाराके सर्व स्थानक तितने हीं केवलज्ञानका प्रथम मूल प्रमाण ही जाननां । अंक संदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें १, २, ३, केवल प्रथममूल ४ ॥ ६२ ॥

आगै अवर्गमातृक धाराकौ कहै हैं:—

अकदीमाउअ आदी केवलमूलं सरूवमंतं तु ।

केवलमणेय मज्झं मूलूणं केवलं ठाणं ॥ ६३ ॥

अकृतिमातृकाया आदिः केवलमूलं स्वरूपमंतं तु ।

केवलमनेकं मध्यं मूलोनं केवलं स्थानम् ॥ ६३ ॥

अर्थ—अकृतिमातृक धाराका प्रथम स्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल एक करि सहित जाननां । जातै केवलज्ञानका प्रथम मूल पर्यंत तौ सर्व अंक वर्गमूल रूप पाइए हैं, सबनिका वर्ग होइसकै है । बहुरि जिनका वर्ग कीएं केवलज्ञानतै अधिक प्रमाण होइ जाइ तिनका प्रहण इस धारा विषै हैं, तातै याका प्रथम स्थान एक अधिक केवलज्ञानका प्रथम मूल कहा । बहुरि अंत स्थान याका केवलज्ञान है, मध्यस्थान अनेक प्रकार हैं । इस धाराके सर्व स्थान केवलज्ञानका प्रथममूल रहित केवलज्ञान प्रमाण जाननें । अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें हैं, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ । इहां केवल ज्ञानका प्रमाण सोलह ताका प्रथम वर्गमूल च्यारि तातै एक अधिकतै लगाय स्थान कहे हैं ॥ ६३ ॥

आगै घनमातृक धाराकौ कहै हैं:—

घणमाउगस्स सव्वगधारं वा सव्वपच्छिमो रासी ।

आसण्णविंदमूलं तमेव ठाणं विजाणाहि ॥ ६४ ॥

घनमातृकायाः सर्वकधारा इव सर्वपश्चिमो राशिः ।

आसन्नवृंदमूलं तदेव स्थानं विजानीहि ॥ ६४ ॥

अर्थ—घनमातृक धाराकी स्थानादिककी प्रक्रिया सर्वधारावत् जाननीं, इतनां विशेष याका सर्व पश्चिम राशि कहिए अंतका स्थान सो केवलज्ञानका आसन्न घनमूल प्रमाण ही जाननें । इहां जिनका घन होइ ऐसें घनमूलरूप संख्या विशेष प्रहे हैं सो केवलज्ञानका आसन्न घनमूल पर्यंत तौ सबनिका घन होइ सकै है अर यातै एक अधिकका भी जो घन कीजिए तौ केवलज्ञानतै अधिक प्रमाण होइ जाय तातै एक आदि केवलज्ञानका आसन्न घनमूलपर्यंत याके स्थान कहे हैं । अंक संदृष्टि करि याके स्थान ऐसें हैं, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४० । इहां केवलज्ञानका प्रमाणपण्ठी, ६५५३६ कहा, ताका आसन्न घन चौसठि हजार ६४०००, ताका प्रथममूल चालीस ४० सो अंतस्थान जाननां ॥६४॥

आगै अघनमातृक धारा कहिए हैं:—

तं रूवसहिद्मादी केवलमवसाणमघणमाउस्स ।

आसण्णघणपदूणं केवलणाणं हवे ठाणं ॥ ६५ ॥

तत् रूपसहितं आदिः केवलमवसानमघनमातृकायाः ।

आसन्नघनपदोनं केवलज्ञानं भवेत् स्थानम् ॥ ६५ ॥

अर्थ—इहां जिनका घन कीएं केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ ऐसे संख्यात विशेषनिका ग्रहण है । सो घनमातृक धाराका जो अंतका स्थान सो रूपसहित कहिए, एक अधिक होइ तौ इस अघन मातृकधाराका प्रथम स्थान होइ, इहां तैं लगाय केवल ज्ञानपर्यंत सर्व स्थान इस धारा विषै जाननें । याके सर्व स्थान केवलज्ञानका आसन्न घनमूलरहित केवलज्ञान प्रमाण जाननें । अंक संदृष्टि विषै याके स्थान ऐसे ४१, ४२, ४३, इत्यादि अंतस्थान ६५= । इहां घन मातृकका अंतस्थान चालीस, तामैं एक अधिक कीएं याका आदि स्थान इकतालीस, अंतस्थान केवल ज्ञान सो पण्ठी प्रमाण । याके सर्व स्थान केवलज्ञान पण्ठी प्रमाण. ६५५३६, तामैं आसन्न घन चौसठि हजारका मूल चालीस घटाएं पैसठि हजार च्यारिसैं छिनवै ६५४९६ जाननें ॥ ६५ ॥

आगै द्विरूप वर्गधाराकौं सात गाथानि करि कहैं हैं:—

बेरूववर्गधारा चउ सोलस विसदसहियछप्पणं ।

पण्णट्ठी वादालं एकट्ठं पुव्वपुव्वकदी ॥ ६६ ॥

द्विरूपवर्गधारा चत्वार. षोडश द्विशतसहितषट्पंचाशत् ।

पण्णट्ठी द्वाचत्वारिंशत् एकाष्टी पूर्वपूर्वकृतिः ॥ ६६ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा कहिए है । दोयका वर्ग तैं लगाय पूर्व पूर्व स्थानकंको वर्ग कीएं उत्तर उत्तरस्थान इस धारा विषै हो हैं, तातैं याका नाम द्विरूप वर्गधारा है । तहां याका आदिस्थान दोयका वर्ग च्यारि ४, ताका वर्ग दूसरा स्थान सोलह १६, ताका वर्ग तीसरा स्थान दोय सैं सहित छप्पन २५६, ताका वर्ग चौथास्थान पण्ठी, पण्ठी कहा ? 'पण्ठी पंचसया छत्तीसा' पैसठि अर पांचसै छत्तीस इन अंकनितैं पण्ठी प्रमाण हो है, ६५५३६ याकी संदृष्टि ऐसी । बहुरि ताका वर्ग पांचवां स्थान वादाल । वादाल कहा ? 'वादाल चउणउदीछउणउदी विहत्तरीय छउणउदी' वियालीस, चौराणवै, छिनवै, बहत्तरि, छिनवै इन अंकनि करि वादाल हो है । ४२९४९६७२९६ याकी संदृष्टि ऐसी (४२=) । बहुरि याका वर्ग छठा स्थान एकट्ठी । एकट्ठी कहा ? 'एकट्ठं च चय छसत्तय च चय सुण्ण सत्त तियसत्ता । सुण्णं णव पण पंचय एक्कं छक्केगोय छक्कं च । एक, आठ, च्यारि, च्यारि, छह, सात, च्यारि, च्यारि, शून्य, सात, तीन, सात, शून्य, नव, पंच, पंच, एक, छह, एक, छह इन अंकनि करि एकट्ठी हो है । १८४४६७४४०७३७० ९५५१६१६ । याकी संदृष्टि ऐसी (१८=) ॥ ६६ ॥

ऐसेही पूर्व पूर्व स्थानकका वर्ग कीएं उत्तर उत्तर स्थान हो हैं:—

तो संखठाणगमणे वग्गसलागद्धछेदपढमपदं ।

अवरपरित्तासंखं आवलि पदरावली य हवे ॥ ६७ ॥

ततः संख्यस्थानगमने वर्गशलाकार्धच्छेदप्रथमपदम् ।

अवरपरीतासंख्यं आवलिः प्रतरावली च भवेत् ॥ ६७ ॥

अर्थ—तातैं पूर्वपूर्वका वर्ग करतैं संख्यात स्थान गए जघन्य परीतासंख्यातका वर्गशलाका राशि उपजै हैं । दोगका वर्ग तैं लगाय जेती बार वर्ग कीए जो राशि उपजै तिस राशिका तितनां वर्गशलाका राशिक हो है । जैसे सोलहकी वर्ग शलाका दोग, जातैं दोगका वर्ग च्यारि अर च्यारिका वर्ग सोलह, ऐसें दोग बार वर्ग भए सोलह राशि हो हैं, ऐसें ही अन्यत्र जाननां । बहुरि तातैं संख्यात स्थान गए जघन्य परीतासंख्यातकी अर्द्धछेद राशि हो हैं । जिस राशिकों जेती बार आधा कीए एक अवशेष रहें तिस राशिके तितने अर्द्धछेद जाननें । जैसें सोलहके अर्द्धछेद च्यारि हैं । जातैं एक बार सोलहका आधा कीए आठ होइ, दूसरी बार च्यारि होइ, तीसरी बार दोग होइ, चौथी बार एक होइ, ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां । बहुरि तातैं परैं संख्यात स्थान गए जघन्य परीतासंख्यातका प्रथम मूल हो हैं । राशिका एक बार वर्गमूल कीजिए सो प्रथम मूल कहिए, जैसें सोलहका प्रथम मूल च्यारि हो हैं, ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां । बहुरि तिस प्रथम मूलका एक बार वर्ग कीए जघन्य परीतासंख्यात राशि उपजै हैं । बहुरि तातैं परैं संख्यात स्थान जाइ जघन्य जुक्तासंख्यात प्रमाण आवली उपजै हैं । इहां 'उपज्जदि जो रासी' इत्यादिक सूत्र आगैं कहेंगे तिस करि आवलीकी वर्गशलाकादिकका इस धारा विषै निषेध जाननां । इहां संख्यात स्थान जाइ करि आवली उपजै है । ऐसा कह्या सो कैसें है ? तहां कहिए हैं । देय राशिकैं उपरि विरलन रूप करी जो राशि, ताके जेते अर्धच्छेद होंहि तितनें वर्गस्थान जाइ करि विवक्षित राशि उपजै है । जैसें देयराशि च्यारि ताकैं उपरि विरलन राशि च्यारिके अर्द्ध छेद दोइ, सो दोग बार वर्गस्थान गए विवक्षित दोगसै छप्पन हो है । जातैं च्यारिका वर्ग सोलह सोलहका वर्ग दोगसै छप्पन हो है । सोई च्यारिका विरलन करि एक एक जायगा च्यारि च्यारि दीएं, ४,४,४,४ परस्पर गुणें दोग सै छप्पन हो हैं । तैसेंही यहां देय राशि जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धछेद संख्यात, सो संख्याते स्थान गए ही विवक्षित राशि आवली उपजै हैं । बहुरि तिस आवलीका एक बार वर्ग भए प्रतरावली हो है ॥ ६७ ॥

गमिय असंखं ठाणं बग्गसलद्धच्छिदी य पढमपदं ।

पल्लं च सूइअंगुल पदरं जगसेदिघणमूलं ॥ ६८ ॥

गत्वा असंख्यं स्थानं वर्गशलाद्धच्छिदिश्च प्रथमपदम् ।

पल्यं च सूच्यंगुलं प्रतरं जगच्छेणिघनमूलम् ॥ ६८ ॥

अर्थ—तातैं परैं असंख्यात स्थान जाइ अद्वापल्यका वर्गशलाका राशि उपजै है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धछेद राशि हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाय ताहीका प्रथम मूल हो है । ताका एक बार वर्ग कीए अद्वापल्य हो है । बहुरि तातैं परैं असंख्यात स्थान जाय सूच्यंगुल उपजै हैं, जातैं विरलनरूप राशिका अर्द्धछेद प्रमाण वर्गस्थान गए विवक्षित राशि होइ सो यहां सूच्यंगुलका प्रमाण विषै देयराशि पल्य है । विरलन राशि पल्यका अर्द्धछेद हैं सो पल्यके अर्द्धछेदके अर्द्ध-

च्छेद असंख्याते हैं । तातैं पत्यकै उपरि असंख्यात वर्गस्थान भएँ सूच्यंगुल होइ ऐसा कहा है । इहां भी उपज्जदि जो रासी इत्यादि सूत्रका अभिप्राय करि विरलनदेयका अनुक्रम करि यह राशि भया है । तातैं याके वर्गशलाका अर्द्धच्छेद राशि इस धारा विषै नाहीं कहे हैं । बहुरि तिस सूच्यंगुलका एक बार वर्ग भएँ प्रतरांगुल उपजै हैं । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ करि जगच्छेणीका घनमूल हो उपजे है । जाका घन कीएँ जगच्छेणी होइ ऐसी प्रमाण हो हैं ॥ ६८ ॥

तिविह जहण्णाणंतं वर्गशलादलच्छिदी सगादिपदं ।

जीवो पोग्गल कालो सेठीआगास तप्पदरं ॥ ६९ ॥

त्रिविधं जघन्यानंतं वर्गशलादलच्छेदाः स्वकादिपदम् ।

जीवः पुद्गलः कालः श्रेण्याकाशं तत्प्रतरम् ॥ ६९ ॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ जघन्य परीतानंतका वर्गशलाका राशि उपजे हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धच्छेद राशि उपजे हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल उपजे है । ताका एक वार वर्ग भएँ जघन्य परीतानंत हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ जघन्य युक्तानंत उपजे है । जातैं देय राशिकै उपरि विरलन राशिके अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान भएँ विवक्षित राशि हो है, सो इहां देयराशि जघन्यपरीतानंत हैं ताकै उपरि विरलन राशि जघन्य परीतानंत ताके अर्द्धच्छेद असंख्यात हैं, सो इतने ही वर्गस्थान भएँ जघन्य युक्तानंत हो हैं । इहां भी पूर्वोक्त प्रकार वर्गशलाकादिकका निषेध जाननां । बहुरि तिस जघन्य युक्तानंतका एक वार वर्ग भएँ जघन्य अनंतानंत हो है । बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशि प्रमाणकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताका एक वार वर्ग भएँ जीवराशिका प्रमाण उपजे है । इस गाथा विषै वर्गशलाकादिकनिका उपलक्षण करि कथन है तातैं इस जीवराशितैं परे पुद्गलादिक जो जो राशि कहिए है तिनका जीवराशि विषै जैसे कहा तैसे वर्गशलाकादि जाननें । बहुरि तिस जीवराशितैं अनंतस्थान जाइ पुद्गलराशिका प्रमाण उपजे हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ श्रेणी आकाश निपजे है । सर्व आकाशका लंबा प्रदेशनिकी पंक्तिका जु प्रमाण सो श्रेणी आकाश कहिए । बहुरि ताका एक बार वर्ग भएँ प्रतराकाश उपजे हैं । सर्व आकाशका लंबा वा चौड़ा प्रदेशनिका जु प्रमाण सो प्रतराकाश कहिए । इहां उंचाई न लीन्ही ॥६९॥

धम्माधम्मागुरुलघु इगिजीवागुरुलघुस्स होंति तदो ।

सुहमणिअपुण्णणणे अवरे अविभागपडिच्छेदा ॥ ७० ॥

धर्माधर्मागुरुलघोरेकेजीवागुरुलघोः भवंति ततः ।

सूक्ष्मनिर्गोदापूर्णाज्ञाने अवरे अविभागप्रतिच्छेदाः ॥ ७० ॥

अर्थ—बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ धर्म द्रव्य, अधर्मद्रव्यके अगुरुलघुगुणके अविभाग-प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है । जाका विभाग न होइ ऐसा जु कोई शक्तिका अंश ताकाँ अविभाग-प्रतिच्छेद कहिए है । बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ सूक्ष्मनिर्गोद लब्ध अपर्याप्तक जीवकै जो जघन्य पर्यायनामा श्रतज्ञान है ताके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है ॥ ७० ॥

अवरा खाइयलद्धी वग्गसलागा तदो सगद्धिद्धी ।

अडसगछप्पणतुरियं तदियं विदियादिमूलं च ॥ ७१ ॥

१ अवरा क्षायिकलब्धिः वर्गशलाका ततः स्वकार्धच्छिदिः ।

अष्टसप्तषट्पंचतुरीयं तृतीयं द्वितीयादिमूलं च ॥ ७१ ॥

अर्थ—बहुरि तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ तिर्यच गति विषै असंयत सम्यग्दृष्टीकै क्षायिक सम्यक्स्वरूप जो लब्धि ताके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है । बहुरि तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ केवलज्ञानकी वर्गशलाका हो है, तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतवर्गस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीका अष्टम मूल हो हैं । ताका एक बार वर्ग भए ताहीका सप्तम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भए ताहीका षष्ठम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भए ताहीका पंचम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भए ताहीका चतुर्थ मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भए ताहीका तृतीय मूल हो है । ताका एक वर्ग भए ताहीका द्वितीय मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भए ताहीका प्रथम मूल हो है, राशिका वर्गमूलकौं प्रथम मूल कहिए, प्रथम मूलके वर्गमूलकौं द्वितीय मूल कहिए, द्वितीयमूलके वर्गमूलकौं तृतीयमूल कहिए, तृतीयमूलके वर्गमूलकौं चतुर्थ मूल कहिए ऐसैंही पंचमादि मूल जाननें । जैसैं एकद्वीका प्रथममूल बादाल, द्वितीयमूल पण्डी, तृतीयमूल दोंयसैं छप्पन, चतुर्थमूल सोलह, पंचममूल च्यारि, षष्ठममूल दोंय ऐसैं ही अन्यत्र जाननां ॥ ७१ ॥

सइमादिमूलवग्गे केवलमंतं पमाणजेद्विभिणं ।

वरखइयलद्धिणामं सगवग्गसला हवे ठाणं ॥ ७२ ॥

सकृदादिमूलवर्गे केवलमंतं प्रमाणजेष्टभिदम् ।

वरक्षायिकलब्धिनाम स्वकवर्गशला भवेत् स्थानम् ॥ ७२ ॥

अर्थ—तिस केवल ज्ञानके प्रथम वर्गमूलका सकृत् कहिए एक बार वर्ग ग्रहें केवलज्ञानके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो हैं । एतावन्मात्रही द्विरूप वर्गधारा विषै अंतस्थान हो हैं ॥ यह ही उत्कृष्ट प्रमाण है—यहही उत्कृष्ट क्षायिक लब्धि नाम है । बहुरि इस द्विरूप वर्गधाराके सर्वस्थान केवल ज्ञानकी वर्गशलाका प्रमाण हैं ॥ ७२ ॥

आगैं द्विरूप वर्गधारादिक तीन धारा विषै सर्वत्र विशेषरहित वर्गशलाकादिककी प्राप्ति विषै नियम है सो कहै हैं—

उप्पज्जदि जो रासी विरलणदिज्जक्रमेण तस्सेत्थ ।

वग्गसलद्धच्छेदा धारातिदए ण जायंते ॥ ७३ ॥

उत्पद्यते यः राशिः विरलनदेयक्रमेण तस्यात्र ।

वर्गशलार्धच्छेदा धारात्रितये न जायंते ॥ ७३ ॥

अर्थ—जिस धारा विषै विरलन देयका अनुक्रम करि जो जो राशिका वर्गशलाका अर्द्ध-च्छेद तिसही धारा विषै न होइ, अन्य धारा विषै होइ, ऐसी यह नियमरूप व्याप्ति सो द्विरूप वर्ग

धारादिक तीनों धाराविषै जाननी । अंकसंदष्टि करि उदाहरण, जैसे विरलन राशि पत्यकी सहनानी सोलह ताका विरलन करि एक एककी जायगा देयराशि भी सोलह सोलह मांडि परस्पर गुणन कीए एकट्ठी प्रमाण होइ, सो एकट्ठी प्रमाण द्विरूप वर्गधाराविषै पाईए है ताके अर्द्धच्छेद चौसठि (६४) अर वर्गशलाका छह (६) ते ए दोऊ राशि द्विरूप वर्गधारा विषै न पाईए है, ऐसैही अन्यत्र भी जाननां ॥ ७३ ॥

आगै तीन धारानि विषै उपरि उपरि राशि विषै अर्द्धच्छेदनिका प्रमाणकौ कहै हैं:—

वग्गादुवरिमवग्गे दुगुणा दुगुणा हवंति अद्धच्छिदी ।

धारातय सट्टाणे तिगुणा तिगुणा परट्टाणे ॥ ७४ ॥

वर्गादुपरिमवर्गे द्विगुणा द्विगुणा भवंति अर्धच्छेदाः ।

धारात्रये स्वस्थाने त्रिगुणाः त्रिगुणाः परस्थाने ॥ ७४ ॥

अर्थ—वर्गतै उपरि के वर्गस्थान विषै दूणें दूणें अर्द्धच्छेद हो हैं । तीनों धारा विषै स्वस्थान विषै तो ऐसै है । बहुरि परस्थान विषै तिगुणा तिगुणा अर्द्धच्छेद हैं । ऐसी यह नियमरूप व्याप्ति सो द्विरूप वर्गधारादिक तीनों धारानि विषै जाननी । सो द्विरूप वर्गधारा विषै अंक संदष्टि अपनी बुद्धितै जाननी । तथापि उदाहरण कहिये हैं, तहां निज धाराहीकी अपेक्षा जहां होइ तहां स्वस्थान कहिए, परधाराकी अपेक्षा जहां होइ तहां परस्थान कहिए सो द्विरूप वर्गधारा विषै स्वस्थान अपेक्षा प्रथमस्थान च्यारि ताकै अर्द्धच्छेद दोय हैं । ताकै उपरि वर्गस्थान सोलह ताके अर्द्धच्छेद च्यारि हैं, सो दोयतै दूणें भए । बहुरि तीसरा स्थान दोयसै छप्पन ताके अर्द्धच्छेद आठ हैं ते च्यारितै दूणें भए । ऐसैही नीचले स्थानतै उपरि के स्थान विषै स्वस्थान अपेक्षा दूणें दूणें अर्द्धच्छेद जानने । बहुरि परस्थान अपेक्षा द्विरूप वर्गधाराका प्रथम स्थान च्यारि ताके अर्द्धच्छेद दोय हैं । बहुरि द्विरूप घनधारा विषै दूसरा स्थान चौसठि ताकै अर्द्धच्छेद छह हैं, ते दोयतै तिगुणे भए । बहुरि द्विरूप वर्गधारा विषै द्वितीयस्थान सोलह ताके अर्द्धच्छेद च्यारि हैं अर द्विरूप घनधारा विषै ताकै उपरि तृतीय स्थान च्यारि हजार छिनवै ताकै अर्द्धच्छेद बारह हैं ते च्यारितै तिगुणें भए । ऐसैही नीचले स्थानतै उपरि स्थान विषै परस्थान अपेक्षा तिगुणे तिगुणे अर्द्धच्छेद जानने ॥ ७४ ॥

आगै वर्गशलाकादिकनिका आधिक्यादिकके संभवनेका विधान कहै हैं:—

वग्गसला रूवहिया सपदे पर सम सवग्गसलमेत्तं ।

दुग्माहदमद्धच्छिदी तम्मेत्तदुग्गे गुणे रासी ॥ ७५ ॥

वर्गशला रूपाधिकाः स्वपदे परस्मिन् समाः स्ववर्गशलामत्राम् ।

द्विक्रमाहतमर्धच्छेदाः तन्मात्रद्विके गुणे राशिः ॥ ७५ ॥

अर्थ—वर्ग शलाका है सो स्वस्थान विषै एक अधिक होइ बहुरि परस्थान विषै अपने समान होइ । इहां उदाहरण स्वस्थान अपेक्षा, जैसे च्यारिकी वर्गशलाका एक, ताकै उपरि सोलह की दोय, ताकै उपरि दोयसै छप्पनकी तीन, ऐसै एक एक स्थान प्रति एक एक अधिक वर्ग-

शलाका जाननी, बहुरि परस्थान विषै जैसे द्विरूप वर्गधारा विषै प्रथम स्थानकी एक वर्गशलाका है तैसेही द्विरूप घनधाराका प्रथम स्थान आठ ताकी एक वर्गशलाका है । बहुरि जैसे द्विरूप वर्गधाराविषै द्वितीय स्थान सोलहकी दोय वर्गशलाका हैं तैसेही द्विरूप घनधारा विषै द्वितीय स्थान चौसठि ताकी दोय वर्गशलाका हैं । ऐसे परस्थान अपेक्षा स्वसमान वर्गशलाका जाननी । बहुरि अपनी वर्गशलाका जेता प्रमाण तितनां दूवा मांडि परस्पर गुणें अर्द्धच्छेद होहि । जैसे दोयसै छप्पनकी वर्गशलाका तीन सो तीन जायगा दूवा मांडि २।२।२ परस्पर गुणें आठ होइ सोई दोयसै छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद हैं । ऐसे अन्यत्र भी जाननां । सो यह नियम द्विरूप वर्गधारा ही विषै तौ पाईए है । बहुरि द्विरूप घनधारा अर द्विरूप घनाघनधाराविषै नियम ऐसा नाही हैं । बहुरि राशिके जेते अर्द्धच्छेद होहि तितनें दूवे मांडि परस्पर गुणें राशि हो हैं । जैसे दोयसै छप्पनके अर्द्धच्छेद आठ सो आठ जायगा दोयका अंक मांडि (२,२,२,२,२,२,२,२,) परस्पर गुणें दोयसै छप्पन हो हैं । ऐसेही अन्यत्र जाननां, सो यह नियम तीनों धारा विषै जाननां ॥ ७५ ॥

आगै वर्गशलाका अर अर्द्धच्छेद इनका स्वरूप कहै हैं:—

वर्गितवारा वर्गशलाका राशिः अर्द्धच्छेदस्य ।

अर्द्धितवारा वा खलु दलवारा हांति अर्द्धच्छेदाः ॥ ७६ ॥

वर्गितवारा वर्गशलाका राशिः अर्द्धच्छेदस्य ।

अर्द्धितवारा वा खलु दलवारा भवन्ति अर्द्धच्छेदाः ॥ ७६ ॥

अर्थ—राशिका जो वर्गितवार कहिए दोयका वर्गतै लगाय पूर्व पूर्वका जेतीवार वर्ग कीए ओ राशि ताका तितनां वर्गशलाका राशि जाननां । जैसे च्यारिकी वर्गशलाका एक जातै एका वार वर्ग कीए च्यारि हो हैं । पण्टीकी च्यारि जातै दोयका वर्ग च्यारि, ताका वर्ग सोलह, ताका वर्ग दोयसै छप्पन, ताका वर्ग पण्टी । ऐसे च्यारिवार वर्ग भए पण्टी हो हैं । ऐसे ही जाननी । यह नियम तीनों धारा विषै हैं । विशेष इतनां द्विरूप घनधारा विषै दोयका घनतै लगाय अर द्विरूप घनाघनधारा विषै दोयका घनतै लगाय पूर्व पूर्वका वर्ग जेतीवार कीए राशि होइ तितनी ताकी वर्गशलाका जाननी । अथवा राशिके जेते अर्द्धच्छेद होहि तिन अर्द्धच्छेदनिके जेते अर्द्धच्छेद होहि तितनी तिस राशिकी वर्गशलाका जाननी । जैसे दोयसै छप्पनके अर्द्धच्छेद आठ, आठके अर्द्धच्छेद तीन सो दोयसै छप्पनकी तीनही वर्गशलाका जाननी । सो यह नियम द्विरूप वर्गधारा विषै ही है । बहुरी राशिका दलवार कहिए जितनी वार राशिको आधा आधा करतै एक रहिजाय तितनां तिस राशिका अर्द्धच्छेद जानना । जैसे दोयसै छप्पनका आधा, एकसौ अठाईस, ताका आधा चौसठि, ताका आधा बत्तीस, ताका आधा सोलह, ताका आधा आठ, ताका आधा च्यार, ताका आधा दोय, ताका आधा एक । ऐसे आठ वार आधा आधा भया । तातै दोयसै छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद है । ऐसेही अन्यत्र भी जाननां, सो यह नियम तीनों धारा विषै हैं ॥ ७६ ॥

आगै छह गाथानि करि द्विरूप घनधारा कौं कहे हैं:—

बेरुवबिंदधारा अड चउसट्टी चडित्तु संखपदे ।

आवलिघनमावलिया कदिबिंदं चावि जायेज्ज ॥७७॥

द्विरूपवृंदधारा अष्ट चतुःषष्टिः चटित्वा संख्यपदानि ।

आवलिघन आवल्याः कृतिवृंदं चापि जायेत ॥ ७७ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो राशि वर्गरूप है तिनि राशिनिका जु घनरूप राशि तिनकी जो धारा सो द्विरूप घनधारा है । सो याका प्रथम स्थान आठ है, जातै दौयका घन आठ है । बहुरि याका वर्ग द्वितीयस्थान चौसठि जातै च्यारिका घन चौसठि ही है । बहुरियाका वर्ग तृतीयस्थान च्यारि हजार छिनवै, जातै सोलहका घन च्यारिहजार छिनवै हो हैं । ऐसै ही पूर्व पूर्व स्थानरूप राशिका वर्ग करतै उत्तर उत्तर स्थान होइ, संख्यात स्थान जाइ जघन्य परीतासंख्यातका घन हो हैं । बहुरि देयराशिकै उपरि विरलन राशिका अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान गएं यहु राशि हो हैं, सो जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेद संख्यात ही हैं । तातै जघन्य परीतासंख्यातका घनतै संख्यात जाइ आवलीका घन उपजै हैं । ताका एक वार वर्ग भए आवलीका वर्गका घन हो हैं ॥७७॥

पल्लघणं बिंदंगुलजगसेढीलोयपदरजीवघणं ।

तत्तो पढमं मूलं सव्वागासं च जाणेज्जो ॥ ७८ ॥

पल्यघनं वृदांगुलजगच्छेणीलोकप्रतरजीवघनम् ।

ततः प्रथमं मूलं सर्वाकाशं च जानीहि ॥ ७८ ॥

अर्थ—तातै असंख्यात स्थान जाइ पल्यकी वर्गशलाकाका घन हो हैं, तातै असंख्यात स्थान जाइ पल्यका अर्द्धच्छेद राशिका घन हो हैं, तातै असंख्यात स्थान जाइ पल्यका प्रथममूलका घन हो हैं । ताका एकवार वर्ग भए पल्यका घन हो हैं । बहुरि तातै असंख्यात स्थान जाइ घनांगुल हो हैं । इहां ' उपज्जदि जो रासी ' इत्यादिक सूत्र करि घनांगुलकी वर्ग शलाकादिकका अभाव इस धारा विषै जाननां । बहुरि तातै असंख्यात स्थान जाइ जगच्छेणी उपजै है । इहां भी उपज्जदि जो रासी इत्यादिक सूत्रके अभिप्राय करि जगच्छेणीकी वर्गशलाकादिकका अभाव इस धारा विषै जाननां । बहुरि ताका एकवार वर्ग कीएँ जगत्प्रतर उपजै है, तातै अनंतस्थान जाइ जीवराशिकी वर्गशलाकाका घन हो हैं, तातै अनंतस्थान जाइ जीवराशिका अर्द्धच्छेद राशिका घन हो हैं, तातै असंख्यात स्थान जाइ जीवराशिका प्रथममूलका घन हो है, ताका एकवार वर्ग भए जीवराशिका घन हो हैं । बहुरि उपज्जदि जो रासी इत्यादिक सूत्रका अभिप्राय करि सर्व आकाशकी वर्गशलाकादिकनिका तौ अभाव है, तातै जीवराशितै अनंतस्थान जाइ सर्वाकाशका प्रथम मूल हो हैं । ताका वर्ग भए सर्वआकाश हो है । लंबा, चौड़ा, ऊँचा ऐसा सर्व घनरूप आकाशके प्रदेशनिका प्रमाण हो हैं ॥ ७८ ॥

संखमसंखमणंतं वग्गट्ठाणं कमेण गंतूण ।

संखासंखार्णताणुप्पत्ती होदि सव्वत्थ ॥ ७९ ॥

संख्यमसंख्यमनंतं वर्गस्थानं क्रमेण गत्वा ।

संख्यासंख्यानंतानामुत्पत्तिः भवति सर्वत्र ॥ ७९ ॥

अर्थ—जघन्य असंख्यातासंख्यातरूप राशि पर्यंत तौ संख्यात वर्गस्थान जाइ करि, बहुरि तातैं उपरि जघन्य अनंतानंतरूप राशि पर्यंत असंख्यात वर्ग स्थान जाय करि, बहुरि तातैं उपरि केवलज्ञान पर्यंत अनंतवर्गस्थान जाइ करि यथासंख्य क्रमतैं संख्यात वा असंख्यात वा अनंतानंत रूप राशि उपत्रै हैं सर्वत्र तीनों धारा विषै जाननां । भावार्थ—संख्यातरूप राशिकी उत्पत्ति विषै पूर्वस्थानतैं संख्यात वर्गस्थान जाइ करि राशिकी उत्पत्ति कहिए । बहुरि ऐसैं ही असंख्यात वा अनंतरूप राशिकी उत्पत्ति विषै पूर्वस्थानतैं असंख्यात वा अनंत वर्गस्थान जाइ करि उपजनां कहिए । परन्तु इतना विशेष है, जो देय राशितैं उपरि विरलन राशिका अर्द्धच्छेद मात्र वर्गस्थान गए राशि हो हैं, तातैं जघन्य असंख्यातासंख्यात पर्यंत असंख्यातरूप राशि विषै भी संख्यात वर्गस्थान जाइ करि ही राशिका उपजनां कहिए वा जघन्य अनंतानंत पर्यंत अनंतरूप राशि विषै भी असंख्यात वर्गस्थान जाइ करि ही राशिका उपजनां कहिए ॥ ७९ ॥

जन्थुद्देसे जायदि जो जो रासी विरूवधाराए ।

घणरूवे तद्देसे उप्पज्जदि तस्स तस्स घणो ॥ ८० ॥

यत्रोद्देशे जायते यो यो राशिः द्विरूपधारायां ।

घनरूपे तद्देशे उत्पद्यते तस्य तस्य घनः ॥ ८० ॥

अर्थ—जिस उद्देश विषै, द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो वर्गरूप राशि होइ तिस उद्देश विषै, द्विरूप घनधारा विषै तिस तिस राशिका घन उपजै है । जैसे द्विरूप वर्गधारा विषै दोगका वर्ग च्यारि थे इहां दोगका घन आठ है, तहां च्यारिका वर्ग सोलह थे इहां ताका घन चौसठि जाननां । ऐसैं जो जो राशि द्विरूप वर्गधारा विषै कही है तिनका इहां सर्वका घन जाननां ॥ ८० ॥

एवमणंतं ठाणं निरंतरं गमिय केवलस्सेव ।

विदियपदविंदमंतं विदियादिममूलगुणितसमं ॥ ८१ ॥

एवमनंतं स्थानं निरंतरं गत्वा केवलस्यैव ।

द्वितीयपदवृंदमंतो द्वितीयादिममूलगुणितसमः ॥ ८१ ॥

अर्थ—ऐसैं सर्वाकाशकै उपरि अनंत वर्गस्थान निरंतर जाइ केवल ज्ञानका द्वितीय मूलका घन हो हैं । सोई इस द्विरूप घनधाराका अंत स्थान है, सो कितनां है ? द्वितीय मूल अर प्रथम मूल कौ परस्पर गुणों जो प्रमाण होइ तीह समान है । जैसे पणटीका प्रथम मूल दोगसै छप्पन, द्वितीय मूल सोलह, इनकों परस्पर गुणों च्यारि हजार छिनवै होइ सोई पणटीका द्वितीय मूल सोलह ताका घन भी च्यारि हजार छिनवै ही होइ ऐसैं ही इहां जाननां ॥ ८१ ॥

यह ही अंत स्थान कैसें है सो कहे हैं:—

चरिमस्स दुचरिमस्स य णेव घणं केवलन्वदिक्कमदो ।

तम्हा विरूवहीणा सगवग्गसला हवे ठाणं ॥ ८२ ॥

चरमस्य द्विचरमस्य च नैव घनः केवलव्यतिक्रमतः ।

तस्मात् द्विरूपहीना स्वकवर्गशला भवेत् स्थानम् ॥८२॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधाराका चरम राशि केवलज्ञान अर द्विचरम राशि केवल ज्ञानका प्रथम मूल, तिनके घनका इहां ग्रहण नांही हैं । काहे तैं, जो इनके घनका ग्रहण करिए तौ केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ । बहुरि इस द्विरूप घनधाराके सर्व स्थान दोय घाटि केवल ज्ञानकी वर्ग-शलाका प्रमाण जाननैं । इहां अंक संदृष्टि भी जाननी । जैसे केवल ज्ञानका प्रमाण पण्डी ताका घन वा ताके प्रथम मूल दोयसैं छप्पनका घन करिए तौ पण्डीतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ तातैं न ग्रहण करनां ॥ ८२ ॥

आगैं अब द्विरूप घनधाराकौ आठ गाथानि करि कहै हैं:—

तं जाण बिरुवगयं घणाघणं अट्टविंदतव्वगं ।

लोगो गुणगारसला वग्गसलद्धच्छिदादिपदं ॥ ८३ ॥

तं जानीहि द्विरूपगतं घनाघनं अष्टवृंदतव्वर्गम् ।

लोको गुणकारशला वर्गशलार्धच्छेदादिपदम् ॥ ८३ ॥

तेजस्काइयजीवा वग्गसलागत्तयं च कायठिदी ।

वग्गसलादित्तिदयं ओहिणिबद्धं वरं खेत्तं ॥ ८४ ॥

तेजस्कायिकजीवा वर्गशलाकात्रयं च कायस्थितिः ।

वर्गशलादित्रितयं अवधिनिबद्धं वरं क्षेत्रम् ॥ ८४ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो राशि वर्ग रूप हैं ताका घनाघन इस द्विरूप घना-घन धारा विषै हैं । घनका जु घन ताको घनाघन कहिए । कैसें सो कहै हैं । याका प्रथम स्थान आठका घन जो पांचसै बारह सो जाननां, जातैं दोयका घनाघन इतनां हो हैं । बहुरि ताका वर्ग दोय लाख बासठिहजार एक सौ चवालीस (२६२१४४) सो याका दूसरास्थान जाननां जातैं च्यारिका घनाघन इतनां हो हैं । ऐसेही पूर्व पूर्व स्थानकका वर्ग कीएं उत्तर उत्तरस्थान होइ सो इस क्रमतैं असंख्यात स्थान जाइ लोकाकाशके प्रदेशनिका प्रमाणरूप लोक उपजै हैं । याकी वर्गशलाकादिक इस धारा विषै नाहीं हैं तातैं न कहे । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ तेज-स्कायिक जीवराशिकी संख्याका ल्यावनैके अर्थ लोकका परस्पर जेतीवार गुणन होइ तीह प्रमाण रूप गुणकारशलाका उपजै है । तातैं असंख्यात स्थान जाइ तेजस्कायिक जीवराशिकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धच्छेद हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथममूल हो हैं । ताको एकवार वर्गरूप कीएं तेजस्कायिक जीवराशिकी संख्या उपजै है । इहां तेजस्कायिक जीवराशिका गुणकार शलाकादिकनिकै वर्गशलाकादिकनितैं संख्या अल्प है ताकी व्यवस्थिति दिखावनै पूर्वक प्रमाण ल्याईए हैं । जगच्छ्रेणिका घनप्रमाण जो लोकका प्रदेशनिका राशि ताको शलाका विरलन देयरूप तानप्रकार करि स्थापिए, तहां लोकप्रमाण विरलन राशिकौ तौ एक एक रूप करि जुदा जुदा वखेरिये । बहुरि एक एक प्रति लोकप्रमाण देयरशि देइ

जाईए । बहुरि ऐसे ए भए लोकप्रमाण लोक तिनकौ परस्पर गुणिए । ऐसे करि जो वह लोक-प्रमाण शलाकाराशि था तामैं एक घटाईए, ऐसे परस्पर गुणतैं जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका तौ एक भई जातैं एकवार परस्पर गुणन भया है । बहुरि वर्गशलाका पत्यकै असंख्यातवैं भाग प्रमाण भई । जातैं देयराशिकी वर्गशलाका, अर विरलन राशिके अर्द्धच्छेद इन दोऊनिकों मिलाए वर्गशलाकाका प्रमाण हो हैं । इहां अंकसंदृष्टि कहिए हैं । लोककी सहनानी च्यारि ४, ताकौ शलाका विरलन देयरूप स्थापिए (श. ४, वि. ४, दे. ४) तहां विरलन राशिकौ विर-लिए १,१,१,१ रूप प्रति देयराशिकौ दीजिए, ४,४,४,४ परस्पर गुणें दोयसैं छप्पन भए, तहां एकवार गुणन भया तातैं गुणकारशलाका एक । बहुरि देयराशि च्यारिकी वर्गशलाका एक, विरलन राशि च्यारिके अर्द्धच्छेद दोय मिलि करि दोयसैं छप्पनकी तीन वर्गशलाका भई । बहुरि देयराशिका अर्द्धच्छेद दोय तिनि करि विरलनराशि च्यारिकौ गुणें दोयसैं छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद भए, ऐसे जानना । बहुरि जैसे अंकसंदृष्टि विषै दोयसैं छप्पन भए तैसे परस्पर गुणें जो महाराशि भया ताकौ विरलन राशि अर देय राशि रूप स्थापिए । तहां विरलन राशिका विरलन करि अर रूप प्रति देय राशिकौ देइ परस्पर गुणि जो लोकप्रमाण शलाका राशि था तामैं एक और घटाईए, तहां परस्पर गुणें जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका दोय जातैं दूसरी वार गुणन भया । बहुरि वर्ग शलाका अर अर्द्धच्छेदतैं आलाप करि असंख्यात लोक प्रमाण हैं तथापि वर्गशलाका-नितैं अर्द्धच्छेद असंख्यात लोक गुणें हैं । बहुरि इस ही क्रमतैं परस्पर गुणनतैं जो जो महाराशि होइ तीह प्रमाण विरलनराशि. देय राशि स्थापि विरलन राशिका विरलन करि रूप प्रति देय राशिकौ देइ परस्पर गुणन करि एक एक शलाका राशिमैं घटावतैं घटावतैं जहां लोक प्रमाण शलाका राशि समाप्त भए तहां परस्पर गुणन तैं जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका तौ लोकप्रमाण हो हैं । जातैं लोकप्रमाण बार गुणकार भया । बहुरि वर्गशलाका अर अर्द्धच्छेदतैं पूर्वोक्त प्रकार हीन अधिक हैं तथापि आलापतैं असंख्यात लोक प्रमाण कहिए । ऐसे पहिली बार स्थापन कीया जो शलाका राशि ताका निष्ठापन जो समाप्तपनां सो भया । बहुरि तहां परस्पर गुणें जो महाराशि भयां ताकौ शलाका, विरलन, देय रूप तीन प्रकार स्थापिए । बहुरि जैसे प्रथम शलाकाका निष्ठापन कीया, तैसेही अनुक्रमतैं दूसरी बार स्थापन करी जु यह शलाका ताका निष्ठापन करनां । बहुरि तहां परस्पर गुणन तैं जो महाराशि होइ तीह प्रमाण शलाका, विरलन, देय राशि स्थापि पूर्वोक्त प्रकार करि ही तीसरी बार स्थापन करी जु यह शलाका राशि ताका निष्ठापन करनां । बहुरि तहां परस्पर गुणें जो महाराशि भया तीह प्रमाण शलाका, विरलन, देय राशि स्थापि, पूर्वोक्त प्रकार करि जो चौथी वार इहां शलाका राशिका प्रमाण था तामैं पूवैं तीन शलाकाका प्रमाण घटाइ अवशेष शलाकाका प्रमाणकों सामान्यपनें आधी शलाका कही ताका निष्ठापन करनां । ऐसे साढा तीन वार शलाका निष्ठापन भए अग्निकायिक जीवनिका प्रमाण हो हैं । ऐसे विगतनौ तेजस्कायिक जीव राशिका गुणकार शलाकादिककै वर्गशलाकादिक नतैं अल्प संख्या दिखावनैं पूर्वक प्रमाण वर्णन कीया । बहुरि तीह तेजस्कायिक जीव राशितैं असंख्यात स्थान

जाइ कायस्थितिकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताका एक वार वर्ग भए कायस्थितिका प्रमाण हो हैं । सो कहा ? अन्यकायतैं आय करि अग्निकायिकविषै कोई जीव उपन्या, सो उक्कष्टपनै यावत् काल अग्निकायिकपणां छोडि अन्य काय विषै न उपजै तहांही अवस्थित रहै, अग्निकायहीके पर्याय धर्या करै, तिसकालके समयनिका प्रमाण सो इहां कालस्थितिका प्रमाण जाननां । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ अवधिक्षेत्रकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताकाँ एक वार वर्गरूप कीएं सर्वावधिका विषयभूत उक्कष्ट क्षेत्रके प्रदेशनिका प्रमाण हो हैं । यद्यपि अवधि रूपीहीकाँ जाने अर रूपी पदार्थ लोक विषै ही है । तथापि शक्ति अपेक्षा असंख्यात लोक प्रमाण क्षेत्र कहा है ॥ ८३।८४ ॥

वग्गसलागत्तिदयं तत्तो ठिदिबंधपञ्चयट्टाणा ।

वग्गसलादीरसबंधज्झवसाणाण ठाणाणि ॥ ८५ ॥

वर्गशलाकात्रितयं ततः स्थितिबंधप्रत्ययस्थानानि ।

वर्गशलादिरसबंधाध्यवसानां स्थानानि ॥ ८५ ॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताका एकवार वर्ग कीएं ज्ञानावरणादिकर्मनिका स्थितिबंधकाँ कारणभूत जे कषाय परिणाम तिनके स्थानकनिका प्रमाण हो हैं । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ अनुभाग-बंधाध्यवसाय स्थानकी वर्ग शलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ तहांके अर्द्धच्छे हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ तहांके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकाँ एक वार वर्ग कीएं ज्ञानावणादि कर्मनिका तीव्रादि शक्तिकाँ लीएं रसबंध जो अनुभागबंध ताको कारण भूत कषाय परिणामनिके स्थानकनिका प्रमाण हो है ॥ ८५ ॥

वग्गसलागप्पहुदी णिगोदजीवाण कायवरसंखा ।

वग्गसलागदितयं णिगोदकायट्ठिदी होदि ॥ ८६ ॥

वर्गशलाकाप्रभृति निगोदजीवानां कायवरसंख्या ।

वर्गशलाकादित्रयं निगोदकायस्थितिर्भवति ॥ ८६ ॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ निगोद शरीर संख्याकी वर्ग शलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकाँ एक वार वर्ग रूप किएं निगोद जीवनिके सर्व शरीर तिनकी उक्कष्ट संख्या हो हैं, । नियत जे अनंत संख्याकाँ धरें जीव तिनकाँ गां कहिए क्षेत्र ताहि ददाति कहिए देव सो निगोद कर्म कहिए तीह संयुक्त जे जीव ते निगोद जीव कहिए, तिनके साधारण शरीर जेते लोकविषै उक्कष्टपनै होहि तिनकी संख्या ऐसी जाननी । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ निगोद कायस्थितिकी वर्गशलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताकाँ एकवार वर्गरूप कीएं निगोद कायस्थिति हो है । सो यहां निगोद कायस्थिति ऐसा कहनें करि एक जीवका

निगोद विषै उत्कृष्ट रहनेका काल न ग्रहण करनां । जातें एकजीव इतरनिगोदविषै उत्कृष्ट रहै तौ अढाई पुद्गल परावर्तन काल पर्यंत रहै सो काल अनंत है । तौ कहा प्रहण करनां ? निगोद शरीररूप परिणए जे पुद्गल ते तीह शरीररूप आकारकौ यावत्काल उत्कृष्ट पनै छाड़ें नाहीं सो काल इहां प्रहण करनां ॥ ८६ ॥

ततो असंखलोग कदिठाणे चडिय वग्गसलतिदयं ।

दिस्संति सव्वजेद्दा जोगस्सविभागपडिछेदा ॥ ८७ ॥

ततो असंख्यलोकं कृतिस्थानं चटित्वा वर्गशलात्रितयम् ।

दृश्यंते सर्वज्येष्ठा योगस्याविभागप्रतिच्छेदाः ॥ ८७ ॥

अर्थ—बहुरि तीह निगोद काय स्थितितै उपरि असंख्यात लोक प्रमाण वर्गस्थान चडि-करि सर्वोत्कृष्ट योगके उत्कृष्ट अविभाग प्रतिच्छेदनिकी वर्गशलाका हो है, तातैं असंख्यात लोक प्रमाण वर्गस्थान चडिकरि ताहीके अर्द्धच्छेद हो है, तातैं असंख्यात लोकमात्र कृतिस्थान चडिकरि ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकों एकवार वर्गरूप कीएं सर्वोत्कृष्ट योगके उत्कृष्ट अविभाग प्रति-च्छेदनिका प्रमाण हो है । कर्म आकर्षण करनेकी शक्ति सो योग कहिए, ताके अविभाग प्रतिच्छेद कहिए जिनका विभाग न होइ ऐसे सूक्ष्म अंश तिनका प्रमाण हो है ॥ ८७ ॥

जो जो रासी दिस्सदि विरूववग्गे सगिदुठाणम्हि ।

तद्वाणे तस्सरिसा घणाघणे णवणवुद्धिद्दा ॥ ८८ ॥

यो यो राशिः दृश्यते द्विरूपवर्गे स्वकेष्टस्थाने ।

तत्स्थाने तत्सदृशा घनाघने नव नव उद्दिष्टाः ॥ ८८ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै अपनां इष्ट स्थान जो विवक्षित स्थान तीह विषै जो जो राशि वर्गरूप दीसै है, तीह स्थान विषै इहां द्विरूप घनाघन धारा विषै द्विरूप वर्गधाराका स्थान-के समान राशि नव नववार परस्पर गुणें राशि हो है ऐसा कहा है । जैसें द्विरूप वर्गधारा विषै राशि विषै द्वितीय स्थान च्यारिका वर्ग सोलह इहां च्यारिकौ नववार मांडि (४,४,४,४,४,४,४,४) इनकों परस्पर गुणें दोय लाख बासठि हजार एक सो चवालीस होइ, सो इस धारा विषै द्वितीय स्थान जाननां । ऐसें ही सर्व द्विरूप वर्गधाराके स्थानक वर्गरूप हैं तिनकों नववार परस्पर गुणें द्विरूप घनाघन धाराके स्थान हो है ऐसा जाननां ॥ ८८ ॥

चडिदूणेवमणंतं ठाणं केवलचउत्थपदविदं ।

सगवग्गुणं चरिमं तुरियादिपदाइदेण समं ॥ ८९ ॥

चटित्वैवमनंतं स्थानं केवलचतुर्थपदवृंदम् ।

स्वकवर्गगुणश्चरमः तुरियादिपदाहतेन समः ॥ ८९ ॥

अर्थ—तीह योगका उत्कृष्ट अविभाग प्रतिच्छेद स्थानतैं अनंत वर्ग स्थान चडि करि केवलज्ञानका चौथा मूल ताका घनकों इस चौथा मूलका घनका वर्ग करि गुणें जो प्रमाण होइ सोई इस धाराका अंतस्थान जाननां । सो यहू चौथा मूल अर प्रथम मूलकौ गुणें जो प्रमाण होइ तीह

समान जाननां । याकों अंकसंदृष्टि करि कहिए है । जैसे केवल ज्ञान पण्टी प्रमाण (६५-५३६) ताका चौथा वर्गमूल दोय (२) ताका घन आठ (८) ताकों इस घनका वर्ग चौसठि करि गुणें पांचसैं बारा होइ (५१२) सोई पण्टीका चौथा मूल दोय (२) अर प्रथम मूल दोयसैं छप्पन (२५६) इनकों परस्पर गुणें भी पांच सौ बारा होय (५१२) ऐसैं यह अंत स्थान जाननां ॥ ८९ ॥

औरनिके अंत स्थानपनां कैसें न संभवै सो कहै हैं:—

चरिमादिचउकस्स य घणाघणा एत्थ णेव संभवदि ।

हेद् भणिदो तम्हा ठाणं चउहीणवग्गसला ॥ ९० ॥

चरमादिचतुष्कस्य च घनाघना अत्र नैव संभवति ।

हेतुः भणितः तस्मात् स्थानं चतुर्हीनवर्गशलम् ॥ ९० ॥

अर्थ—केवलज्ञानादिक नीचैके द्विरूप वर्गधारा विषै कहे च्यारि स्थान केवलज्ञान १ ताका प्रथम मूल १, द्वितीय मूल १, तृतीय मूल १ इन च्यारोंका घनाघन इस द्विरूप घनाघन धारा विषै न संभवै है । जो इनका घनाघन करिए तौ केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ । अंकसंदृष्टि करि जैसे केवल ज्ञान पण्टी प्रमाण (६५५३६) ताका प्रथम मूल दोयसैं छप्पन (२५६) द्वितीय मूल सोलह (१६) तृतीय मूल च्यारि (४) इनके घनका घन करिए तौ पण्टीतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ, तातैं इस द्विरूप घनाघन धाराके सर्वस्थानकनिका प्रमाण च्यारि घाटि केवलज्ञानकी वर्गशलाका प्रमाण जाननैं ॥ ९० ॥

आगें कहीं जु ए धारा तिनका संहार कहे हैं:—

ववहारुवजोग्गाणं धाराणं दरिसिदं दिसामेत्तं ।

वित्थरदो वित्थरुइसिस्सा जाणंतु परिद्यम्मे ॥ ९१ ॥

व्यवहारोपयोग्यानां धाराणां दर्शितं दिशामात्रम् ।

विस्तरतो विस्तररुचिशिष्या जानंतु परिकर्माणि ॥ ९१ ॥

अर्थ—संख्या व्यवहारकों उपयोगी ऐसे जु धारा तिनका स्वरूप इहां दिशा मात्र दिखाया । जैसें कोऊं अंगुली करि पूर्वादिक दिसाकों दिखावै तैसें इहां अति संक्षेप धारानिका स्वरूप दिखाया है । जे विस्तर विषै रुचिके धारक शिष्य हैं, ते विस्तर तैं बृहत्धारा परिकर्मा नामा शास्त्र विषै धारानिका स्वरूपकों जानहु ॥ ९१ ॥ ऐसैं संख्याप्रमाण समाप्त भया ।

अथ संख्याप्रमाणके विशेषभूत ऐसी जु चौदह धारा तिनकूं सविस्तर दिखाइ अब विवक्षित जो उपमा प्रमाणका अष्टक ताकों निरूपण करै हैं:—

पल्लो सायर सूई पदरो य घणंगुलो य जगसेठी ।

लोयपदरो य लोगो उवमपमा एवमद्वविहा ॥ ९२ ॥

पल्यं सागरः सूची प्रतरं च घनांगुलं च जगच्छ्रेणी ।

लोकप्रतरश्च लोकः उपमाप्रमा एवमष्टविधा ॥ ९२ ॥

अर्थ—पत्य १, सागर २, सूच्यंगुल ३, प्रतरांगुल ४, घनांगुल ५, जगच्छ्रेणी ६ जगत्प्रतर ७, घनलोक ८ ऐसे उपमा प्रमाण आठ प्रकार हैं ॥ ९२ ॥

आगै इन विषै पत्यका भेदकौ अपनां अपनां विषयका निर्णय पूर्वक कहै हैं:—

व्यवहारुद्धारद्वापल्ला तिण्णेव होंति णायव्वा ।

संखा दीवसमुद्दा कम्मट्ठिदि वण्णिदा जेहिं ॥ ९३ ॥

व्यवहारोद्धारद्वापल्यानि त्रीण्येव भवन्ति ज्ञातव्यानि ।

संख्या द्वीपसमुद्राः कर्मस्थितयो वर्णिता यैः ॥ ९३ ॥

अर्थ—व्यवहार पत्य १, उद्धारपत्य २, अद्वापत्य, ३, ऐसें पत्य तीन प्रकार ही हैं ऐसा जाननां । जिन तीन प्रकार पत्यनिकरि क्रमतै संख्या अर द्वीप समुद्र अर कर्मस्थिति आदि वर्णन कीए हैं । तहां व्यवहार पत्य करि तौ रोमनिकी संख्या वर्णिए हैं, अर उद्धारपत्यकरि द्वीप समुद्रनिकी संख्या वर्णिए हैं, अर अद्वापत्य करि कर्मकी स्थिति वर्णिए हैं, आदि शब्दतै और भी यथा-संभव जाननां ॥ ९३ ॥

आगै पत्यके जाननेकौ विधान कहै हैं:—

सत्तमजम्माबीणं सत्तदिण्णभन्तरम्हि गहिदेहिं ।

सण्णट्ठं सण्णिचिदं भरिदं बालग्गकोडीहिं ॥ ९४ ॥

सप्तमजन्मावीनां सप्तदिनाभ्यंतरे गृहीतैः ।

संनष्टं संनिचितं भरितं बालाप्रकोटिभिः ॥ ९४ ॥

अर्थ—सातवां जन्म जुक्त ऐसे जु ऊरणे गाड़र तिनके जन्मतै सात दिन मांही प्रहे जु रोम तिनके अप्रभाग रूप खंड तिनके कोडिनिकरि संयुक्त किया बहुत संचयरूप किया भन्या ॥ ९४ ॥

ऐसा कह्या सो कहै हैं:—

जं जोयणवित्थिण्णं तत्तिउणं परिरयेण सविसेसं ।

तं जोयणमुव्विद्धं पल्लं परिदोवमं णाम ॥ ९५ ॥

यत् योजनविस्तीर्णं तत्रिगुणं परिधिना सविशेषम् ।

तत् योजनमुद्विद्धं पत्यं पलितोपमं नाम ॥ ९५ ॥

अर्थ— जो एक योजन प्रमाण तौ विस्तीर्ण कहिए चौडा, बहुरि तातै तिगुणा परिधि करि सविशेष ।

भावार्थ— जो सूक्ष्म परिधिकी अपेक्षा चौडाईतै तिगुणां किल्लू अधिक परिधिकी प्रमाण करि संजुक्त, बहुरि एक योजन उंडा ऐसा जु कुंड सो रोमनि करि भन्या तीह विषै जो रोमनिका प्रमाण ताकौ पत्योपम कहिए वा पलितोपम कहिए ॥ ९५ ॥

आगै परिधिका सविशेष ऐसा विशेषण कह्या ताके जाननेकौ सूक्ष्म परिधि करनैका करणसूत्र कहै हैं:—

विक्रवंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरयो होदि ।

विक्रवंभवउब्भागे परिरयगुणिदे हवे गणियं ॥ ९६ ॥

अर्थ—एकट्टी (१८४४६७४४०७३७०९५५१६१६) बहुरि पण्टी (६५५३६) बहुरि उगणीस (१९) बहुरि अठारह (१८) इनकौं परस्पर गुणें जे अंक होंहि तिनकौं आगैं द्विगुण नवशून्य जो अठारह विंदी तिन करि संयुक्त करिए यह पलितोपमके रोमनिकी संख्या जाननी (१८=६५=१९,१८, विंदी १८) ॥ ९७ ॥

आगैं परस्पर गुणें जो प्रमाणरूप फल ताकौं दिखावै हैं:—

बटलवणरोचगोनगनजरनगंकासससघधमपरकधरं ।

विगुणवसुणसहिदं पल्लस्सदु रोमपरिसंखा ॥ ९८ ॥

बट..... ।

द्विगुणनवशून्यसहितं पल्यस्य तु रोमपरिसंख्या ॥ ९८ ॥

अर्थ—इहां अक्षर संज्ञातैं अंक जाननें । ताका उक्तं च सूत्र—‘कटपयपुरस्थवर्णेनव नव पंचाष्टकल्पितैः क्रमशः । स्वरजनशून्यं संख्या मात्रोपरिमाक्षरं त्याज्यं ॥ याका अर्थ—ककारादिक नव, अर टकारादिक नव, अर पकारादिक पांच, अर यकारादिक आठ । इन अक्षरनि विषै क्रमतैं जेथवां अक्षर होइ सो तहां अंक जाननां । बहुरि अकारादिक स्वर अर जकार, नकार ए जहां होइ तहां विंदी जाननां । बहुरि अक्षरनिकै जो मात्रा होइ अथवा कोई संजोगी अक्षर होइ तौ ताका किछू प्रयोजन न ग्रहण करनां । सो इस सूत्र करि इहां व कहिए च्यारि जातैं यकारतैं वकार चौथा अक्षर है । बहुरि ट कहिए एक जातैं टकार पहला अक्षर है । बहुरि ल कहिए तीन जातैं यकारतैं लकार तीसरा अक्षर है । बहुरि व कहिए च्यारि जातैं यकार तैं वकार चौथा अक्षर हैं । बहुरि ण कहिए पांच जातौं टकारतैं णकार पांचवां अक्षर है । ऐसें ही क्रमतैं रोचगो नगनजर नगंकास ससघ ध मपर कधरंनि इन अक्षरकरि दोय, छह, तीन, विंदी, तीन, एक, सात, सात, सात, च्यारि, नव, पांच, एक, दोय, एक, नव दोयके अंक जाननें । बहुरि आगैं द्विगुण नव शून्य कहिए अठारह विंदीनि करि सहित करिए । ऐसें जो प्रमाण होइ सो पल्यके रोमनिकी संख्या जाननी । (४१३४५२६३०३०८२०३१७ ७७४९९१२१९२०००००००००००००००००००००००००) ॥ ९८ ॥

आगैं व्यवहार पल्यके समयकौं दिखावै हैं:—

वस्ससदे वस्ससदे एकेके अवहिदभिह जो कालो ।

तकालसमयसंखा णेया ववहारपल्लस्स ॥ ९९ ॥

वर्षशते वर्षशते एकैकस्मिन् अपद्धते यः कालः ।

तत्कालसमयसंख्या ज्ञेया व्यवहारपल्यस्य ॥ ९९ ॥

अर्थ—एक सौ वर्ष, एक सौ वर्ष गणं एक एक रोम तिन रोमनिमैस्यौं ग्रहण करिए । ऐसें ग्रहण करतैं सर्व रोम समाप्त जितने काल करि होइ तावन्मात्र कालके जेते समय सो व्यवहार पल्यके समयनिकी संख्या होइ सो एक रोमका ग्रहण विषै सौवर्ष होइ, तौ पूर्वोक्त प्रमाण सर्व रोमके ग्रहण विषै केते वर्ष होइ ऐसें त्रैराशिक करि बहुरि एक वर्षके तीनसैं साठि दिन, एक

दिनके तीस मुहूर्त्त, एक मुहूर्त्तके तीन हजार सातसैं तहेत्तरि उश्वास, एक उश्वासकी संख्यात आवली, एक आवलीके जघन्य युक्तासंख्यात प्रमाण समय कीएं जेता समयनिका प्रमाण होइ तितनां व्यवहार पत्यका काल है ॥ ९९ ॥

आगैं उद्धार पत्यके कालकौं दिखावैं हैं :—

व्यवहारेयं रोमं छिण्णमसंखेज्जवाससमयेहिं ।

उद्दारे ते रोमा तक्कालो तत्तियो चैव ॥ १०० ॥

व्यवहारैको रोमः छिन्नो असंख्येयवर्षसमयैः ।

उद्दारे तानि रोमाणि तत्कालः तावान् चैव ॥ १०० ॥

अर्थ—व्यवहार पत्य विषै जे रोम कहे तिन विषै एक एक रोम असंख्यात वर्षके समयनिकै समान खंड रूप कीजिए । **भावार्थ**—असंख्यात वर्षनिके जेते समय होहिं तितने तितने एक एक रोमके खंड करिए यों करतैं जेते रोम खंड होहिं तब ते रोम उद्धार पत्यके हो हैं । बहुरि तिन रोमनिका अपहरण करणेका काल तितनां ही उद्धार पत्यका रोमनिकै समान ही जाननां । **भावार्थ**—जेते रोम खंड भए तिन विषै एक एक समय विषै एक एक रोम खंडकौं प्रहण करतैं करतैं सर्व रोमखंड समाप्त जेते काल करि होई तितनां उद्धार पत्यका काल जाननां ॥ १०० ॥

आगैं अद्वापत्यकौं निर्देश करैं हैं:—

उद्दारेयं रोमं छिण्णमसंखेज्जवाससमयेहिं ।

अद्दारे ते रोमा तत्तियमेत्तो य तक्कालो ॥ १०१ ॥

उद्धारैकं रोमं छिन्नमसंख्येयवर्षसमयैः ।

उद्दारे तानि रोमाणि तावन्मात्रश्च तत्कालः ॥ १०१ ॥

अर्थ—उद्धार पत्य विषै कहे जु रोम तिन विषै एक एक रोम असंख्यात वर्षके जेते समय होहिं तिनके समान खंड रूप करिए ते रोम अद्धार पत्यके हों हि तिनके अपहरण करणेका काल तावन्मात्र जानना, । एकएक समय विषै एक एक रोमकौं प्रहण करतैं जेतैं कालकरि सर्व रोम समाप्त होहिं तितनां काल अद्धार पत्यका है । इहां कोऊ प्रश्न करै कि इहां असंख्यात वर्ष कहे सो कैसा असंख्यात है ? ताका समाधान—मध्यम असंख्यात का कोऊ भेद है, मध्यमके भेद धनें ते जुदे जुदे संज्ञादिक रूप वचन करि कहे न जाइ वा परोक्ष ज्ञानी जीवनि करि जुदा जुदा तिनका संज्ञा प्रमाणादिक जान्या न जाइ, तातैं सामान्यपनैं असंख्यातका नाम कहा, यथासंभव जानि लेनां । लोक विषै भी जहां निर्णय न होइ तहां सामान्यवचन कहिए हैं जैसें देवदत्तके लाखों धन पाईए हैं, तहां यहु आया जो हजारोंतैं अधिक अर कोड्योतैं हीन केतायक लाख प्रमाण धन है, तैसें इहां भी संख्याततैं अधिक अनंततैं हीन यथासंभव असंख्यात प्रमाण जाननां । अथवा द्विरूप वर्गधारादिक विषै अल्प बहुत्वका वर्णन करि हीन अधिक, पनौं जानि स्थूलपनैं प्रमाणका ज्ञान करनां । सूक्ष्म तारतम्य प्रत्यक्ष ज्ञानी प्रमाण जानैं हैं । ऐसेंही अन्यत्र भी जहां सामान्यपनैं संख्यात, असंख्यात, अनंत कहिए तहां यथासंभवपनां जानि लैनां ॥ १०१ ॥

आगै सागरोपमका स्वरूपकौ सूचै है:—

एदोसिं पल्लानं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिदा ।

तं सागरोवमस्स दु हवेज्ज एकस्स परिमाणं ॥ १०२ ॥

एतयोः पल्ययोः कोटीकोटी भवेत् दशगुणिता ।

तत् सागरोपमस्य तु भवेत् एकस्य परिमाणम् ॥ १०२ ॥

अर्थ—ए जु उद्धार पल्य अर अद्धारपल्य तिनका दशगुणां कोडाकोडि जो होइ तौ सो विवक्षित पल्यकौ विवक्षित एक सागरका प्रमाण होइ । भावार्थ—दश कोडाकोडी पल्यका एक उद्धार सागर हो हैं । बहुरि दश कोडाकोडि अद्धारपल्याका एक अद्धारसागर हो हैं ॥ १०२ ॥

आगै याकौ सागरोपम कया सो सागर नाम समुद्रका है सो लवण समुद्रकी उपमा दिखाई, इस सागरोपम संज्ञाकौ सार्थाक दिखावनैके अर्थ कहै हैं:—

लवणंबुहिसुहुमफले चउरस्से एकजोयणस्सेव ।

सुहुमफलेणवहरिदे वट्टं मूलं सहस्सवेहगुणं ॥ १०३ ॥

लवणांबुधिसूक्ष्मफले चतुरस्से एकयोजनस्यैव ।

सूक्ष्मफलेनापहते वृत्तं मूलं सहस्रवेधगुणम् ॥ १०३ ॥

अर्थ—प्रथम लवणसमुद्रका क्षेत्रफल करनेकौ ऐसा करण सूत्र जाननां । ‘अंताइ सूइ जोगं रंदद्रगुर्णित्तु दुप्पाडिं किच्चा । तिगुणं हदे करणिगुणं वादर सुहुमं फंलं बलए ॥ १ ॥ ऐसा सूत्र आगै आवैगा । याका अर्थ—अंतकी सूची अर आदिकी सूचीकौ जोडि रंदका आधा प्रमाण करि गुणन करै जो होइ ताकौ दोय जायगा स्थापिए, एक जायगा तिगुणा करिए तब गोलक्षेत्र विषै वादर क्षेत्रफल होइ । बहुरि दशकरणि गुणां करिए । दश करणि कहा ? भया जो प्रमाण ताका वर्ग करि ताकौ दश गुणां करिए ऐसें करतै करणिरूप फल होइ, याका वर्गमूल प्रमाण सूक्ष्म क्षेत्रफल जाननां । सो इहां लवण समुद्रकी अंतसूचीका प्रमाण पांच लक्ष योजन (५ ल) अर आदिसूची का प्रमाण एक लक्ष योजन (१ ल) मिलाएं छह लाख भए (६ ल), ताकौ रंद जो व्यास ताका प्रमाण दोय लाख योजन ताका आधा लक्ष तीह करि गुणिए (६ लल), इनकौ दोइ जायगा स्थापिए (६ लल, ६ लल) एक जायगा तिगुणां करै (१८ लल) वादर क्षेत्रफल होइ । एक जायगा दश करणि करि गुणै (६ लल, ६ लल १०) करणिरूप सूक्ष्म क्षेत्रफल होइ । याका वर्गमूलमात्र लवण समुद्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल भया, एक एक योजनका लंबा, चौड़ा, चौकोर खंड लवण समुद्रके इतने होहि । इहां इस प्रकार करि लवण समुद्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल कैसें होइ सो ताकी वासनाका कथन संस्कृत टीकातै जाननां । बहुरि एक योजन प्रमाण गोलकुंडका सूक्ष्म क्षेत्रफल ऐसा (१० $\frac{३}{४}$, $\frac{३}{४}$) जातै एक योजनका वर्ग एक ताकौ दश गुणां कीएं करणिरूप परिधि ऐसा होइ १०, ताकौ व्यासकी चौथाई $\frac{३}{४}$ का वर्ग करि गुणै करणिरूप सूक्ष्मके क्षेत्रफल ऐसा (१०, $\frac{३३}{४}$) इतनां करणिरूप सूक्ष्म क्षेत्रफलका एक योजन प्रमाण गोल कुंड एक होइ तौ लवण समुद्रका करणिरूप सूक्ष्म क्षेत्रफल

विषै केते कुंड होंहि, ऐसा त्रैराशिक करिए, तहां प्रमाण राशि ऐसा (१० ३।३ फल राशि १, इच्छाराशि ऐसा (६ लल, ६ लल, १०) इच्छाकौ फल करि गुणि प्रमाणका भाग दीएं दशका गुणकार वा भागहारका अपवर्त्तन कीएं लब्धराशि ऐसा होइ (६ लल, ३ ६ लल ३) । बहुरि ' हारस्य हारो गुणकोशराशेः ' इस बचनतैं भागहारका, भागहार राशिका गुणकार होइ सो यहां भागहार एक, ताका भागहार च्यारि है सो राशिका गुणकार भया तब ऐसा भया (२४-लल, २४ लल) ऐसैं वर्गरूप शलाका होहैं, याका वर्गमूल ग्रहण करिए तब एक लाख गुणां चौबीस लाख हूवा (२४ लल) याकों लवण समुद्रकी उंडाई हजार योजन प्रमाण करि गुणें सर्व कुंडनिका प्रमाण ऐसा भया (२४ लल १०००) ॥ १०३ ॥

आगैं अन्यगुणकारकौं दिखावैं हैं:—

रोमहृदं छकेसजलोस्सेगे पणुवीससमयात्ति ।

संपादं करिय हिदे केसेहि सागरूपत्ती ॥ १०४ ॥

रोमहतं षट्केशजलोत्सेके पंचविशसमया इति ।

संपातं कृत्वा हिते केशैः सागरोत्पत्तिः ॥ १०४ ॥

अर्थ—बहुरि व्यवहार पत्यकैं रोम च्यारि, एक आदि अंकरूप तिनकी सहनानी ऐसी (४१=) बहुरि तिनि तैं असंख्यात गुणें उद्धार पत्यके रोम तिनकी सहनानी ऐसी (४१=४) बहुरि अद्वापत्यके रोम तीह स्यौंभी असंख्यात गुणें तिनकी सहनानी ऐसी (४१=४४) इहां असंख्यातकी सहनानी ऐसी ४ जाननीं, सो एक कुंडमैं इतनें रोम पाईए तौ पूर्वोक्त प्रमाण कुंडनि विषै केते रोम पाईए ऐसैं त्रैराशिक करि पूर्वोक्त कुंडनिके प्रमाणको रोमनिके प्रमाण करि गुणिन करे लवण समुद्र विषै कल्पित किए सर्व कुंड तिन विषै रोमनिका प्रमाण होइ (२४ लल १०००, ४१=४४ बहुरि छह रोम जितनां क्षेत्र रोकैं, तितनें क्षेत्रका जलकौं काढतैं पचास समय होइ तौ पूर्वोक्त प्रमाण रोमनिका क्षेत्र संबंधी जलकौं उर्तासचन करतैं केते समय हों हिं, ऐसैं त्रैराशिक करनां । तहां प्रमाण राशि छह रोम (६), फलराशि पचीस समय (२५), इच्छाराशि सर्व रोम (२४, लल १०००४१=४४) इहां इच्छा राशि विषै चौबीसको प्रमाण राशि छह करि अपवर्त्तन कीएं, अर फल करि इच्छा राशिकौं गुणें लब्ध राशि ऐसा (२५,४, लल १०००,४१=४४) बहुरि पत्यके समय पूर्वोक्त इतने (४१=४४) होइ तौ इतनें समयनिके केते पत्य होइ तहां ऐसा (४१=४४) प्रमाणका अपवर्त्तन कीएं पचास, अर लाख गुणां च्यारि लाख अर हजार इनकौं परस्पर गुणें दशकोडाकोडि भया सो इतने पत्य भए एक सागरकी उत्पत्ति हो है ॥ १०४ ॥

आगैं द्विरूप वर्गधारविषै सागरोपमकी उत्पत्ति नाहीं तातैं सागरोपमके अर्द्धच्छेदकौं जनावता संता सूत्र कहै है:—

गुणयारद्वच्छेदा गुणिज्जमाणस्स अद्वच्छेदजुदा ।

लदस्सद्वच्छेदा अहियस्स छेदणा णत्थि ॥ १०५ ॥

गुणकारार्धच्छेदा गुण्यमानस्यार्धच्छेदयुताः ।

लब्धस्यार्धच्छेदा अधिकस्य छेदना नास्ति ॥ १०५ ॥

अर्थ—गुणकारके जेते अर्द्धच्छेद होंहि ते गुण्यमानराशिके अर्द्धछेदनिकरि जोडिए तब लब्धराशिके अर्द्धछेद होंहि । जैसे गुणकार आठ गुण्य सोलह सो गुणकार करि गुण्यकों गुणें लब्धराशि एकसो अट्ठाईस तहां गुणकार आठके अर्द्धछेद तीन अर गुण्य सोलहके अर्द्धछेद च्यारि ४ इन दोऊनिकों जोडें लब्धराशि एकसो अट्ठाईसके अर्द्धछेद सात हों हि । तैसें इहां भी गुणकार दश कोडाकोडि अर गुण्य पत्य सो गुणकार करि गुण्यकों गुणें सागर होइ तहां गुणकार दश कोडाकोडिके अर्द्धछेद संख्यात ते गुण्य जो पत्य ताके अर्द्धछेदनि करि जोडें लब्धराशि सागर ताके अर्द्धछेद हो हैं । बहुरि जातैं अधिककी छेदना नाहीं है । तातैं सागरोपमकी वर्गशलाका नाहीं है । भावार्थ.—गुणयारद्धच्छेदा इत्यादि सूत्र करि गुण्यके अर्द्धछेदनि विषै गुणकारके अर्द्धछेद जोडे तहां जो गुणकारके अर्द्धछेद जोडे तिनकों अधिक छेद कहिये तिन अधिक छेदनिके अर्द्धछेद हों हि परंतु प्रयोजन नाहीं । तातैं ऐसा कह्या कि अधिक छेदनिके अर्द्धछेद नाहीं । प्रयोजन तौ यहु है जो राशिके जेते अर्द्धछेद हों हि तिन अर्द्धछेदनिके जेते अर्द्धछेद हों हि तावन्मात्र वर्गशलाका होइ । सो तौ यहां प्रयोजन है नाहीं जातैं यहु राशि वर्गरूप नाहीं है तातैं सागरोपमकी वर्गशलाकाका अभाव जाननां ॥ १०५ ॥

आगैं गुण्यगुणकारके अर्द्धछेदनिका स्वरूप दिखावतैं प्रसंग पाइ भाज्य भाजकके भी अर्द्धछेदनिका स्वरूपको दिखावैं हैं.—

भज्यस्सद्धच्छेदा हारद्धच्छेदणाहिं परिहीणा ।

अद्धच्छेदसलागा लद्धस्स हवंति सब्वत्थ ॥ १०६ ॥

भाज्यस्यार्धच्छेदा हारार्धच्छेदनाभिः परिहीनाः ।

अर्धच्छेदशलाका लब्धस्य भवंति सर्वत्र ॥ १०६ ॥

अर्थ—भाज्यके जेते अर्द्धछेद हों हि ते हार जो भाजक ताके अर्द्धछेदनिकरि हीन करिए तब लब्धराशिकी अर्द्धछेदशलाका सर्वत्र होइ । अंक संदृष्टि विषै जैसे भाज्य चौंसठि ६४ हार च्यारि ४ हारका भाग भाज्यकों दीए लब्धराशि सोलह १६ । तहां भाज्य चौंसठिके अर्द्धछेद छह ६ ते भाजक च्यारिके अर्द्धछेद दोय तिन करि हीन किए अवशेष लब्धराशि सोलहके अर्द्धछेद च्यारि जाननें । ऐसें ही अन्यत्र भी जाननां ॥ १०६ ॥

आगैं सूच्यंगुलके अर्द्धछेदकों दिखावता सूत्र कहैं हैंः—

विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्सद्धच्छिदीहिं संगुणिदे ।

अद्धच्छेदा होंति हु सब्वत्थुप्पण्णरासिस्स ॥ १०७ ॥

विरल्यमानराशौ देयस्यार्धच्छिदिभिः संगुणिते ।

अर्धच्छेदा भवंति हि सर्वत्रोत्पन्नराशेः ॥ १०७ ॥

अर्थ—विरलनमान जो राशि ताकों देय राशिके अर्द्धछेदन करि गुणें उत्पन्न राशिके अर्द्धछेद सर्वत्र होहि । जैसे विरलन राशि च्यारि, देय राशि सोलह, तहां विरलन राशिका विरलन करि देयराशिकों रूप प्रति देइ १६।१६।१६।१६ । परस्पर गुणें पण्ठी ६५५३६ प्रमाण होइ तहां विरलन राशि च्यारि ताकों देयराशि सोलहके अर्द्धछेद च्यारि तिन करि गुणें उत्पन्न राशि जो पण्ठी ताके अर्द्धछेद सोलह हो हैं । तैसें इहां विरलनराशि पत्यके अर्द्धछेद तिनको देयराशि पत्य ताके अर्द्धछेदन करि गुणें उत्पन्नराशिके अर्द्धछेद पत्यके अर्द्धछेदनिका वर्गप्रमाण हो है ॥ १०७ ॥

आगै सूच्यंगुलकी वर्गशलाकाकौ दिखावता सूत्र कहै है:—

विरलिदरासिच्छेदा दिण्णद्धच्छेदछेदसंमिलिदा ।

वग्गसलागपमाणं होंति समुप्पणरासिस्स ॥ १०८ ॥

विरलितराशिच्छेदा देयार्धच्छेदछेदसंमिलिताः ।

वर्गशलाकाप्रमाणं भवन्ति समुत्पन्नराशेः ॥ १०८ ॥

अर्थ—विरलन राशिके जेते अर्द्धछेद होहि ते देयराशिके अर्द्धछेदनिके अर्द्धछेदनि करि मिलाईए जोडिए । तत्र विरलनदेयका क्रम करि उत्पन्न भया जो राशि ताकी वर्गशलाका प्रमाण होइ । जैसे विरलनराशि च्यारि ताके अर्द्धछेद दोय बहुरि देयराशि सोलहके अर्द्धछेद च्यारि ताके अर्द्धछेद दोय इनको मिलाए उत्पन्नराशि जो पण्ठी ताकी वर्गशलाकाका प्रमाण च्यारि होइ । तैसें इहां विरलनराशि पत्यके अर्द्धछेद ताके अर्द्धछेद पत्यकी वर्गशलाका प्रमाण बहुरि देयराशि पत्य ताके अर्द्धछेदनिके अर्द्धछेद भी पत्यकी वर्गशलाकातै दूणी हो हैं । बहुरि—**वग्गादुपरिमवग्गे दुगुणा दुगुणा हवंति अद्धच्छिद्धी** । इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय कर सूच्यंगुलके अर्द्धछेदनतै दूणे प्रतरांगुलके अर्द्धछेद हो हैं । बहुरि—**वग्गसला रूवहिया**—इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय करि सूच्यंगुलकी वर्गशलाकातै एक अधिक प्रतरांगुलकी वर्गशलाका हो है । बहुरि द्विरूप वर्गधाराविषै उत्पन्न जो सूच्यंगुल सो जिस स्थानविषै उपजै है तिसर्हाके समान स्थान विषै द्विरूप घनधाराविषै घनांगुल उपजै हैं तातै '**तिगुणा तिगुणा परद्वाणे**'—इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय करि सूच्यंगुलके अर्द्धछेदनि तै तिगुणें घनांगुलके अर्द्धछेद हो हैं । बहुरि '**सपदे पर सम**'—इस पूर्वोक्त न्यायकरि सूच्यंगुलकी वर्गशलाकाके समान ही घनांगुलकी वर्गशलाका है । बहुरि '**विरलज्जमाणरासि**' इत्यादि सूत्रके न्याय करि विरलनमानराशि पत्यका अर्द्धछेदनिका असंख्यातवां भाग ताकों देयराशि घनांगुलके अर्द्धछेदनि करि गुणें उत्पन्नराशि जगच्छेणी ताके अर्द्धछेद हो हैं ॥ १०८ ॥

आगै जगच्छेणीकी वर्गशलाका दिखावनैकौ सूत्र कहै है:—

दुगुणपरीतासंखेणवहरिदद्धारपल्लवग्गसला ।

बिंदंगुलवग्गसलासहिया सेटिस्स वग्गसला ॥ १०९ ॥

द्विगुणपरीतासंख्येनापहृताद्धारपत्यवर्गशलाः ।

द्वंदांगुलवर्गशलासहिता श्रेण्या वर्गशलाः ॥ १०९ ॥

अर्थ—दूणां जघन्यपरीतासंख्यात करि भाजित जो अद्धारपत्यकी वर्गशलाका सो घनगुलकी वर्गशलाकासहित जगच्छेणीकी वर्गशलाका हो हैं ।

भावार्थ—पत्यकी वर्गशलाकाको जघन्य परीतासंख्याततै दूणें प्रमाणका भाग दीएं जो प्रमाण होइ ताको घनांगुलकी वर्गशलाकासहित जोडिए तब जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकाका प्रमाण हो है । इहां दूणां जघन्यपरीतासंख्यातका भाग कैसें दीया सो कहिए हैं । अद्वापत्यका अर्द्धच्छेद राशिके अर्द्धच्छेदपत्यकी वर्गशलाका प्रमाण है । बहुरि पत्यका अर्द्धच्छेदराशिका प्रथम वर्गमूलके अर्द्धच्छेद-पत्यकी वर्गशलाकाके अर्द्धप्रमाण है । बहुरि ताहीका द्वितीय मूलके अर्द्धच्छेद तातै आधे हैं । तृतीय मूलके तातै आधे हैं ऐसै वर्गमूल वर्गमूल प्रति आधे आधे अर्द्धच्छेद तावत् करने यावत् पत्यका अर्द्धच्छेद-राशिके नीचै जघन्य परीतासंख्यातका अर्द्धच्छेद एक अधिक प्रमाण वर्गमूलपर्यंत जाइ अंत विषै जो वर्गमूल होइ ताके दूणां जघन्यपरीतासंख्यात करि भाजित अद्वापत्यकी वर्गशलाका प्रमाण अर्द्धच्छेद होहिं । इहांतै उपरि उपरि वर्ग कीएं जैसें दूणे दूणे अर्द्धच्छेद होहिं तैसें उपरि तै नीचै नीचै वर्गमूलनि विषै आधे आधे अर्द्धच्छेद होहिं । इस जुक्ति करि जघन्यपरीतासंख्यातका अर्द्धच्छेद एक अधिकप्रमाण वर्गमूलके अर्द्धच्छेद इतनै भये । एक अधिक जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें दूणां जघन्य परीतासंख्यात होइ ताका भाग अद्धारपत्यकी वर्गशलाकाको दीएं जो प्रमाण होइ तितने भए । भावार्थ—जगच्छ्रेणीविषै विरलनराशि पत्यके अर्द्धच्छेदनिके असंख्यातवै भागि कहा सो पत्यकी अर्द्धच्छेदराशिके नीचै जघन्यपरीतासंख्यातका एक अधिक अर्द्धच्छेद प्रमाण जे पत्यके अर्द्धच्छेदनिके वर्गमूल तिन विषै अंतके वर्गमूलका प्रमाण जानना । ताके अर्द्धच्छेद दूणां जघन्यपरीतासंख्यातका भाग पत्यकी वर्गशलाकाको दीएं जो प्रमाण होइ तितना भया । बहुरि ‘**दिणद्ध-छेदछेदसम्मिलिदा**’ इस वचन करि देयराशि घनांगुल ताके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेद जो घनांगुलकी वर्गशलाका सो तिन विषै जोडिए मिलार्इए ऐसै करतै उत्पन्न राशि जो जगच्छ्रेणी ताकी वर्गशलाकाका प्रमाण हो हैं ऐसै मनविषै विचारि ‘**दुगुणपरीतासंखे**’—इत्यादि सूत्र आचार्यनें कहा है । बहुरि ‘**बग्गादुवरिमवग्गे**’ इत्यादि सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीके अर्द्धच्छेदनितै दूणें जगत्प्रतरके अर्द्धच्छेद हैं । बहुरि ‘**वग्गसला रूवहिया**’—इत्यादि सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकातै एक अधिक जगत्प्रतरकी वर्गशलाका हैं । बहुरि ‘**तिगुणा तिगुणा परिट्टाणे**’—इस सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीके अर्द्धच्छेदनितै तिगुणें घनलोकके अर्द्धच्छेद हैं । बहुरि ‘**सपदे परसम**’ इस सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकाके समान हीं घनलोककी वर्गशलाका है ॥ १०९ ॥

आगै ‘**तम्भेतदुगे गुणे रासी**’ इस सूत्र करि जितना अर्द्धच्छेदनिका प्रमाण होइ तितना दूवा मांडि परस्पर गुणें राशि होइ । इहां जो साधिक अर्द्धच्छेद होइ तौ कैसें होइ सो कहै हैं:—

विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि अहियरूवाणि ।

तेसिं अण्णोण्हदी गुणगारो लद्धरासिस्स ॥ ११० ॥

विरलितराशितः पुनः यावन्मात्राणि आधिकरूपाणि ।

तेषां अन्योन्यहतिः गुणकारो लब्धराशोः ॥ ११० ॥

अर्थ—विरलनरूप राशितै यावन्मात्र अधिक रूप होइ तिन अधिक रूप प्रमाण दौयके अंक मांडि परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ तितना लब्धराशिका गुणाकार जानना । जैसें सागरके अर्द्ध-

च्छेदनिका प्रमाण संख्यात अधिक पत्यका अर्द्धच्छेद प्रमाण हैं । तहां पत्यके अर्द्धच्छेदनिकों तौ विरलनरूपराशि कहिये । अर ताके उपरि संख्याते अर्द्धच्छेद तिनकों अधिक रूप कहिये । तहां अधिक रूप प्रमाण द्योयका अंक मांडि परस्पर गुणें दश कोडाकोडि प्रमाण सो विरलनराशि प्रमाण द्योयका अंक मांडि परस्पर गुणें भया जो पत्य प्रमाण लब्धराशि ताका गुणाकार जानना । तहां पत्यप्रमाण गुण्यकों दश कोडाकोडि प्रमाण गुणकार करि गुणें सागरोपम हो है । अंक संदृष्टि विषै जैसे सागरके अर्द्धच्छेद सात तहां विरलनराशि तौ पत्यका अर्द्धच्छेद च्यारि ताके उपरि अधिक रूप तीनसो तीन जायगा द्योयका अंक मांडि परस्पर गुणें आठ भया सो विरलनराशिप्रमाण दूवे मांडि परस्पर गुणें भया जो पत्यका प्रमाण सोलह लब्धराशि ताका गुणकार हो है । तहां सोलहकों आठ करि गुणें सागरोपमका प्रमाण एकसौ अठईस हो हैं । ऐसैं ही अन्यत्र भी जानना ।

भावार्थ—इहां ऐसा है कि जैसे केतेइक अर्द्धच्छेदनि विषै केतेइक अर्द्धच्छेद मिलाए तहां मिलाए अर्द्धच्छेदनिकों अर्द्ध एकरूप कहे तैसैं तिन मिलाए अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ सो मूल अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो लब्धराशि होइ तिस विषै जोड़ने योग्य न हो हैं गुणकाररूप हो हैं ॥ ११० ॥

आगैं प्रसंगपाइ हीन अर्द्धच्छेदनिका कहा सो कहैं हैं:—

विरलितरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि हीणरूवाणि ।

तेसिं अण्णोण्णहदी हारो उप्पण्णरासिस्स ॥ १११ ॥

विरलितराशितः पुनः यावन्मात्राणि हीनरूपाणि ।

तेषामन्योन्यहतिः हार उत्पन्नराशेः ॥ १११ ॥

अर्थ—विरलनरूपराशितैं यावन्मात्र हीनरूप होइ तिन हीन रूप प्रमाण दूवे मांडि परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ सो उत्पन्नराशि जो लब्धराशि ताका भागहार होइ । अंक संदृष्टि विषै याका उदाहण ऐसा । जैसे पण्ण्णी ६५५३६ के अर्द्धच्छेद सोलह तिन तैं च्यारि घाटि अर्द्धच्छेद च्यारि हजार छिनवैके हो हैं । तहां पण्ण्णीके अर्द्धच्छेदनिकों विरलित राशि कहिए, अर घाटि जे च्यारि अर्द्धच्छेद तिनकों हीनरूप कहिए । सो हीनरूपप्रमाण दूवा मांडि २।२।२।२ । परस्पर गुणें सोलह मए । सोई विरलनराशिप्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें भया जो पण्ण्णी ६५५२६ प्रमाण लब्धराशि ताका भागहार हो है । तहां भाज्य पण्ण्णी ६५५३६ कों भागराशि सोलहका भाग दीएं इष्टराशि च्यारि हजार छिनवै हो है ।

भावार्थ—अर्द्धच्छेदनि विषै केतेइक अर्द्धच्छेद घटाए तिन घटाए अर्द्धच्छेदनिकों हीनरूप कहिए । सो हीनरूप प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ सो सर्व अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ ताका भागहार हो है । भाग दीएं जो राशि आवै सोई घटाए पीछै अवशेष अर्द्धच्छेद रहे तिन प्रमाण दूवे मांडि परस्पर गुणें राशि हो है ऐसा जानना ॥ १११ ॥

आगैं उत्तर कहिए जो प्रकरण ताकी पातनिका रूप गाथाकों कहैं हैं:—

जगसेदीए वग्गो जगपदरं होदि तग्घणो लोगो ।

इदि बोहियसंखाणस्सेत्तो पगदं परूवेमो ॥ ११२ ॥

जगच्छ्रेण्या वर्गः जगत्प्रतरो भवति तद्धनो लोकः ।

इति बोधितसंख्यानस्य इतः प्रकृतं प्ररूपयामः ॥ ११२ ॥

अर्थ—आठ प्रकार उपमा प्रमाण विषै पत्य और सागरका तौ वर्णन कीया ही । बहुरि सूच्यंगुल प्रतरांगुल घनांगुल जगच्छ्रेणीका वर्णन पूर्वै ही जगच्छ्रेणीका घनप्रमाण लोक है इस कथनका प्रसंग पाइ वर्णन कीया था । बहुरि जगच्छ्रेणीका वर्ग सो जगत्प्रतर है । बहुरि तिस जगच्छ्रेणीका घन सो घनलोक है । तहां पत्यके समयनिका प्रमाण सो तौ पत्य जानना । दश कोडा-कोडि पत्यका समूह सो सागर जाननां, पत्यका अर्द्धच्छेद प्रमाण पत्य मांडि परस्पर गुणें सूच्यंगुल होइ सो एक अंगुल लंबे प्रदेशनिका प्रमाण जानना । ताका वर्ग प्रतरांगुल सो एक अंगुल लंबा एक अंगुल चौड़ा प्रदेशनिका प्रमाण जानना । तिस सूच्यंगुलका घन सो घनांगुल है सो एक अंगुल लंबा एक अंगुल चौड़ा एक अंगुल ऊंचा प्रदेशनिका प्रमाण जानना । बहुरि पत्यका अर्द्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण घनांगुल मांडि परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी होइ सो लोकका मध्यतै ऊर्द्ध वा अधः पर्यंत लंबे सात राजूके प्रदेशनिका प्रमाण जाननां । बहुरि ताका वर्ग जगत्प्रतर सो जगच्छ्रेणी प्रमाण लंबे वा चौड़े क्षेत्रके प्रदेशनिका प्रमाण जानना । बहुरि तिसही जगच्छ्रेणीका घन सो घनलोक है सो जगच्छ्रेणी प्रमाण लंबा ऊंचा क्षेत्रका प्रदेशनिका प्रमाण जाननां । सो इहां ऐसा प्रमाणहीका ग्रहण करनां किछू समय प्रदेशादिकतै प्रयोजन नाहीं । जैसे काल वर्णन विषै जगच्छ्रेणी प्रमाणकाल कहै तहां तितने समयनिका ग्रहण करना किछू प्रदेशनितै प्रयोजन नाहीं । ऐसैही अन्यत्र जाननां । ऐसै हम करि जान्या है संख्याका स्वरूप जानै ऐसा जु शिष्य ताके तांई यातै परै अब प्रकरणभूत जो लोकका वर्णन ताहि प्रमाणरूप करै हैं ॥ ११२ ॥

ऐसै उपमा प्रमाणका प्रकरण समाप्त भया ॥

आगै जो कथन करिए है ताकी पातनिका पूर्वै गाथाही करि कही सो जाननीः—

उदयदलं आयामं वासं पुन्वावरेण भूमिमुहे ।

सत्तेक पंचएक य रज्जु मज्झमिह हाणिचयं ॥ ११३ ॥

उदयदलं आयामः व्यासः पूर्वापरेण भूमिमुखे ।

सत्तेकं पंचैकं च रज्जुः मध्ये हानिचयम् ॥ ११३ ॥

अर्थ—लोकका उदय जो उंचाईका प्रमाण सो चौदह राजू पूर्वै कहा था ताका दल कहिए आधा सात राजू प्रमाण आयाम कहिए दक्षिण उत्तर दिसा विषै चौडाईका प्रमाण जानना जातै पूर्व पश्चिम विषै चौडाईका हानिचयरूप आगै कथन करिए है तातै इहां दक्षिण उत्तर दिसा विषै नीचै तै लगाय उपरि चौदह राजूकी उंचाई पर्यंत सर्वत्र सात राजू चौड़ा लोक जाननां । कहीं हीनाधिक नाहीं । बहुरि पूर्व पश्चिम दिसा विषै व्यास भूमि अर मुख विषै क्रमतै सात राजू, एक राजू, पांच राजू, एक राजू, जानना ।

भावार्थ—पूर्वतै पश्चिम पर्यंत लोक नीचै ही नीचै तौ सात राजू चौड़ा है । उपरि क्रमतै घटता मध्यलोक विषै एक राजू चौड़ा है । उपरि क्रमतै बधता ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू चौड़ा है उपरि क्रमतै घटता अंतविषै एक राजू चौड़ा है । तहां आदि प्रमाणकों भूमि कहिए अंत प्रमाणकों मुख कहिए तिन विषै हानि अर चय हैं ते साधनै । हानि नाम घटनेका है चयनाम क्रमतै जितनां जितनां वधै ताका नाम है ॥ ११३ ॥

आगैं तिन हानि चयके साधनेका विधान कहता संता सूत्र कहै हैं:—

मुहभूमीण विसेसे उदयहिदे भूमहादु हाणिचयं ।

जोगदले पदगुणिदे फलं घणो वेधगुणितफलं ॥ ११४ ॥

मुखभूम्योः विशेषे उदयहिते भूमखतः हानिचयं ।

योगदले पदगुणिते फलं घनो वेधगुणितफलम् ॥ ११४ ॥

अर्थ—मुख अर भूमि विषै अधिक प्रमाणमें स्यौ हीन प्रमाण घटाएं जो अवशेष रहै ताकों उचाईका भाग दीएं भूमि मुखतै हानिचय हो हैं । सो इहां अधोलोक विषै नीचै चौड़ा राजू सात सो भूमि कहिए । उपरि घटता घटता एक राजू रखा सो मुख कहिए सो भूमिमें स्यौ मुख घटाएं छहराजू रहे तहां सात राजूकी उचाईमें छहराजू घटे तो एक राजू की उचाई में कितना घटे ऐसैं त्रैराशिक करे उचाई सात राजूका भाग छहराजूको दीजिए इतनां इतनां प्रमाण एकराजू उपरि जाइ चौड़ाईमें घटती हुवा तहां नीचैही नीचै सातराजू चौड़ा है तातै एक राजू उपरि जाइ सातवीं नरक पृथ्वीके निकटि छह राजूका सातवां भाग घट्या ताकों समछेद विधान करि घटाएं गुणचा-सराजूका सात भागमें स्यौ छहराजूका सातवां भाग घटे तियालीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रखा । ऐसैं ही एक एक राजू उपरि जाइ छह राजूका सातवां भाग घटावतै छठी नरक पृथ्वीके निकटि सैंतासका सातवां भाग पंचमीके निकटि इकतीसका सातवांभाग चौथीके निकटि पचीसका सातवां भाग तीसरीके निकटि उगणीसका सातवां भाग दूसरीके निकटि तेरहका सातवां भाग प्रथम पृथ्वीके अंत मध्यलोक निकटि सातका सातवां भाग प्रमाण व्यास जाननां । बहुरि आधा ऊर्ध लोकका चय ल्यावनें विषै मुख तौ मध्य लोकके निकटि एकराजू अर भूमि ब्रह्म-स्वर्गके निकटि पांच राजू तहां भूमिमें स्यौ मुख घटाएं अवशेष च्यारि राजू । बहुरि मध्य लोकतै ब्रह्मस्व-र्ग तौ साढा तीन राजू ऊंचा अर सौधर्म युगल डेढराजू ऊंचा । सो जो साढा तीन राजूकी उचाईमें च्यारि राजू वधै तौ ड्योढ राजूकी उचाईमें कितना वधै ऐसैं त्रैराशिक करिए तव भिन्न गणित करि बारह राजूका सातवां भाग प्रमाण बधती आया । याकौ एक राजूका व्यास मध्यलोक विषै था तामै समछेद विधान करि मिलाएं सौधर्म युगलका अंतके निकटि उगणीसका सातवां भाग प्रमाण व्यास भया । बहुरि सौधर्म युगलतै सनत्कुमारयुगल ड्योढ राजू ऊंचा तातै पूरैं ड्योढ राजू विषै वधतीका प्रमाण बारह राजूका सातवां भाग कहा था सो इतना प्रमाणरूप चय उगणीसका सातवां भाग विषै मिलाएं सनत्कुमार युगलका अंतके निकटि इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास भया । बहुरि यातै ब्रह्मयुगल आधा राजू ऊंचा सो साढा तीन राजूकी उचाई में च्यारि राजू वधै तौ

आधा राजूमें कितना वधै ऐसैं त्रैराशिक कीएं च्यारि राजूका सातवां भाग प्रमाण वधै सो पूर्व चय इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाणमैं मिलाएं ब्रह्मयुगलका अंतके निकटि पैतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास भया । बहुरि अव उपरिका ऊर्द्धलोक विषैं हानि ल्याईए हैं । तहां ब्रह्मस्वर्गके निकटि तौ पांचराजू व्यास सो भूमि कहिए । अर लोकका अंतविषैं एकराजू व्यास सो मुख कहिए । भूमिमैं स्यौं मुख घटाएं अवशेष च्यारि राजू । बहुरि साढा तीन राजूकी उंचाईमें च्यारि राजू घटै तौ आधाराजूकी उंचाईमें कितना घटै ऐसैं त्रैराशिक करते च्यारि राजूका सातवां भाग आया, सो ब्रह्मयुगलतैं लांतवादि युगल आध आध राजू ऊंचे हैं तातैं ब्रह्मस्वर्गके निकटि पैतीसका सातवां भाग प्रमाण चौडां था तामैं च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं लांतव युगलका अंतके विषैं इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रखा । यामैं च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं शुक्र युगलका अंतके निकटि सताईस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रखा यामैं तितनाही घटाएं सतार युगलका अंतके निकटि तेईस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रखा यामैं तितनाही घटाएं आणत युगलका अंतके निकटि उगणीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रखा । यामैं तितना ही घटाएं आरण युगलका अंतके निकट पंद्रह राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रखा । बहुरि इहांतैं लोकका अंत एक राजू ऊंचा है सो साढा तीन राजूकी उंचाईमें च्यारि राजू घटै तौ एक राजूकी उंचाईमें कितना घटै ऐसैं त्रैराशिक कीएं आठ राजूका सातवां भाग आया सो पंद्रह राजूका सातवां भागमैं स्यौं घटाएं सात राजूका सातवां भाग रखा सो अपवर्तन कीएं लोकका अंत विषैं एक राजू प्रमाण व्यास जाननां । ऐसैं पूर्व पश्चिमकी अपेक्षा लोकका व्यास हीनाधिक जाननां । बहुरि अधोलोकका समस्त क्षेत्रफल कहिए है । मुख अर भूमिका योग करि ताको आधा करि पदयोग छ तीह करि गुणिए तब क्षेत्रफल होइ । बहुरि याको वेध करि गुणिए तब घनफल होइ सो इहां पूर्व पश्चिम अपेक्षा नीचैं ही नीचैं व्यास प्रमाणरूप भूमि सो सातराजू अर अधो लोकका अंत विषैं व्यासका प्रमाण सो मुख एक राजू इन दोऊनिकों मिलाएं आठराजू हूवा याको आधा कीएं च्यारि राजू हूवा । बहुरि इहां दक्षिण उत्तर अपेक्षा सर्वत्र व्यासको पद कहिए सो सातराजू प्रमाण तीह करि गुणें अठाईस राजू प्रमाण क्षेत्रफल भया । बहुरि याको वेध जो अधोलोककी उंचाईका प्रमाण सातराजू तीह करि गुणें एकसौ छिनवै राजू प्रमाण घनफल होहैं । अधो लोकका एक एक राजू प्रमाण लंबा चौडा ऊंचा खंड कल्पिए तौ एकसौ छिनवै खंड होइ ऐसा अर्थ जानना ॥ ११४ ॥

आगैं अधोलोकको क्षेत्र अपेक्षा आठ प्रकार भेदकरि कहैं हैं:—

सामणं दोआयद् जवमुर जवमज्ज मंदरं दूषं ।

गिरिगडगेण विजाणह अट्टवियप्पो अधोलोको ॥ ११५ ॥

सामान्यं द्वाययते यवमुरजं यवमध्यं मंदरं दूष्यं ।

गिरिकटकेन विजानीहि अट्टविकल्पः अधोलोकः ॥ ११५ ॥

अर्थ—सामान्य १ ऊर्द्धायत १ तिर्यगायत १ यवमुरज १ यवमध्य १ मंदर १ दूष्य १ गिरिकटक १ ऐसैं आठ प्रकार अधोलोक जानहु । तहां आठों ही प्रकार करि उंचाई अर पूर्व पश्चिम चौडाईकी अपेक्षा अठईस रज्जु क्षेत्रफल कहिए है सर्वत्र दक्षिण उत्तरकी अपेक्षा सात रज्जु

करि गुणें एकसौ छिनवै रज्जु प्रमाण घनक्षेत्र जाननां । तहां सामान्यपनै क्षेत्रकी चौडाईको समान करि क्षेत्रफल इहां कहिए है सो सामान्य जाननां सो इहां ' मुहभूमि जोगदले, इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रके अनुसार मुख तौ एक रज्जु, भूमि सातरज्जु इनका योग आठ रज्जु ताका आधा च्यारि रज्जु ताका पद जो उचाई सात रज्जु करि गुणें अठाईस रज्जु क्षेत्रफल भया । बहुरि ऊर्द्धता करि लंबा ऐसा चौकोर क्षेत्र कल्पिकरि जो क्षेत्रफल इहां कहिए है सो ऊर्द्धयत जाननां । सो अधोलोकको चौडाई का मध्यविषै छेदि दोय खंड करिए । बहुरि एक खंडको उपरि नीचै उलटा करि जैसे आयत चतुरस्र क्षेत्र होइ तैसे स्थापिए तब यहु क्षेत्र च्यारि राजू चौडा सातराजू ऊंचा ऐसा आयत चतुरस्र हूवा ताका 'भुजकोटि वध, इत्यादि सूत्र करि क्षेत्रफल करना । तहां आम्ही साम्ही दोय दिसा संबधी प्रमाणकों भुज कहिए अवशेष दोय दिसा संबधी प्रमाणकों कोटि कहिए इनको परस्पर गुणें क्षेत्रफल होइ सो इहां सातकरि च्यारिकों गुणें अठाईस रज्जु प्रमाण क्षेत्रफल भया । बहुरि तिर्यगरूप लंबा ऐसा चौकोर क्षेत्र कल्पि जो इहां क्षेत्रफल करिए सो तिर्यगायत जानना, सो ' मुखभूमि समास इत्यादि सूत्र करि मुख एक रज्जु भूमि सात रज्जु इनका समास जो जोड़ सो आठ रज्जु ताका आधा च्यारि रज्जु प्रमाण हीनाधिक समान कीएं सर्वत्र चौडाईका प्रमाण होई । बहुरि सात रज्जुकी उंचाई विषै मध्य विषै छेदि आधा क्षेत्रको जुदा स्थापि ताके उपरि आधा क्षेत्र था ताको चौडाई विषै मध्यविषै छेदि जैसे तिर्यगायत क्षेत्र होई तैसे तिस आधा क्षेत्रके दोऊ पार्श्वनि विषै चौथाई क्षेत्र स्थापिए तब साढा तीन राजू ऊंचा अर आठराजू चौडा ऐसा तिर्यगायत क्षेत्र भया ताका 'भुज कोटि वध, इत्यादि सूत्र करि अठाईस रज्जु प्रमाण क्षेत्रफल हो है ॥ ११५ ॥

आगै यवमुरज क्षेत्रफलको ल्यावै है:—

रज्जुतयस्सोसरणे सत्तुदओ जदि हवेज्ज एकेसे ।

किमिदि कदे संपादे एक्कजउस्सेहमाणधिणं ॥ ११६ ॥

रज्जुत्रयस्यापसरणे सप्तोदयो यदि भवेत् एकस्य ।

किमिति कृते संपाते एकयवोत्सेधमानमिदम् ॥ ११६ ॥

अर्थ—यवनामा अन्नके आकारि अर मृदंगके आकारि क्षेत्र कल्पिकरि इहां क्षेत्रफल कहिए सो यव मुरज जानना तहां आधा यवका आकार तिकूटा जानना । ताकूं दूणा किए यवका आकार होइ । बहुरि उपरि नीचै हीनाधिक चौडाईका प्रमाण लीएं आधा मृदंगका आकार होइ ताकूं दूणा कीएं सम्पूर्ण मृदंगका आकार होइ । सो इहां अधोलोक विषै अठारह खंड तौ अर्द्ध यव आकारि कल्पनां अर एक खंड मृदंग आकारि कल्पनां । तहां यवाकार खंडका प्रमाण कहिए है । नीचै तौ सात राजू चौडा मध्यलोकके पासि एक राजू चौडा सो छह राजू घट्या सो दोऊ पार्श्व विषै इतना घट्या ताका आधा तीन रज्जु प्रमाण एक पार्श्व विषै घट्या सो तीन रज्जुके घटने विषै जो सात रज्जुकी उंचाई पाईए तौ एक रज्जुके घटने विषै केती उचाई पाईए ऐसी त्रैराशिक कीएं सातरज्जुका तीसरा भाग प्रमाण एक यवकी उचाई भई याको आधा कीएं सात रज्जुका छठा भाग प्रमाण आधायवकी उचाई भई । बहुरि इस आधा

यवरूप क्षेत्रका क्षेत्रफल ' मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि कहिए हैं । मुख तौ शून्य जातैं तिकूटा क्षेत्र विषै मुखकी चौडाईका अभाव है । बहुरि भूमि एक रज्जु जोडें भी एकरज्जु ताका आधा आधरज्जु ताकों उचाई सातका छठा भाग करि गुणें सात राजूका बारव्हां भाग प्रमाण आधा यवका क्षेत्रफल भया । याकों अठारह गुणा कीएं साढा दस रज्जु प्रमाण क्षेत्रफल तौ यवाकार क्षेत्रनिका भया । बहुरि आधा मृदंगाकारका क्षेत्रफल ' मुह भूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि कहिए हैं । मुख तौ एक रज्जु भूमि च्यारि रज्जु जोडें पांच रज्जु ताका आधा अढाई रज्जु ताकों पद जो उंचाईका प्रमाण साढा तीन रज्जु करि गुणें पाँगानव रज्जु क्षेत्रफल भया । याकों दूणां कीएं साढा सत्रह रज्जु प्रमाण सम्पूर्ण मृदंग क्षेत्रका क्षेत्रफल भया यामें साढा दस रज्जु यव क्षेत्रफल मिलाएं अठाईस रज्जु प्रमाण क्षेत्रफल भया । इहां यहु भाव जाननां । अधोलोक जहां च्यारि राजू चौडा है तहां मृदंगका मध्य ठहराया ताके उपरि अनुक्रमतैं हीन चौडा हैही सो आधा मृदंग तौ उपरि भया । बहुरि जैसें उपरि चौडाई है तैसें ही नीचें चौडाई मध्यतैं क्रमहीन रूप कल्पना करी सो आधा मृदंग नीचें भया ऐसें दोऊनिकों मिलाएं सम्पूर्ण मृदंग क्षेत्र भया । बहुरि नीचें दोऊ पार्श्वनि विषै चौडाई वधती रही तहां अठारह तिकूटा क्षेत्र अर्द्ध यवाकार कल्पना कीएं । इहां ऐसा आकार जानना । इहां नीचेतैं एक राजूकी चौडाई जहां घटी तहां पर्यंत अर्द्ध यव ठहराया । सो नीचें सात राजूकी चौडाई है तहां मध्य विषै एक राजू तौ मृदंगाकार विषै रखा अर एक पार्श्व विषै तीनि राजू रखा तहां तैं तीन तौ नीचें तैं क्रमहीनरूप आधे यव ठहराए । अर तिनके बीचि दोय उपरितैं क्रम हीनरूप आधे ठहराए । ऐसें पांच आधे यव भए । बहुरि तिनके उपरि सात राजूका छठा भाग प्रमाण उचाई नीचेतैं भए जहां दोय राजूकी चौडाई रही तहां तैं तैसेंही दोयतौ नीचेतैं क्रमहीनरूप एक उपरितैं क्रमहीनरूप ऐसें तीन आधे यव ठहराए, ताके उपरि तहांतैं तितना ही उचाई भए जहां एक राजूकी चौडाई रही तहां एक नीचेतैं क्रम हीनरूप आधा यव ठहराया । ऐसेंही दूसरे पार्श्व विषै नव आधे यव जाननें । ऐसें अठारह आधे यव भए । ऐसें एक मृदंग नव यव कल्पना करि क्षेत्रफल कहा । बहुरि यवहीके आकारि क्षेत्र कल्पिकरि इहां क्षेत्रफल कहिए है सो यव मध्य जाननां । सो अधोलोक विषै चौईस यवाकार क्षेत्रके खंड कल्पिए है । तहां आधा यवका क्षेत्रफल सात रज्जुका बारव्हां भाग कहा था ताकों दूणा कीएं सात रज्जुका छठा भाग प्रमाण एक यवका क्षेत्रफल होइ याकों चौईस गुणा कीएं अठाईस रज्जु प्रमाण यव मध्य क्षेत्रफल हो है । इहां यहु भाव जाननां । जैसें पूवें पार्श्वनि विषै यवाकार कल्पना कीया तैसें इहां सर्व ही अधोलोक विषै अठतालीस अर्द्ध यवाकार ऐसें कल्पनें । इहां नीचें सात राजू चौडा तहां तैं पूर्ववत् नीचें तैं क्रमहीन तौ सात अर तिनिके बीचि उपरितैं क्रमहीन छह आधे यव ठहराए । तिनके उपरि पूर्ववत् उचाई होतैं छह, पांच, अर पांच, अर पांच, च्यारि च्यारि तीन अर तीन दोय अर दोय, एक, आधे यव कल्पना कीएं तिनके चौबीस सम्पूर्ण यव ठहराय क्षेत्रफल कहा है ॥ ११६ ॥

आगैं मंदर क्षेत्रफल ल्यावनेकों कहिए है:—

अर्द्ध चउत्थभागो सगवारसमं तिदाल वारंसो ।

सग वारंस दिवडुं रज्जुदओ मंदरे खेचे ॥ ११७ ॥

अर्थ चतुर्थभागः सप्तद्वादश त्रिचत्वरिंशत् द्वादशांशः ।

सप्त द्वादशांशं द्वयर्थे रज्जुदयो मंदरे क्षेत्रे ॥ ११७ ॥

अर्थ—मंदर जो मेरु ताका आकार कल्पि क्षेत्रफल जो इहां कहिए है सो मंदर जाननां । तहां अधोलोककी सात राज्की उचाई है । तामैं आधारज्जु चौथाई रज्जु मिलाएं पौणरज्जु । बहुरि सात रज्जुका बारव्हां भाग बहुरि तियालीस रज्जुका बारव्हां भाग बहुरि ड्योढ राज् इतनां प्रमाण लीं जुदी जुदी उंचाई मंदर क्षेत्र विषै कल्पिए । बहुरि ' मुहभूमीण विसेसे उदयहिदे, इत्यादि पूर्वसूत्रके अनुसारि मुख एकराज् भूमि सातराज्, । भूमिमैं स्यो मुख घटाएं छहराज् भया सो सात राज्की उंचाई विषै छहराज् घटै तौ पौणराज्की उंचाईमें केता घटै ऐसैं त्रैराशिक करि नवराज्का चौदव्हां भाग प्रमाण घट्या सो सात राज्में स्यो घटाएं निवासी राज्का चौदव्हां भाग अवशेष रखा इतना नीचेतैं पौणराज् उपरि जाइ चौडाईका प्रमाण जाननां । ऐसैंही ताके उपरि सातराज्का बारव्हां भाग उपरि जाय सातराज्का चौदव्हां भाग घटि बियासीका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रखा ताके उपरि तियालीस राज्का बारव्हां भाग उपरि जाय तियालीसका चौदव्हां भाग घटि गुणतालीस राज्का चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रखा ताके उपरि सात राज्का बारव्हां भाग उपरि जाय सातराज्का चौदव्हां भाग घटि वतीस राज्का चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रखा ताके उपरि ड्योढ राज् उपरि जाय नवराज्का सातवां भाग घटि चौदह राज्का चौदव्हां भाग ऐसा एक राज् प्रमाण आयाम मध्यलोकके निक रखा । तहां चूलिका ल्यावनेके अर्थ सातराज्का बारव्हां भाग प्रमाण उचाई रूप दोयक्षेत्र तिनको लंबा चौकोर जैसे होइ तैसे एकको सुलटा एकको उलटा स्थापि तिन दोऊ क्षेत्रनि विषै अपनी अपनी भूमिमैंस्यो मुख घटाएं सातराज्का चौदव्हां भाग प्रमाण घाटि होनेका प्रमाण कखा । सो अपवर्तन कीएं आध आध राज् भया तहां एक एकके दोय दोय खंड कीएं च्यारि खंड भए तहां एक खंडकी भूमि पाव राज् प्रमाण ताको तौ उपरि स्थापिए अर अवशेष तीन खंडनिका भूमि पौणराज् प्रमाण ताको उपरि स्थापिए अर अवशेष तीनि खंडनिका भूमि पौणराज् प्रमाण सो नीचे स्थापिए इतनां तौ चौडाईका प्रमाण । अर सातराज्का बारव्हां भाग उचाईका प्रमाण जाका भया ऐसी चूलिका करिए पीछैं विषम चतुर्भुज क्षेत्रका तौ क्षेत्रफल ' मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि ल्याईए । अर आयत चतुरस्र क्षेत्रका क्षेत्रफल 'भुजकोटि वेध, इत्यादि सूत्र करि ल्याईए । बहुरि छहों क्षेत्रफलनिकों समच्छेद विधान करि जोडिए तब चौराणवै सै आठ राज्को तीनसैं छत्तीसका भाग दीजिए इतनां भया सो अठाईस राज् प्रमाण क्षेत्रफल भया । इहां ऐसा भाव जाननां । जैसे मेरुगिरि नीचेतैं केतीइक उचाई पर्यंत तौ चौडाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि केतीइक उंचाई पर्यंत चौडाई समान रूप हैं । ताके उपरि केती इक उंचाई पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि केतीयक उंचाई पर्यंत चौडाई समान रूप है ताके उपरि केतीइक उंचाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि चूलिका है सो क्रमतैं हीनरूप चौडाई लीं हे ऐसैं यहू आकार है तैसे अधोलोककी उंचाई विषै पांच भाग कल्पैं तहां पौण राजकी उचाई पर्यंत तौ चौडाई क्रमतैं हीन रूप ही ग्रहण कीन्हीं इहां मेरु विषै नीचे तैं केती

इक उचाई पर्यंत तौ भूमि विषै कंद हैं । ताके उपरि भूमि उपरि उचाई है ऐसै दोग्य भाग हैं । तातैं आध राजू पावराजू उचाई रूप दोग्य भाग कीएं परंतु इहां पर्यंत क्रमतैं चौडाई हीन रूप ही है । तातैं मिलाय पौण राजू कही । बहुरि ताके उपरि सात राजूका बारव्हां भाग पर्यंत क्रमहीन चौडाई है । तिस चौडाई विषै उपरि वियालीसका चौदव्हां भाग प्रमाण चौडाई रही तिस प्रमाण समान चौडाई कल्पी । अर दोऊ तरफां बधती चौडाई रही सो जुदी राखी सो वह चौडाई दोऊ तरफकी मिलाएं नीचै आधराजू उपरि क्रमतैं हीन तिकूंटी जाननी । बहुरि ताके उपरि तियालीस राजूका बारव्हां भाग पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप हैं सोई ग्रहण कीन्हीं । बहुरि ताके उपरि सातराजूका बारव्हां भाग पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप है । तिस विषै पूर्ववत् बत्तीसराजू चौदव्हां भाग प्रमाण समान चौडाई ग्रहण कीन्हीं । अर दोऊ तरफांकी चौडाई पूर्ववत् प्रमाण लीएं जुदी राखी । बहुरि ताके उपरि ड्यौढ राजू उचाई पर्यंत क्रमतैं हीनरूप चौडाई है सोई ग्रहण कीन्हीं । बहुरि जो दोग्य जायगा चौडाई जुदी राखी थी तिस विषै एक जायगाकी चौडाई सुलटी एक जायगा उलटी स्थापै आधा राजू चौडा सात राजूका बारव्हां भाग प्रमाण ऊंचा क्षेत्र भया । तहां उपरिकी चौडाई घटाय नीचै मिलाएं नीचै पौणराजू चौडा उपरि पावराजू चौडा क्षेत्र कल्पनां कीया अर याकी उचाई सातराजूका बारव्हां भाग प्रमाण है सो यहू क्षेत्र मेरुकी चूलिकाकी जायगा कल्पना कीया ऐसैं मेरुगिरि समान अधो-लोकका आकार कल्पि क्षेत्रफल कह्या है । बहुरि अब दूष्य क्षेत्रफल कहिए है । पूर्व अर्द्धयवकी उचाई सात राजूका छठा भाग कह्या था सो सात राजूमें समछेद विधान करि घटाएं पैतीसका छठा भाग रह्या । सो एक तौ खंड यहू भया यहां भूमिका प्रमाण सात राजू अर मुखका प्रमाण पैतीस राजूका छठा भाग जानना । बहुरि दूसरा खंड विषै भूमि तौ पैतीस राजूका छठा भाग अर यामैं सात राजूका छठा भाग घटाएं मुखका प्रमाण अठाईस राजूका छठा भाग । ऐसैही पूर्व पूर्व खंडविषै जो मुख होइ सो उत्तर उत्तर खंडविषै भूमि जाननी । पूर्व पूर्व खंडका मुखमें स्यौं अर्द्ध यवकी उचाईका प्रमाण घटाएं उत्तर उत्तर खंडनि विषै मुख जानना । ऐसैं छह खंड भए । 'मुह भूमी जोग दले' इत्यादि सूत्र करि इन छहों खंडनिका क्षेत्रफल ल्याइ जोडिए तब दोग्यसै बावनका बारव्हां भाग भया सो इकईस राजू हूवा । यामैं सात राजू मिलाएं दूष्य क्षेत्रफल विषै भी क्षेत्रफल अठाईस राजू हूवा । सो इस दूष्यक्षेत्रफलका भाव मौकौं भी नीकै नाहीं प्रतिभास्या तातैं नाहीं लिख्या है बुद्धिवांन जानियो ॥ बहुरि गिरिकटकका क्षेत्रफल कहिए । इस अठतालीस अर्द्धयवरूप क्षेत्र कल्पना करिए है सो एक अर्द्धयवका क्षेत्रफल सात राजूका बारव्हां भाग कह्या था ताकौं अठतालीस गुणां कीएं गिरिकटक क्षेत्रफल विषै भी अठाईस राजू प्रमाण आया । ऐसैं आठ प्रकार करि अधोलोकका क्षेत्रफल दिखाया । इहां यहू भाव जाननां । पूर्व जैसें यव मध्य कह्या तैसैही गिरिकटक जानना । विशेष इतना तहां दोग्य दोग्य तिकूंटे क्षेत्र मिलाय यवाकार कह्या था । इहां एक एक तिकूंटी क्षेत्र ग्रहण करि अठतालीस पर्वताकार कह्या सो आकार ऐसैं जाननां ॥ ११७ ॥

अब ऊर्द्धलोकका क्षेत्रभेदकौं कहैं है:—

सामण्णं पत्तेयं अद्धत्थंमं तहेव पिण्णही ।

एदे पंचपयारा लोयक्खेत्तम्हि णायव्वा ॥ ११८ ॥

सामान्यं प्रत्येकं अर्धस्तंभं तथैव पिनष्टिः ।

एते पंचप्रकाराः लोकक्षेत्रे ज्ञातव्याः ॥ ११८ ॥

अर्थ—सामान्य १ प्रत्येक १ अर्धस्थंभ १ स्तंभ १ पिनष्टि १ ऐसैं ऊर्द्धलोकके क्षेत्रविषैं ए पांच प्रकार जानने । सो इहां पूर्वपश्चिम अपेक्षा चौडाई अर उचाईकी अपेक्षा करि क्षेत्रफल इकईस राजू कहिए है । याकौ दक्षिण उत्तर अपेक्षा सात राजूकी चौडाई करि गुणें एकसो सैंतालीस राजू घनरूप क्षेत्ररूप ऊर्द्धलोकका जाननां । एक एक राजूका लंबा चौड़ा ऊंचा ऊर्द्धलोकका खंड कल्पें एकसौ सैंतालीस हो है । तहां सामान्यकौ समीकृत भी कहिए । जातैं हीनाधिक चौडाईकौ समान करि क्षेत्रफल इहां कहिए हैं । सो ' मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि मुख तौ इहां मध्यलोक निकटि एक राजू अर भूमि ब्रह्मस्वर्गनिकटि पांच राजू तिनकौ जोडें आधा कीएं ती राजू ताकौ उचाई साढा तीन राजू करि गुणें साढा दश राजू प्रमाण क्षेत्रफल आधा ऊर्द्धलोकका भया । याकौ दूणां कीएं इकईस राजू प्रमाण सब ऊर्द्धलोकका क्षेत्रफल भया । उपरिका आधा ऊर्द्धलोकविषैं मुख तौ लोकके अति एक राजू अर भूमि ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू जाननां । ऊर्द्धलोकका आकार ऐसा जाननां । सो इहां नीचैं तैं ब्रह्मस्वर्गपर्यंतका जुदा क्षेत्रफल कीया तातैं उपरि लोकपर्यंतका जुदा क्षेत्रफल कीया दोऊनिकौ मिलाय ऊर्द्धलोकका क्षेत्रफल कीया है । अब प्रत्येक क्षेत्रफल कहिए है । तहां मध्यलोकतैं सौधर्मद्विक ड्यौढ राजू ऊंचा सो ' मुहां भूमीण विसैसे ' इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रका अनुसारतैं इहां मध्यलोकके निकटि एक राजू सो तो मुख जानना । बहुरि साढा तीन राजूकी उचाईमें च्यारि राजू वधै तौ ड्यौढ राजूकी उचाईमें कितनां वधै । ऐसैं त्रैराशिक कीएं बारह राजूका सातवां भाग प्रमाण वधाएं उगणीस राजूका सातवां भाग चौडा सौधर्मद्विकका अंतके निकटि भया सो एक तौ यहू खंड भया इस विषैं मुखतौ एक राजू भूमि उगणीस राजूका सातवां भाग प्रमाण है । बहुरि ऐसैंही ताके उपरि ड्यौढ राजू ऊंचा खंडविषैं मुखतौ उगणीस राजूका सातवां भाग यामें बारहका सातवां भाग मिलैं भूमि इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण हो है । बहुरि ताके उपरि आध राजू ऊंचा खंडविषैं मुख तौ इकतीस राजूका सातवां भाग अर यामें च्यारि राजूका सातवां भाग मिलैं भूमि पांच राजू प्रमाण हो हैं । बहुरि ताके उपरि आधा राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि तौ पांच राजू तामैं साढा ती राजूकी उचाईमें च्यारि राजू घटै तौ आध राजूकी उचाईमें कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक करि च्यारिका सातवां भाग घटाएं मुखका प्रमाण इकतीस राजूका सातवां भाग है । बहुरि ऐसैं ही ताके उपरि आधा राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि इकतीस राजूका सातवां भाग तामैं च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं मुख सताईस राजूका सातवां भाग हो है । ता उपरि आध राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि सताईस राजूका सातवां भाग तामैं च्यारिका सातवां भाग छटाएं मुख तेइस राजूका सातवां भाग हो है तामैं चारिका सातवां भाग घटै मुख उगणीस राजूका सातवां भाग हो है । ताके उपरि आध राजू ऊंचा खंड विषैं भूमि उगणीस राजूका सातवां भाग तामें च्यारिका सातवां भाग घटै मुख पंद्रह राजूका सातवां भाग हो हैं बहुरि ताके उपरि एक राजू ऊंचा खंड विषैं भूमि

पंद्रह राजूका सातवां भाग तामें आठका सातवां भाग घटै मुख एकराजू प्रमाण हो है । ऐसैं भूमि मुखका प्रमाण जानि मुहभूमी जोगदले, इत्यादि सूत्रकरि सब खंडनिका जुदा जुदा क्षेत्रफल जो होइ ताको जोडिए तव दोयसै चौराणवेका चौदव्हां भाग ऐसा इकईस राजू प्रमाण प्रत्येक क्षेत्रफल होइ । इहां यहु भाव जाननां जुदा जुदा क्षेत्रफल कहि करि जोड्या तातैं याको प्रत्येक क्षेत्रफल कहा है । बहुरि अर्द्धस्तंभ अर स्तंभ क्षेत्रका क्षेत्रफल सुगम है इहां ऐसा भाव जाननां । ऊर्द्धलोकका आकारको मध्यविषै छेदि तहां वीचिका एकराजू क्षेत्र ताका तौ आधा आधा राजू दोऊ पार्श्वनि विषै स्थापिए । अर जो दोऊ पार्श्वनिका अवशेष क्षेत्र तहां उपरला नीचला क्षेत्रको उलटा सुलटा स्थापन कीएं चौकोर क्षेत्र होइ सो मध्यविषै स्थापन करिए ऐसैं अर्द्धस्तंभ क्षेत्रका जुडनां हो है । तहां आकार ऐसा जाननां । इहां स्तंभाकार लोकका मध्यविषै छेदि स्थापन किया तातैं याका नाम अर्द्धस्तंभ है । बहुरि ऊर्द्धलोकका आकार विषै वीचि एक राजू चौडा क्षेत्र तौ वीचिमें लिखना अर दोऊ पार्श्वनिका वधता क्षेत्र मध्यविषै दोय दोय राजू रखा था तिसविषै दोय खंड करि दोऊ पार्श्वनिका उलटा सुलटा जोडै दोय लंबे चौकोर क्षेत्र होइ सो दोऊ पार्श्वनि विषै जोडिए ऐसैं स्तंभ क्षेत्रका जुडनां हो है । ताका आकार ऐसा ॥ बहुरि अर्द्धस्तंभ वा स्तंभ क्षेत्र विषै जोड्या हूवा क्षेत्र तीन राजू ऊंचा हूवा सो भुजकोटिका वध करि इकईस राजू हूवा सो यहु क्षेत्रफल सुगम है ॥ ११८ ॥

बहुरि पिनष्टि क्षेत्रफल जाननेको त्रिभुजकी उंचाई आदि जानी चहिए सो कहै हैं:—

रज्जुदुग्हाणिठाणे आजडूदवो जदीह एकस्से ।

किमिदि तिरासियकरणे फलं दलोणं तिबाहुदओ ॥ ११९ ॥

रज्जुद्विकहानिस्थाने अर्धचतुर्थोदयो यदीह एकस्य ।

किमिति त्रैराशिककरणे फलं दलोनं त्रिबाहुदयः ॥ ११९ ॥

अर्थ—एक पार्श्वकी अपेक्षा चौडाई करि दोय राजूका घटनेका स्थान विषै साढा तीन राजूकी उचाई होइ तौ एक राजूका घटने विषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करने विषै सातका चौथा भाग आया । यामें आधा राजू घटाएं सवाराजू प्रमाण त्रिभुजकी उचाईका प्रमाण आया ॥ ११९ ॥

तिभुजुदयूणुदयुच्चं सूईखेत्तस्स भूमिमुहसेसे ।

भूमी तत्फलहीणं चदुरस्सधराफलं सुद्धं ॥ १२० ॥

त्रिभुजोदयोदयोच्चं सूचीक्षेत्रस्य भूमिमुखशेषे ।

भूमिः तत्फलहीनं चतुरस्रधराफलं शुद्धम् ॥ १२० ॥

अर्थ—बहुरि उचाईका प्रमाण विषै त्रिभुजकी उचाईका प्रमाण घटाएं बाह्य सूची क्षेत्रकी उचाईका प्रमाण आया । बहुरि भूमिमें स्यों मुख घटाइ अवशेष भूमि होइ ताका क्षेत्रफल करि हीन शुद्ध चौकोर क्षेत्रका क्षेत्रफल होइ । सो यहु कथन नीकै भेरे समझनेमें न आया है । तातैं पिनष्टि क्षेत्रके क्षेत्रफलका विधान इहां नाही लिख्याहै संस्कृत टीकातैं जानना । ऐसैं ऊर्द्धलोकका पांच प्रकार करि क्षेत्रफल कहा है ॥ १२० ॥

आगै पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि व दक्षिण उत्तर अपेक्षा करि लोकका परिधिकों दिखावता संता कहै हैं:—

पुन्वावरेण परिही उगुदालं साहियं तु रज्जूनं ।
दक्खिणउत्तरदो पुण बादालं होंति रज्जूनं ॥ १२१ ॥

पूर्वापरेण परिधिः एकोनचत्वारिंशत् साधिका तु रज्जूनाम् ।

दक्षिणोत्तरतः पुनः द्वाचत्वारिंशत् भवन्ति रज्जूनाम् ॥ १२१ ॥

अर्थ—पूर्व पश्चिम अपेक्षाकरि लोकका परिधि गुणतालीस राजू सो साधिक कहिए तियालीस राजूका एकसो वीसवां भाग करि अधिक प्रमाण जाननां । बहुरि दक्षिण उत्तर अपेक्षातै वियालीस राजू प्रमाण जाननां । गिरहका नाम परिधि है सो दक्षिण उत्तर अपेक्षा तौ परिधिका जाननां सुगम है । जातै लोक दक्षिण उत्तर दिशाकी अपेक्षा सात राजू तौ नीचै चौडा सात राजू उपरि चौड़ा, एक तरफ चौदह राजू ऊंचा ताहका दोन्यों तरफां अठाईस राजू हूवा सर्व मिलाएं वियालीस राजू प्रमाण परिधि भया ॥ १२१ ॥

बहुरि पूर्व पश्चिम अपेक्षा साधिक गुणतालीस राजू परिधि कैसै है ताके जाननेको करण सूत्र कहै हैं:—

भुजकोटिकदिसमासो कर्णकदी होदि वग्गरासिस्स ।

गुणयारभागहारा वग्गाणि ह्वन्ति णियमेण ॥ १२२ ॥

भुजकोटिकृतिसमासः कर्णकृतिः भवति वर्गराशेः ।

गुणकारभागहारौ वर्गौ भवतः नियमेन ॥ १२२ ॥

अर्थ—भुज और कोटिका जो वर्ग ताका समास कहिए जोड़ सो कर्णका वर्ग हो हैं । तहां जैसे कोऊ बांस खडा है । सो बांस बीचमें स्यौं टूटिकरि पृथ्वीके आनि लगा तहां पृथ्वी अर खडा बांस अर टूटा बांसके बीचि जो त्रिभुज क्षेत्रभया तहां खडा बांसका प्रमाण अर टूटा बांस जहां पृथ्वीके आनिलगा तहांतै लगाय जहां बांस खडा है तहां पर्यंत पृथ्वीका प्रमाण इन दोऊनि विषै एक कौं भुज कहिए एककों कोटि कहिए हैं । बहुरि जहां तै टूटा तहां तै लगाय पृथ्वी विषै आनि लगा तहां पर्यंत टूटा बांसका जो प्रमाण सो कर्ण कहिए है । तहां ऐसा आकार जाननां । तहां भुज और कोटि का जो प्रमाण ताका जुदा जुदा वर्ग करिए । इन दोऊनिकों जोड़ें जो प्रमाण होइ सो कर्णके प्रमाणका वर्ग जानना । ताका मूल ग्रहें कर्णका प्रमाण आवै है । बहुरि वर्गराशिके गुणाकार वा भागहार वर्गरूप ही हो हैं । कोऊ राशि वर्गमूलग्रहण योग्य होइ ताकौं किसी गुणकार करि गुणनां होइ वा भागहार करि भाजनां होइ तौ तिन गुणकार वा भागहारका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ ताकरि गुणिए वा भाग दीजिए है । जैसे कहीं चौसठि प्रमाण वर्गरूप हैं ताकौं दोय करि गुणना होइ तौ तहां दोयका वर्ग करि गुणिए तहां चौसठिकों दोयका वर्ग ध्यारि करि गुणै दोयसै छप्पन होइ ताका वर्गमूल सोलह होइ । सोई चौसठिका वर्गमूल आठकौं दोय करि गुणै सोलह होइ । सो अब यहां प्रयोजन कहिए हैं । अधो लोक सात राजू तौ ऊंचा है सो सात राजू प्रमाण तौ भुज

कहिए । बहुरि नीचै तौ सात राजू चौड़ा अर उपरि एक राजू चौड़ा तहां नीचै एक राजू तौ उपरि के समान चौड़ा पणां हूवा । अवशेष दोन्यौं तरफां तीन तीन राजू वधता भया सो एक पार्श्व-विषै जो तीन राजू वधता भया सो तीन राजू प्रमाण कोटि कहिए हैं । बहुरि भुजका वर्ग तौ गुणचास राजू अर कोटिका वर्ग नव राजू इन दोऊनिकों मिलाए अधोलोकका उपरितै लगाय नीचै पर्यंत एक पार्श्वविषै जो परिधिका प्रमाण सो कर्ण कहिए ताका वर्ग अठावन राजू प्रमाण हो है । बहुरि जो एक पार्श्वविषै इतनां भया तौ दोऊ पार्श्वनिविषै केता होइ तातै दोगका गुणकार करनां सो इहां वर्गरूप राशि है । तातै इहां दोगका वर्ग करि गुणें दोन्यौं तरफका वर्णके वर्गका प्रमाण दोगसै बत्तीस राजू हूवा । याका वर्गमूल ग्रहें अधोलोकके दोऊ तरफ उचाई विषै परिधिका प्रमाण पंद्रह राजू अर सात राजूका तीसवां भाग मात्र भया । ऐसै ही आधा ऊर्ध्वलोकविषै भुजका प्रमाण साढा तीन राजू ताका वर्ग सवा बारा राजू $\frac{36}{5}$ अर कोटिका प्रमाण दोग राजू ताका वर्ग च्यारि राजू इन दोऊनिकों समच्छेद करि मिलाए पैसठिका चौथा भाग प्रमाण भया $\frac{54}{5}$ बहुरि एक पार्श्वविषै इतनां होइ तौ दोग पार्श्व तौ आधा ऊर्ध्व लोककै अर दोग पार्श्व आधा ऊर्ध्व लोकके ऐसै च्यारि पार्श्वनिविषै कितनां होइ ऐसै विचारतै च्यारिका गुणकार चहिए सो इहां वर्गराशि है तातै च्यारिका वर्ग करि गुणें अर च्यारिका भागहार था ताकरि अपवर्तन कीएं दोगसौ साठि राजू प्रमाण ऊर्ध्वलोकके च्यारयौं कर्णनिके वर्गका प्रमाण भया याका वर्गमूल ग्रहें ऊर्ध्वलोककी उचाई विषै दोऊ तरफां परिधिका प्रमाण सोलह राजू अर च्यारि राजूका बत्तीसवां भागमात्र भया । बहुरि सर्व लोकके नीचै चौड़ाईका प्रमाणरूप परिधि सात राजू अर लोकका अंतविषै चौड़ाईका प्रमाणरूप परिधि एक राजू । ऐसै सर्वका जोड दीएं गुणतालीस तौ राजू हूवा । अर अधिक प्रमाण सात राजूका तीसवां भाग अर च्यारि राजूका बत्तीसवां भाग इन दोऊनिके हारकों समच्छेद विधान करि आधा भाज्य भाजक मांडि $\frac{33}{2}$ । $\frac{60}{2}$ जोडि $\frac{33}{2}$ च्यारिका अपवर्तन दीएं तियालीस राजूका एकसौ वीसवां भाग भया । ऐसै पूर्वपश्चिम अपेक्षा लोकका परिधि गुणतालीस राजू अर तियालीस राजूका एकसौ वीसवां भाग प्रमाण जाननां ॥ १२२ ॥

आगै लोकके सर्व तरफनें परिवेष्टित जो वात वलय तिन स्वरूपादिकका निर्णयके अर्थि सूत्र कहै हैं:—

गोमूत्रमुग्गणाणावण्णाण घणबुघणतणूण ह्वे ।

वादाणं वलयतयं रुक्खस्स तयं व लोगस्स ॥ १२३ ॥

गोमूत्रमुद्गनानावर्णानां घनांबुघनतनूनां भवेत् ।

वातानां वलयत्रयं वृक्षस्य त्वगिव लोकस्य ॥ १२३ ॥

अर्थ—घनोदधि अर घनवात अर तनुवात इन तीनों पवननिका ती वलय लोककै पाईए है । तहां घनोदधि तौ गायका मूत्रके समान वर्णकौं धरै है । घनवात मृगनामा अन्नके समान वर्णकौं धरै है । तनुवात नानाप्रकार वर्णकौं धरै है । सो लोकके इन पवननिका वलय तैसै हैं जैसै वृक्षके

त्वक् कहिये छयोडा होइ । अथवा जैसें तीनि तहका बेठण किसी गांठिकै होइ तैसें मांहीं तौ धनोदधिका वलय है । ताके उपरि घनवातका वलय है ताके उपरि तनुवातका वलय है ॥ १२३ ॥

आगैं इन पवननिका बाहल्य जो मोटापनां ताका निर्णयके अर्थ कहै हैं;—

जोयणवीससहस्रं बहलं वलयत्तयाण पत्तेयं ।

भूलोयतले पासे हेडादो जाव रज्जुत्ति ॥ १२४ ॥

योजनविंशतिसहस्रं बाहुल्यं वलयत्रयाणां प्रत्येकम् ।

भूलोकतले पार्श्वे अधस्तात् यावत् रज्जुरिति ॥ १२४ ॥

अर्थ—इहां इतना जाननां जो सात तौ नरकपृथ्वी अर एक मोक्षपृथ्वी इन आठ पृथ्वीनिके नीचै तीन तीन वात वलयनिका बाहुल्य कहिए मोटापनां जाननां । कहां कहां ? आठ पृथ्वीनिके नीचै । बहुरि लोकाकाशका अधोभागविषै नीचै बहुरि पार्श्वनिविषै नीचै लगाय एक राजूकी उचाई पर्यंत एक एक वात वलय बीस बीस हजार योजन मोटा जाननां ॥ १२४ ॥

आगैं उपरि पवननिका बाहल्यका निर्णयके अर्थ कहै हैं;—

सत्तमखिदिपणिधिम्हि य सग पण चत्तारि पणचउत्तियं ।

तिरिये बम्हे उट्टे सत्तमतिरिए च उत्तक्रमं ॥ १२५ ॥

सप्तमक्षितिप्रणिधौ च सप्त पंच चत्वारि पंच चतुष्कं त्रिकम् ।

तिरश्चि ब्रह्मे ऊर्ध्वे सप्तमतिरश्चि च उक्तक्रमः ॥ १२५ ॥

अर्थ—बहुरि पार्श्वनि विषै नीचै तै एक राजूके उपरि सातवीं नरकपृथ्वीके निकटि वात वलयनिका क्रमतै सात पांच च्यारि योजनका बाहुल्य जाननां । बीस हजार योजनका मोटापनां था सो एकैसाथि घटि करि इतनां रखा । बहुरि तहां तै उपरि अनुक्रमतै वधता वधता ब्रह्मलोकके निकट सप्तम पृथ्वीवत् सात पांच च्यारि योजनका बाहुल्य जाननां । तहां तै उपरि क्रमतै घटता घटता ऊर्ध्वलोकके निक तिर्थक् क्षितिवत् पांच च्यारि तीन योजनका बाहुल्य जाननां । अब सातवीं पृथ्वीतै तिर्थक् क्षितिपर्यंत मध्यम पृथ्वीनिके निकटि बाहुल्यका प्रमाण ' मुह भूमीण विसेसे उदायहिदे ' इत्यादि सूत्र करि जाननां । सो इहां तिर्थक् क्षितिके निकटि तीनों वात वलयनिका बाहुल्य बारह योजन सो मुख जाननां । बहुरि सप्तम पृथ्वीके निकटि तीनों वात वलयनिका बाहुल्य सोलह योजन सो भूमि जाननां । सो भूमिमें स्थौ मुख घटाएं अवशेष च्यारि योजन ताकौ सप्तम पृथ्वीतै तिर्थग्लोक छह राजू ऊंचा है ताका भाग दीएं एक राज उपरि घटतीका प्रमाण च्यारि योजनका छठा भाग आया । सो इतनां सोलह योजनमें समच्छेद करि घटाएं वा अपवर्तन कीएं छठी नरकपृथ्वीके निकटि पंद्रह योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण बाहुल्य है । यामें तितनाही घटें पांचमी नरकपृथ्वीके निकट चौदह योजन अर दोय योजनका तीसरा भाग प्रमाण बाहुल्य है । यामें तितना ही घटें चौथी पृथ्वीके निकट चौदह योजन बाहुल्य है । यामें तितना ही घटें तीसरी पृथ्वीके निकट तेरह योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण बाहुल्य है । यामें तितनाही घटें दूसरी पृथ्वीके निकट बारह योजन अर दोय योजनका तीसरा प्रमाण बाहुल्य है । यामें

तितनाही घटे प्रथम पृथ्विके अंति तिर्यक् लोकके निकटि बारह योजन प्रमाण बाहुल्य है । ऐसै ऊर्द्धलोक विषै मुख तौ बारह योजन भूमि सोलह योजन ताका विशेष च्यारि योजन सो साढा तीन राजूकी उंचाईमें च्यारि योजन वधै तौ ड्योढ राजूकी उंचाईमें कितना वधै ऐसै त्रैराशिक करि बारह योजनमें बारह योजनका सातवां भाग वधाएँ सौधर्मयुगलका अंतके निकट तीनों वात वलयनिका बाहुल्य तेरह योजन अर पांच योजनका सातवां भाग प्रमाण हो है । ऐसै ही त्रैराशिक करि उपरि भी अपनी अपनी उचाईके अनुसारि ब्रह्मस्वर्गपर्यंत वधाइ करि अर उपरि घटाइ करि तीनों वात वलयनिका बाहुल्य जाननां । इहां वातवलय ऐसै आकार लिएँ जाननां । इहां आठ पृथ्वीनिके नीचै अर लोकके चौगिरद वात वलय जाननें ॥ १२५ ॥

आगै लोकका उपरिम भाग विषै पवननिका बाहुल्यकौं प्रगट करता संता कहै हैं;—

कोसाणं दुग्मेकं देसूणेकं च लोयसिहरम्मि ।

ऊनधनुषण पमाणं पणुवीसज्झहियचारिसयं ॥ १२६ ॥

क्रोशानां द्विकमेकं देशोनैकं च लोकशिखरे ।

ऊनधनुषां प्रमाणं पंचविंशाधिकचतुःशतम् ॥ १२६ ॥

अर्थ—तीनों वात वलयनिका बाहुल्य दोग कोस २ एक कोस १ किछू घाटि एक कोस लोकका शिखरि विषै जानना । तहां किछू घाटिका प्रमाण पचीस अधिक च्यारिसै धनुष जानना ।

भावार्थ—लोकका उपरिम भाग विषै घनोदधि दोग कोस मोटा है । घन वात एक कोश मोटा है । तनु वात एक कोसमें च्यारिसै पचीस धनुष घटाएँ पंद्रहसै पिचहत्तरि धनुषप्रमाण मोटा है ॥ १२६ ॥

आगै लोकका अधस्तनविषै पवन जेता क्षेत्र रोकै है तिस क्षेत्रका क्षेत्रफल कहै हैं;—

लोयतले वादतये बाहल्लं सद्विजोयणसहस्सं ।

सेट्ठिभुजकोटिगुणिदं किंचूणं वाउखेत्तफलं ॥ १२७ ॥

लोकतले वातत्रये बाहुल्यं षष्टियोजनसहस्रम् ।

श्रेणिभुजकोटिगुणितं किंचिदूनं वायुक्षेत्रफलम् ॥ १२७ ॥

अर्थ—लोकका नीचला भाग विषै तीनों वात वलय विषै मिलाया हूवा बाहुल्य साठि हजार योजन प्रमाण है । बहुरि जगच्छ्रेणी प्रमाण लंबा चौड़ा है । तातै जगच्छ्रेणी प्रमाण भुजकोटि कहिए सो भुज अर कोटिकों परस्पर गुणै जगत्प्रतर होइ याको साठिहजार योजन प्रमाण बाहुल्य करि गुणिए । बहुरि दक्षिण उत्तर विषै तौ सर्वत्र सात राजू ही है । तातै भुजविषै तौ हानि नाही अर पूर्व पश्चिम विषै नीचै तौ सात राजू है । उपरि साठि हजार योजन पर्यंत क्रमतै घटती है । तातै कोटि विषै क्रम हानिके सद्भावतै समचतुरस्र नाही है । तातै किंचित् ऊन करना । ऐसै लोकके नीचै किंचित् ऊन साठि हजार योजन करि गुणित जगत्प्रतर प्रमाण वात वलयनिकार लोकका हूवा क्षेत्रका क्षेत्रफल जानना ॥ १२७ ॥

आगैं ताकौं उपरि पार्श्वनिविषै क्षेत्रफल ल्यावनेके अर्थि कहै हैं;—

किंचूणरज्जुवासो जगसेढीदीहरं हवे वेहो ।

जोयणसट्टिसहस्सं सत्तमखिदिपुव्वअवरे य ॥ १२८ ॥

किंचिदूनरज्जुव्यासः जगच्छ्रेणिदैर्घ्यं भवेत् वेधः ।

योजनषष्टिसहस्रं सप्तमक्षितिपूर्वापरे च ॥ १२८ ॥

अर्थ—लोकके पार्श्वनि विषै नीचेतैं ल्गाय एक राजूकी उचाईपर्यंत वात वलय साठि हजार योजन मोटे हैं सो तहां क्षेत्रफल कहिए है । उचाई एक राजू तामें साठि हजार योजन पहलैं अधस्तनक्षेत्रका कह्या क्षेत्रफल तामें आय गई तातैं इहां किंचित् ऊन रज्जु प्रमाण व्यास सो तौ भुज जानना । बहुरि लंबाई लोककी लंबाईके समान जगच्छ्रेणी प्रमाण सो कोटि कहिए । बहुरि मोंटापनां साठि हजार योजन सो वेध कहिए । तहां भुज और कोटिकों परस्पर गुणें जगत्प्रतरका सातवां भाग भया ताकों साठि हजार योजन करि गुणें सातवीं पृथ्वीपर्यंत पूर्व पश्चिम अपेक्षा एक पार्श्वविषै क्षेत्रफल भया ॥ १२८ ॥

एक पार्श्वका इतना क्षेत्रफल भया तौ दोऊ पार्श्वनि विषै केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि दोऊ पार्श्वनिका क्षेत्रफल ल्यावना सो कितना फल सिद्ध भया सो कहै हैं:—

जगपदरसत्तभागं सट्टिसहस्सेहि जोयणेहि गुणं ।

विगगुणिदमुभयपासे वादफलं पुव्वअवरेय ॥ १२९ ॥

जगत्प्रतरसप्तभागः षष्टिसहस्रैः योजनैः गुणः ।

द्विकगुणितः उभयपार्श्वे वातफलं पूर्वापरयोः ॥ १२९ ॥

अर्थ—जगत्प्रतरका सातवां भागकों साठि हजार योजन करि गुणिए बहुरि ताकों दुगुणा करिए ऐसैं करतैं एक लाख वीस हजार योजन गुणां जगत्प्रतरका सातवां भाग प्रमाण दोऊ पार्श्वनिविषै वातवलयका क्षेत्रफल पूर्व पश्चिम दिशाविषै हो है ॥ १२९ ॥

आगैं दक्षिण उत्तर विषै वातवलयका क्षेत्रफल ल्यावनेका विधान कहै हैं;—

उदयमुहभूमिवेहो रज्जुससत्तमछरज्जुसेढी य ।

जोयणसट्टिसहस्सं सत्तमखिदिदक्खिणुत्तरदो ॥ १३० ॥

उदयमुखभूमिवेधाः यथासंख्यं रज्जुससप्तमषड्रज्जुश्रेण्यः च ।

योजनषष्टिसहस्रं सप्तमक्षितिदक्षिणोत्तरतः ॥ १३० ॥

अर्थ—लोकके नीचे तैं ल्गाय सप्तम पृथ्वीपर्यंत उचाई एक राजू सो तौ उदय जानना याकों इहां पद कहिये । बहुरि सप्तम पृथ्वीके निकट लोककी चौड़ाईका प्रमाण छह राजू अर एक राजूका सातवां भाग ६३ सो मुख कहिए । बहुरि लोकके आदि चौड़ाईका प्रमाण जगच्छ्रेणी सो इहां भूमि कहिए । बहुरि वात वलयनिका इहां मोंटापनां साठि हजार योजन सो वेध कहिए अब इहां 'मुह भूमी जोगदले' इत्यादि सूत्र करि मुख और भूमि दाऊनिकों जोडि ताका आधा करिए जो प्रमाण आवै ताकों पद करि गुणिए पीळें जो प्रमाण होइ ताकों वेध करि गुणें एक पार्श्वविषै

क्षेत्रफल होइ योंका दूणा कीएं सप्तम पृथ्वी पर्यंत दोऊ पार्श्वनि विषै दक्षिण उत्तर थकी वातवलयका क्षेत्रफल होइ ॥ १३० ॥

आगै जो यहू फल भया ताकों कहै हैं;—

तस्स फलं जगपदरो सद्विसहस्सेहि जोयणोहि हदो ।

बाणउदिगुणो सगघणसंभजिदो उभयपासम्भिह ॥ १३१ ॥

तस्य फलं जगत्प्रतरः षष्टिसहस्रैः योजनैः हतः ।

द्वानवतिगुणः सप्तघनसंभक्तः उभयपार्श्वे ॥ १३१ ॥

अर्थ—ताका क्षेत्रफल जगत्प्रतरकों साठि हजार योजन करि गुणिए बहुरि ताकों वाणवै करि गुणिए तव पचावन लाख बीस हजार योजन गुणां जगत्प्रतर भया ताकों सातका घन तीनसै तियालीस ताका भाग दीजिए इतना क्षेत्रफल दोऊ पार्श्वनि विषै भया । इतना क्षेत्रफल कैसै भया सो कहिए हैं । मुख तौ समछेद करि जोड्या हूवा $\frac{23}{10}$ तियालीस राजूका सातवां भाग अर भूमि सात राजू सो गुणचास राजूका सातवां दोऊनिकों जोडै वाणवै राजूका सातवां भाग $\frac{13}{10}$ याकों आधा करना अर दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थ दूणा करना तव तितनाही रखा अर इहां प्रतररूप क्षेत्र है तातै जगत्प्रतरकों तीनसै तियालीसका भाग सोई एक प्रतर राजूका सातवां भाग है । बहुरि वात वलयनिकी मोटाई साठि हजार योजन करि गुणै पूर्वोक्त क्षेत्रफल आवै है ॥ १३१ ॥

आगै उपरि पश्चिम संबंधि पार्श्वनि विषै वातवलयका क्षेत्रफलकों कहै हैं;—

सेढी छरज्जु चोदसजोयणमायामवासमुस्सेहं ।

पुव्ववरपासजुगले सत्तमदो तिरियलोगोत्ति ॥ १३२ ॥

श्रेणी षट्त्रज्जुः चतुर्दशयोजनं आयामव्यासोत्सेधम् ।

पूर्वापरपार्श्वयुगले सप्तमतः तिर्यग्लोकांतं ॥ १३२ ॥

अर्थ—सप्तम पृथ्वीतै लगाय तिर्यग्लोक पर्यंत पार्श्वनि विषै वातवलयका क्षेत्रफल कहिए सो पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि लोककी लंबाईके समान लंबाईका प्रमाण जगच्छ्रेणी सो ताकों भुज कहिए । बहुरि सप्तम पृथ्वीतै तिर्यग् लोक उंचा छह राजू सो व्यास है । ताकों कोटि कहिए । बहुरि तीनों वातवलय धाटि वाधिकों समान कीएं मोटा चोदह योजन सो उत्सेध है ताकों वेध कहिए । सो इहां भुज और कोटिकों परस्पर गुणै जो प्रमाण होइ ताकों वेध करि गुणिए सातका अपवर्तन करिए तव एक पार्श्व विषै फल होइ । बहुरि दोऊ पार्श्वनिके अर्थ याकों दोय करि गुणि क्षेत्रफल ल्यावना ॥ १३२ ॥

आगै ताका सिद्ध भया क्षेत्रफल ताकों कहै हैं ।

तन्वादरुद्धखेत्तं जोयणचउवीसगुणिदजगपदरं ।

उभयदिसासंजणिदं णादव्वं गणिदकुसलोहिं ॥ १३३ ॥

तद्वातरुद्धक्षेत्रं योजनचतुर्विंशतिगुणितजगत्प्रतरम् ।

उभयदिशासंजातं ज्ञातव्यं गणितकुशलैः ॥ १३३ ॥

अर्थ—तिस वातवलयकरि रोक्क्या हूवा क्षेत्र चौवीस योजन गुणा जगत् प्रतर प्रमाण दोऊ पार्श्वरूप दिशा करि उपज्या यहू क्षेत्रफल गणितविद्याविषै कुशल प्रवीण पुरुषनि करि जाननां । इहां जगच्छेणी छह राजू जो छह गुणा जगच्छेणीका सातवां भाग ताकरि गुणें छह गुणा जगत्प्रतरका सातवां भाग भया । ७।७६।७६ याकों चौदह करि गुणि सातका अपवर्तन कीएं बारह गुणा जगत्प्रतर भया याकों दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणां कीएं पूर्वोक्त क्षेत्रफल आवै है ॥ १३३ ॥

आगै दक्षिण उत्तरके पार्श्वनि विषै वातवलयका क्षेत्रफलका प्रमाण करै हैं:—

उदयं भूमुह वेहो छरज्जु सत्तमछरज्जु रज्जुय ।

जोयण चोदस सत्तम तिरियोत्ति हु दक्खिणुत्तरदो ॥ १३४ ॥

उदयः भूमुखं वेधः षट्त्रज्जवः सप्तमषट्त्रज्जवः रज्जुश्च ।

योजनचतुर्दश सप्तमस्तिर्यगंतं हि दक्षिणोत्तरतः ॥ १३४ ॥

अर्थ—सप्तम पृथ्वीतै लगाय तिर्यग् लोक पर्यंत दक्षिण उत्तर अपेक्षा क्षेत्रफल कहिए हैं । तहां सप्तम पृथ्वीतै तिर्यग्लोक ऊंचा छह राजू सो उदय है ताकौं तौ पद कहिए । बहुरि सप्तम पृथ्वीनिकट चौडा तियालीस राजूका सातवां भाग है सो भूमि कहिए । बहुरि तिर्यग्लोकके निकट एक राजू चौडा है सो मुख कहिए । बहुरि तीनों वातवलय घाटि वाधि समान करि चौदह योजन मोठा है सो वेध कहिए सो इहां 'मुह भूमी, इत्यादि सूत्र करि मुख अर भूमिकों जोडि ताका आधा करि ताकौं पद करि गुणिए सो प्रमाण होइ ताकों वेध करि गुणिए । एक वार सात करि अपवर्तन करिए तब एक पार्श्वविषै फल याकौं दूणा कीएं दोऊ पार्श्वनि विषै होइ ॥ १३४ ॥

आगै इस सिद्धभया फलकों कहै हैं:—

तत्थाणिलखेत्तफलं उभये पासग्ग्हि होइ जगपदरं ।

छंसयजोयणगुणितं पविभत्तं सत्तवग्गेण ॥ १३५ ॥

तत्रानिलक्षेत्रफलं उभयस्मिन् पार्श्वे भवति जगत्प्रतरः ।

षट्छतयोजनगुणितः प्रविभक्तः सत्तवर्गेण ॥ १३५ ॥

अर्थ—तहां अनिल जो पवन ताका क्षेत्रफल दोऊ पार्श्वनि विषै जगत्प्रतरकों छसै योजन करि गुणिए अर सातका वर्ग गुणचास ताका भाग दीजिए इतना हो है । इहां छह राजू अर मुख भूमिकों जोडि आधा कीएं पचीस राजूका सातवां भाग इनकों परस्पर गुणें तौ प्रतर राजू भया सो जगत्प्रतरका गुणचासवां भाग प्रमाण ४९ अर पचीसका सातवां भागकों छह करि गुणें ऊचौढसैका सातवां भाग अर चौदह करि गुणें सातका अपवर्तन कीएं तीनसै अर दोऊ पार्श्वनिके अर्थि दूणां कीएं पूर्वोक्त क्षेत्रफल आवै है ॥ १३५ ॥

आगै ऊर्द्धलोक विषै पूर्व पश्चिम संबंधि ध्यारि पार्श्व तिन विषै पवनका क्षेत्रफल कहै हैं:—

आउट्टरज्जुसेढी जोयणचोदस य वासभुजवेहो ।

बग्ग्होत्ति पुच्चअवरे फलमेदं चदुगुणं सच्चं ॥ १३६ ॥

अर्धचतुर्थरज्जुश्रेणिः योजनचतुर्दश च व्यासभुजवेधः ।

ब्रह्मांतं पूर्वापरे फलमेतत् चतुर्गुणं सर्वम् ॥ १३६ ॥

अर्थ— तिर्यग् लोकतै ब्रह्मस्वर्ग पर्यंत पूर्व पश्चिमका एक पार्श्व विषै क्षेत्रफल कहिए है तिर्यग् लोकतै ब्रह्मस्वर्ग साढातीनि राजू ऊंचा है सो यहू व्यास है ताकों तौ इहां कोटि कहिए बहुरि जगच्छ्रेणी प्रमाण सर्वत्र चौडा है सो इहां भुज कहिए । बहुरि तीनों वात वलय चौदह योजन मोटा सो वेध कहिए सो 'भुजकोटि' इत्यादि सूत्र करि भुज अर कोटिकों परस्पर गुणि वेध करि गुणें एक पार्श्व विषै क्षेत्रफल सो इहां साढा तीनि राजू है सो जगच्छ्रेणीका आधा है २ याकों जगच्छ्रेणि अर चौदह करि गुणें सात गुणा जगत्प्रतर भया । बहुरि ब्रह्मस्वर्ग पर्यंत आधा ऊर्ध्वलोकके दोय पार्श्व अर ताके उपरि आधा ऊर्ध्वलोकके दोय पार्श्व ऐसैं च्यारि पार्श्व हैं तिनकी अपेक्षा पूर्वोक्त फलकों चौगुणा कीएं सर्व क्षेत्रफल होइ ॥ १३६ ॥

आगैं ऊर्ध्वलोक विषै दक्षिण उत्तर संबधि च्यारों पार्श्वनि विषै वातका क्षेत्रफलकों कहैं हैं;—

पंचाहुट्टिगिरज्जु भूतुंगमुहं विसत्तजोयणयं ।

वेहो तं चउगुणिदं खत्तफलं दक्खिणुत्तरदो ॥ १३७ ॥

पंचार्धचतुर्थैकरज्जवः भूतुंगमुखं द्विसप्तयोजनकः ।

वेधः तच्चतुर्गुणितं क्षेत्रफलं दक्षिणोत्तरतः ॥ १३७ ॥

अर्थ— ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू चौडा सो इहां भूमि कहिए । बहुरि तिर्यग् लोकतै ब्रह्मस्वर्ग साढा तीनि राजू ऊंचा सो इहां तुंग है । सो इहां पद कहिए गच्छ जानना । तिर्यग् लोक निकटि एक राजू चौडा सो इहां मुख जानना तीनों वातवलयकी मोटाई चौदह योजन सो इहां वेध जानना । सो 'मुह भूमि', इत्यादि सूत्र करि मुख अर भूमिको जोडि ताका आधाकों पद करि गुणिए सो प्रमाण होइ ताकों वेध करि गुणें एक पार्श्व विषै क्षेत्रफल होइ सो इहां मुख भूमिका जोड देइ आधा कीएं तीनि राजू सो तिगुणा जगच्छ्रेणीका सातवां भाग ७।३ याकों साढा तीन राजू सो आधा जगच्छ्रेणी ताकरि अर चौदह करि गुणें चौगुण जगत्प्रतर भया =४ याकों चौगुण कीएं दक्षिण उत्तर अपेक्षातैं सर्व ऊर्ध्व लोक विषै वातका क्षेत्रफल होइ । इहां पश्च उपजै है कि लोकका वर्णन विषै तौ पूर्वें पूर्व पश्चिम अपेक्षातैं व्यासका हीनाधिकपनां कहा था । दक्षिण उत्तर अपेक्षा सर्वत्र जगच्छ्रेणी प्रमाण समान व्यास कहा था इहां वातवलयका कथन विषै पूर्व पश्चिम अपेक्षा व्यास सर्वत्र समान कहा दक्षिण उत्तर अपेक्षा हीनाधिक व्यास कहा सो कारण कहा । ताका समाधान जैसें कोऊ मंदिर है ताकी दक्षिण वा उत्तरकी तरफ जे भीति तिनकी लंबाईका जहां प्रमाण करना होइ तहां पूर्व दिशाकी तरफ जो कूट तीहस्यौं लगाय पश्चिमकी तरफ जो भीतिकी कूट तीह पर्यंत मापिए । बहुरि पूर्व वा पश्चिमकी तरफ जे भीति तिनकी लंबाईका जहां प्रमाण करना होइ तहां भीतिकी दक्षिणकी तरफकी कूटतैं उत्तरकी कूट पर्यंत मापिए । ऐसैंही लोकका दक्षिण वा उत्तर दिशाका वातवलयका व्यास कहना भया तहां तौ लोकका पूर्व पश्चिम संबधि व्यास करि कथन कीया अर लोकके पूर्व पश्चिम दिशाका वातवलयका व्यास कहना भया तहां

लोकका दक्षिण उत्तर संबन्धी व्यास करि कथन कीया । अर लोकके पूर्व पश्चिम दिशाका वातवलयका व्यास कहनां भया तहां लोकका दक्षिण उत्तर सम्बन्धी व्यास करि कथन कीया है ॥१३७॥

आगै लोकका अग्रभाग विषै वायुका फलकों कहै हैं;—

वासुदयभुजं रज्जू इगिजोयणवीसतिसदखंडेसु ।

सतितिसदं सेढी फलमीसिपभारुवरि दंडवाऊणं ॥ १३८ ॥

व्यासोदयभुजा रज्जुः एकयोजनविंशत्रिंशत्खंडेषु ।

सत्रिंशत् श्रेणिः फलमीषत्प्रागभारोपरि दंडवायूनाम् ॥ १३८ ॥

अर्थ—पूर्व पश्चिम अपेक्षा लोकका व्यासके समान तौ इहां वातवलयका एक रज्जु प्रमाण व्यास जानना ताकों कोटि कहिए बहुरि तीनों वात वलयकी मोटाई एक योजनके तीनिसै वीस खंड करिए तिनविषै तीनिसै तीनि खंड प्रमाण सो इहां उदै जाननां । ताकों वेध कहिए । बहुरि दक्षिण उत्तर अपेक्षा लोकका व्यासके समान वातवलयकी जगच्छ्रेणी प्रमाण भुजा जाननी । इहां भुज और कोटिकों परस्पर गुणि करि ताकों वेध करि गुणें ईषत्प्रागभारनामा अष्टम पृथ्वीके उपरिका धनुषनिकी मोटाई लीए जु वायु तिनका क्षेत्रफल हो हैं इहां एक योजनके तीनिसै वीस खंडनि विषै तीनिसै तीन खंड प्रमाण तीनों वातवलयका मोटापना कहा ताका वीज कहिए हैं । घनोदधि तौ दोय कोश मोटा ताके च्यारि हजार धनुष अर घनवात एक कोश मोटा ताके दोय हजार धनुष अर तनुवात सवा च्यारिसै धनुष हीन एक कोश मोटा ताके पंद्रह सै पिचत्तरि धनुष इन सबनिको मिलाए सात हजार पांच सै पिचहत्तरि धनुष भए । अर एक योजनके आठ हजार धनुष हैं । सो इहां पचीस करि अपवर्तन कीए सात हजार पांचसै पिचहत्तरि की जायगा तीनिसै तीन भया अर आठ हजारकी जायगा तीनिसै वीस भया । ऐसै करि एक योजनके तीनिसै वीस भागनि विषै तीनिसै तीनि भाग प्रमाण लोकके उपरि तीनों वातवलयनिका मोटापनां कहा है सो इहां जगच्छ्रेणीको एक राज्जु जगच्छ्रेणीका सातवां भाग ताकरि गुणें जगत्प्रतरका सातवां भाग ताकों वेध करि गुणें ऐसा गुणें ऐसा क्षेत्रफल हो है । =३०३ बहुरि इहां लोकका अग्रभाग विषै कहा जु

७।३२०

वायुका फल ताको छोडि और सर्व वायुफल ऐसै भए । इहां जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी = जाननी ।

लोकके नीचै	सप्तम पृथ्वीपर्यंत	सप्तम पृथ्वीपर्यंत	तिर्यंगलोकपर्यंत	तिर्यंगलोकपर्यंत	ऊर्द्धलोकपर्यंत
=६००००	पूर्वपश्चिम	दक्षिण उत्तर	पूर्वपश्चिम	दक्षिण उत्तर	पूर्वपश्चिम
	=१२००००	=५५२००००	=२४	४९ ६००	=२८

३ ४३

ऊर्द्धलोकपर्यंत दक्षिण उत्तर =१२ ऐसै ए भए क्षेत्रफल तिनकों समच्छेद विधान करि मिलावनें सो इन सातनिके हारनिकों सातका घन अर सातका वर्ग अर एक अर सातका घन अर सात अर सातका घन करि क्रमतै गुणिए सर्वत्र सातका घनका भाग दीजिए ॥ भावार्थ ॥ पूर्वोक्त सातों क्षेत्रफलनि विषै जहां भागहारन था तहां सातका घन करि गुण्यां जहां सातका भागहार था तहां सातका वर्ग करि गुण्यां जहां तीनिसै तियालीसका भाग हार था तहां एक करि गुण्या जहां गुणचासका भागहार था तहां

सात करि गुण्या जातैं समछेद विधान विषै जिस गुणकार करि गुणें हारनिका समानता होइ तिस गुणकार करि अंशानिकों गुणनें सो इहां लघु करनेके आर्थ ऐसैं कीया तत्र ऐसैं भए ॥ २-५८०००० ३४३

५८८०००० ५५२०००० ८२३२ ४२०० ९६०४ ४११६ इन सवनिकों जोडिए तव तीनि ३४३ ३४३ ३४३ ३४३ ३४३ ३४३

कोडि वीस लाख छह हजार एकसो बावनकों तीनसैं तियालीसका भाग दीजिए इतने भए ३२००६१५२ बहुरि लोकका अग्रभागविषै क्षेत्रफल ऐसा = ३०३ इहां भाग हार सात अर तीनसैं ३४३ ७३२०

वीसकों गुणें वाईस सै चालीस होइ । बहुरि समच्छेद विधान करना । तातैं इस राशि विषै हार तीनसैं तीन अर अंश वाईस सै चालीस इन दोऊनिकों सातका वर्ग गुणचास ४९ करि गुणें ऐसा भया = १४८४७ अर पूर्वोक्त राशि ऐसा ३२००६१५२ याके हार अंशानिकों तीनसैं वीस करि गुणें १०९७६० ३४३

ऐसा १०२४१९६८६४० ऐसैं करते दोऊ राशिनके समान भागहार भए बहुरि इन दोऊ राशिनके १०९७६०

हानिकों मिलाए ऐसा भया = १०२४१९८३४८७ ऐसैं इतना सर्व वातवलयनि करि रोक्या हूवा क्षेत्रका १०९१६०

क्षेत्रफल हो है ॥ १३८ ॥

आगैं यह सिद्ध भया क्षेत्रफल ताकों कहैं हैं:—

सत्तासीदिचदुस्सदसहस्सतेसीदिलक्खउणवीसं ।

चउवीसहियं कोडीसहस्सगुणियं तु जगपदरं ॥ १३९ ॥

ससाशीतिचतुःशतसहस्सत्र्यशीतिलक्षैकोनविशं ।

चतुर्विंशाधिकं कोटिसहस्सगुणितं तु जगत्प्रतरम् ॥ १३९ ॥

अर्थ—चौबीस अधिक एक हजार कोडि उगणीस लाख तियालीस हजार घ्यारिसै सित्यासी करि जगत्प्रतरकों गुणिए ॥ १३९ ॥

बहुरि याका भागहार कहैं हैं:—

सट्ठीसत्तसएहि णवयसहस्सेगलक्खभजियं तु ।

सन्वं वादारुद्धं गणियं भणियं समासेण ॥ १४० ॥

षष्टिसत्तशतैः नवकसहस्रैकलक्षभक्तं तु ।

सर्वं वातारुद्धं गणितं भणितं समासेन ॥ १४० ॥

अर्थ—एक लाख बहत्तरि हजार सातसैं साठिका भाग दीजिए । इतना, सर्व वातवलय करि रोक्या हूवा क्षेत्रका गणित कह्या है जोडि करि लोकके चौगिरद वातवलय है । तिनका क्षेत्र प्रहण कीया है । अष्टपृथ्वीनिके नीचै वातवलय है तिनका क्षेत्र प्रहण न कीया है ॥ १४० ॥

आगैं लोकका अग्रभाग विषै तनुवातवलयमें विराजमान सिद्ध भगवान् तिमका जघन्य वा उत्कृष्टि अवगाहका क्षेत्रकों कहैं हैं:—

णवपण्णारसलक्खा सयाण खंडाणमेयखंडग्धि ।

सिद्धाणं तणुवादे जहण्णमुक्कस्सयं ठाणं ॥ १४१ ॥

नवपंचदशलक्षं शतानां खंडानामेकखंडे ।

सिद्धानां तनुवाते जघन्यमुत्कृष्टं स्थानम् ॥ १४१ ॥

अर्थ—तनुवातवलयका बाहुल्यका नव लाख खंड कीजिए तहां खंड विषै सिद्धनकी जघन्य अवगाहनाका प्रमाण जानना अर ताहीका पंद्रह सै खंड कीजिए तहां एक खंड विषै सिद्धनकी उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण जानना । ऐसै तनुवातवलय विषै सिद्धनका जघन्य उत्कृष्ट स्थान है ॥ १४१ ॥

आगै तिस अवगाहनाकों व्यवहाररूप करता संता कहै है:—

पणसयगुणतणुवादं इच्छिदउग्गाहणेण पविभत्तं ।

हारो तणुवादस्स य सिद्धाणोगाहणाणयणे ॥ १४२ ॥

पंचशतगुणतनुवातः इच्छितावगाहनेन प्रविभक्तः ।

हारस्तनुवातस्य च सिद्धानामवगाहनानयने ॥ १४२ ॥

अर्थ—तनुवातवलयका बाहुल्य तौ प्रमाणांगुल अपेक्षा है अर सिद्धनकी अवगाहनाका प्रमाण व्यवहारांगुल अपेक्षा है । तातै तनुवातका बाहुल्य पंद्रहसौ पिचत्तरि धनुष प्रमाण ताकों पांचसै गुणा कीएं ताके व्यवहार धनुषनिका प्रमाण सात लाख सित्यासी हजार पांचसै होइ । ७८७५०० । याकों विवक्षित जघन्यादि सिद्धनकी अवगाहनाका भाग दीएं सिद्धनकी अवगाहना ल्यावनों विषै भागहारका प्रमाण हो है । भावार्थ । सात लाख सित्यासी हजार पांचसैकों जघन्य अवगाहनाका प्रमाण सात धनुषका आठवां भाग दीएं भागहारका प्रमाण नव लाख आया सो नव लाखका भाग तनुवात वलयका बाहुल्यकों दीएं एक भाग प्रमाण सिद्धनकी जघन्य अवगाहनाका प्रमाण हो है । बहुरि सात लाख साढा सित्यासी हजारकों उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण पांचसै पचीस धनुष ताका भाग दीएं भागहारका प्रमाण पंद्रहसै आया सो पन्द्रहसैका भाग तनुवातके बाहुल्यकों दीएं एक भाग प्रमाण सिद्धनकी उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण हो है । तहां भागहारका भाग दैना ऐसै जानना जो नव लाख खंडनिका सात लाख साढा सित्यासी हजार व्यवहार धनुष होइ तौ एकखंडके कते धनुष होइ ऐसै त्रैराशिक करिए । बहुरि इहां भाज्य और भागहारकों एक लाख बारह हजार पांचसै करि अपवर्तन करिए तब भाज्य सात लाख साढा सित्यासी हजारकी जायगा तौ सात होइ अर भागहार नव लाखकी जायगा आठ होइ ऐसै सात धनुषका आठवां भाग प्रमाण जघन्य अवगाहना होइ । ऐसै ही उत्कृष्ट अवगाहना जानना । बहुरि प्यारि प्रकार अपवर्तनका विधान जानना ॥ १४२ ॥

आगै त्रसनालीका स्वरूपकों कहै है:—

लोयबहुमज्जदसे रुक्खे सारव्व रज्जुपदरज्जुदा ।

चोइसरज्जुत्तुंगा तसणाली होदि गुणणामा ॥ १४३ ॥

लोकबहुमध्यदेशे वृक्षे सार इव रज्जुप्रतरयुता ।

चतुर्दशरज्जुत्तुंगा त्रसनाली भवति गुणणामा ॥ १४३ ॥

अर्थ—लोकाकाशका बहुत मध्यके प्रदेशनि विषै त्रस नाली है । सो कैसी है, रज्जुप्रतर करि युक्त है । भावार्थ । एक राजू तो लंबी है अर एक राजू चौड़ी है । बहुरि चतुर्दश राजू उत्तंग है । भावार्थ । लोकके अधोभागतै लगाय अग्रभागपर्यंत चौदह राजू ऊंची है । कौन दृष्टान्त । वृक्षे सार इव । जैसे वृक्ष विषै छोडा इत्यादिक तो उपरि उपरि है । तिनके मध्य सार लकडी पाईए है । तैसेँ लोक विषै मध्य त्रसनाली पाईए है । बहुरि यहू त्रसनाली कैसी है । गुणनामा कहिए सार्थिक नामकी धरनहार हैं जातै वैदियादिक जे त्रस जीव ते इसही विषै पाईए है । याके वाहरै अवशेष लोक क्षेत्र विषै स्थावर जीव ही पाईए है त्रस जीव नाहीं है । उपपाद वा मारणान्तिक केवल समदघातवाले जीवनिके प्रदेशनिका त्रस नाली बाह्य भी सत्व पाईए है परन्तु तिनकी मुख्यता नाहीं । ऐसै तहां त्रस जीवनिका सद्भाव त्रस नाली विषै ही जानना बाह्य नाहीं । बहुरि इहां त्रस नालीका लंबाई चौडाई एक राजू सो तो भुज अर कोटि जानना उचाई चौदह राजू सो उत्सेध जानना बहुरि कोटिकों परस्पर गुणि ताकौ उचाई करि गुणें त्रस नालीका क्षेत्रफल घनरूप चौदह राजू प्रमाण है । भावार्थ । तीनसै तियालीस घनरूप रज्जु प्रमाण लोक है । तामें चौदह राजूमें तो त्रस नाली है । अवशेष तीनसै गुणतालीस राजू विषै त्रस नाई पाईए है इहां ऐसा आकार जानना ॥ १४३ ॥

आगै त्रस नालीका अधोभाग विषै तिष्ठता पृथ्वी भेदादिककौ कहै हैं:—

मुखदले सत्तमही उवरीदो रयणसक्करावाल् ।

पंका धूमतमोमहतमप्पहा रज्जुअंतरिया ॥ १४४ ॥

मुरजदले सप्त मध्यः उपरि रत्नशर्करा बालुः ।

पंका धूमतमोमहातमप्रभा रज्ज्वंतरिताः ॥ १४४ ॥

अर्थ—ड्योह्य मृदंगके आकारि सर्व लोक कह्या था तामें आधा मृदंगके आकारि अधो लोक कह्या था । तीह आधा मृदंगका आकार विषै सात पृथ्वी पाईए है तिनका आकार ऐसा । उपरतै लगाय रत्नप्रभा १ शर्कराप्रभा १ बालुकाप्रभा, १ पंकप्रभा १ धूमप्रभा १ तमप्रभा १ महातमप्रभा १ ऐसै तिनके नाम जानने इहां प्रभा शब्द प्रत्येक लगाइ लेना तातै रत्नप्रभा इत्यादि नाम हैं । बहुरि ए नाम सार्थिक हैं जातै इन विषै रत्न मिश्री रेत कादो धूवां अंधकार महा अंधकारके समान अनुक्रमतै प्रभा पाईए है । बहुरि ते सर्व पृथ्वी एक एक राजूके अंतर संयुक्त जाननी । भावार्थ । मध्य लोकतै लगती तो पहली रत्नप्रभा पृथ्वी है । बहुरि तातै एक राजू नीचै शर्कराप्रभा है तातै एक राजू नीचै बालुका प्रभा है ऐसैही अन्य पृथ्वीनिका एक एक राजूका अंतराल जानना ॥ १४४ ॥

आगै तिन पृथ्वीनिके अन्य नाम कहै हैं:—

घम्मा वंसा मेघा अंजनरिष्ठा य होंति अणिउज्झा ।

छट्ठी मघवी पुढवी सत्तमिया माघवी णामा ॥ १४५ ॥

घर्मा वंशा मेघा अंजनारिष्ठा च भवन्ति अनियोध्याः ।

षष्ठी मघवी पृथ्वी सप्तमिका माघवी नाम ॥ १४५ ॥

अर्थ—धर्मा १ वंशा १ मेघा १ अंजना १ अरिष्टा १ बहुरि छठी पृथ्वी मघवी १ सातमी माघवी नाम पृथ्वी ऐसै अनियोध्या कहिए अर्थरहित अनादि रूढि रूप नामकों धरै ए सप्त पृथ्वी हैं ॥ १४५ ॥

आगै तहां प्रथम पृथ्वीके भेद कहै हैं:—

रयणप्पहा तिहा खरभागा पंकापवहुलभागात्ति ।

सोलस चउरासीदी सीदी जोयणसहस्सवाहल्ला ॥ १४६ ॥

रत्नप्रभा त्रिधा खरभागा पंकापवहुलभागा इति ।

षोडश चतुरशीतिः अशीतिः योजनसहस्रवाहुल्या ॥ १४६ ॥

अर्थ—रत्नप्रभा नामा पृथ्वी तीन प्रकार है । खरभागा १ । पंकभागा १ अब्वहुलभागा १ ऐसै हैं । बहुरि सोलह चउरासी असी हजार योजन वाहुल्यरूप है । भावार्थ । रत्नप्रभा पृथ्वी एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी है तीह विषै उपरितै सोलह हजार योजन तौ खरभागा है । चौरासी हजार योजन पंकभागा है । असी हजार अब्वहुल भागा है । ऐसै एक पृथ्वीस्कंध विषै तीनि भाग जानने ॥ १४६ ॥

आगै खरभाग विषै सोलह पृथ्वी पाईए हैं तिनकी संज्ञाकों दोय गाथानि करि कहै हैं:—

चित्ता वज्जा वेलुरियलोहिदक्खा मसारगल्लवणी ।

गोमेदाय प्रवाला जोदिरसा अंजणा नवमी ॥ १४७ ॥

चित्रा वज्रा वैडूर्या लोहिताख्या मसारकल्पावनिः ।

गोमेदा च प्रवाला जीतिरसा अंजना नवमी ॥ १४७ ॥

अर्थ—चित्रा १ वज्रा १ वैडूर्या १ लोहिता १ कामसारकल्पा १ गोमेदा १ प्रवाला १ ज्योतीरसा १ अंजना १ नवमी पृथ्वी है ॥ १४७ ॥

अंजनमूलिक्य अंका फलिहा चंदण सवस्थगा वकुला ।

सेलवखाय सहस्सा एगेगा लोगचरिमगया ॥ १४८ ॥

अंजनमूलिका अंका स्फटिका चंदना सर्वर्थका वकुला ।

शैलाख्या च सहस्सा एकैका लोकचरमगता ॥ १४८ ॥

अर्थ—अंजनमूलिका १ अंका १ स्फटिका १ चंदना १ सर्वर्थका १ वकुला १ शैला १ ऐसै ए सोलह पृथ्वी हैं । एक एक पृथ्वी हजार हजार योजन प्रमाण मोटी है ॥ भावार्थ । खरभाग सोलह हजार योजन मोटा कख्या था तामे उपरि तौ हजार योजन मोटी चित्रा पृथ्वी है । ताके नीचै हजार योजन मोटी वज्रा पृथ्वी है ऐसै ही हजार हजार योजन मोटी सोलह पृथ्वी जाननी । बहुरि ते ए पृथ्वी लोकका अंतकों प्राप्त जाननी । भावार्थ । लंबाई चौडाई इन पृथ्वीनिकी लोकके समान जाननी सो इस खरभाग विषै अर पंक भाग विषै तौ भवनवासी व्यंतर देवनिका वास है सो वर्णन आगै होइगा । बहुरि अब्वहुल भाग विषै प्रथम नरकके विल पाईए है । बहुरि ऐसै भाग कीएं तिनके बीच कोई छेकडि नाहीं है । जैसे एक पर्वत विषै कोई अपेक्षा भाग करिए तैसे इहां भाग कीए हैं ॥ १४८ ॥

आगँ द्वितीयादि पृथ्वीनिका बाहुल्य कहँ हैं:—

बत्तीसमद्वीसं चउवीसं वीस सोलसद्व्याणि ।

हेट्टिमल्लपुढवीणं सहस्समाणेहिं वाहुलियं ॥ १४९ ॥

द्वात्रिंशदष्टाविंशतिः चतुर्विंशतिः विंशति षोडशाष्टौ ।

अधस्तनपट्पृथ्वीनां सहस्समानैः बाहुल्यं ॥ १४९ ॥

अर्थ—बत्तीस हजार अठाईस हजार चौवीस हजार वीस हजार सोलह हजार आठ हजार योजन प्रमाण द्वितीयादिक नीचली छह पृथ्वीनिका बाहुल्य कहिए मोटापना सो क्रमते जानना ॥ १४९ ॥

आगँ तिन पृथ्वीनि विषै तिष्ठते जु पटल तिनके स्थान कहँ हैं:—

सत्तमखिदबहुमज्जे विलाणि सेसासु आपबहुलात्त ।

हेट्टुवरिं च सहस्सं वज्जिय पडलक्कमे होति ॥ १५० ॥

सत्तमक्षितिबहुमध्ये विलानि शेषासु अब्बहुलांतं ।

अध उपरि च सहस्सं वर्जायित्वा पटलक्रमेण भवंति ॥ १५० ॥

अर्थ—सातमी पृथ्वीका तौ बहु मध्य भाग विषै बिल हैं । बहुरि अवशेष पृथ्वीनि विषै अब्बहुल भाग पर्यंत नीचे वा उपरि हजार हजार योजन छोडि पटलनिका अनुक्रम करि बिल पाईए है ।

भावार्थ—सातमी पृथ्वी आठ हजार योजन मोटी है तामें नीचे वा उपरि बहुत मोटाई छोडि वीचि विषै बिल पाईए है । बहुरि अन्य पृथ्वी वा प्रथम पृथ्वीका अब्बहुल भाग तिनकी मोटाई विषै नीचे वा उपरि हजार हजार योजनको छोडि वीचि विषै जेते जेते पटल पाईए तिन विषै अनुक्रम करि बिल पाईए है ॥ १५० ॥

आगँ प्रथमादि पृथ्वीनि विषै बिलनिकी संख्या कहँ हैं:—

तीसं पणुवीसं पण्णरसं दस तिण्णि पंचहीणेकं ।

लक्खं सुद्धं पंच य पुढवीसु कमेण णिरयाणि ॥ १५१ ॥

त्रिंशत् पंचविंशतिः पंचदश दश त्रीणि पंचहीनैकं ।

लक्षं शुद्धं पंच च पृथ्वीषु क्रमेण निरयाणि ॥ १५१ ॥

अर्थ—तीस लाख पचास लाख पंद्रह लाख दश लाख तीनि लाख पांच घाटि एक लाख ऐसैं एतौ लक्ष विशेषणसहित बिल हैं । अर सातमी पृथ्वी विषै शुद्ध कहिए लक्ष विशेषणरहित पांच ही बिल हैं । ऐसैं प्रथमादि पृथ्वीनि विषै अनुक्रम करि निरय कहिए बिल पाईए है ॥ १५१ ॥

आगँ तिन विषै अति शीत अति उष्णका विभाग कहँ हैं:—

रयणप्पहपुढवीदो पंचमत्तिचउत्थओत्ति अतिउण्हं ।

पंचमत्तुरिणं छट्ठे सत्तमिणं होदि अदिसीदं ॥ १५२ ॥

रत्नप्रभापृथ्वीतः पंचमत्रिचतुर्थातं अत्युष्णम् ।

पंचमतुरीये पष्ठ्यां सप्तम्यां भवति अतिशीतम् ॥ १५२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभा पृथ्वीतैं लगाय पंचम पृथ्वीके तीनि चौथा भाग पर्यंत तौ अति उष्ण है । पंचम पृथ्वीका चौथा भाग अर छठी सातवीं पृथ्वी विषैं अति शीत हैं । भावार्थ— पहली दूसरी तीसरी चौथाके तौ सर्व विल अर पांचमी पृथ्वीके विलनिका च्यारि भाग करिए तहां तीन भाग प्रमाण विल ए तौ अति उष्ण पाईए है । इन विषैं अग्न्यादिक तैं भी बहुत अधिक उष्णता जाननी । बहुरि पांचई पृथ्वीका चौथाई विल अर छठी सातवीं पृथ्वीके सर्व विल अति शीत पाईए है । इन विषैं हिमादिक तैं भी बहुत अधिक शीतता जाननी । जैसी इहां उच्छ्रुत शीतता पाईए है ताकी उपमादैंनें कोई पदार्थ नाही । तहां शीतता वा उष्णताकी महा वेदना है ॥ १५२ ॥

आगैं तिन विलानि विषैं इन्द्रक श्रेणीबद्ध विलनिकी संख्या कहैं हैं । सो इन्द्रकादिकनिका स्वरूप जाननेको किल्लु इस भाषा टीका विषैं वर्णन करिए है । सो प्रथम दृष्टान्त कहिए है । इहां पृथ्वी विषैं केते इक खणका भूमिग्रह बनाईए । बहुरि एक एक खण विषैं ऐसैं कोठे बनाईए एक तौ कोठा वीचिमें करिए बहुरि ताकी च्यारि दिशा अर च्यारि विदिशानि विषैं पंक्तिबंध केते इक कोठे करिए । बहुरि दिशा विदिशानिके वीचि केते इक कोठे करिए बहुरि जे ए कोठे काए तिन विषैं आवने जानेको द्वारादिक न राखिए । ऐसैं जो भूमि गृह वनैं ताका दृष्टान्त नरक रचना विषैं जाननां । तहां दृष्टान्त विषैं जैसैं खण कहे तैसैं इहां नरकरचना विषैं उपरि नीचैं पटल जानने पटलनिका ही नाम प्रस्तार जानना । बहुरि तहां जैसैं खण खण विषैं कोठे कोटडी कहे तैसैं इहां पटल पटल विषैं विल जानने । बहुरि तहां जैसैं वीचिका कोठाके दिशा विदिशा विषैं पंक्तिबंध कोठे कहे । तैसैं इहां इन्द्रक विलके च्यारि दिशा वा च्यारि विदिशानि विषैं पंक्तिबंध विल जानने सो इनका नाम श्रेणीबद्ध विल है । बहुरि तहां जैसैं दिशा विदिशानिकी वीचि कोठे कहे तैसैं इहां श्रेणीबद्धनिकी वीचि अंतर दिशानि विषैं विल जानने इनका नाम प्रकीर्णक विल है । बहुरि तहां दृष्टान्त विषैं भूमिगृह इस वास तैं कह्या है जो जैसैं भूमिगृह पृथ्वी विषैं हो हैं । तैसैं नरक रचना भी पृथ्वी विषैं जाननी । जैसैं पृथ्वी उपरि आकाश विषैं मंदिर हो हैं तैसैं नरक रचना नाही है । बहुरि तहां दृष्टान्त विषैं द्वारादिकका अभाव इस वास्तैं कह्या है जो लोक विषैं भूमिगृह बनावैं हैं ताके आवने जानेको द्वार सीढी इत्यादि राखैं हैं । सो रचना विषैं तिन विलनिके द्वारादिक नाही हैं । ऐसैं दृष्टान्त करि नरक रचनका स्वरूप जानना । इहां एक पटल विषैं ऐसैं इंद्रादिक विल जानने । बहुरि ऐसी रचना त्रस नाली विषैं ही है । अवशेष त्रस नाली वाहरैं जो पृथ्वी है तहां नाही है ऐसा जानना ॥ तहां प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं इंद्रक श्रेणीबद्ध केते केते पाईए सो कहैं हैं;—

तेरादि दुहीणिदयसेढीबद्धा दिसासु विदिसासु ।

उणवण्णजदालादी एकैकेणूणया कमसो ॥ १५३ ॥

त्रयोदशत्या द्विहीना इंद्रकाः श्रेणीबद्धा दिशासु विदिशासु ।

एकोनपंचाशदष्टचत्वारिंशादि एकैकेन न्यूनाः क्रमशः ॥ १५३ ॥

अर्थ—तेरहको आदि दै करि दोय दोय घाटि इंद्रक विल जानने । भावार्थ ॥ प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं तेरह ग्यारह नव सात पांच तीनि एक इंद्रक जानने । जातैं एक पटल प्रति एक एक

इंद्रक है सो पटल भी इतने पाईए है । बहुरि श्रेणीबद्ध विल दिशा अर विदिशानि विषै गुणचास अर अठतालीसकों आदि दै करि पटल पटल प्रति एक एक घटता क्रमतै जानना । भावार्थ । प्रथमादि पृथ्वीनिके तेरह ग्यारह नव सात पांच तीन एक पटल मिलाए हूए गुणचास पटल हैं तहां प्रथम पृथ्वीका पहला पटल तामें एक एक दिशानि विषै तौ गुणचास गुणचास श्रेणीबद्ध हैं । अर एक एक विदिशानि विषै अठतालीस अठतालीस श्रेणीबद्ध हैं । बहुरि द्वितीयादि पटल तैं सप्तम पृथ्वीका पटल पर्यंत एक एक दिशा अर विदिशानि विषै एक एक श्रेणीबद्ध घटता घटता जानना । ऐसैं करि अंतका गुणचासवां पटल विषै दिशानि विषै एक एक श्रेणीबद्ध पाईए है । विदिशानि विषै श्रेणीबद्धका अभाव है ॥ १५३ ॥

आगैं तिन पृथ्वीनि विषै कहे जु इंद्रक तिनके नाम छह गाथानि करि कहे हैं;—

सीमंतणिरयरौरव भंतुभंतिदया य संभतो ।

तत्तोवि असंभतो वीभंतो णवमओ तत्थो ॥ १५४ ॥

सीमंतनिरयरौरवभ्रांतोद्भ्रांतिद्रकाः च संभ्रांतः ।

ततोपि असंभ्रांतः विभ्रांतः नवमः त्रस्तः ॥ १५४ ॥

अर्थ—सीमंत १ निरय १ रौरव १ भ्रांत १ उद्भ्रांतनामा इंद्रक १ संभ्रांत १ तहां पीछे असंभ्रांत १ विभ्रांत १ नवमा इंद्रक त्रस्त १ ॥ १५४ ॥

तसिदो वक्तवखो होदि अवक्तणाम विक्ततो ।

पढमे तदगो थणगो वणगो मणगो खडा खडिगा ॥ १५५ ॥

त्रसितो वक्रांताख्यः भवति अवक्रांतनाम विक्रांतः ।

प्रथमायां ततकः स्तनकः वनकः मनकः खडा खडिका ॥ १५५ ॥

अर्थ—त्रसित १ वक्रांतनामा इंद्रक १ विक्रांत १ ऐसैं प्रथम पृथ्वी विषै तेरह इंद्रक जानने । बहुरि ततक १ स्तनक १ वनक १ मनक १ खडा १ खडिका १ ॥ १५५ ॥

जिब्भा जिब्भगसण्णा तो लोलिग लोलवत्थ थणलोलो ।

बिदिए तत्तो तविदो तवणो तावणणिदाहा य ॥ १५६ ॥

जिह्वा जिह्विकसंज्ञा ततो लौकिकलोलवत्सस्तनलोलाः ।

द्वितीयायां तप्तः तपितः तपनः तापननिदाघौ च ॥ १५६ ॥

अर्थ—जिह्वा १ जिह्विकनाम १ तहां पीछे लौकिक १ लोलवत्स १ स्तनलोला १ ऐसैं द्वितीय पृथ्वी विषै ग्यारह इंद्रक जानने । बहुरि तप्त १ तपित १ तापन १ निदाघ १ ॥ १५६ ॥

उज्जलिदो पज्जलिदो संजलिदो संपजलिदणामा य ।

तादिए आरा मारा तारा चच्चा य तमगी य ॥ १५७ ॥

उज्वलितः प्रज्वलितः संज्वलितः संप्रज्वलितनामा च ।

तृतीयायां आरा मारा तारा चर्चा च तमर्का च ॥ १५७ ॥

अर्थ—उज्वलित १ प्रज्वलित १ संज्वलितनाम १ ऐसैं तीसरी पृथ्वी विषैं नव इंद्रक हैं ।
बहुरि आरा १ मारा १ तारा १ चर्चा १ तमकी ॥ १५७ ॥

घाडा घडा चउत्थे तमगा भमगा य झसग अर्द्धिदा ।

तिमिसा य पंचमे हिमबदलललगितयं छट्टे ॥ १५८ ॥

घटा घटा चतुर्थ्यां तमका भ्रमका च झपगा अर्धेद्राः ।

तिमिश्रा च पंचम्यां हिमवार्दलिल्लुकित्रयं षष्ठ्याम् ॥ १५८ ॥

अर्थ—घाटा १ घटा १ ऐसैं चौथी पृथ्वी विषैं सात इंद्रक हैं । बहुरि तमका १ भ्रमका
१ झषका १ अर्धेद्रा १ तिमिश्रका १ ऐसैं पंचम पृथ्वी विषैं पांच इंद्रक हैं । हिम १ वार्दलि १
ल्लुकि ऐसैं छठी पृथ्वी विषैं तीन इंद्रक हैं ॥ १५८ ॥

ओहिट्टाणं चरिमे तो सीमंतादिसोद्विबिलणामा ।

पुन्वादिदिसे कंखा पिपास महकंख अइपिवासा य ॥ १५९ ॥

अप्रतिस्थानं चरमे ततः सीमंतादिश्रेणिबिलनामानि ।

पूर्वादिदिशायां कांक्षा पिपासा महाकांक्षा अतिपिपासा च ॥ १५९ ॥

अर्थ—अवधिस्थान १ वा दूसरा नाम अप्रतिष्ठित स्थान सो अंतकी सातवीं पृथ्वी विषैं
एक इंद्रक है । ऐसैं क्रमतैं इंद्रक विलनिके नाम कहे । अथ जो आगैं अर्थ कहिए ताकी पातनि-
काकों गर्भित करि तीन गाथा कहैं हैं । सो तहां पीछैं अव सीमंतादिक इंद्रक संबंधी पूर्वादि दिशानि-
विषैं जे श्रेणीबद्ध हैं तिनके नाम कहिए हैं । भावार्थ—प्रथमादि पृथ्वीका पहला पहला जो इंद्रक
ताके समीप वर्ती जे पूर्वादि दिशानि विषैं च्यारि च्यारि श्रेणीबद्ध हैं तिनके नाम कहिए हैं । इन
अठार्हस विना और श्रेणी बद्ध वा प्रकीर्णक विलनिके नामका वर्णन इस शास्त्र विषैं नाहीं हैं तहां
घर्मा पृथ्वीका सीमंत इंद्रककी पूर्वादि दिशानि विषैं कांक्षा १ पिपासा १ महाकांक्षा १ महापिपासा
१ ए च्यारि है ॥ १५९ ॥

वंसातदगे अणिच्छा अविज्ज महणिच्छ महअविज्जा य ।

तत्ते दुक्खा वेदा महदुक्ख महादिवेदा य ॥ १६० ॥

वंशाततके अनिच्छा अविद्या महानिच्छा महाऽविद्या च ।

तत्ते दुःखा वेदा महादुःखा महादिवेदा च ॥ १६० ॥

अर्थ—वंशाका तत इंद्रक विषैं अनिच्छा १ अविद्या १ महानिच्छा १ महाविद्या १ ए
च्यारि हैं । बहुरि मेघाका तत इंद्रक विषैं दुःखा १ वेदा १ महादुःखा १ महावेदा १ ए
च्यारि हैं ॥ १६० ॥

आराए दु णिसट्ठा णिरोह अणिसिद्ध महणिरोहा य ।

तमग णिरुद्धविमदण अइपुण्वणिरुद्ध महविमदणया ॥ १६१ ॥

आरे तु निसृष्टा निरोधा अनिसृष्टा महानिरोधा च ।

तमके निरुद्धनिमर्दनअतिपूर्वनिरुद्धमहाविमर्दनाः ॥ १६१ ॥

अर्थ—बहुरि अंजनाका आर इंद्रक विषै निस्पृष्टा १ निरोधा १ अनिस्पृष्टा १ महानिरोधा १ ए च्यारि हैं । बहुरि अरिष्टाका तमक इंद्रक विषै निरुद्ध १ विमर्दन १ अनिरुद्ध १ महाविमर्दनक १ ए च्यारि हैं ॥ १६१ ॥

हिमगा णीला पंका महणील महादिपंक सत्तमए ।

पहमो कालो रउरवमहकालमहादिरउरवया ॥ १६२ ॥

हिमके नीला पंका महानीला महादिपंका सत्तमायाम् ।

प्रथमः कालः रौरवमहाकालमहादिरौरवाः ॥ १६२ ॥

अर्थ—मघर्वाका हिमक इंद्रक विषै नीला १ पंका १ महानीला १ महापंका १ ए च्यारि हैं । बहुरि सातमी पृथ्वी विषै पहला श्रेणीबद्ध काल १ बहुरि रौरव १ महाकाल १ महारौरवक १ ए च्यारि हैं । ऐसै इनके नाम जानने ॥ १६२ ॥

आगै पृथ्वी पृथ्वी प्रति प्रथम पटल संबंधी श्रेणीबद्ध विलनिका प्रमाणरूप जो धन ताहि धरि करि अंतके पटलका धन ल्यावनेकों अर अंतके पटलका धनकों धरि प्रथम पटलके धन ल्यावनेकों करण सूत्र कहै हैं;—

वेगपदं चयगुणितं भूमिस्त्रि मुहम्मि रिणधनं च कए ।

मुहभूमीजोगदले पदगुणिते पदधनं होदि ॥ १६३ ॥

व्येकपदं चयगुणितं भूमौ मुखे ऋणं धनं च कृते ।

मुखभूमियोगदले पदगुणिते पदधनं भवति ॥ १६३ ॥

अर्थ—जे ते स्थान होहिं तिनकों पद कहिए वा गच्छ कहिए । बहुरि स्थान स्थान प्रति जे ते वधते जाहिं वा घटते जाहिं तिनकों चय कहिए । बहुरि आदिस्थान वा अंतस्थान विषै जो हीन प्रमाण होइ ताकों मुख कहिए अधिक प्रमाण होइ सो भूमि कहिए सो इहां एक घाटि जो पद ताकों चयकरि गुणें जो प्रमाण होइ तितना भूमि विषै ऋण कीएं घटाएं मुख होइ । अथवा मुख विषै धनकीएं जोडें भूमि होइ बहुरि मुख और भूमि इन दोऊनिका योग कहिए जोड ताकों दले कहिए आधाकीएं बहुरि ताकों पदगुणिते कहिए पदकरि गुणें पदधनं कहिए सर्व स्थानकनिका जोडरूप प्रमाण हो है । ऐसै जहां आदिस्थान विषै किलू प्रमाण होइ अर पीछै स्थान प्रति बरोबरि घटते जाहिं वा वधते जाहिं तहां इस सूत्रकी प्रवृत्ति जाननी । ताका इहां उदाहरण, प्रथम पृथ्वीविषै प्रथम पटल तहां दिशा विषै गुणचास अर विदिशा विषै अठतालीस श्रेणीबद्ध हैं तिनकों मिलाएं सित्याणवै भए । बहुरि दिशा वा विदिशाका प्रमाण च्यारि हैं तातैं इनकों चौगुणा कीएं प्रथम पटल विषै सर्व श्रेणीबद्धनिका प्रमाण तीनीसै अठ्यासी भया सो तो इहां भूमि कहिए । बहुरि अंतका तेरेहां पटल विषै दिशा विषै सैतीस विदिशा विषै छतीस श्रेणीबद्ध हैं जोडें तिहत्तरि भए चौगुणा कीएं दोयसै वाणवै अंत पटल विषै श्रेणीबद्ध भए सो इहां मुख कहिए । बहुरि इहां पटल तेरह हैं तातैं पदका प्रमाण तेरह तामें एक घटाएं वारह । बहुरि इहां पटल पटल आठ श्रेणीबद्ध घटे हैं तातैं चय आठ तीह काणि छिनवै होइ सौ भूमि तीनसौ अठ्यासीमें छिनवका ऋण कहिए घटाएं मुख दोयसै

वाणवै होइ । अथवा मुख दोयसँ वाणवैमें छिनवैकर धनकीए जोडें भूमि तीनिसँ अठ्यासी होइ । बहुरि मुखतौ दोयसँ वाणवै अर भूमि तीनिसँ अठ्यासी इनको जोडें छसँ असी याका आधा तीनसँ चालीस इनको पद तेरह करि गुणें च्यारि हजार च्यारिसँ बीस सर्व प्रथम पृथ्वी विषै तेरह पटल संबंधी श्रेणीवद्धनिका प्रमाण हो है । बहुरि इंद्रक सहित श्रेणीवद्धनिका प्रमाण भी ऐसै ही ल्यावनां । मुख और भूमि विषै एक एक और वधावना तव मुख दोयसँ तरेणवै भूमि तीनिसँ निवासी पूर्वोक्त प्रकार कीए प्रथम पृथ्वीविषै इंद्रक सहित श्रेणीवद्ध च्यारि हजार च्यारिसँ तेतीस होहिं ४४३३ बहुरि ऐसैही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषै भी प्रमाण ल्यावना । बहुरि समस्त पृथ्वीनिके श्रेणीवद्धका प्रमाण ऐसै ही ल्यावना इहां मुख तौ सप्तम पृथ्वी विषै श्रेणीवद्ध च्यारि भूमि प्रथम पटल विषै श्रेणी वद्ध तीनसँ अठ्यासी पद सर्व पटल गुणचास चय आठ जाननां । इहां समस्त पृथ्वीनिके इंद्रक सहित श्रेणीवद्धका प्रमाण भी ऐसै ही ल्यावना । इहां मुख पांच भूमि तीनिसँ निवासी पद गुणचास चय आठ जानना ॥ १६३ ॥

आगै इंद्रक श्रेणीवद्धका प्रमाण ल्यावनेको संकलनरूप अन्य करण सूत्र कहै है:—

पदभेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं ।

पभवजुदं पदगुणिदं पदगणिदं तं विजाणाहि ॥ १६४ ॥

पदमेकेन विहानं द्विभक्तं उत्तरेण संगुणितं ।

प्रभवयुतं पदगुणितं पदगणितं तत् विजानीहि ॥ १६४ ॥

अर्थ—पदको एक घाटि करिए ताको दोयका भाग दीजिए बहुरि उत्तर जो चय ताकरि गुणिए । बहुरि प्रभव जो मुख ताकरि युक्त करिए जोडिए बहुरि पदकरि गुणिए ऐसै कीए जो प्रमाण होइ ताको पद गणित कहिए जहां आदिस्थान विषै किछू प्रमाण होई अर स्थान स्थान प्रति वरोवरि घटै वा वधै तहां सर्व स्थाननिका जोड विजानीहि कहिए तू जानि । सो इहां प्रथम पृथ्वी विषै पद तेरह तामें एक घटाए वारह दोयका भागदिएं छह उत्तर आठकरि गुणें अठतालीस प्रभव जो मुख दोयसँ वाणवै तीहकरि जोडें तीनसँ चालीस ताको पद तेरह करि गुणें सर्व श्रेणीवद्ध च्यारि हजार च्यारिसँ बीस भए । ऐसै ही द्वितीयादि सर्व पृथ्वी विषै प्रमाण ल्यावनां ॥ १६४ ॥

आगै अन्य प्रकार करि संकलन ल्यावनेका विधान कहै है:—

पुढविंदयमेगुणं अद्धकयं वगिगयं च मूलजुदं ।

अट्टगुणं चउसहियं पुढविंदयताडियं च पुढविधणं ॥ १६५ ॥

पृथ्वीद्रकमेकोनं अर्धकृतं वगितं च मूलयुतम् ।

अष्टगुणं चतुःसहितं पृथ्वीद्रकताडितं च पृथ्वधनम् ॥ १६५ ॥

अर्थ—विवाक्षित पृथ्वी विषै जो इंद्रकका प्रमाण होई तामें एक घटाईए बहुरि ताको आधा करिए बहुरि ताका बर्ग करिए बहुरि तामें च्यारि और मिलाईए बहुरि ताको पृथ्वीके इंद्रकका प्रमाण करि ताडिए गुणिए ऐसै करतैं विवक्षित पृथ्वी विषै श्रेणीवद्धनिका प्रमाणरूप धन होहै । तहां प्रथम पृथ्वी विषै इंद्रकका प्रमाण तेरह तामें एक घटाए वारह ताका बर्ग बर्तीस तामें ताका वर्ग-

मूल छह मिलार वियालीस इनकों आठगुणा कीं तीनिसे छत्तीस इनमें च्यारि मिलार तीनिसे चालीस इनकों इंद्रकका प्रमाण तेरह करि गुणें च्यारि हजार च्यारिसै वांस प्रथम पृथ्वी विषै सर्व श्रेणीवद्धनिका प्रमाण हो है । ऐसै ही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैमी प्रमाणल्यावनां । अव इहां ऐसा सूत्र कैसै कहा सो जाननेकों याकी वासनाका स्वरूप संस्कृत टीकार्तें जाननां । या प्रकार प्रथमादि पृथ्वीनि विषै चौवालीससै वीस, छवीससै चौरासी, चौदासै छहत्तरि, सातसै, दोयसै साठि, साठि, च्यारि । ४४२०।२६८४।१४७६।७००।२६०।६०।४। श्रेणीवद्ध जाननें । सर्व मिलारं नव हजार छसै च्यारि श्रेणीवद्ध हो हैं । इंद्रक तेरह ग्यारह नव सात पांच तीन एक जानने । मिलारंतें सर्वइंद्रक गुणचास होहैं इन दोऊनिकों मिलारं इंद्रक सहित श्रेणीवद्धनिका प्रमाण हो है ॥ १६५ ॥

आगै प्रकीर्णकनिकी संख्या ल्यावनेकों कहै हैं;—

सेढीणं विञ्चाले पुष्पपङ्णय इव द्विया णिरया ।

होति पङ्णयणामा सेढिदयहीणरासिसमा ॥ १६६ ॥

श्रेणीनां अंतराले पुष्पप्रकीर्णकानि इव स्थितानि निरयाणि ।

भवति प्रकीर्णकनामानि श्रेणीद्रकहीनराशिसमानि ॥ १६६ ॥

अर्थ—जैसै पुष्पप्रकीर्णक कहिए पुष्पांजलि करि फूल बखेरे हूए पृथ्वीविषै तें फूल पंक्ति रहित जहां तहां पाईए तैसै श्रेणीवद्धनिकै वीचि दिशा विदिशानका अंतराल विषै पंक्ति रहित जहां जहां जे विल पाईए ते प्रकीर्णक नाम विल हो हैं ते श्रेणीवद्ध और इंद्रककी संख्या रहत राशि जो सर्व विलनिकी संख्या तीह समान जानने । तहां प्रथम पृथ्वीविषै च्यारि हजार च्यारिसै श्रेणीवद्ध अर इंद्रक तेरह इन दोऊनिकों सशि तीस लाख तामें घटाएं गुणतीस लाख पिच्याणवे हजार पांचसै सतसठि रहे सो इतनें प्रथम पृथ्वी विषै प्रकीर्णक विल जानने । ऐसै ही द्वितीयादि पृथ्वीनिविषै जानना ॥ १६६ ॥

आगै नरक विलनिका विस्तार कहनेके आर्थ कहै हैं;—

पंचमभागपमाणा णिरयाणं होति संखवित्थारा ।

सेसचउपंचभागा असंखवित्थारया णिरया ॥ १६७ ॥

पंचमभागप्रमाणा निरयाणां भवति संख्यविस्ताराः ।

शेषचतुःपंचभागा असंख्यविस्ताराणि नरकाणि ॥ १६७ ॥

अर्थ—पृथ्वीनि विषै जो पूर्वे विलनिका प्रमाण कहा तिन विषै पांचवां भाग प्रमाण विल तौ संख्यात योजन विस्तार करि संयुक्त हैं । अर अवशेष च्यारि पांचवां भाग प्रमाण असंख्यात योजन विस्तार करि संयुक्त हैं । तहां इंद्रक तो सर्व ही संख्यात योजन विस्तारयुक्त जानने । अर श्रेणीवद्ध सर्व असंख्यात योजन विस्तारयुक्त जानने । अवशेष संख्यात वा असंख्यात विस्तारयुक्त प्रकीर्णक जानने । तहां प्रथम पृथ्वीविषै विल तीस लाख तिनकों पांचका भाग दीएं एक भाग प्रमाण छह लाख विल तौ संख्यात योजन विस्तार युक्त हैं । अवशेष च्यारि भाग प्रमाण चौईस लाख विल असंख्यात योजन विस्तारयुक्त जानने । तहां संख्यात योजन विस्तारयुक्त छह

लाख विलनि विपै तेरह तौ इंद्रक अर अवशेष पांच लाख निन्यानवै हजार नौसै सित्यासी प्रकीर्णक जानने । बहुरि असंख्यात योजनं विस्तारयुक्त चौईस लाख विलनिविपै च्यारि हजार च्यारिसै वीस तौ श्रेणीबद्ध अर अवशेष तेईस लाख पिच्याणवै हजार पांचसै असी प्रकीर्णक जानने । ऐसै ही द्वितीयादि पृथ्वीनिविपै भी जाननां । वा सर्व पृथ्वीनिके सर्व विलनिविपै भी ऐसै ही प्रमाण ल्यावनां ॥ १६७ ॥

आगै संख्यात असंख्यात विस्तारविपै नियम दिखावता कहै हैं;—

इंद्रयसेढीबद्धापइण्णयाणं कमेण वित्थारा ।

संखेज्जमसंखेज्जं उभयं च य जोयणाण हवे ॥ १६८ ॥

इंद्रकश्रेणीबद्धप्रकीर्णकानां क्रमेण विस्ताराः ।

संख्येयमसंख्येयमुभयं च योजनानां भवेत् ॥ १६८ ॥

अर्थ—इंद्रक अर श्रेणीबद्ध अर प्रकीर्णक इनका विस्तार अनुक्रमतै संख्यात योजन अर असंख्यात योजन अर उभय कहिए संख्यात वा असंख्यात योजनका है ॥ १६८ ॥

आगै इंद्रकनिके विस्तारका विशेष कहै हैं;—

माणुसखेत्तपमाणं पढमं चरिमं तु जंबुदीवसमं ।

उभयविसेसे रूज्जण्णिदयभजिदस्सि हाणिचयं ॥ १६९ ॥

मानुषक्षेत्रप्रमाणं प्रथमं चरणं तु जंबूद्वीपसमम् ।

उभयविशेषे रूपोनेंद्रकभक्ते हानिचयं ॥ १६९ ॥

अर्थ—प्रथम इंद्रक मनुष्य क्षेत्र प्रमाण है । अंत इंद्रक जंबूद्वीप समान है । दोऊनिका सोधन कीएं एक घाटि इंद्रकका भाग दीएं हानि चय हो है । सो पहला पटल संबंधी पहला इंद्रक तौ पैतालीस लाख योजन चौडा है । अर गुणचासवां पटल संबंधी अंतका इंद्रक एकलाख चौडा है । इनकर सोधन कीएं पैतालीस लाखमेंस्यो एक लाख घटाएं अवशेष चवालीस लाख रहे तिनको एक घाटि इंद्रकनिका प्रमाण अठतालीस ताका भाग दीएं इक्याणवै हजार छसै छयासठि योजन अर बत्तीस योजन अठतालीसवां भाग आया तहां बत्तीसका अठतालीसवां भागका सोलह करि अपवर्तन कीएं बत्तीसकी जायगा दोय अर अठतालीसकी जायगा तीन भया ऐसै करि इक्याणवै हजार छसै छयासठि योजन अर दोय योजनका तीसरा भाग प्रमाण हानि चय आया इहां इंद्रक इंद्रक प्रति घटनेका जो प्रमाण ताका नाम हानि चय जानना सो पैतालीस लाख योजनमेंस्यो हानि चय घटाएं चवालीस लाख आठ हजार तीनसै तेतीस योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण द्वितीय इंद्रकका विस्तार है । ऐसैही उपरिके इंद्रकका विस्तारका जो प्रमाण तामें पूर्वोक्त हानि चय घटाएं निचले इंद्रकका प्रमाण अंत इंद्रक पर्यंत जानना ॥ १६९ ॥

आगै इंद्रकादिक तीन जातिके विल तिनका बाहुल्यका प्रमाण कहै हैं;—

छकट्टचोइसादिसु पडिपुढविमुखद्धसहिकोसेसु ।

छहिं भजिदेसु बहल्लं इंद्रयसेढीपइण्णयाणं ॥ १७० ॥

पद्माष्टचतुर्दशादिषु प्रतिपृथ्वीमुखार्धसहितक्रोशेषु ।

पट्टभिः भक्तेषु इंद्रकश्रेणीप्रकीर्णानाम् ॥ १७० ॥

अर्थ—छह आठ चौदाने आदि दै करि पृथ्वी प्रति मुखका अर्द्ध प्रमाण संयुक्त जे कोई तिनकों छहका भाग दीएं इंद्रक श्रेणीवद्म प्रकीर्णकनिका बाहुल्य हो है । इहां विलनिकी भूमिस्यों लगाय छति पर्यंत उचाईका प्रमाण ताका नाम बाहुल्य जाननां । सो प्रथम पृथ्वी विषै छह कोशकों छहका भाग दीएं एक कोश भया सो इंद्रकनिका बाहुल्य जानना । बहुरि आठकों छहका भाग दीएं च्यारि कोशका तीसरा भाग सो श्रेणी वद्मनिका बाहुल्य जाननां । बहुरि चांदहकों छहका भाग दीएं सातकोशका तीसरा भाग भया सो प्रकीर्णकनिका बाहुल्य जाननां । [१][३][३] । ऐसै प्रथम पृथ्वी विषै इंद्रकादिकका बाहुल्य कह्या ताका नाम इहां मुख जाननां । ताका आधा कीएं जो प्रमाण होइ तितनां तितनां उपरकी पृथ्वीके इंद्रकादिकनिका बाहुल्य विषै जोडें नीचली पृथ्वीके इंद्रकादिकका बाहुल्य हो है । सो इंद्रकनिविषै तीनका छटा भाग श्रेणीवद्मनिविषै च्यारिका छटा भगा प्रकीर्णकनि विषै सातका छटा भाग पृथ्वी पृथ्वी प्रति जोडना सो प्रथम पृथ्वी विषै छह आठ चौदह तिनमें तीन च्यारि सात अर छह आठ चांदह अर नव वारा इकईस अर वारा सोलह अठाईस अर पंद्रह वीस पैतीस अर अठारह चौंसि शून्य इतने अनुक्रमतैं मिलाएं छहका भाग दीएं द्वितीयादि पृथ्वीनि विषै इंद्रकादिकनि बाहुल्यका प्रमाण आवै है । तहां सप्तम पृथ्वी विषै प्रकीर्णकनिका अभाव है । तातैं तीसरी जायगा शून्य कह्या है । तहां छे आठ चौदह विषै तीनि च्यारि सात जोडे तत्र नौ वारा इकईस हूवा इनकों छहका भाग दीएं अपवर्तन कीएं द्वितीय पृथ्वीविषै इंद्रकनिका ड्योढकोश श्रेणीवद्मनिका दोय कोश प्रकीर्णकनिका साहा तीनि कोश बाहुल्य [३][३][३] हो हैं । तृतीयादि पृथ्वी विषै जानना ॥ १७० ॥

आगैं बहुरि इस बाहुल्यकों अन्य प्रकार करि कहैं हैं;—

रूवहियपुढविसंखं तियचउसत्तोहि गुणिय छवभजिदे ।

कोसाणं बेहुलियं इंद्रयसेढीपइण्णाणं ॥ १७१ ॥

रूपाधिकपृथ्विसंख्या त्रिकचतुःसप्तभिः गुणयित्वा पट्टभक्ते ।

क्रोशानां बाहुल्यं इंद्रकश्रेणीप्रकीर्णानाम् ॥ १७१ ॥

अर्थ—जेथवी पृथ्वी होइ तीह संख्या विषै एक अधिक कीएं जो संख्या होइ, ताकों तीन च्यारि सात करि गुणें छहका भाग दीएं जो प्रमाण होइ तितनी कोशनिका बाहुल्य जो उचाईका प्रमाण सो जाननां । तहां प्रथम पृथ्वी विषै एक अधिक कीएं दोय भए सो तीन जायगा दोय दोय मांडि तिनकों च्यारि सात करि गुणें छह आठ चौदह भए तिनकों छहका भाग दीएं [१][३][३] इंद्रकादिकनिका कोशरूप बाहुल्य आवै है । बहुरि द्वितीय पृथ्वी विषै एक अधिक संख्या तीन सो तीन जायगा मांडि तीन च्यारि सात करि गुणें नव बारह बाईस होइ इनकों छहका भाग दीएं [१][३][३] कोशरूप इंद्रकादिकनिका बाहुल्य आवै है । ऐसै ही तृतीयादि पृथ्वीनि विषै जाननां ॥ १७१ ॥

आगैं इंद्रकादि विलनिका अंतरालका प्रमाण कहैं हैं;—

पदराह्य बिलबहलं पदरद्विदभूमिदो विसोहिता ।

रूऊणपदहिदाए विलंतरं उडुगं तीए ॥ १७२ ॥

प्रतराहतं बिलबाहल्यं प्रतरस्थितभूमितः विशोष्य ।

रूपोनपदद्वतायां विलांतरं ऊर्ध्वगं तस्याः ॥ १७२ ॥

अर्थ—प्रतर कहिए पटल तिनका प्रमाण करि आहत कहिए गुण्या हूवा ऐसा जु विलका बाहुल्य कहिए इंद्रकादि बिलनिका बाहुल्यका प्रमाण सो प्रतरस्थित भूमितः कहिए पटलनि करि संयुक्त जो नरक पृथ्वीका प्रमाण ताँतें विशोधयित्वा कहिए घटाय करि अवशेषकों रूपोनपद कहिए एक घाटि पटलका प्रमाण रूप गच्छ तांकरि हतायां कहिए भाग दीए संतैं तीह विवक्षित पृथ्वी विषैं ऊर्ध्वग विलांतर कहिए उचाई विषैं प्राप्त ऐसा बिलनिके अंतराल हो है । जैसे मंदिर ऊपर मंदिर बनै हैं । तिन दोऊ मंदिरनिके बीचि छांति हो है । तिस छातिकी मोटाईका जो प्रमाण सो ऊर्ध्वग मंदिरांतर कहिए तैसें उपरले नीचले पटल संबधी बिलनिके बीचि जो ता पृथ्वीकी मोटाईका प्रमाण सो इहां ऊर्ध्वग मंदिरांतर कहिए तैसें उपरिले नीचले पटल विलांतर जानना । तहां प्रथम पृथ्वी विषैं पटलनिका प्रमाण तेरह तांकरि इंद्रक बिलका बाहुल्य एक कोश श्रेणिवद्वनिका च्यारि कोशका तीसरा भाग प्रकीर्णकनिका सात कोशका तीसरा भाग इनकों गुणें तेरह कोश बावन कोशका तीसरा भाग इक्याणवै कोशका तीसरा भाग भया [१३।३।३] बहुरि च्यारि कोशका एक योजन होइ तौ इतने कोशनिका केते योजन होय ऐसें तिन कोशानिके योजन कीए तेरह योजनका चौथा भाग बहुरि बावन योजनका बारव्हां भाग बहुरि इक्याणवै योजनका बारव्हां भाग भया [१३।३।३] । बहुरि इहां अब्वहुल भाग असी हजार योजन छोडि बीचि पटल पाईए ताँतें प्रतरस्थित भूमि अठहत्तरि हजार योजन तिनमें पूर्वोक्त योजननिकों समच्छेद विधान करि घटाए इंद्रकनि विषैं तीनि लाख ग्यारह हजार नवसै सित्यासी योजननिका चौथा भाग अर श्रेणीवद्वनि विषैं च्यारिका अपवर्तन कीए दोय लाख तेतीस हजार नौसै सित्यासी योजननिका तीसरा भाग अर प्रकीर्णकनि विषैं नौ लाख पैतीस हजार नौसै नवका बारव्हां भाग प्रमाण आया बहुरि इनकों एक घाटि पटलका प्रमाणरूप पदका प्रमाण बारह ताका भाग दीए उपरले नीचले इंद्रकनिकें बीचि तौ तीन लाख ग्यारह हजार नवसै सित्यासी योजनका अडतालीसवां भाग प्रमाण अंतराल है । बहुरि श्रेणीवद्वनिके बीचि दोय लाख तेतीस हजार नौसै सित्यासी योजनका छत्तीसवां भाग प्रमाण अंतराल है । बहुरि प्रकीर्णकनिके बीचि नव लाख पैतीस हजार नवसै नौका एक सो चवालीसवां भाग प्रमाण अंतराल है [१३।३।३] ऐसें ही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं तीस हजार छत्तास हजार आदि प्रतरं स्थित भूमि विषैं अपना अपना पटल प्रमाण करि गुण्या हूवा बिल बाहुल्य घटाइ एक घाटि पटल प्रमाणका भाग दीए ऊर्ध्व गत अंतरालका प्रमाण आबै है । ऐसें एक पृथ्वी विषैं तिष्ठते जु पटल तिनका परस्पर अंतराल वर्णन किया ॥ १७२ ॥

आगैं उपरली पृथ्वीका अंतपटल अर नीचली पृथ्वीका आदि पटल तिन विषैं अंतराल निरूपण करै हैं;—

उवरिमपच्छिमपडला हिद्विमपढमिल्लपत्थरंतरयं ।

रज्जू तिसहस्सुणित्थममा वंसुदयपरिहीणा ॥ १७३ ॥

उपरिमपश्चिमपटलात् अधस्तनप्रथमप्रस्तरांतरका ।

रज्जू: त्रिसहस्रोनिघर्मा वंशोदयपरिहीणा ॥ १७३ ॥

अर्थ—उपरिकी घर्मा पृथ्वी ताका पश्चिम पटल कहिए अंतका पटल अर ताके अधस्तन कहिए नीचली वंशा पृथ्वी ताका प्रथम पटल इनविषै एक रज्जू अंतराल है । सो रज्जू कैसा । तीन हजार घाटि घर्मा अर वंशाकी मोटाईका प्रमाण जामें घटाईए ऐसा एक रज्जू प्रमाण अंतराल है । कैसैं सो कहिए है । इहांतें एक हजार योजन पर्यंत चित्रा पृथ्वी है सो चित्रा पृथ्वीकी मोटाई तौ ऊर्द्ध लोककी उचाई विषै गिनी है । अर ताके नीचै वंशा पृथ्वीका अंतपर्यंत एक राजू उंचाई है । बहुरि एक लाख असी हजार योजन घर्मा पृथ्वीकी मोटाई विषै चित्रा पृथ्वीकी हजार योजनकी मोटाई आय गई है तातैं हजार योजन तौ चित्रा पृथ्वी संबन्धी घटाए बहुरि घर्मा पृथ्वीका अंत पटलके नीचै हजार योजन विषै पटल नाही सो घटाए बहुरि वंशा पृथ्वीका प्रथम पटलके उपरि हजार योजन विषै पटल नाही सो घटाए ऐसैं तीन हजार योजन घर्मा अर वंशाकी मोटाई विषै घटाईए तहां घर्माकी मोटाई एक लाख असी हजार योजन वंशाकी मोटाई बत्तसि हजार योजन दोऊनिको मिलाए दोय लाख बारह हजार योजन घटाए दोय लाख नव हजार रहे सो इतने एक राजू विषै घटाए घर्माका अंत पटल अर वंशाका प्रथम पटल विषै अंतरालका प्रमाण हो है । इस अंतराल विषै हजार योजन घर्माकी नीचली पृथ्वी अर हजार योजन वंशाकी उपरली पृथ्वी अर अवशेष सर्व वीचिमें अवकाश पाईए है ॥ १७३ ॥

आगैं तातैं नीचली पृथ्वीनिका अंतादि पटलनि विषै अंतराल निरूपण करैं हैं;—

कमसो विसहस्सुणियमेघादीणं च वेहपरिहीणा ।

चरिमे वितिभागाहियजोयणतिसहस्सपरिवज्जा ॥ १७४ ॥

क्रमशो द्विसहस्रोनिघतमेघादीनां च वेधपरिहीणा ।

चरमे द्वित्रिभागाधिकयोजनत्रिसहस्रपरिवर्जा ॥ १७४ ॥

अर्थ—अनुक्रमतैं दोय हजार योजन घाटि मेघादि पृथ्वीनिका वेधकरि हीन ऐसा रज्जू प्रमाण अंतर है । तहां मेघादि पृथ्वीका मोटाईका प्रमाण अठाईस हजार योजन तिनमें दोय हजार घटाए छवीस हजार योजन तिन करि हीन ऐसा एक रज्जू प्रमाण अंतराल वंशाका अंतपटल अर मेघाका आदि पटलके वीचि जाननां । बहुरि अंजना पृथ्वीकी मोटाई चौडाई चौईस हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाए बाईस हजार योजन रहे तिन करि हीन एक राजू प्रमाण मेघाका अंतपटल अर अंजनाका आदि पटल विषै अंतराल जानना । बहुरि अरिष्टा पृथ्वीकी मोटाई बीस हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाए अठारह हजार योजन रहे तिनकरि हीन एक राजू प्रमाण अंजनाका अंत पटल अर अरिष्टाका प्रथम पटल वीचि अंतराल है । बहुरि मघवी पृथ्वीकी मोटाई सोलह हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाए चौदह हजार योजन तिन करि हीन एक राजू प्रमाण अरि-

ष्टाका अंत पटल अर मघवीका प्रथम पटल बीच अंतराल है ॥ भावार्थ ॥ वंशादिक पृथ्वीका अंततै मेघादिक पृथ्वीका अंत एक राजू है तामें मेघादिक पृथ्वीकी मोटाई घटाईए बहुरि उपरली पृथ्वीका अंत पटल नीचें एक हजार योजन अर नीचली पृथ्वीका प्रथम पटलके उपरि एक हजार योजन ए दोय हजार योजन अंतराल विषै मिलाए अनुक्रमतै अंतरालका प्रमाण हो हैं । तहां अंतराल विषै दोय हजार योजन तौ उपरि नीचें पृथ्वी है अवशेष बीचिमें अवकाश है । बहुरि चरम कहिए अंत मघवीका अंतपटल अर माघवीका आदि पटलविषै अंतराल दोय योजनका तीसरा भाग करि अधिक तीन हजार योजन घाटि एक राजू प्रमाण है । कैसै सो वासना कहिए है । सप्तम पृथ्वीकी मोटाई आठ हजार योजन बहुरि श्रेणीवद्धनिका बाहुल्य सोला कोशका तीसरा भाग ताके योजन करिए तब सोलहका बारवहां भाग भया च्यारि करि अपवर्तन कीए च्यारि योजनका तीसरा भाग श्रेणीवद्धका बाहुल्य भया ताको समच्छेद विधान करि आठ हजार योजनमें घटाईए तब तेईस हजार नवसै छिनवै योजनका तीसरा भाग रखा सो ताका आधा ग्यारह हजार नवसै अठ्याणवैका तीसरा भाग सो भाग दीए तीन हजार नवसै निन्याणवै योजन अर एक योजनका तीसरा भाग भया सो इतना तौ सप्तम पृथ्वीका पटलके उपरि पृथ्वीकी मोटाईका प्रमाण है । जातै सप्तम पृथ्वी विषै एक पटल बीचिमें पाईए है । बहुरि छठी पृथ्वीका अंतपटलके नीचें एक हजार योजन पृथ्वी पाईए सो मिलाए च्यारि हजार नवसै निन्याणवै योजन अर एक योजनका तीसरा भाग भया सो इतना तौ मिल्यावना अर छठी पृथ्वीका अंततै सप्तम पृथ्वीका अंत एक राजू है तातै एक राजू विषै सप्तम पृथ्वीकी मोटाईका प्रमाण आठ हजार योजन घटावनां । ऐसै करि तीन हजार योजन अर दोय योजनका तीसरा भाग करि हीन एक राजू प्रमाण छठी पृथ्वीका अंतपटल अर सप्तम पृथ्वीका पटलके बीचि अंतराल जानना । इस अंतरालविषै गुणचाससै निन्याणवै योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण तौ उपरि वा नीचें पृथ्वी है । अवशेष बीचिमें अवकाश है ॥ १७४ ॥

आमैं विलनिका तिर्यक् अंतर दोय गाथानिकरि निरूपण करै है;—

संखेज्जवासणिरए तेरिच्छं अंतरं जहणमिणं ।

इगिजोयणमद्धजुदं जोयणतिदयं हवे जेहं ॥ १७५ ॥

संख्यातव्यासनिरये तैरश्चमंतरं जघन्यमिदं ।

एकयोजनमर्घयुतं योजनत्रितयं भवेत् ज्येष्ठम् ॥ १७५ ॥

अर्थ—जैसै मंदिरकी बरोबरि लगता दूसरा मंदिर होइ तहां तिन दोऊ मंदिरनि विषै बीचिमें भीति होइ तिस भीतिकी चौडाईका जो प्रमाण सो तिर्यक् अंतर कहिए । तैसै इहां विवक्षित पटलनिविषै लगता विलनिकी बीचि जो पृथ्वी पाईए ताका चौडाईका प्रमाण सो तिर्यक् अंतर जानना । सो संख्यात योजन व्यासकों धरै जो नरकविल तीह विषै तिर्यक् अंतर यह है । एक योजन अर आधा सहित सो ताका ज्योड योजन भया सो तो जघन्य तिर्यक् अंतर है । अर तीन योजन उत्कृष्ट अन्तर है ॥ १७५ ॥

जोयणसत्तसहस्सं असंखवित्थारजुत्तणिरयाणं ।

अंतरमवरं णेयं जेट्ठमसंखेज्जजोयणयं ॥ १७६ ॥

योजनसत्तसहस्त्रं असंख्यविस्तारयुक्तनिरयाणाम् ।

अंतरमवरं ज्ञेयं ज्येष्ठमसंख्येययोजनकम् ॥ १७६ ॥

अर्थ—असंख्यात योजनका विस्तार संयुक्त जो नरक तिनके तिर्यक् अन्तर जघन्य तौ सात हजार योजनं जानना । उत्कृष्ट असंख्यात योजन जामनां ॥ १७६ ॥

आगै तिन विलनिका आकारादिक निरूपण करै हैं;—

वज्जघणभित्तिभागा वट्टतिचउरंसवहुविहायारा ।

णिरया सयावि भरिया सन्विदियदुक्खदाईहिं ॥ १७७ ॥

वज्रघनभित्तिभागा वृत्तत्रिचतुरस्रबहुविधाकाराः ।

निरयाः सदापि भृताः सर्वेन्द्रियदुःखदायिभिः ॥ १७७ ॥

अर्थ—वज्रसमान निवड है भीति जिनकी अर गोल अथवा तिकूटा अथवा चौकोर आदि बहुत प्रकार आकारकों धरै हैं ऐसे नरक विल हैं बहुरि ते सदा ही सब इंद्रियनिकों दुःखदायक जे वस्तु सामग्री तिनकरि भरे हैं ॥ १७७ ॥

आगै तहां पाईए दुर्गंध ताकों दृष्टांतपूर्वक कहै हैं;—

मज्जारसाणमूयरखरवाणरकरहहत्थिपहुदीणं ।

कुहिदादहिदुर्गंधा णिरया णिच्चंधयारचिदा ॥१७८॥

मार्जारश्वसूकरखरवानरकरभहस्तिप्रभृतीनाम् ।

कुथितादतिदुर्गंधा निरया नित्यांधकारचित्ताः ॥ १७८ ॥

अर्थ—विलाव कूकरा सूरडा गदहा वानरा ऊंट हाथी इत्यादिकनिका जो कुथित कहिए मल तातै अति बहुत दुर्गंधता सहित नरक विल हैं । बहुरि ते सदा ही अंधकार सहित हैं ॥१७८॥

आगै तहां उपजनेवाले जीवनिकों वा तिनके उपजनेके स्थाननिकों कहै हैं;—

उप्पज्जंति तहिं बहुपरिग्गहारंभसंचिदाउस्सा ।

उट्ठादिमुखायारेसुवरिल्लुववादटाणेसु ॥ १७९ ॥

उत्पद्यंते तेषु बहुपरिग्रहारंभसंचितायुष्याः ।

उट्ठादिमुखाकारेषु उपरितनोपपादस्थानेषु ॥ १७९ ॥

अर्थ—तिन विषै बहुत परिग्रह आरंभ करि संचय कीया है नरक आयु जिनने ऐसे जीव उपजै हैं । ऊंट आदिका मुखके आकारि उपरि उपपादस्थान हैं तिन विषै उपजै हैं । भावार्थ ॥ जैसे मंदिरकी छाति विषै कोऊ स्थान बनें तैसें नरक विलनिका छाति विषै उपपादस्थान हैं ते मांही पोले मुख सांकडा ऐसें ऊंट आदि प्राणीनिका जैसा मुखका आकार है तैसे आकारकों धरै हैं । तहां जीव जाय करि जन्म धरै हैं ॥ १७९ ॥

आगै तिन उपपाद स्थानकनिका व्यास वा बाहुल्य कहै हैं;—

इगिबितिकोसो वासो जोयणमवि जोयणं सयं जेष्टं ।

उष्टादीणं बहलं सगवित्थारेहिं पंचगुणं ॥ १८० ॥

एकद्वित्रिक्रोशः व्यासः योजनमपि योजनशतं ज्येष्ठं ।

उष्ट्रादीनां बाहुल्यं स्वकविस्तारेभ्यः पंचगुणम् ॥ १८० ॥

अर्थ—एक कोश दोय कोश तीन कोश बहुरि योजनमपि कहिए एक योजन दोय योजन तीन योजन बहुरि योजनानां शतं कहिए सौ योजन इतना घर्मादि सप्त पृथ्वीनिका क्रमतै उष्ट्रादि आकारके धारक जे उपपादस्थान तिनका उत्कृष्ट व्यास जो चौडाई ताका प्रमाण जाननें । बहुरि अपना अपना प्रमाणतै पांच गुणा बाहुल्य कहिए उचाईका प्रमाण जाननां ॥ १८० ॥

आगै तिन उपपाद स्थानकनिविषै उपजे जे जीव कहा करै हैं सो कहै हैं;—

अंतोमुहुत्तकाले तदो चुदा भूतल्लि तिव्खाणं ।

सत्थाणमुपरि पडिदूणुड्डीय पुणोवि णिवडंति ॥ १८१ ॥

अंतर्मुहूर्त्तकाले ततश्चुता भूतले तीक्ष्णानाम् ।

शस्त्राणामुपरि पतित्वा उड्डीय पुनरपि निपतंति ॥ १८१ ॥

अर्थ—अंतर्मुहूर्त्त कालविषै तहां पर्याप्ति पूर्ण करि तिस उपपाद स्थानतै छूटि नरक विलनिका पृथ्वी तल विषै जे तीक्ष्ण शस्त्र हैं तिन उपरि पडै हैं । बहुरि तहांस्यो उड्डीय कहिए उछलि करि बहुरि तिनही उपरि निपतंति कहिए पडै हैं ॥ १८१ ॥

आगै कितना उछलें हैं सो कहै हैं;—

पणघणजोयणमाणं सोलहिदं उप्पडंति णेरइया ।

घम्माए वंसादिसु दुगुणं दुगुणंति णादव्वं ॥ १८२ ॥

पंचघनयोजनमानं षोडशहत्तं उत्पतंति नैरयिकाः ।

घर्मायां वंशादिषु द्विगुणं द्विगुणं इति ज्ञातव्यम् ॥ १८२ ॥

अर्थ—पांचका घन एक सो पचीस ताकों सोलका भाग दीएं जो आवै तितने योजन प्रमाण घर्मा पृथ्वी विषै नारकी उछलें हैं । बहुरि यातै वंशादिक पृथ्वीनि विषै क्रमतै दूणे दूणे उछलें हैं ऐसा जाननां ॥ १८२ ॥

आगै तहां तिष्ठते थे जु पुरातन नारकी ते उछलि करि पडे जे नवीन नारकी तिनकों कहा करै हैं सो कहै हैं;—

पोराणिया तदा ते दड्ढुणइणिदुरारवागम्म ।

खोवांति णिसिच्चंति य वणेसु बहुखारवारीणि ॥ १८३ ॥

पौराणिकाः तदा तान् दृष्ट्वा अतिनिष्ठुरारवा आगम्य ।

प्रति निर्धिचंति च वनेषु बहुक्षारवारीणि ॥ १८३ ॥

अर्थ—पुरातन नारकी तहां तिन नवीन नारकीनिक्कों देखे करि अत्यन्त कठोर वचन कहते संते आय करि तिन नवीन नारकीनकों घातैं हैं । बहुरि शस्त्रनि उपरि पड़नेतैं भए जु शरीर विषै व्रण कहिए घात तिन विषै बहुत खारा जलनिकों सीचैं हैं ॥ १८३ ॥

आगैं ते नवीन नारकी कहा करैं हैं सो कहैं हैं;—

तेवि विहंगेण तदो जाणिदपुन्वावरारिसंबंधा ।

असुहापुहविक्रारिया हणांति हणांति वा तेहि ॥ १८४ ॥

तेपि विभंगेन ततः ज्ञातपूर्वापरारिसंबंधाः ।

अशुभापृथग्विक्रिया प्रंति हन्यंते वा तैः ॥ १८४ ॥

अर्थ—ते नवीन नारकी भी विभंग जो कुअवधि तीह करि तहां पर्याप्ति पूर्ण भए पीछैं जान्या है पिछला वैरिपणाका संबंध जिननें ऐसे बहुरि अशुभ अपृथक् विक्रिया जिनके पाईए ऐसे होत संते अन्य नारकीनिकों हनें हैं । वा तिन नारकीन करि आप हनिए हैं । ऐसैं परस्पर घात प्रवतैं है ॥ भावार्थ ॥ नारकीनिकें ऐसा कुअवधि हो हैं । जाकरि परस्पर वैरकों जानि परस्पर विरोध रूप ही प्रवतैं बहुरि जो पूर्वभव विषै कोई उपकार किया होय तौ ताकों जानि तहां परस्पर प्रीतिरूप न प्रवतैं । बहुरि तिनके अशुभ जो आपापरकों दुःखदायक ऐसी ही विक्रिया होय सकै है । बहुरि सो अपृथक् विक्रिया हो है । अपने शरीरकों तौ अनेक रूप परनवावै अपने शरीरतैं जुदी विक्रिया करनेकी सामर्थ्य नाही । ऐसैं ए नारकी परस्पर घात करैं हैं ॥ १८४ ॥

आगैं अपृथक् विक्रिया करनेका विधान कहैं हैं;—

वयवग्घघूककागहिविच्छियभल्लूकगिद्धसुणयादि ।

सूलग्गिकोंतमोग्गरपहुदी संगे विकुव्वंति ॥ १८५ ॥

वृकन्याप्रघूककाकाहिवृश्चिकभल्लूकगृध्रशुनकादि ।

श्लाम्भिकुंतमुद्गरप्रभृतिं स्वांगे विकुर्वंति ॥ १८५ ॥

अर्थ—वृक कहिए श्याल बहुरि व्याघ्र कहिए वघेरा घूक कहिए घूघू काक कहिए कागला अहि कहिए सर्प वृश्चिक कहिए वीळू भल्लूक कहिए रीछ गध्र घहिए गध्र पंखी शुनक कहिए कूकरा इत्यादि अपने शरीर विषै विक्रिया करैं हैं । भावार्थ । नारकी परस्पर दुःख देनेकों अपने शरीरकों श्याल इत्यादि दुःखदायक तिर्थचनिके आकाररूप विक्रिया करि परनमाइ परस्पर खाणा चूटना काटना इत्यादि घातरूप प्रवतैं हैं । बहुरि शूल कहिए त्रिशूल वरळी अग्नि कहिए जलावनेकों कारण अग्नि अर कुंत कहिए सेल अर मुद्गर कहिए मोगरा इत्यादि दुखदायक शस्त्रादि सामिग्री अपने शरीरविषै विक्रिया करैं हैं । भावार्थ । नारकी परस्पर दुख देनेकों अपने शरीर ही विषै त्रिशूल आदि शस्त्र वा अग्नि आदि दुःखदायक वस्तु विक्रिया करि उपजाय तिनि करि परस्पर घात करैं हैं । ऐसैं अशुभ लेस्या करि नारकी परस्पर दुःख देनेकों प्रवतैं हैं । ऐसा ही तिस नारक पर्यायका स्वभाव है । बहुरि हम सर्व पापी हैं काहेकों परस्पर वैर करि दुःखकों उर्दारैं हैं ऐसा विचार तहां नाही उपजै है ॥ १८५ ॥

आगै क्षेत्र संबन्धी पदार्थनिकी क्रूरताकों दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

वेतालगिरी भीमा जंतसयुक्कडगुहा य पडिमाओ ।
लोहणिहगिकण्डू परसुल्लुरिगासिपत्तवणं ॥ १८६ ॥

वेतालगिरयः भीमा यंत्रशतोत्कटगुहाश्च प्रतिमाः ।

लोहनिभाग्निकणाढ्याः परसुल्लुरिकासिपत्रवनम् ॥ १८६ ॥

अर्थ—वेतालकीसी आकृतिकों धरै ऐसा महाभयानक तौ तहां गिरि कहिए पर्वत हैं । बहुरि सैकड़ां दुःखदायक यंत्रनिकरि उत्कट ऐसी गुफा हैं । बहुरि तिष्ठती जु प्रतिमा कहिए स्त्री आदिकका आकाररूप प्रतिबिंब सो लोहसमान हैं अर अग्निका कणनिकरि संयुक्त है । बहुरि तहां असिपत्र वन हैं सो फरसी छुरी खड्ग इत्यादि शस्त्रसमान पत्रनिकरि संयुक्त है ॥ १८६ ॥

कूडा सामलिरुक्खा वयिदरणिणदीउ खारजलपुण्णा ।
पूरुहरिा दुर्गंधा हदा य किमिकोडिकुलकलिदा ॥ १८७ ॥

कूटाः शाल्मलिवृक्षाः वैतरणिणयः क्षारजलपूर्णाः ।

पूरुहरिा दुर्गंधाः हदाश्च क्रिमिकोटिकुलकलिताः ॥ १८७ ॥

अर्थ—बहुरि तहां कूटा कहिए असत्य झूठे ऐसे शाल्मली वृक्ष हैं नाम वृक्ष अर महा दुःखदायक हैं । बहुरि तहां वैतरिणी नाम नदी है सो खारा जल करि सम्पूर्ण भरी है । बहुरि पूय कहिए विनावनां ऐसा रुधिर करि संयुक्त महा दुर्गंध ऐसे द्रव हैं ते कोटिक क्रिमिनिका कुल करि व्याप्त होइ रहे हैं । भावार्थ । विक्रियादि करि विना निपजाया क्षेत्रस्वभावकरि तिन विलनि विषै महा दुःखकों कारण पर्वतादि पाईए हैं ॥ १८७ ॥

आगै तैसी नदीकों पाइ कहा हो है सो कहै हैं;—

अग्गिभया धावंता मण्णंता सीथलंति पाणीयं ।
ते वइदरणिं पविसिय खारोदयदङ्कुसव्वंगा ॥ १८८ ॥

अग्निभयाद्भावंतः मन्यमानाः शीतलमिति पानीयं ।

ते वैतरणीं प्रविश्य क्षारोदकदग्धसर्वांगाः ॥ १८८ ॥

अर्थ—अग्निके भयतै दोडता ऐसै जु ते नर्वान नारकी ते इहां शीतल पाणी है ऐसा मानता संता वैतरणी नामा नदी प्रति प्रवेश करि तहां खारा जल करि दग्ध भया हैं सर्व अंग जिनका ऐसे हो है ॥ १८८ ॥

बहुरि ऐसे होत संतै ते नारकी कहा करै हैं सो कहै हैं;—

उट्ठिय वेगेण पुणो असिपत्तवणं पर्यांति छायेत्ति ।
कुंतासिसत्तिजट्ठिहिं छिज्जंते वादपडिदेहिं ॥ १८९ ॥

उत्थाय वेगेन पुनः असिपत्रवनं प्रयांति छायेति ।

कुंतासिशक्तियष्टिभिश्छिद्यंते वातपतितैः ॥ १८९ ॥

अर्थ—ते नवीन नारकी वेग करि शीघ्र ही तहांस्यो उठि करि इहां छाया है ऐसा मानते संते असिपत्र नामा वनको प्राप्त हो हैं । तहां पवन करि पडे ऐसे सेल वा खड्ग वा शक्ती या यष्टि कहिए लाठी इत्यादि समान जे पत्रादिक तिनकरि शरीर भेदिए है ॥ १८९ ॥

आगै तिन नारकीनिके बाह्य दुखका साधनको कहै हैं;—

लोहोदयभरिदाओ कुंभीओ तत्तवहुकटाहा य ।

संततलोहफासा भू सूईसइलाइण्णा ॥ १९० ॥

लोहोदकभरिताः कुंभ्यः तत्तवहुकटाहाश्च ।

संततलोहस्पर्शा भूः सूचीशाड्वलाकीर्णा ॥ १९० ॥

अर्थ—ताता लोह समान जल करि भरे ऐसे तहां कुंभी हैं जैसे हांडी विषै अन्न पचाईए तैसें नारकीनिको कुंभी विषै पचावै हैं बहुरि बहुत ताता कडाह हैं । जैसे कडाह विषै तत्त तैलादि करि अन्न आदि पचाईए तैसें नारकीनिको कडाह विषै पचाईए हैं इत्यादि अनेक बाह्य दुःखको कारण सामिग्री तहां पाईए है । बहुरि तहां भूमिका है सो तत्तायमान लोहके समान है स्पर्श जाका ऐसी है । बहुरि सूई सारिखी शाद्वल कहिए दोव तिनकरि आकार्णा कहिए व्याप्त है ॥ १९० ॥

आगै क्षेत्रका स्पर्श करि हो है जो दुख ताको दृष्टान्त करि कहै हैं;—

विच्छियसहस्रवेयणसमधियदुक्खं धरित्तिफासादो ।

कुक्खक्खिसीसरोगगलुधतिसभयवेयणा तिच्चा ॥ १९१ ॥

वृश्चिकसहस्रवेदनासमधिकदुःखं धरित्रीस्पर्शात् ।

कुक्ष्यक्षिशीर्षरोगगक्षुधातृषाभयवेदना तीव्राः ॥ १९१ ॥

अर्थ—हजार वीछू काटै जैसे इहां वेदना होइ तीहस्यो भी बहुत अधिक वेदना तहां धरित्री जो भूमिका ताका स्पर्शतै हो हैं । बहुरि तिन नारकीनिके कुक्षि कहिए उदर अर अक्षि कहिए नेत्र अर शीर्ष कहिए मस्तक इत्यादि संबंधी अनेक रोग करि संयुक्त क्षुधा तृषा भयादिक तीव्र वेदनां तहां पाईए हैं ॥ १९१ ॥

आगै ते नारकी क्षुधादि करि पीडित कहा भोजन करै हैं सो कहै हैं;—

सादिकुहिदातिगंधं सणिमप्यं मट्टियं विभुंजति ।

धम्मभवा वंसादिसु असंखगुणिदासुहं तत्तो ॥ १९२ ॥

श्वादिक्वथितातिगंधां अशनैरल्पां मृत्तिकां विभुंजते ।

धर्मभवा वंशादिषु असंख्यगुणिताशुभां ततः ॥ १९२ ॥

अर्थ—इवा जो कूकरा ताको आदि देकर निच्छुष्ट जीवनिका जो क्वथित कहिए विष्ट तीहस्यो भी अति अधिक दुर्गंध भोजननि करि अल्पां कहिए भूख बहुत अर मिलै थोडी तातै भूख अपेक्षा थोरी जो तिस क्षेत्र संबंधी मांटी ताको घर्मा नरक विषै उपजे नारकी भक्षण करै हैं । बहुरि वंशादिकनि विषै तिहस्यो असंख्यात गुणी अशुभ बुरी ऐसी जो मृत्तिका ताहि भक्षण करै हैं ॥ १९२ ॥

आगँ तिन नारकीनिका आहारके दुःख करनेका सामर्थ्यको कहै है;—

पट्मासणमिह खित्तं कोसद्धं गंधदो विमारेदि ।

कोसद्धद्धहियधराट्टियजीवे पत्थरक्कमदो ॥ १९३ ॥

प्रथमाशनमिह क्षित्तं क्रोशार्थं गंधतो विमारयति ।

क्रोशार्थार्थाधिकधरास्थितर्जीवान् प्रस्तरक्कमतः ॥ १९३ ॥

अर्थ—प्रथम पृथ्वीका प्रथम पटल विषै जिस मृत्तिकाको भवै है सो मृत्तिकारूप अशन इहां मनुष्य लोक विषै जो क्षेपिए धरिए तौ वह मृत्तिका अपनी दुर्गंधतै कोश आधा पर्यंत तिष्ठते जीव-निकों मारै है । बहुरि आगँ पटलका अनुक्रमतै आध आध कोश अधिक पृथ्वी विषै तिष्ठते जीव-निकों मारै हैं । दूसरे पटलका एक कोश तीसरे पटलका ड्यौढ कोश एंसै आध आध कोश वधती पृथ्वी पर्यंत जीवनिकों नारकीनका आहार अपनी दुर्गंधतै मारै है । ऐसी तिस मृत्तिकारूप आहारमें दुख करनेकी समर्थता है ॥ १९३ ॥

आगँ इन दुःखके साधननिकरि नारकी मारै हैं कहा ऐसी आशंका होत संते कहै है;—

ण मरंति ते अकाले सहस्सखुत्तोवि छिण्णसव्वंगा ।

गच्छंति तणुस्स लवा संघादं सूदगस्सेव ॥ १९४ ॥

न म्रियंते ते अकाले सहस्त्रकृत्वोपि छिन्नसर्वांगाः ।

गच्छंति तनोः लवाः संघातं सूतकस्थेव ॥ १९४ ॥

अर्थ—ते नारकी आयु पूर्ण होनेका काल यावत् न आवै तावत् हजारों वार छेदै हैं टूंक टूंक काँए हैं सर्व शरीरके अंग जिनके ऐसे होत संते भी न मारै हैं । तिन नारकीनिके शरीरके जु लव कहिए अंग ते जुदे जुदे भए हुए फेरि संघात कहिए मिलन ताकों प्राप्त हो हैं । जैसे सूतक जो पारा सो कण कण करि जुदा भया तुरत मिलै तैसे तिनके शरीरके अंग जुदे भए भी तुरत मिलै हैं ॥ १९४ ॥

आगँ तिन दुःखके साधननि करि सर्वदा सर्व ही दुःखकों पावै हैं कहा सो कहै है;—

तित्थयरसंतकम्भुवसगं णिरए णिवारयंति सुरा ।

छम्मासाउगसेसे सग्गे अमलाणमालंको ॥ १९५ ॥

तीर्थकरसत्कर्मोपसर्गं निरये निवारयंति सुराः ।

षण्मासायुष्कशेषे स्वर्गे अम्लानमालांकः ॥ १९५ ॥

अर्थ—तीर्थकर नामा नाम प्रकृतिका सत्त्व जाके पाईए जो जीव नरकस्यो निकासि तीर्थ-कर होना होइ तिन जीवनिका नरक आयु विषै छह महीना अवशेष रहै देव हैं ते नरक विषै ताका उपसर्गकों निवारण करै हैं । बहुरि स्वर्ग विषै अम्लान मालांक कहिए मलिन मालाका होना इत्यादि चिन्ह न हो है । जो जाव स्वर्गतै तीर्थकर होना होइ ताके और देवनिर्कासी नाई छह महीना देवायुका अवशेष रहै भी फूल मालाका कुमलावनां इत्यादि चिन्ह न हो है ॥ १९५ ॥

आगैँ तिन नारकीनके शरीरका विलय होनेका विधान कहै हैं;—

अणवट्टसगाउस्से पुण्णे वादाहदब्भपडलं वा ।

णेरइयाणं काया सव्वे सिग्घं विलीयंते ॥ १९६ ॥

अनपवर्त्यस्वकायुष्ये पूर्णे वाताहताभ्रपटलमिव ।

नैरयिकाणां कायाः सर्वे शीघ्रं विलीयंते ॥ १९६ ॥

अर्थ—भुज्यमान आयुका अपवर्तन जो घटना तीह करि जो कदली घात मरण होइ सो अपवर्त्यायु कहिए । भुज्यमान आयुका अपवर्तन विना भएँ जो च्युत मरण होइ सो अनपवर्त्यायु कहिए सो नारकीनके शरीर अनपवर्त्य जो अपना आयु ताकौँ पूर्ण होत सतैं जैसेँ पवन करि हने मेघपटल विलय जांय तैसेँ सर्व ही शीघ्र विलय हो हैं । जैसेँ इहां मनुक्षं (प्य) निके शरीर मरण भए पीछै पड़े रहैं हैं तैसेँ नारकीनके शरीर पड़े नाहीं रहै हैं ॥ १९६ ॥

आगैँ तिन नारकीन करि भोगवनेमें आवैं हैं जे दुःख तिनके भेद कहै हैं;—

खेत्तजणिदं असादं शारीरं माणसं च असुरकयं ।

भुंजंति जहावसरं भवद्विदीचरिमसमयोत्ति ॥ १९७ ॥

क्षेत्रजनितं असातं शारीरं मानसं च असुरकृतम् ।

भुंजंते यथावसरं भवस्थितेश्वरमसमयांतम् ॥ १९७ ॥

अर्थ—क्षेत्र जनित १ शारीर १ मानस १ असुरकृत १ ए च्यारि प्रकार असाता यथा अवसर लिं अपनी पर्यायका अंतसमय पर्यंत भोगवैं हैं तहां नरक क्षेत्र करि उत्पन्न जो आतापादि दुःखं सो क्षेत्र जनित कहिये । नरक शरीर करि उत्पन्न जो रोगादिक दुःख सो शारीर कहिए । आकुल परिणामनि करि उत्पन्न जो आर्त ध्यानादि रूप दुःख सो मानस कहिए । तीसरी पृथ्वी पर्यंत संक्लेश परिणामनि करि संयुक्त जे असुरकुमार जातिके भवनवासी देव तिन करि कीया हूवा जो परस्पर लडावना घात करना इत्यादि दुःख सो असुरकृत वहिए । ऐसेँ दुःखके च्यारिभेद जाननैं ॥ १९७ ॥

आगैँ पटल पटल प्रति तिन नारकीनका जघन्य उत्कृष्ट आयुकों तीन गाथानिकरि कहै हैं;—

पढमिंदे दसणउदीवाससहस्साउगं जहण्णिदरं ।

तो णउदिलक्ख जेदं असंखपुव्वाण कोडी य ॥ १९८ ॥

प्रथमेद्रके दशनवतिवर्षसहस्रायुष्कं जत्रन्येतरत् ।

ततः नवतिलक्षं ज्येष्ठं असंख्यपूर्वाणां कोट्यश्च ॥ १९८ ॥

अर्थ—प्रथम पृथ्वीका प्रथम पटल विषैँ जघन्य आयु दश हजार वर्ष है । इतर कहिए उत्कृष्ट आयु सो निवैँ हजार वर्ष प्रमाण है । बहुरि इहां तैं परैं जो कहिए है आयु सो सर्व उत्कृष्ट आयु जाननां । तहां दूसरा पटल विषैँ निवैँ लाख वर्ष आयु है । तीसरा पटल विषैँ असंख्यात कोडि पूर्व वर्ष प्रमाण आयु है । सत्तरिलाख छप्पन कोडिकों पूर्व कहिए है ॥ १९८ ॥

सायरदसमं तुरिये सगसगचरमेदयम्हि इगि तिण्णि ।

सत्त दसं सत्तरसं उवही बावीस तेत्तीसं ॥ १९९ ॥

सागरदशमं तुरीये स्वकस्वकचरमेदके एकं त्रीणि ।

सप्त दश सप्तदश उदधयो द्वाविंशतिः त्रयस्त्रिंशत् ॥ १९९ ॥

अर्थ— चौथा पटल विषै एक सागरका दशवां भाग प्रमाण आयु है । इहां तैं आगैं प्रथमादि सप्तमी पर्यंत पृथ्वीनिका अंतका पटल विषै आयु कहिए है सो प्रथमादि पृथ्वीनि विषै क्रमतैं एक तीन सात दश सत्रह बावीस तेतीस सागर प्रमाण आयु जानना । १।३।७।१०।१७।२२।३३ ॥ १९९ ॥

आदी अंतविससे रूऊणद्धाहिदम्हि हाणिचयं ।

उवरिम जेष्टं समयेणहियं हेद्विमजहणं तु ॥ २०० ॥

आदौ अंतविशेषे रूपोनाद्वाहिते हानिचयं ।

उपरिमं ज्येष्ठं समयेनाधिकं अधस्तनजघन्यं तु ॥ २०० ॥

अर्थ—आदि विषै जो प्रमाण हो ताकों अंतके प्रमाणमें स्यो घटाएँ जो प्रमाण होइ ताकों रूपोनाद्वा कहिए एक घाटि पटलका प्रमाणरूप गच्छका भाग दीएँ हानिचयौ कहिए नीचले पटलतैं पटल पटल प्रति वधनेका प्रमाण हो है । सोई कहिए है— प्रथम पृथ्वी विषै चौथा पटल विषै आयु एक सागरका दशवां भाग सो तौ आदि कहिए, अंत पटल विषै एक सागर सो अंत कहिए अंतमेंस्यौ आदि समछेद विधान करि घटाएँ नव सागरका दशमां भाग रह्या तहां तीन पटलका तौ आयुका जुदा प्रमाण कह्या तातैं तिनकों छोडि अवशेष पटल रहे सो इहां गच्छ जाननां । यद्यपि चौथा पटलका भी आयु जुदा जुदा कह्या था तथापि इहां चौथा पटलका आयुको आदि विषै स्थाप्या तातैं भेलि लीया सो गच्छमें एक घाटि कीएँ नव सो नव पटलनि विषै नव सागरका दशवां भाग वधै तौ एक पटल विषै कितना वधै ऐसैं त्रैराशिक कीएँ नवका दशवां भागको नवका भाग दीएँ एक सागरका दशवां भाग प्रमाण चय आया सो इतना चय चौथा पटलका आयु विषै मिलाएँ पांचवां पटलका आयु दोय सागरका दशवां भाग हो है तामें चय मिलाएँ छठा पटलका आयु तीन सागरका दशवां भाग हो है ऐसैं ही एक एक चय मिलाएँ सप्तमादि पटलनिविषै— च्यारि पांच छह सात आठ नव दश सागरनिका दशवां भाग प्रमाण आयु हो है । बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीनि विषै जो उपरली पृथ्वीका अंत विषै जो आयु कह्या सो तौ इहां आदि स्थापिए तातैं आदि तौ क्रमतैं एक तीन सात दश सत्रह बावीस सागर प्रमाण हैं । बहुरि जो विवक्षित पृथ्वीका अंत पटल विषै आयु सो अंत स्थापिए तातैं क्रमतैं अंत तीन सात दश सत्रह बावीस तेतीस सागर प्रमाण है । तहां अंतमेंस्यौ आदि घटाएँ दोय च्यारि तीन सात पांच ग्यारह सागर रहे । बहुरि इहां पटलनिका प्रमाण ग्यारह नव सात पांच तीन एक है । तिन विषै इहां पूर्व पृथ्वीका अंत पटलका आयुको आदि स्थापन कीया तातैं एक एक और मिलाएँ बारह दश आठ छह च्यारि दोय प्रमाण गच्छ भया तामें एक घटाएँ क्रमतैं ग्यारह नव सात पांच तीन एक रहे सो ग्यारह नव

सात पांच तीन एक पटलनि विषै दोय च्यारि तीन सात पांच ग्यारह सागर प्रमाण आयु वधै तौ एक पटल विषै कितना आयु वधै ऐसै त्रैराशिक कीएं द्वितीयादि पृथ्वीनिविषै क्रमतै दोय सागरका ग्यारह्वां भाग अर च्यारि सागरका नवमां अर तीन सागरका सातवां भाग अर सात सागरका पांचवां भाग अर पांच सागरका तीसरा भाग अर ग्यारा सागर प्रमाण चय आया । सो एक चयकों पूर्व पूर्व स्थिति विषै जोडें तिन तिन पटलनि विषै उत्कृष्टायुका प्रमाण आवै है । तहां द्वितीय पृथ्वी विषै दोय सागर पूर्वस्थिति विषै दोय सागरका ग्यारह्वां भाग प्रमाण चय जोडें प्रथम पटल विषै आयु होइ यामें तीह प्रमाण चय जोडें तृतीय पटल विषै आयु होइ ऐसै चय करि वधता वधता पटल पटल प्रति आयु जानना । याही प्रकार तृतीयादि पृथ्वीनि विषै क्रमतै तीन सात दश सत्रह बावीस सागरनि विषै अपना अपना चय जोडें प्रथम पटल विषै आयु होइ । बहुरि अपना अपना प्रथमादि पटलनिका आयु विषै क्रमतै अपना अपना चयकों वधाएं अपना अपना द्वितीयादि पटलनि विषै आयु होइ । बहुरि उपरि उपरिका पटल विषै जो उत्कृष्ट आयु कह्या सो एक समय अधिक होइ तौ नीचला नीचला पटल विषै जघन्य आयु हो हैं । ऐसा तहां प्रथम पटल विषै आयु उत्कृष्ट निवै हजार वर्ष तामें एक समय अधिक भएं द्वितीय पटल विषै जघन्य आयु हो है । ऐसै ही गुणचासवां पटल पर्यंत जानना ॥ २०० ॥

आगै तिन नारकानिके पटल पटल प्रति शरीरकी उचाईका प्रमाण कहै हैं;—

पढमे सत्त ति छक्क उदयं धणुरयणिअंगुलं सेसो ।

दुगुणकमं पढमिंदे रयणितियं जाण हाणिचयं ॥ २०१ ॥

प्रथमे सत्त त्रि षट्ठं उदयः धनूरन्त्यंगुलानि शेषे ।

द्विगुणक्रमं प्रथमैद्रके रत्नित्रयं जानीहि हानिचयम् ॥ २०१ ॥

अर्थ—प्रथम पृथ्वीका अंत पटल विषै शरीरका उत्सेध सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल प्रमाण है । बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीका अंत-अंतपटल विषै शरीरका उत्सेध दूणा दूणा क्रमतै पांचसै धनुष पर्यंत जातना । बहुरि प्रथम पृथ्वीका प्रथम इंद्रक विषै रत्नीत्रयं कहिए तीन हाथ उत्सेध हैं । ऐसै धरि करि हे सुन्न तू हानि चय जानि । हानि चयका साधन कैसै सो कहिए है । प्रथम पृथ्वी विषै प्रथम पटल विषै तीन हाथ उत्सेध सो तो आदि जाननां । अर अंतपटल विषै सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल उत्सेध सो अंत जानना तहां अंतमेंस्यो आदि तीन हाथ घटाएं सात धनुष छह अंगुल रहे । बहुरि इहां पटल प्रमाण रूप गच्छ तेरह तामें एक घटाएं बारह ताका भाग दीजिए तहां सात धनुषका अठाईस हाथ हूवा ताको वाराका भाग दीएं दोय पाया सो दोय ती हाथ बहुरि अवशेष च्यारि हाथ रहे तिनके अंगुल कीएं छिनवै अंगुल भए अर छह अंगुल पूर्वे थे मिलकर एक सो दोय अंगुल भए तिनको वाराका भाग दीएं आठ अंगुल भए अर अवशेष छह अंगुलका बारह्वां भागको छह करि अपवर्तन कीएं एक अंगुलका दूसरा भाग भया ऐसै प्रथम पृथ्वी विषै हानि चय दोय हाथ साढा आठ अंगुल प्रमाण आया सो उपरि पटलका उत्सेध विषै अपनी अपनी दंडादिक जातिका क्रम करि मिलाएं वा हस्तादिक कीएं नीचले पटल

विषै उत्सेध होइ तहां प्रथम पटलका उत्सेध होइ तहां प्रथम पटलका उत्सेध विषै चय मिलाएं च्यारि हाथका एक धनुष कीएं द्वितीय पटल विषै एक धनुष एक हाथ साढा आठ अंगुल प्रमाण उत्सेध हो है । बहुरि यामें सोई चय मिलाएं तृतीय पटल विषै एक धनुष तीन हाथ सत्रह अंगुल उत्सेध हो है । ऐसैही सर्वे पटलनि विषै जानना । बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीनि विषै पूर्व पृथ्वीका अंत पटल विषै जो उत्सेध सो तौ आदि अर विवक्षित पृथ्वीका अंत पटल विषै उत्सेध सो अंत स्थापि अर आदिमेंस्यो अंत घटाईए । बहुरि इहां पूर्व पृथ्वीका अंतपटलको आदि कह्या तातैं विवक्षित पृथ्वी विषै जितना पटलका प्रमाण तातैं एक अधिक गच्छ करि तामें एक घटाएं विवक्षित पृथ्वी विषै जितना पटलनिका प्रमाण ताका ताकौं भाग दीएं हानिचयका प्रमाण आवै तैसैं द्वितीयादि पृथ्वी विषै आदि तौ सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल अर अंत पंद्रह धनुष दोय हाथ बारह अंगुल तहां आदिमेंस्यो अंत घटाएं सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल रहे तिनको पटल प्रमाण ग्यारह ताका भाग दीएं धनुषादिकके हस्तादिक कीएं दोय हाथ वीस अंगुल अर दोय अंगुलका ग्यारह भाग प्रमाण हानि चय आया । ऐसै ही तृतीयादि पृथ्वीनिविषै भी हानि चय साधनां । बहुरि उपरि पृथ्वीका अंतपटलका उत्सेध विषै अपना अपना चय मिलाएं अपने अपने प्रथम पटल विषै उत्सेध होइ । बहुरि अपना अपना प्रथमादि पटलनिविषै क्रमतैं अपना अपना चय मिलाएं अपना अपना द्वितीयादि पटलनि विषै उत्सेध होइ । जैसैं प्रथम पृथ्वीका अंतपटलका उत्सेध सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल तामें दोय हाथ वीस अंगुल दोय अंगुलका ग्यारह भाग मिलाएं द्वितीय पृथ्वीका प्रथम पटल विषै आठ धनुष दोय हाथ दोय अंगुल अर दोय अंगुलका ग्यारह भाग प्रमाण उत्सेध भया । यामेंस्यो चय मिलाएं द्वितीय पटल विषै उत्सेध होइ ऐसैं अंतपटल पर्यन्त जाननां । बहुरि जैसैं द्वितीय पृथ्वी विषै विधान कह्या तैसैं ही तृतीयादि पृथ्वीनिविषै उत्सेध ल्यावनां ॥ २०१ ॥

आगैं नारकीनके अवधिज्ञानका विषयभूत क्षेत्रका प्रमाण कहैं हैं;—

रयणपहपुढवीए चउरो कोसा य ओहिखेत्तं तु ।

तेण परं पडिपुढवी कोसद्धविवज्जियं होदि ॥ २०२ ॥

रत्नप्रभापृथिव्याश्चत्वारः क्रोशाश्चावधिक्षेत्रं तु ।

ततः परं प्रतिपृथिव क्रोशार्धविवर्जितं भवति ॥ २०२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभा पृथ्वीके जीवनिक्कैं च्यारि कोस अवाधिका क्षेत्र है अवाधिज्ञान करि च्यारि कोश पर्यंत जानें । तीह परैं पृथ्वी पृथ्वी प्रति आध आध कोश घाटि है सो द्वितीयादि पृथ्वीके जीवनिक्कैं साढा तीन तीन अढाई दोय ज्योढ एक कोस अवाधिक्षेत्र जाननां ॥ २०२ ॥

आगैं नरकतैं निकस्या जीव कहां उपजै है सो नियम कहैं हैं;—

णिरयादो णिस्सरिदो णरतिरिण कम्मसण्णपज्जत्ते ।

गब्भभवे उपपज्जादि सत्तमपुढवीदु तिरिण व ॥ २०३ ॥

निरयानिसृतः नरतिरश्चोः कर्मसंज्ञिपर्याते ।

गर्भभवे उत्पद्यते सप्तमपृथिव्यास्तु तिरश्चि एव ॥ २०३ ॥

अर्थ—नरकतै निकस्या हूवा जीव मनुक्ष तिर्यच गतिविषै कर्मभूमि संज्ञी पर्याप्त गर्भज विषै ही उपजै । भोगभूमि असंज्ञी लब्ध्यपर्याप्तक सन्मूर्च्छनविषै न उपजै । बहुरि सप्तम पृथ्वीका निकस्या जीव तैसा कर्मभूमियां संज्ञी पर्याप्तक गर्भज तिर्यच ही विषै उपजै मनुक्ष भी न होइ ॥२०३॥

आगै मनुक्ष तिर्यच इत्यादि नियम उपजनेका कहा तहां कहा सर्वत्र ही उपजै इसी आशंका होत संतै कहै हैं;—

णिरयचरो णत्थि हरी बलचकी तुरियपहुदिणिस्सरिदो ।

तित्थचरमंगसंजद भिस्सतियं णत्थि णियमेण ॥ २०४ ॥

निरयचरो नास्ति हरिः बलचक्रिणौ तुरीयप्रभृतिनिःसृतः ।

तीर्थचरमांगसंयताः मिश्रत्रयं नास्ति नियमेन ॥ २०४ ॥

अर्थ—निरयचरः कहिए नरकतै निकस्या जीव सो नारायण बलभद्र चक्रवार्ति न होइ । बहुरि चौथी आदि पृथ्वीतै निकस्या तीर्थकर न होइ । पांचमी आदि पृथ्वीतै निकस्या चरम शरीरी न होइ । छठी आदि पृथ्वीतै निकस्या सकल संयमी न होइ सातवीं पृथ्वीतै निकस्या मिश्रत्रय कहिए मिश्र वा असंयत वा देशसंयत न होइ नियम करि । इहां असंयतपणा निषेध्या तातै सासादनका भी अभाव जानना ॥ २०४ ॥

आगै नरककौ जाता जीवनिका पृथ्वी प्रति नियम कहै हैं;—

अमणसरिसपविहंगमफणिसिंहित्थीण मच्छमणुवाणं ।

पढमादिसु उप्पत्ती अडवारादो दु दोण्णिवारोत्ति ॥ २०५ ॥

अमनस्कसरीसृपाविहंगमफणिसिंहस्त्रीणां मत्स्यमनुष्याणाम् ।

प्रथमादिषु उत्पत्तिः अष्टवारतस्तु द्विवार इति ॥ २०५ ॥

अर्थ—अमनस्क कहिए असंज्ञी पंचेद्री अर सरीसृप कहिए कृकलास गौंधरे आदि जीव अर विहंगम कहिए भेरुंड आदि पंखी अर फणी कहिए सर्प अर सिंह कहिए नाहर अर स्त्री कहिए मनुक्षणी अर मत्स्य मनुष्य कहिए मांछला वा मनुक्ष इनकै प्रथमादि पृथ्वीनिविषै अनुक्रमतै निरंतर उत्पत्ति आठ वारतै लगाय दोय वार पर्यंत जाननी । तहां अमनस्क प्रथम नरकि जाय तहांस्यो निकासि संज्ञी होइ मरिकरि बहुरि इहां ही असंज्ञी होइ मरिकरि प्रथम नरक जाय तब एक वार होय । ऐसै असंज्ञी उत्कृष्ट आठ वार प्रथम नरकि जाय । नरकका निकस्या असंज्ञी न होइ तातै वीचि एक संज्ञी पर्यायका एक अंतर जानना । बहुरि सरीसृपादिकविषै एक अंतर न ग्रहण करनां । सरीसृप दूसरे नरकि जाय तहांस्यो निकासि सरीसृप होइ फेरि दूसरे नरकि जाय ऐसै निरंतर सातवार जाइ । ऐसै ही निरंतर विहंगम तीसरे नरकि छह वार । फणी चौथे नरकि पांच वार । सिंह पांचवें नरकि च्यारि वार स्त्री छठे नरकि तीन वार निरंतर उपजै । बहुरि मत्स्य मनुष्य एक अंतर करि सातवें नरकि दोय वार उपजै तहां मत्स्य सातवें नरकि जाय तहांस्यो निकासि

गर्भज तिर्यच होइ मरि करि फेरि मत्स्य होइ सातवें नरकि जाय। इहां नरकका निकस्या सन्मूर्छन न होइ। मत्स्य सन्मूर्छन हैं तातैं एक अंतर कहा। बहुरि ऐसैं ही मनुष्य विषैं एक अंतर जाननां। जातैं सातवां नरकका निकस्या मनुष्य न होइ तातैं वीचिमें एक अंतर कहा। ऐसैं दोय वार उपजना जानना। इहां जीवनिके उपजनेका भी नियम जानना। असंज्ञी प्रथम पृथ्वीविषैं ही उपजै द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं न उपजै। सरीसृप दूसरी पृथ्वी पर्यंत ही उपजै तृतीयादि पृथ्वी विषैं न उपजै ऐसैं ही विहंगादिकका नियम जाननां। बहुरि उत्कृष्ट जेतीवार उपजै सो नियम जाननां। असंज्ञी आठ वार ही निरंतर नरक जाय नवमी वार न जाय इत्यादि नियम जाननां ॥ २०५ ॥

इहां असंज्ञी आदिककें एक वार अंतर होते भी निरंतर ही कहिए है;—

चउवीसमुहुत्तं पुण सत्ताहं पक्खमेकमासं च ।

दुगचदुछम्मासं च य जम्मणमरणंतरं णिरये ॥ २०६ ॥

चतुर्विंशतिर्मुहूर्ताः पुनः सप्ताहानि पक्षः एकमासश्च ।

द्विकचतुःषण्मासाश्च च जननमरणांतरं निरये ॥ २०६ ॥

अर्थ—प्रथमादि पृथ्वीनिविषैं क्रमतैं चौवीस मुहूर्त अर सात दिन अर एक पक्ष अर एक मास अर दोय मास अर च्यारि मास अर छह मास जन्म अर मरण विषैं अंतर जाननां। **भावार्थ**—प्रथम पृथ्वीविषैं कोई जीव न उपजै तौ उत्कृष्टपनैं चौईस मुहूर्त पर्यंत न उपजै न मरै चौईस मुहूर्त पीछैं कोई उपजै ही उपजै वा कोई मरै ही मरै ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीविषैं जाननां ॥ २०६ ॥

आगैं तिन नारकीनिके दुःखका आधिक्य कहैं हैं;—

अच्छिणिमीलणमेत्तं णत्थि सुहं दुक्खमेव अणुवद्धं ।

णिरए णेरइयाणं अहोणिसं पच्चमाणाणं ॥ २०७ ॥

अक्षिनिमीलनमात्रं नास्ति सुखं दुःखमेव अनुबद्धम् ।

निरये नैरयिकाणां अहर्निशं पच्यमानानाम् ॥ २०७ ॥

अर्थ—नेत्रका टिमकारनां मात्र भी सुख नाही है दुःख ही निरंतर संबंघरूप पाईए है नरक विषैं नारकी जीवनिकें। कैसे हैं नारकी। अहर्निशं काहिए निरंतर दुःखअग्निकारि पच्यमान हैं।

भावार्थ—मिथ्यात्व हिंसादि रौद्रध्यान बहुत आरंभ परिग्रह इत्यादि पापनिकारि जीव नरकि जाय तहां ऐसे दुःख पावै हैं। तातैं मिथ्यात्वादि पापनिका त्याग ही करनां योग्य है ॥ २०७ ॥

॥ इति नरकके स्वरूपका वर्णन सम्पूर्ण भया ॥

इति श्रीनेमिचन्द्राचार्यविरचिते त्रिलोकसारे लोकसामान्याधिकारः ॥ १ ॥

भवनाधिकार ॥ २ ॥



अथ लोकका सामान्य वर्णन करि 'भवणव्हेतर' इत्यादि पूर्वोक्त गाथासूत्र करि पंच अधि-
कार सूचन कीए तिन विषै तैसै ही अनुक्रमकरि भवनाधिकारकों आरंभ करता, संता तिन भव-
ननिका आधारभूत जो रत्नप्रभा पृथ्वी बहुरि तीह रत्नप्रभा पृथ्वीकी सहचारिणी जे शर्करा प्रभा
आदि पृथ्वी बहुरि तिन पृथ्वीनिविषै प्राप्त जे नरकनिके पटल बहुरि तिन पटलनि प्राप्त जे नारकी
तिनका आयु आदिक इन सबनिकों प्रसंग पाइ व्याख्यान करि विवाक्षित प्रथम भवनाधि-
कार ताकों कहनेकी है इच्छा जाकै ऐसा आचार्य सो तीह भवनाधिकारकी आदि विषै भवनलोक
संबधी जे चैत्यालय तिनकों वंदना करता संता ऐसा मंगल सूत्र कहै है;—

भवणेषु सत्तकोडी बावत्तरिलक्ख होंति जिणगेहा ।

भवणामरिंदमहिया भवणसमा ताणि वंदामि ॥ २०८ ॥

भवणेषु सत्तकोड्यः द्वासत्ततिलक्षाणि भवंति जिणगेहानि ।

भवनामरेंद्रमहितानि भवनसमानि तानि वंदे ॥ २०८ ॥

अर्थ—भवननिविषै सात कोडि बहत्तरि लाख जिन मंदिर हैं भवनवासी देव वा तिनके
इंद्रनिकरि पूजनीक हैं । बहुरि भवनवासी देवनिके जे ते भवन हैं तिनहींके समान संख्याकों धरै
हैं । जातै एक एक भवनविषै एक एक चैत्यालय है । तिन चैत्यालयनिकों मैं वंदौ हों ॥ २०८ ॥

आगै भवनिवासी देवनिका कुलभेद आदि तीन गाथाकरि कहैं है;—

असुरा नागसुवण्णा दीपोदहिविज्जुथणिददिसअग्गी ।

वादकुमारा पढमे चमरो वइरोइणो इंदौ ॥ २०९ ॥

असुरो नागसुपर्णौ द्वीपोदधिविद्युत्स्तनितदिगन्नयः ।

वातकुमारः प्रथमे चमरो वैरोचन इंद्रः ॥ २०९ ॥

अर्थ—असुरकुमार १ नामकुमार १ सुपर्णकुमार १ द्वीपकुमार १ उदधिकुमार १ विद्यु-
त्कुमार १ स्तनितकुमार १ दिक्कुमार १ अग्निकुमार १ वातकुमार १ ऐसैं भवनवासी देवनिके दश
कुल हैं । तिन विषै पहले असुरकुमार कुलविषै चमर अर वैरोचन ए दोग इंद्र हैं ॥ २०९ ॥

भूदानंदो धरणाणंदो वेणु य वेणुधारी य ।

पुण्णवसिद्ध जलप्पह जलकंतो घोसमहघोसो ॥ २१० ॥

भूतानंदो धरणानंदः वेणुश्च वेणुधारी च ।

पूर्णवशिष्टौ जलप्रभः जलकांतः घोषमहाघोषौ ॥ २१० ॥

अर्थ—नागकुमार कुलविषै भूतानंद धरणानंद ए दोग इंद्र हैं । सुपर्णकुमार कुल विषै वेणु अर वेणु अर वेणुधारी दोग इंद्र हैं । द्वीपकुमार कुल विषै पूर्ण वशिष्ठ ए दोग इंद्र हैं । उदधिकुमार कुल विषै जलप्रभ जलकांत ए दोग इंद्र हैं । विद्युत्कुमार कुल विषै घोष महाघोष ए दोग इंद्र हैं ॥ २१० ॥

**हरिसेणो हरिकंतो अमिदगदी अमिदवाहणगिसिही ।
अग्गीवाहणणामा बेलंबपभंजणा सेसे ॥ २११ ॥ जुम्मं ।
हरिषेणः हरिकांतः अमितगतिः अमितवाहनः अग्निशिखी ।
अग्निवाहननामा बेलंबप्रभंजनौ शेषे ॥ २११ ॥ युग्मं ।**

अर्थ—स्तनितकुमार कुल विषै हरिषेण हरिकांत ए दोग इंद्र हैं । दिक्कुमार कुल विषै अमितगति अमितवाहन ए दोग इंद्र हैं । अग्निकुमार कुल विषै अग्निशिखी अग्निवाहन नाम ए दोग इंद्र हैं । वातकुमार कुलविषै बेलंब प्रभंजन ए दोग इंद्र हैं । ऐसै शेषनागादि कुल विषै इंद्र जानने ॥ २११ ॥

आगै तिनकै परस्पर ईर्षाका स्थान कहै हैं;—

**चमरो सोहम्मेण य भूदाणंदो य वेणुणा तोसिं ।
विदिया विदियेहिं समं ईसंति सहावदो णियमा ॥ २१२ ॥
चमरः सौधर्मेण च भूतानन्दश्च वेणुना तेषां ।
द्वितीया द्वितीयैः समं ईर्ष्यति स्वभावतो नियमात् ॥ २१२ ॥**

अर्थ—चमर इंद्र तौ सौधर्म इंद्र सहित अर भूतानंद इंद्र वेणु इंद्र सहित अर तिनके द्वितीया जे दूसरे वैरोचन और धरणानंद ते द्वितीयैः समं कहिए दूसरे ईशान इंद्र अर वेणुधारी इंद्र तिन सहित ईर्ष्यन्ति कहिए ईर्षा करै हैं । स्वभाव ही तै कारण विना ही नियम करि इनके ऐसै स्पर्द्धा हो है ॥ २१२ ॥

आगै तिन असुरादिकानिके चिन्ह कहै हैं;—

**चूडामणिफणिगरुडं गजमयरं वडमाणगं वज्जं ।
हरिकलसस्सं चिहं मउले चेतमहुमाह र्थया ॥ २१३ ॥
चूडामणिफणिगरुडं गजमकरं वर्धमानकं वज्जं ।
हरिकलशाश्वं चिहं मुकुटे चैत्यद्रुमा अथ ध्वजाः ॥ २१३ ॥**

अर्थ—असुर कुमारादिकानिकै अनुक्रमतै चूडामणि रत्न अर सर्प अर गरुड अर हाथी अर मांछला अर सांथिया अर वज्र अर सिंह कलश अर घोडा मुकट विषै चिन्ह जाननां । मुकट विषै इनका आकार है सो तिनका चिन्ह हैं । अथवा जुदी जुदी जातिके चैत्यवृक्ष बहुरि ध्वजा तिन असुरादिकानिका चिन्ह हैं ॥ २१३ ॥

आगै तिनके चैत्यवृक्षनिके भेदनिकों कहै हैं;—

अस्सत्थसत्तसामलिजंबूवेतसकदंबकपियंगु ।

सिरिसं पलासरायद्दुमा य असुरादिचेत्तरू ॥ २१४ ॥

अश्वत्थसत्तच्छदशाल्मलिजंबूवेतसकदंबकप्रियंगवः ।

शिरीषः पलाशराजद्रुमौ च असुरादिचैत्यतरवः ॥ २१४ ॥

अर्थ—अश्वत्थ वृक्ष अर सतपर्ण वृक्ष अर शाल्मली वृक्ष अर जंबू वृक्ष अर वेतस वृक्ष अर कदंब वृक्ष अर प्रयंगु वृक्ष अर सरिसौ वृक्ष अर पलाश वृक्ष अर राजद्रुम कहिए किरमाला वृक्ष अनुक्रमतै असुरकुमारादिकानिके चैत्यवृक्ष हैं ॥ २१४ ॥

आगै चैत्यवृक्षानिके सार्थिकपनांकों दृढ करै हैं;—

चेत्तरूणं मूले पत्तेयं पडिदिसम्मिह पंचेव ।

पलियंकठिया पडिमा सुराचिया ताणि वंदामि ॥ २१५ ॥

चैत्यतरूणां मूले प्रत्येकं प्रतिदिशं पंचैव ।

पर्यकस्थिताः प्रतिमाः सुराचिताः ताः वंदे ॥ २१५ ॥

अर्थ—चैत्यवृक्षानिके मूल विषै प्रत्येक प्रतिदिशा विषै पांच पांच प्रतिमा पर्यक आसन करि स्थित देवनिकरि पूजित हैं । तिन प्रतिमानिकों वंदों हों । भावार्थ । एक एक चैत्यवृक्ष नीचै एक एक दिशाविषै पांच पांच जिनबिंब पंक्ति करि विराजमान हैं । तातै वृक्षानिकों चैत्यवृक्ष कहिए हैं ॥ २१५ ॥

आगै तिन प्रतिमानिके आगै तिष्ठते जु मानस्तंभ तिनका स्वरूप कहै हैं;—

पडिदिसयं णियसीसे सगसगपडिमाजुदा विराजंति ।

तुंगा माणत्थंभा रयणमया पडिदिसं पंच ॥ २१६ ॥

प्रतिदिशं निजशीर्षे सप्तसप्तप्रतिमायुता विराजंते ।

तुंगा मानस्तंभा रत्नमया प्रतिदिशं पंच ॥ २१६ ॥

अर्थ—दिशा दिशा प्रति अपने उपरिम भागविषै सात सात प्रतिमा संयुक्त उत्तुंग रत्न-मई मानस्तंभ दिशादिशा प्रति पांच पांच विराजें हैं ॥ भावार्थ । एक एक प्रतिमाके आगै एक एक मानस्तंभ हैं मान दूरि करनेकों समर्थ ऊंचा थांभा है । सो चैत्यवृक्षकी एक एक दिशा प्रति पांच पांच मानस्तंभ भए । बहुरि तिन मानस्तंभनिके उपरि एक एक दिशा प्रति सात सात जिनबिंब विराजें हैं ॥ २१६ ॥

आगै भवनवासी इंद्रनिके भवणनिकी संख्या जणावता सूत्र कहै हैं;—

चोत्तिसं चउदालं अडतीसं छसुवि ताल पण्णासं ।

चउचउविहीण ताणि य इंदाणं भवणलक्खाणि ॥ २१७ ॥

चतुस्त्रिंशच्चतुश्चत्वारिंशदष्टात्रिंशत् षट्सु अपि चत्वारिंशत् पंचाशत् ।

चतुश्चतुर्विहीनानि तानि च इंदाणां भवनलक्षाणि ॥ २१७ ॥

अर्थ—चौतीस अर चवालीस अर अठतीस अर छहनि विषै चालीस अर पंचास अर उत्तर इंद्रनि प्रति च्यारि च्यारि घाटि ऐसै इंद्रनिके भवननिके लक्ष जाननै । भावार्थ । एक एक कुल

विषै दोग दोग इंद्र कहे थे तहां दोऊनि विषै पहलैं जाका नाम कद्या सो दक्षिणेंद्र है अर पीछे जाका नाम कद्या सो उत्तरेंद्र है । दक्षिण दिशाके भवन विषै जाका वास पाईए सो दक्षिणेंद्र जाननां । अर उत्तर दिशाके भवन विषै जाका वास पाईए सो उत्तरेंद्र जाननां । तहां असुर कुमार कुल विषै दक्षिणेंद्रकें तौ चौतीस लाख भवन हैं । उत्तरेंद्रकें तीस लाख हैं मिलि करि चौसठि लाख भए । बहुरि नागकुमार कुल विषै दक्षिणेंद्रकें तौ चवालीस लाख हैं उत्तरेंद्रके चालीस लाख हैं मिलकर चौरासी लाख भवन भए । बहुरि सुपर्णकुमार कुल विषै दक्षिणेंद्रकें अठतीस लाख हैं अर उत्तरेंद्रकें चौतीस लाख हैं मिलिकरि बहत्तरि लाख भवन भए । द्वीप कुमारादि छह कुलनि विषै एक एक कुल विषै दक्षिणेंद्रके चालीस लाख हैं उत्तरेंद्रकें छतीस लाख हैं मिलिकरि छिहत्तरि लाख भवन भए । बहुरि वातकुमार कुल विषै दक्षिणेंद्रकें पंचास लाख हैं उत्तरेंद्रकें छियालीस लाख हैं मिलिकरि छिनवै लाख भवन भए ऐसैं दशौ कुलके सर्व भवन सात कोडि बहत्तरि लाख जानने ॥ २१७ ॥

आगैं तिन भवननिका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

ससुगंधपुष्पसोहियरयणधरा रयणभित्ति णिचपहा ।

सर्व्विन्द्रियसुहदाइहिं सिरिखंडादिहिं चिदा भवणा ॥ २१८ ॥

ससुगंधपुष्पशोभितरत्नधरा रत्नभित्तयः नित्यप्रभाः ।

सर्व्वेन्द्रियसुखदायिभिः श्रीखंडादिभिश्चिता भवनाः ॥ २१८ ॥

अर्थ—सुगंध फूलनिकरि संयुक्त सोभायमान रत्नमयी जिनकी भूमि हैं । बहुरि रत्नमई ही जिनकी भीति हैं नित्य प्रकाश संयुक्त हैं सब इंद्रियनिकों सुखदायक जे चंदनादि वस्तु तिनकरि सिंचित हैं ऐसे भवनवासी देवनिके भवन हैं ॥ २१८ ॥

आगैं तिन भवननिविषै जे देव हैं तिनका ऐश्वर्य कहैं हैं;—

अष्टगुणिडूविसिद्धा णाणामणिभूषणेही दित्तंगा ।

भुंजंति भोगमिष्टं सग्गपुव्वतवेण तत्थ सुरा ॥ २१९ ॥

अष्टगुणार्धिविशिष्टाः नानामणिभूषणैः दीप्तांगाः ।

भुंजंति भोगमिष्टं स्वकपूर्व्वतपसा तत्र सुराः ॥ २१९ ॥

अर्थ—तहां जे देव हैं ते अणिमा महिमा आदि आठ गुण ऋद्धि करि विशिष्ट हैं बहुरि नाना प्रकार मणिका आभूषणनि करि प्रकासमान है अंग जिनका ऐसैं हैं । ते अपनां पूर्व कीया तपका फल करि इष्टभोगकों भोगवैं हैं ॥ २१९ ॥

आगैं ते भवन भूमिगृहकी उपमा धरैं हैं जैसैं इहां पृथ्वीविषै मंदिर बनाईए ताका नाम प्रवृत्ति विषै तहखाना कहिए है । तैसैं खरभाग पंकभागरूप रत्नप्रभा पृथ्वीविषै भवन जानने । इहां प्रश्न । जो नरक विल भी ऐसैं ही पृथ्वी विषै कहे थे तहां विल संज्ञा भई इहां भवन संज्ञा भई सो कारन कहा । ताका समाधान । जैसैं इहां पृथ्वी विषै तिर्यचादिक पापी जीवानिके स्थान तिनकों विल कहिए हैं । अर पुन्यवान मनुष्यनिके रहनेके स्थान तिनकों भूमिगृह कहिए हैं । तैसैं नारकी

पापी जीवनिकै रहनेके स्थाननिकों विल कहे अर पुन्यवान देवनिके रहनेके स्थाननिकों भवन कहे । बहुरि प्रश्न । जो नरक विलनिका वर्णन विषै पूर्वै भूमिगृहका दृष्टांत काहेकों दीया विलनि-
हीका दृष्टांत देनां था । ताका समाधान । जो भूमिगृहका दृष्टांत करि पटलनिका वा इंद्रकादि
विलनिका स्वरूप नीकै पहांचानिए है तातै भूमिगृहका दृष्टांत दिया था ।

ऐसै भूमिगृहकी उपमा धरै जु भवन तिनका व्यासादिक कहै हैं;—

जोयणसंखासंखाकोडी तव्विस्थंडं तु चउरस्सा ।

तिसयं बहलं मज्झं पाडि सयतुंगेककूडं च ॥ २२० ॥

योजनसंख्यासंख्यकोट्यः तद्विस्तारस्तु चतुरस्राः ।

त्रिशतं बाहल्यं मध्यं प्रति शततुंगैककूटश्च ॥ २२० ॥

अर्थ—जघन्य तौ संख्यात कोडि योजन अर उत्कृष्ट असंख्यात कोडि योजन प्रमाण तिन
भवननिका विस्तार है । चौडाई वा लंबाईका इतना प्रमाण हैं । बहुरि ते भवन चौकोर हैं । बहुरि
तिनका तीनसै योजन बाहुल्य है । भूमितै छाति पर्यंत इतने ऊंचे हैं । बहुरि एत एक भवन
प्रति मध्यविषै सौ योजन ऊंचा एक पर्वत है । ताके उपरि चैत्यालय हैं ॥ २२० ॥

आगै तिन भवननिका स्थाननिकों दोय गाथानि करि कहै हैं;—

वैतर अप्पमहक्कियमज्झिमभवणामराण भवणाणि ।

भूमीदोधो इगिदुगबादालसहस्सइगिलक्खे ॥ २२१ ॥

व्यंतराणां अल्पमहर्धिकमध्यमभवनामराणां भवनानि ।

भूमितोधः एकद्विकद्वाचत्वारिंशत्सहस्रएकलक्षाणि ॥ २२१ ॥

अर्थ—चित्रा भूमितै लगाय नीचै नीचै एक हजार योजन जाइ करि तौ व्यंतरनिके आवास
हैं । बहुरि दोय हजार योजन जाय अल्प ऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं । बहुरि वियालीस
हजार योजन जाइ महाऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं । बहुरि एक लक्ष योजन जाइ मध्यम
ऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं ॥ २२१ ॥

रयणप्पहपंकड्ढे भागे असुराण होंति आवासा ।

भौम्मेषु रक्खसाणं अवसेसाणं खरे भागे ॥ २२२ ॥

रत्नप्रभापंकाढ्ये भागे असुराणां भवति आवासाः ।

भौमेषु राक्षसानां अवशेषाणां खरे भागे ॥ २२२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभाका पंकभाग विषै असुरकुमारनिके भवन हैं । बहुरि व्यंतरनि विषै राक्षश-
निके तहां हीं आवास है । बहुरि अवशेष नागकुमारादि भवनवासीनिके भवन वा राक्षस विना सात
जातिके व्यंतरनिके आवास खरभागविषै पाईए हैं ॥ २२२ ॥

आगै देवनिके इंद्रादिक भेद कहै हैं;—

इंदपडिंददिगिंदा तेत्तीससुरा समाणतणुरक्खा ।

परिसत्तयआणीया पइण्णगभियोगकिब्भिसिया ॥ २२३ ॥

इंद्रप्रतींद्रदिगींद्राः त्रयस्त्रिंशत्सुराः सामानिकतनुरक्षकौ ।

परिषत्रयानीकौ प्रकीर्णकाभियोग्यकिल्बिषिकाः ॥ २२३ ॥

अर्थ—इंद्र १ प्रतींद्र १ दिगींद्र कहिए लोकपाल १ त्रयस्त्रिंशद्देव १ सामानिक १ तनुरक्षक १ तीन प्रकार पारिषत् १ अनीक १ प्रकीर्णक १ आभियोग्य १ किल्बिषिक १ ऐसें भेद जानने ॥ २२३ ॥

आगै इन इंद्रादि पदवीनिका दृष्टांत कहैं हैं;—

रायजुवतंतराए पुत्रकलत्रंगरक्षवरमज्जे ।

अवरे तंडे सेनापुरपरिजणगायणेहि समा ॥ २२४ ॥

राजयुवतंत्रराजैः पुत्रकलत्रांगरक्षवरमध्येन ।

अवरेण तंडेण सेनापुरपरिजनगायकैः समाः ॥ २२४ ॥

अर्थ—जैसें इहां राजा तैसें इंद्र हैं । बहुरि जैसें युवराजा तैसें प्रतींद्र हैं । बहुरि जैसें तंत्रादि राजा कहिए सेनापति तैसें लोकपाल हैं । बहुरि जैसें राजाका पुत्र तैसें तेतीस देव हो हैं ते त्रयस्त्रिंशत्क हैं । बहुरि जैसें राजाके कलत्र तैसें इंद्रकीसी समानताको धरै सामानिक हैं । बहुरि जैसें राजाके अंगरक्षक तैसें तनुरक्षक हैं । बहुरि जैसें राजाके सभाविषै तिष्ठने योग्य होहि तैसें पारिषत् हैं । ते तीन प्रकार—तहां जैसें उच्छ्रष्ट मांहिली सभा विषै तिष्ठने योग्य तैसें अंतः पारिषद जानने । बहुरि जैसें मध्य वीचिकी सभा विषै तिष्ठने योग्य तैसें मध्य पारिषद जानने बहुरि जैसें जघन्य बाह्य सभाविषै तिष्ठने योग्य तैसें बाह्य पारिषद जानने । ऐसें तंडसेन कहिए तीन प्रकार सभा करि समान जानने । बहुरि जैसें राजाके हस्ती आदि सेना ऐसें अनीक हैं अनीक जातिके देव ही हस्ती आदि आकाररूप अपने नियोगतैं हो हैं । बहुरि जैसें पुरजन व्यापारी तैसें प्रकीर्णक हैं । बहुरि जैसें परिजन दास आदि तैसें आभियोग्य हैं । बहुरि जैसें गायक गावने आदि क्रियातैं आजीविकाके करन हारे तैसें किल्बिषक हैं । ऐसें देवनिके भेद जानने ॥ २२४ ॥

आगै च्यारि प्रकार देवनि विषै इंद्रादिक भेदानिके संभवनेका विधान कहैं हैं;—

व्यंतरज्योतिसियाणं तेत्तीससुरा ण लोयपाला य ।

भवणे कप्पे सच्चे हवंति अहमिंदया तत्तो ॥ २२५ ॥

व्यंतरज्योतिष्काणां त्रयस्त्रिंशत्सुरा न लोकपालाः च ।

भवने कल्पे सर्वे भवंति अहमिंद्रकाः ततः ॥ २२५ ॥

अर्थ—व्यंतर अर ज्योतिषी इनकैं तौ त्रयस्त्रिंशत् देव बहुरि लोकपाल ए दोय भेद नाही हैं । बहुरि भवनवासी अर स्वर्गवासीनि विषै सर्व पूर्वोक्त भेद हैं । बहुरि तातैं परैं स्वर्गनिके उपरि अहमिंद्र हैं ते सर्व ही समान हैं । हीनाधिकपना तहां नाहीं हैं ॥ २२५ ॥

आगै भवनवासीनिविषै इंद्रादिक पारिषत् तीनप्रकार पर्यन्त देवनिकी संख्या तीन गाथानिकरि कहैं हैं;—

इंद्रसमा हु पडिंदा सोमो यम वरुण तह कुवेरा य ।
 पुष्वादिलोयवाला तेत्तीससुरा हु तेत्तीसा ॥ २२६ ॥
 इंद्रसमाः खलुः प्रतींद्राः सोमो यमो वरुणस्तथा कुवेरश्च ।
 पूर्वादिलोकपालाः त्रयस्त्रिंशत्सुराः हि त्रयस्त्रिंशत् ॥ २२६ ॥

अर्थ—इंद्रके समान प्रतींद्र हैं । एक इंद्र एक प्रतींद्र जाननां । बहुरि पूर्वादि दिशानिके च्यारि लोकपाल हैं । सोम १ यम १ वरुण १ कुवेर १ तिनके नाम हैं । बहुरि त्रयस्त्रिंशत् देव तेतीस हैं ॥ २२६ ॥

चमरतिये सामाणियतणुरक्खाणं पमाणमणुकमसो ।
 अडसोलकदिसहस्सा चउसोलसहस्सहीणकमा ॥ २२७ ॥
 चमरत्रिके सामानिकतनुरक्षाणां प्रमाणमनुक्रमशः ।
 अष्टषोडशकृतिसहस्राणि चतुःषोडशसहस्रहीनक्रमाणि ॥ २२७ ॥

अर्थ—चमर आदि तीन इंद्रनिविषैं सामानिक अर तनुरक्षक अनुक्रमतैं आठ अर सोलहका वर्ग प्रमाण हजार बहुरि च्यारि हजार अर सोलह हजार घटता क्रमतैं जाननैं । भावार्थ-चमरेंद्रके सामानिक देव तौ चौसठि हजार हैं । अर तनुरक्षक दोग लाख छपन हजार हैं । बहुरि वैरोचन इंद्रकें सामानिक साठि हजार हैं । अर तनुरक्षक दोग लाख चालीस हजार हैं । बहुरि भूतानंद इंद्रकें सामानिक छपन हजार हैं । तनुरक्षक दोग लाख चौईस हजार हैं ॥ २२७ ॥

पणसहस्स विलक्खा सेसे तट्ठाण परिसमादिल्लं ।
 अडल्लव्वीसं छच्चउसहस्स दुसहस्सवाड्ढिकमा ॥ २२८ ॥
 पंचाशत्सहस्राणि द्विलक्षे शेषे तत्स्थाने परिषदादिमा ।
 अष्टषड्विंश पट्चतुःसहस्राणि द्विसहस्रवृद्धिक्रमाः ॥ २२८ ॥

अर्थ—शेष जे अवशेष नागकुमारादिकके सत्रह इंद्र तिनविषैं सामानिक पंचास हजार हैं । तनुरक्षक दोग लाख हैं । बहुरि तिनहीं स्थानकनिविषैं परिषत् कहिए है । आदिकी अंतः परिषत् चमरेंद्रकें अठईस हजार, वैरोचनकें छवीस हजार, भूतानंदके छह हजार, अवशेष इंद्रनिकें च्यारि हजार हैं । बहुरि अंतः परिषत्का प्रमाणतैं मध्य परिषत् दोग दोग हजार बघते जाननैं । बहुरि मध्य परिषत्तैं बाह्य परिषत् दोग दोग हजार बघते जाननैं ॥ २२८ ॥

आगैं तीनों परिषत्का विशेष नाम कहैं हैं;—

पठमा परिसा समिदा विदिया चंदोत्ति णामदो होदि ।
 तदिया जदुअहिधाणा एवं सव्वेसु देवेसु ॥ २२९ ॥
 प्रथमा परिषत् समित् द्वितीया चंद्रा इति नामतो भवति ।
 तृतीया जत्वभिधाना एवं सर्वेषु देवेषु ॥ २२९ ॥

अर्थ—प्रथम परिषत् समित् ऐसे नाम धरै है । दूसरी चंद्रा ऐसे नामतैं युक्त है । तीसरी जतु ऐसे नाम युक्त है । ऐसैं ही सर्व देवनिविषैं समानिके नाम जाननैं ॥ २२९ ॥

अब आनीकके भेद अर तिनकी संख्या कहै हैं;—

सत्तेव य आणीया पत्तयं सत्तसत्तकक्खजुदा ।

पढमं ससमाणसमं तद्दुगुणं चरिमकक्खोत्ति ॥ २३० ॥

ससैव च आनीकाः प्रत्येक सत्तसत्तकक्षयुताः ।

प्रथमं स्वसामानिकसमं तद्विगुणं चरमकक्षं इति ॥ २३० ॥

अर्थ—सात ही आनीकके भेद हैं तहां एक एक भेद विषै सात सात कक्ष कहिए फौज हैं । तहां प्रथम आनीकका कक्षविषै प्रमाण अपनै अपनै सामानिक देवानिके समान हैं । तातैं दूणां दूणां प्रमाण अंतका कक्षविषै पर्यंत जाननां । तहां चमरेंद्रकैं भैसानिकी प्रथम फौजविषै चौसठी हजार भैसे हैं । तातैं दूणें दूसरी फौजविषै भैसे हैं । ऐसैं सातई फौज पर्यंत दूणें दूणें जाननें । बहुरि ऐसैं ही इतनें इतनें ही घोटकादिक जाननें । याही प्रकार औरनिकौं यथा संभव प्रमाण जानि लेना ॥ २३० ॥

आमैं गुणकाररूप उत्तरका अनुक्रम करि भया जो सातौं आनीकका प्रमाण ताके ल्याव-नेकों जहां स्थान स्थान प्रति गुणकार होइ ताके जोड देनेका कारणसूत्र कहैं हैं;—

पदमेत्ते गुणयारे अण्णोण्णं गुणिय रूवपरिहीणे ।

रूऊणगुणेण हिण्णं मुहेण गुणियम्मि गुणगणियं ॥ २३१ ॥

पदमात्रान् गुणकारान् अन्योन्यं गुणयित्वा रूपपरीहिणे ।

रूपोनगुणेन ह्वते मुखेन गुणिते गुणगणितम् ॥ २३१ ॥

अर्थ—स्थानकनिका प्रमाणरूप जो गच्छ सो पद कहिए अर स्थान स्थान प्रति जितनेका गुणकार सो गुणकार कहिए सो पदका प्रमाणके समान गुणकार मांडि तिनकों परस्पर गुणिए बहुरि जो प्रमाण होइ तामें एक घटाईए बहुरि ताकों एक घाटि गुणकारका भाग दीजिए । बहुरि लब्ध प्रमाणकों मुख जो आदि विषै प्रमाण तीहिं करि गुणिए । ऐसैं करतैं गुण संकलन हो है । सो इहां सात कक्ष हैं तातैं पदका प्रमाण सात है । अर इहां दूणां दूणां क्रम कक्षा तातैं गुणकार दोय है । सो सात जायगां दूवा मांडि । २।२।२।२।२।२।२। परस्पर गुणें एकसौ अठाईस होइ यामें एक घटाए एकसो सताईस होइ । बहुरि एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीए एकसो सत्ताईस इनकों प्रथम कक्षाका प्रमाण रूप मुख चौंसठि हजार करि गुणें इक्यासी लाख अठाईस हजार एक जातिकी सेना भई याकों सात करि गुणें सातौं जातिके समस्त आनीक देवनिका प्रमाण पांच कोडि अडसठि लाख छिनवै हजार चमरेंद्रकैं जाननां । ऐसैं ही वैरोचन आदिकैं भी यथासंभव प्रमाण जानि लेनां । बहुरि इहां पदमेत्ते गुणयारे इत्यादि करण सूत्र कैसैं कक्षा ताका विधानरूप वासनाका वर्णन संस्कृत टीकातैं जाननां ॥ २३१ ॥

अब आनीकके भेदका स्वरूप दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

असुरस्स महिसतुरगरथेभपदाती कमेण गंधव्वा ।

णिच्चाणीय महत्तर महत्तरी छक एकां य ॥ २३२ ॥

असुरस्य महिषतुरगरथेभपदातयः क्रमेण गंधर्वः ।

नृत्यानीकं महत्तरा महत्तरी षट् एका च ॥ २३२ ॥

अर्थ—असुरकुमारकै भैंसा १ घोडा १ रथ १ हाथी १ पयादा १ गंधर्व १ नृत्यकी १ ए सात प्रकार सेना हैं । तहां पहली छह सेना विषै महत्तर हैं एक नृत्यकी सेना विषै महत्तरी है ॥ **भावार्थ** ॥ भैंसा आदिक छह जातिकी सेना विषै तौ प्रधान देव हैं । अर नृत्यकी सेना विषै प्रधान देवांगना हैं ॥ २३२ ॥

णावा गरुडिभमयरं करभं खग्गी मिंगारिसिविगस्सं ।

पढमाणीयं सेसे सेसाणीया हु पुव्वं व ॥ २३३ ॥

नौगरुडेभमकरं करभः खङ्गी मृगारिशिबिकाश्वम् ।

प्रथमानािकं शेषे शेषानीकास्तु पूर्वं इव ॥ २३३ ॥

अर्थ—असुरनिके प्रथम आनीक भैंसा कहा था अवशेष नागकुमारादिकके क्रमते नाव १ वा सर्प १ गरुड १ हाथी १ मांछला १ जंट १ सूर १ सिंह १ पालिकी १ घोडा १ प्रथम आनीक हैं । ऐसे प्रथम आनीकविषै तौ भेद हैं अन्य अवशेष आनीक पूर्वोक्त असुरनिके समान हैं ॥ २३३ ॥

आगै भवनवासी देव असंख्याते हैं ताते प्रकीर्णादिक देव गाथानि विषै विना कहे भी असंख्यात जानिए याते तिनका प्रमाणकौ न कहि करि अव असुरकुमारादिनिके देवांगनानिकी संख्या दोय गाथानिकरि कहे हैं;—

असुरतिष् देवीओ छप्पणसहस्स तत्थ बल्लभिया ।

सोलसहस्सं छक्कसहस्सेणूणक्कमो होई ॥ २३४ ॥

असुरत्रिके देव्यः षट्पंचाशत्सहस्त्राणि तत्र बल्लभिकाः ।

षोडशसहस्त्राणि षट्सहस्त्रेणोनक्रमो भवति ॥ २३४ ॥

अर्थ—असुरादिक तीन विषै असुरकुमारका इंद्रके देवांगना छप्पन हजार हैं तिनविषै सोलह हजार बल्लभिका प्यारी देवांगना हैं पांच महादेवी हैं सो आगै कहेंगे । अर पांच घाटि चालीस हजार परिवार देवी हैं । बहुरि औरनि विषै छह छह हजार घाटि हैं सो नाग कुमारका इंद्रके पंचास हजार देवी हैं । सुपर्णकुमारका इंद्रके चवालीस हजार हैं ॥ २३४ ॥

बचीस बे सहस्सा सेसे पण पण सजेद्वदेवीओ ।

तिसु अट्ट छस्सहस्सं विगुव्वणामूलतणुसहियं ॥ २३५ ॥

द्वात्रिंशत् द्वे सहस्त्राणि शेषे पंच पंच स्वज्येष्ठदेव्यः ।

त्रिषु अष्ट षट्सहस्त्रं विकुर्वणामूलतनुसहिताः ॥ २३५ ॥

अर्थ—शेष द्वीप कुमारादिकविषै इंद्रके वत्तिस हजार देवांगना हैं तिनविषै दोय हजार बल्लभिका हैं । बहुरि कही जु ए देवांगना तिनविषै पांच पांच ज्येष्ठ देवी कहिए पटराणीवत् महादेवी हैं । बहुरि तिन असुरादि तीनविषै अर अवशेष द्वीपादि विषै ज्येष्ठ देवीके आठ हजार छह

हजार मूल शरीर सहित विक्रिया है । असुरादि तीन विषै एक एक ज्येष्ठदेवी विक्रिया करै तौ आठ हजार देवांगना रूप होइ तामें एक आप मूल अर अन्य विक्रियारूप देवी होइ ऐसै ही अवशेषनि-विषै एक एक ज्येष्ठदेवी विक्रिया करै तौ मूल शरीर सहित छह हजार देवांगनारूप होइ ॥२३५॥

आगैं चमर और वैरोचन इंद्रकैं पट्टदेवीनिके नाम कहैं हैं;—

किंहु सुमेघ सुकड्ढा रयणि य जेट्टित्थि पउम महपउमा ।

पउमसिरी कणयसिरी कणयादिममाल चमरदुगे ॥ २३६ ॥

कृष्णा सुमेघा सुकाढ्या रत्नी च ज्येष्ठास्त्रियः पद्मा महापद्मा ।

पद्मश्रीः कनकश्रीः कनकादिमाला चमरादिके ॥ २३६ ॥

अर्थ—कृष्णा १ सुमेघा १ सुका १ सुकाढ्या १ रत्नी ए पंच चमरेद्रकैं ज्येष्ठ स्त्री हैं । पद्मा १ महापद्मा १ पद्मश्री १ कनकश्री १ कनकमाला १ ए पंच वैरोचन इंद्रकैं ज्येष्ठ स्त्री हैं । ऐसै ए चमर द्विकविषै ज्येष्ठ स्त्री हैं ॥ २३६ ॥

आगैं इंद्र प्रतींद्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत्सामान्यक इनकैं इंद्रके समान ही देवांगना पाईए हैं तातैं इनकैं जुदा प्रमाण न कहि औरनिकैं देवांगनाका प्रमाण तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

अड्डाइज्जं तिसयं पण्णासूणं कमं तु चमरदुगे ।

पारिसदेवी णागे विसयं तु ससद्धितालसयं ॥ २३७ ॥

अर्धतृतीयं त्रिशतं पंचाशदूनः क्रमस्तु चमरादिके ।

पारिषदेव्यः नागे द्विशतं तु सषष्टिचत्वारिंशच्छतं ॥ २३७ ॥

अर्थ—अट्टाईसै तीनसै पचास घाटि क्रमतैं चमरद्विकविषै पारिषदानिकैं देवी जाननी ॥ भावार्थ ॥ चमर इंद्रके अंतः पारिषदानिकैं अट्टाईसै मध्य पारिषदानिकैं दोयसै बाह्यपारिषदानिकैं ज्योदसै देवांगना हैं । बहुरि वैरोचनइंद्रके अंतः पारिषदानिकैं तीनसै मध्य पारिषदानिके अट्टाईसै बाह्य पारिषदानिकैं दोयसै देवांगना हैं बहुरि नागकुमारविषै अंतः पारिषदानिकैं दोयसै मध्य पारिषदानिकैं एकसौ साठि बाह्य पारिषदानिकैं एकसौ चालीस देवांगना हैं ॥ २३७ ॥

गरुडे सेसे सोलस चउदस दससंगुणं तु वीसूणा ।

सयसयदेवी पेधामहत्तराणंगरक्खाणं ॥ २३८ ॥

गरुडे शेषे षोडश चतुर्दश दशसंगुणाः तु विशोनाः ।

शतशतदेव्यः पृतनामहत्तराणां अंगरक्षाणाम् ॥ २३८ ॥

अर्थ—गरुड़ अर शेष विषै दश गुणां सोलह अर चौदह बहुरि वीस वीस घाटि देवी हैं । भावार्थः—गरुड़ कुमार विषै अंतः पारिषदानिकैं एक सौ साठि मध्य पारिषदानिकैं एक सौ चालीस बाह्य पारिषदानिकैं एक सौ देवांगना हैं । बहुरि अवशेष जातिविषै अंतः पारिषदानिकैं एकसौ चालीस मध्य पारिषदानिकैं एक सौ वीस जघन्य पारिषदानिकैं एक सौ देवांगना हैं । बहुरि पृतना जे सेना ताके महत्तर प्रधान तीनकैं अर अंगरक्षकनिकैं सौ सौ देवांगनां हैं ॥ २३८ ॥

सेनादेवाणं पुण देवीयो तस्स अद्धपरिमाणं ।
सव्वणिगिट्टसुराणं बत्तीसा होंति देवीओ ॥ २३९ ॥
सेनादेवानां पुनः देव्यः तस्य अर्धपरिमाणं ।
सर्वनिक्कट्टसुराणां द्वात्रिंशद्भवन्ति देव्यः ॥ २३९ ॥

अर्थ—सेना देवानिकै देवी तिन सेना महत्तरकेतै अर्द्ध प्रमाण है। **भावार्थ**—आनीक देवनिकै पचास देवांगना हैं, बहुरि सर्व निक्कट्ट देवनिकै वत्तीस देवांगनां हैं कोई ही देवकै वत्तीससों घाटि देवांगनां न होय ॥ २३९ ॥

आगै भवनवासीनिकै वा आगे कहिए जे व्यंतर तिनकै जघन्य उत्कृष्ट आयु कहै हैं;—

असुरादिचटुसु सेसे भौम्मे सायर तिपल्लमाउस्सं ।
दलहीणकमं जेट्ठं दसवाससहस्समवरं तु ॥ २४० ॥
असुरादिचतुर्षु शेषे भौमे सागरं त्रिपल्यं आयुष्यम् ।
दलहीनक्रमः ज्येष्ठं दशवर्षसहस्रं अवरं तु ॥ २४० ॥

अर्थ—असुरादि च्यारनिविषै, शेष भवनवासीनिविषै, भौम जो व्यंतर तीह विषै क्रमतै सागर तीन पल्य आधी घाटि क्रम लिपं उत्कृष्ट आयु है। **भावार्थ**—असुरकुमारविषै एक सागर नागकुमार विषै तीन पल्य सुपर्णकुमारविषै अट्ठाई पल्य द्वीपकुमारविषै दोय पल्य अवशेष छह जातिके भवनवासीनिविषै ज्योद्ध पल्य व्यंतर देनिविषै एक पल्य उत्कृष्ट आयु है। बहुरि सवनि ही विषै जघन्य आयु दशहजार वर्ष प्रमाण है ॥ २४० ॥

आगै जिनकै जो आयु कह्या ताकों विशेष सहित कहै हैं;—

असुरचउक्के सेसे उदही पल्लत्तियं दल्लूणकमं ।
उत्तरइंदाणाहियं सरिसं इंदादिपंचणहं ॥ २४१ ॥
असुरचतुष्के शेषे उदधिः पल्यत्रिकं दल्लोनक्रमः ।
उत्तरेद्राणामधिकं सदृशं इंदादिपंचानाम् ॥ २४१ ॥

अर्थ—असुरादि च्यारि विषै अर अवशेष भवन धासीनि विषै एक सागर तीन पल्य आव आध पल्य घाटि आयु कह्या सोई उत्तर दिशाके इंद्रनिका किछू अधिक आयु जाननां। **भावार्थ** असुरकुमारविषै चमरेंद्रका एक सागर आयु है, वैरोचनका किछू अधिक एक सागर आयु है। नागकुमारविषै भूतानंदका तीन पल्यका आयुष है। धरणानंदका किछू अधिक तीन पल्य आयु है। ऐसेही सुपर्णकुमारादिविषै जानना। बहुरि इन्द्र प्रतीन्द्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत सामानिक इन पंचनिका आयु समान है ॥ २४१ ॥

आगै तिसही समांनताकौ विशेषकरि कहै हैं;—

आऊपरिवारिद्धीविक्किरियाहिं पडिंदयादि चऊ ।
सगसगइंदेहि समा दहरच्छत्तादिसंजुत्ता ॥ २४२ ॥

आयुःपरिवारधिविक्रियाभिः प्रतीन्द्रादयः चत्वारः ।

स्वकस्वकेद्रैः समा दभ्रच्छत्रादिसंयुक्ताः ॥ २४२ ॥

अर्थः—आयु परिवार ऋद्धि विक्रिया इनकरि प्रतीन्द्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत सामानिक ए च्यारि अपने अपने इन्द्र करि समान हैं इतना विशेष दभ्र घाटि हैं तातैं छत्रादिक करि संयुक्त हैं ॥ २४२ ॥

आगैं असुरादि इन्द्रनिकी देवांगनानिका आयु कहैं हैं;—

अड्डाइज्जतिपल्लं चमरदुगे णागगरुडसेसाणं ।

देवीणमट्टमं पुण पुव्वावस्साण कोडितयं ॥ २४३ ॥

अर्धतृतीयत्रिपल्यं चमरद्विके नागगरुडशेषाणां ।

देवीनामष्टमं पुनः पूर्ववर्षाणां कोटित्रयम् ॥ २४३ ॥

अर्थ—चमर द्विकविषै चमरेन्द्रकी देवांगनाका आयु अढाई पल्य है । वैरोचनकीका तीन पल्य है बहुरि नागेन्द्रकी देवीनिका आयु पल्यका आठवां भाग है । बहुरि गरुडेंद्रकी देवांगनानिका आयु तीन कोड़ि पूर्व प्रमाण है । अवशेष इन्द्रनिकी देवांगनानिका आयु तीन कोड़ि वर्ष प्रमाण है ॥ २४३ ॥

आगैं अंगरक्षक तीन जातिके परिषद तिनका आयु च्यारि गाथानिकरि कहैं हैं;—

चमरंगरक्खसेणामहत्तराणाउगं हवे पल्लं ।

साणीकवाहणाणं दलं तु वइरोयणे अहियं ॥ २४४ ॥

चमरंगरक्खसेणामहत्तराणामायुष्यं भवेत् पल्यं ।

सानिकवाहनानां दलं तु वैरोचने अधिकम् ॥ २४४ ॥

अर्थ—चमर इन्द्रके अंगरक्षक अर सेनामहत्तर इनका आयु एक पल्य है बहुरि आनीक कहिए चढनेवाले देव तिन सहित वाहन कहिए गजादि रूप होन योग्य देव तिनका आयु आध पल्य है ॥ बहुरि चमर इन्द्रके तैं वैरोचन इन्द्रके अंगरक्षकादिकनिकैं किछू अधिक आयु है ॥ २४४ ॥

फणिगरुडसेसयाणं तट्ठाणे पुव्ववस्सकोडी य ।

वस्साण कोडि लक्खं लक्खं च तदद्दयं कमसो ॥ २४५ ॥

फणिगरुडशेषाणां तत्स्थाने पूर्ववर्षकोटिः च ।

वर्षाणां कोटिः लक्षं लक्षं च तदर्धकं क्रमशः ॥ २४५ ॥

अर्थ—नाग गरुड शेषनिकैं तिन पूर्वोक्त स्थानकनिविषै क्रमतै कोड़ि पूर्ववर्ष कोड़ि वर्ष बहुरि कोड़ि वर्ष लाख वर्ष बहुरि लाख वर्ष ताका आधा वर्ष प्रमाण आयु है । **भावार्थ**—नागकुमारनिविषै अंगरक्षक सेनामहत्तरनिका आयु कोड़ि पूर्व वर्ष है आनीक सहित वाहननिका कोड़ि वर्ष है । बहुरि गरुडकुमारनिविषै अंग रक्षक सेनामहत्तरनिका आयु कोटि वर्ष है । आनिक सहित वाहननिका लक्ष वर्ष है । बहुरि अवशेष सात जाति विषै अंगरक्षक सेनामहत्तरनिका आयु लाख वर्ष है आनीक सहित वाहननिका पचास हजार वर्ष है ॥२४५॥

चमरदुगे परिसाणं अढ्ढाइज्जं तिपल्लमद्धणं ।
 णागे अट्टमभागं सोलस वत्तीसभागं तु ॥ २४६ ॥
 चमरद्विके परिपदां अर्धतृतीयं त्रिपल्यमर्धोन्म ।
 नागे अष्टमभागं षोडश द्वात्रिंशद्भागं तु ॥ २४६ ॥

अर्थ—चमर द्विक विषैँ परिषदनिका अढ्ढाई तीन पल्य अर आधी घाटि जाननां । **भावार्थ**—चमर इन्द्रके अंतः परिषदनिका अढ्ढाई पल्य मध्य परिषदनिका दोय पल्य बाह्य परिषदनिका ड्योढ़ पल्य आयु है । बहुरि वैरोचन इंद्रके अंत परिषदनिका तीन पल्य मध्य परिषदनिका अढ्ढाई पल्य बाह्य परिषदनिका दोय पल्य आयु है । बहुरि नागकुमारविषैँ अंत परिषदनिका पल्यका आठवां भाग मध्य परिषदनिका पल्यका सोलहवां भाग बाह्य परिषदनिका पल्यका वत्तीसवां भाग प्रमाण आयु है ॥ २४६ ॥

गरुडे सेसे कमसो तिगदुगमेकं तु होदि पुव्वाणं ।
 वस्साणं कोडीओ परिसाणब्भंतरादीणं ॥ २४७ ॥
 गरुडे शेषे क्रमशः तिस्रः द्वे एका तु भवति पूर्वाणाम् ।
 वर्षाणां कोट्यः परिषदानां अभ्यंतरादीनाम् ॥ २४७ ॥

अर्थ—गरुड अर अबशेषविषैँ क्रमतैँ तीन दोय एक पूर्व कोडि वर्ष कोडि प्रमाण अभ्यंतर आदि परिषदनिका आयु है । **भावार्थ** । गरुड कुमारविषैँ अभ्यंतर परिषदनिका तीन पूर्व कोडि मध्य परिषदनिका दोय कोडि बाह्य परिषदनिका एक कोडि वर्ष प्रमाण आयु है । बहुरि अबशेष जातिविषैँ अभ्यंतर परिषदनिका तीन कोडि वर्ष मध्य परिषदनिका दोयकोडि वर्ष बाह्य परिषदनिका एक कोडि वर्ष प्रमाण आयु है ॥ २४७ ॥

आगैँ असुरादिकानिकैँ उश्वास अर आहारका क्रम कहैँ हैं;—

असुरे तित्तिसु सासाहारा पक्खं समासहस्सं तु ।
 समुहुत्तदिणाणद्धं तेरस बारस दल्लणद्धं ॥ २४८ ॥
 असुरे त्रिस्त्रिषु श्वासाहारौ पक्षं समासहस्सं तु ।
 समुहूर्तदिनयोः अर्धत्रयोदश द्वादश दलोनाष्टमं ॥ २४८ ॥

अर्थ—असुरविषैँ अर तीन तीन विषैँ उश्वास अर आहार पक्ष वर्ष हजार अर सो मुहूर्त अर दिननिका साठा वारा वारा साठा सातवां भाग गएँ एक वार हो है । **भावार्थ** । असुरकुमार-निकैँ एक पक्ष भए एकवार उश्वास हो है । हजार वर्ष गएँ एक वार आहार हो है । बहुरि नाग-कुमार आदि तीन जातिविषैँ साढा वारा मुहूर्त भएँ उच्छास हो है । साढा वारा दिन गएँ आहार हो है । बहुरि दिक्कुमार आदि तीन जातिविषैँ साढा सात मुहूर्त भएँ उच्छास होवे साढा सात दिन गएँ आहार हो है ॥ २४८ ॥

आगै भवनत्रिक देवनिका उस्सेध कहैं हैं;—

पणवीसं असुराणं सेसकुमाराण दसधनु चैव ।

विंतरजोइसियाणं दशसत्त सरीरउदओ दु ॥ २४९ ॥

पंचविशतिः असुराणां शेषकुमाराणां दशधनुषां चैव ।

व्यंतरज्योतिष्कयोः दशसप्त शरीरोदयः तु ॥ २४९ ॥

अर्थ—असुर कुमारनिका पचीस धनुष अवशेष नव जातिके भवनवासी कुमारनिका दश धनुष व्यंतर देवनिका दश धनुष ज्योतिषी देवनिका सात धनुष शरीरकी उचाईका प्रमाण है ॥२४९॥
इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचित त्रिलोकसारमें भवनलोकका अधिकार समाप्त भया ।२।



व्यंतर लोकाधिकार ॥ ३ ॥

अब व्यंतरलोक निरूपण करनेको है मन जाका ऐसा आचार्य सो प्रथम ही व्यंतरलोक विषै तिष्ठते जु चैत्यालयनिकों प्रमाण पूर्वक नमस्कारको विस्तारै है;—

तिग्णिसयजोयणाणं कदिहिदपदरस्स संखभागमिदे ।

भौमाणं जिणगेहे गणणातीदे णमंसामि ॥ २५० ॥

त्रिशतयोजनानां कृतिहृतप्रतरस्य संख्यभागमितान् ।

भौमानां जिनगेहान् गणनातीतान् नमस्यामि ॥ २५० ॥

अर्थ—तीनसै योजनके वर्गका भाग जगत्प्रतरको दीए जो प्रमाण होइ ताके संख्यात वैभागि प्रमाण जे व्यंतर देव संबंधी जिनमंदिर तिनहिं नमस्कार करौं हौं । कैसे हैं जिनमंदिर, गणनातीतान् कहिए असंख्यात हैं लोकिक गणित करि गिणे न जावैं हैं ? सो तीनसै योजनका वर्ग किए निवै हजार योजन भए । बहुरि एक योजनके सात लाख अडसठि हजार अंगुलतैं निवै हजार योजनके केते अंगुल होइ । ऐसे त्रैराशिक करि तिनके अंगुल करिए सो वर्ग राशिका गुणकार अर भागहार वर्गरूप ही होइ इस न्याय करि सात लाख अडसठि हजारका वर्ग करि निवै हजारको गुणिए ९००००।७६८०००।७६८००० बहुरि अंगुलनिका अंकनिकों तीन करि भेदिए तब सातसै अडसठिकी जायगा दोयसै छप्पन अर आगैं तीनका अंक भया । बहुरि गुण्य अर गुणकारविषै दश बिंदी थी तिनकों जुदी स्थापी तब ऐसा भया ९।२५६।३।२५६।३। बहुरि दोय जायगा दोय सै छप्पन थे तिनकों परस्पर गुणे पण्ठी ६५।३६ भई अर दोइ जायगा तीन तीन थे तिनकों परस्पर गुणें नव भए तिनकों गुण संबंधी नवका अंककरि गुणें इक्यासी भए ऐसे करते ऐसा भया ६५=८१ बहुरि याकै आगे जुदी राशि थी दश बिन्दी ताकी सहनानी ऐसी १०° कीए ऐसा भया ६५=८१-१० इतने अंगुल भए । बहुरि एक अंगुलका एक सूच्यंगुल होइ तौ इतने अंगुलनिका केते होइ सो इहां वर्ग राशि है तातैं सूच्यंगुलका वर्ग जो प्रतरांगुल ताकी सहनानी ऐसी ४ ताकरि गुणिए तब ऐसा होइ ४।६५=८११० बहुरि याका भाग जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी=ताकों दीजिए तब व्यंतरनिका प्रमाण पण्ठीको इक्यासी करि गुणि ताकै आगैं दस बिंदी धरिए इतने प्रतरांगुलका जगत्प्रतर दिए ऐसा होय है ४=।६५=८१।१० सोई कह्या है “तिग्णिसयजोयणाणं वेसदछप्पणअंगुलाणं च कदिहिदपदरं व्यंतरजोइसियाणं च परिमाणं ।” तीनसै योजन अर दोयसे छप्पन अंगुलका वर्गका भाग जगत्प्रतरकों दिए क्रमतैं व्यंतर अर ज्योतिषीनिका प्रमाण हो है ऐसा सिद्धांत वचन है । बहुरि संख्याते व्यंतर देवनिके एक एक जिनमंदिर पाइए तौ पूर्वोक्त प्रमाण व्यंतर देवनिकें केते जिन मंदिर पाइए । असे करि पूर्वोक्त व्यंतर प्रमाणको संख्यातकी सहनानी ऐसी ? ताका भाग दिए व्यंतरनिके जिन मंदिरका प्रमाण ऐसा होय है

आगै व्यंतरिनका कुल भेद कहें हैं;—

किंनरकिंपुरिसा य महोरगगंधव्वजक्खणामा य ।
रक्खसभूयपिसाया अट्टाविहा वेंतरा देवा ॥ २५१ ॥
किंनरकिंपुरुषौ च महोरगगंधर्वयक्षनामानः च ।
राक्षसभूतपिशाचाः अष्टविधा व्यंतरा देवाः ॥ २५१ ॥

अर्थ—किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, ऐसे नामके धारक आठ प्रकार व्यंतर देव हैं ॥ २५१ ॥

आगै तिनके शरीरका वर्णकों निरूपै हैं,—

तेंसि कमसो वण्णो पियंगुफलधवलकालयसियामं ।
हेमं तिसुवि सियामं किण्हं बहुलेवभूसा य । २५२ ॥
तेषां क्रमशः वर्णाः प्रियंगुफलधवलकालय्यामाः ।
हेमः त्रिष्वपि श्यामः कृष्णः बहुलेपभूषा च ॥ २५२ ॥

अर्थ—तिनका अनुक्रमतै शरीरका वर्ण कहिए है । किन्नरिनका प्रियंगुफल समान वर्ण है । किंपुरुषनिका धवल वर्ण है । महोरगनिका काला श्याम वर्ण है । गंधर्वनिका सुवर्ण समान वर्ण है यक्ष राक्षस भूत इन तीनोंका श्याम वर्ण है पिशाचनिका कृष्ण वर्ण है बहुरि ते देव बहुत अगार इत्यादि लेप आभूषणनिकरि संयुक्त हैं ॥ २५२ ॥

आगै तिनकै चैत्य वृक्षनिका भेद कहें हैं;—

तोंसि असोयचंपयणागा तुंबुरुवडो य कंटतरू ।
तुलसी कदंबणामा चेत्ततरू होंति हु कमेण ॥ २५३ ॥
तेषां अशोकचंपकनागाः तुंबुरुवटाश्च कंटतरुः ।
तुलसी कदंबनामा चैत्यतरवो भवंति खलु क्रमेण ॥ २५३ ॥

अर्थ—तिन किन्नरादिक व्यंतरनिके अशोक १ चंपा १ नागकेसरि १ तुंबुडी १ वट १ कंटतर १ तुलसी १ कदंब । जैसे नाम धारक चैत्य वृक्ष अनुक्रमतै पाईए है ॥ २५३ ॥

आगै तिन चैत्य वृक्षके मूल विषै तिष्ठै है । जिन प्रतिमा इत्यादि कथन कहें हैं;—

तम्मूले पल्लिकंगजिणपडिमा पडिदिसभिह चत्तारि ।
चउतोरणजुत्ता ते भवणेषु च जंबुमाणद्धा ॥ २५४ ॥
तन्मूले पल्लिकंगजिनप्रतिमाः प्रदिदिशं चतस्रः ।
चतुस्तोरणयुक्तास्ताः भवनेषु च जंबूमानार्धाः ॥ २५४ ॥

अर्थ—तिन चैत्य वृक्षनिके मूलविषै पल्लिक आसनकौ प्राप्त जैसे जिन प्रतिमा एक एक दिशा प्रति च्यारि च्यारि पाईए हैं बहुरि ते प्रतिमा च्यारि तोरण द्वारनिकरि संयुक्त हैं बहुरि भवननिविषै ते चैत्य वृक्ष हैं ते-आगै जंबूद्विपका वर्णन विषै जंबू वृक्षके परिकरका प्रमाण कहेंगे तातें अर्द्ध प्रमाण जाननें ॥ २५४ ॥

आगै तिन प्रतिमानिकै आगे तिष्ठता मानस्तभकों विशेष सहित निरूपण करै हैं;—

पडिपडिमं एकेका माणत्थंभा तिवीढसालजुदा ।

मोत्तियदामं सोहइ घंटाजालादियं दिव्वं ॥ २५५ ॥

प्रतिप्रतिमां एकैको मानस्तंभाः त्रिपीठशालयुताः ।

मौक्तिकदाम शोभते घंटाजालदिकं दिव्यम् ॥ २५५ ॥

अर्थ—प्रतिमा प्रतिमा प्रति एक एक आगै मानस्तंभ है ते मानस्तंभ तीन पीठ तीन शालनिकर संयुक्त है । भावार्थ—तीन पीठकै ऊपरि मानस्तंभ है तिस मानस्तंभके तीन कोट पाइए है बहुरि तिस मानस्तंभविषै मोतीनिकी माला वा दिव्य घंटा जाल इत्यादिक सोभै हैं ॥ २५५ ॥

आगै आठ प्रकार व्यंतरनिकै एक एक कुल प्रति भेद कहै हैं;—

किणरचउ दसदसधा सेसा बारसगसत्तचोदसधा ।

दो दो इंदा दो दो वल्लभिया पुह सहस्रदेविजुदा ॥ २५६ ॥

किंनरचत्वारः दशदशधा शेषाः द्वादशसप्तचतुर्दशधा ।

द्वौ द्वौ इंद्रौ द्वे द्वे वल्लभिके पृथक् सहस्रदेवीयुते ॥ २५६ ॥

अर्थ—किंनरादिक च्यारि कुल तौ दश दश प्रकार हैं अर यक्षादिक अनुक्रमतें बारह प्रकार सात प्रकार सात प्रकार चौदह प्रकार हैं । जैसे मनुष्यविषै क्षत्रिय वैश्यादिक कुल भेद पाईए है अर एक क्षत्रिय कुल विषै इक्षाकु सोम वंशादि भेद पाईए तैसे व्यंतरनिके आठ कुल भेद हैं । एक एक कुल विषै दश आदि अवांतर भेद जानने । बहुरि इन विषै एक एक कुल विषै दोय दोय इंद्र हैं । तिन इंद्रनिकै एक एक कैं दोय दोय वल्लभिका देवांगना हैं ते प्रथक् प्रथक् एक एक देवांगना हजार हजार परिवार देवांगना करि संयुक्त हैं ॥ २५६ ॥

आगै तिनके नाम सोलह गाथानि करि कहै हैं;—

किंपुरिसकिंणरावि य हृदयंगमगा य रूपपाली य ।

किंणरकिंणरऽनिदित मणरम्मा किंणरुत्तमगा ॥ २५७ ॥

किंपुरुषकिंनरावपि च हृदयंगमश्च रूपपाली च ।

किंनरकिंनरः अनिदितः मनोरमः किंनरोत्तमः ॥ २५७ ॥

अर्थ—किंपुरुष १ किंनर १ हृदयंगमक १ रूपपाली १ किंनरकिंनर १ अनिदित १ मनोरम १ किंनरोत्तम १ ॥ २५७ ॥

रतिपियजेहा इंदा किंपुरिसाकिंणरावतंसा हु ।

केतुमती रतिसेणा रदिप्पिया होंति वल्लभिया ॥ २५८ ॥

रतिप्रियज्येष्ठौ इंद्राः किंपुरुषकिंनरौ अवतंसा हि ।

केतुमती रतिसेना रतिप्रिया भवंति वल्लभिकाः ॥ २५८ ॥

अर्थ—रतिप्रिय १ ज्येष्ठ १ ऐसे दस प्रकारके किंनर व्यंतर देव हैं तिन इंद्रनिकी अवतंसा १ केतुमती १ रतिषेण १ रतिप्रिया १ ए वल्लभिका देवांगना हैं ॥ २५८ ॥

पुरुसा पुरुसुत्तमसत्पुरुसमहापुरुसपुरुसपहणामा ।

अतिपुरुसा मरुओ मरुदेवमरुप्पहजसोवन्ता ॥ २५९ ॥

पुरुषः पुरुषोत्तमसत्पुरुषमहापुरुषपुरुषप्रभनामानः ।

अतिपुरुषः मरुर्मरुदेवमरुत्प्रभयशस्वन्तः ॥ २५९ ॥

अर्थ—पुरुष १ पुरुषोत्तम १ सत्पुरुष १ महापुरुष १ पुरुषप्रिय १ अतिपुरुष १ मरु १ मरुदेव १ मरुत्प्रभ १ यशस्वान १ औसैं दश प्रकार किंपुरुष हैं ॥ २५९ ॥

सत्पुरुसमहापुरुसा किंपुरिसिंदा क्रमेण वल्लभिया ।

रोहिणिया णवमी हिरि पुप्फवदी य इयरस्स ॥ २६० ॥

सत्पुरुषमहापुरुषौ किंपुरुषेद्रौ क्रमणे वल्लभिकाः ।

रोहिणी नवमी ही पुष्पवती च इतरस्य ॥ २६० ॥

अर्थ—तिनविपै सत्पुरष अर महापुरुष दोय किंपुरुष व्यन्तरके इन्द्र हैं तिनकी क्रमकरि सत्पुरुषकी तो रोहिणी अर नवमी वल्लभिका देवी है अर दूसरा महापुरुषकी ही अर पुष्पवती वल्लभिका देवी हैं ॥ २६० ॥

भुजगा भुजंगशाली महकायतिकाय खंधशाली य ।

मणहर असणिजवक्खा महसरगंभीरपियदरिसा ॥ २६१ ॥

भुजंगः भुजंगशाली महाकायो अतिकायः स्कंधशाली च ।

मनोहरः अशनिजवाख्यः महैश्वर्यगंभीरप्रियदर्शनः ॥ २६१ ॥

अर्थ—भुजंग १ भुजंगशाली १ महाकाय १ अतिकाय १ स्कंधशाली १ मनोहर १ अस-निजव १ महैश्वर्य १ गंभीर १ प्रियदर्शा १ औसे दस प्रकार महोरग हैं ॥ २६१ ॥

महकायो अतिकायो महोरगेंदा हु भोग भोगवदी ।

इदरस्स पुप्फगंधी अणिदिता होंति वल्लभिया ॥ २६२ ॥

महाकायो अतिकायः महोरगेंद्रौ हि भोगा भोगवती ।

इतरस्य पुष्पगंधी अनिदिता भवतः वल्लभिके ॥ २६२ ॥

अर्थ—तिनविपै महाकाय १ अर अतिकाय ए दोय महोरग व्यन्तरानिके इन्द्र हैं तहां पूर्व इन्द्रकी तो भोगा १ भोगवती १ अर द्वितीय इन्द्रकी पुष्पगंधी १ अनिदिता ए वल्लभिका देवी हैं ॥ २६२ ॥

हाहा हूहू णारयतुंबुरुककदंबवासवक्खा य ।

महसर गीतरतीवि य गीतयसा दइवता दसमा ॥ २६३ ॥

हाहा हूहू नारदतुंबुरुककदंबवासवाख्याश्च ।

महास्वरो गीतरतिः अपि च गीतयशा दैवता दशमः ॥ २६३ ॥

अर्थ—हाहा १ हूहू १ नारद १ तुंबुरु १ कदंब १ वासव १ महास्वर १ गीतरति १ गीतयशा १ दैवत १ दशवां दश प्रकार गंधर्व हैं ॥ २६३ ॥

गीतरती गीतजसो गंधन्विदा ह्वंति बल्लमिषा ।

सरसति सरसेणावि य नंदिणि प्रियदरिसिणादेवी ॥ २६४ ॥

गीतरतिः गीतयशा गंधर्वेन्द्रौ भवतः बल्लभिकाः ।

सरस्वति स्वरसेनापि च नंदिनी प्रियदर्शनादेवी ॥ २६४ ॥

अर्थ—तिन विषै गीतरति अर गीतयशा ए दोग गंधर्वानिके इन्द्र हैं तिनकी बल्लभिका देवी सरस्वती १ स्वरसेना १ अर नंदिनी १ प्रियदर्शना १ हैं ॥ २६४ ॥

अह माणिपुण्णसैलमणोभद्दा भद्दा सुभद्दा य ।

तह सव्वभद्द माणुस धणपाल सुरूवजक्खा य ॥ २६५ ॥

अथ माणिपूर्णशैलमनोभद्राः भद्रकः सुभद्रः च ।

तथा सर्वभद्रः मानुषः धनपालः सुरूपयक्षश्च ॥ २६५ ॥

अर्थ—अथ अवै माणिभद्र १ पूर्णभद्र १ शैलभद्र १ मनोभद्र १ भद्रक १ सुभद्र १ सर्वभद्र १ मानुष १ धनपाल १ सुरूपयक्ष १ ॥ २६५ ॥

जक्सुत्तमा मणोहरणामा तह माणिपुण्णभद्दिदा ।

कुंद बहुपुत्तदेवी तारा पुण उत्तमा देवी ॥ २६६ ॥

यक्षोत्तमो मनोहरनामा तत्र माणिपूर्णभद्रेन्द्रौ ।

कुंदा बहुपुत्रेदेवी तारा पुनरुत्तमा देवी ॥ २६६ ॥

अर्थ—यक्षोत्तम १ मनोहर १ ऐसे बारह प्रकार यक्ष हैं तिन विषै माणिभद्र पूर्णभद्र ए दोग इन्द्र हैं तिन इन्द्रनिकी कुंदा १ बहुपुत्रा १ देवी हैं अर तारा उत्तमा देवी हैं ॥ २६६ ॥

भीम महाभीम विग्घविनायक तह उदक रक्खसा य तहा ।

रक्खसरक्खस तह बह्वरक्खसा होंति सत्तमया ॥ २६७ ॥

भीमो महाभीमः विघ्नविनायकः तथा उदकः राक्षसश्च तथा ।

राक्षसराक्षसः तथा ब्रह्मराक्षसः भवंति सत्तमकः ॥ २६७ ॥

अर्थ—भीम १ महा भीम १ विघ्नविनायक १ उदक १ राक्षस १ राक्षसराक्षस १ ब्रह्मराक्षस सातवा ऐसे सात प्रकार राक्षस हैं ॥ २६७ ॥

भीमो य महाभीमो रक्खसइंदा ह्वंति बल्लभिया ।

पउमा वसुमित्तावि य रयणड्ढा कणयपह देवी ॥ २६८ ॥

भीमश्च महाभीमो राक्षसेन्द्रौ भवतः बल्लभिकाः ।

पद्मा वसुमित्रापि च रत्नाढ्या कनकप्रभा देवी ॥ २६८ ॥

अर्थ—तिनविषै भीम अर महाभीम ए राक्षानिके इन्द्र हैं, तिनकी बल्लभिका देवी पद्मा वसुमित्रा १ बहुरि रत्नाढ्या १ कनकप्रभा १ है ॥ २६८ ॥

भूदाणं तु सुरूपा पडिक्खा भूदउत्तमा ततो ।

पडिभूद महाभूदा पडिउण्णागासभूद इदि ॥ २६९ ॥

भूतानां तु सुरूपः प्रतिरूपः भूतोत्तमः ततः ।

प्रतिभूतः महाभूतः प्रतिछन्नः आकाशभूत इति ॥ २६९ ॥

अर्थ—बहुरि भूतनिकेँ सुरूप १ प्रतिरूप १ भूतोत्तम १ प्रतिभूत १ प्रतिछन्न १ आकाश-भूत १ जैसे सात प्रकार है ॥ २६९ ॥

इंदा य सुपडिख्वा बल्लभिया तह य होदि ख्ववदी ।

बहुरूवा य सुसीमा सुमुहा य हवंति देवीयो ॥ २७० ॥

इंद्रौ च सुप्रतिरूपौ बल्लभिकाः तथा च भवंति रूपवती ।

बहुरूपा च सुसीमा सुमुखा च भवंति देव्यः ॥ २७० ॥

अर्थ—तिन विषै इन्द्र स्वरूप अर प्रतिरूप हैं तिनकी बल्लभिका १ रूपवती १ बहुरूपा सुसीमा १ सुमुखा १ ए देवी हैं ॥ २७० ॥

कुम्भंड रक्ख जक्खा संमोहो तारका अचोक्खा य ।

काल महाकाल चोक्खा सतालया देह महादेहा ॥ २७१ ॥

कूष्मांडो रक्षो यक्षः संमोहः तारकः अशुचिश्च ।

कालः महाकालः शुचिः सतालकः देहः महादेहः ॥ २७१ ॥

अर्थ—कूष्मांड १ रक्षा १ यक्ष संमोह १ तारक १ अशुचि १ काल १ महाकाल १ शुचि १ सतालक १ देह १ महादेह १ ॥ २७१ ॥

तुण्हिय पवयणणामा इंदा तेसिं तु कालमहाकाला ।

कमलकमलप्पहुप्पलसुदरिसणा होति बल्लभिया ॥ २७२ ॥

तूष्णीकः प्रवचननामा इंद्रौ तेषां तु कालमहाकालौ ।

कमलाकमलप्रभोत्पलासुदर्शना भवंति बल्लभिकाः ॥ २७२ ॥

अर्थ—तूष्णीक १ प्रवचन १ ऐसेँ नाम लिऐँ चौदह प्रकार पिशाच हैं । तिन विषै तिन पिशाचनिकेँ काल अर महाकाल इन्द्र हैं । तिनकी कमला १ कमलप्रभा बहुरि उत्पला १ सुदर्शना १ ए बल्लभिका हैं ॥ २७२ ॥

आगै बहुरि इंद्रनिहीके नाम जुदे दोग गाथानिकरि कहै हैं;—

किंपुरुस किंणरा सप्पुरुस महापुरुसणामया कमसो ।

महकायो अतिकायो गीतरती गीतयसणामा ॥ २७३ ॥

किंपुरुषः किन्नरः सत्पुरुषः महापुरुषनामा क्रमशः ।

महाकायः अतिकायः गीतरती गीतयशोनामा ॥ २७३ ॥

अर्थ—क्रमतैँ किंपुरुष किन्नर बहुरि सत्पुरुष महापुरुष बहुरि महाकाय अतिकाय बहुरि गीतरति गीतयशा ॥ २७३ ॥

तो माणिपुण्णभद्दा भीममहाभीमया सुरूवा य ।

पाडिख्वा काल महाकालो भोम्मेसु जुगलिंदा ॥ २७४ ॥

ततो माणिपूर्णभद्रौ भीममहाभीमै सुरूपश्च ।

प्रतिरूपः कालः महाकालः भौमेषु युगलेंद्राः ॥ २७४ ॥

अर्थ—तहां पीछे माणिभद्र पूर्णभद्र बहुरि भीम महाभीम बहुरि सुरूप प्रतिरूप बहुरि का ४ महाकाल ए सर्व व्यंतरनिविषै एक एक कुलके दोय दोय इन्द्र जाननां ॥ २७४ ॥

आगै किंपुरुष इन्द्रानिकै गणिका महत्तरीको च्यारि गाथानि करि कहै हैं;—

गणिकामहत्तरीयो इंदं पडि पल्लदलठिदी दो हो ।

मधुरा मधुरालावा सुस्सर मउभासिणी कमसो ॥ २७५ ॥

गणिकामहत्तर्यः इंद्रं प्रति पल्यदलस्थितयः द्वे द्वे ।

मधुरा मधुरालापा सुस्वरा मृदुभाषिणी क्रमशः ॥ २७५ ॥

अर्थ—एक एक इन्द्र प्रति दोय दोय गणिका महत्तरी हैं । जैसे इहां वेश्या हो हैं तेसै तहां जो देवागना होंहिं तिनको गणिका कहिए तिन विषै जो प्रधान सो गणिकामहत्तरी जाननी बहुरि ते आध पल्य प्रमाण आयुको धरै हैं तिनको नाम अनुक्रमतै कहिए हैं। तहां एक एक किंपुरुषादि इन्द्र संबंधी दोय दोय गणिका महत्तरीनिका नाम जाननां मधुरा मधुरालाप बहुरि सुस्वरा मृदुभाषिणी ॥ २७५ ॥

पुरिसपिया पुंकंता सोम्म पुंदरिसिणी य भोगक्खा ।

भोगवदी य भुजंगा भुजंगपिया तो सुघोस विमलेत्ति ॥ २७६ ॥

पुरुषप्रिया पुंकांता सौम्या पुंदाशिनी च भोगाख्या ।

भोगवती च भुजंगा भुजंगप्रिया ततः सुघोषा विमला इति ॥ २७६ ॥

अर्थ—बहुरि पुरुषप्रिया पुंकांता बहुरि सौम्य पुंदाशिनी बहुरि भोगा भोगवती बहुरि भुजंगा भुजंगप्रिया बहुरि सुघोषा विमला ॥ २७६ ॥

सुस्सर अणिदियक्खा भइ सुभदा य मालिणी होंति ।

पउमादिमालिणीवि य तो सव्वरि सव्वसेणेत्ति ॥ २७७ ॥

सुस्वरा अनिदिताख्या भद्रा सुभद्रा च मालिनी भवति ।

पद्मादिमालिनी अपि च ततः शर्वरी सर्वसेना इति ॥ २७७ ॥

अर्थ—बहुरि सुस्वरा अनिदिता बहुरि भद्रा सुभद्रा बहुरि मालिनी पद्ममालिनी बहुरि शर्वरी सर्वसेना ॥ २७७ ॥

रुदक्ख रुदरिसिण भूदादिकंद भूद भूदादी ।

दत्त महाभुज अंबा कराल सुलसा सुदरिसणया ॥ २७८ ॥

रुद्राख्या रुद्रदर्शना भूतादिकांता भूता भूतादि ।

दत्ता महाभुजा अंबा कराला सुरसा सुदर्शनका ॥ २७८ ॥

अर्थ—बहुरि रुद्रा रुद्रदर्शना बहुरि भूतकांता भूता बहुरि भूतदत्ता महाभुजा बहुरि अंबा कराल बहुरि सुरसा दर्शना । जैसे सोलह इन्द्र संबंधी बत्तीस गणिका महत्तरनिके नाम क्रमतै जाननें ॥ २७८ ॥

आगै किंपुरुषादि इन्द्रनिकै सामानिक आदि देवनकी संख्या कहै हैं;—

इदसमा हु पडिंदा समाणुतणुरक्खपरिसपरिमाणं ।

चउसोलसहस्सं पुण अट्टसयं बिसदवड्ढिकमो ॥ २७९ ॥

इन्द्रसमा: खलु प्रतीन्द्रा: सामानिकतनुरक्षपारिन्दप्रमाणं ।

चतु:षोडशसहस्सं पुनरष्टशतं द्विशतवृद्धिक्रम: ॥ २७९ ॥

अर्थ—इन्द्रनिके समान प्रतीन्द्र हैं एक एक इन्द्र संबंधी एक एक प्रतीन्द्र है बहुरि सामानिक तनुरक्षक पारिषदनिका प्रमाण च्यारि हजार सोलह हजार आठसै दोयसै वधता क्रम लीए है । भावार्थ—एक एक इन्द्रके सामानिक देव च्यारि हजार हैं । तनुरक्षक सोलह हजार हैं । अभ्यंतर परिषद आठसै हैं । मध्य परिषद हजार हैं । बाह्य बारहसै हैं ॥ २७९ ॥

आगै तिनकै सात आनीक कहै हैं;—

कुंजरतुरयपदादीरहगंधव्वा य णच्चवसहेत्ति ।

सत्तेवय आणीया पत्तेयं सत्त सत्ता कक्खजुदा ॥ २८० ॥

कुंजरतुरगपदातिरथगंधवाश्च नृत्यवृषभाविति ।

सत्सैव अनीका: प्रत्येकं सत्त सत्त कक्षयुता: ॥ २८० ॥

अर्थ—हाथी १ घोड़ा १ पयादा १ रथ १ गंधर्व १ नृत्यकी १ वृषभ १ ऐसे सात प्रकार आनीक एक एक के हैं । बहुरि एक एक आनीक सात सात कक्ष जो फौज तिन करि संयुक्त है ॥ २८० ॥

आगै तिस सेनाके महत्तर कहै हैं;—

सेणामहत्तरा सुज्जेट्ठा सुग्गीवविमलमरुदेवा ।

सिरिदामा दामसिरी सत्तमदेवो विसालक्खो ॥ २८१ ॥

सेनामहत्तरा: सुज्येष्ठ: सुग्गीवविमलमरुदेवा: ।

श्रीदामा दामश्री: सत्तमदेवो विशालाख्य: ॥ २८१ ॥

अर्थ—हाथी आदिक जे सेना ताके महत्तर कहिए प्रधान अनुक्रमतै सुज्येष्ठा १ सुग्गीव १ विमल १ मरुदेव १ श्रीदामा १ दामश्री १ सातवां विसाल नाम देव जानना ॥ २८१ ॥

आगै तिस आनीककी संख्या कहै हैं;—

अट्ठावीससहस्सं पढमं दुगुणं क्रमेण चरिमोत्ति ।

सर्व्विदाणं सरिसा पइण्णयादी असंखमिदा ॥ २८२ ॥

अष्टाविंशसहस्त्राणि प्रथमं द्विगुणं क्रमेण चरमांतम् ।

सर्व्वेद्राणां सदृशा: प्रकीर्णकादय: असंख्यमिता: ॥ २८२ ॥

अर्थ—अठ्ठाईस हजार प्रथम कक्ष हैं । बहुरि दूणा दूणा करि अंत पर्यंत जानना ॥ भावार्थ ॥ हाथी प्रथम फौज विषै अठ्ठाईस हजार दूसरा विषै छप्पन हजार ऐसै सातई फौज पर्यंत दूणे दूणे जाननें । ऐसेही घोटकादिक जाननें । या प्रकार सर्व्वही व्यंतरैन्द्रनिकै समान आनीक

पाइए है । बहुरि चतुर्निकायरूप सर्व देवनिकै प्रकीर्णक आभियोग्य कित्वाषिक एक असंख्यात प्रमाण हैं ॥ २८२ ॥

आगैं व्यंतरेन्द्रनिका नगर जहां पाइए तिन द्वीपनिके नाम कहैं हैं;—

अंजनकवज्जधातुगसुवर्णमणसिलगवज्जरजदेसु ।

हिंगुलिके हरिताले दीवे भोमिंदणयराणि ॥ २८३ ॥

अंजनकवज्जधातुकसुवर्णमनःशिलकवज्जरजतेषु ।

हिंगुलिके हरिताले द्वीपे भौमेंद्रनगराणि ॥ २८३ ॥

अर्थ—अंजनक १ वज्रधातुक १ सुवर्ण १ मनः शिलक १ वज्र १ रजत १ हिंगुलक १ हरिताल १ इन आठ द्वीपनिविषै क्रमतै किन्नरादिकनिके इंद्रनिके नगर हैं ॥ भावार्थ ॥ किन्नर कुलके इंद्रनिका अंजनक द्वीपविषै नगर है । तहां किंपुरुप इंद्रके तौ दक्षिण दिशाविषै अर किन्नरइंद्रके उत्तर दिशाविषै नगर जानने ऐसैं ही वज्रधातुकादि द्वीपनिविषै किंपुरुषादिकविषै इंद्रनिके पहले इंद्रका दक्षिणविषै दूसरेका उत्तरविषै नगर जानने ॥ २८३ ॥

आगैं तिन नगरनिके नाम अर आयाम कहैं हैं;—

भोमिंदकं मञ्जे पहकंतावत्तमज्ज चरिमंका ।

पुच्चादिसु जंबुसमा पणपणयराणि समभागे ॥ २८४ ॥

भौमेंद्रांकं मध्ये प्रभकांतावर्तमध्याः चरमांकाः ।

पूर्वादिषु जंबूसमानि पंचपंचनगराणि समभागे ॥ २८४ ॥

अर्थ—व्यंतर इंद्रका जो अंक कहिए नाम सो तो मध्यका नगर विषै जानना अर ताहीकी पूर्वादि दिशानिविषै इंद्रका नामकै आगे क्रमतै प्रभकांत आवर्त्त मध्य ऐसे अंतविषै नाम संयुक्त नगरनिके नाम जानने ॥ भावार्थ ॥ किन्नर नामा इंद्र ताके पांच नगर हैं तहां मध्य विषै जो नगर है ताका नाम किन्नरपुर है बहुरि ताकी पूर्व दिशाविषै किन्नरप्रभ नगर है । दक्षिणविषै किन्नरकांत नगर है पश्चिम दिशाविषै किन्नरावर्त नगर है । उत्तरविषै किन्नरमध्य नगर है । ऐसैं ही और इंद्रनिके नगरनिके नाम जानने । एक एक इंद्रके पांच पांच नगर हैं ते जंबूद्वीप समान हैं । भावार्थ । लक्ष योजन विस्तारको धरैं हैं । बहुरि ते नगर समभूमि विषै पाइए हैं पृथ्वीतै नीचें वर पर्वतादिके ऊपर नहीं हैं ॥ २८४ ॥

आगैं तिन नगरनिका कोट द्वार तिनका उदयादिक कहैं हैं;—

तप्पायारुदयतियं पणहत्तरिपण्णवीसपंचदलं ।

दारुदओ वित्थारो पंचघणद्धं तदद्धं च ॥ २८५ ॥

तप्प्राकारोदयत्रयं पंचसप्ततिपंचविंशतिपंचदलम् ।

द्वारोदयो विस्तारः पंचघनार्धं तदर्धं च ॥ २८५ ॥

अर्थ—तिन नगरनिका जो प्राकार कहिए कोट ताका उदयादि तीन पिचहत्तरि पचीस पांचका आधा है ॥ भावार्थ ॥ कोट साढ़ा सैंतीस योजन ऊंचा है साढ़ा बारा योजन चौड़ा है

अढ़ाई योजन मौटा है बहुरि तिस कोठके द्वार कहिए दरवाजे तिनकी उदय अर विस्तार पंच घन जो सवासो ताका आधा अर ताहूका आधा प्रमाण है ॥ भावार्थ ॥ द्वार साढा वासठि योजन ऊंचा है सवा इकतीस योजन चौड़ा है ॥ २८५ ॥

आगैं ताके ऊपरि जो प्रासाद है ताका स्वरूप कहैं हैं;—

तस्सुवारिं पासादो पणहत्तरितुंगओ सुधम्मसहा ।

पणकादिदल तद्वल णव दीहरवासुदय कोस ओगाढा ॥ २८६ ॥

तस्योपरि प्रासादः पंचसप्ततितुंगः सुधर्मसभा ।

पंचकृतिदलं तद्वलं नव दीर्घव्यासोदयाः क्रोशः अवगाढः ॥ २८६ ॥

अर्थ—तिस द्वारके ऊपरि पिचहत्तरि योजन ऊंचा प्रासाद है सोई प्रासादके अभ्यंतरि सुधर्मा नामा सभा कहिए सो पंचर्मा कृति पचीस ताका आधा बहुरि ताहूका आधा बहुरि नव प्रमाण दीर्घ व्यास उदय संयुक्त है ॥ भावार्थ ॥ सुधर्मा सभा साढा बारा योजन लंबी है । सवा छह योजन चौड़ी है । नव योजन ऊंची हैं । बहुरि तिसका अवगाढ कहिए अधिष्ठान भूमि सो एक कोश है ॥ २८६ ॥

आगैं तिस प्रासादके जे द्वार तिनके उदयादि कहैं हैं;—

तिस्से दारुदओ दुग इगि वासो दक्खिणुत्तरिंदाणं ।

सव्वेसिं णगराणं पायारादीणि सरिसाणि ॥ २८७ ॥

तस्याः द्वारोदयः द्विकमेकं व्यासः दक्षिणोत्तरेद्राणाम् ।

सर्वेषां नगराणां प्राकारादीनि सदृशानि ॥ २८७ ॥

अर्थ—तिस सुधर्मा सभाका द्वारका उदय जो ऊंचाई सो दोय योजन है । बहुरि व्यास जो चौड़ाई सो एक योजन है । बहुरि दक्षिण इंद्र वा उत्तर इंद्रनिके सबनिहीकैं सर्व नगरनिका प्राकारादिक समान हैं ॥ २८७ ॥

आगैं तिन नगरनिके बाह्य वन कहैं हैं;—

पुरदो गंतूण बहिं चउदिसं जोयणाणि बिसहस्सं ।

इगिलक्खायद तद्वलवासजुदा रम्मवणखंडा ॥ २८८ ॥

पुराद्रत्वा बहिः चतुर्दिशं योजनानि द्विसहस्रं ।

एकलक्षायता तद्वलव्यासयुताः रम्यवनखंडाः ॥ २८८ ॥

अर्थ—नगरतैं बाह्रैं दोय दोय हजार योजन परैं जाइ च्यारि दिशानिविषैं एक लाख योजन लेवे तातैं पचास हजार योजन चौड़े रमणीक बनखंड कहिए बाग हैं ॥ २८८ ॥

आगैं तिन द्वीपनविषैं पाईए अैसे गणिकानिके नगर तिनके विस्तार संख्यादिक निरूपैं हैं;—

तत्थेव य गणिकाणं चुलसीदिसहस्सविउलणयराणि ।

सेसाणं भोम्माणं अणेयदीवे समुद्दे य ॥ २८९ ॥

तत्रैव च गणिकानां चतुरशीतिसहस्रविपुलनगराणि ।

शेषाणां भौमानां अनेकद्वीपे समुद्रे च ॥ २८९ ॥

अर्थ—तिसही अपने अपने इंद्र संबंधी द्वीपविषै गणिकामहत्तरीनिके नगर हैं । ते अपनी अपनी इंद्रपुरीके दोऊ पार्श्वनिविषै जाननें । बहुरि ते चौरासी हजार योजन लंबे चौड़े हैं । बहुरि अबशेष जे व्यंतर हैं तिनके नगर अनेक द्वीप वा अनेक समुद्रनि विषै पाईए हैं ॥ २८९ ॥

आगै कुलभेद अपेक्षा निलयभेद कहै हैं;—

भूदाण रक्खसाणं चउदस सोलस सहस्स भवणाणि ।

सेसाण वाणवेंतरदेवाणं उवरि णिलयाणि ॥ २९० ॥

भूतानां राक्षसानां चतुर्दश षोडश सहस्रं भवनानि ।

शेषाणां वानव्यंतरदेवानां उपरि निलयानि ॥ २९० ॥

अर्थ—भूतनिका अर राक्षसनिका चौदह सोलह हजार भवन हैं ॥ **भावार्थ** ॥ रत्नप्रभा पृथ्वीके खरभागविषै भूतनिके चौदह हजार भवन हैं । बहुरि पंक भागविषै राक्षसनिके सोलह हजार भवन हैं । बहुरि अबशेष वान व्यंतरदेव हैं तिनके पृथ्वीके ऊपरि निलय कहिए स्थान पाईए हैं ॥ २९० ॥

आगै नीचोपपादादि वान व्यंतरनिके विशेष दोग गाथानिकरि कहै हैं;—

हत्थपमाणे णिच्चुववादा दिगुवासि अंतरणिवासी ।

कुंभंडा उत्पण्णाणुत्पण्ण पमाणया गंधा ॥ २९१ ॥

हस्तप्रमाणे नीचोपपादाः दिग्वासिनः अंतरनिवासिनः ।

कूष्मांडाः उत्पन्ना अनुत्पन्नाः प्रमाणका गंधाः ॥ २९१ ॥

अर्थ—हस्तप्रमाणविषै नीचोपपाद हैं बहुरि दिग्वासी १ अंतरनिवासी १ कूष्मांड १ उत्पन्न १ अनुत्पन्न १ प्रमाणक १ गंध १ ॥ २९१ ॥

महगंध भुजग पीदिग आगासुववण्णगा य उवरुवरिं ।

तिमु दसहत्थसहस्सं वीससहस्संतरं सेसे ॥ २९२ ॥

महागंधा भुजगाः प्रीतिका आकाशोत्पन्नाश्च उपर्युपरि ।

* त्रिषु दशहस्तसहस्राणि विशतिसहस्रांतरं शेषे ॥ २९२ ॥

अर्थ—महागंध १ भुजंग १ प्रीतिक १ आकाशोत्पन्न १ ए सर्व ऊपरि ऊपरि तीनविषै दश दश हजारके आंतिरै अर अबशेष बीस बीस हजारके आंतिरै जाननें । **भावार्थ**—पृथ्वीतै एक हस्त ऊपरि क्षेत्रविषै नीचोपपाद व्यंतर हैं । तिनके ऊपरि दश हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषै दिग्वासी हैं । तिनके ऊपरि दश हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषै अंतर निवासी हैं । तिनके ऊपर दस हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषै कूष्मांड है । तिनके ऊपरि बीस हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषै उत्पन्न व्यंतर हैं । आगै ऐसे ही ऊपरि ऊपरि बीस बीस हजार हाथका अंतराल जाननां ॥ २९२ ॥

आगै तिन नीचोपपादादिकनिकी आयु क्रमतै कहै हैं;—

दसवारिससहस्रादो सीदी चुलसीदिकं सहस्रं तु ।

पल्लवमं तु पादं पल्लवं आउगं कमसो ॥ २९३ ॥

दशवर्षसहस्रात् अशीतिः चतुरशीतिकं सहस्रं तु ।

पल्याष्टमं तु पादं पल्यार्धमायुष्यं क्रमशः ॥ २९३ ॥

अर्थ—दश हजार वर्षतै लगाय दश दश हजार वधता असी हजार वर्ष पर्यंत बहुरि चौरासी हजार वर्ष बहुरि पल्यका आठवां भाग चौथा भाग पल्यका आधा प्रमाण आयु तिनका क्रमतै जाननं । **भावार्थ**—नीचोपपादनिका दश हजार दिग्वासीनिका बीस हजार अंतरनिवासीनिका तीस हजार कूष्मांडनिका चालीस हजार उत्पन्ननिका पचास हजार अनुत्पन्ननिका साठि हजार प्रमाणकनिका सत्तरि हजार गंधनिका अस्सी हजार वर्ष प्रमाण आयु है । महा गंधनिका चौरासी हजार वर्ष प्रमाण आयु है जुगलनिका पल्यका आठवां भाग प्रीतिकनिका चौथाई पल्य आकाशोत्पन्ननिका आधापल्य प्रमाण आयु है ॥ २९३ ॥

आगै व्यंतरनिका निलय भेद कहै हैं;—

वेंतरणिलयतियाणि य भवणपुरावासभवणणामाणि ।

दीवसमुद्दे दहगिरितरुम्हि चित्तावणिम्हि कमे ॥ २९४ ॥

व्यंतरनिलयत्रयाणि च भवनपुरावासभवननामानि ।

द्वीपसमुद्रे द्रहगिरितरौ चित्रावन्यां क्रमेण ॥ २९४ ॥

अर्थ—भवनपुर अर आवास अर भवन ए वितरनिके भवननिके तीनही नाम हैं तहां क्रमकरि द्वीप समुद्रनिविषै भवनपुर पाईए है । बहुरि द्रह पर्वत वृक्ष इन विषै आवास पाईए हैं बहुरि चित्रापृथिवीविषै नीचे भवन पाईए हैं ॥ २९४ ॥

आगै तीन प्रकार निलयनका वर्णन कहै हैं;—

उड्डगया आवासा अधोगया वितराण भवणाणि ।

भवणपुराणि य मज्झिमभागगया इदि तिर्यं णिलयं ॥ २९५ ॥

ऊर्ध्वगताः आवासा अधोगता व्यंतराणां भवनानि ।

भवनपुराणि च मध्यमभागगतानीति त्रयं निलयम् ॥ २९५ ॥

अर्थ—जे पृथ्वीतै ऊंचे स्थानक विषै पाईए ते आवास जानने । बहुरि जे पृथ्वीतै नीचे पाईए ते व्यंतरनिके भवन जानने । बहुरि जे मध्य लोककी समभूमि विषै पाईए ते भवनपुर कहिए ऐसे तीन प्रकार निलय हैं ॥ २९५ ॥

आगै सर्व व्यंतरनिका यथा संभव रहनेका क्षेत्र कहै हैं;—

चित्तवइरादु जावय मेरुदथं तिरियलोयवित्थारं ।

भोम्मा हवन्ति भवणे भवणपुरावासगे जोग्गे ॥ २९६ ॥

चित्रावज्रातः यावत् मेरुदयं तिर्यग्लोकविस्तारं ।

भौमा भवति भवने भवनपुरावासके योग्यं ॥ २९६ ॥

अर्थ—चित्रा अर वज्रा पृथ्वीका मध्य संधितैं लगाय यावत् मेरु गिरिकी उचाई है तहां पर्यंत ऊंचा अर तिर्यक् लोकका जेता विस्तार तहां पर्यंत विस्तारकों धरें जो क्षेत्र तिहविषै भौम कहिए व्यंतर देव ते ;अपने अपने योग्य भवनविषै वा भवन पुरविषै वा आवासविषै वास करै हैं ॥ २९६ ॥

भवणं भवणपुराणि य भवणपुरावासयाणि केसिपि ।

भवणामरेषु असुरे विहाय केसिं तियं णिलयं ॥ २९७ ॥

भवनं भवनपुरे च भवनपुरावासकानि केषांचित् ।

भवणामरेषु असुरान् विहाय केषां त्रयं निलयम् ॥ २९७ ॥

अर्थ—केई व्यंतरनिकै तो भवन ही हैं केईनिके भवन अर पुर हैं केईनिके भवन अर भवन-पुर अर आवास हैं । ऐसे व्यंतरनिके स्थान जाननें । बहुरि भवनवासी देवनिविषै असुर कुमार बिना अन्य कुलवाले केईक भवन वासीनिके भवन वा भवनपुर वा आवास तीन निलय पाईए है इस कथनतैं पृथ्वीतै नीचे खर भाग पंक भाग विषै अर पृथ्वी तैं ऊपरि पर्वतादि विषै अर सम-भूमि पृथ्वीविषै व्यंतरनिके अर भवन वासीनिके स्थान पाइए हैं ऐसा जाननां ॥ २९७ ॥

आगैं तीन प्रकार निलयनिका व्यासादिक तीन गाथानि करि कहै हैं;—

जेद्वावरभवणाणं बारसहस्रं तु शुद्धपणुवीसं ।

बहलं तिसय तिपादं बहलतिभागुदयकूडं च ॥ २९८ ॥

ज्येष्ठावरभवनयोः द्वादशसहस्रं तु शुद्धपंचविंशतिः ।

बाहल्यं त्रिशतं त्रिपादं बाहल्यत्रिभागोदयकूटं च ॥ २९८ ॥

अर्थ—ज्येष्ठ अर जघन्य भवननिका विस्तार अठारह हजार अर शुद्ध पचीस योजन हैं । बाहुल्य तीनसै अर त्रिपाद योजन है । बाहुल्यका तीसरा भाग प्रमाण ऊंचा कूट है । भावार्थ । उत्कृष्ट भवन है सो तो बारह हजार योजन चौड़ा तीन सै योजन पृथ्वीतैं छाति पर्यंत ऊंचा है । बहुरि तिन भवननिविषै जेता ऊंचाईका प्रमाण कहा ताके तीसरा भाग प्रमाण ऊंचा कूट पाइए हैं । इस कूट ऊपरि जिन मंदिर हैं ॥ २९८ ॥

जेद्भभवणाण परिदो वेदी जोयणदलुच्छ्रिया होदि ।

अवराणं भवणाणं दंडाणं पणुवीसुदया ॥ २९९ ॥

ज्येष्ठभवनानां परितः वेदी योजनदलोच्छ्रिता भवति ।

अवराणां भवनानां दंडानां पंचविंशत्युदया ॥ २९९ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट भवननिके चौगिरद आध योजन ऊंची वेदी है । जघन्य भवननिके पचीस धनुष ऊंची वेदी है । जैसे बागके चौगिरद भीति हो है तैसे जो होइ ताका नाम वेदी जाननां ॥२९९॥

वृद्धादीण पुराणं जोयणलक्ष्मं कमेण एकं च ।

आवासाणं विसयाहियबारसहस्स य त्तिपादं ॥ ३०० ॥

वृत्तादीनां पुराणां योजनलक्षं क्रमेण एकं च ।

आवासानां त्रिशताधिकद्वादशसहस्राणि च त्रिपादम् ॥ ३०० ॥

अर्थ—गोल आदि आकार रूप जे पुर तिनका क्रम करि उत्कृष्ट विस्तार लक्ष योजन है ॥ जघन्य विस्तार एक योजन है । बहुरि गोल आदि आकार रूप जे आवास तिनका उत्कृष्ट विस्तार दोयसै अधिक बारह योजन है । जघन्य विस्तार पौण योजन है ॥ ३०० ॥

आगैं तीनप्रकार निलयनिका विशेषस्वरूप अर व्यंतरनिके आहार उश्वास ताकौ कहैं हैं;—

भवणावासादीणं गोउरपायारणच्चणादिघरा ।

भोम्माहारुस्सासा साहियपणदिण मुहुत्ता य ॥ ३०१ ॥

भवनासादीनां गोपुरप्राकारनर्तनादिगृहाणि ।

भौमाहारोच्छ्वासः साधिकपंचदिनानि मुहूर्ताश्च ॥ ३०१ ॥

अर्थ—भवन आवासादिकनिकैं दरवाजे कोट नृत्य आदिक ग्रह पाईए है । बहुरि भौमतैं व्यंतर तिनकैं आहार किछु अधिक पांच दिन भए अर उश्वास किछु अधिक पांच मुहूर्त भए जाननां ॥ इति व्यंतरलोक अधिकार समाप्त भया ॥ ३०१ ॥

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचित त्रिलोकसारमें व्यन्तरलोकका अधिकार समाप्त भया ।३।



अथ ज्योतेर्लोकधिकार ॥ ४ ॥

अथ व्यंतरलोकके अधिकारकों निरूपण करि ताकैं अनंतर उद्देशकों प्राप्त ज्यो ज्योतिष्क-लोकका अधिकार निरूपण करनेका है अभिलाष जाकैं ऐसा आचार्य सो ताकी आदिविषै प्रथम ज्योतिष्कनिकैं बिबनिकी संख्या दिखावनैकेलिए ज्योतिष्क लोकके चैत्यालयनिकों नमस्कार रूप मंगल करै है;—

बेसदछप्पणंगुलकदिहिदपदरस्स संखभागमिदे ।
जोइसजिणिंदगेहे गणणातीदे णमंसांमि ॥ ३०२ ॥
द्विशतषट्पंचाशदंगुलकृतिहृतप्रतरस्य संख्यातभागमितान् ।
ज्योतिष्कजिनेंद्रगेहान् गणनातीतान्नमस्यामि ॥ ३०२ ॥

अर्थ—दोयसै छप्पन अंगुलका वर्गका भाग जगत्प्रतरकों दिएं जो प्रमाण होइ ताके संख्यातवै भाग प्रमाण असंख्याते जिनेन्द्र मंदिर तिनकों नमस्कार करौं हों । भावार्थ—दोयसै छप्पनका वर्ग पण्ठी ६५५३६ सूच्यंगुलका वर्ग प्रतरांगुल सो पण्ठी प्रमाण प्रतरांगुलका भाग जगत्प्रतरकों दिएं जो प्रमाण होय तितनै ज्योतिषी हैं । बहुरि संख्यात ज्योतिषी एक बिबविषै पाइए एक एक बिबविषै एक एक चैत्यालय पाइए तातैं ज्योतिषीनिके प्रमाणकों संख्यातका भाग दिएं बिबनिका वा चैत्यालयनिका प्रमाण आवै है तिन चैत्यालयनिकों नमस्कार करौं हों ॥ ३०२ ॥

आगैं तिन बिबनिविषै तिष्ठते ज्योतिष्कनिका भेद कहै हैं;—

चंदा पुण आइच्चा गह णक्खत्ता पइणतारा य ।
पंचविहा जोइगणा लोयंतघणोदहिं पुट्ठा ॥ ३०३ ॥
चंद्राः पुनः आदित्या प्रहा नक्षत्राणि प्रकीर्णकताराश्च ।
पंचविधा ज्योतिर्गणा लोकांतघनोदार्धि स्पृष्टवन्तः ॥ ३०३ ॥

अर्थ—चंद्रमा १ सूर्य १ प्रह १ नक्षत्र १ प्रकीर्णक तारा १ ऐसे पांच प्रकार ज्योतिष्क समूह हैं । ते लोकके अंत घनोदधि वातवलयकों स्पर्शते हैं । भावार्थ—पूर्व पश्चिम अपेक्षा घनोदधि वातवलय पर्यंत ज्योतिष्कबिब पाइए हैं ॥ ३०३ ॥

आगैं द्वीप समुद्रनिके निरूपण विना ज्योतिष्क निरूपण संभवै नाहीं तातैं ज्योतिष्क बिबनिके आधारभूत जे द्वीप समुद्र तिनकों च्यारि गाथानिकरि कहै हैं;—

जंबूधादगिपुक्खरवारुणिसीरघदखोदवरदीओ ।
गंदीसररुणअरुणभासा वर कुंडलो संखो ॥ ३०४ ॥
जंबूधातकिपुष्करवारुणिक्षीरघृतक्षौद्रवरद्वीपाः ।
नंदीश्वरारुणारुणाभासा वराः कुंडलः शंखः ॥ ३०४ ॥

अर्थ—जंबूद्वीप १ धातुकीखंडद्वीप १ पुष्करवर १ वारुणिवर १ क्षीरवर १ घृतवर १ क्षौद्रवर १ नंदीसुर द्वीपवर १ अरुणवर १ अरुणाभासवर १ कुंडलवर १ शंखवर ॥ ३०४ ॥

तो रुजगभुजगकुसुगयकौचवरादी मणस्सिल्ला तत्तो ।

हरिदालदीवसिंदुरसियामगंजणयहिं गुलिया ॥ ३०५ ॥

ततो रुचकभुजगकुशगक्रौचवरादयः मनःशिला ततः ।

हरितालद्वीपसिंदूरश्यामकांजनकहिं गुलिकाः ॥ ३०५ ॥

अर्थ—तहां पीछे रुचकवर १ भुजगवर १ कुशगवर १ क्रौचवर १ ए अभ्यंतरके सोलह द्वीप हैं तातैं परैं बीचमें असंख्यात द्वीप समुद्र हैं तिनको छोड़ी अंतके सोलह द्वीपानिके नाम कहे हैं । तहां पीछे मनः शिलाद्वीप १ हरिताल द्वीप १ सिंदूरवर १ श्यामवर १ अंजनवर १ हिं-
लिकवर १ ॥ ३०५ ॥

रूपमुवण्णयवज्जयवेलुरिययणागभूदजक्खवरा ।

तो देवाहिंदवरा सयंभुरमणो ह्वे चरिमो ॥ ३०६ ॥

रूप्यमुवर्णकवज्जवैडूर्यकनागभूतयक्षवराः ।

ततो देवाहींद्रवरौ स्वयंभूरमणो भवेत् चरमः ॥ ३०६ ॥

अर्थ—अथ रूपवर १ सुवर्णवर १ वज्रवर १ वैडूर्यवर १ नागवर १ भूतवर १ यक्षवर १ देववर १ अहीन्द्रवर १ स्वयंभूरमण १ अंत विषै जाननां ॥ ३०६ ॥

लवणंबुहि कालोदयजलही तत्तो सदीवणामुवही ।

सव्वे अङ्गाइज्जुद्धारुवहीमेत्तया होंति ॥ ३०७ ॥

लवणांबुधिः कालोदकजलधिः ततः स्वदीपनामोदधयः ।

सर्वे अर्धतृतीयोद्धारोदधिमात्रा भवति ॥ ३०७ ॥

अर्थ—समुद्रनिके नाम कहैं हैं जंबूद्वीपकै परिक्षेपी लवणसमुद्र । बहुरि धातुकी खंडकै कालोदक समुद्र बहुरि अन्य द्वीपानिकै अपने अपने द्वीपका जो नाम तिसही नामके धारक समुद्र जाननें । बहुरि ते सर्व्व द्वीप समुद्र कितने हैं अढाई उद्धार सागर प्रमाण हैं । भावार्थ—दस कोड़ा कोड़ि दूसरी उद्धार पल्यका एक उद्धार सागर होइ । ऐसे अढाई सागरके जेते रोम तितनें द्वीप समुद्र हैं ॥ ३०७ ॥

अब तिन द्वीप समुद्रनिका विस्तार वा आकार निरूपैं हैं;—

जंबू जोयणलक्खो वट्टो तद्दुणदुगुणवासेहिं ।

लवणादिहिं परिखित्तो सयंभुरमणुवहियंतोहिं ॥ ३०८ ॥

जंबू योजनलक्षः वृत्तः तद्विगुणद्विगुणव्यासैः ।

लवणादिभिः परिक्षित्तः स्वयंभूरमणोदध्यंतैः ॥ ३०८ ॥

अर्थ—जंबूद्वीप लक्ष योजन है बहुरि वृत्त कहिए गोल है । बहुरि तातैं दूणा दूणा व्यास संयुक्त जे लवण समुद्रादिक स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत द्वीप समुद्र तिनकरि परिक्षित्त कहिए बेष्टित

हे । भावार्थ—सर्व्व द्वीप समुद्रनिके बीचि जंबूद्वीप है सो गोल है । ताकों मध्य विषै चौड़ा-ईका प्रमाण लक्ष योजन है ताकों वेढें लवण समुद्र है सो तातें दूणा दोय लाख योजन व्यास संयुक्त है । ताकों वेढें धातुकीखंड द्वीप है । सो तातें दूणा च्यारि लाख योजन व्यास संयुक्त है । याही प्रकार द्वीपकों समुद्र वेढ्यां समुद्रकों द्वीप वेढ्यां दूणा दूणा विस्तार लिएं स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत द्वीप समुद्र गोल आकार जानने ॥ ३०८ ॥

आगैं तहां इच्छित द्वीपका वा समुद्रका सूची व्यास अर वलय व्यास व्यावनेकों करणसूत्र यहु है:-

रूऊणाहियपदमिददुगसंवग्गे पुणोवि लखहदे ।

गयणतिलकखविहीणे वासो बलयस्स सुइस्स ॥ ३०९ ॥

रूपोनाधिकपदमितद्विकसंवर्गे पुनरपि लक्षहते ।

गगनत्रिलक्षाविहीने व्यासो वलयस्य सूचेः ॥ ३०९ ॥

अर्थ—द्वीप समुद्रनिका इष्ट गच्छका जो प्रमाण ताकों एक जायगा एक घाटि अर एक जायगा एक वांधि करि तितने हुए इनिकों परस्पर गुणे जो प्रमाण होइ ताकों लाख करि गुणि एक जायगा शून्य एक जायगा तीन लाख घटाइये तब वलयका अर सूचीका व्यास होइ । भावार्थ—इष्ट द्वीप वा समुद्रतें पहला जो समुद्र वा द्वीप तिहका अंत तट अर ताके सन्मुख इष्ट द्वीप व समुद्रका अंत तट इन दोऊनिकै बीचि जो क्षेत्रका प्रमाण सो वलय व्यास जाननां, बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रका सन्मुख दोऊ अंत तटनिके बीच जो क्षेत्र सो सूची व्यास जाननां । जैसे कालोदक समुद्रतें पहला धातुकीखंड द्वीप है सो धातुकीखंडका अंत तट अर कालोदकका अंत तटके बीचि जो क्षेत्रका प्रमाण सो तो वलय व्यास है । बहुरि कालोदकका सन्मुख दोय अंत तट तिनिकै बीचि जंबूद्वीप अर दोऊ दिशा संबंधी लवणोद धातुकीखंड कालोदका व्यास जोडें जो क्षेत्र होइ सो कालोदका सूची व्यास है । ऐसेही सर्वत्र जाननां । अब इनके व्यावनेका विधान कहिए है । इष्ट द्वीप व समुद्र जेथवां होइ तीह प्रमाण इहां गच्छ जाननां । तामें एक घटाएं जो प्रमाण होइ ताका विरलन कहिए एक एक करि वखेरिए । बहुरि एक एक प्रति दोय दोय दीजिये बहुरि तिनिकों परस्पर गुणिएं ऐसे करतै जो प्रमाण होइ ताकों लक्ष करि गुणिएं तामें विंटी घटाइये ऐसे करतें इष्ट द्वीप वा समुद्रका बलय व्यास आवै है । ताका उदाहरण—जैसे जंबूद्वीपतें लगाय कालोदक समुद्र चौथा है सो गछ प्रमाण च्यारि भया तामें एक घटाएं तीन सो तीनका विरलन करिए १।१।१। बहुरि एक एक प्रति दोय दोय दीजिए । २।२।२। बहुरि इनिकों परस्पर गुणि तब आठ होइ । इनिकों लक्ष करि गुणे आठलाख होइ तामें बिन्दी घटाएं भी तितने ही रहैं सो कालोदकका वलय व्यास आठलाख योजन है बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्र जेथवां होइ तिस प्रमाण गछतै एक अधिक प्रमाणका विरलन करि एक एक प्रति दोय दोइ परस्पर गुणि जो प्रमाण होइ ताकों लक्ष करि गुणि तामें तीन लाख घटाएं इष्ट द्वीप वा समुद्रका सूची व्यास हो है । ताका उदाहरण—जैसे कालोदक समुद्र चौथा है । सो गच्छका प्रमाण च्यारि तामें एक मिलाएं पांच सो पांचका विरलन करि १।१।१।१।१। एक एक प्रति दोय २।२।२।२।२। रख परस्पर गुणें बत्तीस होइ इनिकों लक्ष करि गुणें बत्तीस लाख

होइ इनमें तीन लाख घटाए गुणतीस लक्ष योजन प्रमाण कालोदक समुद्रका सूचीव्यास हो है । अब यह करण सूत्र कैसें कहा सो वासना कहिए हैं । तहां वलय व्यासकी वासना ऐसी है जो जंबूद्वीपका व्यास लक्षयोजन तातैं दूणा दूणा लवण समुद्रादिकका व्यास है तातैं एक घाटि गछ प्रमाण दुवा परस्पर गुणि लब्ध प्रमाणकों जंबूद्वीपका व्यास करि गुणें इष्ट स्थानविषै वलय व्यास हो है इहां किछू हीन अधिक करना नाहीं तातैं गगन हीन कहिए विंदी घटावना कहा । बहुरि सूचीव्यासकी वासना ऐसी है । इष्ट द्वीप वा समुद्रका जो वलय व्यास ताकों दोऊ सन्मुख दिशा संबंधी व्यास मिलावनेतैं दूणा स्थापिए बहुरि तातैं पहले जे द्वीप वा समुद्र तिनका दोऊ दिशा संबंधी व्यास मिलाइ दूणा दूणा वलय व्यास स्थापिए । बहुरि जंबूद्वीपकै दोय दिशा संबंधी

कालोदि	१६
धातुकी	८
लवणद्वि	४
तीन स्थान	०
जंबूद्वीप	१
	—
	२९

व्यास नाहीं तातैं वलय व्यासका प्रमाणही स्थापनां । बहुरि दूसरे स्थानि शून्य स्थापन करना जैसे कालोदकका सूची व्यास व्यावनेका ऐसें स्थापन करना । ऐसें स्थापन किए द्वितीय स्थानविषै शून्यकी जायगा दोय लाख मिलाएं गछतैं एक अधिक स्थानभए ऐसे चारि एक अधिक गछका परस्पर गुणन कहा । बहुरि पदमेत्ते गुणयोर इत्यादि सूत्र करि जोड दिए तहां दोय लाख

तो दूसरा स्थानका अर रूचपरिहीणे इस वचन करि एक लाख ए इन दोऊ ऋण घटावनेकों तीन लाखका घटावना कहा ऐसे करते इष्ट स्थानविषै सूचीव्यास हो है ॥ ३०९ ॥

तैसे ही अभ्यन्तर मध्यम बाह्य सूचीव्यास व्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

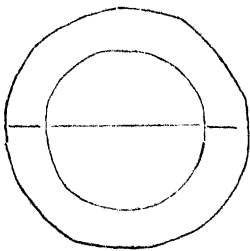
लवणादीणं वासं दुगतिगचदुसंगुणं तिलक्खुणं ।

आदिममज्झिमवाहिरसूइत्ति भणंति आइरिया ॥ ३१० ॥

लवणादीनां व्यासं द्विकत्रिकचतुःसंगुणं त्रिलक्षोणम् ।

आदिममध्यमबाह्यसूची इति भणंति आचार्याः ॥ ३१० ॥

अर्थ—लवणादिक समुद्र वा द्वीपनिका वलय व्यासकों दोय तीन च्यारि गुणां करि तामें तीन लाख घटाए अभ्यन्तर मध्य बाह्य सूची व्यास होइ ऐसे अर्थ कहैं हैं । **भावार्थ**—इष्ट द्वीप



वा समुद्रके सन्मुख आदिके दोऊ तटनिके बीचि जो क्षेत्र प्रमाण सो अभ्यन्तर सूची व्यास जाननां । बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रके सन्मुख दोऊ दिशा संबंधी मध्य प्रदेशनिके बीचि जो क्षेत्र प्रमाण सो मध्य सूची व्यास जाननां । बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रके सन्मुख अंतके दोऊ तटनिके बीचि जो क्षेत्रप्रमाण सो बाह्यसूची व्यास जाननां । तहां लवण समुद्रादिक विषै इष्ट द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकों दूणा करि तामें तीन लाख घटाए अभ्यन्तर सूची व्यास हो है । सोई

कहिए है—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोऊ दिशाका मिलाया हुवा वलय व्यास सो तातैं अभ्यन्तरवर्ती जे पहले सर्व्व द्वीप वा समुद्र तिनका दोऊ दिशा संबंधी वलय व्यास जोड़े जो प्रमाण होइ तातैं तीन लाख अधिक हो है बहुरि इहां अभ्यन्तरवर्ती पहले द्वीप समुद्रनिका दोऊ दिशा संबंधी

वलय व्यास मिलाए ही विवक्षित द्वीप समुद्रका अभ्यन्तर सूचीव्यास हो है । तातैं दोऊ दिशाका प्रहणके अर्थि विवक्षित द्वीप समुद्रका वलय व्यासकों दूणा करि तामें तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यासका प्रमाण कइया । बहुरि विवक्षित द्वीप समुद्रका वलय व्यासकों तिगुणा करि तामें तीन लाख योजन घटाएं मध्यम सूची व्यास हो है । सोई कहिए है । विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकों दूणा किए तामें तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है । तिह अभ्यन्तर सूची व्यासका प्रमाणविधैं विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोय दिशानिका वलय व्यासका आधा आधा प्रमाण मिलि संपूर्ण वलय व्यास हूवा ताकों मिलाएं तिगुणा वलय व्यास तीन लाख घाटि प्रमाण मध्यम सूची व्यास हो है । बहुरि विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकों चौगुणा करि तामें तीन लाख योजन घटाएं बाह्य सूची व्यास हो है सोई कहिए हैं । विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दूणा वलय व्यासमें तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है तिहविधै विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोऊ दिशा संबंधी वलय व्यास मिलें दूणा वलय व्यास मिलाएं चौगुणा वलय व्यास तीन लाख घाटि योजन प्रमाण बाह्य सूची व्यास हो है । ऐसा आचार्यका अभिप्राय है ॥३१०॥

आगैं कइया जो सूचीव्यास ताकी अपेक्षा करि तिस तिस क्षेत्रका वादर सूक्ष्म परिधि बहुरि वादर सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

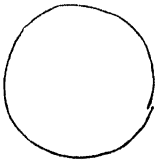
त्रिगुणियवासं परिही दहगुणवित्थारवग्गमूलं च ।

परिहिहदवासतुरियं बादर सुहुमं च खेत्तफलं ॥ ३११ ॥

त्रिगुणितव्यासः परिधिः दशगुणविस्तारवर्गमूले च ।

परिधिहतव्यासतुरीयं बादरं सूक्ष्मं च क्षेत्रफलम् ॥ ३११ ॥

अर्थ—तिगुणा व्यासप्रमाण बादर परिधि है बहुरि दश गुणा व्यासका जो वर्ग ताका मूल प्रमाण सूक्ष्म परिधि हो है । बहुरि परिधिकों व्यासकी चौथाई करि गुणें बादर वा सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है । **भावार्थ—**परिधिका गिरदका जो प्रमाण सो परिधि कहिए बहुरि समकोष्टका जो प्रमाण सो क्षेत्रफल कहिए । जैसे योजन रूप क्षेत्रफल होइ सो एक एक योजनके खंड जेतें होंहिं तितना क्षेत्र फल जाननां । ऐसेही अंगुलादि रूप जाननां । तहां जो स्थूलपने करि कहिए सो बादर जाननां बहुरि तारतम्य करि सूक्ष्मपने करि कहिए सो सूक्ष्म जाननां तहां व्यासका जो प्रमाण ताकों तिगुणा करि बादर परिधि हो है । सो जंबूद्वीपका लक्ष योजन प्रमाण व्यासकों तिगुणा किए तीन लाख योजन प्रमाण परिधि हो है बहुरि व्यासका जो प्रमाण ताका वर्ग करिए बहुरि ताकों दस गुणा करिए जो प्रमाण होइ ताका वर्ग मूल करिए तब सूक्ष्म परिधि हो है सो जंबूद्वीपका लक्ष योजन व्यास ताका वर्ग हजार कोड़ि योजन हो है । ताकों दश गुणा किए दश हजार कोड़ि होइ है । १००००००००००००० बहुरि अंत विषमतै कृति कोडि इत्यादि विधान करि याका वर्ग मूल करिए तब तीन लाख सोलह दोय सै सत्ताईस तौ योजन होइ—३१६२२७ बहुरि अबशेष ध्यारि लाख चौरासी हजार चार सै इकहत्तरि योजन रहे तिनको चौगुणा करि कोश करिए तब उगणीस लाख सैंतीस हजार



आठसै चौरासी १९३७८८४ कोश हुए तिनकों दूणा मूल अंक रूप पंक्तिका प्रमाण छह लाख बत्तीस हजार च्यारिसै चौवन ६३२४५४ ताका भाग दिए तीन कोश होइ बहुरि अबशेष चालीस हजार पांचसै बाईस कोश रहे—४०५२२ तिनकों दोय हजार गुणा करि इनके धनुष करिए तब आठ कोडि दश लाख चवालीस हजार धनुष होइ तिनकों पूर्व्व भाग हारका भाग दिए एक सौ अठाईस धनुष भए बहुरि अब शेष धनुष निवासी हजार आठसै अठ्यासी तिनको चौगुणा करि हाथ करिए तब तीन लाख गुणासिठ हजार पांचसै वारह हस्त होइ सो इन विषै पूर्व्व भागहार संभवै नाहीं तातें इनकों चौवीस गुणा करि अंगुल करिए तब छियासी लाख गुणातीस हजार दोयसै अढतालीस ८६२९२४८ अंगुल होइ इनकों पूर्व्व भागहारका भाग दिए तेरह अंगुल होइ । बहुरि अबशेष अंगुल च्यारि लाख सात हजार तीनसै छियालीस सो तो भाज्य अर पूर्व्वोक्त छह लाख बत्तीस हजार च्यारि हजार चार सै चौवन दोयनिकों तीन लाख सोलह हजार दोइ सै सत्ताइस करि अपवर्त्तन किए भाज्य किछू अधिक एक अर भाग हार दोइ होइ ऐसे किछू अधिक अंगुल भया । या प्रकार जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तीन कोश एक सौ अठाईस धनुष किछू अधिक साढा तेरह अंगुल प्रमाण आया । बहुरि स्थूल परिधिका प्रमाण करि व्यासका चौथा भागकों गुणें बादर क्षेत्रफल हो है । सो जंबूद्वीपका स्थूल परिधि तीन लाख योजन तीह करि व्यास एक लाखकी चौथाई पच्चीस हजार योजन गुणें सातसै पचास कोडि योजन प्रमाण जंबूद्वीपका बादर क्षेत्रफल हो है । बहुरि सूक्ष्म परिधिका प्रमाण करि व्यासका चौथा भाग गुणें सूक्ष्म क्षेत्र फल हो है । सो जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि विषै तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तिनकों व्यासकी चौथाई पच्चीस हजार करि गुणें सातसै निवै कोडि छप्पन लाख पिचहत्तरि हजार ७९०५६७५००० भए बहुरि तीन कोशकों व्यासकी चौथाई कर गुणें पिचहत्तरि हजार कोश हुआ इनकों च्यारिका भाग दिए अठारह हजार सात सै पचास योजन भए तिनकों पूर्व्वोक्त योजननिमें मिलाइए ७९०५६९३७५० बहुरि एक सौ अठाईस धनुष तिनकों व्यासकी चौथाई करि गुणें बत्तीस लाख धनुष हुवा इनकों आठ हजारका भाग देइ योजन किए च्यारिसै योजन होइ सोभी तिन योजननविषै मिलाइये ७९०५६९४१५० बहुरि तेरह अंगुल अर किछू अधिक आध अंगुल इनकों समछेद करि मिलाए सत्ताईसका आधा हुवा ३७ बहुरि दोय करि तिर्यग अपवर्त्तन करि पच्चीस हजारका आधा साढा वारह हजार करि सत्ताईसकों गुणें तीन लाख सैंतीस हजार पांचसै अंगुल भए इनकों एक कोशके अंगुल एक लाख बाणवे हजार तिनका भाग दिए साधिक एक कोश होइ । या प्रकार जंबूद्वीपका सूक्ष्म क्षेत्रफल सातसै निवै कोडि छप्पन लाख चौराणवै हजार एक सौ पचास योजन अर साधिक एक कोश प्रमाण आया । ऐसे ही सर्व्व द्वीप समुद्रनिका स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनां ॥३११॥

आगै जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधिका सिद्ध भए अंक कहै हैं;—

जोयण सगदुदु छकिगि तिदयं तिकोसमडदुगि दंडा ।
अहियदलंगुलतेरस जंबूप सुहुमपरिणाहो ॥ ३१२ ॥

योजनानां सप्तद्विद्वि षड्के त्रयं त्रिकोशा अष्टद्वयेके दंडाः ।

अधिकदलांगुलत्रयोदश जंबौ सूक्ष्मपरिणाहः ॥ ३१२ ॥

अर्थ—योजननिके सात दोय दोय छह एक तीन ए अंक है ३१६२२७ बहुरि तीन कोश बहुरि आठ दोय एक इन अंक १२८ रूप धनुष बहुरि साधिक आधा तेरह अंगुल इतना सर्व्व जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधिका प्रमाण है ॥ ३१२ ॥

आगैं तिसही जंबूद्वीपके सूक्ष्म क्षेत्रफलके सिद्ध भए अंक कहैं हैं;—

पण्णासमेकदालं णव छप्पणाससुण्ण णवसदरी ।

साहियकोसं च हवे जंबूदीवस्स सुहमफलं ॥ ३१३ ॥

पंचाशदेकत्वारिंशन्नवपट् पंचाशच्छून्यं नवसप्ततिः ।

साधिकत्रोशश्च भवेजंबूद्वीपस्य सूक्ष्मफलम् ॥ ३१३ ॥

अर्थ—पचास इकतालीस नव छप्पन शून्य गुण्यासी ए तो योजननिके अंक हैं ७९० ५६९४१५० बहुरि साधिक एक कोश इतना जंबूद्वीपका सूक्ष्म क्षेत्रफल है ॥ ३१३ ॥

आगैं जंबूद्वीपका परिधिकी अपेक्षा करि विवाक्षित द्वीप वा समुद्रका परिधि ल्यावनेकों करण सूत्र यहु है;—

जंबूउभयं परिही इच्छियदीउवहिस्सुइ संगुणिय ।

जंबूवासविभक्ते इच्छियदीउवहिपरिही दु ॥ ३१४ ॥

जंबूभयं परिधी इच्छितद्वीपोदधिसूच्या संगुण्य ।

जंबूव्यासविभक्ते ईप्सितद्वीपोदधिपरिधी तु ॥ ३१४ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपका स्थूल सूक्ष्म दोउ परिधिकों विवाक्षित द्वीप वा समुद्रका सूची व्यास करि गुणि जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं विवाक्षित द्वीप वा समुद्रका स्थूल वा सूक्ष्म परिधि हो है । ताका उदाहरण । जंबूद्वीपका स्थूल परिधि तीन लाख ३ योजन ताकों लवण समुद्रका सूची व्यास पांच लाख योजन करि गुणें १५ लक्ष जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन ताका भाग दीएं लवण समुद्रका स्थूल परिधि पंद्रह योजन प्रमाण हो है । बहुरि जंबूद्वीपका स्थूल परिधिकों धातुकी खंडका सूची व्यास तेरह लाख योजन करि गुणें जंबूद्वीपका व्यासका भाग दिए धातुकी खंडका स्थूल परिधि गुणतालीस लाख योजन हो है । बहुरि जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तीन कोश एकसै अठाईस धनुष किछु अधिक साढा तेरह अंगुल तिनकों लवण समुद्रका सूची व्यास करि गुणें जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं लवण समुद्रका सूक्ष्म परिधि पंद्रह लाख इक्यासी हजार एक सौ गुणतालीस योजनादि प्रमाण हो है । ऐसे ही जंबूद्वीपके स्थूल परिधिका धातुकी खंडका सूची व्यास करि गुणें जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं धातुकी खंडका सूक्ष्म परिधि हो है । ऐसेही अन्य द्वीप वा समुद्रनिका स्थूल सूक्ष्म परिधि ल्यावनां ३१४ अब स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफलकों ल्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

अंताइसूइजोगं रुंद्र गुणित्त दुप्पडिं किच्चा ।

तिगुणं दसकरणिगुणं बादरसुहुमं फलं वलये ॥ ३१५ ॥

अंतादिसूचियोगं रुंद्राधेन गुणयित्वा द्विःप्रति कृत्वा ।

त्रिगुणं दशकरणिगुणं वादरसूक्ष्मं फलं वलये ॥ ३१५ ॥

अर्थ—अंत सूची तौ बाह्य सूची व्यास अर आदि सूची अभ्यंतर सूची व्यास इन दोऊनिके प्रमाणका जु योग कहिए जोड़ ताकों रुद्र कहिए वलय व्यास ताका अर्थ प्रमाण करि गुणिए जो प्रमाण होइ ताहि द्विः प्रति कृत्वा कहिए दोय जायगा स्थापि करि तिस प्रमाणकों एक जायगा तौ तिगुणा करिए तब बादर क्षेत्रफल होइ एक जायगा दश करि गुणा करिए जो प्रमाण था ताका वर्ग करि ताकों दश गुणा करि ताका वर्गमूल ग्रहण करिए । जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करना होइ ताकों करणि कहिए । ऐसे किए सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है या प्रकार वलय वृत्त जो गोलका परिक्षेपी गोल क्षेत्र तिह विषै बादर अर सूक्ष्म क्षेत्रफल हैं ताका उदाहरण लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पंच लाख योजन अभ्यन्तर सूची व्यास एक लाख योजन इन दोऊनिकों जोड़ें छह लाख भए इनकों रुंद्र जो वलय व्यास इनकों दोय लाख योजन ताका आधा एक लाख तिह कर गुणिए तब छह हजार कोड़ि भए सो इनकों दोय जायगा स्थापि एक जायगा तिगुणा करिए तब लवण समुद्रका बादर क्षेत्रफल अठारह हजार कोड़ि योजन प्रमाण हो है । बहुरि एक जायगा तिह छह हजार कोड़िका वर्ग करि दश गुणा करिए तब छत्तीस कोड़ा कोड़ि भए इनका वर्गमूल ग्रहण किए अठारह हजार नवसै तहेतरि कोड़ि छ्वासठि लाख गुणसठि हजार छैसै दस १८९७३६६५९६१० योजन प्रमाण समुद्रका सूक्ष्म क्षेत्र फल हैं ऐसे ही अन्य द्वीप वा समुद्र-निका बादर सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनां ॥ ३१५ ॥

आगै जंबूद्वीप प्रमाण करि लवण समुद्रादिकानिके खंड ल्यावनेकों करण सूत्र कहै हैं;—

बाहिरसूईवग्गं अब्भंतरसूइवग्गपरिहीणं ।

जंबूवासाविभक्ते तत्तियमेत्ताणि खंडाणि ॥ ३१६ ॥

बाह्यसूचीवर्गः अभ्यन्तरसूचिवर्गपरिहीनः ।

जंबूव्यासविभक्तः तावन्मात्राणि खंडानि ॥ ३१६ ॥

अर्थ—बाह्य सूची व्यासका जो वर्ग तामें अभ्यन्तर सूची व्यासका वर्ग घटाए जो प्रमाण होइ ताकों जंबूद्वीपके व्यासका भाग दीजिए सो वर्ग राशिके गुणकार भाग हार वर्ग रूप ही होइ । इस न्याय करि इहां भी वर्ग राशि है तातें जंबूद्वीपके व्यासका जो वर्ग ताका भाग दीजिए यों करतां जो प्रमाण आवै तावन्मात्र जंबूद्वीप समान खंड जाननें । ताका उदाहरण--लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन ताका वर्ग पच्चीस हजार कोड़ि तातें अर अभ्यन्तर सूची एक लाख योजन ताका वर्ग एक हजार कोड़ि घटाए चौईस हजार कोड़ि रहे याकों जंबूद्वीपका व्यास एक लाख योजन ताका वर्ग एक हजार कोड़ि ताका भाग दिए चौवीस भए सोई लवण समुद्रके जंबूद्वीपके समान खंड करिए तौ चौवीस खंड हो हैं । ऐसे ही अन्य द्वीप वा समुद्रनि विषै जाननें ॥ ३१६ ॥

आगै अन्य प्रकार करि जंबूद्वीप समान खंड ल्यावनेको करण सूत्र रूप दोग गाथा कहै हैं;—

रूऊणसला बारससलागुणिदे दु वलयखंडाणि ।

बाहिरसूइसलागा कदी तदंताखिला खंडा ॥ ३१७ ॥

रूपोनशला द्वादशशलाकगुणितास्तु वलयखंडानि ।

बाह्यसूचीशलाका कृतेः तदंताखिलानि खंडानि ॥ ३१७ ॥

अर्थ—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यास जितने लक्ष प्रमाण कह्या सोई इहां शलाकाका प्रमाण जाननां सो एक घाटि शलाकाका प्रमाणको बारह करि गुणिए । बहुरि ताको शलाका प्रमाण करि गुणिए तब जंबूद्वीप समान गोलखंड हो है । ताका उदाहरण । लवण समुद्रका वलय व्यास दोग लाख योजन है सो शलाकाका प्रमाण दोग जाननां । बहुरि एक घाटि शलाकाका प्रमाण एक ताको बारह गुणा किए बारह ताको शलाका प्रमाण दोग करि गुणें चौबीस भए सोई लवण समुद्र विषै जंबूद्वीप समान खंड कल्पें चौबीस हो हैं । ऐसैही अन्यत्र जाननां । बहुरि बाह्य सूची व्यास जितने लक्ष प्रमाण होइ तीह प्रमाण सूची शलाका कहिए ताका वर्ग किए जो प्रमाण होइ तितना जंबूद्वीपतै लगाइ तिस विवाक्षित द्वीप वा समुद्र पर्यंत क्षेत्र विषै सर्व जंबूद्वीप समान खंडनिका प्रमाण जाननां । ताका उदाहरण—लवणसमुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन है सो लवण समुद्रकी सूची शलाका पांच जाननी ताका वर्ग पचीस सोई जंबूद्वीपतै लवण समुद्र पर्यंत सर्व क्षेत्र विषै जंबूद्वीप समान पचीस खंड हो हैं । एक जंबूद्वीपका चौईस लवण समुद्रके ऐसै पचीस खंड जानने ॥ ३१७ ॥

याही प्रकार अन्यत्र भी जानने;—

बाहिरसूई वलयव्वासूणा चउगुणिद्ववासहदा ।

इगिलक्खवग्गभजिदा जंबूसमवलयखंडाणि ॥ ३१८ ॥

बाह्यसूची वलयव्यासोना चतुर्गुणितेष्टव्यासहता ।

एकलक्षवर्गभक्ता जंबूसमवलयखंडानि ॥ ३१८ ॥

अर्थ—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका बाह्य सूची व्यासका प्रमाणमैसौ वलय व्यासका प्रमाण घटाइए । बहुरि ताको चौगुणा इष्ट वलय व्यास करि गुणिए । बहुरि एक लाखका वर्गका भाग दीजिए जो प्रमाण होइ तितने जंबूद्वीप समान गोल खंड जानने । ताका उदाहरण । लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन तामें वलय व्यास दोग लाख योजन घटाएं तीन लाख योजन ताको चौगुणा वलय व्यास आठलाख करि गुणें चौईस हजार कोड़ि इनको एक लाखका वर्ग एक हजार कोड़ि ताका भाग दिए चौईस भए । सोई लवण समुद्र विषै जंबूद्वीप समान खंड कल्पें चौईस हो हैं । ऐसै अन्यत्र जानने ॥ ३१८ ॥

आगै समुद्रनिका रसविशेष कहै हैं;—

लवणं वारुणितियमिदि कालदुगंतिमसयंभुरमणमिदि ।

पत्तेयजलमुवादा अवसेसा होंति इच्छुरसा ॥ ३१९ ॥

लवणं वारुणित्रयमिति कालद्विकमतिमस्वयंभूरमणमिति ।

प्रत्येकजलस्वादा अवशेषा भवन्ति इक्षुरसाः ॥ ३१९ ॥

अर्थ—लवण समुद्र वारुणी आदि तीन समुद्र ऐसे च्यारि समुद्र बहुरि कालोदक पुष्कर-
वर अंतका स्वयंभूरमण समुद्र ए तीन क्रमतै प्रत्येक अपने अपने नामके अनुसारि स्वाद धरै हैं ।
बहुरि जल स्वाद धरै है । अवशेष इक्षुरस स्वादको धरै हैं । **भावार्थ**—लवण समुद्रविषै जो
जल है ताका स्वाद लवण समान है । वारुणीवरविषै स्वाद मदिरावत् है । क्षीरवरविषै स्वाद
दुग्धवत् है । घृतवरविषै स्वाद घृतवत् है ऐसे च्यारि तो अपने नामके अनुसारि रसकों धरै हैं ।
बहुरि कालोदक पुष्करवर स्वयंभूरमण इन तीनों विषै जल है ताका स्वाद जल समान ही है ।
बहुरि असंख्यात समुद्र तिनविषै जो जल है ताका स्वाद सांठेका रस समान है ॥ ३१९ ॥

आगै तिन समुद्रनिविषै जलचर जीवनिका संभवने न संभवनेकों हेतुपूर्वक कहै हैं;—

जलयरजावा लवणे कालेऽतिमस्वयंभुरमणे य ।

कम्ममहीपडिबद्धे ण हि सेसे जलयरा जीवा ॥ ३२० ॥

जलचरजीवा लवणे कालेऽतिमस्वयंभुरमणे च ।

कर्ममहीप्रतिबद्धे न हि शेषे जलचरा जीवाः ॥ ३२० ॥

अर्थ—जलचर जीव लवण समुद्रविषै बहुरि कालोदकविषै बहुरि अंतका स्वयंभू रमण-
विषै पाईए हैं । जातै ए तीन समुद्र कर्मभूमि संबंधी हैं । बहुरि अवशेष सर्व समुद्र भोगभूमि
संबंधी हैं भोगभूमिविषै जलचर जीवोंका अभाव है । तातें इन तीन विना अन्य समुद्रनिविषै
जलचर जीव नाही हैं ॥ ३२० ॥

आगै स्थान निर्देश करि तीन समुद्रनिविषै मत्स्यनिका शरीरकी अवगाहना कहै हैं;—

लवणदुगंतसमुद्रे णदीमुहुवहिभिह दीह णव दुगुणं ।

दुगुणं णसय दुगुणं मच्छे वासुदयमद्धकर्म ॥ ३२१ ॥

लवणद्विकांत्यसमुद्रे नदीमुखोदधौ दैर्घ्यं नव द्विगुणं ।

द्विगुणं पंचशतं द्विगुणं मत्स्ये व्यासोदयो अर्धक्रमौ ॥ ३२१ ॥

अर्थ—लवणादि दोय समुद्रनिविषै बहुरि अंतका समुद्रविषै जहां नदी प्रवेशका मुखविषै
बहुरि समुद्रका मध्यविषै क्रमतै नव ताका दूणा तिनका दूणा पांचसै ताका दूणा मत्स्यनिका
शरीर लंबा है । तातें अर्द्ध प्रमाण व्यास है व्यासतै आधा शरीर ऊंचा है । **भावार्थ**—मत्स्यनिके
शरीरनिकी लंबाई लवण समुद्रविषै जहां नदीनिका प्रवेश हो है तहां तीरविषै तौ नव योजन है ।
बहुरि समुद्रका मध्य भागविषै अठारह योजन है । बहुरि कालोदक समुद्रविषै नदी प्रवेशरूप तीरविषै
तौ अठारह योजन अर मध्य भागविषै छत्तीस योजन है बहुरि स्वयंभू रमणविषै पांचसै योजन
मध्यविषै हजार योजन है । बहुरि सर्वत्र जो लंबाईका प्रमाण कहा तातें आधा चौड़ाईका प्रमाण
है । बहुरि चौड़ाईके प्रमाणतै आधा उंचाईका प्रमाण है ॥ ३२१ ॥

अब मनुष्य क्षेत्र इतर क्षेत्रके विभागका अर कर्मभूमि भोगभूमिकी मर्यादाकों प्राप्त होते जे दोय पर्वत तिनका स्वरूप निरूपण करता संता तिनहीके विभागकों दृढ करनेकों तीन गाथा कहैं हैं;—

पुष्करसयंभुरमणाणद्धे उत्तरसयंपहा सेला ।

कुंडलरुचगद्धं वा सन्वे पुन्वं परिक्रिवत्ता ॥ ३२२ ॥

पुष्करस्वयंभुरमणयोरर्धे उत्तरस्वयंप्रभौ शैलौ ।

कुंडलरुचकार्धे वा सर्वे पूर्वे परिक्षिताः ॥ ३२२ ॥

अर्थ—पुष्करार्धविषै स्वयंभूरमणार्द्धविषै मानुषोत्तर स्वयंप्रभ पर्वत हैं । **भावार्थ**—पुष्कर नाम द्वीपका वलय व्यासका अर्द्ध भागविषै वीचि मानुषोत्तर नाम पर्वत है । बहुरि स्वयंभूरमण द्वीपका वलय व्यासका अर्द्धभागविषै बाँचि स्वयंप्रभ नामा पर्वत है । कैसे हैं ? कुंडल रुचकार्ध मिव कहिए जैसे कुंडल वर द्वीपविषै वीचि कुंडल गिरि है । बहुरि रुचक वर द्वीपके वीचि रुचक गिरि है तैसे ही जाननें । बहुरि ए सर्व पर्वत पूर्व अपने अपने अभ्यन्तरवर्ती जे द्वीप वा समुद्रनिकों परिक्षेप करि वेढि करि जैसे नगरकों वेढि कोट हो है तैसे तिष्ठे हैं ॥ ३२२ ॥

मणुसुत्तरोत्ति मणुसा मणुसुत्तरलंघसत्तिपरिहीणा ।

परदो सयंपहोत्ति य जहण्णभोगावणीतिरिया ॥ ३२३ ॥

मानुषोत्तरांतं मनुष्याः मानुषोत्तरलंघशक्तिपरिहीनाः ।

परतः स्वयंप्रभांतं च जघन्यभोगावनिर्तिर्यचः ॥ ३२३ ॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्वत पर्यंत अढ़ाई द्वीपविषै ही मनुष्य हैं ते मनुष्य मानुषोत्तर, पर्वतकों उलंघन शक्तिकरि हीन हैं । मानुषोत्तर पर्वतकों उलंघि किसी मनुष्यकी जानेकी सामर्थ्य नाही । बहुरि इस मानुषोत्तर पर्वतके परे स्वयंप्रभ नामा पर्वत पर्यंत जघन्य भोगभूमियां निर्त्यच हैं ॥ ३२३ ॥

कम्मावणिपडिबद्धो बाहिरभागो सयंपहगिरिस्स ।

वरओगाहणजुत्ता तसजीवा होंति तत्थेव ॥ ३२४ ॥

कर्मावनिप्रतिबद्धो बाह्यभागः स्वयंप्रभगिरेः ।

वरावगाहनयुक्ताः त्रसजीवा भवन्ति तत्रैव ॥ ३२४ ॥

अर्थ—स्वयंप्रभ नामा पर्वततै परे जो बाह्य भाग सो कर्म भूमि संबंधी है । **भावार्थ**—स्वयंप्रभ पर्वतके परे कर्मभूमि पाइए है बहुरि उत्कृष्ट शरीरकी अवगाहना संयुक्त त्रस जीव तहां ही बाह्यविषै पाइए हैं ॥ ३२४ ॥

आंगै इस गाथाका अपर अर्द्धविषै कहा जे उत्कृष्ट अवगाहन ताकों एक इन्द्रियका अवगाहनपूर्वक कहैं हैं;—

अधियसहस्सं बारस तिचउत्थेक्कं सहस्सयं पडमे ।

संखे गोम्हिय भमरे मच्छे वरदेहदीहो तु ॥ ३२५ ॥

अधिकसहस्रं द्वादश त्रिचतुर्थमेकं सहस्रकं पद्मे ।

संखे प्रैष्मे भ्रमरे मत्स्ये वरदेहदीर्घे तु ॥ ३२५ ॥

अर्थ—साधिक हजार बारह तीन चतुर्थ भाग एक एक हजार योजन प्रमाण संख प्रैष्म भ्रमर मच्छविषै उत्कृष्ट शरीरका दीर्घपना हो है । **भावार्थ**—एकेन्द्रीविषै कमलका साधिक हजार योजन वेन्द्रीविषै शंखका बारह योजन तेन्द्रीविषै प्रैष्म जो सहस्रपद्य नामा जीव ताका पौण योजन चौन्द्रीविषै भ्रमरका एक योजन पंचेन्द्रीविषै मनुष्यका एक हजार योजन शरीरकी लंबाईका उत्कृष्ट प्रमाण जाननां ॥ ३२५ ॥

आगै तिनहीके व्यास अर उदय कहै हैं;—

वासिर्गि कमले संख मुहुदओ चउपंचचरणमिह गोम्ही ।

वासुदओ दिग्घट्टमतद्वलमालिए तिपाददलं ॥ ३२६ ॥

व्यास एकं कमले शंखे मुखोदयौ चतुःपंचचरणं इह प्रैष्मे ।

व्यासोदयौ दीर्घाष्टमतद्वलमलौ त्रिपाददलम् ॥ ३२६ ॥

अर्थ—कमल नालविषै व्यास एक योजन है सो समान गोल आकार है तातै ताका बाहुल्य भी तितना ही जाननां । बहुरि शंखविषै मुख व्यास च्यारि योजन अर उदय जो उंचाई सो पांच चरण कहिए पांचका चौथा भाग ताका सवा योजन प्रमाण जाननां । बहुरि इहां प्रैष्मविषै व्यास तौ दैर्घ्य ताके आठवें भाग सो तीन योजनका बत्तीसवां भाग प्रमाण अर उदय दीर्घ ताके सोलहवै भाग सो तीन योजनका चौसठिवां भाग प्रमाण जाननां । बहुरि भ्रमरविषै व्यास त्रिचरण कहिए तीन चौथा भाग ताकी पौण योजन प्रमाण अर उदय जो उंचाई सो दल कहिए आध योजन प्रमाण जाननां । तहां वासो तिगुणी परिही इत्यादि करणसूत्र करि कमलका क्षेत्रफल ल्याईए हैं । तहां एक योजन व्यास ताको तिगुणा किए तीन योजन परिधि हो है । याको व्यासकी चौथाई पाव योजन करि गुणें पौण योजन होइ । याको हजार योजन लंबाईकरि गुणें साढ़ा सातसै योजन प्रमाण कमलका क्षेत्रफल हो है ॥ ३२६ ॥

आगै शंखका क्षेत्रफल ल्यावनेको करणसूत्र कहै हैं;—

आयामकदी मुहदलहीणा मुहवासअद्धवग्गजुदा ।

विगुणा वेहेण हदा संखावत्तस्स खेत्तफलं ॥ ३२७ ॥

आयामकृतिः मुखदलहीना मुखव्यासअर्धवर्गयुता ।

द्विगुणा वेधेन हता संखावर्तस्य क्षेत्रफलम् ॥ ३२७ ॥

अर्थ—लंबाईका प्रमाणका वर्ग करिए तामें मुख व्यासका अर्द्ध प्रमाण घटाइए जो प्रमाण रहै तामें मुख व्यासका अर्द्ध प्रमाणका वर्ग मिलाए जो प्रमाण होइ ताको दूणा करिए जो प्रमाण होइ ताको वेध करि गुणिए ऐसे किए संखावर्त क्षेत्रका क्षेत्रफल हो है। सो इहां लंबाई बारह योजन ताका वर्ग एक सो चवालीस योजन तामें मुख व्यास च्यारि योजनका आधा दिय योजन घटाए एक

सौ त्रियालीस योजन तामें मुख व्यासकी आधा दोग योजन ताका वर्ग च्यारि मिलाएँ एकसौ छियालीस योजन याकों दूणां किएँ दोगसै बाणवें योजन इनकों वेधका प्रमाण पांच चौथा भाग तिनकारि गुणें च्यारि करि अपवर्त्तन किएँ तेहत्तरिको पांच गुणा करिएँ तीनसै पैसठि योजन प्रमाण संखका क्षेत्रफल हो है । इहां एहु सूत्र कैसे कह्या ? सो वासनारूप मुरज क्षेत्रफल आदि करि विधान है सो संस्कृत टीकातै जाननां । बहुरी तेइन्द्री चौइन्द्री पंचेन्द्रीनिका घनरूप क्षेत्रफल भुजकोटि व इत्यादि करण-सूत्र करि हो है सो लंबाई चौड़ाईको परस्पर गुणें जो जो प्रमाण होइ तितनां तितनां क्षेत्रफल जाननां । तहां तेइन्द्री त्रैषमका सत्ताईस योजन इक्यासीसै बाणवैका भाग दीजिएँ इतना क्षेत्रफल है । चौइन्द्री भ्रमरका तीन योजनका आठवां भाग प्रमाण क्षेत्रफल है पंचेन्द्री मत्स्यका १२५००० ००० साढा बारा कोडि योजन प्रमाण क्षेत्रफल हो है । अब इहां एकेन्द्रियादि जीवनिका घनरूप क्षेत्रफलनिका अल्प बहु प्रदेश जाननेकों कहिएँ हैं । तहां अति अल्प तेइन्द्रीका घनफल है । तहां एक योजनके सात लाख अडसिठ हजार अंगुल होइं तौ सत्ताईस योजनका इक्यासीसै बाणवै भागविषै एक भागके केते अंगुल होहिं । तहां घनरूप राशिके गुणकार घनरूप ही होइसो सात लाख अडसिठ हजारका घनकारि गुणिएँ तब अंगुल होइं ८१२२ ७६८०००।७६८००।७६८००० बहुरि सूच्यंगुल तौ प्रमाणांगुल है अर इहां शरीरका प्रमाण व्यवहार अंगुलतै है । सो पांचसै व्यवहार अंगुलका एक सूच्यंगुल होइ । अर घनरूप राशिका भागहार भी घन रूप होइ तातै पाचसैका घनका भाग दीजिएँ ५००।५००।५०० बहुरि इहां तीनों जायगा की छह बिन्दी ऊपर अंगुलनिके प्रमाणकी छह विदीका अपवर्त्तन किएँ ऐसा भया ८१२३ ७६८ ७६८०० बहुरि दोग जायगा सात सै अडसिठ थे तिनकी जायगा तीन करि संभेदन किएँ दोगसै छप्पन अर तीन भएँ ८१२३ ५ ३१५६३ ७६८००० बहुरि दोग दोगसै छप्पनकों परस्पर गुणें पणट्टी ६५५३६ भएँ तिनकों सत्ताईसके नाचें इक्यासी बाणवेका भागहार था तिनकारि अपवर्त्तन किएँ आठ भएँ । बहुरि तीन जायगा पांचका परस्पर गुणें एकसौ पच्चीसका भागहार भया तिनकारि सात लाख अडसठि हजारका गुणकारका अपवर्त्तन किएँ इकसठिसै चवालीस भए । अर दोग जायगा तीनका गुणकार था तिनकों परस्पर गुणें नव भएँ तब ऐसे भया २७।८।६।४।४।९ ऐसे सत्ताईस आठ इकसठिसै चवालीस नव इनकों परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ ताकों एक बार संख्यात स्थापि तिहकरि घनांगुलकों गुणें तेन्द्रीका खात फल हो है । ताकी सहनानी ऐसी ६ ? इहां घनांगुलकी सहनानी ऐसी ६ संख्यातकी ऐसी २ जाननी । बहुरि ऐसेही चौइन्द्रीका खात फल करनां । तहां इकसिठसै चवालीस गुणाकारकों तहां घनफलविषै आठका भागहार है तातें आठका अपवर्त्तन किएँ सातसै अडसठिका गुणकार होइ ऐसे पैसठि हजार पांचसै छत्तीस अर सातसै अडसठि अर नव तीन इनका परस्पर गुणनैतै जो प्रमाण होइ तितनां घनांगुलका भया । सो ते-इन्द्रीके गुणकारतै संख्यात अधिक भया ऐसे चौइन्द्रीकों घनांगुलका दोग बार संख्यातका गुणकार जाननां । ताकी सहनानी ऐसी ६ २२ ऐसेही वेन्द्रीके तीन बार ६ २२२ चौइन्द्रीके चार बार ६ २२ ११ पंचेन्द्रीके पांच बार २ ११११ संख्यातका गुणाकारपना गुणकों जाननां ॥ ३२७ ॥

ऐसे उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रसंग करि एकेंद्रियादिक जीव पृथ्वी आदि विशेषरूप हैं तिनका उत्कृष्ट वा जघन्य आयुका कहनेके अर्थ तीन गाथा कहैं हैं;—

शुद्धखरभूजलाणं बारस बावीस सत्त य सहस्सा ।
तेज्जतिण् दिवसतियं सहस्सतियं दस य जेद्दाओ ॥ ३२८ ॥
शुद्धखरभूजलानां द्वादश द्वाविंशतिः सप्त च सहस्राणि ।
तेजस्त्रये दिवसत्रयं सहस्रत्रयं दश च ज्येष्ठम् ॥ ३२८ ॥

अर्थ—शुद्ध खर पृथ्वी जल इनका बारह बाईस सात हजार वर्ष अर तेज आदित्रिकविषै तीन दिन तीन हजार दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आयु है । **भावार्थ**—मृत्तिका आदि शुद्ध पृथ्वी-कायिकका बारह हजार वर्ष, पाषाण आदि खर पृथ्वी कायिकका बाईस हजार वर्ष जल कायिकका सात हजार वर्ष, तेज कायिकका तीन दिन, वात कायिकका तीन हजार वर्ष, वनस्पति कायिकका दश हजार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु है ॥ ३२८ ॥

वासदिणमास बारसमुगुवण्णं छक्क वियलजेद्दाओ ।
मच्छाण पुव्वकोडी णव पुव्वंगा सरिसपाणं ॥ ३२९ ॥
वर्षदिनमासाः द्वादशैकोनपंचाशत् षट्काः विकलज्येष्ठम् ।
मत्स्यानां पूर्वकोटिः नव पूर्वगानि सरीसृपाणाम् ॥ ३२९ ॥

अर्थ—वर्ष दिन मास बारह गुणचास छह विकलत्रयनिका ज्येष्ठ आयु है । **भावार्थ**—चेन्द्रीका बारह वर्ष, तेइन्द्रीका गुणचासदिन, चौइन्द्रीका छह महिना प्रमाण, उत्कृष्ट आयु है । बहुरि मत्स्यनिका कोड़िपूर्व प्रमाण उत्कृष्ट आयु है सो एक पूर्वीग चौरासी लाख वर्ष प्रमाण जाननां ३२९

बावत्तरि बादालं सहस्समाणाहि पक्खिउरगाणं ।
अंतोमुहुत्तमवरं कम्ममहीणरतिरिक्खाऊ ॥ ३३० ॥
द्वाससतिः द्वाचत्वारिंशत् सहस्रमानानि पक्ष्युरगाणाम् ।
अंतर्मुहूर्तमवरं कर्ममहीनरतिरश्वामायुः ॥ ३३० ॥

अर्थ—बहत्तरि बियालीस हजार प्रमाण पंखी उरगनिका आयु है । —**भावार्थ**—पंखी-निका बहत्तरि हजार वर्ष, उरग जे सर्पादि तिनका बियालीस हजार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु है बहुरि शुद्ध पृथ्वीको आदि दैकरि सर्व ही कर्मभूमि संबंधी मनुक्ष वा तिर्यचनिका जघन्य आयु अंतर्मुहूर्त प्रमाण है ॥ ३३० ॥

आगै पहले आयुका निरूपण करि अब तिनहीका वेद विशेषकों निरूपै हैं;—

णिरया इगिविगला संमूछणपंचक्खा होंति संढा हु ।
भोगसुरा संदूणा तिवेदगा गब्भणरतिरिया ॥ ३३१ ॥
निरया एकविकलाः संमूर्छनपंचाक्षाः भवन्ति षंढाः खल्ल ।
भोगसुराः षंढोनाः त्रिवेदगा गर्भनरतिर्यचः ॥ ३३१ ॥

अर्थ—नारकी एकेन्द्री विकलत्रय सन्मूर्छनपंचेन्द्री ए नपुंसक वेदी ही हैं । बहुरि भोगभू-
मियां मनुक्ष तिर्यच अर देव ए नपुंसक विना दोय वेदी ही हैं । बहुरि गर्भजन्म भूमिके मनुक्ष
तिर्यच तीनों वेदके धारक हो हैं । अगै प्रसंगका प्रसंगरूप अर्थका प्रतिपादन करि अब प्रकृत
ज्योतिर्लोकका अधिकारका प्रतिपादन करै हैं ॥ ३३१ ॥

तहां तारादिकनिका स्थिति स्थान तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

णडदुत्तरसत्तसए दस सीदी चदुदुगे तियचउके ।

तारिणससिरिक्खबुहा सुक्कगुरुंगारमंदगदी ॥ ३३२ ॥

नवत्युत्तरसप्तशतानि दश अशीतिः चतुर्दिके त्रिकचतुष्के ।

तारेनशशिक्षबुधाः शुक्रगुर्वेगारमंदगतयः ॥ ३३२ ॥

अर्थ—निवै अधिक सातसै विषै उपरि दश असी च्यारि दोय स्थानविषै तीन च्यारि स्थान
विषै जाइ क्रमतै तारा इन शशि ऋक्ष बुध शुक्र गुरु अंगार मंदगति तिष्ठै हैं । भावार्थ—
चित्रा पृथ्वीतै लगाइ सातसै निवै योजन ऊपरि तौ तारे हैं । बहुरि तिनतै दश योजन ऊपरि इन
कहिए सूर्य है । बहुरि तिनतै असी योजन ऊपरि शशि कहिए चंद्रमा है । बहुरि तिनतै च्यारि
योजन ऊपरि ऋक्ष कहिए नक्षत्र हैं । बहुरि तिनतै च्यारि योजन ऊपरि बुध है । बहुरि तिनतै
तीन योजन ऊपरि शुक्र है । बहुरि तिनतै तीन योजन ऊपरि गुरु कहिए बृहस्पति है । बहुरि
तिनतै तीन योजन ऊपरि अंगार कहिए मंगल है । बहुरि तिनतै तीन योजन ऊपरि मंदगति कहिए
शनैश्वर है । ऐसे ज्योतिषी तिष्ठै हैं ॥ ३३२ ॥

अवसेसाण गहाणं णयरीओ उवरि चित्तभूमिदो ।

गंचूण बुहसणीणं विच्चाले होंति णिच्चाओ ॥ ३३३ ॥

अवशेषाणां ग्रहाणां नगर्य उपरि चित्राभूमितः ।

गत्वा बुधशन्योः विचाले भवंति नित्याः ॥ ३३३ ॥

अर्थ—अठ्यासी ग्रहनिविषै अब शेष तिनकी नगरी उपरि उपरि चित्रा भूमितै जाइ बुध
अर शनैश्वर इन दोऊनकै बीच अंतराल क्षेत्रविषै शाश्वती हैं ॥ ३३३ ॥

अत्थइ सणी णवसये चित्तादो तारगावि तावादिए ।

जोइसपडलबहल्लं दससहियं जोयणाण सयं ॥ ३३४ ॥

आस्ते शनिः नवशतानि चित्रातः तारका अपि तावतः ।

ज्योतिष्कपटलब्राह्म्यं दशसहितं योजनानां शतम् ॥ ३३४ ॥

अर्थ—शनैश्वर चित्रा भूमितै नवसै योजन ऊपरि आस्ते कहिए तिष्ठै है । बहुरि तारे
हैं ते भी तावत कहिए नवसै योजन पर्यंत तिष्ठै हैं । सो चित्रातै सातसै निवै योजन ऊपरि
सों लगाय नवसै योजन पर्यंत ज्योतिषी देवनिका पटलका ब्राह्म्य कहिए मोटाईका प्रमाण सो
दश सहित एकसौ योजन प्रमाण जानना ॥ ३३४ ॥

आगै प्रकीर्णक तारानिका प्रकार अंतराल निरूपण है;—

तारंतरं जहणं तेरिच्छे कोससत्तभागो दु ।

पण्णासं मज्झिमयं सहस्समुक्कस्सयं होदि ॥ ३३५ ॥

तारांतरं जघन्यं तिर्यक् क्रोशसत्तभागस्तु ।

पंचाशत् मध्यमकं सहस्रमुत्कृष्टकं भवति ॥ ३३५ ॥

अर्थ—तारातै ताराके बीचि तिर्यगरूप बरोबरविषै अंतराल जघन्य एक कोशका सातवां भाग, मध्यम पचास योजन, उत्कृष्ट एक हजार योजन प्रमाण हो है ॥ ३३५ ॥

अब ज्योतिषीनिके विमानस्वरूप निरूपै हैं;—

उत्ताणाद्वियगोलगदलसरिसा सब्वजोइसविमाणा ।

उवरिं सुरणगराणि य जिणभवणजुदाणि रम्माणि ॥ ३३६ ॥

उत्तानस्थितगोलकसदृशाः सर्वज्योतिष्कविमानाः ।

उपरि सुरनगराणि च जिनभवनयुतानि रम्याणि ॥ ३३६ ॥

अर्थ—गोलक जो गोला ताका दल कहिए तिस गोलाकों बीचिमैसौं विदारि दोय खंड करिए तिसविषै जो एक खंड सो उत्तान स्थित कहिए तिस आधा गोलाकों ऊंचा स्थापित किया होय चौड़ा ऊपरि अर ताकी अणी नीचे ऐसे घस्या होइ ताका जैसा आकार तिह समान सर्व ज्योतिषीनिके विमान हैं । बहुरि तिन विमानानिके ऊपरि ज्योतिषी देवनिके नगर हैं । ते नगर जिन मंदिरनिकरि संयुक्त हैं । बहुरि रमणीक हैं ॥ ३३६ ॥

आगै तिन विमाननिका व्यास अर बाहुल्य दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

जोयणमेकट्टिकए छप्पणठदाल चंद्ररविवासं ।

मुक्कगुरिदरतियाणं कोसं किंचूणकोस कोसद्धं ॥ ३३७ ॥

योजनं एकषष्टिकृते षट्पंचाशदष्टचत्वारिंशत् चंद्ररविव्यासौ ।

शुक्रगुर्वितरत्रयाणां क्रोशः किंचिदूनक्रोशः क्रोशार्धम् ॥ ३३७ ॥

अर्थ—एक योजनका इकासठ भाग करिए तहां छप्पन भाग प्रमाण तो चन्द्रमाके विमानका व्यास है । बहुरि अठतालीस भाग प्रमाण सूर्यके विमानका व्यास है । बहुरि शुक्रका एक कोश, बृहस्पतिका किंचित ऊन एक कोश, इतर तीन बुध मंगल शनैश्वर इनका आध कोश प्रमाण विमान व्यास जाननां ॥ ३३७ ॥

कोसस्स तुरियमवरं तुरियहियकमेण जाव कोसोत्ति ।

ताराणं रिक्खाणं कोसं बहलं तु बासद्धं ॥ ३३८ ॥

क्रोशस्य तुरीयमवरं तुर्याधिकक्रमेण यावत् क्रोश इति ।

ताराणां ऋक्षाणां क्रोशं बाहुल्यं तु व्यासार्धम् ॥ ३३८ ॥

अर्थ—तारानिका विमाननिका जघन्य व्यास कोशका चौथा भाग प्रमाण है । बहुरि चौथाई अधिक एक कोश पर्यंत जाननां । तहां आध कोश पाणै कोश प्रमाण मध्यम व्यास

जाननां । एक कोश प्रमाण उत्कृष्ट व्यास जाननां । बहुरि शेष जे नक्षत्र तिनका विमान व्यास एक कोश प्रमाण जाननां । बहुरि सर्व विमाननिका बाहुल्य कहिए मोटाईका प्रमाण सो अपने अपने व्यासतैं आधा जाननां ॥ ३३८ ॥

आगैं राहु केतु ग्रहणिका विमान व्यास वा तिनका कार्य वा तिनका अवस्थानकों दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

राहुअरिष्टविमाणा किंचूणं जोयणं अधोगंता ।

छम्मासे पव्वंते चंद्रवी छादयंति कमे ॥ ३३९ ॥

राहुरिष्टविमानौ किंचिदूनौ योजनं अधोगंतारौ ।

षण्मासे पर्वति चंद्रवी छादयतः क्रमेण ॥ ३३९ ॥

अर्थ—राहु अर अरिष्ट कहिए केतु इन दोऊनिके विमान किछू घाटि एक योजन प्रमाण है । बहुरि ते विमान क्रम करि चंद्रमा अर सूर्यका विमानकैं नीचै गमन करैं हैं । बहुरि छह मास भए पर्वका अंतविषै चंद्रमा सूर्यको आछादै हैं । राहु तौ चंद्रमाको आछादे है, केतु सूर्यको आछादे है याका ही नाम ग्रहण कहिए हैं ॥ ३३९ ॥

राहुअरिष्टविमाणधयादुवरि पमाणंगुलचउक्कं ।

गंतूण ससिविमाणा सूरविमाणा कमे होंति ॥ ३४० ॥

राहुरिष्टविमानध्वजादुपरि प्रमाणांगुलचतुष्कम् ।

गत्वा शशिविमानाः सूर्यविमाना क्रमेण भवंति ॥ ३४० ॥

अर्थ—राहु अर केतुके विमाननिका जो ध्वजा दंड ताके ऊपरि च्यारि प्रमाणांगुल जाइ क्रम करि चंद्रमाके विमान अर सूर्यके विमान हैं । राहु विमानकैं ऊपरि चंद्रमा विमान है केतु विमानकैं ऊपरि सूर्य विमान हैं ॥ ३४० ॥

आगैं चंद्रादिकनिकै किरणनिका प्रमाण कहैं हैं;—

चंदिण बारसहस्सा पादा सीयल खरा य सुक्के तु ।

अड्ढाइज्जसहस्सा तिक्वा सेसा हु मंदकरा ॥ ३४१ ॥

चंद्रेनयोः द्वादशसहस्राः पादाः शीतलाः खराश्च शुक्रे तु ।

अर्धतृतीयसहस्राः तीव्राः शेषा हि मंदकराः ॥ ३४१ ॥

अर्थ—चंद्रमा अर सूर्य इनके बारह बारह हजार किरण हैं । तहां चंद्रमाके किरण शीतल हैं सूर्यके किरण खर कहिए तीक्ष्ण हैं । बहुरि शुक्र है ताके अढ़ाई हजार किरण हैं ते तीव्र कहिए प्रकाश करि उज्जल हैं । बहुरि अमशेष ज्योतिषी मंदकरा कहिए मंद प्रकाश संयुक्त है ॥ ३४१ ॥

आगैं चंद्रमाका मंडलकी वृद्धि हानिका अनुक्रमकूं कहैं हैं;—

चंदो णियसोलसमं किण्हो सुक्को य पण्णरदिणोत्तिं ।

होद्विळ णिच्च राहुगमणविससेण वा होदि ॥ ३४२ ॥

चंद्रो निजषोडशं कृष्णः शुक्लश्च पंचदशदिनांतम् ।

अधस्तनं नित्यं राहुगमनविशेषण वा भवति ॥ ३४२ ॥

अर्थ—चन्द्रमण्डल है सो अपना सोलहवां भाग प्रमाण कृष्ण अर शुक्ल पंद्रह दिन पर्यंत हो है । **भावार्थ**—चन्द्रविमानका जो सोलह भागविषै एक एक भाग एक एक दिनविषै कृष्णपक्षविषै तो श्यामरूप होइ अर शुक्लपक्षविषै श्वेतरूप होइ स्वयमेव पंद्रह दिन पर्यंत परिनमै है । तहां चन्द्रमाका विमानका क्षेत्र योजनका छप्पन इकसठिवां भाग प्रमाण $\frac{५६}{६९}$ है तो एक कलाका केता होइ । ऐसे ताकों सोलहका भाग दिए आठ करि अपवर्तन किए एक योजनका एकसौ बाईस भाग करि तामें सात भाग प्रमाण एक कलाका प्रमाण आया $\frac{५०}{६३}$ बहुरि एक कलाका इतना $\frac{५०}{६३}$ प्रमाण होइ तो सोलह कलानिका केता होइ ऐसे दोयका अपवर्तन करि गुणें छप्पन इकसठिवां भाग प्रमाण आवै । बहुरि अन्य कोई आचार्यनिके अभिप्रायकरि चंद्रविमानकै नीचे राहुविमान गमन करै है तिस राहुका सदा काल ऐसा ही गमन विशेष है जो एक एक कला चंद्रमाकी क्रमते आछादे वा उघाडै है तिहकरि वृद्धि हानि है ॥ ३४२ ॥

आगै चन्द्रादिकनिके विमानके वाहक कहिथे चलावनेवाले देव तिनका आकार विशेष वा तिनकी संख्या कहै हैं;—

सिंहगयवसहजडिलस्सायारसुरा वहंति पुव्वादिं ।

इंदुरवीणं सोलससहस्समद्भ्रमिदरतिये ॥ ३४३ ॥

सिंहगजवृषभजटिलाश्वाकारसुरा वहंति पूर्वादिम् ।

इंदुरवीणां षोडशसहस्राणि तदर्धार्धक्रममितरत्रये ॥ ३४३ ॥

अर्थ—सिंह हाथी वृषभ जटिलरूप आकारकों धारि देव हैं ते विमाननिकों पूर्वादि दिशानि प्रति वहंति कहिए लेइ चालै हैं । ते देव चन्द्रमा अर सूर्य इनके तौ प्रत्येक सोलह हजार हैं । बहुरि हंतारि तीनके आधे आधे हैं । तहां ग्रहनिके आठ हजार नक्षत्रनिके च्यारि हजार तारनिके दोय हजार विमान वाहक देव जाननें ॥ ३४३ ॥

आगै आकाशविषै गमन करते जे केई नक्षत्र तिनके दिशाभेद कहै हैं;—

उत्तरदक्खिणउट्ठाधोमज्झे अभिजिमूलसादी य ।

भरणी कित्तिय रिक्खा चरंति अवराणमेवं तु ॥ ३४४ ॥

उत्तरदक्षिणोर्ध्वाधोमध्ये अभिजिन्मूलस्वातिश्च ।

भरणी कृत्तिका ऋक्षाणि चरंति अवराणामेवं तु ॥ ३४४ ॥

अर्थ—उत्तर १ दक्षिण १ उर्ध्व १ अधः १ मध्य १ इनविषै क्रमते अभिजित १ मूल १ स्वाति १ भरणी १ कृत्तिका १ ए पंच नक्षत्र गमन करै हैं । अवराण कहिए क्षेत्रांतरकों प्राप्त भए जे अभिजित आदि पंच नक्षत्र तिनकी ऐसी अवस्थिति है ॥ ३४४ ॥

आगै मेरु गिरितै कितने दूरि कैसे गमन करै हैं;—

इगिवीसेयारसयं विहाय मेरुं चरंति जोइगणा ।

चंदतियं वज्जित्ता सेसा हु चरंति एकपहे ॥ ३४५ ॥

एकविंशैकादशशतानि विहाय मेरुं चरंति ज्योतिर्गणाः ।

चन्द्रत्रयं वर्जयेत्वा शेषा हि चरंति एकपथे ॥ ३४५ ॥

अर्थ—इकईस अधिक ग्यारहसै योजन मेरुकों छोडि ज्योतिषीसमूह गमन करै हैं ।
भावार्थ—मेरु गिरितै ग्यारहसै इकईस योजन ऊपरै ज्योतिषी मेरुकी प्रदक्षिणारूप गमन करै हैं मेरुतै ग्यारहसै इकईस योजन पर्यंत कोऊ ज्योतिषी न पाईए है । बहुरि चन्द्रमा सूर्य ग्रह इन तीन बिना अब शेष सर्व्व ज्योतिषी एक पथविषै गमन करै हैं । **भावार्थ**—चन्द्रमा सूर्य ग्रह तौ कदाचित् कोई कदाचित् कोई परिधिरूप मार्गविषै भ्रमण करै हैं । बहुरि नक्षत्र अर तारे ए अपनां अपनां एक ही परिधिरूप मार्गविषै गमन करै हैं । अन्य अन्य मार्गविषै नाहीं भ्रमण करै हैं ॥ ३४५ ॥
अब जंबूद्वीपतै लगाय पुष्करार्द्ध पर्यंत चन्द्रमा सूर्यनिका प्रमाण निरूपै है;—

दो द्वोवर्गं बारस बादाल बहत्तरिंदुइणसंखा ।

पुक्खरदलोत्ति परदो अवट्टिया सव्वजोइगणा ॥ ३४६ ॥

द्वौ द्विवर्गं द्वादश द्वाचत्वारिंशत् द्वासप्ततिरिंद्विनसंख्या ।

पुष्करदलांतं परतः अवस्थिताः सर्व्वज्योतिर्गणाः ॥ ३४६ ॥

अर्थ—दोय दोय वर्ग बारह बियालीस बहत्तरि चन्द्रमा सूर्यनिकी संख्या पुष्करार्द्ध पर्यंत है ।
भावार्थ—जंबूद्वीपविषै दोय लवण समुद्रविषै च्यारि धातुकी खंडविषै बारह कालोदकविषै बियालीस पुष्करार्द्धविषै बहत्तरि चन्द्रमा हैं । अर इतनै इतनै ही सूर्य है । बहुरि पुष्करार्द्धतै परै जे ज्योतिषी देवनिका गण है ते अवस्थित है । कदाचित् अपने अपने स्थानतै गमन नाहीं करै हैं जहां ही स्थिररूप तिष्ठै है ॥ ३४६ ॥

आगै तहां तिष्ठै हैं जु ध्रुव तारे तिनकों निरूपै हैं;—

छक्कदि णवतीससयं दसयसहस्सं खबार इगिदालं ।

गयणतिदुगतेवण्णं थिरतारा पुक्खरदलोत्ति ॥ ३४७ ॥

षट्कृतिः नवत्रिंशशतं दशकसहस्रं खद्वादश एकचत्वारिंशत् ।

गगनत्रिद्विकत्रिपंचाशत् स्थिरताराः पुष्करदलांतम् ॥ ३४७ ॥

अर्थ—छहकी कृति ३६ अर गुणतालीस अधिक सौ १३९ अर दश अधिक हजार १०१० अर बिंदी बारह इकतालीस ४११२० अर बिंदी तीन दोय तरेपन ५३२३० इतने पुष्करार्ध पर्यंत स्थिर तारे हैं । **भावार्थ**—जंबूद्वीपविषै छत्तीस लवण समुद्रविषै एक सौ गुणतालीस धातुकी खंडविषै एक हजार दश कालोदकविषै इकतालीस हजार एकसौ वीस पुष्करार्द्धविषै तरेपन हजार दोयसै तीस ध्रुव तारे हैं । ते कबहूँ अपने स्थानतै गमन नाहीं करै हैं । जहांके तहां स्थिररूप रहै हैं ॥ ३४७ ॥

आगै ज्योतिषी समूहनिके गमनका क्रम विचारै हैं;—

सगसगजोइगणद्धं एक्के भागम्हि दीबडवहीणं ।

एक्के भागे अद्धं चरंति पंतिकमेणेव ॥ ३४८ ॥

स्कककीयज्योतिर्गणार्धं एकस्मिन् भागे द्वीपोदधीनाम् ।

एकस्मिन् भागे अर्धं चरन्ति पंक्तिक्रमेणैव ॥ ३४८ ॥

अर्थ—अपनां अपनां ज्योतिषी गणका अर्द्धं तो द्वीप समुद्रनिका एक भागविषै अर अर्द्ध एक भागविषै पंक्तिका अनुक्रम करि विचरै हैं । **भावार्थ**—जिह द्वीप वा समुद्रविषै जेते ज्योतिषी हैं तिनविषै आधे ज्योतिषी तौ तिह द्वीप वा समुद्रका एक भागविषै गमन करै हैं आधे एक भाग विषै गमन करै हैं । ऐसे पंक्ति लिए गमन जाननां ॥ ३४८ ॥

आगै मानुषोत्तर पर्वततै परे चंद्रमा सूर्यनिके अवस्थानका अनुक्रम रूपै है;—

मणुमुत्तरसेलादो वेदियमूलाद् दीवउवहीणं ।

पण्णाससहस्सेहि य लक्खे लक्खे तदो वलयं ॥ ३४९ ॥

मानुषोत्तरशैलात् वेदिकामूलात् द्वीपोदधीनाम् ।

पंचाशत्सहस्रैश्च लक्षे लक्षे ततो वलयं ॥ ३४९ ॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्वततै परै अर द्वीप समुद्रनिका वेदीनिके परै तौ पचास हजार योजन जाइ प्रथम वलय है । बहुरि तिस प्रथम वलयतै परै लाख लाख योजन परै जाइ द्वितीयादिक वलय है । **भावार्थ**—मानुषोत्तर पर्वततै पचास हजार योजन व्यास परै जो परिधि सो बाह्य पुष्करार्द्ध द्वीपका प्रथम वलय है । तिह परै एक लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो दूसरा वलय है ऐसै लाख लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो वलय जाननां । बहुरि पुष्कर द्वीपकी अंत वेदिकाके परै पचास हजार योजन व्यास जाइ जो परिधि सो पुष्कर समुद्रका प्रथम वलय है । तातै परै लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो द्वितीय वलय है । ऐसे लाख लाख योजन व्यास परै जाइ जो परिधि सो वलय जाननां । ऐसै ही अन्य द्वीप समुद्रनिविषै वलय जाननां ॥ ३४९ ॥

आगै तिन वलयनविषै तिष्ठते जे चन्द्रमा सूर्य तिनकी संख्या कहै हैं;—

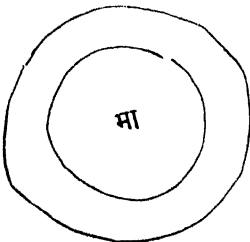
दीवद्वपढमवलये चउदालसयं तु वलयवलयेसु ।

चउचउवड्डी आदी आदीदो दुगुणदुगुणकमा ॥ ३५० ॥

द्वीपार्धप्रथमवलये चतुश्चत्वारिंशच्छतं तु वलयवलयेषु ।

चतुश्चतुर्विंशद्वयः आदिः आदितः द्विगुणद्विगुणक्रमः ॥ ३५० ॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्वततै बाह्यस्थित जो पुष्करार्ध ताका प्रथम वलयविषै एक सौ चवालीस है । **भावार्थ**—जो मानुषोत्तर पर्वत परे पचास हजार योजन परे जाइ जो परिधि विषै एक सौ चवालीस चन्द्रमा एक सौ चवालीस सूर्य है । ऐसै ही द्वितीयादि वलय वलयविषै च्यारि च्यारि वधती चन्द्रमा सूर्य जाननें । १४८। १५२।१५६।१६०।१६४।१६८।१७२। बहुरि उत्तरोत्तर द्वीप वा समुद्रका आदिविषै पूर्व पूर्व द्वीप वा समुद्रका आदितै दूणे दूणे क्रमतै जाननें । जैसे पुष्करार्द्धका आदिविषै एकसौ चवालीस, तातै दूणें पुष्कर समुद्रका आदि विषै हैं, तातै द्वितीयादि वलयविषै च्यारि च्यारि वधती हैं । ऐसे ही सर्वत्र जानने ॥ ३५० ॥



आगै तिस तिस वलयविषै तिष्ठते चन्द्रमातै चंद्रमाका अंतराल सूर्यतै सूर्यका अंतराल परिधि विषै कहै हैं;—

सगसगपरिधि परिधिगरविंदुभजिदे दु अंतरं होदि ।

पुस्समिह सव्वसूरट्टिया हु चंदा य अभिजिमिह ॥ ३५१ ॥

स्वकस्वकपरिधि परिधिगरवींदुभक्ते तु अंतरं भवति ।

पुष्ये सर्वसूर्याः स्थिता हि चंद्राश्च अभिजिति ॥ ३५१ ॥

अर्थ—अपनां अपनां सूक्ष्म परिधिकों परिधिविषै प्राप्त जे चन्द्र वा सूर्य तिनके प्रमाणका भाग दिएं अंतराल हो है । तहां प्रथम जंबूद्वीपतै लगाय दोऊ तरफका अभ्यन्तर द्वीप समुद्रनिका वा वलयनिका व्यास मिलाएं बाह्य पुष्करार्धका प्रथम वलयका सूची व्यास छियालीस लाख योजन हो है । मानुपोत्तर पर्वतका सूची व्यास पैतालीस लाख योजन ताभै दोऊ तरफका वलयका व्यास पचास हजार योजन मिलाएं छियालीस लाख योजन हो है । याका 'विष्कंभवग्गदहगुण' इत्यादि करणसूत्रकरि सूक्ष्म परिधिविषै एक कोड़ि पैतालीस लाख छियालीस हजार च्यारि योजन प्रमाण होइ ताकों परिधिविषै प्राप्त सूर्य वा चन्द्रमाका प्रमाण एक सौ चवालीस ताका भाग दिएं एक लाख एक हजार सतरह योजन अर गुणतीस योजनका एक सौ चवालीसवां भाग प्रमाण १०१० १७ $\frac{३३}{१०००}$ सूर्यतै सूर्यका चन्द्रतै चन्द्रका अंतराल परिधिविषै बिबसहित जाननां बहुरि बिब जो चंद्र वा सूर्यका मंडल तीह विना अंतराल ल्याइये है जो बिबसहित अंतरालविषै योजन थे तिनमें सौं एक घटाइए १०१०१६। बहुरि तिस एक योजनकों गुणतीसका एकसौ चवालीसवां भाग सहित समछेद विधान करि जोड़िए तब $\frac{२९}{१५} \frac{१५४}{१५४} \frac{२९}{१५४}$ एकसौ तहेत्तरिका एकसौ चवालीसवां भाग होइ तांमै चन्द्रका बिब छप्पनका इकसठिवां भाग सो समछेद विधान करि घटाइए $\frac{१७३}{१५४} \frac{५६}{६१}$ तब चौईसै निवासीकों सित्यासीसै चौरासीका भाग दीजिए इतना भया ऐसे करि चन्द्रमातै चन्द्रमाका बिब रहित अंतराल एक लाख एक हजार सोलह योजन अर चौईसै निवासी योजनका सित्यासीसै चौरासी भागविषै एक भाग प्रमाण आया । बहुरि तीह एकसौ तहेत्तरिका एकसौ चवालीसवां भागविषै अठतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्यबिबकों सम-छेद विधान करि घटाए छत्तीसै इकतालीसका सित्यासीसै चौरासीवां भाग आया $\frac{१७३}{१५४} \frac{५६}{६१}$ $\frac{१०५५३}{८७८४}$ सो इतनै करि अधिक एक लाख एक हजार सोलह योजन प्रमाण सूर्यतै सूर्यका अंत-राल जाननां । ऐसे ही अन्य वलयनिविषै अंतराल ल्यावना । बहुरि सर्व वलयसंबंधी सूर्य तौ पुष्य नक्षत्रविषै स्थित है । अर चन्द्रमा अभिजित नक्षत्रविषै स्थित है । **भावार्थ**—सूर्यका विमान अर पुष्य नक्षत्रका विमान नीचे ऊपरि तिहै हैं । अर चन्द्रमाका विमान अर अभिजित नक्षत्रका विमान नीचे उपरि है ॥ ३५१ ॥

आगै असंख्यात द्वीप समुद्रनिविषै प्राप्त जे चन्द्रादिक तिनकी संख्या ल्यावनेकौ गच्छका प्रमाण ल्यावता थका ताका कारणभूत असंख्यात द्वीप समुद्रनिका संख्याकों आठ गाथानिकरि कहै हैं;—

रज्जूदलिते मन्दिरमज्झादो चरिमसायरंतोत्ति ।

पडदि तदद्वे तस्स दु अब्भंतरवेदिया परदो ॥ ३५२ ॥

रज्जूदलिते मंदरमध्यतः चरमसागरांत इति ।

पतति तदर्धे तस्य तु अभ्यंतरवेदिका परतः ३५२ ॥

अर्थ—राजूको आधा किं मेरुका मध्यतै लगाय अंतका सागर पर्यंत प्राप्त हो है । **भावार्थ**—मध्यलोक एक राजू है तिस एक राजूको आधा करिए तत्र मेरुगिरिका मध्यतै लगाय अंतका स्वयंभूरमण समुद्रपर्यंत एक पार्श्वविषै क्षेत्र हो है । बहुरि तिसको आधा किं तिसकी अभ्यन्तर वेदिकाके परै ॥ ३५२ ॥

कहा सो कहै हैं;—

दसगुणपण्णत्तरिसयजोयणमुवगम्म दिस्सदे जम्हा ।

इगिलक्खहिओ एक्को पुव्वगसव्वुवहिदीर्वेहिं ॥ ३५३ ॥

दशगुणपंचसप्ततिशतयोजनमुपगम्य दृश्यते यस्मात् ।

एकलक्षाधिकः एकः पूर्वगसर्वोदधिद्वीपेभ्यः ॥ ३५३ ॥

अर्थ—दश गुणां पिचहतरिसै योजन जाइ राजू दीसै है । **भावार्थ**—स्वयंभूरमण समुद्रकी अभ्यन्तर वेदीतै पिचहत्तरि हजार योजन परै जाइ तिस आध राजूका अर्द्धभाग हो है । काहेतै जातै सर्व्व पूर्व्व द्वीप वा समुद्रनिके व्यासकों जोड़े जो प्रमाण होइ तातै उत्तर द्वीप वा समुद्रका व्यास एक लाख योजन अधिक हो है । सो इसही कथनको स्पष्ट करै हैं—स्वयंभूरमण समुद्रका बत्तीस लाख योजन प्रमाण व्यास कल्पि करि जंबूद्वीपका आध लाख सहित सर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यासके अंकनिको जोड़िए ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल । १६ ल । ३२ ल । तब कल्पना करि आप राजूका प्रमाण साढ़ा बासठि लाख योजन भए, बहुरि याकों आधा किं इकतीस लाख पचीस हजार योजन प्रमाण दूसरी वार आधा किया राजूका प्रमाण होइ तिहविषै पूर्व्वद्वीप समुद्रनिका वलय व्यास ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल । १६ ल । जो जोड़े तीन लाख पचास हजार योजन प्रमाण भया । सो घटाए तिस स्वयंभूरमण समुद्रका अभ्यन्तर वेदिकातै परै पिचहत्तरि हजार योजन समुद्रमें गए आध राजूका अर्ध हो है । बहुरि तीह द्वितीय वार आधा किया राजू प्रमाण ३१२५०० को आधा किं पंद्रह लाख बासठि हजार पांच सै योजन तीसरी वार आधा किया राजूका प्रमाण हो है । तीहविषै पूर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यास ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल मिलाए साढ़ा चौदह लाख योजन भए । सो घटाए तिस स्वयंभूरमण द्वीपका अभ्यन्तर वेदिकातै एक लाख बारह हजार पांचसै योजन परै द्वीपविषै जाइ तृतीयवार आधा किया हुवा राजू क्षेत्रका प्रमाण हो है ऐसैही पूर्व्व पूर्व्वको आधा करि तीहविषै पूर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यास घटाए जो जो प्रमाण रहै तितनां तितनां तिस तिस द्वीप वा समुद्रकी अभ्यन्तर वेदिकातै परै जाइ चतुर्थवार आदि आधा किया राजू क्षेत्रका प्रमाण जाननां ॥ ३५३ ॥

पुणरवि छिण्णे पच्छिमदीवब्भंतरिमवेदियापरदो ।

सगदलजुदपण्णत्तरिसहस्समोसरिय णिवडादि सा ॥ ३५४ ॥

पुनरपि छिन्नायां पश्चिमद्वीपाभ्यन्तरवेदिकापरतः ।

स्वदलयुतपंचसप्ततिसहस्रमपसृत्य निपतति सा ॥ ३५४ ॥

अर्थ—बहुरि भी दूसरी बार छिन्न कहिए आधा किया राजू ताकों आधा किए ताके पीछे जो द्वीप ताकी अभ्यन्तर वेदिकातै परै अपना आधा साठा सैतीस हजार करि संयुक्त पिचहत्तरि योजन परै जाइ सो राजू पडै है । संदृष्टि—द्वितीय बार छिन्न राजूका प्रमाण इकतीस लाख पचीस हजार योजन ताका आधा किए पंद्रह लाख बासठि हजार पांचसै योजन होत संतै स्वयंभू रमणतै पाछला स्वयंभू रमण द्वीप ताकी अभ्यन्तर वेदिकातै परै तिस द्वीपविषै अपनां आधा करि अधिक पिचहत्तरि हजारके भए एक लाख बारह हजार पांचसै सो इतने योजन जाइ सो राजू पडै है ॥३५४॥

अर्द्ध चतुर्थ अष्टमादि राजूके अंश किए जहां जहां मध्य क्षेत्र होइ तहां तहां राजूका पड़ना कहिए है;—

दलित्ते पुण तदणंतरसायरमज्झंतरत्थवेदीदो ।

पडादि सदलचरणणिणदपण्णत्तरिदससयं गत्ता ॥ ३५५ ॥

दलिते पुनः तदनंतरसागरमध्यांतरस्थवेदीतः ।

पतति स्वदलचरणान्वितपंचसप्ततिदशशतं गत्वा ॥ ३५५ ॥

अर्थ—बहुरि ताकों आधां किए ताके अनंतरि अहीन्द्रवरनामा समुद्रकी अभ्यन्तर वेदिका-तै परे अपनां आधा अर चौथाई करि संयुक्त पिचहत्तरि दश सैकड़ां प्रमाण योजन जाइ सो राजू पडै है । संदृष्टि—तीसरी बार आधा किया खंड पंद्रह लाख बासठि हजार पांचसै १५६२५०० ताकों आधा किए सात लाख इक्यासी हजार दोयसै पचास योजन होत संते तिस स्वयंभूरमण द्वीपके अनंतरि अहीन्द्रवरनामा समुद्र ताका अभ्यन्तर तटतै परै तिस समुद्रविषै पिचहत्तरि दश सैकड़ाका पिचहत्तरि हजार भए ताका आधा साढासै तीस हजार अर चौथाई पौणा उगणीस हजार इनकों मिलाए एक लाख इकतीस हजार दोयसै पचास १३१२५० भए । सो इतने योजन जाइ सो राजू पडै है ॥ ३५५ ॥

इदि अब्भन्तरतडदो सगदलतुरियट्टमादिसंजुत्तं ।

पण्णत्तरिं सहस्सं गंतूण पडोदि सा ताव ॥ ३५६ ॥

इति आभ्यन्तरतटतः स्वकदलतुर्याष्टमादिसंयुक्तम् ।

पंचसप्ततिसहस्रं गत्वा पतति सा तावत् ॥ २५६ ॥

अर्थ—ऐसेही अभ्यन्तर तटतै अपनां अर्द्ध चौथा भाग आठवां भाग आदि संयुक्त पिचह-त्तरि हजार योजन जाइ जाइ सो राजू तावत् पडे है । तहां चौथावार आधा किए अहीन्द्रवर नाम द्वीपका अभ्यन्तर तटतै अपनां आधा ३७५००० चौथाई १८७५० अष्टमांस ९३७५ करि संयुक्त पिचहत्तरि ७५००० हजार योजन ४०६२५ जाइ एक पडै है बहुरि पांचई वार आधा किए तातै पिछला समुद्रकी अभ्यन्तर वेदीतै अपनां आधा चौथाई अष्टमांश सोलह्हां अंश करि संयुक्त पिचहत्तरि हजार योजन परै जाइ राजू पडै है, बहुरि छठीवार आधा किए तिस समुद्रतै

पिछला द्वीपकी अभ्यन्तर वेदीतैं अपना अर्द्ध चौथाई आठवां सोलवां बत्तीसवां भाग संयुक्त पिच-हंत्तरि हजार योजन परै जाइ राजू पड़ै है ऐसेही पूर्व्वे जेता अधिक होइ तातैं आधा आधा अधि-कका अनुक्रम करि पिछला समुद्र वा द्वीपकी अभ्यन्तर वेदीतैं परै जाइ सो राजू पड़ै है। तहां आधा आधाका अनुक्रम करि जहां एक योजनका अधिकपणा उवरै तहां पर्यंत पिचहत्तरि हजारके अद्धे-छेद सतरह हो हैं। बहुरि तहां पीछे उवर्या जो एक योजन ताके अंगुल करिए तबैं सात लाख अड़सठि हजार होंहिं तिनका आधा आधा क्रम करि एक अंगुल उवरै तहां पर्यंत उगणीस अर्द्ध-छेद हो है। तिन सर्व्व छेदनिकों मिलाय ताका नाम संख्यात किया। बहुरि उवर्या था एक अंगुल ताके प्रदेश करि आधा आधा अनुक्रम लिए अधिक करतैं सूच्यंगुलके अर्धछेदनिका जो प्रमाण तितनी वार भए एक प्रदेशका अधिकपणा आनि रहै सो संख्यात अर सूच्यंगुलका अर्द्धछेद मिलाय संखेज्जरूपसंजुद इत्यादि गाथा कहैं हैं ॥ ३५६ ॥

संखेज्जरूपसंजुदसूईअंगुलछिदिप्पमा जाव ।

गच्छंति दीवजलही पडादि तदो साद्धलक्खेण ॥ ३५७ ॥

संख्येयरूपसंयुतसूच्यंगुलछेदप्रमा यावत् ।

गच्छंति द्वीपजलधयः पतति ततः सार्धलक्षेण ॥ ३५७ ॥

अर्थ—संख्यातरूप करि संयुक्त ऐसे सूच्यंगुलके अर्द्धछेदनिका जो प्रमाण यावत् होइ तावत् ते द्वीप समुद्र पूर्व्वोक्त अनुक्रम करि अभ्यन्तर वेदीतैं परै जाइ राजूका पतनरूप क्षेत्रकों प्राप्त हो है। तहां पीछे सर्व्व द्वीप समुद्रनिविषै ड्यौढ़ लाख १५०००० योजन परैं अभ्यन्तर वेदीतैं परैं जाइ राजू पड़ै है। कैसे सो कहिए है। अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तर-भजियं इस करणसूत्र करि अन्तका धन पिचहत्तरि हजार ताकों गुणकार दौय करि गुणें ड्यौढ़ लाख भए तिनमें आदिका प्रमाण एक प्रदेश घटाइए अर एक घाटि गुणकारका प्रमाण एक ताका भाग दीजिए तब एक प्रदेश घाटि ड्यौढ़ लाख योजन प्रमाण भए। सो संख्यात सहित सूच्यंगुलका अर्द्धछेदप्रमाण द्वीप समुद्र भए। अन्तविषै अभ्यन्तर वेदीतैं इतने परैं जाइ राजू पड़ै है। बहुरि आधा आधाकी अर्थसंदृष्टि ऐसी—

७५०००	७५०००	७५०००	०००	५	२	२	२०००	४	२	१
	२	२५			२	२२				

विषै पहले तौ पिचहत्तरि हजार तैं लगाइ आधे आधे किए आधा करनेकों दौयका भागहार जानना, ताके आधा करनेकों तिस भागहारकों दौयका गुणकार जानना। बहुरि मध्यभेदनिके ग्रहण निमित्त बीचि विंदी जाननी। बहुरि आगें सूच्यंगुलतैं लगाय आधा आधा क्रम जानना बहुरि मध्य भेदनिके ग्रहण निमित्त बीचि विंदी जाननी। बहुरि आगें सूच्यंगुलतैं लगाय आधा आधा क्रम जानना। सूच्यंगुलकी सहनानी दौयका अंक जानना बहुरि मध्य भेदनिके ग्रहण निमित्त बीचि विंदी जाननी। बहुरि आगें च्यारि दौय एक प्रदेश जानने ऐसे आधा आधाका प्रमाण जानना। ऐसे पूर्व्व पूर्व्व प्रमाणतैं उतर उतर प्रमाण अधिक करना। बहुरि अंक संदृष्टि कर जैसे चौंसठितैं लगाय एक पर्यंत आधा आधा करिये इहां जाननी। ६४३२।१६।८।४।२।१ ऐसे

ड्योढ़ लाख ड्योढ़ लाख योजनका क्रम करि लवण समुद्र पर्यंत असंख्यात द्वीप समुद्रनिको जाइ करि ॥ ३५७ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

लवणे दु पडिदेकं जंबूए देज्जमादिमा पंच ।
दीउदही मेरुसला पयदुवजोगी ण छेदे ॥ ३५८ ॥

लवणे द्विः पतितः एकं जंबू देहि आदिमाः पंच ।

द्वीपोदधयः मेरुशलाः प्रकृतोपयोगिनः न षट् चैते ॥ ३५८ ॥

अर्थ—लवण समुद्रविषै दिय अर्द्ध छेद पड़े है । कैसे? राजूकों आधा आधा करतैं जहां दिय लाखका अर्द्ध छेद करिए तब सतरह १७ वार भए एक योजन उवरै बहुरि एक योजन उवरै । बहुरि एक योजनके अंगुल सात लाख अडसठि हजार तिनके अर्द्धछेद करिए तब उगणीस वार भए एक अंगुल उवरै । बहुरि राजूका अर्द्धछेद किए प्रथम अर्द्धछेद मेरुकै मध्य पड्या सो ऐसे सतरह उगणीस एक अर्द्धछेद मिलि संख्यात अर्द्धछेद भए । बहुरि एक अंगुल उवस्या था सो वह सूच्यंगुल है । सो सूच्यंगुलके अर्द्धछेद इतने छेछे । इहां पत्यके अर्द्धछेदनिका वर्ग प्रमाण सूच्यंगुलके अर्द्धछेद जानने । इनकों मिलाए संख्यात अधिक सूच्यंगुलके अर्द्धछेद प्रमाण एक लाख योजनके अर्द्धछेद भए तिनकी सहनानी ऐसी उ इहां संख्यात अधिककी सहनानी ऊपरि ऐसे छेछे

१ जाननी । इतने अर्द्धछेदनिविषै अपनयन त्रैराशिक विधि करि घटाए जो प्रमाण आवैं तितनी द्वीप समुद्रनिकी संख्या जाननी । अपनयन त्रैराशिक विधि कैसें सो कहैं हैं । राजूका अर्द्धछेद इतने कहे उ तहां पत्यके अर्द्धछेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण तौ गुण्य जाननां छे बहुरि पत्यके छेछे ३

अर्द्धछेदनिका वर्ग तिगुणा सो गुणकार जाननां । छे छे ३ तहां जो इतने छेछे ३ गुणकारकों देखि करि गुणकार प्रमाण राशि घटावनेकों गुण्यविषै एक घटाइए तौ इतना १ घटावनेके अर्थ छेछे

गुण्यमें कितना घटाइये ऐसैं त्रैराशिक करिए तहां प्रमाण राशि ऐसा छेछे ३ फलराशि १ इच्छा राशि ऐसा १ फल करि इच्छाकों गुणि प्रमाणका भाग दीजिए तहां भाज्य राशि अर भागहार छेछे

राशि दोऊनिविषै पत्य अर्द्धछेदनिका वर्ग ऐसा छेछे तिनकों समान देखि भागहारविषै उवर्या तीनका अंक ताका भाज्यविषै असंख्यात उवरे तीह करि साधिक एककों भाग दीजिए । इतनां गुण्यविषै घट्या । ऐसै करि अपनां साधिक एकका तीसरा भाग करि हीन पत्यका अर्द्ध छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण गुण्यको पत्यका अर्द्धछेदनिका वर्ग अर तीन करि गुणों जो प्रमाण होइ इतने सर्व्व द्वीप समुद्र हैं तिनकी सहनानी ऐसे छे छे छे ३ इहां साधिक तृतीय भाग घटावनेकी

सहनानी ऐसी ।) जाननी इनविषै आधे द्वीप आधे समुद्र जानने ७) ऐसै द्वीप समुद्रनिका
३

संख्या कहि अब जाका अधिकार हे ताको कथनविषै जोड़ै है । जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण तासौ लाख योजन रहै । तहां लवण समुद्रका अभ्यन्तर तटतैं ड्योढ़ लाख योजन परैं लवण समुद्र-विषै जाइ अर्द्ध पड़ै है । ऐसैं दो बहुरि ताका आधा लाख योजन भए लवण समुद्रका अभ्यन्तर तटतैं पचास हजार योजन परैं जाइ अर्द्धछेद पड़ै है ऐसैं दोइ अर्द्धछेद जानने । बहुरि तहां एक जंबूद्वीपकुं देहु । **भावार्थ**— दोय अर्द्ध छेदनिविषै एक अर्द्धछेद तो लवण समुद्रका गिनना । अर एक अर्द्ध विषै पचास हजार योजन जंबूद्वीपके मिलाए लाख योजन होइ सो इस अर्द्धछेदको जंबूद्वीपहीका गिनना ऐसे ए अर्द्धछेद कहे । बहुरि इन अर्द्धछेदनिविषै आदिके जंबूद्वीपादि पांच द्वीप समुद्र संबंधी पांच अर्द्धछेद अर मेरुशलाका कहिए राजूको आधा करतैं प्रथम अर्द्धछेद कहा सो ऐसै ए छह अर्द्धछेद इहां अधिकाररूप ज्योतिषी बिंबनिका प्रमाण ल्यावनेविषै उपयोगी कार्यकारी नाहीं जातैं तीन द्वीप दोय समुद्रनिके बिंबनिका प्रमाण जुदा ग्रहण करैगे तातैं पांच अर्द्धछेद तो ए कार्यकारी नाहीं अर मेरुशलाका रूप प्रथम अर्द्धछेदनिविषै कोई द्वीप समुद्र आया नाहीं तातैं सो कार्यकारी नाहीं ऐसे छह अर्द्धछेद आगैं घटावैगे ॥ ३५८ ॥

कहां सो कहैं हैं;—

तियहीणसेठिछेदणमेत्तो रज्जुच्छिदी हवे गच्छो ।

जंबूदीवच्छिदिणा छरूपजुत्तेण परिहीणो ॥ ३५९ ॥

त्रिकर्हानश्रेणिछेदनमात्रः रज्जुछेदः भवेत् गच्छः ।

जंबूद्वीपछेदेन षड् रूपयुक्तेन परिहीनः ॥ ३५९ ॥

अर्थ—तीन घाटि जगच्छेणीका अर्द्धप्रमाण एक राजूके अर्द्धछेद हैं । तिनमें जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण ताके अर्द्धछेद छह अर्द्धछेदनि करि संयुक्त घटाए ज्योतिषी बिंबनिका संख्या ल्यावनेविषै गच्छका प्रमाण हो है । तहां जगच्छेणी अर्द्धछेद इतने हैं छे छे छे ३ इहां पत्यके

अर्द्धछेदनिकी सहनानी ऐसी छे अर नीचे असंख्यातकी सहनानी ऐसी ७ ताका भागहार जाननां । बहुरि आगैं पत्यके अर्द्धछेदनिका वर्गका गुणाकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३ ताका गुणकार जाननां । बहुरि इनमें तीन अर्द्धछेद घटाए राजूके अर्द्धछेद होहि जातैं जगच्छेणीके सातवें
३
भाग राजू है । सो सातके तीन अर्द्धछेद होहि ताकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३ इहां उपरि घटा-

वनेकी सहनानी ऐसी ३ जाननी बहुरि इन अर्द्धछेदमिका प्रमाणविषै जंबूद्वीपके अभ्यन्तर पचास हजार योजन अर बाह्य पचास हजार योजन मिलि एक लाख योजन प्रमाण जंबूद्वीप संबंधी अर्द्ध-छेद कहा था सो इन लाख योजननिके अर्द्धछेद घटाइए । तहां एक लाखके अर्द्धछेद तिनमें छह

करिए तत्र सत्रह १७ वार भएँ एक योजन उवरै । बहुरि एक योजनके अंगुल सात लाख अडसठि हजार तिनके अर्धच्छेद करिए तत्र उगणीस वार भएँ एक अंगुल उवरै । बहुरि राजूका अर्धच्छेद कीएँ प्रथम अर्धच्छेद मेरुके मध्य पड्या सो ऐसै सत्रह उगणीस एक अर्धच्छेद मिलि संख्यात अर्ध-च्छेद भए । बहुरि एक अंगुल उवर्या था सो वह सूच्यंगुल है । सो सूच्यंगुलके अर्धच्छेद इतने छे छे । इहां पल्यके अर्धच्छेदनिका वर्गप्रमाण सूच्यंगुलके अर्धच्छेद जाननै । इनकौं मिलाएँ संख्यात अधिक सूच्यंगुलके अर्धच्छेद प्रमाण एक लाख योजनके अर्धच्छेद भए । तिनकी सहनानी ऐसी छे छे । इहां संख्यात अधिककी सहनानी उपरि ऐसी ? जाननी । इतने अर्धच्छेद राजूके अर्धच्छेदनिका विषै अपनयन त्रैराशिक विधि करि घटाएँ जो प्रमाण आवै तितनी द्वीप समुद्रनिकी संख्या जाननी । अपनयन त्रैराशिक विधि कैसै ? सो कहै है—राजूके अर्धच्छेद इतने कहै १ छे छे छे ३ तहां पल्यके अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण तौ गुण्य जाननां छे । बहुरि पल्यके अर्धच्छेदनिका वर्ग तिगुणा सो गुणकार जानना छे छे ३ । इहां जो इतने छे छे ३ गुणकारकौं देखि करि गुणकार प्रमाण राशि घटावनेकौं गुण्यविषै एक घटाइएँ तौ इतना घटावनेके अर्थ गुण्यमेंसौं कितना घटाइएँ ऐसै त्रैराशिक करिए । तहां प्रमाण राशि ऐसा छे छे ३ फलराशि एक १ इच्छा राशि ऐसा छे छे । फल करि इच्छाकौं गुणि प्रमाणका भाग दीजिए, तहां भाज्यराशि अर भागहार राशि दोऊनिविषै पल्यका अर्धच्छेदनिका वर्ग ऐसा छे छे । तिनकौं समान देखि भागहार विषै उवर्या तीनका अंक ताका भाज्यविषै संख्यात उवरे तीहकरि साधिक एककौं भाग दीजिए, इतना गुणविषै घट्या । ऐसै करि साधिक एकका तीसरा भाग करि हीन पल्यका अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण गुण्यकौं पल्यका अर्धच्छेदनिका वर्ग अर तीनकरि गुणें जो प्रमाण होइ तापै तीन घटाइएँ । इतनै सर्वद्वीप समुद्र हैं । तिनकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३ । ३ । इहां साधिक तृतीय भाग घटावनेकी सहनानी ऐसी ३ जाननी । इन विषै आधे द्वीप आधे समुद्र जाननै । ऐसै द्वीप समुद्रनिकी संख्या कहि अत्र जाका अधिकार है ताकौं कथन विषै जोडै हैं । जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण ताके अर्धच्छेद तिनमें छह अर्द्धछेद और मिलाइएँ, इनकां जोडि जो प्रमाण होइ तिनमें अर्द्धछेद राजूके अर्द्धछेदनिकेस्यौं घटाएँ जो प्रमाण होइ तिनकां सर्व द्वीप समुद्र संबंधी चंद्र सूर्यादिकानिके प्रमाण ल्यावनेकौं गच्छका प्रमाण जाननां भावार्थ—यहु पूर्व द्वीपसमुद्रनिकी संख्या कही तापै छह घटाएँ इहां गच्छका प्रमाण हो है ॥ ३५९ ॥

आगै तिन ज्योतिषी विबनिकी संख्या ल्यावनेविषै जो गछ कहा ताकी आदि कहै हैं;—

पुक्खरसिंधुभयधर्णं चउघणगुणसयछहत्तरी पभओ ।

चउगुणपचओ रिणमवि अडकदिमुहमुवारि दुगुणकमं ॥ ३६० ॥

पुष्करसिंधूभयधनं चतुर्धनगुणशतषट्सत्ततिः प्रभवः ।

चतुर्गुणप्रचयः ऋणमपि अष्टकृतिमुखमुपरि द्विगुणकमं ॥ ३६० ॥

अर्थ—स्थानिकनिका जो प्रमाण सो गच्छ कहिए वा पद कहिए । बहुरि गच्छविषै जो पहला स्थानविषै प्रमाण सो आदि कहिए वा प्रभव कहिए वा मुख कहिए । बहुरि स्थान स्थान

प्रति जितनां जितनां वधे सो प्रचय कहिए । बहुरि सर्व स्थानकां संबंधी वृद्धिका प्रमाण विनां जो आदि ताकाँ जोड़ें जो प्रमाण होइ सो आदि धन कहिए । बहुरि सर्व स्थानकां संबंधी वृद्धिकों जोड़ें जो प्रमाण होइ सो उत्तर धन कहिए । सो इहां पुष्कर नामा समुद्रका आदि धन अर उत्तर धन मिलाए च्यारिका धन चौंसठि तीह करि गुण्या हुवा एक सौ छिहंतरी प्रमाण उभय धन हो है सो इहां प्रभव जाननां । बहुरि एक एक द्वीप वा समुद्र प्रति चौगुणा चौगुणा वधती धन है सो प्रचय जाननां । बहुरि ऋणविषै आठकी कृति चौसठि तीह प्रमाण तो मुख जाननां । बहुरि क्रमतैं द्विगुण द्विगुण वधता है सो प्रचय जाननां । ऐसे धनराशि ऋणराशिकों जानि धनराशिविषै कृणराशिकों घटाए स्थान स्थानविषै प्रमाण जाननां । तहां पुष्कर समुद्रका आदि धन उत्तर धन कैसें व्यावनां सो कहिए हैं—आदितैं आदि दूणा दूणा क्रमतैं कहे थे तातैं पुष्करार्द्र द्वीपका आदि वलयविषै एक सौ चवालीस थें तिनतैं दूणे पुष्कर समुद्रका आदि वलयविषै हैं । १४४।२ सो इहां मुख जाननां । बहुरि पदहतमुखमादिधनं इस सूत्रकरि गछकरि गुण्या हुवा मुखका प्रमाण सो आदि धन है । सो इहां बत्तीस वलय हैं । तातैं गच्छका प्रमाण बत्तीस तिहकरि मुखकौं गुणें जो मुखविषै दोयका गुणकार था ताकाँ बत्तीस करि गुणि अर एकसो चवालीसकै आगैं चौसठिका गुणकार स्थापिए । १४४।६४ इतनां तौ आदि धन जाननां बहुरि “व्येकपदार्द्र-प्रचयगुणो गच्छ” उत्तरधनं इस सूत्रकरि एक घाटि गछका आधा करि चयकौं गुणि तीहकरि गछकौं गुणें उत्तर धन हो है । सो इहां एक घाटि गछ इकतीस ३१ ताका आधा ३३ करि चयका प्रमाण एक एक वलयविषै च्यारि च्यारि वधती है, तातैं च्यारिकरि गुणिए ३३। बहुरि इनकौं गछ बत्तीसकरि गुणिए, ३३। ४।२। बहुरि भागहारका दूवा करि गुणकारका चौका अपवर्त्तन किए दोय होय तीहकरि बत्तीसका गुणकार गुणें चौसठि होइ । ऐसैं इकतीसकौं चौसठि गुणां करिए ३१।६४ इतनां उत्तरधन हुवा । बहुरि इस उत्तर धनविषै चौसठि ऋण मिलावनां सो उत्तर धनविषै चौसठिका गुणकार जानि गुण्यविषै एक मिलाया तब बत्तीसकौं चौसठि गुणां करिए। इतनां उत्तरधन भया ३२।६४। इहां ऋणका मिलावनां बहुरि याहीका घटावनांसो सुगम गणित आवनेके अर्थ करिए हैं । बहुरि आदि धन अर उत्तर धनविषै गुण्य बत्तीस इनकौं मिलाइ एक सौ छिहंतरी गुण्य किया अर चौसठि गुणकार किया । ऐसे चौसठि गुणां एक सौ छिहंतरी १७६।६४ प्रमाण पुष्कर समुद्रका उभय धन सो ज्योतिर्विनिका प्रमाण ल्यावनैके अर्थ जो गछ कहा था ताका प्रभव कहिए आदि जाननां । बहुरि यातैं चौगुणां वारुणीवर द्वीपविषै धन जाननां । कैसें सो कहिए हैं । पूर्व आदितैं दूणां इहां आदि वलयविषै है सो मुख १४४।२।२ जाननां । बहुरि पदहतमुखमादिधनं इस सूत्र करि याकाँ इहां वलय चौसठि है तातैं गछका प्रमाण चौसठि तीहकरि गुणिए १४४।२।२।६४। बहुरि दोय दुवानिकों परस्पर गुणें च्यारि होइ १४४।६४।४ ऐसैं आदि धन भया । बहुरि “व्येक पदार्द्रप्रचयगुणो गच्छः उत्तरधनं ” इस सूत्र करि एक घाटि गछ प्रमाण तरसठि ६३-ताका आधा ३३ कौं वलय वलय प्रति वधती प्रमाणरूप चय च्यारि करि गुणिए ३३। ४ बहुरि याकाँ गछ चौसठि करि गुणिए ३३।४।६४ बहुरि दोयके भागहार करि च्यारिका अपवर्त्तन करि दूवाकौं

चौसठिके आगैँ स्थापिए ६४।६४ यामैँ पूर्वोक्त दूणा ऋण मिलाइये सो दुगुणां चौसठि मिलाइए ६४।२ सो दुगुणा चौसठिका गुणकार समान देखि गुण्यविषै एक मिलाइए ६४।६४।२। बहुरि सर्वत्र चौसठि गुणा एक सौ छिहंतिर करनां तातैँ जिह भांति बत्तीस रहै तैसैँ संभेदन करि चौसठि की जायगा तौ बत्तीस करिए अर दोय आगैँ धरिए ३२। २।६४।२ बहुरि दोय दूवानिकौँ परस्पर गुणि च्यारिका अंक लिखिए ३२।६४।४ ऐसे उत्तर धन होइ । बहुरि आदि धन १४४।६। ४।४ अर उत्तर धन दोऊनिकौँ मिलाएँ चौसठि गुणां एक सौ छिहंतिरिका चौगुणा उभय धन होइ ऐसैही एक एक द्वीप वा समुद्रविषै चौगुणा चौगुणा तौ धन जाननां । अर जो उत्तर धन विषै ऋण मिलाया था सो पुष्करवर समुद्रविषै तौ ऋण आठकी कृति जो चौसठि तिह प्रमाण जाननां । अर ऊपरि दूणा परि दूणा जाननां । ऐसैँ धनविषै आदि तौँ चौसठि गुणा एकसौ छिहंतिर १७६।६४ बहुरि उत्तर गुणकार च्यारि४ गछ पूर्वोक्त प्रमाण ऐसा छे छे छे ३ इनकोँ ल्याइ ॥ ३६० ॥

इनका संकलनरूप धनकोँ ल्यावताथका सर्व ज्योतिषी बिंबनिके प्रमाण ल्यावनैका विधान कहैँ हैं;—

आणिय गुणसंकलितं किंचूणं पंचठाणसंठावियं ।

चंदादिगुणं मिलिदे जोइसर्विबाणि सव्वाणि ॥ ३६१ ॥

आनाय्य गुणसंकलितं किंचिदूनं पंचस्थानसंस्थापितम् ।

चंद्रादिगुणं मिलिते ज्योतिष्कविद्यानि सर्वाणि ॥ ३६१ ॥

अर्थ—“पदमेत्ते गुणयारे अण्णोण्णं गुणिय रूवपरिहाणे । रुज्जगुणेणहिए मुहेण गुणयम्मि गुणगणियं ।” इस करण सूत्रकरि गछ प्रमाण गुणकारकोँ परस्पर गुणि तामैँ एक घटाइ तार्कोँ एक घाटि गुणकारका भाग देइ मुख करि गुणेँ गुणकाररूप सर्व गछके जोइका प्रमाण हो है सो । यहां गछका प्रमाण ऐसा छे छे छे ३ सो इतनी जायगा गुणकारका प्रमाण च्यारि ताँ च्यारिका अंक मांडि परस्पर गुणिए । तहां इस गछविषै उपरिका राशि ३ जगच्छेणीका अर्द्धछेद प्रमाण ऐसा छे छे छे ३ बहुरि च्यारिकौँ दोयका संभेदन करिए तव दोय जायगा दोय दोय होइ २।२ तहां ‘तम्मेतदुगुणे रासी’ इस करण सूत्रके न्यायकरि तिस जगच्छेणीका अर्द्धछेद राशि छे छे छे

३ प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणेँ जगच्छेणी होइ । बहुरि दोय दोय जायगा दोय दोय थे तातैँ दूसरी वार भी तैसैँ ही ऊपरिका राशि छे छे छे ३ प्रमाण दूवानिकौँ परस्पर गुणेँ जगच्छेणी होइ और इन दोऊ जगच्छेणीनिकौँ परस्पर गुणेँ जगत्प्रतर होइ । ऐसैँ ऊपरिका राशि प्रमाण गुणकारकोँ परस्पर गुणेँ तौ जगत्प्रतर भया । बहुरि नीचे ऋणरूप राशि गुण्यका साधिक तृतीय भाग मात्र था ३ तिसविषै सतरह तो लाखके अर्द्धछेद थे तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकोँ परस्पर गुणेँ एक लक्षका वर्ग भया । १ ल १ ल । बहुरि अंगुलनिके अर्द्धछेद उगणीस थे तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकौँ परस्पर गुणेँ सात लाख अडसठि हजारका वर्ग भया ७६८० ००।७६८००० । बहुरि सूच्यंगुलका अर्द्धछेद प्रमाण दोयवार दूवानिकौँ परस्पर गुणेँ प्रतरांगुल

भया । बहुरि छह अर्द्धछेद इहां उपयोगी न कहि घटाए थे तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकौ पर-
स्पर गुणें चौसठिका वर्ग होइ । बहुरि जगच्छेणीका अर्द्धछेदमैस्यौ तीन घटाए राजूके अर्द्धछेद
होहिं ऐसा कहि घटाए थे । तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकौ मांडि परस्पर गुणें सातका वर्ग भया ।
ऐसैं ए सर्व अर्द्धछेद घटाए थे तिन प्रमाण दोयवार दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें जो जो
प्रमाण भया ताका भागहार जाननां । जातैं “ विरलिज्जमाणरासिं जेतियमेत्ताणि हीणरूवाणि । तेसिं
अण्णोण्ण हदी हारो उप्पण्णरासिस्स ” ऐसा करणसूत्र पूर्वैं कहि आए हैं । ऐसैं गच्छप्रमाण
गुणकारका परस्पर गुणनां भया । बहुरि यामें एक घटाइए ताकी सहनानी ऐसी बहुरि याकौ
एक घाटि गुणकार तीन ताका भाग दीजिए । बहुरि मुखका प्रमाण चौसठि गुणां एकसौ छिहंतरि
तीहकरि गुणिए तब धन राशिका जोड़ दिएं जगत्प्रतरकौ चौसठि गुणां एकसौ छिहंतरि करि
गुणिए अर ताकौ प्रतरांगुलकौ सात लाख अडसठि हजारका वर्ग अर लाखका वर्ग अर चौसठिका
वर्ग अर सातका वर्ग अर तीन करि गुणि ताका भाग दीजिए तामें एक घटाइए इतना
संकलित धन=१७६।६४। हो है । इहां जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी=प्रतरांगुलकी ऐसी ४

४।७६८०००।७६८०००।१ ल। १ ल। ६४। ६४। ७। ७। ३।

जाननी । बहुरि ऋण राशिका संकलित धन ल्याइए तहां गुणाकारका प्रमाण दोय है तातें पूर्वोक्त गच्छका
जितनां प्रमाण तितनां दूवा मांडि परस्पर गुणिए । तहां उपरितन राशि प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें
जगच्छेणी होइ । बहुरि नीचै ऋणरूप राशि तिहविपै सतरह आदि प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें
एक लक्ष अर सात लाख अडसठि हजार अर चौसठि अर सात होइ इनका भाग दीजिए । बहुरि
इनमें एक घटाइए, बहुरि मुख चौसठि करि गुणिए, बहुरि एक घाटि गुणकार एक ताका भाग
दीजिए ऐसैं करतै ऋण राशिका संकलित धन चौसठि गुणां जगच्छेणीकौ सूच्यंगुलकौ सात लाख
अडसठि हजार अर एक लाख अर सात अर चौसठि अर एक करि गुणि ताका भाग दीजिए ।
तामें एक घटाइए इतनां भया ६४ २।७६८०००।१ ल। ६४।७१ इहां जगच्छेणीकौ सहनानी ऐसी—
सूच्यंगुलकी ऐसी २ जाननी । अब तिस धन राशिविपै जो एकसौ छिहंतरिकर गुणकार था अर
नीचै चौसठिका भागहार था तिन दोऊनिकौ सोलाकरि अपवर्त्तन किए एकसौ छिहंतरिकी
जायगा ग्यारह हुवा, चौसठिकी जायगा च्यारि हुवा । बहुरि गुणकारके चौसठिकौ भागहारके चौसठि
करि अपवर्त्तन किए दोऊ जायगा अभाव भया । बहुरि दोय जायगा सात लाख अडसठि हजार
अर दोय जायगा लाख तिनकी सोलह विन्दी स्थापिए । बहुरि अंगुलनिका दोय जायगा सातसै
अडसठिका अंक रह्या तिनकौ तीनकरि संभेदन करि तिनकी जायगा दोयसै छप्पन लिखिए
आगैं तीनका अंक लिखिए । बहुरि दोय जायगा दोयसै छप्पन भए तिनकौ परस्पर गुणें पण्णडी
होइ । बहुरि दोय जायगा तीनका अंक भए अर एक जायगा तीनका अंक आगैं था इनकौ
परस्पर गुणें सत्ताईस होइ । बहुरि सत्ताईसकौ सातका वर्ग गुणचास करि गुणें तेरहसै तेईस
होइ इनकौ जो चौसठिकी जायगा च्यारि भए थे तिन करि गुणें बावनसै वाणवै होइ । ऐसैं
करि जगत्प्रतरकौ ग्यारहका गुणकार अर तरांगुलकौ पण्णडी अर पांच हजार दोय सै वाणवैके

आगै सोलह विन्दी तिनकरि गुणें जो प्रमाण होइ ताका भागहार दिएं धन राशिका गुणसंक-
=११

लित धन हो है ४।६५=५२९२००००००००००००००००००। बहुरि जंबूद्वीपतैं लगाय पुष्क-
रार्द्धपर्यन्त दोदोवगा इत्यादि चंद्रादिकका प्रमाण कह्या २।४।१२।४२।७२। तिनकोँ मिलाएं एकसौ
बत्तीस भए । बहुरि मानुपोत्तर पर्वत परैं पुष्करार्द्ध द्वीपविषै चंद्रमानिका प्रमाण ल्यावनकोँ कहैं
हैं । “पदमेगेण विह्राणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं । पभवजुदं पदगुणिदं पद गणिदं तं विया-
णाहि ” इस करण सूत्र करि इहां वलय आठ है । तातैं गछका प्रमाण आठ तामैं एक घटाइ
७ ताका आधा करि ३ उत्तर जो वलय वलय प्रति वधतीका प्रमाण च्यारि तिहकरि गुणिए ३।
४ अपवर्त्तन करिए तब चौदह भए १४ इनविषै प्रभव जो प्रथम वलयविषै प्रमाणरूप मुख एक-
सौ चवालीस जोड़िए १५८। बहुरि इनकोँ गछ आठकरि गुणिए तब बारहसौ चौसठि भए इन-
विषै एकसौ बत्तीस जंबूद्वीप आदिकके मिलाएं तेरहसै छिनवै होइ सो इनकोँ जो पूर्वे ऋण
संकलित धन भया था तिनमैं घटाइए हैं । जातैं ऋणस्यऋणं राशेद्वनं इस वचनकरि ऋणमैं
स्यौ घटावनां अर राशिमैं मिलावनां इन दोऊनिका एक अर्थ है । तहां ऋण संकलित धन सहित
तेरहसै छिनवैका समछेद करिए तब ऐसा होइ—१३९६ । सू २ । ७६८००० । १ ल ।
६४।७।१ । सू २।७६८००० । १ ल । ६४।७।१ सो यह गुणकार भागहारादिकका अपवर्तनादिक
किएं भाज्य राशिकोँ परस्पर गुणें संख्यात सूच्यंगुल प्रमाण भया । सो इनकोँ पूर्वोक्त ऋण संकलित
धनका भाज्य विषै घटाइए तब ऐसा भया । २।७६८०००।१ल।७।६४।१ इहां संख्यात्त सूच्यंगुलकी
सहनानी ऐसी २ ? जाननी । अर आगै घटावनैकी सहनानी ऐसी—जाननी । ऐसैं ऋण संकलित
धनीविषै एक जगश्रेणी है । ताका सहित ऋण सहित जो धनसंकलित धन पूर्वैं कह्या तीहस्यौं
समान छेद करिए तब ऐसा—सू २ । ६४ । ७६८००० । १ ल । ७ । ६४ । ३ । ४ ।
७६८००० । ७६८००० । १ ल । १ ल ७ । ७।६४।६४।३। भया । इसविषै सूच्यंगुल विना और
सर्व गुणकारनिकों संख्यातरूप मनि इस प्रमाणकोँ संख्यात सूच्यंगुल गुणित जगच्छ्रेणी प्रमाण
ऋणराशि भया । ताकी सहनानी ऐसी—२ इनकोँ पूर्वोक्त धन संकलित ऐसा=४।६५=५२९२।१६
इहां सोलह विंदीनिका सहनानी ऐसी १६ जाननी । सो इहां जगत्प्रतरविषै श्रेणीकोँ श्रेणीका गुणाकार
है तातैं दोय वार श्रेणी है । तहां एक जगच्छ्रेणीकोँ ऋण राशिकी जगच्छ्रेणीके समान देखि तहांही
दूसरी गुणकाररूप जगच्छ्रेणीविषै घटाएं किंचित न्यूनपणा आया ऐसे करि गुण संकलित धन कहिए
गुणकार विषै जोड़का प्रमाण ताकोँ ल्यायैं किंचित न्यून किएं संख्यात सूच्यंगुल गुणित
जगच्छ्रेणीकरि हीन जगत्प्रतर किंचिन्यून ग्यारह गुणां ताकोँ प्रतरांगुल पण्टी प्रमाणकोँ वावनसै बाणवै
आगै सोलह विंदीका गुणकार करि ताका भाग दीजिए इतनां प्रमाण भया ०—२ १। ११ ।

४।६५=५२९२।१६

इहां जगत्प्रतरके आगै किंचिन्यूनकी सहनानी ऐसी ०—जाननी अर आगै संख्यात सूच्यंगुलकी
ऐसी २ ? सहनानी जाननी । अब इस प्रमाणकोँ पांच जायगा स्थापि एक जायगा एक करि गुणें
चन्द्रनिका प्रमाण होइ एक जायगा एक करि गुणें सूर्यनिका प्रमाण होइ । एक जायगा अठ्यासी

करि गुणें प्रहनिका प्रमाण होइ । एक जायगा अठाईसकरि गुणें नक्षत्रनिका प्रमाण होइ एक जायगा छयासठि हजार नवसैं पिचहत्तरि कोड़ाकोड़ि करि गुणें तारानिका प्रमाण होइ इन सबनिकों जोड़ें ।

$$= 0-2 \text{ ११११} = 02 \text{ ११११} = 02 \text{ ११११८८}$$

$$४१६५ = ५२९२१६१४१६५ = ५२९२१६४१६५ = ५२९२१६$$

$$= 02 \text{ १११२८} = 02 \text{ १११६६९७५१४}$$

$$४१६५ = ५२९२१६ ४१६५ = ५२९२१६$$

जगत्प्रतरकों सांत तीन छह सात दोय पांच अंक अर दश विदी अर आगैं बारहसैं अठ्याणैव इनका गुणकार अर प्रतरांगुल पणट्टी आगैं बावनसैं बाणवै सोलह विदी इनका भागहार भया । सो इतनें सर्व्व ज्योतिषी बिंव हैं । = ७३६७२५०००००००००००१२९८

$$४१६५ = ५२९२००००००००००००००००००० बहुरि$$

स्थान सदृश अपवर्तन कहिए हीन अधिक अंकनिकों न गिणिकरि दाहकी विषै दाहकी सैंकड़ा विषै सैंकड़ा इत्यादि यथास्थान अपवर्तन करनां तिसन्याय करि सात तीननै आदि दै करि गुणकारके बीस अंक अर पांच दोयनै आदि दैकरि भागहारके बीस अंकनिका अपवर्तन करि दोय जायगा अभाव करना । ऐसा मनविषै विचारि 'वेसदछप्पणंगुल' इत्यादि सूत्रकरि दोयसै छप्पन अंगुलका वर्ग जो पणट्टी गुणित प्रतरांगुल ताका भाग जगत्प्रतरकों दीजिए इतनें ४१६५-५ ज्योतिषी बिंव है । ऐसा आचार्यनै कथा । सोई असंख्यात द्वीप समुद्र संबंधी सर्व्व ज्योतिषी बिंवानिका प्रमाण जाननां ॥ ३६१ ॥

आगैं एक चंद्रमाका परिवाररूप ग्रहनक्षत्र तारे तिनिका प्रमाण कहैं हैं;—

अडसीदट्टावीसा गहरिक्खा तार कोडकोडीण ।

छावट्टिसहस्साणि य णवसयपण्णत्तरिगि चंदे ॥ ३६२ ॥

अष्टाशीत्यष्टाविंशतिः प्रहक्रक्षयोस्ताराः कोटिकोटीनाम् ।

षट्षष्टिसहस्राणि च नवशतपंचसप्ततिरेकस्मिन् चंद्रे ॥ ३६२ ॥

अर्थ—अठ्यासी अर अठाईस ग्रह अर नक्षत्र हैं । **भावार्थ—**ग्रह अठ्यासी हैं नक्षत्र अठाईस हैं । बहुरि तारे छयासठि हजार नवसैं पिचहत्तरि कोड़ाकोड़ी हैं । ६६९७५०००००००००००००००००० इतना एक चंद्रमाका परिवार है ॥ ३६२ ॥

आगैं अठ्यासी ग्रहनिका नाम आठ गाथानिकरि कहैं हैं;—

कालविकालो लोहिदणामो कणयक्ख कणयसंठाणा ।

अंतरदो तो कचयव दुंदुभि रत्तणिह रूवणिग्भासो ॥ ३६३ ॥

कालविकालो लोहितनामा कनकाख्यः कनकसंस्थानः ।

अंतरदस्ततः कचयवः दुंदुभिः रत्ननिभः रूपनिर्भासः ॥ ३६३ ॥

अर्थ—कालविकाल १ लोहित १ कनक १ कनक संस्थान १ अंतरद १ कचयव १ दुंदुभि १ रत्ननिभ १ रूपनिर्भास १ ॥ ३६३ ॥

नीलो नीलभासो अस्सस्सट्ठाण कोस कंसादी ।

वण्णा कंसो संखादिमपरिमाणो य संखवण्णोवि ॥ ३६४ ॥

नीलो नीलाभासोऽश्वोऽश्वस्थानः कोशः कंसादिः ।

वर्णः कंसः शंखादिपरिमाणः च शंखवर्णोपि ॥ ३६४ ॥

अर्थ—नील १ नीलाभास १ अश्व १ अश्वस्थान १ कोश १ कंसवर्ण १ कंस १ शंखपरिमाण १ शंखवर्ण ॥ ३६४ ॥

तो उदय पंचवण्णा तिलो य तिलपुच्छ क्षाररासीओ ।

तो धूम धूमकेदिगिसंटाणक्खो कलेवरो वियडो ॥ ३६५ ॥

तत उदयः पंचवर्णस्तिलश्च तिलपुच्छः क्षारराशिः ।

ततो धूमो धूमकेतुः एकसंस्थानः अक्षः कलेवरो विकटः ॥ ३६५ ॥

अर्थ—उदय १ पंचवर्ण १ तिल १ तिलपुच्छ १ क्षारराशि १ धूम १ धूमकेतु १ एक संस्थान १ अक्ष १ कलेवर १ विकट १ ॥ ३६५ ॥

इह भिण्णसंधि गंठी माण चउप्पाय विज्जुजिभणभा ।

तो सरिस णिलय कालय कालादीकेउ अणयक्खा ॥ ३६६ ॥

इहाभिन्नसंधिः ग्रंथिः मानश्चतुःपादो विद्युजिहो नभः ।

ततः सदृशो निलयः कालश्च कालादिकेतुरनयाख्यः ॥ ३६६ ॥

अर्थ—अभिन्नसंधि १ ग्रंथि १ मान १ चतुःपाद १ विद्युजिह्व १ नभ १ सदृश १ निलय १ काल १ काल केतु १ अनय ॥ ३६६ ॥

सिंहाउ विउल काला महकालो रुदणाम महरुदा ।

संताण संभवक्खा सच्चाट्ठि दिसाय संति वत्थूणो ॥ ३६७ ॥

सिंहायुर्विपुलः कालो महाकालो रुद्रनामा महारुद्रः ।

संतानः संभवाख्यः सर्वार्थी दिशः शान्तिर्वस्तूनः ॥ ३६७ ॥

अर्थ—सिंहायु १ विपुल १ काल १ महाकाल १ रुद्र १ महारुद्र १ संतान १ संभव १ सर्वार्थी १ दिशा १ शान्ति १ वस्तून १ ॥ ३६७ ॥

णिच्चल पलंभ णिम्मंत जोदिमंता सयंपहो होदि ।

भासुर विरजा तत्तो णिदुक्खो वीदसोगो य ॥ ३६८ ॥

निश्चलः प्रलंभो निर्मेत्रो ज्योतिष्मान् स्वयंप्रभो भवति ।

भासुरो विरजस्ततो निर्दुःखो वीतशोकश्च ॥ ३६८ ॥

अर्थ—निश्चल १ प्रलंभ १ निर्मेत्र १ ज्योतिष्मान् १ स्वयंप्रभ १ भासुर १ विरज १ निर्दुःख १ वीतशोक १ ॥ ३६८ ॥

सीमंकर खेमभयंकर विजयादिचउ विमलतत्था य ।

विजयण्हु वियसो करिकट्टिगिजडिअग्गिजाल जलकेदू ॥ ३६९ ॥

सीमंकरः क्षेमभयंकरः विजयादिचत्वारः विमलस्रस्तश्च ।

विजयिष्णुः विक्रसः करिकाष्टः एकजटिरग्निज्वालः ज्वलकेतुः ॥ ३६९ ॥

अर्थ—सीमंकर १ क्षेमंकर १ अभयंकर १ विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित १ विमल १ व्रत १ विजयिष्णु १ विक्रस १ करिकाष्ट १ एकजटि १ अग्निज्वाल १ जल केतु १ ॥ ३६९ ॥

केदूखीरसऽघस्सवणा राहू महगहा य भावगहो ।

कुज साणि बुहसुकुगुरु गहाण णामाणि अडसीदी ॥ ३७० ॥

केतुः क्षीरसः अघः स्रवणो राहुः महाग्रहश्च भावग्रहः ।

कुजः शनिः बुधः शुक्रः गुरुः ग्रहाणां नामानि अष्टाशीतिः ॥ ३७० ॥

अर्थ—केतु १ क्षीरस १ अघ १ श्रवण १ राहु १ महाग्रह १ भावग्रह १ मंगल १ शनैश्वर १ बुध १ शुक्र १ बृहस्पति १ ऐसैँ ग्रहनिके अठ्यासी नाम हैं ॥ ३७० ॥

आगैँ जंबूद्वीपविषैँ भरतादि क्षेत्र वा कुलाचल पर्वत तिनकैँ तारानिका विभाग दोय गाथानिकरि कहैँ हैं;—

णउदिसयभजिदतारा सगदुगुणसलासमभत्था ।

भरहादिविदेहोति य तारा वस्से य वस्सधरे ॥ ३७१ ॥

नवतिशतभक्तताराः स्वकद्विगुणद्विगुणशलासमभ्यस्ताः ।

भरतादिविदेहांतं च ताराः वर्षे च वर्षधरे ॥ ३७१ ॥

अर्थ—दोय चंद्रमा संबंधी तारे एक लाख तेतीस हजार नवसैँ पचास कोड़ाकोड़ी जंबूद्वीप विषैँ पाईए है । १३३९५।१५ इनकौँ एकसौ निवैँका भाग दीजिए जो प्रमाण होइ ताकौँ भरतादि क्षेत्र वा कुलाचलनिकी एकतैँ दूणी दूणी शलाका विदेह पर्यंत हैं परैँ आधी आधी हैं । भरतक्षेत्रकी एक शलाका हिमवत पर्वतकी दोय शलाका ऐसैँ दूणी दूणी किए विदेहकी चौसठि शलाका तातैँ परैँ नीलादि विषैँ आधी आधी जाननी । १।२।४।८।१६।३२।६४।३२।१६।८।४।२।१ तिनकरि गुणें भरतादि क्षेत्र वा हिमवत आदि कुलाचलनिविषैँ तारानिका प्रमाण हो है ॥ ३७१ ॥

आगैँ पाया हुवा अंकनिकों कहैँ हैं;—

पंचुत्तरसत्तसया कोडाकोडी य भरहताराओ ।

दुगुणा हु विदेहोत्ति य तेण परं दल्लिददल्लिदकमा ॥ ३७२ ॥

पंचोत्तरसत्तशतकोटिकोव्यः च भरतताराः ।

द्विगुणा हि विदेहांतं च तेन परं दल्लितदल्लितक्रमः ॥ ३७२ ॥

अर्थ—सातसैँ पांच कोड़ा कोड़ी भरतविषैँ तारे हैं । तातैँ दूणे दूणे विदेह पर्यंत हैं तहां परैँ आधे आधे क्रमतैँ हैं सोई कहिए हैं । भरतक्षेत्र विषैँ सातसैँ पांच कोड़ाकोड़ी ७०५।१४ हिमवत पर्वतविषैँ चौदहसैँ दश कोड़ाकोड़ी १४।१।१५ हिमवत क्षेत्रविषैँ अठईससैँ बीस कोड़ा कोड़ी २८२।

२०।१५ महा हिमवत पर्वतविषै छप्पनसै चालीस कोड़ा कोड़ी ५६।५१५ हरि क्षेत्रविषै ग्यारह हजार दोयसै अस्सी कोड़ा कोड़ी ११२८।१५ निपघ पर्वतविषै वाईस हजार पांच सै साठ कोड़ा कोड़ी २३५६।१५ विदेह क्षेत्रविषै पैतालीस हजार एकसौ बीस कोड़ा कोड़ी ४५१२१५ नील पर्वतविषै वाईस हजार पांचसै साठ कोड़ा कोड़ी २२५६।१५ रस्यक क्षेत्रविषै ग्यारह हजार दोयसै अस्सी कोड़ा कोड़ी ११२८।१५ रुक्मि पर्वतविषै छप्पनसै चालीस कोड़ा कोड़ी ५६४।१५ हैरण्यवत क्षेत्रविषै अठाईसै बीस कोड़ा कोड़ी २८२।१५ शिखरी पर्वत विषै चौदहसै दश कोड़ा कोड़ी १४१।१५ ऐरावत क्षेत्रविषै सातसै पांच कोड़ा कोड़ी ७०।१४ तारे जानने ॥ ३७२ ॥

आगै लवणादि पुष्कारार्द्ध पर्यंत तिष्ठते चंद्र सूर्य तिनका अंतराल कहै हैं;—

सगरविदलबिंबूणा लवणादी सगदिवायरद्धहिया ।

सूरंतरं तु जगदीआसण्णपहंतरं तु तस्स दलं ॥ ३७३ ॥

स्वकरविदलबिंबोनें लवणादेः स्वकदिवाकरार्धाधिकं ।

सूर्यांतरं तु जगत्यासन्नपथांतरं तु तस्य दलम् ॥ ३७३ ॥

अर्थ—अपनां अपनां जहां जेते सूर्य हैं तहां तितनां सूर्यनिका प्रमाणतैं अर्द्ध प्रमाण करि सूर्यके बिंबनिका प्रमाणको गुणिकरि जो प्रमाण होइ ताको लवणादिकका व्यासमैस्यौ घटाइए जो प्रमाण रहै ताको स्वकीय सूर्यनिका प्रमाणतैं आधा प्रमाणका भाग दीजिए यों कीए जेता प्रमाण आवै तितनां सूर्य सूर्य विषै अंतराल जाननां । बहुरि जगती कहिए वेदी तिह थकी आसन्न पथांतरं कहिए निकटवर्ती सूर्यबिंबका अंतराल सो तिहस्यो अर्द्ध प्रमाण जाननां । तहां उदाहरण—लवण समुद्रविषै सूर्य च्यारि हैं ताका अर्द्ध प्रमाण दोय तीहकरि सूर्य बिंबका प्रमाण अठतालीसका इकसठिवां भाग ताको गुणें छिनवैका इकसठिवां भाग होइ $\frac{१९}{६९}$ याको लवण समुद्रका व्यास दोय लाख योजन ताभै समछेद विधानकरि घटाइए तत्र एक कोड़ी इकईस लाख निन्याणवै हजार नवसै च्यारिका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ $\frac{१२१९९७४}{६९}$ बहुरि एक तौ सूर्यविषै अंतराल अर सूर्यतैं अम्यंतर वेदिकाका अर द्वितीय सूर्यतैं बाह्य वेदिका मिलिकरि एक अंतराल जैसे दोय अंतराल विषै इतनां $\frac{१२१९९७४}{६९}$ अंतराल होइ तौ एक अंतरालविषै केता अंतराल होइ जैसे करि ताको अपने सूर्यनिका प्रमाण च्यारि तातैं आधा दोय ताका भाग दिएं निन्याणवे हजार नवसै निन्याणवै योजन अर एक योजनका एकसौ वाईस भागविषै छवीस भाग ताका दोयकरि अपवर्तन किएं तेरह इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्य सूर्य विषै अंतराल जाननां । बहुरि वेदीतैं निकट सूर्यबिंबका अंतराल तातैं आधा जाननां । तहां विषमको कसै आधा करिए तातैं रशिमेंस्यौ एक घटाइ $\frac{९९९७४}{६९}$ ताका आधा करिए तत्र गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन भए । बहुरि अबशेष एकको आधा स्थापि $\frac{१}{३}$ पूर्वोक्त अबशेष तेरह इकसठिवां भाग थे ते राशिके अंश थे तातैं तिनका भी आधा स्थापिए

१३ इन दोऊनिको समछेद विधान करि मिलाइ दोइकरि अपवर्तन करिए तत्र सैतीसका इकसठिवां

भाग $\frac{१३}{६९}$ प्रमाण अबशेष आया । ऐसै ही धातकी खंड कालोदक समुद्र पुष्कारार्द्ध द्वीप तिन विषै

तिष्ठते सूर्य सूर्यनिके बीचि अंतराल अर वेदी सूर्यनिविषै अंतराल ल्यावनां । भावार्थ—लवण समुद्रादि विषै च्यारि आदि सूर्य हैं तिनविषै एक एक परिधिविषै दोय दोय सूर्य जाननै तहां लवण समुद्र विषै अभ्यंतर वेदीतै गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन अर सैतीस इकसठिवां भाग परै जाइ परिधि है तहां सूर्यका विमान है । सो अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है । बहुरि तातै परै निन्याणवै हजार नवसै निन्याणवै योजन अर तेरह इकसठिवां भाग परै जाइ परिधि है तहां सूर्य विमान है सो अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है । बहुरि तातै परै गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन अर सैतीस इकसठिवां भाग परै जाइ लवण समुद्रकी बाह्यवेदी है । असै इनकौं मिलाएं दोय लाख योजन प्रमाण लवण समुद्रका व्यास हो है । याही प्रकार धातुकी खंडविषै च्यारि लाख योजन व्यास है । तामें छह जायगा एक एक परिधिविषै दोय दोय सूर्य हैं । तिन छहौं परिधिनिके बीचि सूर्य सूर्यविषै पांच अंतराल हैं । तिनका प्रमाण ल्यावनां । बहुरि तिस प्रमाणतै आधा आधा अभ्यंतर वेदी सूर्यविषै अर बाह्यवेदी सूर्यविषै अंतराल है सो ल्यावनां । याही प्रकार कालोदक समुद्र पुष्करार्द्ध द्वीपविषै भी अंतरालका प्रमाण ल्यावनां ॥ ३७३ ॥

अब चार क्षेत्र कहै हैं;—

दो द्वौ चंद्रविं पडि एकैकं होदि चारखेत्तं तु ।

पंचसयं दससहियं रविबिंबहियं च चारमही ॥ ३७४ ॥

द्वौ द्वौ चंद्ररवी प्रति एकैकं भवति चारक्षेत्रं तु ।

पंचशतं दशसहितं रविबिंबाधिकं च चारमही ॥ ३७४ ॥

अर्थ—दोय दोय चंद्रमा वा सूर्यप्रति एक चार क्षेत्र सो कितनां है ? पांचसै दश योजन अर सूर्य बिंबका प्रमाणकरि अधिक है । भावार्थ—चंद्रमा वा सूर्यका गमन करनैका जु क्षेत्रगली सो चार क्षेत्र कहिए ताका व्यास पांचसै दश योजन अर योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है ५१०।३ तिस चार क्षेत्रविषै गलीनिका प्रमाण आगै कहेंगे तहां जिस गलीविषै एक चंद्रमा का सूर्य गमन करै तिस ही गलीविषै दूसरा गमन करै है । तातै दोय दोय चंद्रमा व सूर्य प्रति एक एक चार क्षेत्र है ॥ ३७४ ॥

आगै तिन चंद्रमा सूर्यनिका जो चार क्षेत्र ताका विभागका नियम कहै हैं;—

जंबुरबिंदू दीवे चरंति सीदिं सदं च अवसेसं ।

लवणे चरंति सेसा सगसगखेत्ते व य चरंति ॥ ३७५ ॥

जंबूरवीदवः द्वीपे चरंति अशीतिं शतं च अवशेषम् ।

लवणे चरंति शेषाः स्वकस्वकक्षेत्रे एव च चरंति ॥ ३७५ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपसंबंधी सूर्य वा चंद्रमा तौ एकसौ असी योजन तौ द्वीपविषै बिचरै हैं । अबशेष लवण समुद्रविषै बिचरै हैं । बहु अबशेष सूर्य चंद्रमा अपनां अपनां क्षेत्रही विषै बिचरै हैं । भावार्थ—चार क्षेत्रका जो व्यास कह्या तामें जंबूद्वीपसंबंधी चंद्रमा सूर्यनिका एकसौ असी १८० योजन तौ जंबूद्वीपविषै अर तीनसौ तीस योजन अर अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग लवण

समुद्रविषै चार क्षेत्रका व्यास जाननां । अवशेष पुष्करार्द्र पर्यंत द्वीप वा समुद्रसंबंधी चंद्र सूर्यनिका चार क्षेत्र अपनां अपनां द्वीप वा समुद्रही विषै जाननां ॥ ३७५ ॥

आगै सूर्य चंद्रनिके वीथी जो गली तिनका प्रमाण कहै हैं;—

पडिदिवसमेकवीथि चंदाइचा चरंति हु कमेण ।

चंद्रस्स य पण्णरसा इणस्स चउसीदिमय वीथी ॥ ३७६ ॥

प्रतिदिवसं एकवीथिं चंद्रादित्याः चरंति हि क्रमेण ।

चंद्रस्य च पंचदश इनस्य चतुरशीतिशतं वीथ्यः ॥ ३७६ ॥

अर्थ—दोय दोय मिलि करि एक एक दिन प्रति एक एक वीथी प्रति चंद्रमा वा सूर्य विचरै हैं क्रम करि । तहां चंद्रमाकी पंद्रह वीथी हैं बहुरि इन कहिये सूर्य ताकी एकसौ चौरासी गली हैं । भावार्थ—जो चार क्षेत्र कहा तीहविषै चंद्रमाकी तो पंद्रह गली हैं, सूर्यकी एक सौ चौरासी गली हैं । तहां एक एक दिन प्रति एक एक गलीविषै दोय चंद्रमा वा दोय सूर्य गमन करै हैं ॥ ३७६ ॥

आगै वीथीनिका अंतराल करि दिवस प्रति गतिविशेषकौ कहै हैं;—

पथवासपिंडहीणा चारक्खेत्ते णिरेयपथभजिदे ।

वीथीणं विच्चालं सगर्विबजुदो तु दिवसगदी ॥ ३७७ ॥

पथव्यासपिंडहीना चारक्षेत्रे निरेकपथभक्ते ।

वीथीनां विचालं स्वकर्विबयुतं तु दिवसगतिः ॥ ३७७ ॥

अर्थ—पथ व्यास पिंड कहिए बिंबका व्यासकरि गुण्या हुवा वीथीनिका प्रमाण तीह करि हीन जो चारक्षेत्र ताको एक घाटि वीथीनिका प्रमाणका भाग दिए वीथीनिका अंतरालका प्रमाण हो है । बहुरि स्वकीय बिंबप्रमाण तामें जोड़ें दिवस गतिका प्रमाण है । तहां सूर्यबिंबका व्यास योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग $\frac{३११०}{६९}$ तीह करि वीथीनिका प्रमाण एकसौ चौरासीको गुणिए तब अठ्यासीसै बत्तीसका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ $\frac{६९}{६९}$ याको समछेद विधान करि चारक्षेत्रका प्रमाणविषै घटाइए तहां पांचसै दस योजनस्यौ समछेद किए इकतीस हजार एक सौ दशका इकसठिवां भाग होय $\frac{३११०}{६९}$ यामें सूर्यबिंब प्रमाण अधिक था $\frac{५६}{६९}$ सो जोड़ें इकतीस हजार एकसौ अठावनका इकसठिवां भाग भया $\frac{३११५८}{६९}$ याबिषै पथव्यासपिंड अठ्यासी सौ बत्तीसका इकसठिवां भाग $\frac{८८२२}{६९}$ घटाइए तब बाईस हजार तीनसै छव्वीसका इकसठिवां भाग होय $\frac{२२३२६}{६९}$ याको एक घाटि वीथीनिका प्रमाण एकसौ तियासी ताका भाग दीजिए तहां पूर्व भागहार इकसठि ताको एकसौ तियासी करि गुणि भाग दीजिए तब बाईस हजार तीनसै छव्वीसको ग्यारह हजार एकसौ तरेसठिका भाग दीजिए इतना भया $\frac{२२३२६}{१११६३}$ तहां भाग दिए दोय योजन पाए, सो दोय योजन प्रमाण वीथीके बीच अंतराल है । बहुरि यामें स्वकीय बिंब जो जो सूर्यबिंबका प्रमाण योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग सो मिलाए एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति गमन क्षेत्रका प्रमाण हो है । भावार्थ—पूर्वोक्त चार

क्षेत्रका व्यासविषै एकसौ चौरासी गमन करनेकी गली हैं। तहां प्रथम गली अर दूसरी गली-विषै दोगे योजनका अंतराल है। ऐसैही दोगे दोगे योजनका एक अंतराल जाननां। बहुरि प्रथम गलीविषै सूर्य जिस दिनविषै गमन करै है। इहां प्रथम गलीकी आदितै द्वितीय गलीकी आदि पर्यंत अंतराल जाननां। ऐसै ही दिन दिन प्रति तातै दूसरे दिन तिस प्रथम गलीतै योजनका एक सौ सत्तरिका इकसठिवां भाग परै जाइ दूसरी गलीविषै गमन करै है। ऐसे दिन २

प्रति परै परै गमन क्षेत्रका प्रमाण जाननां। बहुरि ऐसैही चंद्रमाका चार क्षेत्र इकतीस हजार एक सौ अठावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण $\frac{3994}{69}$ तामें पथ व्यासपिंड आठसौ चालीसका इकसठिवां भाग $\frac{400}{69}$ घटाइ एक घाट चौदह १४ का भाग दिएं पैतीस योजन अर दोइसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण तौ वीथी वीथीविषै अंतराल हो है। यामें चंद्रबिंबका प्रमाण मिलाए छत्तीस योजन अर एकसौ गुण्यासीका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति गमन क्षेत्रका प्रमाण जाननां ॥ ३७७ ॥

ऐसै ल्याया जो दिन प्रति गमन प्रमाण ताकौ आश्रय करि मेरुतै मार्ग मार्ग प्रति अंतराल अर तिन मार्गनिका परिधिकौ कहै हैं;—

सुरगिरिचंद्रवीणं मगं पडि अंतरं च परिहिं च ।

दिगंदितापरिहीणं खेवादो साहए कमसो ॥ ३७८ ॥

सुरगिरिचंद्रवीणां मार्गं प्रत्यंतरं च परिधिः च ।

दिनगतितत्परिधीनां क्षेपात् साधयेत् क्रमशः ॥ ३७८ ॥

अर्थ—मेरु गिर अर चंद्रमा सूर्यनिका मार्ग इनकै वीचि अंतराल, बहुरि तिन मार्गनिका परिधि सो ल्यावनां। कैसै सो कहिए हैं—जंबूद्वीपका व्यास एक लाख योजन तामें जंबूद्वीपके अंत-तै एकसौ अस्सी योजन उरै अभ्यन्तर मार्ग है। तातै सन्मुख दोऊ पार्श्वनिका दीपसंबंधी चार क्षेत्र मिलाएं तीनसै साठि योजन भए सो घटाएं निन्यानवै हजार छसै चालीस योजन प्रमाण अभ्यन्तर वीथीका सूचीव्यास हो है। इतनांही अभ्यन्तर वीथीविषै तिष्ठते सन्मुख दोऊ सूर्य तिनकै वीच अंतराल है। बहुरि तामें मेरुका व्यास दशहजार योजन घटाइ ८९६४० आधा करिए तब चवालीस हजार आठसै वीस योजन प्रमाण मेरुगिरि अर अभ्यन्तर वीथीविषै तिष्ठता सूर्यकै वीचि अंतराल हो है। बहुरि यामें दिनगतिका प्रमाण दोगे योजन अर अठतालीसका एकसठिवां भाग प्रमाण मिलाएं चवालीस हजार आठसै बावीस योजन अर अठतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण दूसरी वीथीविषै तिष्ठता सूर्य अर मेरु गिरिके वीचि अन्तराल हो है। ऐसैही पूर्व पूर्व मेरु गिरि सूर्यका अन्तरालविषै दिन गतिका प्रमाण मिलाएं उत्तरोत्तर पथविषै तिष्ठता सूर्य अर मेरुगिरिकै वीचि अन्तरालका प्रमाण हो है। बहुरि अभ्यन्तर वीथीका सूची व्यास ९९६४०। विषै दूणा दिन गतिका प्रमाण तीनि-सै चालीसका इकसठिवां भाग ताका पांच योजन अर पैतीसका इकसठिवां भाग मिलाएं निन्यानवै हजार छसै पैतालीस योजन योजनका पैतीस इकसठिवां भागप्रमाण दूसरी वीथीविषै तिष्ठते दोऊ

सूर्य तिनके बीच अन्तराल हो है । इतनाही दूसरी वीथी विषै तिष्ठते दोऊ सूर्य तिनके बीच अंतराल हो है । इतना ही दूसरी वीथीका सूची व्यास हो है । ऐसै अपना अभ्यन्तरवर्ती पूर्व पूर्व व्यासविषै दूना दिन गतिका प्रमाण मिलाए उत्तरोत्तर वीथीविषै तिष्ठते दोऊ सूर्यनिकै बीच अंतराल हो है । बहुरि विक्खंभवग्गदहगुण करिणी वट्टस्स परिरहो होदि ।

इस करणसूत्रकरि अभ्यन्तर परिधिका (सूची व्यास ९९६४० का परिधि अनाईये । तब तीन लाख पंद्रह हजार निवासी ३१५०८९ योजन प्रमाण होइ बहुरि यामें दूना दिन गतिका प्रमाण ३४० का परिधिका) प्रमाण विष्कंभ ३४० का वर्ग दशगुणा ११५६००० ताका वर्ग-

६१

६१

६१।६१

मूल १०७५ ल्याइ अपना भागहारका भाग दिये सतरह योजन अर योजनका अठतीस इकसठि

६१

भाग होइ सो मिलाए तीन लाख पंद्रह हजार एकसौ छह योजन अर योजनका अठतीस इकसठिवां भाग प्रमाण ३१५१०६।३८ द्वितीय वीथीका परिधि हो है । ऐसेही दूणा दिन गतिका परिधिका

६१

प्रमाण पूर्व पूर्व वीथीका परिधिविषै जोड़े उत्तर उत्तर वीथीका परिधि हो है । इस प्रकार करि दिन गतिके मिलावनेतें अर दूणा दिन गतिके मिलावनेतें अर दूणा दिन गतिका परिधिके मिलावनेतें क्रमतें मेरुगिरि सूर्यके बीच अंतराल अर सूर्य सूर्यके बीच अंतराल अर वीथीनिका परिधि साधिए है ॥ ३७८ ॥

आगै ऐसे कहा जु परिधि तिहविषै भ्रमण करता सूर्य ताके दिन रात्रिको कारण पनैं अर तिन दिन रात्रनिका प्रमाण मार्गनिका अपेक्षा करि कहैं हैं;—

सूरादो दिणरत्ती अठारस बारसा मुहुत्ताणं ।

अब्भंतरम्हि एदं विवरीयं बाहिरम्हि हवे ॥ ३७९ ॥

सूर्यात् दिनरात्री अष्टादश द्वादश मुहूर्तानाम् ।

अभ्यन्तरे एतत् विपरीतं बाह्ये भवेत् ॥ ३७९ ॥

अर्थ—सूर्यतैं दिनरात्रि अठारह मुहूर्त प्रमाण अभ्यन्तर परिधिविषै हो है । यह ही विपरीत उलटा बाह्य परिधिविषै हो है । भावार्थ—जंबूद्वीपकी वेदीतैं उरैं एकसौ अस्सी योजन जो अभ्यन्तर परिधि है तिहविषै सूर्य भ्रमण करै तिहदिन अठारह मुहूर्तका तो दिन हो है । अर बारह मुहूर्तकी रात्रि हो है । बहुरि लवण समुद्रविषै सूर्यविषै प्रमाण करि अधिक तीनसै दस योजन पनैं जो बाह्य परिधि है तीहविषै सूर्य भ्रमण करै तिहदिन बारह मुहूर्तका दिन हो है । अठारह मुहूर्तकी रात्रि हो है ॥ ३७९ ॥

आगै सूर्यका अवस्थिति स्वरूप अर दिन रात्रिविषै हानिचय कहैं हैं;—

कक्कडमयरे सव्वब्भंतरबाहिरपहट्ठिओ होदि ।

मुहभूमीण विसेसे वीथीणंतराहिदे य चयं ॥३८०॥

कर्कटमकरे सर्वाभ्यन्तरबाह्यपथस्थितो भवति ।

मुखभूम्योः विशेषे वीथीनामंतरहिते च चयः ॥ ३८० ॥

अर्थ—कर्कट अर मकरविषै सर्व अभ्यन्तर बाह्य पथविषै तिष्ठतो सूर्य है। **भावार्थ**—कर्क राशिविषै सूर्य प्राप्त होइ तब अभ्यन्तर वीथीविषै भ्रमण करै है। बहुरि मकर राशिविषै सूर्य प्राप्त होय तब बाह्य वीथी विषै भ्रमण करै है। बहुरि तिस राशिकी समाप्ततापर्यंत दिन रात्रिका प्रमाण तितना ही रहै है कि विशेष है। तहां कहिए हैं दिन दिन प्रति हानिचय है। कैसें? मुख तो बारह मुहूर्तका दिन अर भूमि अठारह मुहूर्तका दिन तहां विशेषे कहिए भूमिमैस्यौ मुख घटाएं अवशेष छह रहे इनको वीथी एकसौ चौरासी तिनकै वीचि अन्तराळ एकसौ तियासी सो इतने दिननिविषै जो छह मुहूर्त होइ तौ एक अन्तरालविषै कितना मुहूर्त होइ। ऐसे किए छहका एकसौ तियासिवां भाग होय। तहां तीन करि अपवर्तन कीए दोय मुहूर्तका इकसठिवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति हानि चय हो है। **भावार्थ**—अभ्यन्तर वीथीविषै सूर्य जिहदिन भ्रमण करै तिहदिन अठारह मुहूर्तका दिन हो है। बहुरि तातैं परैं दूसरी वीथीविषै जिहदिन प्रमाण करै तिहदिन अठारह मुहूर्तमै स्यौ दोय मुहूर्तका इकसठिवां भाग घटाइए इतने प्रमाण दिन हो है। ऐसैही दिन दिन प्रति घटता घटता बाह्य विषै सूर्य भ्रमै तिह दिन बारह मुहूर्तका दिन हो है। बहुरि तिसतैं उरैं मार्ग-विषै सूर्य भ्रमै तिहदिन बारह मुहूर्तविषै दोइ मुहूर्तका इकसठिवां भाग मिलाइए इतना दिन हो है। सो वधता वधता अभ्यन्तर पथविषै सूर्य भ्रमै तब अठारह मुहूर्तका दिन हो है। ऐसै हानिचय जाननां। बहुरि तिस मुहूर्तका अहोरात्र है तांमै जितने प्रमाण दिन होय सो घटाएं अवशेष तहां रात्रिका प्रमाण जाननां ॥ ३८० ॥

ऐसै कहे जु दिन रात्रि तिनविषै ताप अर तमको वर्तमान काल है। दिनविषै तौ ताप कहिये तावड़ा वर्तै हैं रात्रिविषै तमको कहिए अन्धकार वर्तै है। तातै तम तापका क्षेत्र प्रमाण निरूपण करत संता आचार्य श्रवण माह मासादिकनिकै दक्षिणायन उत्तरायणको निरूपै हैं;—

सावणमाघे सव्वभंतरबाहिरपहट्टिओ होदि ।

सूरट्टियमासस्स य तावतमा सव्वपरिहीसु ॥ ३८१ ॥

श्रावणमाघे सर्वाभ्यन्तरबाह्यपथस्थितो भवति ।

सूर्यस्थितमासस्य च तापतमसी सर्वपरिधीषु ॥ ३८१ ॥

अर्थ—श्रावण मासविषै तौ सूर्य सर्व अभ्यन्तर मार्गविषै तिष्ठै है। माघ मासविषै सूर्य सर्वतै बाह्य मार्गविषै तिष्ठै है। तिस सूर्य तिष्ठनेको जु मास तिनविषै ताप अर तमके वर्तनेका प्रमाण सर्व परिधिनि-विषै ल्यावनां। तहां छहमहीनांके एकसौ तियासी दिन होय तौ श्रावण आदि एक आदिक महिनाके केते दिन होइ। ऐसै किए श्रावण भए साढातीस, भादवा भए एकसठि, आसोज भए साढा इक्याणवै कातीक भए एकसौ बाईस मार्गशीर्ष भए एक सौ साढाबावन पौष भए एकसौ तियासी दिन हो हैं सो एतौ दक्षिणायनके दिन हैं। बहुरि माघ भए साढातीस फागुन भए इकसठि

चैत्र भए साढाङ्क्याणवै, वैशाख भए एक सौ बाईस ज्येष्ठ भए एकसौ साढावावन, आषाढ भए एकसौ तियासी ए उत्तरायणके दिन हैं ॥ ३८१ ॥

आमैं सर्व परिधिनिविषै ताप तमके प्रमाण ल्यावनैका विधान कहैं हैं;—

गिरिअभंतरमज्झिमवाहिरजलछट्टभागपरिहिं तु ।

सट्ठिहिदे सूरद्वियमुहुत्तगुणिदे दु तावतमा ॥ ३८२ ॥

गिर्यभ्यन्तरमध्यमबाह्यजलषष्ठभागपरिधि तु ।

षष्ठिहिदे सूर्यस्थितमुहूर्तगुणिते तु तापतमसी ॥ ३८२ ॥

अर्थ—मेरुगिर अर अभ्यन्तर वीथी अर जलविषै लवण समुद्रका व्यासका छठा भाग परैं जो जो परिधिका प्रमाण होइ ताकौं साठिका भाग दीजिए अर सूर्य जिस मासविषै तिष्ठै तिस मास-विषै जो दिन रात्रिका मुहूर्तनिका प्रमाण तीहकरि गुणिए तव तीह मासविषै ताप तमका विषयभूत क्षेत्रका प्रमाण आवै है । तहां मेरुगिरिका व्यास तौ दस हजार योजन है । बहुरि जंबूद्वी-पका व्यास १००००० विषै द्वीपका चार क्षेत्र १८० कों दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणां करि ३६० घटाईये तव अभ्यन्तर वीथीका सूची व्यास निन्याणवै हजार छसै चालीस योजन हो है ९९६४० बहुरि चारक्षेत्रका प्रमाण ५१० कों आधा करि २५५ यामैं द्वीपसंबंधी चार क्षेत्र १८० घटाइ अबशेष ७५ कों दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणा १५० करि जंबूद्वीपका व्यास १००००० विषै मिलाएं एक लाख एकसौ पचास योजन प्रमाण मध्यम वीथीका सूची व्यास हो है । बहुरि लवण समुद्रसंबंधी चार क्षेत्र ३३० कों दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणा ६६० करि जंबूद्वीपका व्यास १००००० विषै मिलाएं एक लाख छहसै साठि योजन प्रमाण बाह्य वीथीका सूची व्यास हो है । बहुरि लवण समुद्रका व्यास २००००० को छहका भाग देइ लब्धराशि ३३३३३ कों दोऊ पार्श्वनिकों ग्रहणके अर्थि दूणा करि ६६६६६ जंबूद्वीपके व्यास १००००० विषै मिलाएं एक लाख छसठि हजार छसै छसठि योजन अर अपवर्तन किए दोयका तीसरा भाग प्रमाण जल षष्ठ भागका व्यास हो है । अब इन पांचौं व्यासनिकों विक्खंभवग्गदहगुणकारिणी वट्टस्स परिहियं होदि । इस करण सूत्र करि परिधिका प्रमाण ल्याइये तव मेरुगिरिका परिधि इकतीस हजार छसै बाईस योजन ३१६२२ अभ्यन्तर वीथीका परिधि तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन, मध्यम वीथीका परिधि तीन लाख सोलह हजार सातसै योजन, बाह्यवीथीका परिधि तीन लाख अठारह हजार तीनसै चौदह योजन, जल षष्ठभागका परिधि पांचलाख सत्ताईस हजार छियालीस योजन प्रमाण है ऐसैं परिधिका प्रमाण ल्याइ इन परिधिनि-विषै जो विवक्षित परिधि होइ ताकौं साठिका भाग दीजिये । जैसे विवक्षित मेरुगिरिका परिधिकों साठिका भाग दिएं पांचसै सत्ताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण होइ । बहुरि जिस मासविषै सूर्य तिष्ठै तिस मास संबंधी दिन रात्रिके मुहूर्तनिका अठारहसौं ल्गाय बारह पर्यंत प्रमाण १८।१७।१६।१५।१४।१३।१२ तिह कर गुणिए । जैसे पूर्वोक्त प्रमाण ५२९ कों अठारह करि गुणै चौराणवैसै छियासी योजन अर अठारहका तीसवां भागकों छहकरि अपवर्तन किए

तीनका पांचवां भाग प्रमाण होइ ९४८६ ऐसैं किंए जो जो प्रमाण आवै सो सो ताप तमका विषयभूत क्षेत्र जाननां । **भावार्थ**—मेरुगिरिका परिधि इकतीस हजार छसै बाईस योजन है ३१६२२ तीहविषै श्रावण मासविषै जहां अठारह मुहूर्तका दिन बारह मुहूर्तकी रात्रि हो है तहां चौराणवैसैं छियासी योजन अर योजनका तीन पांचवां भागविषै तौ एक सूर्यके निमित्ततै तावड़ा पाईए है । अर ताके सन्मुख इतना ही दूसरे सूर्यके निमित्ततै तावड़ा है । अर तिनके बीचि अन्तरालविषै तरेसठिसै तेईस योजन अर दोयका पंचम भागविषै अन्धकार है, अर ताके सन्मुख दूसरा अन्तरालविषै इतनाही अन्धकार है इन सबनिको जोड़ें ९४८३॥६३२४॥ ९४८६॥६३२४॥ इकतीस हजार छसै बाईस योजन प्रमाण परिधि हो है । ऐसैंही अन्य परिधिनिविषै जाननां । बहुरि विवक्षित परिधिकौ साठिका भाग देइ एक मुहूर्त करि गुणें जो प्रमाण आवै तितना मास प्रति ताप तमका घटती बधती क्षेत्रका प्रमाणरूप हानिचय जाननां तहां विवक्षित मेरुगिरिका परिधिकौ साठिका भाग देइ एक मुहूर्त करि गुणें पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण हानिचय होइ । एक मासविषै एक मुहूर्त रात्रिदिन कैसैं घटै बधै सो कहिए है । एक दिनविषै दोय इकसठिवां भाग प्रमाण हानि चय होय तौ साढ़ा तीस दिनविषै कितना हानिचय होइ ऐसैं करतैं अपवर्तन किंए एक मुहूर्त एक मासविषै आवै है । बहुरि साठि मुहूर्तविषै सर्व परिधिप्रमाणविषै गमन करै तौ एक मुहूर्तविषै कितनां क्षेत्रविषै गमन करै ऐसैं परिधिका साठिवां भाग प्रमाण एक मुहूर्तविषै गमनक्षेत्रका प्रमाण आवै है । **भावार्थ**—मेरुगिरिका परिधिविषै श्रावण मासतै भाद्रव मासविषै पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण तापक्षेत्र घटता है तम क्षेत्र बधता पाइए है । तहां एक सूर्यसंबंधी तापक्षेत्र निवाससैं गुणसठि योजन अर सतरह तीसवां भाग अर इतना ही दूसरा सूर्यसंबंधी । बहुरि एक अन्तरालविषै तमक्षेत्र अडसठिसै इक्यावन योजन अर ग्यारह सत्तरहां भाग अर इतनाही दूसरा अन्तरालविषै ऐसैं सर्व मिलि मेरुगिरिका परिधि प्रमाण हो है । ऐसैंही पूस मास पर्यंत दक्षिणायनविषै तौ मास मास पर्यंत पांचसै सत्ताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण आतापक्षेत्र तौ घटता घटता अर तमक्षेत्र बधता जाननां । बहुरि माघतै फाल्गुनादिक अषाढ पर्यंत उत्तरायणविषै मास मास पर्यंत तितनाही तापक्षेत्र बधता बधता अर तमक्षेत्र घटता घटता जाननां । ऐसैंही सर्व परिधिनिविषै ताप तम क्षेत्रका प्रमाण विवक्षित मासविषै ल्यावनां । बहुरि इहां पांच परिधिविषै नास मासनिकी अपेक्षा बर्णन किया है इस ही प्रकार विवक्षित क्षेत्रका परिधिविषै विवक्षित दिन अपेक्षा ताप तम क्षेत्रका प्रमाण ल्यावनां । बहुरि इहां जंबूद्वीप संबंधी सूर्यनिका लवण समुद्रके व्यासका छठा भाग पर्यंत प्रकास है तातें तहां पर्यंत ग्रहण किया है । बहुरि जिस क्षेत्रविषै ताप है तहां दिन जाननां जहां तम है तहां रात्रि जाननी ॥ ३८२ ॥

आगैं ऐसैं ल्याया जु ताप तमका क्षेत्र ताका प्रवर्तनकी कहै है;—

परिहिम्हि जम्हि चिद्धदि सूरौ तस्सेव तावमाणदल्ल ।
बिंबपुरदो पसप्पदि पच्छाभागे य सेसद्ध ॥ ३८३ ॥

परिधौ यस्मिन् तिष्ठति सूर्यः तस्यैव तापमानदलम् ।

बिंबपुरतः प्रसर्पति पश्चाद्भागे च शेषार्धम् ॥ ३८३ ॥

अर्थ—जिस परिधिविषै सूर्य तिष्ठै है तिस परिधिहीका तापका जो प्रमाण ताका आधा तो सूर्यके बिंबतें आगै फैले है, अवशेष आधा पीछें फैले है । **भावार्थ**—परिधिनियै जो तापका प्रमाण कहा तीहविषै जहां सूर्यका बिंब पाईए तिह क्षेत्रके आगै तिस प्रमाणतै आधा ताप फैले है, अर आधा पीछें फैले है । इहां प्रश्न । जो मेरुगिरिकी परिधिनें आदि दै करि जिन परिधिनियै सूर्यका गमन नाहीं तहां ताप कैसे फैले है ? ताका समाधान-सूर्यबिंबतै सूधा सन्मुख जो तिस विवक्षित परिधिविषै क्षेत्र तातै आगै पीछें आधा आधा ताप फैले है । बहुरि ऐसा जाननां जैसे चिराकके आगै पाछें प्रकाश हो है । बहुरि जैसे जैसे चिराक आगानै चाले तैसें तैसें आगानै तो प्रकाश होता जाय पीछेतै अन्धकार होता आवै तैसेंही सूर्यबिंब जैसे जैसे आगै चलै तैसें तैसें आगै ताप फैलता जाय पीछें पीछें तम होता आवै है ॥ ३८३ ॥

अब ताप तमकी हानि वृद्धिकों कहै हैं;—

पणपरिधीयो भजिदे दसगुणमूर्तरेण जल्लद्धं ।

सा होदि हाणिवद्धी दिवसे दिवसे च तावतमे ॥ ३८४ ॥

पंचपरिधिषु भक्तेषु दशगुणसूर्यातरेण यल्लुब्धं ।

सा भवति हानिवृद्धिर्दिवसे दिवसे च तापतमसोः ॥ ३८४ ॥

अर्थ—पांचों परिधिनियै दश गुणां सूर्यके अन्तरालनिका भाग दिएं जो लब्धराशि होइ सो दिन दिन विषै ताप तमकी हानि वृद्धिका प्रमाण जाननां । तहां पंच परिधिनियै विवक्षित मेरु गिरि परिधि तहां साठि मुहूर्तनियै इकतीस हजार छहसै वाईस योजन प्रमाण क्षेत्रविषै गमन करै तो दोय मुहूर्तका इकसठिवां भाग मात्र दिनका वृद्धि हानिका जो प्रमाण तामै कितनां गमन करै ऐसें तिस परिधिप्रमाणकों साठिका भाग दिएं दोयका इकसठि भागकरि गुणें दोय करि अपवर्तन किएं सत्रह योजन अर पांचसौ बाराका अठारहसै तीसवां भाग प्रमाण आवै सोई सूर्यके गमन मार्गनिका अन्तराल एकसौ तियासी ताका दस गुणां किएं अठारहसै तीस ताका भाग विवक्षित मेरुगिरिके परिधि प्रमाणकों दिएं प्रमाण आवै तातै ऐसा विचारि आचार्यनै ऐसा कहा कि विवक्षित परिधिकों दश गुणां सूर्यांतरालका भाग दिएं ताप तमका वृद्धि हानिका प्रमाण आवै है । ऐसें सत्रह योजन अर पांचसै बारहका अठारहसै तीसवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति उत्तरायणविषै ताप बधै है तम घटै है, दक्षिणायनविषै तम बधै है ताप घटै है । याही प्रकार अन्य परिधिनियै दिन दिन प्रति ताप तमका घटनां बधनां ल्यावनां ॥ ३८४ ॥

आगै पांचों परिधिनिके सिद्ध भए अंकनिकों दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

बार्वास सोल तिण्णिय उणणउदी पण्णमेकतीसं च ।

दुखसच्चट्ठिगितीसं चोइस तेसीदि इगितीसं ॥ ३८५ ॥

द्वाविंशतिः षोडश-त्रीणि एकोननवतिपंचाशदेकत्रिंशच्च ।

द्विसप्तषष्ठ्येकत्रिंशत् चतुर्दश त्र्यशीतिरेकत्रिंशत् ॥ ३८५ ॥

अर्थ—बाईस सोला तीन ३१६२२ इन अंक क्रमकरि इकतीस हजार छसै बाईस योजन प्रमाण मेरुगिरिका परिधि है । बहुरि निवासी पचास इकतीस ३१५०८९ इन अंक क्रम करि तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण अभ्यन्तर वीथीका परिधि है । बहुरि दोय बिंदी सतसठि इकतीस ३१६७०२ इन अंक क्रमकरि तान लाख सोलह हजार सातसै दोय योजन प्रमाण मध्य वीथीका परिधि है । बहुरि चौदह तियासी इकतीस ३१८३१४ इन अंक क्रमकरि तीन लाख अठारह हजार तीनसै चौदह योजन प्रमाण बाह्य वीथीका परिधि है ॥ ३८५ ॥

छादालसुण्णसत्तयवावणं होंति मेरुपहुदीपं ।

पंचहं परिधीओ क्रमेण अंकक्रमेणैव ॥ ३८६ ॥

षट्चत्वारिंशच्छून्यसप्तकाद्विपंचाशत् भवन्ति मेरुप्रभृतीनाम् ।

पंचानां परिधयः क्रमेण अंकक्रमेणैव ॥ ३८६ ॥

अर्थ—छियालीस सून्य सात बावन ५२७०४६ इन अंक क्रमकरि पांच लाख सत्ता-ईस हजार छियालीस योजन प्रमाण जल षष्ट भागका परिधि है। ऐसै मेरु आदि दै पंचनिका परिधि है सो क्रमकरि अंकनिका अनुक्रमकरि जाननां ॥ ३८६ ॥

आगै जिनका प्रमाण समान नाहीं ऐसी जु अभ्यन्तरादि परिधि तिनकाँ समान काल करि कैसै समाप्त करै है सो कहै हैं;—

णीयंता सिग्घगदी पविसंता रविससी दु मंदगदी ।

विसमाणि परिरयाणि दु साहांति समाणकालेण ॥ ३८७ ॥

निर्यांतौ शीघ्रगंतौ प्रविशंतौ रविशशिनौ तु मंदगती ।

विषमान् परिधीस्तु साधयतः समानकालेन ॥ ३८७ ॥

अर्थ—सूर्य अर चंद्रमा ए निकसते हुए ज्यों ज्यों अगली परिधिकौ प्राप्त होय त्यों त्यों शीघ्र गमनरूप हो हैं उतावले चलै हैं । बहुरि पैसते हुए ज्यों ज्यों माहिली परिधिनिाँ प्राप्त होइ त्यों त्यों मन्द गमनरूप हो हैं धीरे चलै हैं । ऐसै होइ समान कालकरि विषम प्रमाणकाँ लिए जु अभ्यन्तरादि परिधि तिनकाँ समाप्त करै हैं गमन करि साधै हैं ॥ ३८७ ॥

आगै तिन सूर्य चन्द्रमानिका गमन विधान दृष्टांतमुखकरि कहै हैं;—

गयह्यकेसरिगमणं पढमे मज्झंतिमे य सूरस्स ।

पडिपरिहिं रविससिणो मुहुत्तगदिखेत्तमाणिज्जो ॥ ३८८ ॥

गजह्यकेसरिगमणं प्रथमे मध्ये अंतिमे च सूर्यस्य ।

प्रतिपरिधि रविशशिनोः मुहूर्तगतिक्षेत्रमानेयम् ॥ ३८८ ॥

अर्थ—गज घोटक केशरी गमन प्रथम मध्य अंतविषै सूर्य चन्द्रमाके हो है ।

भावार्थ—सूर्य चन्द्रमा अभ्यन्तर परिधिविषै हस्तीवत् मंद गमन करै हैं, बहुरि मध्यपरि-

धिविषै घोटकवत् तातै शीघ्र गमन करै हैं । बहुरि बाह्य परिधिविषै सिंहवत् अति शीघ्र गमन करै हैं । बहुरि अब सूर्य चन्द्रमानिके परिधि परिधि प्रति एक मुहूर्तविषै गमनका प्रमाण ल्यावनां । कैसै सो कहिए हैं । तहां सूर्यका परिधिविषै भ्रमणकी समाप्तताका काल साठि मुहूर्त है । बहुरि अभ्यन्तर परिधिका प्रमाण तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन है सो सूर्यके साठ मुहूर्तनिका गमन क्षेत्र तीनलाख पंद्रह हजार निवासी योजन होइ तौ एक मुहूर्तका कितनां होइ । ऐसै परिधि प्रमाणकौं साठिका भाग दिए पांच हजार दोयसौ इक्कावन योजन अर गुणतीसका साठिवां भाग मात्र सूर्यका अभ्यन्तर परिधिविषै एक मुहूर्तकरि गमन क्षेत्रका प्रमाण हो है । ऐसै ही अन्य विवक्षित परिधिके प्रमाणकौं साठिका भाग दिए सूर्यका विवक्षित परिधिविषै एक मुहूर्त करि गमन क्षेत्रका प्रमाण साधनां । बहुरि ऐसै ही चंद्रमाका भी त्रैराशिक विधान करि ल्यावनां । तहां चंद्रमाका परिधिविषै भ्रमणकी समाप्तताका काल वासठि मुहूर्त अर तेईसका दोयसै इकईसवां भाग प्रमाण है ६२।२३ याका विधान आगै अट्टडी सत्तरस इत्यादि सूत्रकरि कहैंगे ॥ याकौं

२२१

समच्छेद करि मिलाएं तेरह हजार सातसै पच्चीसका दोयसै इकईसवां भाग मात्र भया सो इतने कालविषै अभ्यन्तर परिधिका प्रमाण तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण गमन क्षेत्र होइ तौ एक मुहूर्तविषै कितनां होइ । प्रमाण १३७२५ फल ३१५०८९ इछा मु १ ऐसै करि

२२१

लब्ध राशि पांच हजार तहेत्तरि योजन अर सात हजार सातसै चवालीसका तेरह हजार सातसै पच्चीसवां भाग मात्र ५०७३।७७४४ चंद्रमाका अभ्यन्तर परिधिविषै एक मुहूर्तका गमन

१३७२५

क्षेत्रका प्रमाण आया । ऐसै ही अन्यविवक्षित परिधिके प्रमाणकौं वासठि अर तेईसका दोयसै इकईसवां भागका भाग दिए विवक्षित परिधिविषै एक मुहूर्तका गमन क्षेत्रका प्रमाण आवै है ॥ ३८८ ॥

आगै अभ्यन्तर वीथीविषै तिष्ठता जु सूर्य ताका चक्षुः स्पर्शा ध्यान जो दृष्टिविषै आवनेका मार्ग ताकौं तीन गाथानिकरि अनावै हैं;—

सद्विहिदपढमपरिहिं णवगुणिदे चक्खुफासअद्धानं ।

तेणूणं णिसहाचलचावद्धं जं पमाणमिणं ॥ ३८९ ॥

षष्टिहितप्रथमपरिधौ नवगुणिंते चक्षुःस्पर्शाध्वा ।

तेनोनं निषघाचलचापार्थं यत् प्रमाणमिदम् ॥ ३८९ ॥

अर्थ—प्रथम परिधिका प्रमाणकौं साठिका भाग देइ नवकरि गुणिए इतनां चक्षुःस्पर्शा अध्वान है । तहां साठि मुहूर्तनिका प्रथम परिधि तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण गमन क्षेत्र होइ तौ नव मुहूर्तनिका कितनां गमन क्षेत्र होइ ऐसै प्रथम परिधिकौं साठिका भाग ही नवका गुणाकार भया । इनकौं तीनकरि अपवर्तन कीएं वीसका भागहार तीनका गुणकार हो है । तहां

प्रथम परिधिकौं ३१५०८९ वीसका भाग देइ ३१५०८९ तीन करि गुणिए ९४५२६७ तब

२०

२०

लब्धराशि सैंतालीस हजार दोयसै तरेसठि योजन अर सातका वीसवां भाग मात्र चक्षुःस्पर्शाध्वान हो है । भावार्थ—अयोध्या नाम नगरका वासी महंत पुरषनिकरि उत्कृष्टपने सैंतालीस हजार दोयसै तरेसठि योजन अर सातका वीसवां भाग मात्र क्षेत्रका अंतराल होतैं सूर्य देखिए हैं इतनां ही चक्षु इन्द्रीका उत्कृष्ट विषय है याहीका नाम चक्षुःस्पर्शाध्वान है । बहुरि इहां अठारह मुहूर्त्त का जु दिन ताका आधा भए मध्यान्हविषै सूर्य अयोध्याकी बरोवरी आवै अर इहां उदय होता सूर्यका प्रहण है तातैं नवका गुणकार किया है । अर परिधिबिषै भ्रमण काल साठि मुहूर्त्त है तातैं साठिका भाग हार कीया है । बहुरि निषध नामा कुलाचल ताका चापका प्रमाण एक लाख तेईस हजार सातसै अडसठि योजन अर अठारह उगणीसवां भाग ताका आधा इकसठि हजार आठसै चौरासी योजन अर नवका उगणीसवां भाग तामैं पूर्वोक्त चक्षुःस्पर्शाध्वानका प्रमाण ४७२६३ ३३ घटाइए अवशेष जो प्रमाण रहै ॥ ३८९ ॥

सो अगली गाथा विषै कहै है;—

इगिवीसलदालयसं साहियमागम्म णिसहउवरिणिणो ।

दिस्सदि अउज्झमज्जे तेणूणो णिसहपासभुजो ॥ ३९० ॥

एकविंशतिपट्चत्वारिंशच्छतं साधिकं आगत्य निषधोपरि इनः ।

दृश्यते अयोध्यामध्ये तेनोनः निषधपार्श्वभुजः ॥ ३९० ॥

अर्थ—इकबीस एकसौ छियालीस अंक क्रमकरि चौदह हजार छसै इकईस तौ योजन अर साधिक कहिए किल्लू अधिक सो अधिक कितनां ? चक्षुःस्पर्शाध्वानका अवशेष सातका विसवां भागको निषध चापका अवशेष नवका उगणीसवां भागविषै समल्लेद विधान करि ३३३३३३ घटाएं सैंतालीसका तीनसै असीवां भाग ४७ मात्र अधिक जाननां । सो निषध कुलाचलकै ऊपरि इतनैं

३८०

१४६२१ । ४७ उरैं आइ करि सूर्य है सो अयोध्याकै मध्य महंत पुरुषनिकरि देखिए हैं । भावार्थ—

३८०

प्रथम वीथीविषै भ्रमण करता सूर्य सो निषध कुलाचलका उत्तर तटतैं चौदह हजार छसै इकईस योजन अर सैंतालीसका तीनसै असीवां भाग उरैं आवै तब भरत क्षेत्रविषै उदय हो है । अयोध्याके वासी महंत पुरुषनिकरि देखिए है । बहुरि निषधकी पार्श्वभुजा वीस हजार एकसै छिनवै योजन प्रमाण तामैं निषध उरैं आइ सूर्य देखनेका जो प्रमाण कख्या १४६२१।४७ ताकां

३८०

घटाएं ॥ ३९० ॥

आगैं कहिए है सो है;—

णिसहुवरिं गंतव्वं पणसगबण्णास पंचदेसूणा ।

तेत्तियमेत्तं गत्ता णिसहे अत्थं च जादि रवी ॥ ३९१ ॥

निषधोपरि गंतव्यं पंचसप्तपंचाशत् पंचदेशोना ।

तावन्मात्रं गत्वा निषधे अस्तं च याति रविः ॥ ३९१ ॥

अर्थ—निषधके ऊपरि जानां पांच सतावन पांच इन अंक क्रम करि पांच हजार पांचसै पिचहत्तरि योजन देशोन कहिए किछु घाटि इतनां निषध पर्वत ऊपरि जाइ सूर्य अस्तपनैकौ प्राप्त हो है । **भावार्थ**—परिधिविषै भ्रमण करता सूर्य जब निषध पर्वतका दक्षिण तटतै परै किछु घाटि पचावनसै पिचहत्तरि योजन जाइ तब अस्त हो है । अजोष्यादिक भरत क्षेत्रके वासीनि-करि न देखिए है ॥ ३९१ ॥

अब जाका प्रयोजन तिस चापके ल्यावनैकौ तिसके वाण ल्यावनैका विधान कहै हैं, चापा-दिकका वर्णन तो आगै होइगा इहां प्रयोजनभूत वर्णन करिए हैं;—

जंबूचारधरूणो हरिवस्ससरो य णिसहबाणो य ।

इह बाणावट्टं पुण अब्भंतरवीहिवित्थारो ॥ ३९२ ॥

जंबूचारधरोनः हरिवर्षशरः च निषधवाणश्च ।

इह वाणवृत्तं पुनः अभ्यंतरवीथीविस्तारः ॥ ३९२ ॥

अर्थ—धनुषाकार क्षेत्रविषै जैसे धनुषका पीठ हो है तैसे जो होइ ताका नाम धनुष है वा ताका नाम चाप भी है । बहुरि जैसे धनुषके चिला हो है तैसे जो होइ ताका नाम जीवा है । बहुरि जैसे तिस धनुषका मध्यतै जीवाका मध्यपर्यंत तीरका क्षेत्र हो है तैसे जो होइ ताका नाम वाण है । सो इहां जंबूद्वीपकी वेदी अर हरि क्षेत्र वा निषध पर्वतके बीचि जो क्षेत्र सो धनुषाकार क्षेत्र हो है । तहां हरि क्षेत्र वा निषध पर्वततै लगाय वेदी पर्यंत अंतराल क्षेत्र सो वाण कहिए वेदी ताका प्रमाण ल्याइए हैं तहां भरत क्षेत्रकी एकसलका हिमवन् पर्वतकी दोय इत्यादि विदेह पर्यंत दूणी दूणी पीछै आधी २ शलाका जोडें सर्व जंबूद्वीपविषै एकसौ निवै शलाका कहिए विसवा हो है । तहां भरत क्षेत्रतै लगाय हरि वर्ष पर्यंत जोड इकतीस शलाका हो हैं । कैसे ? “ अंतघणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तरभजियं । ” इस सूत्रकरि अंतविषै हरिवर्षकी शलाका सोलह ताकौ भरतादिकतै दोयका गुणकार है । तातै गुणकार दोय करि गुणें बत्तीस तामै आदि भरतक्षेत्रकी शलाका एक सो घटाएं इकतीस, याकौ एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीएं भी इकतीस, ऐसै हरिवर्ष शलाका इकतीस हैं । बहुरि याही प्रकार निषध शलाका तेरसठि हो हैं । बहुरि एकसौ निवै शलाकानिका एक लाख योजन क्षेत्र होइ तौ इकतीस वा तेरसठि शलाकानिका केता होइ ऐसै किए हरिवर्षका वाण तौ तीन लाख दश हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है । बहुरि निषधका वाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है । वेदीके अर हरिवर्ष वा निषधके बीचि इतनां अंतराल है । बहुरि इहां चक्षुः अध्वान क्षेत्र कहनां । तहां अभ्यंतर वीथी अर हरिक्षेत्र वा निषध पर्वतके बीचि जो धनुषाकार क्षेत्र तहां वीथीकी परिधि सो तो धनुष है । बहुरि वीथी अर हरिक्षेत्र वा निषधके बीचि अंतराल क्षेत्र सो वाण है । हरिक्षेत्र वा निषधका पूर्व पश्चिमकी तरफ लंबाईका प्रमाण सो जीवा है । तहां पूर्व जो हरिवर्ष वा निषध पर्वतका वाणका प्रमाण कहा तामै जंबूद्वीपसंबंधी चार क्षेत्र एकसौ

असी योजन ताकों उगणीसका भागहार करि समच्छेद किए चौतीससै बीसका उगणीसवां भाग भया । सो इतनां घटाएं चक्षुः स्पर्शाध्वान क्षेत्र ल्याबनेविषै तीन लाख छह हजार पांचसै असीका उगणीसवां भाग प्रमाण तौ हरिक्षेत्रका वाण हो है । बहुरि छह लाख छतीस हजार पांचस असीका उगणीसवां भाग प्रमाण निषधका वाण हो है $\frac{308400}{99}$ $\frac{628500}{99}$ अब इनका वृत्तविष्कंभ जो ऐसा क्षेत्र गोल होइ तब चौडाईका प्रमाण सो कहिए हैं— तहां जंबूद्वीपका वृत्तविष्कंभ एक लाख योजन तामें द्वीपसंबंधी चार क्षेत्र एकसो असी ताकों दोऊ पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूणाकरि ३६० घटाएं अभ्यंतर वीथीका सूची व्यास निन्याणवै हजार छसै चालीस योजन हो है ९९६४०। याकों समच्छेद करनेके अर्थि उगणीसका भाग दीएं अठारह लाख तरेणवै हजार एक सौ साठीका उगणीसवां भाग होइ बहुरि इहां प्रथमहरि क्षेत्रविषै कहिए हैं । इसुहीणं विष्कंभ चउगुणिदिमुणा हेद हु जीवकदी । वाणकदिं छह गुणिदे तत्थ जुदे धणुकदी होदि १ ऐसा करण सूत्र आगै कहैगे ताकरि बाणका प्रमाण $\frac{308400}{99}$ काँ विष्कंभका प्रमाण $\frac{308400}{99}$ में घटाइए १५८६५८० बहुरि वाणका जो प्रमाण $\frac{308400}{99}$ ताकों चौगुणा किए १२२६३२० जो प्रमाण होइ तीहकरि गुणिए १९४५६५४७८५६०० तब जीवाकी कृति होई । याका वर्गमूल किए जीवाका प्रमाण हा ३६१

बहुरि वाणका जु प्रमाण ३०६ ५८० ताका वर्ग करिए ९३९९१२ ९६९६४०० बहुरि याकों १९ ३६१

छह गुणा करिए ५६३ ९४७७७८४०० बहुरि याकों जीवाकी कृति कही तिसविषै जोडिए २५०९- ३६१

६०२५६४००० ऐसै किए धनुषकी कृति होइ, याका वर्गमूल ग्रहण किए $\frac{9509900}{9}$ अपनां भाग ३६१

हारका भाग दिए तियासी हजार तीनसै सतहत्तरि योजन अर नव उगणीसवां भाग प्रमाण हरि क्षेत्रका चाप हो है ८३३७७ $\frac{9}{99}$ । बहुरि निषध पर्वतका कहिए है । इसुहीणं विष्कंभ इत्यादि सूत्र करि निषधका वाणकाँ ६२६५८० पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभ $\frac{308400}{99}$ में स्यो घटाइये अबशेष रहे $\frac{328540}{99}$ १९

ताकों चौगुणा वाणका प्रमाण $\frac{3405320}{99}$ करि गुणिए $\frac{339844004500}{369}$ तब निषधका जीवाकी कृति हो है । याका वर्गमूल प्रमाण निषधकी जीवा है । बहुरि निषधका वाणकी जो कृति $\frac{32850328400}{369}$ ताकों छह गुणा करिए $\frac{2224499400400}{369}$ याको जीवाकी कृति जो कही तिसविषै जोडिए $\frac{442449940000}{369}$

तब धनुः कृति होइ । याका वर्गमूल ग्रहण करि $\frac{33299990}{99}$ अपनां भागहारका भाग दिए एक लाख तेईस हजार सातसै अडसठि योजन अर अठारह उगणीसवां भाग प्रमाण १२३७६८ $\frac{3}{99}$ निषध कुलाचलका चाप हो है । इस चापका अयोध्याके पासि अर्द्धपणां है तातै इस चापकाँ आधा किया । बहुरि अयोध्यातै चक्षुःस्पर्शाध्वान प्रमाण क्षेत्र परै सूर्य दासै ताकों तिस आधा प्रमाणमेंस्यो घटाएं अबशेष जो रखा तितनै निषध चापविषै उत्तर तटतै उरै आइ सूर्य भरत क्षेत्रविषै उदय हो है ऐसा भावार्थ जाननां ॥ ३९२ ॥

ऐसे ब्याए जु हरि क्षेत्र निषध पर्वतके चाप तिनका कहा करनां सो कहै हैं;—

हरिगिरिधनुसेसद्वं पासभुजो सत्तसगतितेसीदी ।

हरिवस्से णिसहधणू अडछस्सगतीस वारं च ॥ ३९३ ॥

हरिगिरिधनुःशेषार्धं पार्श्वभुजः सत्तसत्त्रिव्यशीतिः ।

हरिवर्षे निषधधनुः अष्टषट्सत्त्रिंशद् द्वादश च ॥ ३९३ ॥

अर्थ—निषधपर्वतका चापविषै हरि क्षेत्रका चाप घटाइ ताका आधा करिए इतनां निषध पर्वतकी पार्श्व भुजा है । दक्षिण तटतै उत्तर तट पर्यंत चापका जो प्रमाण ताका नाम इहां पार्श्व भुजा जाननां । तहां निषध पर्वतका धनुः १२३७६८।१८ विषै हरि क्षेत्रका धनुः ८३३७७ । ९

१९

१९

घटाइए तब अबशेष चालीस हजार तीनसै इक्याणवै योजन अर नव उगणीसवां भाग प्रमाण होइ ४०३९१ । ९ याका आधा करना तहां योजन प्रमाणमैस्यौ एक घटाइ आधा करिए तब

१९

बीस हजार एकसौ पिच्याणवै योजन होइ । बहुरि जो एक घटाया था ताका आधा १ अर नव

उगणीसवां भागका आधा $\frac{९}{१९१२}$ इनकों समच्छेद करि जोड़े २८ दोयका अपवर्तन किए चौदह

१९१२

३८

उगणीसवां भाग भए । सो याकों किछू घाटि एक योजन मानि जोड़ें किछू घाटि बीस हजार एक सौ छिनवै योजन प्रमाण निषध पर्वतकी पार्श्वभुजा हो है । सो इहां पार्श्व भुजाविषै उत्तर तटतै चौदह हजार छसै इकईस योजन उरै यावत सूर्य है तावत भरत क्षेत्रवाले वासीनिकों दीसै पीछै न दीसै तातै पार्श्व भुजाविषै इतनां घटाइ अबशेष किछू घाटि पचावनसै पिचहत्तरि योजन दक्षिण तटतै निषधके ऊपरि चाप विषै परै जाइ सूर्य अस्त हो है ऐसा भावार्थ जाननां । अब हरिक्षेत्रके निषध पर्वतके धनुषके सिद्ध भए अंक कहै हैं । तहां सात सात तीन तियासी इन अंकनके क्रम करि ८३३७७ तियासी हजार तीनसै सतहत्तरि योजन तौ हरिवर्षका धनुः है । बहुरि आठ छह सैं-तीस वारा इन अंकनिके क्रम करि १२३७६८ एक लाख तेईस हजार सातसै अडसठि योजन का निषधका धनुष है ॥ ३९३ ॥

आगे कहे जु दोऊनिके धनुषका प्रमाण तहां अब शेष अधिकका प्रमाण वा पार्श्व भुजाके अंक तिनकों कहै हैं;—

माहवचंद्रोद्धरिया णवयकला णयपदप्रमाणगुणा ।

पासभुजो चौहसकदि बीससहस्सं च देसूणा ॥ ३९४ ॥

माधवचंद्रोद्धृता नवककला मयपदप्रमाणगुणाः ।

पार्श्वभुजः चतुर्दशकृतिः विंशसहस्रं च देशोनानि ॥ ३९४ ॥

अर्थः—इहां पदार्थ नामकी संज्ञा करि अंक कहे हैं । सो माधव चंद्र कहिए उगणीस जातै माधव जो नारायण सो नव है । अर द्रश्यमान चंद्र एक है । इन दोऊ अंकनिकरि उगणीस

भए तिनकारे उद्धृत नव कला । भावार्थ-एक योजनको उगणीसका भाग दीजिए । तहां नव भाग प्रमाण तौ हरिक्षेत्रका चापका प्रमाण पूर्वै कह्या तामें अबशेष अधिक जाननां । बहुरि इहां नय स्थान कहिए नय नव हैं तार्तै नवकी जायगा नव तार्को प्रमाण कहिए प्रमाणका भेद दोय है सो दोय करि गुणिए तब एक योजनका उगणीस भागविषै अठारह भाग प्रमाण होइ । सो इतनां निषध पर्वतका चापका प्रमाण पूर्वै योजनरूप कह्या तामें इतनां अबशेष अधिक जाननां । बहुरि निषध पर्वतकी पार्श्व भुजा चौदहकी कृति एकसौ छिनवै तिहकरि अधिक वीस हजार योजन २०१९६ प्रमाण है ॥ ३९४ ॥

आगैं अयन विषै त्रिभागको न करि सामान्यपनै चार क्षेत्रविषै उदय प्रमाणका प्रतिपादनके आर्थ यहु सूत्र कहै हैं;—

दिग्गदिमाणं उदयो ते णिसहे णीलगे य तेसट्ठी ।

हरिरम्मगेषु दो द्वौ सूर्ये णवदससयं लवणे ॥ ३९५ ॥

दिग्गतिमानं उदयः ते निषधे नीलके च त्रिषष्टिः ।

हरिरम्यकयोः द्वौ द्वौ सूर्ये नवदशशतं लवणे ॥ ३९५ ॥

अर्थ—एक दिन विषै चार क्षेत्रका व्यासविषै सूर्यका गमनका प्रमाण एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण कह्या था सो इतना दिन गति क्षेत्रविषै जो एक उदय होइ तौ चार क्षेत्रका पांचसै दश योजन विषै केते उदय होइ । ऐसैं किए लवण प्रमाण एकसै तियासी उदय आए । बहुरि पर्यंतविषै चार क्षेत्र विषै अबशेष सूर्य बिंब करि रोक्या हुवा अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र तिहविषै एक उदय है ऐसैं मिलि एकसौ चौरासी उदय हैं । जार्तै एक एक वीथी प्रति एक एक उदय संभवै हैं । तहां निषध नीलविषै प्रत्येक तरेसठि अर हरि रम्यक क्षेत्रविषै दोय दोय अर लवण समुद्र विषै एकसौ उगणीस उदय हैं ।

भावार्थ—समस्त चार क्षेत्रविषै सूर्यका उदय एकसौ चौरासी हो है । तहां भरत अपेक्षा तरेसठि तौ निषध पर्वतविषै दोय हरि क्षेत्रविषै एकसौ उगणीस लवण समुद्रविषै उदय स्थान हैं । अन्यंतर वीथीतैं लगाय तेरसठिवा वीथी पर्यंतविषै तिष्ठता सूर्य तौ निषध पर्वतके ऊपरि उदय हो है भरत क्षेत्रके वासीनिकरि देखिए हैं । बहुरि चौसठि पैसठिवा वीथी विषै तिष्ठता सूर्य हरि क्षेत्र ऊपरि उदय हो है । बहुरि छयासठिवातैं लगाय अंतपर्यंत वीथीनिविषै तिष्ठता सूर्य लवण समुद्रके ऊपरि उदय हो है । ऐसैंही ऐरावत अपेक्षा तरेसठि नीलपर्वतविषै दोय रम्यक क्षेत्रविषै एकसौ उगणीस लवण समुद्रविषै उदय स्थान जाननै ॥ ३९५ ॥

आगैं दक्षिणायनविषै चार क्षेत्रका द्वीप वेदिका समुद्रका विभाग करि उदय प्रमाणका प्ररूपणके अर्था त्रैराशिककी उत्पत्ति कहै हैं;—

दीउवहिचारखित्ते वेदीए दिग्गदीहिदे उदया ।

दीवे चउ चंदस्स य लवणसमुद्रास्मि दस उदया ॥ ३९६ ॥

द्वीपोदधिचारक्षेत्रे वेद्यां दिनगतिहिते उदयाः ।

द्वीपे चतुः चंद्रस्य च लवणसमुद्रे दश उदयाः ॥ ३९६ ॥

अर्थः—द्वीप समुद्र संबंधी चार क्षेत्र अर वेदी इनको दिन गति प्रमाणका भाग दिए उदयनिका प्रमाण हो है । **भावार्थ**—चार क्षेत्रका व्यासविषै वीथीनिविषै सूर्यका जहां जहां जितने उदय पाइये हैं सो कहिए हैं । तहां जंबूद्वीप संबंधी चार क्षेत्र एकसौ असी योजनमैस्यौ जंबू-द्वीपकी वेदीका व्यास च्यारि योजन है सो दूर किए द्वीप चार क्षेत्र एकसौ छिहंतारि योजन है । बहुरि च्यारि योजन वेदी ऊपरि चार क्षेत्र हैं । बहुरि तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण लवण समुद्र ऊपरि चार क्षेत्र है इनको दिन गतिका प्रमाण एकसौ सत्तरिका एकसठिवां भाग प्रमाण ताका भाग दिए जितनां जितनां प्रमाण आवै तितना उदय जाननें । सो कहिए हैं । दिन गतिका प्रमाण एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग $\frac{299}{49}$ सो इतना क्षेत्र विषै एक उदय होय तौ वेदिका रहित द्वीप चार क्षेत्र विषै केते उदय होंहिं ऐसैं त्रैराशिक किए तरेसठि उदय पाए । तिन विषै अभ्यंतर वीथीका उदय पूर्वला उत्तरायणविषै गिनिए हैं तातैं वासठि उदय भए अर अवशेष छवीस एक सौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदयके अंश रहे । इहां द्वीप संबंधी अंतका सूर्य सूर्य विषै अंतराल पर्यंत आए । बहुरि अवशेष छवीस एकसौ सत्तरिवां भाग उदय अंश रहे थे तिनका योजन अंशरूप क्षेत्र करिए हैं । एक उदयका एकसौ सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र होइ तौ छवीस एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंशनिका केता क्षेत्र होइ । ऐसैं त्रैराशिक करि फल राशि इच्छा राशिकों गुणें छवीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया । ए द्वीप संबंधी योजन अंश अगले बिंब करि रोक्या हुवा क्षेत्रविषै देनां । बहुरि एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भागविषै एक उदय होय तौ च्यारि योजन प्रमाण वेदिका क्षेत्रविषै केता उदय होइ ऐसैं त्रैराशिक करि भागहारका भागहार इकसठि करि च्यारिकों गुणें दोयसै चवालीस भए । इनको एकसौ सत्तरि भागहारका भाग दिए एक उदय पाया अवशेष चहौत्तरिका एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंश रहे । इनको पूर्वोक्त न्याय करि क्षेत्ररूप किए चहौत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया इस विषै वाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र प्रहि पूर्वोक्त द्वीपका अंत अवशेष क्षेत्र छवीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण तिह विषै मिलाएं । अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्य बिंब करि रोक्या हुआ क्षेत्र संपूर्ण हो है । ऐसैं अभ्यंतर वीथी स्थिति सूर्य बिंबतैं चौसठिवां वीथीस्थित सूर्यबिंबका व्यास छवीस इकसठिवां भाग तौ द्वीप चार क्षेत्रके अर वाईस इकसठिवां भाग वेदिका चार क्षेत्रको मिलिकरि सिद्ध हो है । इहां चौसठिवां वीथी द्वीप अर वेदिकाकी संबिधिषै है ऐसा तात्पर्य जानना । ताके आगैं दोय योजनका अंतराल है, ताके आगैं सूर्यकरि रोक्या हुवा अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र है । तातैं परैं वाचन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र रखा सो आगिला दोय योजनका अंतराल-विषै देनां । ऐसैं द्वीप वेदिकाका संबिधिषै प्राप्त जो सूर्य बिंबका व्यास ताको प्राप्त भया वाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र तिहिस्यौं लगाइ वेदिकाका च्यारि योजन प्रमाण क्षेत्र समाप्त

भया । बहुरि लवण समुद्रविषै एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भागविषै एक उदय होइ तौ विंब रहित समुद्र चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन तिहविषै केते उदय होइ ऐसैं त्रैराशिक करि पाए उदय एकसौ अठारह । बहुरि अवशेष उदय अंश सत्तरि एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण इनका पूर्वाक्त प्रकार क्षेत्र किए सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया । इनिकां वेदिकासंबंधी अंतरालविषै प्राप्त बावन योजनका इकसठिवां भाग मिलाए भागहार इकसठिका भाग दिए दोय योजन प्रमाण अंतराल संपूर्ण हो है । बहुरि यातैं परैं रविबिंब सहित अंतर प्रमाणरूप दिन गतिशालका अंतका अंतरालपर्यंत एकसौ अठारह हैं ते सुगम हैं । तहां उदय भी एकसौ अठारह है । तातैं परैं बाह्य वीथीविषै तिष्ठता सूर्यबिंबका व्यासविषै एक उदय है । ऐसैं सर्व मिठि लवण समुद्रविषै एकसौ उगणीस उदय हैं । ऐसैं दक्षिणायनविषै एकसौ तियासी उदय जाननें । इहां ऐसा भावार्थ जाननां वीथीविषै तिष्ठता हुआ सूर्यका विंब प्रमाण जो क्षेत्र ताका नाम पथ व्यास है सो अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण है । अर वीथी वाथीनिकैं वीचि जितनां चार क्षेत्र विषै अंतराल ताका नाम अंतर है सो दोय योजन प्रमाण है । तहां एक सौ छिहत्तरि योजन प्रमाण द्वीप संबंधी चार क्षेत्रविषै प्रथम अभ्यंतर पथ व्यास है ताकै आगैं प्रथम अंतराल है । ताकै आगैं दूसरा पथव्यास है । ताकै आगैं दूसरा अंतराल हैं । ऐसैं ही क्रमतैं अंतविषै तेरसठिवां पथ व्यास अर ताके आगैं तेरसठिवां अंतराल हो है । अर ताकै आगैं छव्वीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रखा । बहुरि च्यारि योजन प्रमाण वेदिका संबंधी चार क्षेत्र हे तामैं बाईस योजनका इकसठिवां भाग काटि तिस द्वीप संबंधी अवशेष क्षेत्रविषै जोड़ैं चौसठिवां पथ व्यास हो है । चौसठिवां वीथी द्वीप अर वेदिकाकी संबिंधिषै है । बहुरि तिस पथ व्यासकै आगैं चौसठिवां अंतराल है ताके आगैं पैसठिवां पथव्यास है ताकै आगैं बावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र वेदिका चार क्षेत्रविषै अवशेष रखा । बहुरि पथ व्यास रहित समुद्र चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन प्रमाण है । तामैं सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग काटि वेदिका अवशेष क्षेत्रविषै जोड़ें पैसठिवां अंतराल हो है । बहुरि ताकै आगैं पथ व्यास है ताकै आगैं अंतर है । ऐसैंही क्रमतैं अंतविषै एकसौ तियासीवां पथ व्यास आगैं एकसौ तियासीवां अन्तराल हो है । बहुरि ताकै आगैं पथ व्यास प्रमाण अवशेष समुद्रचार क्षेत्रविषै एकसौ चौरासीवां पथ व्यास है । बहुरि इहां जहां पथ व्यास है तहां वीथी जाननी । एक एक वीथीविषै प्राप्त होइ सूर्यका दृष्टिविषै आवनां ताका नाम उदय जाननां । ऐसैं एकसौ चौरासी वीथीनिविषै एकसौ चौरासी उदय भए । तहां उत्तरायणस्यौ आवता आवता सूर्य अभ्यन्तर वीथीविषै आवै सो वह उत्तरायणविषै गिनि लिया अर लगता ही दूसरो बार तहां उदय होइ नाही तातैं दक्षिणायणविषै नाही गिना ऐसैं करि एकसौ तियासी उदय जाननें । आगैं उत्तरायणविषै कहिए है—लवण समुद्रविषै रविबिंब सहित चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है ताका समच्छेद करि जोड़े बीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ $\frac{20900}{69}$ बहुरि एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग क्षेत्रकी एक दिनगतिशालका होइ तौ बीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भागकी केती होइ ऐसैं त्रैराशिक किए एकसौ

अठारह दिनगतिशलाका होइ । अर एकसौ अठारहका एकसौ सत्तरिवां भाग अवशेष रहै इहां एक घाटि दिन गति शलाका प्रमाण उदय एकसौ सत्तरह है । काहे ते ? जातैं बाह्य पथ संबंधी उदय दक्षिणायण संबंधी है सो इहां न गिन्यां ! बहुरि अवशेष एकसौ अठारहका एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंशनिका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किणं एकसौ अठारह योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रखा, तिसविषै अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण तौ अगिला पथ व्यासविषै देना, तहां पथ व्यासविषै एक उदय है । अर पूर्वे एकसौ सत्तरह उदय मिलि उत्तरायणविषै समस्त उदय लवण समुद्रविषै एकसौ अठारह हो हैं । बहुरि अवशेष सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र लवण समुद्रविषै रखा सो अगिला अन्तरविषै देनां ऐसैं समुद्र चार क्षेत्र समाप्त भया । बहुरि च्यारि योजन प्रमाण वेदिका क्षेत्रविषै पूर्वोक्त प्रकार त्रैराशिक करि ल्यायं एक उदय हो है । और अवशेष चहौत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र रहें हैं । तिहविषै बावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्रको समुद्रका अवशेष क्षेत्र विषै मिलाएं दाय योजन प्रमाण अन्तर संपूर्ण हो है । इस अन्तरतैं आगैं एक दिनगतिविषै एक उदय होइ आगैं अवशेष बाईस योजनका इकसठिवां भाग रखा सो आगिला पथ व्यासविषै देनां । ऐसैं च्यारि योजन प्रमाण वेदिका क्षेत्र भी समाप्त भया । आगैं वेदिका रहित द्वीप चार क्षेत्र एकसौ छिहत्तरि योजन प्रमाण तामैं अभ्यन्तर पथ व्यास अठतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण समछेद करि घटाएं दश हजार छ सैं अठ्यासीका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ । $\frac{10000}{49}$ बहुरि एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग क्षेत्रकी एक दिनगति शलाका होइ तौ दश हजार छसैं अठ्यासीका इकसठिवां भागकी केती दिन गति शलाका होइ ऐसैं त्रैराशिक किणं बासठि दिनगतिशलाका पावै, सो इतनांही उदय जाननां । अर अवशेष एक सा अठतालीसका एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंश रहैं । इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किणं एकसौ अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ तीहविषै छत्रीस योजनका इकसठिवां भागमात्र क्षेत्र तौ वेदिका अर द्वीपकी संधिविषै पथ व्यास है तहां देनां तव सा पथ व्यास संपूर्ण होइ अवशेष एकसौ बाईसका इकसठिवां भागहार करि भाजिए तव दाय योजन पाए सो संधि पथव्यासक आगैं अंतरालविषै देना । बहुरि तातैं परैं बासठि दिनगतिशलाका हैं तहां तितनेही उदय हैं । आगैं अभ्यन्तर पथ व्यासविषै एक एक उदय है ऐसैं वेदिकारहित द्वीपचार क्षेत्रविषै संधि उदय सहित चौंसठि उदय हो हैं । ऐसैं मिलि करि उत्तरायणविषै सूर्यके एकसौ तियासी उदय जाननें । इहां ऐसा भावार्थ जाननां । अंतरका वा पथ व्यासका स्वरूप प्रमाण पूर्वे कह्या था तहां लवण समुद्रका चार क्षेत्रविषै प्रथम पथव्यास है । आगैं अंतराल है ताके आगैं पथ व्यास है । ऐसैंही क्रमतैं एकसौ अठारहका अंतरालके आगैं एकसौ उगणीसवां पथ व्यास है अवशेष सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र रहैं है । बहुरि वेदिकाका चार क्षेत्रविषै बावन योजनका इकसठिवां भाग ग्रहि तामैं मिलाएं समुद्र वेदिकाकी संधिविषै एकसौ उगणीसवां अंतराल हो है, ताके आगैं एकसौ बीसवां पथव्यास

है । आगै एकसौ वीसवां अंतराल है ताकै आगै बाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रहै है । बहुरि द्वीप चार क्षेत्रविषै छवीस योजनका इकसठिवां भाग ग्रहि तामै मिलाएँ एकसौ इकईसवां पथव्यास हो है । ताकै आगै एकसौ इकईसवां अंतर है ऐसै क्रमतै अंतविषै एकसौ तियासीवां अंतरके आगै एकसौ चौरासीवां पथव्यास है तहां एकसौ चौरासी पथव्यास प्रमाण उदयनिविषै बाह्य वीथीका उदय पूर्व दक्षिणायण विषै गिनिएँ हैं । अर लगता तहां उदय न हो है तातै समुद्रका आदि उदय घटाएँ उत्तरायणविषै सूर्यके उदय एकसौ तियासी ऐसै जाननें । उदयादिकका स्वरूप पूर्वोक्त कहाही था । बहुरि चंद्रमाका भी अयन भेद किएँ विना द्वीप चार क्षेत्र १८० विषै पांच उदय अर समुद्र चार क्षेत्र ३३०। $\frac{1}{4}$ विषै दश उदय हैं । मिलि करि पंद्रह उदय हो हैं । आगै दक्षिणायणविषै कहै हैं । पथवासपिंडहाणे इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रकरि चंद्रमाका दिनगति क्षेत्र पंद्रह हजार पांचसै इकावन योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण है सो इतनां $1^{\frac{1}{4}}$ क्षेत्रविषै जो एक उदय होय तौ एकसौ अस्सी योजन प्रमाण द्वीप चार क्षेत्रविषै कितनें उदय होहि ऐसै त्रैराशिक किएँ च्यारि उदय पाएँ । बहुरि अवशेष चौदह हजार छसै छप्पनका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भाग प्रमाण उदय अंश रहे । बहुरि एक उदयका पंद्रह हजार पांचसै इकावनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र होइ तौ चौदह हजार छसै छप्पनका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भाग प्रमाण उदय अंशानिका केता क्षेत्र होइ ऐसै त्रैराशिक करि तिर्यग फलराशिके भाज्य करि इच्छाराशिके भागका अपवर्तन किएँ चौदह हजार छसै छप्पन योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रखा । बहुरि चंद्रमाका पथ व्यासका प्रमाण छप्पन योजनका इकसठिवां भाग ताका सात करि समच्छेद किएँ तीनसै बाणवै योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण भया सो इतनां तिस अवशेष क्षेत्रविषै ग्रहि अगिला पथ व्यासविषै दैनां । तहां उदय एक, ऐसै जंबूद्वीप विषै पांचसै उदय हैं तिनविषै अभ्यन्तर पथका उदय उत्तरायण संबंधी है तातै ताका न ग्रहण करनैतौ द्वीपविषै च्यारि उदय हैं । द्वीप चार क्षेत्रविषै अवशेष चौदह हजार दोयसै चौसठिका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र रखा । सो यहू भागहारका भाग दिएँ तेतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र है । सो याको अगले अंतरालविषै दैनां । आगै समुद्रविषै चारक्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण है । ताको समच्छेदकरि मिलाएँ वीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भागप्रमाण भया । सो पंद्रह हजार पांचसै इकावन योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्रविषै एक उदय होइ तौ वीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्रविषै कितनें उदय होहि । ऐसै त्रैराशिक किएँ इकसठिकरि अपवर्तन करि सातकरि गुणे लब्धराशि एक लाख इकतालीस हजार दोयसै छियालीसका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण आय सो भागहारका भाग दिएँ नव उदय पाएँ अर अवशेष बारहसै सित्यासीका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण उदयअंश रहे इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किएँ बारहसै सित्यासी योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रखा । यामै

सौ चन्द्रबिंबका प्रमाण छप्पन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण ताको सातकरि समछेद किए तीनसै बाणवैका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण ग्रहिकरि बाह्यपथविषै देना । तहां एक उदय ऐसै लवण समुद्रविषै दश उदय हैं । बहुरि अवशेष आठसै पिच्याणवै योजनका च्यारिसै सत्ता-ईसवां भागप्रमाण क्षेत्र रखा सो अपनां भागहारका भाग दिए दोग योजन अर इकतालीसका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र भया सो याको द्वीपविषै अवशेष तेतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्रविषै जोड़े पैतीस योजन अर दोगसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण पांचवां अंतराल संपूर्ण हो है । ऐसै चन्द्रमाका दक्षिणायनविषै द्वीप समुद्रका मिलि चौदह उदय हो है । इहां ऐसा भावार्थ जाननां । चन्द्रमाका चार क्षेत्रविषै पंद्रह वीथी हैं तिनविषै चन्द्रमाका दृष्टिविषै आवनां सोई उदय है । तहां वाथीनिविषै जहां चन्द्रबिंब छप्पन योजनका इकसठिवां भागप्रमाण क्षेत्र रोके ताका नाम पथव्यास है । बहुरि वीथीनिके वीचि वीचि पैतीस योजन अर दोगसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण जो अंतराल ताका नाम अंतर है । दोऊनिकौं मिलाएं पंद्रह हजार पांचसै इकावनका च्यारिसै सत्ता-ईसवां भागप्रमाण दिनगति क्षेत्र हो है । तहां द्वीपसंबंधी एकसौ असी योजन प्रमाण चारक्षे-प्रविषै प्रथम अभ्यन्तर वीथी है तहां पथ व्यास प्रमाण क्षेत्र है । ताके आगै प्रथम अंतर है ताके आगै दूसरा पथव्यास है । ऐसै क्रमते चौथा अंतरके आगै पांचवां पथ व्यास है ताके आगै द्वीपचार क्षेत्रविषै तेतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र अव-शेष रहै है । बहुरि लवण समुद्रका चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीसका इकसठिवां भागप्रमाण तिहविषै दोग योजन अर दोगसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्रद्वीप अवशेष क्षेत्रविषै जोड़े । द्वीप अर समुद्रकी संधिविषै पांचवां अंतराल हो है । ताके आगै छठा पथ व्यास है । ताके आगै छठा अंतराल है । ऐसे क्रमते अंतविषै चौदहवां अंतरालके आगै पंद्रहवां बाह्य पथ व्यास है । इन पंद्रह पथ व्यासनिविषै जे पंद्रह उदय तिनविषै द्वीप चार क्षेत्रविषै पहला अभ्यन्तर वीथीका उदय उत्तरायण संबंधी है । ताते चंद्रमाके दक्षिणायणविषै ऐसै चौदह उदय जानने । आगै उत्तरायणविषै कहै हैं । समुद्रका चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीसका इकसठिवां भागप्रमाण है । तहां पूर्वोक्त प्रकार करि ल्याएं नव उदय आए । अर अवशेष उदय असं बारहसै सित्यासीका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण रहे इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किए बारहसै सित्यासी योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण हो है । बहुरि यामे चंद्रबिंबका प्रमाण छप्पन योजनका इकसठिवां भाग मात्र ताका सात करि समछेद किए तीनसै बाणवैका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण ताको ग्रहि करि बाह्य पथतै लगाय नवमां अंतरालके आगै जो पथ व्यास तामै देना वा तहां एक उदय ऐसे समुद्रविषै दस उदय भए इनविषै बाह्य पथका उदय दक्षिणायण संबंधी ही है । ताते ताका ग्रहण न करना ऐसे नव उदय रहे ! बहुरि समुद्र चार क्षेत्रविषै अवशेष होय योजन अर इकतालीसका च्यारिसै सत्ताई-सवां भागप्रमाण क्षेत्र रखा सो दशवां अंतरालविषै देनां । ऐसे किए समुद्रका चार क्षेत्र समाप्त भया ।

आगै द्वीप चार क्षेत्रविषै पूर्वोक्त प्रकार उदय च्यारि अर अवशेष चौदह हजार छसै छप्पनका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण उदय अंश रहे इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किए चौदह हजार छसै छप्पनका च्यारिसै सत्ताईस योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण होइ यामें प्रतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागका समछेद किए चौदह हजार दोयसै चौसठिका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग होइ सो ग्रहि करि दशवां अंतरालविषै देना । ऐसै पैतीसै योजन अर दोयसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण दशवां अंतरालसंपूर्ण हो है । बहुरि अव शेष तीनसै बाणवें योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण रखा । ताकौ सात करि अपवर्तन किए छप्पनका इकसठिवां भागप्रमाण होइ सो यहु अभ्यन्तर पथ व्यासविषै देना । इसविषै एक उदय ऐसै द्वीपविषै चंद्रमाका उत्तरायणविषै पांच उदय हैं इहां ऐसा भावार्थ जानना । चंद्रमाका पथव्यास अंतरादिकका स्वरूप प्रमाणतौ पूर्वोक्त जानना तहां लवण समुद्रका चार क्षेत्रविषै प्रथम बाह्य पथ व्यास है । ताकै अभ्यंतरवर्ती आगै आगै प्रथम अंतर है । ताकै आगै द्वितीय पथ व्यास है । ताकै आगै द्वितीय अंतर है । ऐसै क्रमतै नवमां अंतरकै आगै दशवां पथ व्यास है । ताकै आगै दोय योजन अर इकतालीसका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रखा । बहुरि आगै द्वीप चार क्षेत्रविषै तेतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र ग्रहि अर समुद्रका अवशेष क्षेत्र ग्रहि दशवां अंतरालको दीएं समुद्र अर द्वीपकी संघिविषै दशवां अंतराल संपूर्ण हो है । ताकै आगै ग्यारव्हां पथ व्यास है ताकै आगै ग्यारव्हां अंतराल है । ऐसै क्रमतै अंतविषै चौदहवां अंतकै आगै पंद्रहवां अभ्यंतर पथ व्यास है । ऐसै इन पंद्रह पथ व्यासनिविषै पंद्रह उदय हैं । तिनिविषै समुद्रसंबंधी प्रथम व्यासविषै जो उदय है सो दक्षिणायन संबंधीही है । जातै लगता दूसरीवार तहां उदय न हो है तातै चंद्रमाका उत्तरायणविषै नव समुद्रविषै पांच द्वीप विषै ऐसै चौदह उदय जानने बहुरि इहां सूर्य व चन्द्रमाका उत्तरायणविषै उदयका विभाग मूल सूत्र कर्त्तान कहा । तथापि दक्षिणायणका उदय मार्ग करि टीकाकार विचार करि कहा है ॥३९६॥

अव दक्षिण उत्तर ऊर्द्ध अधविषै सूर्यके आतापका क्षेत्र विभाग कहै है;—

मन्दरगिरिमज्जादो जावय लवणुवहिल्लभगो दु ।

हेट्टा अद्वरससया उवरिं सयजांयणा ताओ ॥ ३९७ ॥

मंदरगिरिमध्यात् यावत् लवणोदधिषष्ठभागस्तु ।

अधस्तनो अष्टादशशतानि उपरि शतयोजनानि तापः ॥ ३९७ ॥

अर्थ—मेरुगिरिके मध्यतै लगाय यावत् लवण समुद्रका छठा भागपर्यंत सूर्यका आताप फैले है । ताका उदाहरण अभ्यन्तर वीथीविषै तिष्ठता सूर्यकी अपेक्षा कहिए है । जब्द्वीपका आधा क्षेत्र पचास हजार योजन तामें द्वीप चार क्षेत्र एकसौ अस्सी योजन घटाएं गुणचास हजार आठसै वीस योजन प्रमाण तौ मेरु गिरिके मध्यतै लगाय अभ्यन्तर वीथी पर्यंत उत्तर दिशा विषै आताप फैले है । बहुरि लवण समुद्रका व्यास दोय लाख योजन ताका छटां भाग तेतीस हजार तीनसै

तेतीस योजन अर एकका तीसरा भाग प्रमाण यामैं द्वीप चार क्षेत्र एकसौ अस्सी योजन मिलाएं तेतीस हजार पांचसै तेरह योजन अर एकका तीसरा भाग प्रमाण अभ्यंतर वीथीतैं लगाय लवण समुद्रका छठा भाग पर्यंत दक्षिण दिशाविपै आताप फैले है । बहुरि अैसेही अन्य वीथीनिविपै भी जाननां । बहुरि सूर्य विवतैं नीचे अठारहसै योजन पर्यंत अधः दिशा विपै आताप फैले है । **भावार्थ**—सूर्यबिंबतैं नीचे आठसै योजन तौ समभूमि है अर तातैं नीचे हजार योजन पर्यंत चित्रा पृथ्वी है तहां पर्यंत सूर्यका आताप फैले है । बहुरि सूर्य बिंबतैं ऊपरि सौ योजन पर्यंत ऊर्द्ध दिशाविपै आताप फैले है । **भावार्थ**—सूर्यबिंबतैं ऊपरि सौ १०० योजनपर्यंत ज्योतिर्लोक है तहांपर्यंत सूर्यका आताप फैले है । अैसे परिधिनि विपै तो आताप फैलनेका प्रमाण पूर्वं कह्या था इहां दक्षिण उत्तर ऊर्द्ध अधः दिशा विपै आताप फैलनेका प्रमाण कह्या ॥ ३९७ ॥

आगैं चंद्रमा सूर्य ग्रह इनकैं नक्षत्र भुक्तिके प्रतिपादन करनैं कौ चाहता आचार्य सो प्रथम एक एक नक्षत्र संबंधी मर्यादारूप गगन खंडनिकों कहैं है;—

अभिजिस्स गगणखंडा छस्सयतीसं च अवरमज्झवरे ।

छप्पण्णरसे छक्के इगिदुत्तिगुणपणयुतसहस्सा ॥ ३९८ ॥

अभिजितः गगनखंडानि पट्शतत्रिंशत् च अवरमध्यवराणि ।

पट्पंचदशे पट्के एकद्वित्रिगुणपंचयुतसहस्राणि ॥ ३९८ ॥

अर्थ—अभिजित नक्षत्रके गगनखंड छसै तीस हैं । बहुरि जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र क्रम-तैं छह पंद्रह छह प्रमाणकौ थरै तिनके एक दोय तीन गुणां पांच संयुक्त एक हजार प्रमाण गगन खंड हैं । **भावार्थ**—परिधिरूप जो गगन कहिए आकाश ताके एक लाख नव हजार आठसै खंड करिए तामें एक चंद्रमा संबंधी अभिजित नक्षत्रके छसै तीस गगन खंड है । छसै तीस खंड प्रमाण परिधि रूप आकाश क्षेत्र विपै अभिजित नक्षत्रकी सीमा मर्यादा है । बहुरि ऐसैं ही छह जघन्य नक्षत्र तिन एक एकके एक हजार पांच गगन खंड हैं । बहुरि पंद्रह मध्य नक्षत्र तिन एक एकके दोय हजार दश गगन खंड हैं । बहुरि छह उत्कृष्ट नक्षत्र तिन एक एकके तीन हजार पंद्रह गगन खंड हैं । बहुरि इतने इतनेही दूसरा चंद्रमा संबंधी हैं । इहां नक्षत्रनिके जघन्य मध्य उत्कृष्टपना गगन खंडनिका थोडा बहुत अति बहुतकी अपेक्षा कह्या है स्वरूपादिक अपेक्षा नाहीं कह्या है ॥ ३९८ ॥

आगैं तिन जघन्य मध्यम उत्कृष्ट नक्षत्रनिकों दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

सदभिस भरणी अद्दा सादी असिलेस्स जेट्टमवर वरा ।

रोहिणि विसाह पुणव्वसु तिउत्तरा मज्झिमा सेसा ॥ ३९९ ॥

शतभिषा भरणी आर्द्रा स्वातिः आश्लेषा ज्येष्ठा अवराणि वराणि ।

रोहिणी विशाखा पुनर्वसुः त्र्युत्तराः मध्यमा शेषाः ॥ ३९९ ॥

अर्थ—शतभिषक कहिए शतभिषा १ भरणी १ आर्द्रा १ स्वाति १ आश्लेषा १ ज्येष्ठा १ ए छह जघन्य नक्षत्र हैं । बहुरि रोहणी १ विशाखा १ पुनर्वसु १ उत्तरा कहिए उत्तरा फाल्गुनी १ उत्तरोषाढा १ उत्तरा भाद्रपदा ए छह उत्कृष्ट नक्षत्र हैं । बहुरि अवशेष नक्षत्र मध्यम हैं ॥ ३९९ ॥

ते अवशेष कौन सो कहैं हैं;—

अस्सिणि किच्चिय मियसिर पुस्स महा हत्थ चित्त अनुराहा ।

पुच्चातिय मूल सवणा सधणिट्ठा रेवदी य मज्झिमया ॥ ४०० ॥

आश्विनी कृतिका मृगशीर्षा पुष्यः मघा हस्तः चित्रा अनुराधा ।

पूर्वत्रिका मूल श्रवणं सधनिष्ठा रेवती च मध्यमाः ॥ ४०० ॥

अर्थ—अश्विनी १ कृतिका १ मृगशीर्षा १ पुष्य १ मघा १ हस्त १ चित्रा १ अनुराधा १ पूर्वत्रिका कहिए पूर्वा फाल्गुनी १ पूर्वाषाढा १ पूर्वाभाद्रपदा १ मूल १ श्रवण १ धनिष्ठा १ रेवती १ ए पंद्रह मध्यम नक्षत्र हैं ॥ ४०० ॥

आगै कहे जु ए गगन खंड तिनको इकट्ठे करि चंद्रमा सूर्य नक्षत्रनिकी परिधिविषै भ्रमण कालका प्रमाण कहैं हैं;—

दोचंदाणं मिल्लिदे अट्टसयं णवसहस्समिगिलक्खं ।

सगसगमुहुत्तगदिणभखंडहिदे परिधिगमुहुत्ता ॥ ४०१ ॥

द्विचंद्रयोः मिलिते अष्टशतं नवसहस्रं एकलक्षं ।

स्वकस्वकमुहूर्तगतिनभःखंडहिते परिधिमुहूर्ताः ॥ ४०१ ॥

अर्थ—दोय चंद्रमानिके मिलाए हुए आठसै सहित नव हजार अधिक एक लाख गगन खंड हो हैं । कैसैं १ जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका गगन खंड क्रमतैं एक हजार पांच दो हजार दश तीन हजार पंद्रह इनको अपने नक्षत्र प्रमाण छह पंद्रह छह करि गुणें जघन्य नक्षत्रनिके छह हजार तीस मध्य नक्षत्रनिके तीस हजार एकसौ पचास, उत्कृष्ट नक्षत्रनिके अठारह हजार निवै गगन खंड हो हैं । ए खंड अर छसै तीस अभिजितके खंड मिलाए चौवन हजार नवसै भए । बहुरि एक परिधि विषै दोय चंद्रमा हैं । तातैं तिनको दूणां करि मिलाइए तव एक लाख नव हजार आठसै गगन खंड परिधि विषै हो है । बहुरि इन गगन खंडनिको अपनां अपनां एक मुहूर्त विषै गमन प्रमाण जे गगन खंड तिनका भाग दिए परिधि विषै भ्रमणकालका प्रमाण आवै है । कैसैं सो कहिए है । चंद्रमा सतरहसै अडसठि गगन खंडनिविषै एक मुहूर्त करि गमन करै तौ एक लाख नव हजार आठसै गगन खंडनि विषै केते मुहूर्तनिकरि गमन करै ऐसैं त्रैराशिक किएं चंद्रमाका परिधि विषै भ्रमण करनेका काल वासठि मुहूर्त आए, अर एकसौ चौरासिका सतरहसै अडसठिवां भागका आठ करि अपवर्तन किएं तेईस मुहूर्तका दोयसै इकईसवां भाग आया । बहुरि याही प्रकार सूर्य अठारहसै तीस गगन खंडनिविषै एक मुहूर्त करि गमन करै तौ एक लाख नव हजार आठसै गगन खंडनि विषै केते मुहूर्तनि करि गमन करै ऐसैं त्रैराशिक किएं सूर्यका परिधि विषै भ्रमण करनेका काल साठि मुहूर्त आवै है । बहुरि नक्षत्र अठारहसै पैतीस गगनखंडनिविषै एक मुहूर्त करि गमन करै तौ एक लाख नव हजार आठसै गगनखंडनिविषै केते मुहूर्तनि करि गमन करै ऐसैं त्रैराशिक किएं नक्षत्रनिका परिधि विषै भ्रमण करनेका काल गुणसठि तौ मुहूर्त आए अर अवशेष पंद्रहसै पैतीसका अठारहसै पैतीसवां भाग ताका पांच करि अपवर्तन किएं तीनसैं सात मुहूर्तनिका तीनसैं सतस-

ठिवां भाग आया । या प्रकार एक वार संपूर्ण एक परिधिभिषै भ्रमण करनेका काल प्रमाण कहा ॥ ४०१ ॥

आगै सो एक मुहूर्त्त करि अपनां अपनां गगन खंडनिविषै गमन करनेका प्रमाण कहा सो कहै हैं;—

अट्टट्टी सत्तरसयमिंदू वावट्टि पंचअहियकर्म ।

गच्छंति सूररिक्खा णभखंडाणिगिमुहुत्तेण ॥ ४०२ ॥

अष्टषष्टिः सप्तदशशतं इंदुः द्वाषष्टिः पंचाधिकक्रमाणि ।

गच्छंति सूर्यऋक्षाणि नभःखंडानि एकमुहूर्त्तेन ॥ ४०२ ॥

अर्थ—अडसठि अधिक सतरहसै १७६८ गगन खंडनिकौ चंद्रमा एक मुहूर्त्त करि गमन करै है । बहुरि तिनतै वासठि अधिक ताका अठारहसै तीस गगन खंडनिकौ सूर्य अर इनतै पांच अधिक ताका अठारहसै पैतीस गगन खंडनिकौ नक्षत्र एक मुहूर्त्त करि गमन करै हैं ॥ ४०२ ॥

आगै चंद्रमादि तारापर्यंत ज्योतिर्षानिकै गमन विशेषका स्वरूप कहै हैं;—

चंदो मंदो गमणे सूरु सिग्घो तदो गहा तत्तो ।

तत्तो रिक्खा सिग्घा सिग्घयरा तारया तत्तो ॥ ४०३ ॥

चंद्रो मंदो गमने सूरः शीघ्रः ततो प्रहाः ततः ।

ततः ऋक्षाणि शीघ्राणि शीघ्रतराः तारकाः ततः ॥ ४०३ ॥

अर्थ—सर्वतै गमनविषै चंद्रमा मंद है मंद गमन करै है । तातै सूर्य शीघ्र गमन करै है । तातै ग्रह शीघ्र गमन करै हैं, तातै नक्षत्र शीघ्र गमन करै हैं, तातै अतिशीघ्र तारे गमन करै हैं ॥ ४०३ ॥

आगै अब चंद्रमा सूर्यकै नक्षत्र मुक्तिकौ कहै हैं;—

इंदुरवीदो रिक्खा सत्तट्टी पंच गगणखंडहिया ।

अहियहिदरिक्खखंडा रिक्खे इंदुरविअत्थणमुहुत्ता ॥ ४०४ ॥

इंदुरवितः ऋक्षाणि सप्तषष्टिः पंच गगनखंडाधिकानि ।

अधिकहितऋक्षखंडानि ऋक्षे इंदुरविअस्तमनमुहूर्ताः ॥ ४०४ ॥

अर्थ—चंद्रमा सूर्यके गगन खंडनितै क्रमतै सडसठि अर पांच गगन खंड अधिक नक्षत्रनिकै एक मुहूर्त्त करि गमन अपेक्षा गगन खंड है । सो इस अधिकका भाग अपने अपने नक्षत्र खंडनिकौ दिएं नक्षत्र अर चंद्र वा सूर्यका आसन्न मुहूर्त्तनिका प्रमाण आवै है । सो कहिए हैं । एक ही वार चंद्रमा अर नक्षत्र साथि गमनका प्रारंभ किया तहां एक मुहूर्त्तविषै चंद्रमा तौ सतरहसै अडसठि गगन खंडनि प्रति गमन किया अर नक्षत्र अठारहसै पैतीस गगन खंडनि प्रति गमन किया । तहां चंद्रमा नक्षत्रतै सतसठि गगन खंड पीछे रखा । तहां अभिजित नक्षत्र अर चंद्रमा दोऊ साथि गमनका प्रारंभ करि एक मुहूर्त्तविषै अभिजिततै चंद्रमा सतसठि गगन खंड पीछे रखा । बहुरि दूसरा मुहूर्त्तविषै और सतसठि गगन खंड पीछे रखा । ऐसै पीछे रहता रहता जितने काल करि

छसै तीस अभिजितके सूर्य खंडनिकों छोड़ि पीछें रहैं तितनां काल अभिजित नक्षत्र अर चंद्र-माका आसन्न मुहूर्त कहिए। सो सड़सठि अधिक खंडनिके पीछें छोड़नेमें एक एक मुहूर्त होइ तौ छसै तीस अभिजित खंडनिके पीछें छोड़नेमें केते मुहूर्त होइ। ऐसैं त्रैराशिक करि अधिक प्रमाण सतसठिका भाग अपने छसै तीस खंडनिकों दिएं लब्ध राशि नव मुहूर्त अर सत्ताईसका सतसठिवां भाग मात्र अभिजित अर चंद्रमाका आसन्न मुहूर्तका प्रमाण आया। इतने काल चंद्रमा अभिजित संबंधी गगन खंडनिके निकट वर्ती रहै है। तातैं आसन्न मुहूर्त कहिए। बहुरि इस आसन्न मुहूर्त काल ही विपै नक्षत्र भुक्ति कहिए। यावत्काल चंद्रमा अभिजित संबंधी गगन खंडनिके समीपवती रहै तावत्काल चंद्रमाके अभिजित नक्षत्रका भोगवनां कहिए। बहुरि इस ही कालविपै योग कहिए यावत्काल चंद्रमा अर अभिजित संबंधी गगन खंडनिका संयोग रहै तावत्काल चंद्रमा अर अभिजितका योग कहिए। बहुरि याही प्रकार अधिक प्रमाण सतसठिका भाग जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिके क्रमतैं एक हजार पांच दौय हजार दस तीन हजार पंद्रह गगन खंडनिकों दिएं जघन्य नक्षत्रनिका पंद्रह मुहूर्त मध्य नक्षत्रनिका तीस मुहूर्त उत्कृष्टनिका पैतालीस मुहूर्त मात्र आसन्न मुहूर्त हो है। बहुरि तीस मुहूर्तका एक दिन होइ तौ पंद्रह आदि मुहूर्तनिका केता होइ ऐसैं करि पंद्रहका अपवर्तन किएं जघन्य नक्षत्रनिका आधा दिन ३ मध्यम नक्षत्रनिका एक दिन १ उत्कृष्ट नक्षत्रनिका ज्योढ़ दिन ३ प्रमाण चंद्रमाके नक्षत्र भुक्ति काल हो है। बहुरि याही प्रकार अधिक प्रमाण पांचका भाग अपने अपने नक्षत्र संबंधी गगन खंडनिकों दिएं दिनादिक किएं सूर्यके अभिजितका च्यारि दिन छह मुहूर्त जघन्य नक्षत्रका छहदिन इकईस मुहूर्त मध्यम नक्षत्रका तेरह दिन बारह मुहूर्त उत्कृष्ट नक्षत्रका बीस दिन तीन मुहूर्त प्रमाण नक्षत्र भुक्तिका काल जाननां ॥ ४०४ ॥

आगैं राहुका गगन खंड कहि करि ताकै नक्षत्र भुक्ति कहैं हैं;—

रविखंडादो बारसभागुणं वज्जदे जदो राहु ।

तस्मा ततो रिक्खा बारहिदिगिसट्टिखंडहिया ॥ ४०५ ॥

रविखंडतः द्वादशभागोनं व्रजति यतो राहुः ।

तस्मात्ततः ऋक्षाणि द्वादशहितैकपष्टिखंडाधिकानि ॥ ४०५ ॥

अर्थ—जातैं सूर्यके खंडनितैं एकका बारह्वां भाग घाटि राहु गमन करै है। सूर्यका अठारहसै तीस गगन खंडनविषै एकका बारह्वां भाग घटाएं अठारहसै गुणतीस गगन खंड अर ग्यारहका बारह्वां भाग मात्र राहुके एक मुहूर्त विषै गमन करनेका प्रमाण हो है। इततैं इकसठिका बारह्वां भाग अधिक नक्षत्रनिके गमन करनेका प्रमाण हो है। कैसैं इतनां अधिक हो है? राहुका गगन खंड १८२९ १/३ नक्षत्रका गगन खंड १८३५ मैस्यो घटाएं ग्यारहका बारह्वां भाग घाटि छह खंड भए। तहां छहका बारहकर समछेद करि ६३ अर तामें ग्यारहका बारह्वां भाग घटाएं इकसठिका बारह्वां भाग अधिकका प्रमाण हो है। बहुरि अहियहिदरिक्खखंडे इस सूत्रके न्यायकरि अधिकका भाग अपने २ नक्षत्र खंडनिकों दिएं राहुके नक्षत्र भुक्तिका काल

आवै है । तहां इकसठिका बारह्वां भाग छोड़नें विषै एक मुहूर्त्त होइ तौ छसै तीस अभिजित खंड-
निके छोड़नें विषै केते मुहूर्त्त होइ ऐसै छसै तीसकों इकसठिका बारह्वां भागका भाग दैनां तहां
भागहारका भागहार बारह ताकों छसै तीसका गुणकार करि ताकों इकसठिका भाग दैनां ६३० । ६९
बहुरि इनकों तीसका भाग देइ दिन करनें ६३० । ३० बहुरि इहां बारहकों तीस सहित छह करि
अपवर्त्तन करनां ६३० । ५ बहुरि छसै तीसकों पांच करि अपवर्त्तन करनां १२६ । २ याकों अपनें
गुणकार करि गुणें ३५२ भाग हारका भाग दिएं च्यारि दिन अर आठका इकसठिवां भाग प्रमाण
राहुके अभिजित् नक्षत्रका भुक्तिका काल है । याही प्रकार राहुके जघन्य नक्षत्रका छह दिन अर
छतीसका इकसठिवां भाग मध्य नक्षत्रका तेरह दिन अर ग्यारहका इकसठिवां भाग उत्कृष्ट नक्षत्रका
उगणीस दिन अर सैंतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति काल जाननां ॥ ४०५ ॥

आगै अन्य प्रकार करि राहुके नक्षत्र भुक्तिकौ कहै हैं;—

णक्खत्तसूरजोगजमुहुत्तरासिं दुबेहि संगुणिय ।

एकट्टिहिदे दिवसा हवंति णक्खत्तराहुजोगस्स ॥ ४०६ ॥

नक्षत्रसूरयोगजमुहूर्तराशिं द्वाभ्यां संगुण्य ।

एकषष्टिहिते दिवसा भवंति नक्षत्रराहुयोगस्य ॥ ४०६ ॥

अर्थ—नक्षत्र अर सूर्यका योग करि उत्पन्न जो मुहूर्त्तनिका प्रमाण रूप राशि ताकों दोय
करि गुणि इकसठिका भाग दिएं जो प्रमाण आवै तितनें नक्षत्र अर राहुके योगविषै दिननिका प्रमाण
जाननां । तहां सूर्यके अभिजित नक्षत्रका भुक्तिकाल च्यारि दिन छह मुहूर्त्त है । दिननिकौ तीस
गुणां करि मुहूर्त्त किएं सर्व एकसौ छबीस मुहूर्त्त भए । इनकों दोय करि गुणें दोयसै बावन भए ।
इनकों इकसठिका भाग दिएं च्यारि अर आठका इकसठिवां भाग आया । सोई राहुके अभिजित
नक्षत्रका भुक्तिकाल च्यारि दिन अर आठका इकसठिवां भाग प्रमाण है । ऐसैही अन्य नक्षत्रनिका
भी विधान करनां ॥ ४०६ ॥

आगै एक अयन विषै नक्षत्र भुक्ति सहित वा रहित जे दिन तिनकों कहै हैं;—

अभिजादि तिसीदिसयं उत्तरअयणस्स होंति दिवसाणि ।

अधिकदिणाणं तिण्णि य गददिवसा होंति इगि अयणे ॥ ४०७ ॥

अभिजिदादि त्र्यशीतिशतं उत्तरायणस्य भवंति दिवसानि ।

अधिकदिनानां त्रीणि च गतदिवसानि भवंति एकस्मिन् अयने ॥ ४०७ ॥

अर्थ—अभिजितकों आदि दै करि पुष्य पर्यंत जे जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र तिनके एक
सौ तियासी दिन उत्तरायणके हो हैं । बहुरि इन्तै अधिक दिन तीन एक अयन विषै गत दिवस
हो हैं ॥ ४०७ ॥

आगै अधिक दिननिकी उत्पत्तिकौ कहै हैं;—

एकपहलंघणं पडि यदि दिवसिगिसट्टिभागमुवलद्धं ।

किं तेसीदिसदस्सिदि गुणिदे ते होंति अहियदिणा ॥ ४०८ ॥

एकपथलघनं प्रति यदि दिवसैकपष्टिभागं उपलब्धं ।

किं त्र्यशीतिशतस्येति गुणिते ते भवन्ति अधिकादिनानि ॥ ४०८ ॥

अर्थ—वीथी रूप जो एक सूर्यका मार्ग ताका उल्लघन प्रति जो एक दिनका इकसठि वं भाग पावै तौ एक सौ तियासी मार्गनिका उल्लघन प्रति केते दिवस पावै ऐसैं त्रैराशिक करि तह इकसठि करि अपवर्त्तन करि गुणें अधिक दिन तीन हो हैं । बहुरि एक अयन विषै एक सौ तियासी दिन कैसै हैं सो कहिए हैं । एक मुहूर्त्त विषै गमन योग्य सूर्यके अठारहसै तीस खंड अंर नक्षत्रके अठारहसै पैतीस खंड तातैं सूर्यके नक्षत्रतैं पांच खंड छोडनैविषै एक मुहूर्त्त होइ तौ अभिजित नक्षत्रके लसैंतीस खंड छोडनैविषै केते मुहूर्त्त होइ ऐसैं मुहूर्त्त करि ६३० ताकों तीसका भाग देइ दिन करनें ६३० बहुरि भाज्य भाजककौं तीस करि अपवर्त्तन किए इकईस दिनका पांचवां भाग प्रमाण अभिजितका भुक्तिकाल आया । ऐसैंही जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र श्रवण आदि पुनर्वसु पर्यंत तिनके त्रैराशिक विधिकरि मुहूर्त्त वा दिन करि क्रमतैं पंद्रह तीस पंद्रह करि अपवर्त्तन करि जो जो पावै सो सो तिस तिस नक्षत्र विषै स्थापन करनां ॥ ४०८ ॥

आगैं पुष्यविषै विशेष है ताके प्रतिपादनके अर्थ कहैं हैं ;—

सतिपंचमचउदिवसे पुस्से गमियुत्तरायणसमती ।

सेसे दक्षिणआदी सावणपडिवादि रविस्स पढमपहे ॥ ४०९ ॥

सत्रिपंचमचतुर्दिवसान् पुष्ये गत्वा उत्तरायणसमातिः ।

शेषान् दक्षिणादिः श्रावणप्रतिपदि रवेः प्रथमपथे ॥ ४०९ ॥

अर्थ—तीन दिनका पांचवां भाग सहित च्यारि दिन पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकालविषै जा-इकरि उत्तरायणकी समाप्तता हो है । ऐसैं करि पूर्वोक्त प्रकार पुष्य नक्षत्र भुक्तिका कालकौं सड-सठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण ल्याइ तामैं तीनका पांचवां भाग सहित च्यारि दिनका समछेद किए तेईस दिनका पांचवां भाग भया सो ग्रहि करि उत्तरायणकी समाप्तता विषै देनां अवशेष चवालीस दिनका पांचवां भाग रह्या तामैं कोष्ट पूरण करणैके अर्थ तितना ही तेईस दिनका पांचवां भाग ग्रहिकरि दक्षिणायनका प्रथम कोष्ट विषै दिएं यहु ही श्रावण मासविषै पडिवाके दिन सूर्यका प्रथम मार्गविषै दक्षिणायनका आदि हो है । अवशेष इकईस दिनका पांचवां भाग द्विती-यकोष्ट विषै देनां । बहुरि ऐसैंही पूर्वोक्त प्रकार आश्लेषा आदि उत्तराषाढा पर्यंत नक्षत्रनिकी सूर्यके भुक्तिका काल ल्याइ तिहतिह नक्षत्र विषै स्थापन करनां ।

भावार्थ—सूर्यका उत्तरायण विषै प्रथम अभिजित नक्षत्रकी भुक्ति हो है ताका काल पूर्वोक्त प्रकार किए इकईस दिनका पांचवां भाग प्रमाण है । पीछे क्रमतैं श्रवण १ धनिष्ठा १ शतभिषा १ पूर्वाभाद्रपदा १ उत्तराभाद्रपदा १ रेवती १ अश्विनी १ भरणी १ कृतिका १ रोहिणी १ मृगशीर्षी १ आर्द्रा १ पुनर्वसु १ इनकी भुक्ति हो है । तहां शतभिषा १ भरणी १ आर्द्रा १ ए तीन जघन्य नक्षत्र हैं तिनका तौ एक एकका भुक्ति काल सडसठि दिनका दशवां भाग प्रमाण है । बहुरि श्रवण १ धनिष्ठा १ पूर्वाभाद्रपदा १ रेवती अश्विनी कृतिका मृगशीर्षा ए सात मध्य नक्षत्र हैं सो

इनका एक एकका भुक्ति काल सतसठि दिनका पांचवा भाग प्रमाण है । बहुरि उत्तराभाद्रपद रोहिणी पुनर्वसु ए तीन उत्कृष्ट नक्षत्र हैं । सो इनका एक एकका भुक्तिका दोयसै एक दिनका दशवां भाग प्रमाण है । बहुरि पीछे पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काल सड़सठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण तामें तेईस दिनका पांचवां भाग मात्र काल पर्यंत पुष्य नक्षत्रकी भुक्ति इस अयनविषै हो है । ऐसै सर्व कालकों समच्छेद करि जोड़ें सूर्यके उत्तरायण विषै एकसौ तियासी दिन हो है । बहुरि दक्षिणायनका प्रारंभ श्रावण कृष्णकी पड़िवाके दिन हो हैं । तहां प्रथम पुष्य नक्षत्र भोगिए हैं । तहां पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काल सड़सठि दिनका पांचवां भागविषै तेईस दिनका पांचवां भाग तौ उत्तरायण विषै भए थे अवशेष चौवालीस दिनका पांचवां भाग इस अयनकी आदि विषै भोगिए हैं । तहां उत्तरायण समान कोटे पूर्ण करनैकौं प्रथम कोष्ट विषै तौ तेईसका पांचवां भाग देना । दूसरा कोष्ट विषै अभिजितकी जायगा इकईसका पांचवां भाग देना । ऐसै प्रथम पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकाल भए पीछे क्रमतै अश्लेषा १ मघा १ पूर्वा फाल्गुनी १ उत्तरा फाल्गुनी १ हस्त १ चित्रा १ स्वाति १ विशाखा १ अनुराधा १ ज्येष्ठा १ मूल १ पूर्वाषाढ १ उत्तराषाढ इन नक्षत्रनिकों भोगवै है । तहां अश्लेषा १ स्वाति ज्येष्ठा ए तीन जघन्य नक्षत्र हैं । सो इनका तौ एक एकका भुक्तिकाल सतसठि दिनका दशवां भाग प्रमाण है । बहुरि मघा पूर्वा फाल्गुनी हस्त चित्रा अनुराधा मूल पूर्वाषाढ ए सात मध्य नक्षत्र हैं । सो इन एक एकका भुक्तिकाल सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण है । बहुरि उत्तरा फाल्गुनी विशाखा उत्तराषाढ ए तीन उत्कृष्ट नक्षत्र हैं । सो इन एक एकका भुक्तिकाल दोयसै एक दिनका दशवां भाग प्रमाण है । ऐसै इन सर्व भुक्तिकालनिकों जोड़े सूर्यके दक्षिणायनविषै एक सौ तियासी दिन हो हैं । बहुरि अब चंद्रमाका कहिए हैं । पूर्वोक्त प्रकार चंद्रमाका भुक्तिकाल इकईस दिनका सतसठिवां भाग प्रमाण ल्याइ तिस चंद्रमाहीकै जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकालविषै श्रवण आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकी पूर्वोक्त प्रकार भुक्ति ल्याइ तिहविषै सर्वत्र सड़सठिकों भाजककरि भाज्यका अपवर्त्तन करि बहुरि भाजक तीस अर भाज्यका जघन्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका पंद्रह करि अपवर्त्तन करि अर मध्यमनिकै तीसकै अपवर्त्तन करि जो जो पाँचै सो सो तिस तिस नक्षत्रविषै स्थापन करना । बहुरि पुष्यविषै सूर्यके भुक्ति सतसठि दिनका पांचवां भाग मात्र विषै चंद्रमाके भुक्ति एक दिन प्रमाण होइ तौ पुष्यविषै सूर्यके तेईस दिनका पांचवा भागविषै चंद्रमाके केती होइ ऐसै त्रैराशिक करि आई जो तेईसका सतसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति सो उत्तरायणकी समाप्तता विषै दैनी ऐसेही दक्षिणायनविषै विधान करना । **भावार्थ**—चंद्रमाके उत्तरायणविषै पहले अभिजितकी भुक्ति हो है । ताका काल इकईस दिनका सतसठिवां भाग मात्र है । पीछें श्रवण आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्र क्रमतै भोगिए हैं । तहां तीन जघन्य नक्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल अर्द्धदिन है सात मध्य नक्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल एक दिन है । तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल ड्यौढ़ दिन है । बहुरि तहां पीछें पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकाल एक दिन विषै तेईस दिनका सतसठिवां भाग काल प्रमाण पुष्य नक्षत्र भोगिए

हैं। जैसे सर्व काल जोड़ें चंद्रमाका उत्तरायण विषै तेरह दिन अर चवालीसका सडसठिवां भाग मात्र काल हो है। बहुरि दक्षिणायन विषै पहले पुष्य नक्षत्र भोगिएं हैं तहां पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काल एक दिन विषै तेईस दिनका सतसठिवां भाग मात्र काल उत्तरायण विषै गया अब शेष चवालीसका सडसठिवां भाग प्रमाण काल इहां भोगिए हैं। बहुरि अश्लेषा आदि उत्तराषाढ पर्यंत नक्षत्र क्रमतै भोगिए हैं। तहां तीन जघन्य नक्षत्र सात मध्य नक्षत्र तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकाल क्रमतै एक एकका आध दिन एक दिन ड्यौढ़ दिन जाननां। सर्व काल मिलाएं चंद्रमाका दक्षिणायनविषै तेरह दिन अर चवालीसका सडसठिवां भाग प्रमाण काल हो है। अब राहुका कहिए हैं राहुकै अभिजित आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिका भुक्ति ल्याइ तिस तिस नक्षत्रविषै स्थापना करनां। बहुरि पुष्य विषै सूर्यके सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण भुक्ति होतै राहुके आठसै च्यारिसैका इकसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति होइ तौ सूर्यके तेईस दिनका पांचवां भाग प्रमाण भुक्ति होतै राहुके केती भुक्ति होइ ऐसै ल्याइ अपवर्त्तन करै दोगसै छिहंतरी दिनका इकसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति उत्तरायणकी समाप्तिविषै पुष्यकी स्थापन करनी। बहुरि पूर्ववत् दक्षिणायनविषै विधान करनां। **भावार्थ**—राहुकै उत्तरायणविषै प्रथम अभिजितकी भुक्ति हो है ताका काल दोगसै बावन दिनका इकसठिवां भाग मात्र है पीछे श्रवणादि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिका भुक्ति क्रमतै हो है। तिनविषै तीन जघन्य सात मध्य तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकाल क्रमतै च्यारिसै दोगका इकसठिवां भाग आठसै च्यारिका इकसठिवां भाग बारहसै छैका इकसठिवां भाग प्रमाण हो है। पीछे पुष्यकी भुक्ति हो है ताका काल आठसै च्यारि दिनका इकसठिवां भागविषै दोगसै छिहंतरी दिनका इकसठिवां भाग मात्र पुष्यकी भुक्तिका काल हो है। ऐसै सर्वकाल मिलि राहुकै उत्तरायणविषै एक सौ असी दिन हो है। बहुरि राहुकै दक्षिणायनविषै प्रथम पुष्यका भुक्तिकालविषै अबशेष पांचसै अठाईस दिनका इकसठिवां भाग प्रमाण कालपर्यंत तौ पुष्यकी भुक्ति हो है। पीछे आश्लेषादि उत्तराषाढ पर्यंत नक्षत्रनिका भुक्ति क्रमतै हो है। तहां तीन जघन्य सात मध्य तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकाल क्रमतै च्यारिसै दोगका इकसठिवां भाग आठसै च्यारिका इकसठिवां भाग बारहसै छैका इकसठिवां भाग मात्र है। ऐसे सर्वकाल मिलि राहुकै दक्षिणायन विषै एकसौ असीदिन हो है। या प्रकार नक्षत्र भुक्तिकौ समझेद करि जोड़ें चंद्रमाके अयनके दिन तेरह अर चवालीसका सतसठिवां भाग हो है। बहुरि दोग अयन मिलाएं वर्षके दिन सत्ताइस अर इकईसका इकसठिवां भाग हो है। बहुरि सूर्यके अयनदिन एक सौ तियासी वर्ष दिन तीनसै छयासठि हो है। बहुरि राहुकै अयनदिन एक सौ असी वर्ष दिन तीनसै साठि हो है ॥४०९॥

आगै अधिक मासका प्रतिपादनके अर्थ सूत्र कहै हैं;—

इगिमासे दिणवट्टी वस्से बारह दुवस्सगे सदले ।

अहिओ मासो पंचयवासप्पजुगे दुमासहिया ॥ ४१० ॥

एकास्मिन् मासे दिनवृद्धिः वर्षे द्वादश द्विवर्षके सदले ।

अधिको मासः पंचवर्षात्मकयुगे द्विमासौ अधिकौ ॥ ४१० ॥

अर्थ—एक मासविषै एक दिनकी वृद्धि होइ एक वर्षविषै बारह दिनकी वृद्धि होइ अर्थात् वर्षविषै एक मास अधिक होइ । पंच वर्षका समुदाय सोई है स्वरूप जाका ऐसा युग तीहविषै दोय मास अधिक हो है । तहां एक वर्षविषै बारह दिन वधै तौ अर्थात् वर्षविषै कितने दिन वधै ऐसैं किंए लब्धराशि तीस दिन होइ । ऐसैंही युगविषै भी त्रैराशिक करनां । **भावार्थ**—एक वर्षके बारह मास एक मासके तीस दिन तहां इकसठिवै दिन एक तिथि घंटे तातैं वर्षके तीनसैं चौवन दिन होइ । अर सूर्यके वर्षके तीनसैं छासठि दिन हं । सो बारह दिन एक वर्षविषै वधती भए सो अर्थात् वर्ष व्यतीत भए एक अधिक मास होइ तब तेरह मासका वर्ष होइ । बहुरि ऐसैंही अर्थात् वर्ष और भए एक मास अधिक होइ । या प्रकार पांच वर्ष प्रमाण जो युग तिहविषै दोय अधिक मास होइ ॥ ४१० ॥

अब पूर्व गाथाका जु अर्थ ताहीकों आठ गाथानि करि वर्णन करैं हैं;—

आषाढपुष्णमीए जुगणिष्पत्ती दु सावणे किण्हे ।

अभिजिह्मि चंद्रजोगे पाडिवदिवसह्मि पारंभो ॥ ४११ ॥

आषाढपूर्णिमायां युगनिष्पत्तिः तु श्रावणे कृष्णे ।

अभिजिति चंद्रयोगे प्रतिपदिवसे प्रारंभः ॥ ४११ ॥

अर्थ—आषाढ मासविषै पून्यौके दिन अपरान्ह समय उत्तरायणकी समाप्तता होतैं पंच वर्ष स्वरूप युगकी निष्पत्ति कहिए संपूर्णता सो हो है । बहुरि श्रावण मास कृष्णपक्षविषै अभिजित नक्षत्र अर चन्द्रमाका योग होतैं पडिवाकै दिन दक्षिणायनका प्रारंभ हो है । **भावार्थ**—आषाढ सुदि पून्यौ अपरान्हविषै तौ पूर्व युगकी समाप्तता भई । बहुरि श्रावण वदि एकै दिन जहां चन्द्रमाकै अभिजित नक्षत्रका भुक्तिकाल होइ तहां सूर्यका दक्षिणायनका आरंभ हो है । सोई नवीन पंच वर्ष स्वरूप जो युग ताका प्रारंभ जानना ॥ ४११ ॥

आगैं किस वीथीविषै किस अयनका प्रारंभ हो है सो कहैं हैं;—

पठमंतिमवीथीदो दक्खिणउत्तरदिगयणपारंभो ।

आउट्टी एगादी दुगुत्तरा दक्खिणाउट्टी ॥ ४१२ ॥

प्रथमांतिमवीथीतः दक्षिणोत्तरदिगयनप्रारंभः ।

आवृत्तिः एकादि द्विकोत्तरा दक्षिणावृत्तिः ॥ ४१२ ॥

अर्थ—प्रथम अंतिम वीथीतैं दक्षिण उत्तर दिशाका अयनका प्रारंभ हो है । **भावार्थ**—एकसौ चौरासी वीथीनिविषै प्रथम अभ्यंतर वीथीविषै तिष्ठता सूर्यकै दक्षिण अयनका प्रारंभ हो है । अंतबाह्य वीथीविषै तिष्ठता सूर्यकै उत्तर अयनका प्रारंभ हो है । बहुरि सोई दक्षिणायन अर उत्तरायणकी प्रथम आवृत्ति है । पूर्व अयनकों समाप्त करि नवीन अयनका ग्रहण ताका नाम आवृत्ति जाननां । तहां एककों आदि दे करि दुगुत्तरा कहिए दोय वृद्धि प्रमाण लिंए दक्षिण आवृत्ति हो है ॥ ४१२ ॥

उत्तरायणकी आवृत्ति कैसे है सो कहैं हैं;—

उत्तरगा य दुआदी दुचया उभयत्थ पंचयं गच्छो ।

विदिआउट्टी दु हवे तेरसि किण्हेसु मियसीसे ॥ ४१३ ॥

उत्तरगा च द्वादिः द्विचया उभयत्र पंचकं गच्छः ।

द्वितीयावृत्तिः तु भवेत् त्रयोदश्यां कृष्णेषु मृगशीर्षायाम् ॥ ४१३ ॥

अर्थः—उत्तरायणसंबन्धी आवृत्ति सो दोयकों आदि दै करि द्विचयाः कहिए दोय वृद्धि प्रमाण लिए हैं । बहुरि उभयत्र कहिए दोऊ जायगा दक्षिणायन उत्तरायनविषै गच्छ कहिए स्थान प्रमाण सो पांच जानना । **भावार्थ**—पूर्व अयनकों समाप्त करि नवीन अयनका ग्रहण होतै अयनकी जो पलटनि ताका नाम आवृत्ति है । सो पंच वर्ष प्रमाण एक युगविषै दश वार आवृत्ति हो है । तहां पहली तीसरी पांचवीं सातवीं नवमी आवृत्ति तौ दक्षिणायनसंबन्धी है । जातै तहां उत्तरायणकों समाप्त करि दक्षिणायनका ग्रहण कीजिए है । बहुरि दूसरी चौथी छठीं आठवीं दशमी आवृत्ति उत्तरायणसंबन्धी है । जातै तहां दक्षिणायणकों समाप्त करि उत्तरायणका ग्रहण कीजिए हैं तहां दक्षिणायणसंबन्धी आवृत्ति श्रावण मासहीविषै हो है । सो प्रथम आवृत्ति तौ पूर्वे कही थी, बहुरि दूसरी आवृत्ति कृष्णपक्षविषै तेरसिके दिन चंद्रमाके मृगशीर्षा नक्षत्रका भुक्तिकाल-विषै हो है ॥ ४१३ ॥

तीसरी आदि आवृत्ति कब होत है सो कहै है;—

सुकदसमीविसाहे तदिया सत्तमिगकिण्हरेवदिए ।

तुरिया दु पंचमी पुण सुक्कचउत्थीए पुव्वफग्गुणिये ॥ ४१४ ॥

शुक्कदशमीविशाखे तृतीया सप्तमीकृष्णरेवत्याम् ।

तुरीया तु पंचमी पुनः शुक्लचतुर्थ्या पूर्वफाल्गुन्याम् ॥ ४१४ ॥

अर्थ—शुक्लपक्ष दशमी तिथिविषै विशाखा नक्षत्रका योग होतै तीसरी आवृत्ति हो है । बहुरि कृष्णपक्षकी सप्तमी तिथिविषै रेवता नक्षत्रका योग होतै चौथी आवृत्ति हो है । बहुरि शुक्लपक्षकी चौथी तिथिविषै पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्रका योग होतै पांचवी आवृत्ति हो है ॥ ४१४ ॥

इन करि कहा हो है सो कहै है;—

दक्खिणअयणे पंचसु सावणमासेसु पंचवस्सेसु ।

एदाओ भणिदाओ पंचणियट्ठीउ सूरस्स ॥ ४१५ ॥

दक्षिणायने पंचसु श्रावणमासेषु पंचवर्षेषु ।

एताः भणिताः पंचनिवृत्तयः सूर्यस्य ॥ ४१५ ॥

अर्थ—दक्षिणायनविषै पांच जे श्रावण मास पांच वर्षनि विषै होइ तिनविषै ए पांच आवृत्ति सूर्यकी कही हैं ॥ ४१५ ॥

उत्तरायणविषै आवृत्ति कैसै है सो कहै है;—

माघे सत्तमि किण्हे हत्थे विणिवित्तिमेदि दक्खिणदो ।

विदिया सदभिससुक्के चोत्थीए होदि तदिया दु ॥ ४१६ ॥

माघे सप्तम्यां कृष्णे हस्ते विनिवृत्ति एति दक्षिणतः ।

द्वितीया शतभिषि शुक्ले चतुर्थ्या भवति तृतीया तु ॥ ४१६ ॥

अर्थ—माघमासविषै उत्तर आवृत्ति हो है तहां कृष्णपक्षकी सप्तमी तिथिविषै चंद्रमाके हस्त नक्षत्रकी मुक्ति होतैं अयनतैं पलटै है सोई उत्तरायणविषै प्रथम आवृत्ति है । बहुरि दूसरी आवृत्ति शतभिषक नक्षत्रका योग होतैं शुक्लपक्षकी चौथी तिथिविषै हो है ॥ ४१६ ॥

बहुरि तीसरी आदि आवृत्ति कैसैं सो कहैं हैं;—

पडवदि किण्हे पुस्से चोत्थी मूले य किण्हतेरसिए ।
 कित्तियरिक्खे सुक्के दसमीए पंचमी होदि ॥ ४१७ ॥
 प्रतिपदि कृष्णे पुष्ये चतुर्थी मूले च कृष्णत्रयोदश्याम् ।
 कृतिकान्नाक्षे शुक्ले दशम्यां पंचमी भवति ॥ ४१७ ॥

अर्थ—कृष्णपक्षकी पड़िवा तिथिविषै पुष्यनक्षत्रका योग होतैं तीसरी आवृत्ति हो है । बहुरि चौथी आवृत्ति कृष्णपक्षकी त्रयोदशी तिथिविषै मूल नक्षत्रका योग होतैं हो है । बहुरि शुक्ल पक्षकी दशमी तिथिविषै कृतिका नक्षत्रका योग होतैं पांचवीं आवृत्ति हो है ॥ ४१७ ॥

कह्या अर्थकों जोड़े हैं;—

ताओ उत्तरअयणे पंचसु वासेसु माघमासेसु ।
 आउट्टीओ भणिदा सूरस्सिह पुच्चसूरीहिं ॥ ४१८ ॥
 ताः उत्तरायणे पंचसु वर्षेषु माघमासेषु ।
 आवृत्तयः भणिताः सूर्यस्येह पूर्वसूरिभिः ॥ ४१८ ॥

अर्थ—ते ए आवृत्ति उत्तरायणविषै पांच वर्षनिविषै जे पांच माघमास होहिं तिनविषै पूर्व आचार्यनि-
 करि सूर्यकी कही हैं । अब कही जु गाथा तिनका रचनाका उद्धार करनेका विधान कहिए है । पांच वर्षका समुदाय सो युग है । जातैं युगके आरंभतैं पांच वर्ष व्यतीत भए तिथि आदि रचना जैसें पहले युगविषै थी तैसेंही हो है । सो युगविषै दक्षिणायनका प्रारंभ तौ पांच श्रावणमासनिविषै होइ अर उत्तरायणका प्रारंभ पांच माघमासनि विषै होइ । बहुरि वीचिविषै दक्षिणायणविषै तौ भाद्रपद आदि मास हो है उत्तरायण विषै फाल्गुन आदि मास हो हैं । तहां एक एक मासकी इकतीस तिथि स्थापन करनी । काहेतैं ? एक मासकी तीस तिथि हो हैं । अर इगिमासं दिणवड्डी इस सूत्र करि एक मासविषै एक दिन वधै तातैं इकतीस तिथि स्थापन करन । इहां पंद्रह पंद्रह दिनका पक्ष ग्रहण किया तातैं एक मासके तीस दिन ही ग्रहण किए । बहुरि जो तिथि घटै है तिहकी विविक्षा किए पक्षविषै भी घटती दिन कहना होइ मासविषै भी कहना होइ तातैं भावार्थ एक जानि तीस दिनही मासके ग्रहण कीए । तहां युगविषै दक्षिणायनविषै प्रथम श्रवण मासविषै कृष्णपक्षके पंद्रह शुक्लके पंद्रह कृष्णका एक दूसरेविषै कृष्णके तीन शुक्लके पंद्रह कृष्णके तेरह, तीसरेविषै शुक्लके छह कृष्णके पंद्रह शुक्लके दश, चौथेविषै कृष्णके नव शुक्लके पंद्रह कृष्णके सात, पांचवांविषै शुक्लके बारह कृष्णके पंद्रह शुक्लके च्यरि दिन हो हैं । बहुरि उत्तरायणविषै प्रथम माघविषै कृष्णपक्षके नव शुक्लके पंद्रह कृष्णके सात, दूसरेविषै शुक्लके बारह कृष्णके पंद्रह शुक्लके च्यारि तीसरेविषै कृष्णके पंद्रह शुक्लके पंद्रह कृष्णके एक चौथेविषै कृष्णके तीन शुक्लके पंद्रह कृष्णके तेरह, पांचवां माघविषै शुक्लके छह

कृष्णके पंद्रह शुक्लके दश दिन हो है । बहुरि दक्षिणायनविषै वीचि जे भाद्रपदादिक मास अर उत्तरायणविषै वीचि फाल्गुन आदि मास तिनविषै आदिविषै एक एक घटता अर अंतविषै एक एक वधता दिन स्थापन करिए ऐसैं एक एक मासविषै इकतीस तिथि स्थापन किए तीह तीह मासविषै वा तीह तीह अयनविषै अधिक दिन आवैं है । **भावार्थ**—प्रथम श्रावणविषै वदि एकैतैं लगाय पंद्रह तिथि कृष्णपक्षकी अर पंद्रह शुक्लपक्षकी अर एक भाद्रपदाका कृष्णकी मिलि एकतीस तिथि होइ । बहुरि भाद्रपदविषै पहलै आदिविषै पंद्रह तिथि कही थी तामें एक घटाएं चौदह तौ कृष्णपक्षकी अर पंद्रह शुक्लपक्षकी अर अंतविषै एक कृष्णपक्षकी कही थी तामें एक वधाएं दोय अश्विनके कृष्णपक्षकी मिलाएं इकतीस तिथि हो है । बहुरि अश्विनविषै आदिमैं एक घटाएं तेरह कृष्णपक्षकी पंद्रह शुक्लपक्षकी अंतविषै एक वधाएं तीन कार्तिकके कृष्णपक्षकी मिलाएं इकतीस तिथि हो हैं । ऐसैंही कार्तिकविषै बारह कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी च्यारि कृष्णकी मार्गशीर्षविषै ग्यारह कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी पांच कृष्णकी पौषविषै दश कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी छह कृष्णकी तिथि मिलें इकतीस तिथि होइ । बहुरि उत्तरायणविषै माघ वदी सातैं तें नव कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी सात कृष्णकी इत्यादि रचना किए बहुरि दक्षिणायनविषै द्वितीय श्रावणमासविषै श्रावण वदी त्रयोदशीतैं लगाय तीन कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी तेरह कृष्णकी तिथि हो हैं । बहुरि भाद्रपदादिकविषै रचना करनी । ऐसैं रचना किए मासविषै अयनविषै अधिक दिन आवै है । इस क्रम करि पंचवर्षात्मक युगविषै दोय अधिकमास हो हैं ॥ ४१८ ॥

आगैं दक्षिणायण उत्तरायणका प्रारंभविषै नक्षत्र ल्यावनैका विधान कहैं हैं;—

रूऊणाउट्टिगुणं इगिसीदिसदं तु सहिद इगिवीसं ।

तिघणहिदे अवसेसा अस्सिणिपहुदाणि रिक्खाणि ॥ ४१९ ॥

रूपोनावृत्तिगुणं एकाशीतिशतं तु सहितं एकविंशत्या ।

त्रिघनहते अवशेषाणि अश्विनीप्रभृतीनि ऋक्षाणि ॥ ४१९ ॥

अर्थ—रूपोना वृत्ति कहिए जेथवीं आवृत्ति होइ तामें एक घटाएं जो प्रमाण होइ तिह करि गुण्या हुवा एकसौ इक्यासी तामें इकईस जोड़िए अर ताकौं तीनका घन जो सत्ताईस ताका भाग दिए जेता अवशेष रहै तेथवां नक्षत्र अश्विनी आदितैं जाननां । उदाहरण—जैसे विवक्षित आवृत्ति प्रथम तामें एक घटाएं शून्य अवशेष रहै ० तीह करि एकसौ इक्यासीकौं गुणिए सो शून्य करि गुण्या हुवा अंक शून्य ही होइ तातैं गुणें भी शून्य ही पाया । तीह बिदीविषै इकईस जोड़ें इकईसही भए । बहुरि इहां सत्ताईसतैं अधिक होता तौ सत्ताईसका भाग देते तातैं इकईस ही रहे सो अश्विनी भरणी कृतिका आदि अनुक्रमतैं गिणै अश्विनीतैं लगाय जो इकईसवां नक्षत्र होइ सोई प्रथम आवृत्तिविषै नक्षत्र होइ सो अश्विनीतैं लगाय इकईसवां नक्षत्र उत्तरापाढा है । परंतु इहां अभिजितका ग्रहण करना । काहेतैं सो कहिए हैं । यद्यपि नक्षत्र अठाईस है । तथापि जहां नक्षत्रनिकी गणनादिक करिए हैं तहां सत्ताईस नक्षत्रनिहीका ग्रहण कीजिए है । अभिजित नक्षत्रका ग्रहण न कीजिए है जातैं याका साधन सूक्ष्म है तातैं इहां प्रथम आवृत्तिविषै स्थूलपनै

साधन किं उत्तरापाठ आवै परंतु सूक्ष्मपनै साधन किं अभिजित नक्षत्र जाननां । आगै भी अश्विनी आदिकतै वा कार्तिकआदिकतै नक्षत्र गणनाविषै अभिजित नक्षत्रका प्रहण करना नाहीं । या प्रकार दक्षिणायनका प्रारंभविषै प्रथम श्रावणमासविषै नक्षत्र ल्यावनैका विधान कद्या । अब दूसरा उदाहरण कहिए हैं । विवक्षित दूसरी आवृत्ति तामें एक घटाएं एक रखा तीह करि एकसौ इक्यासीकों गुणें एकसौ इक्यासीही हुवा इनमें इकईस मिलाएं दोयसै दोय भए इनकों सत्ताईसका भाग दिएं अबशेष तेरह रहे सो अश्विनी नक्षत्रतै तरब्हां नक्षत्र हस्त सो उत्तरायणका प्रारंभविषै प्रथम माघमासविषै हस्तनक्षत्र पाईए है । ऐसेही तीसरी पांचवीं सातवीं नवमी आवृत्तिविषै दक्षिणायनका प्रारंभ श्रावणमासविषै हो है । तहां अर चौथी छठी आठवीं दशवीं आवृत्ति विषै उत्तरायणका प्रारंभ माघमासविषै हो है । तहां नक्षत्र साधन करनां ॥ ४१९ ॥

आगै दक्षिणायण उत्तरायणकै पर्व वा तिथि ल्यावनैविषै सूत्र कहै हैं;—

वेगाउट्टिगुणं तेसीदिसदं सहिद तिगुणगुणरूवे ।

पण्णरभजिदे पच्चा सेसा तिहिमाणमयणस्स ॥ ४२० ॥

व्येकावृत्तिगुणं त्र्यशीतिशतं सहितं त्रिगुणगुणरूपेण ।

पंचदशभक्ते पर्वाणि शेषं तिथिमानं अयनस्य ॥ ४२० ॥

अर्थ—व्येका वृत्ति कहिए जेथेवीं विवक्षित आवृत्ति होइ तामें एक घटाएं जो प्रमाण रहै तिह करि एकसौ तियासीकों गुणिए, बहुरि जितनै गुणकारक एकसौ तियासीकों गुकरि ताकों तिगुणा करि तामें जोड़िए । बहुरि एक और जोड़िए जो प्रमाण होइ ताकों पंद्रहका भाग दीजिए जो लब्धप्रमाण आवै तितनै तौ पर्व जाननै, अबशेष रहे सो तिथि प्रमाण जाननां । दक्षिणायन वा उत्तरायणका ऐसैही जाननां । उदाहरण विवक्षित आवृत्ति प्रथम तामें एक घटाएं बिंदी रही तिह करि एकसौ तियासीकों गुणें बिंदी करि गुणें बिंदी ही होइ इस न्याय करि बिंदी ही आई। बहुरि इहां गुणकार बिंदी ताकों तिगुणां किं भी बिंदीविषै बिंदी जोड़ें बिंदी ही भई । बहुरि तामें एक जोड़ें एक भया याकों पंद्रहका भाग लागै नाहीं तातै पर्वका तौ अभाव जाननां । अर अबशेष एक रखा सो तिथिका प्रमाण जाननां ऐसै प्रथम आवृत्ति दक्षिणायनका प्रारंभविषै प्रथम श्रावणमास-विषै पर्वका तौ अभाव आया पक्षकी पूर्णता भए पूर्णमा वा अमावस्या जो होइ ताका नाम पर्व है । सो युगका आरंभ भए पीछें जेते पर्व व्यतीत होइ सोई इहां पर्वनिकी संख्या जाननी । सो प्रथम आवृत्तिविषै कोऊ भी पर्व व्यतीत भया तातै पर्वका अभाव जाननां । अर तिथिका प्रमाण एकै जाननां । बहुरि दूसरा उदाहरण-विवक्षित आवृत्ति दूसरी तामें एक घटाएं एक रखा तीह करि एकसौ तियासीकों गुणें एकसौ तियासी भए । बहुरि गुणकारका प्रमाण एक ताकों तिगुणा किं तीनसौ मिलाय एकै सौ छियासी भये । बहुरि तामें एक और जोड़ें एकसौ सित्यासी भए । इनकों पंद्रहका भाग दिएं बारह पाए सो बारह तौ पर्वका प्रमाण भया । युगका प्रारंभतै बारह पर्व व्यतीत भए पीछें दूसरी आवृत्ति हो है । अर अबशेष सात रहे सो सात तिथि जाननी । ऐसै दूसरी आवृत्ति उत्तरायणका प्रारंभ होतै प्रथम माघ मासविषै होइ तहां युगके आरंभतै

बारह तौ पर्व व्यतीत भए जानने अर सातैं तिथि जाननी । याही प्रकार अन्य आवृत्तिनिविषै भी पर्व वा तिथिका प्रमाण ल्यावनां ॥ ४२० ॥

आगैं दिन वा रात्रिका प्रमाण जिहिं कालविषै समान होइ ताका नाम विषुप हैं तिंह विषुप-विषै पर्व वा तिथि वा नक्षत्रनिकाँ छह गाथानि करि युगके दश अयनिविषै कहै हैं; —

छम्मासद्गयाणं जोइसयाणं समाणदिणरत्ती ।

तं इसुपं पठमं छसु पव्वसु तीदेसु तदियरोहिणिण ॥ ४२१ ॥

षण्मासार्धगतानां ज्योतिष्काणां समानदिनरात्री ।

तत् विषुवं प्रथमं षट्सु पर्वसु अतीतेषु तृतीयारोहिण्याम् ॥ ४२१ ॥

अर्थ—छह मासका अर्द्ध ज्योतिषीनिके गए समान रात्रि हो है सोई विषुप है । **भावांर्थ—** एक अयन छह मासका हो है तहां आधा अयन भए दिन अर रात्रिका प्रमाण समान हो है । सो जिस कालविषै दिन रात्रि समान होइ ताका नाम विषुप है । सो पंच वर्ष प्रमाण युग-विषै दश विषुप हो हैं । पांच तौ दक्षिणायनका अर्द्धकालविषै अर पांच उत्तरायणका अर्द्धकालविषै हो है । तहां पहला विषुप दक्षिणायनका अर्द्धकालविषै दूसरा उत्तरायणका अर्द्धकालविषै ऐसे क्रमतैं विषुप जानने । तहां प्रथम विषुप युगके आरंभतैं छह पर्व व्यतीत भए तृतीय तिथिविषै रोहिणी नक्षत्रकी भुक्ति चन्द्रमाके होत होत सो हो संतैं हो है ॥ ४२१ ॥

विगुणणवपव्वऽतीदे णवमीए विदियगं धणिट्ठाए ।

इगितीसगदे तदियं सादीए पण्णरसमच्चि ॥ ४२२ ॥

द्विगुणनवपर्वातीतेषु नवम्यां द्वितीयकं धनिष्ठायाम् ।

एकत्रिंशद्भूते तृतीयं स्वातौ पंचदश्याम् ॥ ४२२ ॥

अर्थ—दुगुण नव जो युगके आरंभ पीछैं अठारह पर्व व्यतीत भए नवमी तिथिविषै धनिष्ठा नक्षत्रका योग चंद्रमाके होतैं दुतिय विषुप हो है । बहुरि इकतीस पर्व व्यतीत भए तिसरा विषुप स्वाति नक्षत्र होत संते पंचदशी तिथिविषै हो है । सो ऋणपक्ष पनेतैं अर्थतैं अमावस्याः विप हो है ॥ ४२२ ॥

तेदालगदे तुरियं छट्ठिणुणव्वसुगयं तु पचमयं ।

णवण्णपव्वतीदे बारसिए उत्तराभहे ॥ ४२३ ॥

त्रिचत्वारिंशद्भूतेषु तुरीयं षष्ठीपुनर्वसुगतं तु पंचमम् ।

पंचपंचाशत्पर्वातीतेषु द्वादश्यां उत्तराभाद्रे ॥ ४२३ ॥

अर्थ—तियालीस पर्व व्यतीत भए चौथा विषुप षष्ठीविषै पुनर्वसु नक्षत्रको प्राप्त भए हो है । बहुरि पांचवां विषुप पञ्चावन पर्व व्यतीत भए द्वादशी तिथिविषै उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र होत संते हो है ॥ ४२३ ॥

अडसट्ठिगदे तदिए मित्ते छट्ठं असीदिपव्वगदे ।

णवमिमघाए सत्तममिह तेणउदिगदे दु अट्ठमयं ॥ ४२४ ॥

अष्टपष्टिगतेषु तृतीयायां मैत्रे षष्ठं अशीतिपर्वगतेषु ।

नवमीमघायां सप्तमं इह त्रिनवतिगतेषु तु अष्टमम् ॥ ४२४ ॥

अर्थ—अडसठि पर्व गणं तृतीय तिथिविषै मैत्र जो अनुराधा नक्षत्र ताको होत संतै छटा विषुप हो है । बहुरि असी पर्व गणं नवमी तिथिविषै मघा नक्षत्र होतै सातवां विषुप हो है । बहुरि इहां तेरणवै पर्व गणं आठवां विषुप हो है ॥ ४२४ ॥

अस्सिणि पुण्णे पव्वे णवमं पुण पंचजुदसए पव्वे ।

तीते छट्ठितीहीए णक्खत्ते उत्तरासाढे ॥ ४२५ ॥

अश्विनी पूर्णे पर्वणि नवमं पुनः पंचयुतशतेषु पर्वेषु ।

अतीतेषु षष्ठीतिथौ नक्षत्रे उत्तराषाढे ॥ ४२५ ॥

अर्थ—सो आठवां विषुप अश्विनी नक्षत्र होतै पूर्ण पर्व जो अमावस्या तीहविषै हो है । बहुरि नवमां विषुप एकसौ पांच पर्व व्यतीत भए षष्ठी तिथिविषै उत्तराषाढ नक्षत्र होतै हो है ॥ ४२५ ॥

चरिमं दसम विसुपं सत्तरसुत्तरसएसु पव्वेसु ।

तीदेसु बारसीए जाइदि उत्तरगफग्गुणिए ॥ ४२६ ॥

चरमं दशमं विषुवं सप्तदशोत्तरशतेषु पर्वेषु ।

अतीतेषु द्वादश्यां जायते उत्तराफाल्गुन्याम् ॥ ४२६ ॥

अर्थ—अंतका दशवां विषुप एकसौ सतरह पर्व व्यतीत भए द्वादशी तिथिविषै उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र होतै हो है ॥ ४२६ ॥

आगै विषुपविषै पर्व वा तिथि व्यावनैकौ सूत्र कहै हैं;—

विगुणे सगिट्ठिसुपे रूऊणे छग्गुणे हवे पव्वं ।

तप्पव्वदलं तु तिथी पवट्टमाणस्स इसुपस्स ॥ ४२७ ॥

द्विगुणे स्वकेष्टविषुपे रूपोने षड्गुणे भवेत् पर्व ।

तत्पर्वदलं तु तिथिः प्रवर्तमानस्य विषुवस्य ॥ ४२७ ॥

अर्थ—अपनां इष्ट विषुप जेथवां होइ तीह प्रमाणकौ दूणा करिए तामै एक घटाइए बहुरि अबशेषकौ छह गुणा किए पर्वनिका प्रमाण आवै है । बहुरि तिस पर्व प्रमाणका आधा सो प्रवर्तमान विवक्षित विषुपका तिथि प्रमाण हो है । तीह पर्वका आधा प्रमाण पंद्रहतै अधिक होइ तो पंद्रहका भाग दिए जो लब्ध प्रमाण होइ सो तो पर्व संख्याविषै जोड़िए अर अबशेष रहै सो तिथिका प्रमाण हो है । इहां उदाहरण-इष्ट विषुप पहला ताकौ दूणा किए दोय तामै एक घटाए अबशेष एक ताकौ छह गुणा किए छहसो प्रथम विषुप विषै युग आरंभतै व्यतीत पर्वनिका प्रमाण छह है । बहुरि तीह पर्व प्रमाणका आधा तीन सो प्रथम विषुपविषै तिथि तृतीया है । दूसरा उदाहरण—इष्ट विषुप दशवां ताकौ दूणा किए वीसतामै एक घटाए उगणीस ताकौ छह गुणा किए एकसौ चौदहसो पर्व प्रमाण ताका आधा सत्तावन ताकौ पंद्रहका भाग दिए तीन

पाएसा पर्व संख्याविषै मिलाएं अंत विषुपविषै एकसौ सत्तरह तौ पर्वनिका प्रमाण है । अर अवशेष बारह रहे सो तिथि द्वादशी है । ऐसै ही अन्य विषुपनिविषै भी जाननां ॥ ४२७ ॥

आगै आवृत्ति अर विषुपविषै तिथि संख्याकौ कहै हैं;—

वेगपद छग्गुणं इगितिजुदं आउट्टिइसुपतिहिसंखा ।

विसमतिहीए किण्हो समतिथिमाणो हवे सुको ॥ ४२८ ॥

व्येकपदं षड्गुणं एकत्रियुतं आवृत्तिविषुपतिथिसंख्या ।

विषमतिथौ कृष्णः समतिथिमानो भवेत् शुक्लः ॥ ४२८ ॥

अर्थ—इष्ट भूत जेथवीं आवृत्ति होइ तिस आवृत्ति स्थानकमैस्यो एक घटाइए अवशेष छह गुणा करि दोय जायगा स्थापिए तहां एक जायगा एक और मिलाइए एक जायगा तीन और मिलाइए तब क्रमतै आवृत्ति अर विषुपविषै तिथिको संख्या हो है तिनिविषै जो एक तृतीया पंचमी आदि विषम गणना रूप तिथि होइ तौ तहां कृष्णपक्ष है । बहुरि द्वितीया चतुर्थी षष्ठी आदि समतिथि हैं तौ तहां शुक्लपक्ष है । उदाहरण-इष्ट आवृत्ति प्रथम तामै एक घटाएं शून्यताकों छह गुणा किए भी शून्य होइ ताकों दोय जायगा स्थापि तामै एक जायगा एक जोड़ें एक होइ सो प्रथम आवृत्तिविषै तिथि एक है सो यहू विषम तिथि है तातै इहां कृष्णपक्ष जाननां । बहुरि दूसरी जायगा तीन जोड़े तीन होइ सो प्रथम आवृत्ति संबंधी प्रथम विषुपविषै तिथिका तृतीया है । यहू भी विषम तिथि है तातै इहां भी कृष्णपक्ष ही जाननां । बहुरि दूसरा उदाहरण-इष्ट आवृत्ति दशमी तामै एक घटाएं नव ताकों छह गुणा किए चौवन तिनकौ दोय जायगा स्थापि एक जायगा एक और मिलाएं पचावन होइ ताकों पंद्रहका भाग दिए अवशेष दश रहे साई दशवीं आवृत्तिविषै दशमी तिथि है । इहां शुक्लपक्ष जाननां । बहुरि दूसरी जायगा तीन और मिलाएं सत्तावन होइ ताकों पंद्रहका भाग दिए अवशेष बारह रहे सोई दशवां विषुपविषै तिथि द्वादशी है । यहू भी सम तिथि है । तातै इहां भी शुक्लपक्ष जाननां । ऐसेही अन्य आवृत्ति वा विषुपविषै साधन करनां ॥ ४२८ ॥

आगै विषुपविषै नक्षत्रनिका वा सर्व्व तिथि ल्यावनैका विधान कहै हैं;—

आउट्टिलद्धरिक्खं दहजुद छट्टदसमगेगूणं ।

इषुपे रिक्खा पण्णरगुणपव्वाजुदतिही दिवसा ॥ ४२९ ॥

आवृत्तिलब्धऋक्षं दशयुतं षष्ठाष्टदशमके एकोनं ।

विषुवे ऋक्षाणि पंचदशगुणपर्वयुततिथयः दिवसानि ॥ ४२९ ॥

अर्थ—आवृत्तिविषै जो नक्षत्र पाया तीका आगिला नक्षत्रसौं लगाय जो दशवां नक्षत्र होइ सो तीह आवृत्ति संबंधी नक्षत्र जाननां । तहां छठा आठवां दशवां विषुपविषै एक घटावनां जो नवमां ही नक्षत्र होइ सो तीह विषुपविषै जाननां । उदाहरण दूसरी-आवृत्तिविषै हस्तनक्षत्र है । तातै आगै चित्रातै लगाय दशवां नक्षत्र धनिष्ठा है । सोई दूसरा विषुपविषै नक्षत्र जाननां । बहुरि दूसरा उदाहरण छठी आवृत्तिविषै पुष्य नक्षत्र है । तातै आगिला आश्लेषातै लगाय नवमां नक्षत्र रोहिणी है । सोई छठा विषुपविषै नक्षत्र जाननां । इहां छठा आठवां दशवांविषै एक घाटि कक्षा

है । तार्ते नवमा नक्षत्र ही ग्रहण किया । इहां गणनाविषै अभिजितका ग्रहण करना । ऐसैही अन्य विषुपनिविषै नक्षत्र साधन करनां । बहुरि आवृत्ति वा विषुपविषै पर्व प्रमाणकौं पंद्रह गुणा करि तामें तिति प्रमाण मिलाएं समस्त दिननिका प्रमाण हो है । उदाहरण-दूसरी आवृत्तिविषै पर्व-प्रमाण बारह तिनकों पंद्रह गुणां किए एकसौ असी भए, तहां तिथि प्रमाण सात मिलाएं एकसौ सित्यासी भए सोई युगके आरंभतैं एकसौ सित्यासी दिन व्यतीत भए दूसरी आवृत्ति हो है । इहां एकसौ तियासी दिन व्यतीत भए ही दूसरी आवृत्ति हो है तथापि घटती तिथिकी विवक्षा न करि पक्षके पंद्रही दिन गिणि ऐसा कथन किया है । ऐसेही अन्य आवृत्ति वा विषुपनिविषै साधन करनां ॥४२९॥

आगैं विषुपविषै नक्षत्रका ल्यावनां अन्य प्रकार करि दोग गाथानि करि कहैं हैं;—

आउट्टिरिक्खमस्सिणपहुदीदो गणिय तत्थ अट्टजुदे ।

इसुपेसु हांति रिक्खा इह गणणा कित्तियादीदो ॥ ४३० ॥

आवृत्तिऋक्षं अश्विनीप्रभूतितः गणयित्वा तत्र अष्टयुते ।

विषुपेषु भवति ऋक्षाणि इह गणना कृत्तिकादितः ॥ ४३० ॥

अर्थ—आवृत्तिका नक्षत्रकौं अश्विनी नक्षत्रतैं लगाय गिणिए जेथवां होइ तिहविषै आठ मिलाएं जो प्रमाण होइ तेथवां नक्षत्र विषुपविषै जाननां इहां गणना कृत्तिका आदितैं करनी । उदाहरण-विवक्षित तीसरी आवृत्तिका नक्षत्र मृगशीर्षा सो अश्विनी मृगशीर्ष नक्षत्र पांचवो है । बहुरि पांचविषै आठ मिलाएं तेरह होइ सो कृत्तिका नक्षत्रतैं तेरहवां नक्षत्र स्वाति है । सोई गणना किए तीसरा विषुपविषै स्वाति नक्षत्र जाननां ॥ ४३० ॥

आगैं आवृत्ति नक्षत्रका प्रमाणविषै आठ मिलाएं नक्षत्र प्रमाणतैं राशि अधिक होइ तौ कहा करिए सो कहैं हैं;—

अहियंकादडवीसं छंडेज्जो विदियपंचमट्टाणे ।

एकं णिक्खिक्ख छट्ठे दसमे विय एकमषणिज्जो ॥ ४३१ ॥

अधिकांकादष्टविंशं त्याज्याः द्वितीयपंचमस्थाने ।

एकं निक्षिप षष्ठे दशमेपि च एकमपनेयम् ॥ ४३१ ॥

अर्थ—आवृत्ति नक्षत्रकौं अश्विनीतैं गिनैं जेथवां होइ तामें आठ मिलाएं जो अठाईसतैं अधिक राशि होइ तौ तीहमैस्यो अठाईस घटाइए । अर दूसरा पांचवां आवृत्ति स्थानविषै आठ मिलाएं जो राशि होइ तामें एक और मिलाइए । अर छटा दशवां आवृत्ति स्थानमेंस्यो एक घटाइए इनका उदाहरण चौथी आवृत्तिविषै शतभिषक नक्षत्र है सो अश्विनीतैं पर्चासवां है । तामें आठ मिलाएं तेतीस होइ तिनमेंसो अठाईस घटाए पांच रहे सो कृत्तिकेतैं पांचवां नक्षत्र पुनर्वसु है । सोई चौथा विषुपविषै जाननां ऐसे अन्यत्र भी जाननां । बहुरि दूसरी आवृत्तिविषै हस्त नक्षत्र है सो अश्विनीतैं तेरहवां है तामें आठ मिलाएं इकईस होइ एक और मिलाएं बाईस होइ सो कृत्तिकेतैं बाईसवां नक्षत्र धनिष्ठा है सोई दूसरा विषुपविषै जाननां । ऐसैं पांचवां स्थानविषै जानि लैंना । बहुरि छट्टी आवृत्तिविषै पुष्य नक्षत्र है सो अश्विनीतैं आठवां है । तामें आठ मिलाएं सोलह

होइ तामैं एक घटाएं पंद्रह रहें सो कृत्तिकारतैं पंद्रह्हां नक्षत्र अनुराधा है । सोई पांचवां विषुपविषै नक्षत्र है । ऐसैं दशवां स्थानविषै भी जानि लेनां । इहां अठईस नक्षत्रकी विवक्षा है तातैं गण-
नाविषै अभिजितका भी ग्रहण करनां ॥ ४३१ ॥

आगैं नक्षत्रनिके नाम अनुक्रमतैं कहैं हैं;—

कित्तियरोहिणिमियसिर अद्दपुणव्वसु सपुस्स असिलेस्सा ।

मह पुव्वुत्तर हत्था चित्ता सादी विसाह अणुराहा ॥ ४३२ ॥

कृत्तिका रोहिणी मृगशीर्षा आर्द्रा पुनर्वसुः सपुष्यः आश्लेषा ।

मघा पूर्वा उत्तरा हस्तः चित्रा स्वातिः विशाखा अनुराधा ॥ ४३२ ॥

अर्थ—कृत्तिका १ रोहिणी १ मृगशीर्षा १ आर्द्रा १ पुनर्वसु १ पुष्य १ अश्लेषा १
मघा १ पूर्वाफाल्गुनी १ उत्तराफाल्गुनी १ हस्त १ चित्रा १ स्वाति १ विसाखा १ अनुराधा ४३२

जेठ्ठा मूल पुव्वुत्तर आसाढा अभिजिसवणसधणिट्ठा ।

तो सदभिसपुव्वुत्तरभद्रपदा रेवदस्सिणी भरणी ॥ ४३३ ॥

ज्येष्ठा मूलं पूर्वोत्तरौ आपाढौ अभिजित् श्रवणः सधनिष्ठा ।

ततः शतभिषा पूर्वोत्तरभाद्रपदा रेवती अश्विनी भरणी ॥ ४३३ ॥

अर्थ—ज्येष्ठा १ मूल १ पूर्वाषाढ १ उत्तराषाढ १ अभिजित १ श्रवण १ धनिष्ठा १
शतभिषक १ पूर्वाभाद्रपदा १ उत्तराभाद्रपदा १ रेवती १ अश्विनी १ भरणी १ ए अठईस
नक्षत्रनिके नाम हैं । गणनाविषै इस क्रमतैं गिननैं ॥ ४३३ ॥

आगैं नक्षत्रनिके अधिदेवतानिकौं दाय गाथानि करि कहैं हैं;—

अग्नि पयावदि सोमो रुद्रो दिति देवमंति सप्पो य ।

पितृभगअरियमदिणयरतोद्वणिलिदग्गिमिच्छिदा ॥ ४३४ ॥

अग्निः प्रजापतिः सोमः रुद्रः अदितिः देवमंत्री सर्पश्च ।

पिताभगः अर्यमा दिनकरः त्वष्टा अनिलेद्राग्निमित्रेन्द्राः ॥ ४३४ ॥

अर्थ—अग्नि १ प्रजापति १ सोम १ रुद्र १ दिति १ देवमंत्री १ सर्प १ पिता १ भग
१ अर्यमा १ दिनकरा १ त्वष्टा १ अनिल १ इंद्रग्नि १ मित्र १ इंद्र १ ॥ ४३४ ॥

तो णेरिदि जल विस्सो बह्मा विण्हू वसू य वरुण अजा ।

अहिवद्धि पूसण अस्सा जमो वि अहिदेवदा कमसो ॥ ४३५ ॥

ततः नैऋतिः जलः विश्वः ब्रह्मा विष्णुः वसुश्च वरुणः अजः ।

अभिवृद्धिः पूषा अश्वः यमोऽपि अधिदेवताः क्रमशः ॥ ४३५ ॥

अर्थ—तहां पीछैं नैऋति १ जल १ विश्व १ ब्रह्मा १ विष्णु १ वसु १ वरुण १ अज
१ अभिवृद्धि १ पूषा १ अश्व १ यम १ ए कृत्तिका आदि नक्षत्रनिके अनुक्रम करि अधिदेवता
है । नक्षत्ररूप तारिनिके स्वामी जे देव तिनिके ए नाम जाननैं ॥ ४३५ ॥

आगै नक्षत्रनिकी स्थिति विशेषका विधान कहै हैं;—

किञ्चित्पडंतिसमये अहम मघरिक्खमोदि मज्झणहं ।

अणुराहारिक्खुदओ एवं सेसे वि भासिज्जो ॥ ४३६ ॥

कृत्तिकापतनसमये अष्टमं मघाक्रक्षं एति मध्याह्नम् ।

अनुराधाक्रक्षोदयः एवं शेषेषु अपि भाषणीयम् ॥ ४३६ ॥

अर्थ—कृत्तिका नक्षत्रका पतन समय कहिए अस्त होनैका काळ तीहविषै इस कृत्तिकारतैं आठवां मघा नक्षत्र सो मध्यान्ह कहिए वीचि प्राप्त हो है । बहुरि तीह मघातैं आठवां अनुराधा नक्षत्र सो उदय हो है । ऐसेही रोहिणी आदि नक्षत्रनिविषै जो नक्षत्र अस्त होइ तीह समय तीह नक्षत्रसौं आठवां नक्षत्र मध्यान्हको प्राप्त होइ । अर तीहसौं आठवां नक्षत्र उदयको प्राप्त होइ ऐसा कहना ॥ ४३६ ॥

आगै चन्द्रमाके पंद्रह मार्ग हैं तिनविषै इस इस मार्गविषै ए नक्षत्र तिष्ठै हैं । ऐसा तीन गाथानि करि कहै हैं;—

अभिजिणव सादि पुव्वुत्तरा य चंद्रस्स पढममग्गहि ।

तदि ए मघापुणव्वसु सत्तमि ए रोहिणी चित्ता ॥ ४३७ ॥

अभिजिन्नव स्वातिः पूर्वोत्तरा च चन्द्रस्य प्रथममार्गे ।

तृतीये मघापुनर्वसू सप्तमे रोहिणी चित्राः ॥ ४३७ ॥

अर्थ—अभिजित आदि नव सो अभिजित १ श्रवण १ धनिष्ठा १ शतभिषा १ पूर्वा भाद्र-पदा १ उत्तरा भाद्रपदा १ रेवती १ अश्विनी १ भरणी १ अर ए नव स्वाति १ पूर्वाफाल्गुनी १ उत्तराफाल्गुनी १ ए बारहतौ चन्द्रमाके प्रथम मार्गविषै विचरै हैं । जो चन्द्रमाका प्रथम अभ्यन्तर वीथी रूप परिधि तीहकै उपरि जो परिधि तिहविषै भूषण करै है । ऐसेही तीसरा मार्गविषै मघा १ पुनर्वसु ए दौय नक्षत्र विचरै हैं । सातवां मार्गविषै रोहिणी चित्रा ए दौय नक्षत्र विचरै हैं ॥ ४३७ ॥

छट्ठमदसमेयारसमे किञ्चित् विसाह अणुराहा ।

जेट्ठा कमेण सेसा पण्णारसमहि अट्ठेव ॥ ४३८ ॥

षष्ठाष्टमदशमैकादशे कृत्तिका विशाखा अनुराधा ।

ज्येष्ठा क्रमेण शेषाणि पंचदशे अष्टैव ॥ ४३८ ॥

अर्थ—छठा मार्गविषै कृत्तिका आठवांविषै विशाखा दशवांविषै अनुराधा ग्यारवांविषै ज्येष्ठा क्रम करि विचरै हैं । अबशेष आठ नक्षत्र पंद्रहवां अंतका मार्गके उपरि विचरै हैं ॥ ४३८ ॥

ते शेष आठ नक्षत्र कौन सो कहै हैं;—

हत्थं मूलतियं बिय मियसिरदुग पुस्सदोण्णि अट्ठेव ।

अट्ठपहे णक्खत्ता तिह्वांति हु बारसादीया ॥ ४३९ ॥

हस्तः मूलत्रयं अपि मृगशीर्षद्विकं पुष्यद्वयं अष्टैव ।

अष्टपथे नक्षत्राणि तिष्ठति हि द्वादशादीनि ॥ ४३९ ॥

अर्थ—हस्त १ मूल त्रय कहिए मूल पूर्वाषाढ १ उत्तराषाढ १ मृगशीर्ष द्विक कहिए मृगशीर्षा १ आद्रा १ पुष्यद्वयं कहिए पुष्य १ अश्लेषा ए आठ अवशेष जानने । ऐसैं प्रथमादिक पथनिविषैं बारह आदि नक्षत्र चन्द्रमाके आठ पथनिकै ऊपरि तिष्ठै हैं ॥ ४३९ ॥

आगैं नक्षत्रनिके तारानिकी संख्या दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

कित्तिय पद्मुदिसु तारा छप्पण तिय एक छत्ति छक चऊ ।

दो दो पंचकेकं चउ छत्तियणवचउक चऊ ॥ ४४० ॥

कृतिकाप्रभृतिपु ताराः षट् पंच तिस्रः एका षट् त्रिषट्चतुः ।

द्वे द्वे पंच एकैका चतुःषट् त्रिकनवचतुष्काः चतस्रः ॥ ४४० ॥

अर्थ—कृतिका आदि नक्षत्रनिके तारे अनुक्रम करि छह पांच तीन एक छह तीन छह च्यारि दोय दोय पांच एक एक च्यारि छव तीन नव च्यारि च्यारि ॥ ४४० ॥

तिय तिय पंचेकारहियसय दो दो कमेण बत्तीसा ।

पंच य तिण्णि य तारा अट्ठाविसाण रिक्खाणं ॥ ४४१ ॥

तिस्रः तिस्रः पंचकादशाधिकशतं द्वे द्वे क्रमेण द्वात्रिंशत् ।

पंच च तिस्रः च तारा अष्टाविंशानां ऋक्षाणाम् ॥ ४४१ ॥

अर्थ—तीन तीन पांच ग्यारह अधिक एक सौ दोय दोय बत्तीस पांच तीन ऐसैं ए तारा क्रमकरि अठार्हिस नक्षत्रनिके हैं ॥ ४४१ ॥

आगैं तिन तारानिका आकारविशेषकों तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

वीयणसअलुद्धीए मियसिरदीवे य तोरणे छत्ते ।

बह्मियगोमुत्ते विय सरजुगहत्थुप्पले दीवे ॥ ४४२ ॥

वीजनशकटोद्धिका मृगशिरदीपे च तोरणे छत्रे ।

वरमीकगोमूत्रे अपि शरयुगहस्तोत्पले दीपे ॥ ४४२ ॥

अर्थ—कृतिका नक्षत्रके छह तारे हैं तिनका आकार बीजना सदृश है । ऐसेही रोहिणी आदि नक्षत्रके तारानिका आकार क्रमतैं गाड़ेकी ऊद्धिका १ हिरणका मस्तक १ दीपक तोरण १ छत्र १ बंबई १ गऊका मूत्र १ शरका युगल १ हाथ १ कमल १ दीपक ॥ ४४२ ॥

अधियरणे बरहारे वीणासिंगे य विच्छिष्टए सरिसा ।

दुक्कयवावीहरिगजकुंभे मुरवे पतंतपक्खीए ॥ ४४३ ॥

अधिकरणे बरहारे वीणाशृंगे च वृश्चिकेन सदृशाः ।

दुष्कृतवापीहरिगजकुंभेन मुरजेन पतत्पक्षिणा ॥ ४४३ ॥

अर्थ—अहिरिणी १ उच्छिष्टहार १ वीणाकाशृंग १ वीछू १ जीर्णा वावडी १ सिंहका कुंभस्थल १ मृदंग १ पडतापंखी १ ॥ ४४३ ॥

सेनागयपुष्पावरगत्ते णावा हयस्स सिरसरिसा ।

चुलीपासाणणिभा किच्चियआदीणि रिक्खाणि ॥ ४४४ ॥

सेनागजपूर्वावरगात्रे नावा हयस्य शिरसाःसदृशाः ।

चुलीपाषाणनिभाःकृत्तिकादीनि ऋक्षाणि ॥ ४४४ ॥

अर्थ—सेना १ हस्तीका आगिला शरीर १ हस्तीका पाछिला शरीर १ नाव १ घोड़ेका मस्तक १ चूल्हाका पापाण १ समान आकारकौ धरै हैं तारे जिनके ऐसे कृत्तिकादि नक्षत्र जानतें ॥ ४४४ ॥

आगै कृत्तिकादि नक्षत्रनिके परिवार रूप तारानिकों कहै हैं;—

एकारसयसहस्सं सगसगतारापमाणसंगुणिदं ।

परिवारतारसंखा किच्चियणक्वत्तपहुदीणं ॥ ४४५ ॥

एकादशशतसहस्त्रं स्वकस्वकताराप्रमाणसंगुणितम् ।

परिवारतारासंख्या कृत्तिकानक्षत्रप्रभृतीनाम् ॥ ४४५ ॥

अर्थ—ग्यारह अधिक एकसौ सहित एक हजारकौ अपने अपने तारानिका प्रमाण करि गुणें जो प्रमाण होइ सो कृत्तिका नक्षत्र आदि नक्षत्रनिके परिवाररूप तारेनिकी संख्या जाननी । उदाहरण—कृत्तिका नक्षत्रके मूल तारे छह हैं इनिकों ग्यारहसै ग्यारह करि गुणे छह हजार छह सै छासठि तारे कृत्तिका नक्षत्रके परिवारके हैं । ऐसैं ही रोहिणी आदिके भी जाननै नक्षत्रनिके जे आधिदेवता तिनिके अनुसारि इनित्रिषै वसै हैं ॥ ४४५ ॥

आगै पंच प्रकार ज्योतिषी देवनिका आयु प्रमाण कहै हैं;—

इंदिणसुकुगुरिदरे लक्ख सहस्सा सयं च सहपल्लं ।

पल्लं दलं तु तारे वरावरं पादपादद्धं ॥ ४४६ ॥

इंद्रिनशुकुगुर्वितरेषु लक्षं सहस्त्रं शतं च सहपल्यं ।

पल्यं दलं तु तारासु वरमवरं पादपादार्यम् ॥ ४४६ ॥

अर्थ—चंद्रमा सूर्य शुक्र बृहस्पति इतर इनत्रिषै क्रमतैं लाख हजार सौ वर्ष सहित पल्य अर्द्ध पल्य प्रमाण आयु है । भावार्थ—चंद्रमाका आयु लाख वर्ष सहित पल्य प्रमाण है । सूर्यका आयु हजार वर्ष सहित पल्य प्रमाण है । शुक्रका आयु सौ वर्ष सहित पल्य प्रमाण है । बृहस्पतिका आयु पल्य प्रमाण है । इतर बुध मंगल शनैश्वरादिकका आयु आध पल्य प्रमाण है । बहुरि तारे कहिए तारा अर नक्षत्र इनका आयु उत्कृष्ट तौ पाद कहिए पल्यका चौथा भाग प्रमाण है । अर जघन्य पादार्थ कहिए पल्यका आठवां भाग प्रमाण है ॥ ४४६ ॥

आगै चन्द्रमा सूर्यनिकी देवांगनानिकों दोय गाथानि करि कहै हैं;—

चंदाभा य सुसीमा पहंकरा अच्चिमालिणी चंदे ।

सूरे दुदि सूरपहा पहंकरा अच्चिमालिणी देवी ॥ ४४७ ॥

चन्द्राभा च सुसीमा प्रभंकरा अर्चिमालिनी चंद्रे ।

सूर्ये बुतिः सूर्यप्रभा प्रभंकरा अर्चिमालिनी देव्यः ॥ ४४७ ॥

अर्थ—चद्राभा १ सुसीमा १ प्रभंकरा १ अर्चिमालिनी १ ए च्यारि चन्द्रमाकै पट्ट देवांगना हैं । बहुरि सूर्यकै युति १ सूर्यप्रभा १ प्रभंकरा १ अर्चिमालिनी ए च्यारि पट्ट देवी हैं ॥४४७॥

जेठा ताओ पुह पुह परिवारचदुस्सहस्सदेवीणं ।

परिवारदेविसरिसं पत्तेयमिमा विउव्वंति ॥ ४४८ ॥

जेष्ठाः ताः पृथक् पृथक् परिवारचतुःसहस्रदेवीनाम् ।

परिवारदेवीसदृशं प्रत्येकमिमाः विकुर्वन्ति ॥ ४४८ ॥

अर्थ—ते ज्येष्ठ कहिए पट्ट देवी प्रथक् प्रथक च्यारि हजार परिवार देवीनिकी है ।

भावार्थ—च्यारि च्यारि हजार परिवार देवांगनानिकी एक एक पट्ट देवांगना है । बहुरि इस परिवार देवी समान संख्याको प्रत्येक विक्रिया करै हैं । भावार्थ—एक एक पट्ट देवांगना विक्रिया करै तौ च्यारि हजार हो हैं ॥ ४४८ ॥

आगै ज्योतिष्क देवांगनानिका आयु प्रमाण कहैं हैं;—

जोइसदेवीणाऊ सगसगदेवाणमद्धयं होदि ।

सव्वणिगिहसुराणां वत्तीसा होति देवीओ ॥ ४४९ ॥

ज्योतिष्कदेवीनामायुः स्वकस्वकदेवानामर्धं भवति ।

सर्वनिकृष्टसुराणां द्वात्रिंशत् भवंति देव्यः ॥ ४४९ ॥

अर्थ—ज्योतिष्क देवांगनानिका आयु अपने अपने भर्तार देवनिका आयुतैं अर्द्ध-प्रमाण जानना । बहुरि इहां सर्वतैं निकृष्ट हीन पुन्यवान देव तिनकै वत्तीस देवांगना हो हैं । मध्यविषै यथायोग्य देवांगनानिकी संख्या जाननी ॥ ४४९ ॥

आगै भवनत्रिकविषै जे जीव उपजै है तिनको कहैं हैं;—

उम्मग्गचारि सणिदाणणलादिमुदा अकामणिज्जरिणो ।

कुदवा सबलचरित्ता भवणतियं जंति ते जीवा ॥ ४५० ॥

उन्मार्गचारिणः सनिदानाः अनलादिमृता अकामनिर्जरिणः ।

कुतपसः शबलचारित्रा भवनत्रये यांति ते जीवाः ॥ ४५० ॥

अर्थ—उन्मार्गचारी कहिए जिनमततैं विपरीत धर्मके आचरनेवाले, बहुरि सनिदानाः कहिए निदान जिननै किया होइ, बहुरि अनलादिमृताः कहिए अग्नि जल झंपापात आदिकतैं मूए, बहुरि अकामनिर्जरिणः कहिए विना अभिलाष बंधादिकके निमित्ततैं परीषह सहनादि करि जिनकै निर्जेरा भई बहुरि कुतपसः कहिए पंचाग्नि आदि खोटे तपके करनेवाले बहुरि शबलचारित्राः कहिए सदोष चारित्रिके धरनहारे जे जीव हैं ते भवनत्रय जो भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी तिनविषै जाय उपजै हैं ॥ ४५० ॥ ऐसैं ज्योतिर्लोकका अधिकार समाप्त भया ।

इतिश्री नेमिचंद्राचार्य विरचित त्रिलोकसारमें चौथा ज्योतिर्लोकका अधिकार

समाप्त भया ॥ ४ ॥

॥ अथ वैमानिकलोकाधिकार ॥ ५ ॥

अथ अनुक्रम करि प्राप्त भया वैमानिक लोकका वर्णन करनेका है अभिलाषा जाकेँ ऐसा आचार्य सो प्रथम विमाननिकी संख्याका प्रतिपादनकेँ अर्थे तिन विमाननिविधै तिष्ठते जे अविनाशी जिन मंदिर तिनकौँ प्रमाणपूर्वक नमस्कारकौँ करै है;—

चुलसीदिलखसत्ताणउदिसहस्से तहेव तेवीसे ।
सब्बे विमाणसमणगर्जिणदगेहे णमंसायि ॥ ४५१ ॥
चतुरशीतिलक्षसत्तनवतिसहस्रान् तथैव त्रयोर्विशान् ।
सर्वान् विमानसमानजिनेन्द्रगेहान् नमस्यामि ॥ ४५१ ॥

अर्थ—चौरासी लाख सिल्याणवै हजार तेवीस सर्व विमान संख्याकेँ समान जिनेश्वरके मंदिर हैं जातैँ एक एक विमानविधैँ एक एक जिन मंदिर पाईएँ हैं तिनकौँ नमस्कार करौँ हौँ ४५१

आगैँ इन विमाननिका कल्प अर कल्पातीत भेद करि तहां प्रथमही कल्प जे स्वर्ग तिनके नाम दोय गाथानि करि कहैँ हैं;—

सोहम्मीसाणसणक्कुमारमाहिंदगा हु कप्पा हु ।
षम्हव्वम्हुत्तरगो लांतवकापिठ्ठगो छट्ठो ॥ ४५२ ॥
सौधमैँशानसनत्कुमारमाहेन्द्रका हि कल्पा हि ।
ब्रह्मब्रह्मोत्तरकौँ लांतवकापिठ्ठकौँ षष्ठः ॥ ४५२ ॥

अर्थ—सौधर्म १ ईशान १ सनत्कुमार १ माहेन्द्र १ ए च्यारि कल्प कहिएँ स्वर्ग हैं । बहुरि ब्रह्म १ ब्रह्मोत्तर ए दोय कल्प मिलि करि इनका इंद्र एक ही है तीह अपेक्षा एक ही कल्प है । बहुरि लांतव १ कापिष्ठ ए दोय भी एक इंद्रकी अपेक्षा छठा एक कल्प है ॥ ४५२ ॥

सुकमहासुकगदो सदरसहस्सारगो हु तत्तो दु ।
आणदपाणदआरणअच्चुदगा हौँति कप्पा हु ॥ ४५३ ॥
शुक्रमहाशुक्रगतः शतारसहस्रारगो हि ततस्तु ।
आनतप्राणतारणाच्युतगा भवति कल्पा हि ॥ ४५३ ॥

अर्थ—शुक्र १ महाशुक्र १ ए दोय भी एक इंद्र अपेक्षा एक कल्प है, बहुरि शता १ सहस्रार १ ए दोय भी एक इंद्र अपेक्षा एक कल्प है । बहुरि तहां पीछैँ आनत १ प्राणात १ आरण १ अच्युत ए च्यारि कल्प हैं ॥ ४५३ ॥

मज्झिमचउजुगलाणं पुव्वावरजुम्मगेसु सेसेसु ।
सव्वत्थ हौँति इदा इदि बारस हौँति कप्पा हु ॥ ४५४ ॥

मध्यमचतुर्थ्युगलानां पूर्वापरयुग्मयोः शेषेषु ।

सर्वत्र भवन्ति इंद्रा द्वादश भवन्ति कल्पा हि ॥ ४५४ ॥

अर्थ—सोलह स्वर्गनिके आठ युगल तिनविषै मध्यका च्यारि युगलनिविषै पूर्व दोय युगल तौ ब्रह्म ब्रह्मोत्तर अर लांतव कापिट अर अपर दोय युगल शुक्र सता महाशुक्र अर सहश्रार इन च्यारि युगलनिके एक एक इंद्र हैं । बहुरि अवशेष आठ कल्प तिनिविषै सर्वत्र एक एक इंद्र है । ऐसे इंद्र अपेक्षा करि कल्प वारह है ॥ ४५४ ॥

आगै स्वर्गनिके ऊपरि जे कल्पातीत विमान तिनके नाम कहै हैं;—

हृद्विममज्झिमउवरिमतिच्चिय गेवेज्ज णवअणुदिसगा ।

पंचाणुत्तरगा विय कप्पादीदा हु अहमिंदा ॥ ४५५ ॥

अधस्तनमध्यमोपरिमत्रिस्त्रिकाणि प्रैवेयाणि नव अनुदिशानि ।

पंचानुत्तरकाणि अपि च कल्पातीता हि अहमिंद्राः ॥ ४५५ ॥

अर्थ—अधस्तन अर मध्यम अर उपरिम तीन तीन प्रैवेयक हैं तिनके नव प्रैवेयक भए । बहुरि नव अनुदिश विमान हैं । बहुरि पंच अनुत्तर विमान हैं । ऐसै ए कल्पातीत विमान हैं । तिनविषै अहमिंद्र देव तिष्ठै हैं ॥ ४५५ ॥

आगै नव अनुदिश विमान अर पंच अनुत्तर विमान तिनके नाम दोय गाथानि करि कहै हैं;—

अचीय अच्चिमालिणि वडरे वडरोयणा अणुदिसगा ।

सोमो य सोमरूवे अंके फलिके य आइचे ॥ ४५६ ॥

अर्चिः अर्चिमालिनी वैरो वैरोचनः अनुदिशकानि ।

सोमश्च सोमरूपः अंकः स्फटिकः च आदित्यं ॥ ४५६ ॥

अर्थ—अर्चि १ अर्चिमालिनी १ वैर १ वैरोचन १ ए च्यारि श्रेणी वर्द्ध विमान पूर्वादि दिशानि विषै प्राप्त हैं । बहुरि सोम १ सोमरूप १ अंक १ स्फटिक ए च्यारि प्रकीर्णक विमान विदिशानि विषै प्राप्त हैं । मध्यविषै आदिव्यनामा इंद्रक विमान है । ऐसै ए नव अनुदिश विमाननिके नाम हैं ॥ ४५६ ॥

विजयो दु वैजयंतो जयंत अवराजिदो य पुन्वाइं ।

सव्वट्टसिद्धिणामा मज्झग्मि अणुत्तरा पंच ॥ ४५७ ॥

विजयस्तु वैजयंतः जयंतः अपराजितश्च पूर्वादयः ।

सर्वार्थसिद्धिनामा मध्ये अनुत्तराः पंच ॥ ४५७ ॥

अर्थ—विजय १ वैजयं १ जयंत १ अपराजित १ ए च्यारि पूर्वादि दिशानि विषै श्रेणी-वद्ध विमाननिके नाम हैं । बहुरि मध्यविषै सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक विमान है । ऐसै ए पंच अनुत्तर विमान हैं ॥ ४५७ ॥

आगै कहे जु कल्प अर कल्पातीत विमान तिनके स्थितिस्थानकौ कहैं हैं;—

मेरुतलादु दिवड्डं दिवड्डदलछकएकरज्जुह्नि ।
कप्पाणमद्वजुगला गेवेज्जादी य होंति कमे ॥ ४५८ ॥
मेरुतलात् द्वयर्धं द्वयर्धदलषट्कैकरज्जौ ।
कल्पानां अष्टयुगलानि प्रैवेयादयश्च भवंति क्रमेण ॥ ४५८ ॥

अर्थ—सौधर्म ईशान युगलतैं लगाय अनुक्रमतैं मेरुतलतैं । ड्योढ अर अर्द्ध छह राजू-निविषैं स्वर्गनिके आठ युगल हैं । **भावार्थ**—मेरु तलतैं ड्यौड़ राजूविषैं सौधर्म ईशान युगल हैं । ताकै ऊपरि ड्यौड़ राजूविषै सन्तकुमार माहेन्द्र युगल हैं । आगै ऊपरि ऊपरि आध आध राजूविषैं छह युगल क्रम करि हैं ऐसैं छह राजूनिविषै स्वोल्ह स्वर्ग हैं । बहुरि तिनके ऊपर एक राजूविषै नवप्रैवेयक अर अमुदिश अनुत्तरविमान कमतै हैं ॥ ४५८ ॥

अब सौधर्मादिक निविषै विमाननिकी संख्या तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

वत्तीसट्टाबासं बारस अट्टेव होंति लक्खाणि ।
सोहम्मादिचउके लक्खचउकं तु बह्मदुगे ॥ ४५९ ॥
द्वात्रिंशदष्टाविंशतिः द्वादश अष्टैव भवंति लक्षाणि ।
सौधर्मादिचतुष्के लक्षचतुष्कं तु ब्रह्मादिके ॥ ४५९ ॥

अर्थ—वत्तीस अठाईस बारह आठ लाख सौधर्मादिक च्यारि स्वर्गनिविषैं विमान हैं । तहां सौधर्मिवैष वत्तीस लाख ईशानविषै अठाईस लाख सन्तकुमारविषै बारह लाख महेन्द्रविषै आठ लाख विमान हैं । बहुरि ब्रह्मब्रह्मोत्तर युगलविषै मिलि करि च्यारि लाख विमान हैं ॥ ४५९ ॥

तत्तो जुम्माण तिण्ण पण्णासं ताल छस्सहस्साणं ।
सत्तसयाणि य आणदकप्पचउकेसु पिण्डेण ॥ ४६० ॥
ततो युग्मानां त्रये पंचाशत् चत्वारिंशत् षट्सहस्राणां ।
सप्तशतानि च आनतकल्पचतुष्केषु पिण्डेन ॥ ४६० ॥

अर्थ—तहां पीछैं तीन युग्मविषै पचास चालीस छह हजार हैं । तहां लांतव कापिष्ट युगलविषै पचास हजार शुक्र महाशुक्र युगलविषै चालीस हजार सतार सहस्रार युगलविषै छह हजार विमान हैं । बहुरि आनतादि च्यारि कल्पनिविषै पिंड करि मिलाए हुए सातसैं विमान हैं ॥ ४६० ॥

एक्कारसत्तसमहियसयमेक्काणउदी णव य पंचेव ।
गेवेज्जाणं तिच्चिसु अणुदिस्साणुत्तरे होंति ॥ ४६१ ॥
एकादशसप्तसमधिकशतं एकनवतिः नव च पंचैव ।
प्रैवेयाणां त्रिखिषु अनुदिशानुत्तरे भवंति ॥ ४६१ ॥

अर्थ—ग्यारह सात अधिकसौ इक्याणवैं नव पांच विमान प्रैवेयक तीन तीन अर अनुदिश अनुत्तरविषै हो है । तहां तीन अधो प्रैवेयिकनिविषैं एकसौ ग्यारह अर तीन मध्य प्रैवेयकनिविषैं एकसौ

सात अर तीन ऊर्द्ध प्रैवेयकनिविषै इक्याणवै अर अनुदिशविषै नव अर अनुत्तरविषै पांच विमान जानने ॥ ४६१ ॥

अब प्रथमादि स्वर्गनिविषै प्रत्तरनिकी संख्याका प्रतिपादनकै अर्थि इंद्रकनिका प्रमाण निरूपै हैं । जातै एक एक प्रतरविषै एक एक इंद्रक विमान है;—

इगितीससत्त चत्तारि दोण्णि एक्केक्क छक्क चदुकप्पे ।

त्तित्थिय एक्केक्किंदयणामा उडुआदितेवट्ठी ॥ ४६२ ॥

एकत्रिंशत्सप्त चत्वारि द्वे एकमेकं षट्कं चतुःकल्पे ।

त्रीणि त्रीणि एकमेकं इंद्रकनामानि ऋत्वादित्रिषष्टिः ॥ ४६२ ॥

अर्थ—सौधर्म युग्मविषै इकतीस इंद्रक हैं सनत्कुमार युग्मविषै सात इंद्रक है ब्रह्मयुग्म-विषै च्यारि इंद्रक हैं लांतव युग्मविषै दोय इन्द्रक हैं शुक्र युग्मविषै एक इंद्रक है शतार युग्मविषै एक इंद्रक है । आनंतादि च्यारि कल्पनिविषै छह इंद्रक हैं । अधस्तन आदि तीन प्रकार प्रैवेयकनिविषै तीन तीन इंद्रक है नव अनुदिशविषै एक इंद्रक है । पंच अनुत्तरविषै एक इंद्रक है ऐसे ए तरेसठि इंद्रक है सौ इनके ऋतुविमान आदि तरेसठि नाम हैं ॥ ४६२ ॥

आगै इन इंद्रकनिका ऊर्द्ध अपेक्षा अंतराल अर तिनका नामका अवतार कहै है;—

एक्केक्कइंदयस्य य विच्चाळमसंखजोयणपमाणं ।

एदाणं णामाणं बोच्छामो आणुपुण्वाओ ॥ ४६३ ॥

एकैकमिंद्रकस्य च विचालं असंख्यातयोजनप्रमाणं ।

एतेषां नामानि वक्ष्यामः आनुपूर्व्या ॥ ४६३ ॥

अर्थ—एक एक इंद्रककै वीचि अंतराल असंख्यात योजन प्रमाण है । अब इंद्रकनिके नाम अनुपूर्वी कहिए नीचैतै लगाय क्रम करि कहौ हौ ॥ ४६३ ॥

कहे इंद्रक तिनके नाम छह गाथानि करि कहै हैं;—

उडुविमलचंद्रवग्गु वीररुणं णंदणं च णल्लिणं च ।

कंचण रोहिद चंचं मरुदं रिड्ढिसय वेलुरियं ॥ ४६४ ॥

ऋतुविमलचंद्रवल्गुवीरारुणनंदनं च नल्लिनं च ।

कांचनं रोहितं चंचत् मरुत् ऋद्धीशं वैडूर्यं ॥ ४६४ ॥

अर्थ—ऋतु १ विमल १ चंद्र १ बल्गु १ वीर १ अरुण १ नंदन १ नल्लिन १ कांचन १ रोहित १ चंचत् १ मरुत् १ ऋद्धीश १ वैडूर्य ॥ ४६४ ॥

रुचग रुचिरं क फल्लिहं तवणीयं मेघमब्भ हारिदं ।

पडमं लोहिद वज्जं णंदावत्तं पहंकरयं ॥ ४६५ ॥

रुचकं रुचिरं अकं स्फटिकं तपनीयं मेघं अभ्रं हारिदं ।

पडं लोहितं वज्जं नंदावर्तं प्रभंकरं ॥ ४६५ ॥

अर्थ—रुचक १ रुचिर १ अंक १ स्फटिक १ तपनीय १ मेघ १ अम्र १ हरित १ पद्म १ लोहित १ वज्र १ नद्यावर्त्त १ प्रभंकर ॥ ४६५ ॥

पिट्टक गज मित्त पहा अंजण वणमाल णाग गरुडं च ।

लंगल बलभद्रं चय चक्रं चरिमं च अडतीसो ॥ ४६६ ॥

पृष्ठकं गजं मित्रं प्रभं अंजनं वनमालं नागं गरुडं च ।

लांगलं बलभद्रं च चक्रं चरिमं च अष्टात्रिंशत् ॥ ४६६ ॥

अर्थ—पृष्ठक १ गज १ मित्र १ प्रभ १ अंजन १ वनमाल १ नाग १ गरुड १ लांगल १ बलभद्र १ अंतका इंद्रकं चक्र १ ऐसै सौधर्मादि च्यारि स्वर्गविषै मिलाए हुए अठतीस इंद्रक-निके नाम हैं ॥ ४६६ ॥

रिष्टसुरसमिदि बह्वं बह्युत्तर बह्यहृदयलांतवयं ।

सुकं खलु सुकदुगे सदरविमाणं तु सदरदुगे ॥ ४६७ ॥

अरिष्टसुरसमिति ब्रह्म ब्रह्मोत्तरं ब्रह्महृदयलांतवकं ।

शुकं खलु शुकद्विके शतारविमानं तु शतारयुगे ॥ ४६७ ॥ ।

अर्थ—अरिष्ट १ सुरस १ ब्रह्म १ ब्रह्मोत्तर १ ए च्यारि ब्रह्म युगलविषै इंद्रकानिके नाम हैं । बहुरि ब्रह्महृदय १ लांतव १ ये दोय लांतव युगलविषै इंद्रकानिके नाम हैं । बहुरि शुक युगल विषै शुक नामा एक इंद्रक है । बहुरि शतार द्विकविषै शतार विमान नाम इंद्रक है ॥ ४६७ ॥

आणद पाणदपुष्पय सातक तह आरणच्युदवसाणे ।

तो गेवेज्ज सुदरिसण अमोह तह सुप्रबुद्धं च ॥ ४६८ ॥

आनतप्राणतपुष्पकं शातकं तथा आरणाच्युतावसाने ।

ततः प्रैवेयके सुदर्शनं अमोघं तथा सुप्रबुद्धं च ॥ ४६८ ॥

अर्थ—आनत १ प्राणत १ पुष्पक १ सातक १ आरण १ अच्युत १ ए छह इंद्रकानिके नाम आनतादि अच्युत पर्यंत च्यारि कल्पनिविषै हैं । बहुरि तहां पीछे नव प्रैवेयकनिविषै सुदर्शन १ अमोघ १ सुप्रबुद्ध १ हैं ॥ ४६८ ॥

जसहर सुभदणामा सुविसालं सुमणसं च सोमणसं ।

पीदिकरमाइच्चं चरिमे सव्वद्वसिद्धी दु ॥ ४६९ ॥

यशोधरं सुभद्रनाम सुविशालं सुमनसं च सौमनसं ।

प्रीतिकरं आदित्यं चरमे सर्वार्थसिद्धिस्तुं ॥ ४६९ ॥

अर्थ—यशोधर १ सुभद्र नाम १ सुविशाल १ सुमनस १ सौमनस १ प्रीतिकर ए नव इंद्रकानिके नाम है । बहुरि नव अनुदिशविषै आदित्यनामा इंद्रक है । बहुरि अंतविषै पंचानुत्तरविषै सर्वार्थसिद्धिनामा इंद्रक है ॥ ४६९ ॥

आगै मेरुतलादु दिवडे इत्यादि पूर्वोक्त गाथाका अर्थविषै सर्वत्र विमान तिष्ठै हैं कहा ? ऐसा प्रश्न होतै उत्तर कहै है;—

णाभिगिरिचूलिगुवरिं बालगंगंतरद्वियो हु उडुइंदो ।
सिद्धीदो धो बारह जोयणमाणह्नि सव्वटं ॥ ४७० ॥
नाभिगिरिचूलिकोपरि बालागंगंतरे स्थितः हि ऋत्विद्रकः ।
सिद्धितः अधः द्वादशयोजनमाने सर्वार्थः ॥ ४७० ॥

अर्थ—नाभिगिरि जो वीचि तिष्ठता सुदर्शन मेरुगिरि ताकी चूलिकाके ऊपरि बालका अग्रभाग प्रमाण अंतराल छोडि पहला ऋतु नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है । बहुरि सिद्धक्षेत्रतै नीचै बारह योजन प्रमाणविषै अंतका सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है ॥ ४७० ॥

आगै कल्प अर कल्पातीतनिकै विक्रियादिकानिकी मर्यादाकौ कहै हैं;—

सगसगचरिमिदयधयदंडं कल्पावणीणमंतं सु ।
कल्पादीदवणिस्स य अंतं लोयंतयं होदि ॥ ४७१ ॥
स्वकस्वकचरमेद्रकध्वजदंडः कल्पावनीनां अंतः खलु ।
कल्पातीतावनेश्च अंतः लोकांतकः भवति ॥ ४७१ ॥

अर्थ—अपनां अपनां अंतका इंद्रकका जु ध्वजादंड सो कल्पसंबंधी पृथ्वीका अंत जाननां । जैसे सौधर्म युगलविषै इकतीसवां अंतका इंद्रकका ध्वजादंड जहां है तहां सौधर्म युगलका अंत है । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि कल्पातीत संबंधी पृथ्वीका अंत सो लोकका अंत है । लोकका जहां अंत है तहां कल्पातीत पृथ्वीका अंत है ॥ ४७१ ॥

आगै इंद्रकनिका विस्तार कहै हैं;—

माणुसखित्तपमाणं उडु सव्वटं तु जंबुदीवसमं ।
उभयविसेसे रूऊणिदयभजिदे दु हाणिचयं ॥ ४७२ ॥
मानुप्रक्षेत्रप्रमाणं ऋतु सर्वार्थं तु जंबुद्वीपसमं ।
उभयविशेषे रूपोनेद्रकभक्ते तु हानिचयम् ॥ ४७२ ॥

अर्थ—मनुष्य क्षेत्र प्रमाण पैतालीस लाख योजन व्यासकौ धरै ऋतुनामा इंद्रक है । बहुरि सर्वार्थसिद्धि विमान जंबूद्वीप समान एक लाख योजन व्यासकौ धरै हैं । बहुरि दोऊनिविषै विशेष ग्रहण करिए तहां पैतालीस लाखभै सौ एक लाख घटाएं चवालीस लाख अवशेष रहे तिनकौ एक घाटि इंद्रकका भाग दीजिये तहां इंद्रक प्रमाण तरेसठिभैस्यौ एक घटाएं बासठि ताका भाग दिएं सत्तरी हजार नवसै सतसठि योजन अर तेईसका इकतीसवां भाग प्रमाण आया । सो इंद्रक इंद्रक प्रति हानि चय जाननां । याका वर्णन—पैतालीसलाख योजन ऋतुविमान है यामे सत्तरी हजार नवसै सतसठि योजन अर तेईसका इकतीसवां भाग प्रमाण हानि चय घटाईए तब चवालीस लाख गुणतीस हजार बत्तीस योजन अर आठ इकतीसवां भाग प्रमाण रखा सो इतनां दूसरा इंद्रकका व्यास प्रमाण है । यामे हानिचय घटाएं तीसरा इंद्रकका व्यास प्रमाण है । ऐसे क्रमतै यावत् अंत इंद्रकका एक लाख योजन व्यास रहै तावत् पूर्व पूर्व इंद्रक व्यासमैस्यौ हानिचय घटाएं उत्तर उत्तर इंद्रकका व्यास प्रमाण हो है ॥ ४७२ ॥

इहाँतैं आगैं श्रेणीबद्धनिका अवस्थानका स्वरूप निरूपै हैं;—

वासट्टी सेढिगया पढमिंदे चउदिसासु पत्तेयं ।

पडिदिसमेकैकूणं अणुदिसाणुत्तरेकोत्ति ॥ ४७३ ॥

द्वापष्टिः श्रेणिगतानि प्रथमेन्द्रे चतुर्दिशासु प्रत्येकं ।

प्रतिदिशमेकैकोनं अनुदिशानुत्तरे एकमिति ॥ ४७३ ॥

अर्थ—पहला इंद्रक विषै च्यारि दिशानिविषै प्रत्येक श्रेणीबद्ध विमान बासठि हैं । ताके चारौं दिशानिविषै दोयसै अठतालीस भए । यातैं ऊपरि द्वितीयादि पटलनिविषै एक एक दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध घटाएं ऊपरि ऊपरि विवक्षित श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है सो पटल पटल प्रति च्यारि च्यारि घटते श्रेणीबद्ध जाननैं । यावत् अनुदिश वा अनुत्तरविषै दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध अवशेष रहे तावत् ऐसैं जाननां । इहां दक्षिण इंद्र उत्तर इंद्रका भेद करि श्रेणीबद्धनिका संकलित धन ल्यावनैका विधान कहिए है । सौधर्म इंद्रकै प्रथम पटलविषै एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध बासठि हैं अर दक्षिण इंद्रकै उत्तर दिशा बिना तीन दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध पाईए हैं तातैं तीन करि गुणें प्रथम पटलविषै एकसौ छियासी श्रेणीबद्ध भया सो यहु तौ आदि भया, अर पटल पटल प्रति तीन तीन श्रेणीबद्ध घटै हैं तातैं ऋण रूप चय तीन । बहुरि पटल इकतीस हैं तातैं गछ इकतीस । अब इहां हीन संकलनको आश्रयकरि धन ल्याईए हैं । पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं पभवजुदं पदगुणिदं पदगणिदं तं वियाणाहि । १ । इस सूत्रकरि पद जो गछ सो इकतीस यामें एक घटाएं तीस याकों दोयका भाग दिएं पंद्रह इनको उत्तर जो चय तीन तीहकरि गुणें पैतालीस इनको प्रभव जो आदि एकसौ छियासी तामैं इहां ऋण रूप चय है तातैं पैतालीस घटाएं एकसौ इकतालीस रहे । इनको पद जो गछ इकतीस तीहकरि गुणें च्यारि हजार तीनसै इकहत्तरि सौधर्मकै श्रेणीबद्ध विमान भए । बहुरि इन विषै इकतीस पटल संबंधी इकतीस इंद्रक मिलाएं च्यारि हजार च्यारिसै दोय विमान हो हैं । बहुरि ऐसैं ही ईशान विषै उत्तर इंद्रनिकै एक उत्तर दिशा संबंधी श्रेणीबद्ध पाईए है । अर ईसान उत्तर इंद्र है तातैं आदि बासठि उत्तर एक गछ इकतीस करि संकलित धन ल्याएं ईशानकै चौदहसै सत्तावन श्रेणीबद्ध हो है । इहां ईशानविषै इंद्रक न मिलावनें, जातैं उत्तर इंद्रनिकै उत्तर इंद्र विमानका अभाव है । बहुरि सौधर्मकै एकदिशा संबंधी श्रेणीबद्ध बासठि तिनमें अपना गछ इकतीस घटाएं अबशेष इकतीस रहे सोई सनत्कुमार माहेन्द्रविषै प्रथम पटलविषै एकदिशा संबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण है । ऐसैं ही पूर्व पूर्व युगलके प्रथम पटलके एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण विषै अपनां अपनां पटल प्रमाण गछ घटाएं उपरि उपरि युगलके प्रथम पटलके एक दिशा संबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है । सो सौधर्म ईशानविषै बासठि ६२ सनत्कुमार माहेन्द्रविषै इकतीस ब्रह्म ब्रह्मोत्तरविषै चौईस लांतव कापिष्टविषै बीस शुक्र महाशुक्रविषै अठारह शतार सहश्रारविषै सत्तरह आनतादि च्यारि कल्पविषै सोलह अधोभ्रैवेयकविषै दश मध्य भ्रैवेयकविषै सात उपरिम भ्रैवेयकविषै च्यारि नवानुदिशविषै एक श्रेणीबद्ध विमान एक दिशासंबंधी जाननां । इस श्रेणीबद्धनिके प्रमाणको दक्षिण इंद्र अपेक्षा करि तीन करि गुणें उत्तर इंद्र अपेक्षा करि एक करि

गुणें अर जहां दक्षिण उत्तर इंद्रकी विवक्षा नांहीं तहां चारि करि गुणें आदिका प्रमाण हो है । सो सनत्कुमारकै तरेणत्रै माहेन्द्रकै इकतीस ब्रह्मब्रह्मोत्तरविषै छिनवै लांतब कापिष्टविषै असी शुक्र महाशुक्रविषै बहत्तरि सतार सहस्रारविषै अडसठि आनतादिविषै चौंसठि अधो प्रैवेयकविषै चालीस मध्य प्रैवेयकविषै अठाईस उपरिम प्रैवेयकविषै सोलह नव अनुदिशविषै च्यारि ऐसैं आदिका प्रमाण है । बहुरि उत्तर जो ऋणरूप चय सो सनतकुमारविषै तीन माहेन्द्रविषै एक उपरि सर्वत्र च्यारि प्रमाण हैं । बहुरि गछ अपनां अपनां पटल प्रमाण सनतकुमारादिविषै क्रमतैं सात सात च्यारि दोय एक एक छह तीन तीन तीन एक एक है । ऐसैं आदि उत्तर गछ जानिं तीह तीहका संकलित धन दक्षिण इंद्र या उत्तर इंद्रनिकै ल्यावना । सो सनत्कुमारादिविषै क्रमतैं श्रेणीवद्भनिका प्रमाण ५८८।१९६।३६०।१५६।७२।६८।३२४।१०८।७२।३६। ४ जाननैं ॥ ४७३ ॥

आगैं तहां प्रथम इंद्रक संबंधी श्रेणीवद्भनिका अवस्थानका वर्णनकौ कहैं हैं;—

उडुसेढीवद्ददलं स्वयंभुरमणुदहिपणिधिभागहि ।

आइल्लतिणि दीवे तिणिण समुद्रे य सेसा हु ॥ ४७४ ॥

ऋतुश्रेणीवद्ददलं स्वयंभुरमणोदधिप्रणिधिभागे ।

आदिमत्रिपु द्वीपेषु त्रिपु समुद्रेषु च शेषं हि ॥ ४७४ ॥

अर्थ—ऋतु इंद्रक संबंधी श्रेणीवद्भनिका एक दिशा संबंधी प्रमाण बासठि ताका आधा इकतीस श्रेणीवद्भ तौ स्वयंभूरमण नामा समुद्रका प्रणिधि भाग कहिए निकटवर्त्ती उपरिमभाग तिहविषै तिष्ठै हैं । अवशेष अर्वाचीन तीन द्वीप अर तीन समुद्रनिविषै तिष्ठै हैं । **भावार्थ**—प्रथम पटलविषै एक दिशासंबंधी बासठि श्रेणीवद्भ हैं । तिनविषै इकतीस तौ स्वयंभूरमण समुद्र उपरि हैं पंद्रह स्वयंभूरमण द्वीप ऊपरि हैं । आठ तीहस्यौं लगता समुद्र उपरि हैं च्यारि तीहसौं लगता द्वीप उपरि हैं दोय तिहसौं लगता समुद्र उपरि हैं एक तीहसौं लगता द्वीप उपरि हैं । एक तीहसौं लगता अनेक द्वीप समुद्रनिके ऊपरि है ॥ ४७४ ॥

आगैं प्रकीर्णकनिका स्वरूप वा प्रमाण कहैं हैं;—

सेढीणं विच्चाले पुष्पपइण्णय इव द्वियविमाणा ।

होंति पइण्णइणामा सेढिंदयहीणरासिसमा ॥ ४७५ ॥

श्रेणीनां विचाले पुष्पप्रकीर्णकानि इव स्थितविमानानि ।

भवन्ति प्रकीर्णकनामानि श्रेणींद्रकहीनराशिसमानि ॥ ४७५ ॥

अर्थ—श्रेणीवद्भ विमाननिका विच्चाल कहिए अंतराल तिहविषै प्रकीर्णकानि पुष्पाणि इव कहिए बखेरफूल जैसे पंक्तिरहित जहां तहां स्थित होइ तैसैं जे विमान पंक्तिरहित जहां तहां होइ ते प्रकीर्णक नामधारक जाननैं । ते श्रेणीवद्भ वा इंद्रककरि हीन स्वकीय रासि समान जाननैं । सो कैसैं ? बत्तीस लाख अठाईस लाख इत्यादि सौधर्मादिकविषै विमाननिका संख्या प्रवैं

कही है तामै पूर्वोक्त श्रेणीवद्भनिका वार इंद्रनिका प्रमाण घटाएं जो जो राशि अवशेष रहै तिह समान प्रमाण धरै सौधर्मादिकविषै प्रकीर्णक विमान जाननै ॥ ४७५ ॥

आगै दक्षिणअर उत्तर इंद्रनिके इंद्रक श्रेणीवद्भ प्रकीर्णकनिका विभागकौं दिखावै है;—

उत्तरसेढावद्धा वायव्वीसाणकोणगपड्णणा ।

उत्तरइंद्रणिवद्धा सेसा दक्खिणदिसिंदपडिबद्धा ॥ ४७६ ॥

उत्तरश्रेणीवद्धा वायव्येशानकोणगप्रकीर्णानि ।

उत्तरेन्द्रनिबद्धानि शेषाणि दक्षिणदिगींद्रप्रतिबद्धानि ॥ ४७६ ॥

अर्थ—उत्तरदिशासंबंधी श्रेणीवद्भ विमान बहुरि वायवी अर ईशान कोणकौं प्राप्त भए प्रकीर्णक विमान ए तौ उत्तरदिशाका इंद्रसंबंधी है । बहुरि अवशेष सर्व विमान दक्षिणदिशाका इंद्रसंबंधी है । अब इहां ऊर्द्ध लोककी रचनाविषै स्वर्गादिकका अवस्थान वा इंद्रकादिक विमाननिका स्वरूप मंद बुद्धिनिके समझनेके अर्थ कहिए हैं । मेरुतलतै लगाय सात राजू उंचा उर्द्धलोक है । तीहविषै छह राजूकी उंचाईविषै सोलह स्वर्ग हैं । तहां मेरुतलतै लगाय ड्योढ राजूकी उंचाईविषै तौ सौधर्म ईशान युगल है ताके इकतीस पटल हैं । पटल कहा कहिए ? तिर्यक-रूप बरोबरि क्षेत्रविषै जहां विमान पाईए ताका नाम पटल है । तहां मेरुकी चूलिकातै बाला-प्रका अंतराल छोड़ि प्रथम पटल है । ताके ऊपरि वीचिमें असंख्यात योजन प्रमाण अंतरालविषै अवकाश है । बहुरि तहां उपरि द्वितीय पटल है । ऐसै ही वीचि वीचिमें असंख्यात असंख्यात योजनका अवकाशरूप अंतराल छोड़ि उपरि उपरि पटल जाननै । इकतीसवां अंतका पटल ड्यौढ राजू क्षेत्रका अंतविषै पाईए है । बहुरि पटल पटल प्रति वीचिमें जो एक एक विमान पाईए तिनका नाम इंद्रक विमान है । सो मेरु उपरि तौ ऋतु इंद्रक है । ताकी सूधिविषै उपरि उपरि पटल पटल प्रति एक एक इंद्रक जाननां । बहुरि पटल पटल प्रति तिस इंद्रक विमानकी पूर्वादिक च्यारि दिशानिविषै जे पंक्तिबंध विमान पाईए तिनका नाम श्रेणीवद्भ विमान है । बहुरि पटल पटल प्रति तिन तिन श्रेणीवद्भनिके वीचि विदशानिविषै जे वखेरे हुए फूलकी ज्यो जहां तहां तिष्ठते विमान हैं तिनका नाम प्रकीर्णक विमान है ते ऐसै जाननै । तहां पटल पटलसंबंधी उत्तरदिशाका श्रेणीवद्भ विमान वायवी ईशान विदिशाका प्रकीर्णक इनविषै तौ उत्तर इंद्र ईशान ताकी आज्ञा प्रवर्त्तै है । बहुरि अवशेष सर्व इंद्रक विमान अर तीन दिशाका श्रेणीवद्भ विमान अर नेऋति आग्नेय विदिशाका प्रकीर्णक इनविषै दक्षिण इंद्र जो सौधर्म ताकी आज्ञा प्रवर्त्तै है । तहां जिनि विमाननिविषै सौधर्म इंद्रकी आज्ञा प्रवर्त्तै हैं तिनके समूहका नाम सौधर्म स्वर्ग है । बहुरि जिन विमाननिविषै ईशान इंद्रकी आज्ञा प्रवर्त्तै है तिनका समूहका नाम ईशान स्वर्ग है । जैसे इहां एक नगरविषै अपने अपने स्वामीके नामकी अपेक्षा वसतीनिका नाम हो है तैसे जाननां । बहुरि ताके ऊपरि ड्यौढ राजूकी उंचाईविषै सनत्कुमार माहेन्द्र युगल है । तहां सात पटल हैं सो सौधर्म युगलके अंत पटलतै असंख्यात योजन अंतराल छोड़ि प्रथम पटल है । ताके ऊपरि उपरि तैसे ही अंतराल लिएं द्वितीयदि पटल है । तिनविषै इंद्रकादिक विमान पूर्वोक्त प्रकार जाननै, तहां उत्तर श्रेणीवद्भ वायवी

ईशान कोंणके प्रकीर्णकनिविषै उत्तर इंद्र माहेन्द्रकी आज्ञा प्रवर्तै है । अबशेषविषै दक्षिण इंद्र सन-
कुमार ताकी आज्ञा प्रवर्तै है । तिनकी अपेक्षा तिन विमाननिका समूहका नाम सनकुमार स्वर्ग
अर माहेन्द्र स्वर्ग है । बहुरि ऐसै ही उपरि उपरि अन्य युगल वा तिनके पटल जाननें । बहुरि
तिनविषै इंद्रकादिक विमान जाननें । उंचाई आदिकका प्रमाण पूर्वे गाथानि कर कहि आए हैं सो
जाननां । तहां ब्रह्म ब्रह्मोत्तर युगल अर लांतव कापिष्ट युगल अर शुक्र महाशुक्र युगल अर
शतार सहश्रार युगलनिविषै एक एक इंद्र ही है । तहां बसती अपेक्षा दोग नाम हैं इंद्रकी अपेक्षा
नाहीं हैं । जैसे इहां नगरविषै एक स्वामी हो है तौ भी बसतीनिका जुदा नाम हो है । बहुरि
आनत प्राणत युगल अर आरण अच्युत युगलनिविषै दोग दोग इंद्र हैं तहां आनत आरण दक्षिण
इंद्र हैं, प्राणत अच्युत उत्तर इंद्र हैं तहां पूर्वोक्त विधान जाननां । बहुरि आरण अच्युतका अंततै
एक राजू क्षेत्रकी उंचाईविषै कल्पातीत क्षेत्र है । तहां प्रथम प्रैवेयक है, तहां अधो मध्य ऊर्द्ध
प्रैवेयकनिके तीन तीन पटल हैं । तहां अच्युतके अंततै असंख्यात योजन अंतराल छोड़ि अधो
प्रैवेयकका प्रथम पटल है । बहुरि ताकै ऊपरि तैसे ही अंतराल छोड़ि उपरि उपरि पटल हैं ।
तिन पटलनिविषै इंद्रकादिक विमाननिका स्वरूप पूर्वोक्त जाननां । बहुरि ऊपरिम प्रैवेयकनिका अंत
पटलतै असंख्यात योजन अंतराल छोड़ि नव अनुदिश विमान हैं । तहां बीचिमें एक इंद्रक चान्यौ
दिशानिविषै च्यारि श्रेणीबद्ध च्यारि विदिशानिविषै च्यारि प्रकीर्णक विमान पाइए हैं । बहुरि तीह-
सौ असंख्यात योजन अंतराल छोड़ि उपरि पंच अनुत्तर विमान हैं, तहां बीचिमें सर्वार्थसिद्धि
नामा इंद्रक है । च्यारि विदिशानिविषै विजयादि च्यारि श्रेणीबद्ध हैं । बहुरि तीहसौ बारह योजन
अंतराल छोड़ि सिद्धक्षेत्र हैं । ऐसै उर्द्धलोककी रचना जाननी । इहां पटलनिका ऊर्द्ध अंतरालविषै
वा विमाननिकै बीचि तिर्यक अंतरालविषै सर्वत्र अवकाश जाननां, नरकवत् पृथ्वी नाहीं है । या
प्रकार मंद बुद्धीनिकै समझनेके अर्थ पूर्वे जो कथन कहा था ताकौ विस्तार करि कहा ॥ ४७६ ॥

अब इंद्रकादिकनिका व्यासकौ निरूपै है;—

इंद्रयसेढीबद्धप्पइण्णयाणं क्रमेण वित्थारा ।

संखेज्जमसंखेज्जं उभयं च य जोयणाणं तु ॥ ४७७ ॥

इंद्रकश्रेणीबद्धप्रकीर्णकानां क्रमेण विस्ताराः ।

संख्येयं असंख्येयं उभयं च योजनानां तु ॥ ४७७ ॥

अर्थ—इंद्रक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णक विमाननिका क्रमतै विस्तार संख्यात असंख्यात उभय-
योजन प्रमाण है । भावार्थ—इंद्रक विमान सर्व संख्यात योजन प्रमाण विस्तार धरै हैं । श्रेणी-
बद्ध विमान सर्व असंख्यात योजन विस्तार धरै हैं । प्रकीर्णकविमान केई संख्यात केई असंख्यात
योजन विस्तारकौ धरें हैं ॥ ४७७ ॥

आगै सौधर्मादिकनिविषै संख्यात असंख्यात योजन विस्तार धरै विमाननिकी संख्याकौ
दोग गाथानि करि कहै है;—

कल्पेसु रासिपंचमभागं संखेज्जवित्थडा होंति ।

तत्तो तिण्णद्वारस सत्तरसेक्केकयं कमसो ॥ ४७८ ॥

कल्पेषु राशिपंचमभागं संख्येयविस्तारा भवति ।

ततः त्रीण्यष्टादश सप्तदशैकमेकं क्रमशः ॥ ४७८ ॥

अर्थ—कल्पनिविधे अपनां अपनां बत्तीस लाख अठाईस लाख इत्यादि विमाननिका प्रमाण-रूप राशि ताका पांचवां भाग प्रमाण विमान संख्यात योजन विस्तारको धरै हैं । जैसे सौधर्म स्वर्गविधे बत्तीस लाख विमान ताका पांचवां भाग छह लाख चालीस हजार विमान संख्यात योजन विस्तार धरै है । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । तातै परै अधो प्रैवेयकविधे तीन मध्य प्रैवेयकविधे अठारह उपरिम प्रैवेयकविधे सतरह नवानुदिशविधे एक पंचानुत्तरविधे एक विमान संख्यात योजन विस्तार धरै है ॥ ४७८ ॥

सगसगसंखेज्जूणा सगसगरासी असंखवासगया ।

अहवा पंचमभागं चउगुणिदे होंति कल्पेसु ॥ ४७९ ॥

स्वकस्वकसंख्येयोनाः स्वकस्वकराशयः असंख्यव्यासगताः ।

अथवा पंचमभागं चतुर्गुणिते भवति कल्पेषु ॥ ४७९ ॥

अर्थ—स्वकीयस्वकीयसंख्यात योजन व्यास धरै विमाननिकी संख्याकरि हीन जो अपनां अपनां बत्तीस लाख विमाननिका प्रमाणरूप राशि सो असंख्यात योजन विस्तार धरै है जैसे सौधर्मविधे बत्तीस लाख राशिभैसौ संख्यात व्यास विमानकी संख्या छह लाख चालीस हजार घटाए अवशेष पच्चीस लाख साठि हजार विमान असंख्यात योजन प्रमाण विस्तार धरै है । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । अथवा राशिका पांचवां भागको चौगुणा किए कल्पनिविधे असंख्यात योजन विस्तार धरै विमाननिकी संख्या हो है । जैसे सौधर्मविधे राशि बत्तीस लाखका पांचवां भाग छह लाख चालीस हजार ताका चौगुणा पच्चीस लाख साठि हजार विमान असंख्यात योजन विस्तार धरै है । ऐसै ही अन्यत्र जाननां ॥ ४७९ ॥

आगै तिन विमाननिका बाहुल्य कहै हैं;—

छज्जुगल सेसकप्पे तित्तिसु सेसे विमाणतलवहलं ।

इगिबीसेयारसयं णवणउदिरिणक्कमा होंति ॥ ४८० ॥

पड्युगलेषु शेषकल्पेषु त्रिस्त्रिषु शेषे विमानतलवहलं ।

एकधिशत्येकादशशतं नवनवतिक्कणक्रमा भवति ॥ ४८० ॥

अर्थ—सौधर्म युगलादिक छह युगलनिके छह स्थान अर अवशेष आनतादि कल्पनिका एक स्थान अर तीन तीन अधो प्रैवेयकादिकानिका एक एक स्थान तिनकै प्रैवेयकानिके तीन स्थान अर अवशेष अनुदिश अनुत्तरका एक स्थान ऐसै इन ग्यारह स्थानकनिविधे विमानतल बाहुल्य कहिए विमाननिकी भूमिकी मोटाई सो आदिविधे इकईस अधिक ग्यारहसै योजन प्रमाण अर ऊपरि सर्वत्र क्रमते निष्पाणवै निष्पाणवै योजन घाटि प्रमाण है । ११२१।१०२२।९२३।८२४।७२५।६२६।५२७।

४२८।३२९।२३०।१३१ । भावार्थ—ऐसैं मोटाई प्रमाणकौ धरैं विमाननिकी भूमि है । ताकै ऊपरि नगर मंदरादि रचना है ॥ ४८० ॥

आगैं तिन विमाननिका वर्णका अनुक्रमकौ वर्णें हैं;—

दोहो चउचउकपे पंचयवण्णा हु किण्वज्जा हु ।

णीलूणा रत्तूणा विमाणवण्णा तदो सुक्का ॥ ४८१ ॥

द्वयोः द्वयोः चतुश्चतुःकल्पेषु पंचकवर्णा हि कृष्णवर्जाः हि ।

नीलोनाः रक्तोनाः विमानवर्णा ततः शुक्लाः ॥ ४८१ ॥

अर्थ—दोय दोय च्यारि च्यारि कल्पनिविषैं क्रमतैं पंचवर्ण कृष्णवर्जित नीलवर्जित रक्तवर्जित विमाननिके वर्ण हैं । तातैं उपरि शुक्लवर्ण ही है । भावार्थ—सौं धर्मईशानविषैं विमाननिका पंच वर्ण है । सनत्कुमार माहेन्द्रविषैं कृष्ण विना च्यारि वर्ण हैं । ब्रह्मादि च्यारि कल्पनिविषैं नील भी नाहीं तातैं तीन वर्ण हैं । शुक्रादि च्यारि कल्पनिविषैं रक्त भी नाहीं हैं । तातैं दोय वर्ण है । तातैं आनतादि अनुत्तर पर्यंत सर्वनिविषैं एक शुक्ल वर्ण ही है । ऐसैं विमाननिका रंग जाननां ॥ ४८१ ॥

आगैं विमाननिका आधार स्थानकौ निरूपैं हैं;—

दुसु दुसु अट्टसु कपे जलवातुभये पइट्टियविमाणा ।

सेसविमाणा सव्वे आगासपइट्टया होंति ॥४८२ ॥

द्वयोः द्वयोः अष्टसु कल्पेषु जलवातोभये प्रतिष्ठितविमानाः ।

शेषविमानाः सर्वे आकाशप्रतिष्ठिता भवन्ति ॥ ४८२ ॥

अर्थ—दोय दोय आठ कल्पनिविषैं जल वात उभय प्रतिष्ठित विमान हैं । अबशेष विमान सर्व आकाश प्रतिष्ठित हैं । भावार्थ—सौं धर्म युगलविषैं तौ जलकै आधार विमान हैं जलरूप पुद्गल स्कंधनिका आधार करि तिनकै ऊपरि विमान तिष्ठैं हैं । बहुरि सनत्कुमार युगलविषैं पवनकै आधार विमान हैं पवनरूप पुद्गल स्कंधनिका आधार करि तिनकै ऊपरि विमान तिष्ठैं हैं । बहुरि ब्रह्मादि आठ कल्पनिविषैं विमान जल अर पवन दोऊकै आधार है । जलरूप वा पवनरूप परणएं पुद्गल स्कंधनिका आधार करि तिनकै ऊपरि विमान तिष्ठैं हैं । बहुरि आनतादि अनुत्तरपर्यंतविषैं आकाशकै आधारि सर्व विमान हैं । पुद्गल स्कंधनिका आधारकी अपेक्षा रहित आकाशहीकै आधार तिष्ठैं हैं ॥ ४८२ ॥

अब इंद्र जहां तिष्ठैं हैं तिस विमानकौ कहैं हैं;—

छज्जुगलसेसकपे अट्टारसमह्नि सेट्ठिबद्धह्नि ।

दौहीणकमं दक्खिणउत्तरभागह्नि देविदा ॥ ४८३ ॥

षड्युगलशेषकल्पेषु अष्टादशमे श्रेणीबद्धे ।

द्विहीनक्रमं दक्षिणोत्तरभागे देवैद्राः ॥ ४८३ ॥

अर्थ—छह युगल अर अबशेष कल्प इन सात स्थानकविषैं अपनां अपनां अंतका पटल संबंधी अठारव्हां श्रेणीबद्धविषैं अर दोय दोय घाटि क्रम लिएं श्रेणीबद्धविषैं दक्षिण दिशाका भागविषैं दक्षिण

इंद्र अर उत्तर दिशाका भागविषै उत्तर इंद्र तिष्ठै है । भावार्थ—सौधर्म युगलका इकतीसवां अत पटलविषै इंद्रक विमानतै लगता श्रेणीबद्धतै लगाय अठारव्हां दक्षिणदिशाका श्रेणीबद्ध विमानविषै तौ सौधर्म इंद्र वसै है । अर उत्तर दिशाका श्रेणीबद्ध विमानविषै ईशान इंद्र वसै है । बहुरि सनत्कुमार युगलका अंतका पटलविषै सोलव्हां दक्षिण श्रेणीबद्धविषै सनत्कुमार इंद्र वसै हैं । उत्तर श्रेणी बद्धविषै माहेन्द्र इंद्र वसै है । बहुरि ब्रह्मयुगलका अंतपटलका चौदव्हां दक्षिण श्रेणीबद्धविषै ब्रह्मइन्द्र वसै है । बहुरि लांतव युगलका अंतपटलका बारव्हां उत्तर श्रेणीबद्धविषै लांतव इंद्र वसै हैं । बहुरि शुक्र युगलका अंतपटलका दशवां दक्षिण श्रेणीबद्धविषै शुक्र इंद्र वसै है । बहुरि शतार युगलका अंतपटलका आठवां उत्तर श्रेणीबद्धविषै शतार इंद्र वसै हैं । बहुरि आनत युगलका अंतका पटलका छठां दक्षिण श्रेणीबद्धविषै आरण इंद्र अर उत्तर श्रेणीबद्धविषै अच्युत इंद्र वसै है ॥ ४८३ ॥

आगैं तिन विमाननिके नाम दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

इंद्रद्वियं विमाणं सगसगकल्पं तु तस्स चउपासे ।

वेलुरियरजदसोकं मिसकसारं तु पुव्वादी ॥ ४८४ ॥

इंद्रस्थितं विमानं स्वकस्वकल्पं तु तस्य चतुःपार्श्वे ।

वैद्व्यरजताशोकं मृषत्कसारं तु पूर्वादिषु ॥ ४८४ ॥

अर्थ—इंद्र स्थित कहिए जिस विमानविषै इंद्र वसै है सो विमान स्वकस्वकल्पं कहिए अपने स्वर्गके नाम है जो अपना स्वर्गका नाम सोई तिस विमानका नाम है । जैसे सौधर्म इंद्र जहां वसै है तिस विमानका नाम सौधर्म है । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि तिस इंद्र स्थित विमानका चारौं पार्श्वनिविषै वैद्व्य १ रजत १ अशोक १ मृषत्कसार १ ऐसै नाम धरै च्यारि विमान पूर्वादि दिशानिविषै तिष्ठै हैं । सो यहु विधान सर्व दक्षिण इंद्रनिकै जाननां ॥ ४८४ ॥

रुचकं मंदरसोकं सत्तच्छदणामयं विमाणं तु ।

सव्वुत्तरइंदाणं विमाणपासेसु होंति कमे ॥ ४८५ ॥

रुचकं मंदराशोकं सत्तच्छदनामकं विमानं तु ।

सर्वोत्तरेन्द्राणां विमानपार्श्वेषु भवन्ति क्रमेण ॥ ४८५ ॥

अर्थ—रुचक १ मंदर १ अशोक १ सत्तच्छद ऐसै नाम धरै च्यारि विमान सर्व उत्तर इंद्रनिका विमानका चान्थौ पार्श्वनिविषै क्रमकरि पूर्वादि दिशानिविषै जाननें ॥ ४८५ ॥

आगैं सौधर्मादि देवनिके मुकुटके चिन्हनिकौं दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

सोहम्मादीवारस साणदआरणगजुगवि कमा ।

देवाण मउलचिहं वराहमयमहिसमच्छावि ॥ ४८६ ॥

सौधर्मादिद्वादशसु आनतारणकयुगोपि क्रमात् ।

देवानां मौलिचिन्हं वराहपृग्महिषमत्स्या अपि ॥ ४८६ ॥

अर्थ—सौधर्मादि बारह कल्पनिकै बारह स्थान अर आनत युगलका एक स्थान अर आरणयुगलका एक स्थान ऐसै इन चौदह स्थानकनिविषै अनुक्रमतै देवनिकै मुकुटविषै ए चिन्ह है । सूअर १ हिरण १ भैंसा १ मांछला १ ॥ ४८६ ॥

कुम्भो दहुरतुरया तो कुंजर चंद्र सप्प खग्गी य ।
 छगलो बसहो तत्तो चोदसमो होदि कल्पतरू ॥ ४८७ ॥
 क्रूर्मो दर्दुरस्तुरगस्ततः कुंजरः चंद्रः सर्पः खड्गी च ।
 छगलो वृषमः ततः चतुर्दशो भवति कल्पतरुः ॥ ४८७ ॥

अर्थ—काछिवो १ मीडक १ घोड़ो १ हाथी १ चंद्रमा १ सर्प १ खड्गी १ छैलो १ बैल १ तहां पीछें चौदहों कल्पवृक्ष १ इनके आकार देवनिके मुकुटविषै पाईए हैं ॥ ४८७ ॥

अब इंद्रनिका नगरका संस्थान अर विस्तारकौ दोग गाथानि करि कहैं हैं;—

सोहम्मादिचउक्के जुम्मचउक्के य सेसकप्पे य ।
 सगदेविजुदिंदाणं णयराणि हवंति णवयपदे ॥ ४८८ ॥
 सौधर्मादिचतुष्के युग्मचतुष्के च शेषकल्पे च ।
 स्वकदेवीयुतेंद्राणां नगराणि भवंति नवकपदे ॥ ४८८ ॥

अर्थ—सौधर्मादि च्यारि कल्पनिके च्यारि स्थान ब्रह्मयुगल आदि च्यारि युगलनिके च्यारि स्थान आनतादि अबशेष कल्पनिका एक स्थान इन नव स्थानकनिविषै अपनी अपनी देवांगना संयुक्त जे इंद्र तिनके नगर हैं । इहां आनतादि च्यारि कल्पनिविषै प्रत्येक बीस हजार योजन नगर व्यासकी समानतातैं एक स्थान कहा है ॥ ४८८ ॥

चुलसीदीय असीदी विहत्तरी सत्तरीय जोयणगा ।
 जावय वीससहस्रं समचउरस्साणि रम्माणि ॥ ४८९ ॥
 चतुरशीतिः अशीतिः द्वासततिः सप्ततिश्च योजनानि ।
 यावद्विशसहस्रं समचतुरस्राणि रम्याणि ॥ ४८९ ॥

अर्थ—चौरासी असी बहत्तरि सत्तरि हजार अर यावत वीस हजार होइ तावत् दश दश हजार घाटि नगरनिका विस्तार है । भावार्थ—सौधर्मविषै चौरासी हजार ईशानविषै असी हजार सनत्कुमार-विषै बहत्तरि हजार माहिन्द्रविषै सत्तरि हजार, ब्रह्मयुगलविषै साठि हजार, लांतव युगलविषै पचास हजार, शुक्रयुग्मविषै चालीस हजार, सतार युगलविषै तीस हजार, आनतादि च्यारि कल्पनिविषै प्रत्येक बीस बीस हजार योजन प्रमाण इंद्रनिके नगरनिका विस्तार जाननां । बहुरि ते नगर सम-चतुरस्र हैं जितने लंबे तितने ही चौड़े ऐसे चौकोर हैं अर रमणीक हैं ॥ ४८९ ॥

आगैं कहे नगर ताका प्रकारकी उचाईका स्वरूप कहैं हैं;—

लज्जुगलसेसकप्पे तप्पायारुदय जोयणं तिसदं ।
 पण्णासूणं पंचम तीसूणं उवरि वीसूणं ॥ ४९० ॥
 षट्पुगलशेषकल्पे तत्प्राकारोदयः योजनं त्रिशतं ।
 पंचाशदूनं पंचमे त्रिंशदूनं उपरि त्रिंशोनम् ॥ ४९० ॥

अर्थ—सौधर्म युगलादिक लह युगलनिके लह स्थान अर अबशेष च्यारि कल्पनिका एक स्थान इन सात स्थानकनिविषै अनुक्रमतैं तिन इंद्रनिके नगरनिका प्राकार जो कोट ताकी उचा-

ईका प्रमाण आदिविषै तीनसै ऊपरि पचास घाटि पांचवै स्थान तीस घाटि ऊपरि बीस घाटि योजन प्रमाण है । **भावार्थ**—सौधर्म युगलविषै तीनसै सनकुमार युग्मविषै अढाईसै ब्रह्मयुग्म-विषै दोयसै लांतव युग्मविषै ड्यौढसै शुक्र युग्मविषै एकसौ बीस सतार युग्मविषै एकसौ आनत चतुष्कविषै असी योजन प्रमाण तिन इंद्रनिके नगरनिका कोटकी उचाई है ॥ ४९० ॥

आगै तिन प्राकारनिका गाध अर विस्तार कहै हैं;—

गाढो वित्थारो विय पण्णासं दलकमं तु पंचमगे ।

चत्तारि तियं छट्टे चरिमे दुगमद्धसंजुत्तं ॥ ४९१ ॥

गाधो विस्तारः अपि पंचाशत् दलक्रमस्तु पंचमके ।

चत्वारि त्रीणि षष्टे चरमे द्विकमर्धसंयुक्तम् ॥ ४९१ ॥

अर्थ—गाध अर विस्तार दोऊ ही पचास अर अर्द्ध अर्द्ध क्रम अर पांचवै च्यारि छठै तीन अंतविषै आधा सहित दोय दोय योजन प्रमाण है । **भावार्थ**—भूमिविषै उचाईका नाम गाध है इहां ताहीका नाम नीवं कहिए हैं । बहुरि चौड़ाईका नाम विस्तार है इहां ताहीका नाम रदा कहिए हैं । तिन कोटनिकौ इन दोऊनिका प्रमाण समान है ताँ एकठा कहिए हैं । सौ कोटनिक गाध अर विस्तार पूर्वोक्त सौधर्म युग्मादि सातस्थानकनिविषै क्रमतै पचास पच्चीस साडाबारा सवाछै च्यारि तीन अढाई योजन प्रमाण है ॥ ४९१ ॥

आगै तिन प्राकारनिका गोपुरनिका स्वरूप दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

पडिदिस गोउरसंखा तिसि उदओवि चउतिदोणिसया ।

तत्तो दुगुणासीदी बीसविहीणं तदो ह्योदि ॥ ४९२ ॥

प्रतिदिशं गोपुरसंख्या तेषां उदयोपि चतुस्त्रिद्विशतानि ।

ततः द्विगुणाशीतिः विंशतिविहीनः ततः भवति ॥ ४९२ ॥

अर्थ—दिशा दिशा प्रति तिन कोटनिके गोपुर कहिए द्वार तिनकी संख्या अर तिनका उदय भी च्यारि तीन दोयसै तहां पीछै दूणा असी तहां पीछै बीस घाटि है । **भावार्थ**—तिन इंद्र नगरिके कोटके दिशा दिशा प्रति द्वारनिका प्रमाण अर तिन द्वारनिका उचाईका योजननिका प्रमाण पूर्वोक्त सौधर्म युग्मादि सात स्थाननिविषै अनुक्रमतै च्यारिसै तीनसै दोयसै एकसौ साटि एकसौ चालीस एकसौ बीस एकसौ जाननां ॥ ४९२ ॥

गोउरवासो कमसो सयजोयणगाणि तिसु य दसहीणं ।

बीसूणं पंचमगे तत्तो सव्वत्थ दसहीणं ॥ ४९३ ॥

गोपुरव्यासः क्रमशः शतयोजनानि त्रिषु च दशहीनं ।

विंशोने पंचमके ततः सर्वत्र दशहीनम् ॥ ४९३ ॥

अर्थ—गोपुरनिका व्यास क्रमतै सौ योजन तीन विषै दश घाटि पांचवै स्थान बीस घाटि ताँ परे सर्वत्र दश घाटि योजन प्रमाण है । **भावार्थ**—तिन गोपुरनिका व्यास जो चौड़ाईका

प्रमाण सो पूर्वोक्त सातस्थाननिविषै क्रमतैँ सौ निवै असी सत्तरि पचास चालीस तीस योजन प्रमाण है ॥ ४९३ ॥

आगैँ पूर्वोक्त नवस्थाननिका आश्रयकरि सामानिक तनुरक्षक अनीक देवनिका प्रमाण दोय गाथानिकरि कहै है;—

णयरपदे तत्संख्या समाणिया चउगुणा य तणुरक्खा ।

वसहतुरंगरथेभपदातीगंधव्वणच्चणी चेदि ॥ ४९४ ॥

नगरपदे तत्संख्या सामानिका चतुर्गुणाश्च तनुरक्षाः ।

वृषभतुरंगरथेभपदातिगंधर्वनर्तकी चेति ॥ ४९४ ॥

अर्थ—नगरव्यास वर्णनविषै जे स्थान कहे तिनविषै नगर व्याससमान सामानिक देव-निकी संख्या है सो सोहम्मादिचउके इत्यादि गाथाकरि कह्या नगरनिका नव स्थान तिनविषै चुलसीदि इत्यादि गाथाकरि तिन नगरनिका जो विस्तार कह्या तीह संख्याकै समान ही सामानिक देवनिकी संख्या है । **भावार्थ**—सौधर्मादि च्यारि कल्पनिके च्यारिस्थान ब्रह्मयुग्मादि च्यारि युग्मनिके च्यारि स्थान आनतादि च्यारि कल्पनिका एक स्थान इन नव स्थानकनिविषै अनुक्रमतैँ चौरासी असी बहत्तरि सत्तरि साठि पचास चालीस तीस बीस हजार सामानिक देवनिकी संख्या जाननां । बहुरि सो संख्या चौगुणी किएँ अंग रक्षकनिकी संख्या हो है । जेता जेता सामानिक देवनिका प्रमाण है तातैँ चौगुणा अंगरक्षक देवनिका प्रमाण है । बहुरि वृषभ १ घोड़ा १ रथ १ हाथी १ पयादा १ गंधर्व १ नर्तकी १ याप्रकार ॥ ४९४ ॥

सत्तेव य आणीया पत्तेयं सत्तसत्तकक्खजुदा ।

पढमं ससमाणसम तद्दुगुणं चरिमकक्खोत्ति ॥ ४९५ ॥

सत्तेव च आनीकानि प्रत्येकं सत्तसत्तकक्षयुतानि ।

प्रथमः स्वसमानसमः तद्द्विगुणं चरमकक्षांतम् ॥ ४९५ ॥

अर्थ—सात ही आनीक कहिए सेना हैं । सो एक एक आनीक सात कक्षकरि संयुक्त है । तहां प्रथम कक्ष तौ अपनां अपनां सामानिक देवनिका प्रमाणकै समान है । बहुरि तातैँ ऊपरि द्वितीयादिकक्ष दूणा दूणा क्रम लिएँ चरमकक्ष पर्यंत है । **भावार्थ**—इन्द्रनिके वृषभादि सात प्रच्छर सेना हैं । एक एक सेनाविषै सात सात कक्ष हैं जुदी जुदी फौजका नाम कक्ष है सो पहली कक्षविषै तौ वृषभादिकका प्रमाण जितनां जितनां सामानिक देवनिका प्रमाण कह्या तितनां तितनां चौरासी हजार आदि जाननां । अर द्वितीयादि कक्षविषै अंतका सातवां कक्षपर्यंत तीह प्रथम कक्षतैँ दूणा दूणा वृषभादिकनिका प्रमाण जाननां । सो पूर्वै भवनवासी देवनिका वर्णन विषै सेनाका करण सूत्रादिकरि वर्णन किया है । तैँसैँ इहां भी यथा संभव जाननां ॥ ४९५ ॥

आगैँ दक्षिण इन्द्र उत्तर इन्द्रनिके आनीक के जु नायक तिनकौँ दोय गाथानिकरि कहै है;—

दामेद्वी हरिदामा मादलि अइरावदा महत्तरया ।
 वाउअरिद्वजसा णीलंजणया दक्खिणिंदाणं ॥ ४९६ ॥
 दामयष्टिः हरिदामा मातलिः ऐरावतो महत्तरः ।
 वायुः अरिष्टयशाः नीलांजना दक्षिणेन्द्राणाम् ॥ ४९६ ॥

अर्थ—वृषभादिक सेनानिके अनुक्रमतै दामयष्टि१ हरिदामा१ मातलि १ऐरावत १वायु १ अरिष्टयसा ए छह तौ पुरुष वेदी देव महत्तर कहिए सवनिमै प्रधान नायक हैं । बहुरि नर्तकी सेनाकी नीलांजना नाम स्त्री सो महत्तरी है ऐसै सर्व सौधर्मादि दक्षिण इन्द्रनके सेनाका प्रधान तिनके नाम जाननें ॥ ४९६ ॥

महदामेद्वि मिदगदी रहमंथण पुष्पयंत इदि कमसो ।
 सलघुपरकमगीदरदि महासुसेणा य उत्तरिंदाणं ॥ ४९७ ॥
 महदामयष्टिः अमितगतिः रथमंथनः पुष्पदंत इति क्रमशः ।
 सलघुपराक्रमो गीतरतिः महासुसेना चोत्तरेन्द्राणाम् ॥ ४९७ ॥

अर्थ—महादामयष्टि १ अमितगति १ रथमंथन १ पुष्पदंत १ सलघुपराक्रम १ गीतरति १ ए तौ वृषभादि सेनाविषै क्रमकरि पुरुषवेदी देव प्रधान हैं । बहुरि नर्तकी सेना विषै महासेना नाम स्त्री प्रधान है । ए ईशानादि उत्तर इन्द्रनिकै सेनाविषै मुख्य तिनके नाम जाननें ॥ ४९७ ॥
 आगै तिन पारिषदनिकी संख्या कहै हैं;—

वारस चौदस सोलस सहस्र अन्भंतरादिपरिसाओ ।
 तत्थ सहस्रदुउण्णा दुसहस्सादो हु अद्धद्धं ॥ ४९८ ॥
 द्वादश चतुर्दशषोडशसहस्राणि अभ्यंतरादिपारिषदाः ।
 तत्र सहस्रयूना द्विसहस्रात् हि अर्धाध्मं ॥ ४९८ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त नव स्थानकनिविषै आदिविषै तौ अभ्यंतर आदि पारिषदनिकी संख्या क्रमतै बारह चौदह सोलह हजार प्रमाण हैं । तातै उपरि दोय दोय हजार घाटि है । बहुरि दोय हजार-तै उपरि आधा आधा अनुक्रम जाननां । भावार्थ—सौधर्मादि चारि कल्पनिका च्यारि स्थान ब्रह्म युगलादि च्यारि युगलनिका च्यारि स्थान आनतादि च्यारि कल्पनिका एक स्थान ऐसै नवस्थानकनिविषै प्रथम स्थानकविषै अभ्यंतर पारिषद बारह हजार मध्य पारिषद चौदह हजार बाह्य पारिषद सोलह हजार हैं । दूसरै स्थानि अभ्यंतरादि पारिषद क्रमतै दश बारह चौदह हजार हैं । तीसरै स्थानि आठ दश बारह हजार हैं । चौथे स्थानि छह आठ दश हजार हैं । पांचवै स्थानि च्यारि छह आठ हजार हैं । छठे स्थानि दोय च्यारि छह हजार हैं । सातवै स्थानि एक दोय च्यारि हजार हैं । आठवै स्थानि पांचसै एकहजार दोय हजार हैं । नवै स्थानि अट्ठाईसै पांचसै एकहजार हैं ॥ ४९८ ॥

आगै और प्राकारनिकी संख्या अर तिनका अंतरालका प्रमाण कहै हैं;—

णयराणं विद्यादीपायारा पंचमोत्ति तेरसयं ।
तेसट्टि अडकदी चुलसीदी लक्खाणि गंतूणं ॥ ४९९ ॥

नगराणां द्वितीयादिप्राकारा पंचमातं त्रयोदश ।

त्रिषष्टिः अष्टकृतिः चतुरशीतिः लक्षाणि गत्वा ॥ ४९९ ॥

अर्थ—नगरानिके द्वितीयादि पंचम पर्यंत प्राकार तेरह त्रेसठि आठका वर्ग चौरासी लाख योजन जाइ जाइ पाइए हैं । **भावार्थ**—इन्द्रका जु नगर ताकै पांच कोट हैं । तिनि कोटिनिकै वीचि थ्यारि अंतराल पहला सों दूसरा कोटवीचि प्रथम अंतर तेरह लाख योजन है । बहुरि दूसरा तीसरा वीचि त्रेसठि लाख योजन है । बहुरि तीसरा चौथा वीचि चौसठि लाख योजन है । बहुरि चौथा पांचवां वीचि चौरासी लाख योजन चौथा अंतराल है ॥ ४९९ ॥

आगैं तिन अंतरालनिविषै तिष्ठते देवनिकौं दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

सेण्णावदितपुरक्खा पढमे विदियंतरे दु परिसतयं ।
सामाणियदेवा पुण तदिए णिवसंति तुरिए दु ॥ ५०० ॥
सेनापतितनुरक्षाः प्रथमे द्वितीयांतरे तु पारिषदत्रयम् ।
सामानिकदेवाः पुनः तृतीये निवसंति तुरीये तु ॥ ५०० ॥

अर्थ—सेनाके नायक अर अंग रक्षक देव प्रथम अंतरालविषै वसै हैं । बहुरि दूसरा अंतरालविषै तीन जातिका पारिषद देव वसै हैं । बहुरि तीसरा अंतरालविषै सामानिक देव वसै हैं ॥ ५०० ॥

बहुरि चौथा अंतरालविषै कहैं हैं;—

आरोहियाभियोगगकिब्भिसियादी य जोग्गपासादे ।
गमिय तदो लक्खदलं णंदणामिदि तच्चिसेसणामाणि ॥ ५०१ ॥
आरोहिकाभियोग्यककिल्विषिकादयश्च योग्यप्रासादे ।
गत्वा ततः लक्षदलं नंदनमिति तद्विशेषनामानि ॥ ५०१ ॥

अर्थ—वृषभादि ऊपरि चढनेवाले आरोहक बहुरि आभियोग्य बहुरि किल्विषिक आदि देव अपने अपने योग्य मंदरनिविषै वसै हैं । बहुरि तीह पांचवां कोटतै परै आध लाख योजन जाइ नंदन वन है । आनन्दकारी है तातैं तिन बनानिकों सामान्यपनें नंदन कहे । इनका विशेष नाम आगैं कहिसी ॥ ५०१ ॥

कैसै सो कहैं हैं;—

सुरपुरबहिं असोयं सत्तच्छदचंपचूदवणखण्डा ।
पडमइहसममाणा पत्तेयं चेत्तरुक्खजुदा ॥ ५०२ ॥
सुरपुरबहिः अशोकं सत्तच्छदचंपचूतवनखंडाः ।
पद्महृदसममानाः प्रत्येकं चैत्यवृक्षयुताः ॥ ५०२ ॥

अर्थ—देवनिका नगरतैं वारैं पूर्वादि दिशानिविषै अशोक वनखंड बहुरि सप्तछद बन-
खंड बहुरि चंपक वनखंड बहुरि आम्र वनखंड हैं । ते एक एक वनखंड पत्र नामा द्रह समान
प्रमाण धरै हैं । हजार योजन लंबे अर पांचसै योजन चौड़े हैं । बहुरि एक एक चैत्यवृक्षकरि
संयुक्त हैं ॥ ५०२ ॥

आगैं तिन बननिकैं मध्य तिष्ठते चैत्यवृक्षनिका स्वरूपकौं निरूपण करता संता तिन
चैत्यनिकौं नमस्कार करै हैं;—

चउचेत्तदुमा जंबूमाणा कल्पेसु ताण चउपासे ।

पल्लंङ्गजिणपडिमा पत्तेयं ताणि वंदामि ॥ ५०३ ॥

चतुश्चैत्यद्रुमाः जंबूमानाः कल्पेषु तेषां चतुःपार्श्वेषु ।

पल्यंकजिनप्रतिमाः प्रत्येकं तानि वंदामि ॥ ५०३ ॥

अर्थ—सौधर्मादि कल्पनिविषै चारौ बनसंबंधी च्यारि चैत्य वृक्ष हैं । ते एक एक जंबू-
वृक्ष समान प्रमाण धरै हैं । जंबू वृक्षका उचाई आदिकका प्रमाण आगैं कहेंगे तिह समान ए
जाननें । बहुरि तिन एक एक चैत्य वृक्षनिके चारौ पार्श्वनिविषै पल्यंक आसन जिन प्रतिमा
विराजे हैं । तिनकौं मैं बंदौ हौं ॥ ५०३ ॥

अब लोकपालनिका नगरनिका स्वरूप कहैं हैं;—

तत्तो बहुजोयणयं गंतूण दिसासु लोगवालाणं ।

णयराणि अजुदसंगुणपणघणवित्थारजुत्ताणि ॥ ५०४ ॥

ततो बहुयोजनकं गत्वा दिशासु लोकपालानाम् ।

नगराणि अयुतसंगुणपंचघनविस्तारयुक्तानि ॥ ५०४ ॥

अर्थ—तिन बनखंडनितैं परैं बहुत योजन जाइ पूर्वादिदिशानिविषै लोकपालनिके नगर
हैं । ते अयुत जो दशहजार तीहकरि गुण्या हुआ पंच घन कहिए एकसौ पच्चीस ताका साढा
बारा लाख योजन प्रमाण विस्तारकरि संयुक्त हैं ॥ ५०४ ॥

आगैं तहां ही गणिका महत्तरीनिके नगरनिकौं कहैं हैं;—

गणिकामहत्तरीणं पुराणि तत्थेव अग्गिपहुदीसु ।

विदिशासु लक्खजोयणवित्थारायामसहियाणि ॥ ५०५ ॥

गणिकामहत्तरीणां पुराणि तत्रैव अग्निप्रभृतिषु ।

विदिशासु लक्खयोजनविस्तारायामसहितानि ॥ ५०५ ॥

अर्थ—जैसैं इहां वेश्या हो हैं तैसैं तहां गणिका देवांगना जाननीं । तिनविषै जो प्रधान
ताकौं गणिका महत्तरी कहिए । तिन गणिका महत्तरीनिका नगर तहां ही लोकपाल नगरनिके
समीप अग्नि आदि च्यारौं विदिशानिविषै हैं । ते लाख योजन प्रमाण लंबे चौड़े हैं ॥ ५०५ ॥

आगैं तिनिके नाम कहैं हैं;—

ताओ चउरो सग्गे कामा कामिणि य पउमगंधा य ।
तो होदि अलंबूसा सख्विदपुराणमेस कमो ॥ ५०६ ॥

ताः चतस्रः स्वर्गे कामा कामिनी च पद्मगंधा च ।

ततो भवति अलंबूपा सर्वेद्रपुराणामेष क्रमः ॥ ५०६ ॥

अर्थ—सौधर्मादि स्वर्गविषै कामा १ कामिनी १ पद्मगन्धा १ अलंबूपा अैसैं नाम धारक ते गणिका महत्तरी च्यारि हैं । बहुरि सर्व इंद्रनिके नगरनिका यह ही वर्णनका क्रम जाननां ॥ ५०६ ॥

आगैं सौधर्मादिकनिधिपै मंदिरनिकी उचाईकौं प्रतिपादन करैं हैं;—

छज्जुगलसेसकपे तित्तिसु य अणुद्दिसे अणुत्तरगे ।

गेहुदओ छप्पणसय पण्णास रिणं दलं चरिमे ॥ ५०७ ॥

पट्टयुगलशेषकल्पेषु त्रिस्त्रिषु च अनुदिशि अनुत्तरके ।

गेहोदयः पट्टपंचशतं पंचाशदृणं दलं चरमे ॥ ५०७ ॥

अर्थ—छह युगल अर शेष कल्प अर तीन तीन प्रैवेयक अर अनुदिश अर अनुत्तर इन-विषै गेहनिका उदय छसैं पांचसैं बहुरि पचासका ऋण अर अंतविषै आधा इतनें योजन प्रमाण है ।

भावार्थ—सौधर्म युगल आदि छह युगलनिकै छह स्थान बहुरि शेष आनतादि कल्पनिका एक स्थान बहुरि तीन तीन प्रैवेयकनिका एक एक स्थान तिनके तीन स्थान बहुरि अनुदिशका एक स्थान बहुरि अनुत्तरका एक स्थान अैसैं बारह स्थानकनिधिपै क्रमतैं छसैं पांचसैं साढा च्यारिसैं च्यारिसैं साढा तीनसैं तीनसैं अढाईसैं दोयसैं ड्योढसैं सां पचास पचीस योजन मंदिरनिकी उचाईका प्रमाण है ॥ ५०७ ॥

आगैं देवांगनानिका मंदिरनिकी उचाई कहि सर्व मंदिरनिका विस्तार अर आयाम कहैं हैं;—

सत्तपदे देवीणं गिहोदयं पणसयं तु पण्णरिणं ।

सव्वगिहदिग्घवासं उदयस्स य पंचमं दसमं ॥ ५०८ ॥

सत्तपदे देवीनां गेहोदयः पंचशतं तु पंचाशदृणं ।

सर्वगृहदैर्ध्यव्यासौ उदयस्य च पंचमो दशमः ॥ ५०८ ॥

अर्थ—छह युगलनिके छह स्थान अर अवशेष एक कल्पनिका एक स्थान इन सात स्थान-कनिधिपै देवांगनानिके मंदिरनिकी उचाईका प्रमाण आदिविषै पांचसैं उपरि पचास ऋण सो क्रमतैं पांचसैं साढा च्यारिसैं च्यारिसैं साढा तीनसैं अढाई सैं दोयसैं योजन है । बहुरि सर्व ही देव वा देवांगनानिका मंदिरनिकी उचाईका जो प्रमाण कह्या ताकै पांचवैं भाग तौ लंबाईका प्रमाण जाननां । बहुरि दशवैं भागि चौड़ाईका प्रमाण जाननां ॥ ५०८ ॥

आगैं कल्पनिधिपै अग्रदेवी बहुरि तिनकी परिवार देवीनिका प्रमाण कहैं हैं;—

सत्तपदे अट्टट्टमहादेवीयो पुधादिमोक्किस्से ।

ससमं सोलसहस्सा देवीओ उवरि अद्धद्धा ॥ ५०९ ॥

सप्तपदेषु अष्टाष्टमहादेव्यः पृथक् आदिमे एकस्य ।

स्वसमं षोडशसहस्रा देव्यः उपरि अर्धार्धाः ॥ ५०९ ॥

अर्थः—सात स्थानकनिविषै आठ महादेवी हैं । बहुरि पृथक् एक एक महादेवीके आदिकै स्थानविषै स्वसमं कहिए आप सहित सोलह हजार परिवार देवी हैं । ऊपरि आधी आधी हैं **भावार्थ**—सर्व इन्द्रनिकै महादेवी तौ आठ आठ ही हैं । बहुरि छह युगलनिका छह स्थान अर आनतादिकका एक स्थान इन सात स्थानकनिविषै अनुक्रमतै इन्द्रके एक एक महादेवीसंबंधी परिवार देवी तिस महादेवीसहित सोलह हजार आठ हजार च्यारि हजार दोय हजार एक हजार पांचसै अठाईसै हैं ॥ ५०९ ॥

आगै तिन महादेवीनिके नाम दोय गाथानिकरि कहैं हैंः—

सचि पउम सिव सियामा कालिंदीमुलसअञ्जुकाणामा ।

भाणुत्ति जेद्वदेवी सर्वेसि दक्खिणिंदाणं ॥ ५१० ॥

शचीः पद्मा शिवा श्यामा कालिंदी मुलसा अञ्जुकानामा ।

भानुरिति ज्येष्ठादेव्यः सर्वेषां दक्षिणेंद्राणाम् ॥ ५१० ॥

अर्थ—शची १ पद्मा १ शिवा १ श्यामा १ कालिंदी १ मुलसा १ अञ्जुका १ भानु १ जैसे ए सर्व दक्षिण इन्द्रनिकै पददेवीनिके नाम जाननै ॥ ५१० ॥

सिरिमति राम सुसीमा पभावदि जयसेण णामय सुसेणा ।

वसुमित्त वसुंधर वरदेवीओ उत्तरिंदाणं ॥ ५११ ॥

श्रीमति रामा सुसीमा प्रभावती जयसेना नामा सुपेणा ।

वसुमित्रा वसुंधरा वरदेव्यः उत्तरेन्द्राणाम् ॥ ५११ ॥

अर्थ—श्रीमती १ रामा १ सुसीमा १ प्रभावती १ जयसेना १ सुपेणा १ वसुमित्रा १ वसुंधरा जैसे नाम धारक महादेवी सर्व उत्तर इन्द्रनिकै हैं ॥ ५११ ॥

आगै तहां अग्र महादेवीनिकै विक्रियाका प्रमाण निरूपै हैः—

अद्वण्हं देवीणं पुध पुध सोलससहस्स विकिरिया ।

मूलसररीरेण समं सेसे दुगुणा मुणेदव्वा ॥ ५१२ ॥

अष्टानां देवीनां पृथक् पृथक् षोडशसहस्रं विक्रियाः ।

मूलशरीरेण समं शेषे द्विगुणा मतव्याः ॥ ५१२ ॥

अर्थ—आठ महादेवीनिकै पृथक् पृथक् मूल शरीर सहित सोलह हजार विक्रिया शरीर हो हैं । अवशेष स्थाननिविषै दूणा दूणा जाननै । **भावार्थ**—छह युगलनिका छह स्थान अर आनतादिकका एक स्थान इन सातौ स्थानकनिविषै पहला युगलविषै तौ एक एक महादेवी मूल शरीर सहित सोलह हजार विक्रिया शरीरनिकों करै है अवशेष द्वितियादि स्थानकनिविषै क्रमतै बत्तीस हजार चौंसठि हजार एक लाख अठाईस हजार दोय लाख छप्पन हजार पांचलाख बारह

हजार दस लाख चौईस हजार विक्रिया शरीर करै हैं । ऐसैं ही आगैं महादेवीनिकै विक्रिया शररिनिका प्रमाण जाननां ॥ ५१२ ॥

आगैं तहां ही परिवार देवीनिविपै बलुभिका देवीभिका प्रमाणकौं निरूपै हैं;—

सत्तपदे बलुभिया बत्तीसद्वेव दो सहस्साइं ।

पंचसयं अद्भुतं तेस्सद्वी होंति सत्तमगे ॥ ५१३ ॥

सत्तपदेपु बलुभिका द्वात्रिंशदष्टैव द्वौ सहस्राणि ।

पंचशतानि अर्धार्थं त्रिषष्टिः भवंति सत्तमके ॥ ५१३ ॥

अर्थ—सात पदनिविपै बलुभिका बत्तीस आठ दोग हजार पांचसै पीछैं आधी आधी सातवैं स्थानि तरेसठि हैं । भावार्थ—परिवार देविनिविपै जे देवी इन्द्रकौं बलुभ होंहि तिनकौं बलुभिका कहिए ते छह युगल अर आनतादि इन सात स्थानकनिविपै क्रमतैं बत्तीस हजार आठ हजार दोग हजार पांचसै अठाईसै एकसैं पच्चीस तेरसठि बलुभिका देवी हैं ॥ ५१३ ॥

आगैं तिन बलुभिकानिका मंदिरनिकी उंचाई अर तिन मंदिरनिका अबस्थानिकी दिशा ताहि कहैं हैं;—

देवीप्रासादादुदया बलुभियाणं तु बीसअहियं खु ।

इंद्रत्थंभगिहादो बलुभियावासया पुव्वे ॥ ५१४ ॥

देवीप्रासादोदयात् बलुभिकांना तु विशाधिकंः खलु ।

इंद्रस्तंभगृहात् बलुभिकावासकाः पूर्वस्याम् ॥ ५१४ ॥

अर्थ—देवीनिके मंदिरनिकी उंचाई पूवैं कही थी तातैं बीस योजन अधिक बलुभिका देवीनिके मंदिरनिकी उंचाईका प्रमाण जाननां । बहुरि इन्द्रका जो प्रासाद रहनेका मंदिर तातैं पूव दिशाविषै बलुभिका देवीनिके मंदिर हैं ॥ ५१४ ॥

आगैं इन्द्रका आस्थानमंडपका स्वरूप कहैं हैं;—

अमरावदिपुरमज्जे थंभगिहीसाणदो सुधम्मक्खं ।

अट्टाणमण्डवं सयतइलदीहदु तदुभयदल उदयं ॥ ५१५ ॥

अमरावतीपुरमध्ये स्तंभगृहेशानतः सुधर्माख्यम् ।

आस्थानमंडपं शततइलदीर्घद्विः तदुभयदलः उदयः ॥ ५१५ ॥

अर्थ—अमरावती नाम इन्द्रका पुर है ताकै मध्य इन्द्रके रहनेका मंदिरतैं ईशानविदिशाविषै सुधर्मा नामा आस्थान मंडप कहिए सभास्थान है । ताका सौ अर ताका आधा तौ दीर्घद्विक है तिन दोऊनका आधा उदय है । भावार्थ—सुधर्मा नाम सभास्थान सौ योजन लंबा है, पचास योजन चौड़ा है, पिचहत्तरि योजन ऊंचा है ॥ ५१५ ॥

आगैं आस्थान मंडपके द्वार अर तिसविषै तिष्ठते पदार्थ तिनकौं गाथा तीनकरि कहैं हैं;—

पुव्वुत्तरदक्खिणदिस तद्वारा अट्टवास सोलुदया ।

मज्जे हरिसिंहासणमडदेवीणासणं पुरदो ॥ ५१६ ॥

पूर्वोत्तरदक्षिणादिशि तद्वाराणि अष्टव्यासः षोडशोदयः ।

मध्ये हरिसिंहासनं अष्टदेवीनामासनानि पुरतः ॥ ५१६ ॥

अर्थ—तिस आस्थान मंडपकै पूर्व उत्तर दक्षिण दिशानिविषै तीन द्वार हैं । तिस एक द्वारकी चौड़ाई आठ योजन है ऊँचाई सोलह योजन है । बहुरि तिस आस्थान मंडपनिविषै मध्य स्थान बीचि तौ इन्द्रका सिंहासन है । बहुरि तिस इन्द्र सिंहासनकै आगै आठ पट्टदेवीनिकै आठ आसन हैं ॥ ५१६ ॥

तच्चाहिं पुष्पादिसु सलोयवालाण परिसत्तिदयस्स ।

अग्गिजमणेरिदीए तेत्तीसाणं तु णेरिदिए ॥ ५१७ ॥

तद्वहिः पूर्वादिषु स्वर्लोकपालानां परिषत्रितयस्य ।

अग्निमनैर्ऋत्यां त्रयस्त्रिंशतां तु नैर्ऋत्याम् ॥ ५१७ ॥

अर्थ—तिन पट्ट देवीनिके आसननिठै वारै पूर्वादि दिशानिविषै सोम १ यम १ वरुण १ कुवेर १ इन च्यारि लोकपालनिके च्यारि आसन हैं । बहुरि तीन जातिके परिषदनिके आसन बारह चौदह सोलह हजार आदि ते इन्द्रके आसनतै आप्रेय यम नैर्ऋति दिशानिविषै हैं । बहुरि त्रयस्त्रिंशत देवनिकै तेतीस आसन नैर्ऋतदिशा ही विषै हैं ॥ ५१७ ॥

सेणावईणमवरे समाणियाणं तु पवणईसाणे ।

तणुरक्खाणं भद्रासणाणि चउदिसगयाणि बहिं ॥ ५१८ ॥

सेनापतीनामपरस्यां सामानिकानां तु पवनैशाने ।

तनुरक्षाणां भद्रासनानि चतुर्दिशागतानि बहिः ॥ ५१८ ॥

अर्थ—सेनानायकनिके सात आसन पश्चिम दिशाविषै हैं । बहुरि सामानिक देवनिके आसन वायु अर ईशान दिशाविषै हैं तहां सौधर्मके चौरासी हजार सामानिकनिके आसननिविषै वियालीस हजार तौ वायुदिशाविषै अर वियालीस हजार ईशान दिशाविषै जानने । बहुरि अंगरक्षक देवनिकै मद्रासन च्याच्यो दिशानिविषै हैं । तहां सौधर्मके पूर्वादि एक एक दिशाविषै चौरासी हजार आसन जानने इहां सुधर्मा सभाविषै ऐसै आसन जानने ॥ ५१८ ॥

आगै तिस आस्थान मंडपकै आगै तिष्ठता मानस्तंभका स्वरूप कहै हैं;—

तस्सग्गे इगिवासो छत्तीसुदओ सवीढ वज्जमओ ।

माणत्थंभो गोरुदवित्थारय वारकोडिजुदो ॥ ५१९ ॥

तस्याप्रे एकव्यासः षट्त्रिंशदुदयः सपीठः वज्रमयः ।

मानस्तंभः क्रोशविस्तारः द्वादशकोटियुतः ॥ ५१९ ॥

अर्थ—तिस आस्थान मंडपकै आगै एक योजन चौड़ा छत्तीस योजन ऊँचा पीठकरि सहित वज्रमई एक एक कोशका विस्तार धरै ऐसी बारह धारानिकरि संयुक्त मानस्तंभ हैं । इहां मानस्तंभ बारह कोण संयुक्त गोल जाननां । तहां बारह धारा पाईए हैं । सो एक योजन चौड़ा मानस्तंभ है ताकी

परिधि बारह कोश भया तिस परिधिविषै बारह धारा पाइए तातैं एक एक धारा एक एक कोश चौड़ी है ॥ ५१९ ॥

आगैं तिस मानस्तंभ विषै तिष्ठते करंडकनिका स्वरूप गाथा तीन करि कहै हैं;—

चिष्टंति तत्थ गोरुदचउत्थवित्थार कोसदीहजुदा ।

तित्थयराभरणचिदा करंडया रयणसिक्कधिया ॥ ५२० ॥

तिष्टंति तत्र गव्यूतिचतुर्थविस्ताराः क्रोशदैर्ध्ययुताः ।

तीर्थकराभरणचिताः करंडका रत्नशिक्यधृताः ॥ ५२० ॥

अर्थ—तिस मानस्तंभविषै क्रोशका चौथा भाग प्रमाण चौड़े एक कोश लंबे तीर्थकर देवके आभरणनिकीर भरे रत्ननिका शिक्य तिन करि धरे करंडक हैं । भावार्थ—तिन मानस्तंभनिविषै रत्ननिका सांकल हैं तिनविषै छवते करंडक हैं । जिनमैं वस्तु धरिए ऐसे जे करंडे पिटारे तिनकों करंडक कहिए हैं । तिन करंडनिकविषै तीर्थकर देवनिकै पहरनेकों योग्य ऐसे आभरण भरे हैं । इन्द्र तिनमैंस्यौं काटि करि आभरण तीर्थकरकों पहुंचावैं हैं ॥ ५२० ॥

तुरियजुदविजुदछज्जोयणाणि उवरि अधोवि ण करण्डा ।

सोहम्मदुगे भरहेरावदत्तित्थयरपडिबद्धा ॥ ५२१ ॥

तुरीययुतवियुतपड्योजनानां उपरि अधोपि न करंडाः ।

सौधर्मद्विके भरतैरावततीर्थकरप्रतिबद्धाः ॥ ५२१ ॥

अर्थ—तीह मानस्तंभके चौथा भागकरि युक्त अर वियुक्त छह योजन प्रमाण उपरि अर नीचैं करंडक न पाईए हैं । भावार्थ—मानस्तंभ छत्तीस योजन ऊंचा है । तिहविषै नीचैं पौणा छह योजनकी उंचाई विषै करंडक न पाइए । बहुरि वीचिमैं चौईस योजन उंचाईविषै करंडक पाईए । बहुरि उपरि सवा छह योजनकी उंचाईविषै करंडक न पाईए है । बहुरि सौधर्म द्विक विषै ते मानस्तंभ भरत ऐरावत तार्थकर संबंधी हैं । भावार्थ—सौधर्म विषै जो मानस्तंभ है तहां करंडकनिविषै भरतक्षेत्र संबंधी तार्थकरनिके आभरण हैं, बहुरि ईशानविषै जो मानस्तंभ है तहां करंडकनिविषै ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीर्थकरनिके आभरण पाईए हैं ॥ ५२१ ॥

साणकुमारजुगले पुव्ववरविदेहत्तित्थयरभूसा ।

ठविदच्चिदा सुरेहिं कोडीपरिणाह वारंसो ॥ ५२२ ॥

सानत्कुमारयुगले पूर्वापरविदेहतीर्थकरभूषाः ।

स्थापित्वाचिताः सुरैः कोटिपरिणाहः द्वादशांशः ॥ ५२२ ॥

अर्थ—सनत्कुमार युगलविषै जो मानस्तंभ है । तहां करंडकनि विषै पूर्व पश्चिम विदेहके तीर्थकरनिके आभूषण स्थापि देवनि करि पूजनीक हैं । भावार्थ—सनत्कुमार विषै जो मानस्तंभ है तहां करंडकनिविषै पूर्वविदेह संबंधी तीर्थकरनिके आभरण हैं । बहुरि माहेन्द्र विषै जो मानस्तंभ है तहां करंडनिविषै पश्चिम विदेह संबंधी तीर्थकरनिके आभरण हैं । बहुरि तहां तीर्थकरनिके आभरण पाईए हैं । तातैं ते देवनिकरि पूजनीक हैं । बहुरि तिन मानस्तंभनि-

विषै कोटि जो धारा कोणका अंतराल सो मानस्तंभकी परिधिके बारहैं भाग प्रमाण है । सो एक कोश प्रमाण जाननां इहां मानस्तंभनिविषै करंडक ऐसैं जाननें ॥ ५२२ ॥

आगैं इन्द्रकी उत्पत्तिके गृहका स्वरूप कहैं हैं;—

पासे उववादिगहं हरिस्स अडवास दीहरुदयजुदं ।

दुगरयणसयण मज्झं वरजिणगेहं च बहुकूडं ॥ ५२३ ॥

पाश्वे उपपादगृहं हरेः अष्टव्यासदैर्घ्योदययुतम् ।

द्विकरत्नशयनं मध्यं वरजिनगेहं च बहुकूटम् ॥ ५२३ ॥

अर्थ—तिह मानस्तंभके पासि आठ योजन चौड़ा इतनां ही लंबा ऊंचा उपपाद ग्रह है । बहुरि तीह उपपाद ग्रहविषै दोय रत्नमई शय्या पाईए हैं । इहां इन्द्रका जन्मस्थान है । बहुरि इस उपपाद गृहके पासि बहुत शिखरनिकरि संयुक्त उत्कृष्ट जिन मंदिर है ॥ ५२३ ॥

अब कल्पवासिनी स्त्रीनिके उत्पत्तिस्थान गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

दक्खिणउत्तरदेवी सोहम्मीसाण एव जायंते ।

तहिं सुद्धदेविसहिया छच्चउलक्खं विमाणाणि ॥ ५२४ ॥

दक्षिणोत्तरदेव्यः सौधर्मैशान एव जायंते ।

तत्र शुद्धदेवीसहितानि षट्चतुर्लक्षं विमानानि ॥ ५२४ ॥

अर्थ—दक्षिण उत्तर देवांगना सौधर्म ईशानविषै ही उपजै हैं । तहां शुद्धदेवीसहित छह अर चारि लाख विमान हैं । भावार्थ—कल्पवासिनी देवांगना सर्व सौधर्मईशान स्वर्गहीविषै उपजै हैं । ऊपरि नाहीं उपजै हैं तहां दक्षिण दिशाके कल्पसंबंधी देवांगनां तो सौधर्मविषै उपजै हैं । बहुरि उत्तर दिशाके कल्पसंबंधी देवांगना ईशानविषै उपजै हैं । तहां जिन विमाननिविषै कोऊ देव न पाईए केवल देवांगना ही जहां उपजै ऐसे सौधर्मविषै छह लाख विमान हैं, अर ईशानविषै चारि लाख विमान हैं ॥ ५२४ ॥

तद्देवीओ पच्छा उवरिमदेवा णयंति सगटाणं ।

सेसविमाणा छच्चदुवीसलक्ख देवदेविसम्मिस्सा ॥ ५२५ ॥

तद्देवीः पश्चादुपरिमदेवाः नयंति स्वकस्थानं ।

शेषविमानाः षट्चतुर्विंशलक्षाः देवदेविसंमिश्राः ॥ ५२५ ॥

अर्थ—ते देवी तहां सौधर्म वा ईशानविषै उपजै पीछैं जिनि देवनिकी नियोगनी होइ ते उपरिके स्वर्गवासी देव अपनैं अपनैं ठिकाने लेइ जाइ हैं । बहुरि अवशेष सौधर्मविषै छवीस लाख विमान अर ईशानविषै चौईस लाख विमान ते देवदेवी संमिश्र हैं । तहां देव भी उपजै हैं अर देवांगना भी उपजै हैं ॥ ५२५ ॥

अब कल्पवासीनिके प्रवीचारकौ विचारै हैं;—

दुसु दुसु तिचउक्केसु य काये फासे य रूव सदे य ।

चित्तेवि य पडिचारा अप्पडिचारा हु अहर्मिदा ॥ ५२६ ॥

द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च काये स्पर्शं च रूपे शब्दे च ।

चित्तेषु च प्रवीचारा अप्रवीचारा हि अहमिन्द्राः ॥ ५२६ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्कनिविषै काय, स्पर्श, रूप, शब्द, मनविषै प्रवीचार है । बहुरि अहमिन्द्र अप्रवीचार हैं । **भावार्थ**—प्रवीचार नाम कामसेवनका है सो सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै तौ कायकरि प्रवीचार हैं । जैसे मनुक्ष काम सेवन करै है तैसे देव देवांगना तहां कामसेवन करै हैं । बहुरि उपरि दोय स्वर्गनिविषै स्पर्शकरि प्रवीचार है । देव देवांगनाकै परस्पर अंग स्पर्श करि तृप्ति हो है । बहुरि उपरि च्यारि स्वर्गनिविषै रूपकरि प्रवीचार है । देव देवांगनाकै परस्पर रूप देखने ही करि तृप्ति हो है । बहुरि उपरि च्यारि स्वर्गनिविषै शब्दकरि प्रवीचार है । देवदेवांगनाकै परस्पर शब्द सुननेकरि ही तृप्ति हो है । बहुरि उपरि च्यारि स्वर्गनिविषै मनकरि प्रवीचार है । देव देवांगनाकै परस्पर मनका परिणमनहीतै तृप्ति हो है । बहुरि उपरि प्रैवेयकादि विषै अहमिन्द्र हैं ते अप्रवीचार हैं काम सेवन रहित हैं ॥ ५२६ ॥

अब इस कथनके अनंतरि विमानिक देवनिके विक्रियाशक्ति अर अवधिज्ञानका विषय गाथा दोयकरि कहै हैं,—

दुसु दुसु तिचउकेसु य णवचौदसगे विगुव्वणा सत्ती ।

पढमखिदीदो सत्तमखिदिपेरंतो त्ति अवही य ॥ ५२७ ॥

द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च नवचतुर्दशसु विकुर्वणा शक्तिः ।

प्रथमाक्षितितः सप्तमक्षितिपर्यंतं इति अवधिश्च ॥ ५२७ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्क अर नव चौदहनिविषै वैक्रियक शक्ति प्रथम पृथ्वीतै सातवीं पृथ्वी पर्यंत है अर ऐसेही अवधि ज्ञानका त्रिपय है । **भावार्थ**—अधो दिशाविषै विक्रिया करि जहां पर्यंत गमनादि करनैकी शक्ति है बहुरि अवधिज्ञान करि जहांपर्यंत पदार्थ जाननैकी शक्ति है सो दोऊ क्षेत्र कल्पवासीनिकै समान है । तातै दोऊनिका एकट्टा वर्णन कीजिए हैं । सो विक्रियाशक्ति अर अवधिज्ञान सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै तौ प्रथमनरकपृथ्वी पर्यंत है । दोय स्वर्गनिविषै दूसरी नरकपृथ्वी पर्यंत है । च्यारि स्वर्गनिविषै तीसरी पर्यंत, च्यारि स्वर्गनिविषै चौथी पर्यंत, च्यारि स्वर्गनिविषै पांचवीपर्यंत, नव प्रैवेयक-निविषै छठी पर्यंत अनुदिश अनुत्तर चौदह विमाननिविषै सातवीं नरकपृथ्वी पर्यंत जाननां । बहुरि उपरि दिशाविषै अवधिज्ञान कैसे है सो कहिए हैं । सौधर्मादिऋदेव अपनै अपनै स्वर्गके विमानकौ जो ध्वजादंड तीह पर्यंत अवधिकरि देखे है ऊपरि न देखे हैं । बहुरि नव अनुदिशवासी देव ते अपनां अपनां विमानका शिखरतै नीचे यावत् नीचला बाह्य तनुवात वलय है तहां पर्यंत किछु घाटि चौदह राजू लंबी एक राजू चौड़ी ऐसी सर्व लोक नालीकौ अवधि करि देखै है ॥ ५२७ ॥

सव्वं च लोयणालिं पस्संति अणुत्तरेसु जे देवा ।

सगखेत्ते य सकम्मे रूवगदमणंतभागो य ॥ ५२८ ॥

सर्वां च लोकनालिं पश्यंति अनुत्तरेषु ये देवाः ।

स्वकक्षेत्रे च स्वकर्मे रूपगतमनंतभागं च ॥ ५२८ ॥

अर्थ—पंच अनुत्तर विमाननिविषै जे देव हैं ते सर्व लोकनाली कहिए त्रसनाली ताकौं अवधि करि देखें हैं । बहुरि अवधिकै जाननेका विधान कहिए हैं । अपने क्षेत्रविषै एक प्रदेश घटावनां तब अपने कर्मविषै एक वार ध्रुवहारका भाग दैनां यावत सर्व प्रदेश समाप्त होइ तावत ऐसै करनां । इस कथनकी अवधिज्ञानका विषय भूत द्रव्यका भेद कया । इस अर्थको विषद करै हैं । वैमानिक देवनिकै अपनां अपनां जेता जेता अवधि ज्ञानका विषय भूत क्षेत्र कया ताके जेते जेते प्रदेश होंहि ते एकत्र स्थापन करनें । बहुरि अपने अपने सत्त्वारूप कार्माण स्कंधके परमाणूनिविषै जे परमाणू कर्मरूप न परणए स्वभावही करि जे तिस कार्माण स्कंधविषै एक स्कंधरूप होइ परणए ऐसै एक एक कर्म परमाणूकी साथि अनंत अनंत परमाणू हैं । तिनका नाम विश्रसोपचय कहिए । तिनकरि रहित अवधिज्ञानावरणरूप जे परमाणु परणए हुए सत्ताविषै जेते तिष्टै हैं तिनको एकत्र स्थापन करनें । तहां तिस अवधिज्ञानावरण द्रव्यको एक वार सिद्ध राशिकै अनंतवै भाग प्रमाण ध्रुवहार है ताका भाग दैनां । तब तिस क्षेत्रके प्रदेश प्रमाणमैसौं एक प्रदेश घटावनां बहुरि भाग दीएं जो लब्धराशि भया ताको दूसरीवार ध्रुवहारका भाग दैनां तब दूसरा प्रदेश तिस क्षेत्र प्रदेश प्रमाणमैसौं घटावनां । ऐसै जितने तिस अवधिज्ञानके विषय-भूत क्षेत्रके जेते प्रदेश होंहि तितनी वार तिस अवधिज्ञानावरणके परमाणूनिके प्रमाणको भाग देतै देतै अंत विषै जेते परमाणूनिका प्रमाणरूप लब्धराशि होइ तितने परमाणूनिका स्कंधको सो वैमानिक देव जानै हैं । ताका उदाहरण-सौधर्म युगलविषै अवधि क्षेत्र ऐसा ३ इहां

३४३।२

घनलोककी सहनानी ऐसी ताको तीनसै तियालीसका भाग दीएं घनरूप एक राजू आया ताको ड्यौड गुणा करनेको आगै सहनानी ३ बहुरि अवधि ज्ञानावरण द्रव्य ऐसा स १२ इहां उत्कृष्ट समय

७।४

प्रबद्धकी सहनानी ऐसी स ७ ताको किचिदून ड्यौड गुण हानि करि गुणनेकी सहनानी ऐसी १२-तामे सातकम्मनिका भाग करनेको सातका भाग अर एक ज्ञानावरणविषै सर्व घतियाका द्रव्य स्तोक जांणि न गिणिकरि देशघातियाविषै एक अवधिज्ञानावरणका ग्रहणके अर्थ च्यारिका भाग जाननां । तहा अवधिकेत्रविषै एक प्रदेश घटाएं ऐसा ३ इहां उपरि एक घटावनाकी

३४३।२

सहनानी ऐसी १ बहुरि अवधि द्रव्यको एकवार ध्रुवहारका भाग दीएं ऐसा स ७१२-इहां

७।४।९

ध्रुवहारकी सहनानी नवका अंक है । ऐसै एक एक वार ध्रुवहारका भाग अवधि द्रव्यको देइ देइ एक एक प्रदेश अवधि क्षेत्रमेंस्यौं घटावतै जहां सर्व अवधि क्षेत्रके प्रदेश समाप्त होइ तहां जो अंतविषै अवधि द्रव्यको भाग देतै देतै जेते परमाणू लब्धराशि होइ तितने परमाणूनिके स्कंधको सौधर्म युगल वासी देव जानै हैं यातै सूक्ष्म स्कंधको न जानै, स्थूल स्कंध जाननेका किछु विरोध नाहीं । ऐसै ही अन्य वैमानिक देवनिकै अबधिका विषयभूत द्रव्यका प्रमाण जाननां ॥ ५२८ ॥

आगै वैमानिक देवनिके जनम मरणविषै अंतराल कहै हैं,—

दुसुदुसु तिचउक्केसु य ससे जणणंतरं तु चवणे य ।

सत्तदिण पक्ख मासं दुगचदुलम्मासगं होदि ॥ ५२९ ॥

द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च शेषे जननांतरं तु च्यवने च ।

सप्तदिनानि पक्षं मासं द्विकचतुःषण्मासकं भवति ॥ ५२९ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्क शेष इनविषै जननांतर अर च्यवने कहिए मरणविषै अंतर सो सात दिन पक्ष मास दोय च्यारि छह मास प्रमाण है । **भावार्थ**—जेते कालि किसीहीका जन्म तहां न होइ ताका जननांतर कहिए । बहुरि जेते कालि किसीहीका तहां मरण न होइ ताका मरणांतर कहिए । सो ए दोऊ उत्कृष्टपनै सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै सात दिन, दोय स्वर्गनिविषै एक पक्ष, च्यारि स्वर्गनिविषै एक मास, च्यारि स्वर्गनिविषै दोय मास, च्यारि स्वर्गनिविषै च्यारि मास, अवशेष प्रैवयादिकविषै छहमास प्रमाण जाननां ॥ ५२९ ॥

आगै इंद्रादिकनिका उत्कृष्ट अंतर कहै हैं;—

वरविरहं लम्मासं इंद्रमहादेविलोयवालाणं ।

चउ तेत्तीससुराणं तणुरक्खसमाणपरिसाणं ॥ ५३० ॥

वरविरहं षण्मासं इंद्रमहादेवलोकपालानाम् ।

चतुः प्रयत्त्रिंशसुराणां तनुरक्षसमानपारिपदानाम् ॥ ५३० ॥

अर्थ—वर विरह कहिए उत्कृष्टपनै मरण भए पीछै तीहकी जायगा अन्य जीव आइ यावत काल न अवतरै तिसकालका प्रमाण सो इंद्र अर इंद्रकी महादेवी अर लोकपाल इनका ती विरहकाल छह मास जानि । बहुरि त्रायत्त्रिंशत देव अर अंगरक्षक अर सामानिक अर पारिषद इनका च्यारि मास विरहकाल जानि ॥ ५३० ॥

आगै देवविशेषनिकै संभवस्थान प्रतिपादन करै हैं;—

ईसाणलांतवच्चुदकप्पोत्ति कमेण होति कंदप्पा ।

किब्बिसिय आभिजोगा सगकप्पजहण्णठिदिसहिया ॥ ५३१ ॥

ईशानलांतवाच्युतकल्पांतं क्रमेण भवति कंदर्पाः ।

किल्बिषिका आभियोग्याः स्वककल्पजघन्यस्थितिसहिताः ॥ ५३१ ॥

अर्थ—इहां मनुक्ष पर्यायविषै जे जीव स्त्रीगमनादि काम परिणामरूप विटलक्षणको धरै ऐसे कांदर्प परिणाम संयुक्त हैं ते जीव अपने योग्य शुभ कर्मके वशतै उत्कृष्टपनै ईशान कल्प-पर्यंत उपजै । तहां भी कंदर्प जातिके देव ही उपजै हैं । तातै उपरि नाहीं उपजै हैं । बहुरि इहां मनुक्ष पर्यायविषै जे जीव गानादिक करि आजीविका जिनके पाइए ऐसे लक्षणको धरै नटवे आदि कैल्बिषिक परिणामनिकरि संयुक्त हैं ते जीव अपने योग्य शुभकर्मके वशतै अंतव कल्प-पर्यंत उपजै हैं । तहां भी किल्बिषिक देव ही हो हैं । तातै उपरि नाहीं उपजै हैं । बहुरि इहां मनुक्ष पर्यायनिविषै जे जीव सपाप क्रियानिविषै निजहस्तादिक करि दासत्वादिकरूप प्रवर्त्तै ऐसे लक्षणको धरै नाई आदि आभियोग्य भावना करि संयुक्त हैं ते जीव अच्युत कल्पपर्यंत उपजै

हैं । तहां भी अभियोग्य देव ही हो हैं । तातै उपरि नाही उपजै हैं । ए सर्व अपने अपने स्वर्ग-संबंधी जघन्य आयुकरि सहित उपजै हैं ॥ ५३१ ॥

आगै प्रथम युगलादिविषै स्थिति विशेष कहै हैं;—

सोहम्म वरं पल्लं वरमुवहिवि सत्त दस य चोद्दसयं ।

बावीसोत्ति दुवड्डी एक्केकं जाव तेत्तीसं ॥ ५३२ ॥

सौधर्मे वरं पल्यं अवरं उदधिद्विकं सप्त दश च चतुर्दशकं ।

द्वाविंशतिरिति द्विवृद्धिः एकैकं यावन्नयास्त्रिंशत् ॥ ५३२ ॥

अर्थ—सौधर्म युगल युगल विषै जघन्य आयु एक पल्य है । उत्कृष्ट आयु प्रत्येक दोय प्रमाण है यातै उपरि उत्कृष्ट आयु ही कहै हैं सनतकुमारविषै प्रत्येक सात सागर सागर प्रमाण आयु है । ब्रह्मयुगलविषै प्रत्येक दश सागर प्रमाण आयु है । लांतव युगलविषै प्रत्येक चौदह सागर प्रमाण आयु है । यातै उपरि बाईस पर्यंत दोय दोयकी वृद्धि है । सो शुक्रयुगलविषै सोलह, सतार युगलविषै अठारह, आनत युगल-विषै बीस, आरण युगलविषै बावीस सागर प्रमाण आयु है । बहुरि यातै उपरि तेतीस पर्यंत एक एककी वृद्धि है सो प्रथमादि नव प्रेवेयकनिविषै क्रमतै तेईस चौबीस पच्चीस छबीस सत्ताईस अठाईस गुणतीस तीस इकतीस सागर प्रमाण आयु है, नव अनुदिशविषै बत्तीस सागर आयु है । पंच अनुत्तरविषै तेतीस सागर आयु है ॥ ५३२ ॥

आगै घातायुष्कं सम्यकदृष्टीके पटल पटल प्रति उत्कृष्ट आयु कहै हैं;—

सम्मे घादेऊणं सायरदलमहियमा सहस्सारा ।

जलहिदलमुडुवराऊ पडलं पडि जाण हाणिचयं ॥ ५३३ ॥

समीचि घातायुपि सागरदलमधिकमा सहस्सारात् ।

जलधिदलं ऋतुवरायुः पटलं प्रति जानीहि हानिचयम् ॥ ५३३ ॥

अर्थ—सम्यग्दृष्टी होइ अर घातायुष्क होइ तौ तिस जीवके अपने अपने स्वर्गके पूर्वोक्तउत्कृष्ट आयुतै अंतरमुहूर्त घाटि आधा सागर प्रमाण अधिक आयु हो है । जैसे सौधर्म युग्मविषै घातायुष्क सम्यग्दृष्टीका उत्कृष्ट आयु अंतरमुहूर्त घाटि अढ़ाई सागर प्रमाण होइ । ऐसै सतार सहस्वार युगल पर्यंत जाननां । तीह सहस्वारतै उपरि घातायुष्ककी उत्पति नाही है, भावार्थ—जिस जीवने पूर्व-भवविषै पहलै आयुका बंध अधिक किया था पीलै परणामानिके वशतै ताको घटाइ थोड़ा अणि राख्या तिस जीवको घातायुष्क कहिए । तातै आयुका घात दोय प्रकार है—एक अपवर्त्तन घात एक कदली घात । तहां बध्यमान आयुका घटावनां सो अपवर्त्तन घात है । बहुरि उदीयमान आयुका घटावनां सो कदली घात है । सो इहां कदली घात तौ संभवै नाही तातै अपवर्त्तन घातहाका ग्रहण किया है । सो ऐसा घातायुष्क होय अर सम्यग्दृष्टी होय तौ तिस जीवके पूर्वोक्तउत्कृष्ट आयुतै आध सागर अधिक आयु सहस्वार पर्यंत होइ । बहुरि सौधर्मयुगलका प्रथम पटल ऋतुनामा इंद्रक ताहविषै उत्कृष्ट आयु आध सागर प्रमाण है । सो आदि जाननां । और अन्य युगलनिविषै पूर्वयु-

गलका उत्कृष्ट आयु सो आदि जाननां । बहुरि अपनां अपनां उत्कृष्ट आयु सो अंत जाननां । बहुरि सौधर्म युगलविषै तौ अपनां अपनां पटलका प्रमाण सो गल जाननां, अन्य युगलनिविषै पूर्वयुगलका उत्कृष्ट आयु ताकों आदि ग्रहण किया तातैं अपने अपने पटल प्रमाणतैं एक अधिक प्रमाण गल जाननां । ऐसैं जानि आदी अंते मुद्धे रूउणद्धो हिदम्भि हाणिचयं, इस सूत्र करि पटल प्रति हानिचय जानहु । सो कैसें ? घातायुष्क अपेक्षा सौधर्म युगलादि आठ युगलनिविषै क्रमतैं आध अढ़ाई साढ़ा सात दस साढ़ा चौदह साढ़ासोलह साढ़ा अठारह बीस सागर प्रमाण आदि है । बहुरि अढ़ाई साढ़ा सात साढ़ा दश साढ़ा चौदह साढ़ा सोलह साढ़ा अठारह बीस बाईस सागर प्रमाण अंत है । सो अंतमेंसौ आदि घटाइ शुद्ध किएं दोय पांच तीन च्यारि दोय दोय ड्योढ सागर शेष रहै । इनकों एक घाटि गलका भाग देनां सो सौधर्म युगमविषै तौ स्वपटल प्रमाणमेंस्यौं एक घटाएं तीस अर अन्य युगलनिविषै पूर्वयुगलका अंत पटलका उत्कृष्ट आदिका ग्रहण किया । तातैं स्वपटल प्रमाण सात च्यारि दोय एक एक तीन तीनका भाग दिएं हानिचय आवै है । पटल पटल प्रति इतनां इतनां आयु उपरिका अपेक्षा घटती नीचांकी अपेक्षा वधती है । तातैं याका नाम हानिचय है । सो सौधर्म युगमविषै दोयका तीसवां भाग, सनत्कुमार युगमविषै दसका चौदवां भाग, ब्रह्मयुगमविषै तीनका चौथा भाग, लांतव युगमविषै दोय, शुक्र युगमविषै दोय, सतार युगमविषै दोय, आनत युगमविषै आध, आरण युगमविषै दोयका तीसरा भाग प्रमाण हानिचय जानि तिस तिस पटल प्रति आयु प्रमाण ल्यावनां । सो सौधर्म युगमका प्रथम पटलविषै आध सागर आयु है । यामैं हानिचय दोयका तीसवां भाग समान छेदि करि मिलाएं सतरह सागरका तीसवां भाग प्रमाण द्वितीय पटलविषै आयु हो है । यामैं हानिचय मिलाएं उगणीस सागरका तीसवां भाग प्रमाण तृतीय पटलविषै आयु हो है । ऐसैंही क्रमतैं इकतीसवां अंतपटलविषै अढ़ाई सागर आयु हो है । यामैं सनत्कुमार युगलका हानिचय दसका चौदहवां भाग मिलाएं सनत्कुमार युगलका प्रथम पटलविषै पैतालीस सागरका चौदवां भाग प्रमाण आयु हो है । ऐसैं क्रमतैं अंतपटलविषै साढ़ा सात सागर प्रमाण आयु हो है । यामैं ब्रह्मयुगमका हानिचय मिलाएं ताहीका प्रथम पटलविषै आयु हो है । पूर्वोक्त क्रमतैं अंतपटलविषै साढ़ा दस सागर प्रमाण आयु हो है । याही प्रकार आरण युगमका अंतपटलपर्यंत आयुका साधनि करनां । बहुरि अपघातायुष्ककी अपेक्षा आध सागर अधिकका ग्रहण करना । तहां सौधर्म युगमविषै आदि आध सागर अंत दोय सागर शुद्ध किएं ड्योढ सागर एक घाटि गल तीसका भाग दिएं एकका चौबीसवां भाग प्रमाण हानिचय आया सो आध सागरविषै मिलाएं द्वितीय पटलविषै आयु होइ ऐसैं ही अंतपटल प्रति जाननां बहुरि याही प्रकार सनत्कुमार युगमादि सात युगमनिविषै आदि दोय सात दस चौदह सोलह अठारह बीस सागर प्रमाण अर अंत सात दस चौदह सोलह अठारह बीस बाबीस सागर प्रमाण स्थापि पूर्वोक्त प्रकार हानिचय ल्याइ पटल पटल प्रति आयुसाधन करनां ऐसैं उत्कृष्ट आयु कहा । बहुरि जघन्य आयु प्रथम पटलविषै तो कहा ही था अर उपरि सर्वत्र जो नीचले पटलका उत्कृष्ट आयु सोही एक समय अधिक ऊपरला पटलविषै जघन्य आयु जाननां ॥ ५३३ ॥

आगँ लौकांतिक देवनिके अवस्थानका ठिकाना कहै हैं;—

निवसंति ब्रह्मलोयस्संते लोयंतिया सुरा अट्ट ।

ईशानादिसु अट्टसु वट्टेसु पइण्णएसु कमा ॥ ५३४ ॥

निवसंति ब्रह्मलोकस्यांते लौकांतिकाः सुरा अट्ट ।

ईशानादिषु अट्टसु वृत्तेषु प्रकीर्णकेषु क्रमात् ॥ ५३४ ॥

अर्थ—ब्रह्मलोकका अंतविषै आठ कुलभेद संयुक्त लौकांतिक देव वसै हैं । **भावार्थ**—ब्रह्मयुगलका मंदिरविषै जो अंतस्थान तहां लौकांतिक देवनिके विमान हैं । बहुरि तहां तै लौकांतिक देव ईशानादि आठ दिशानिविषै गोल जे प्रकीर्णक विमान तिनाविषै यथाक्रम वसै हैं ॥ ५३४ ॥

आगँ तिन अट्ट कुलनिकी संज्ञा अर संख्या दोय गाथाकरि कहै हैं;—

सारस्सद आइच्चा सत्तसया सगजुदा य वण्हरुणा ।

सगसगसहस्समुवरिं दुसु दुसु दोदुगसहस्सवट्टिकमा ॥५३५॥

सारस्वता आदित्याः सप्तशतानि सप्तयुतानि च वह्नयरुणाः ।

सप्तसप्तसहस्रमुपरि द्वयोर्द्वयोः द्विद्विसहस्रवृद्धिक्रमः ॥ ५३५ ॥

अर्थ—सारस्वत अर आदित्य तौ प्रत्येक सात युक्त सातसौ प्रमाण हैं । वहुरि वह्नि अर अरुण प्रत्येक सात अधिक सात हजार प्रमाण हैं । तातै उपरि दोय स्थान विषै दोय अधिक दोय हजार वृद्धिका अनुक्रम जाननां ॥ ५३५ ॥

तो गदतोयतुसिदा अच्चावाहा अरिष्टसण्णा य ।

सेढीवद्धे रिद्धा विमाणणामं च तच्चेव ॥ ५३६ ॥

ततो गर्दतोयतुषिता अव्यावाधा अरिष्टसंज्ञाश्च ।

श्रेणीवद्धे अरिष्टा विमाननामं च तदेव ॥ ५३६ ॥

अर्थ—तहां पीछै गर्दतोय १ तुषित १ अव्यावाध १ अरिष्ट १ ऐसी संज्ञाधारक जाननें ॥ **भावार्थ**—लौकांतिक देव आठ कुल भेद संयुक्त हैं । सारस्वत १ आदित्य १ वह्नि १ अरुण १ गर्दतोय १ तुषित १ अव्यावाध १ अरिष्ट १ इन देवनिका अनुक्रमतै प्रमाण सातसै सात सातसै सात, सात हजार सात, सात हजार सात, नव हजार नव, नव हजार, नव, ग्यारह हजार ग्यारह, ग्यारह हजार ग्यारह ११०११ जाननां । इन विषै अरिष्ट हैं ते श्रेणी वद्ध विमान विषै तिष्ठै हैं । इतनां विशेष जाननां । अवशेष गोल प्रकीर्णक विमाननिविषैही तिष्ठै है । बहुरि जे कुलके नाम तेई तिनके विमाननिके नाम हैं ॥ ५३६ ॥

आगँ सारस्वत आदिकनिकै दोय दोयका अंतराल विषै तिष्ठते जे कुल तिनके नाम अर तिन देवनिकी संख्या गाथा दोयकरि कहै हैं;—

सारस्सदआइच्चप्पहुदीणं अंतरालए दो दो ।

जाणग्गिसूरचंदयसच्चाभा सेयखेमकरा ॥ ५३७ ॥

सारस्वतादित्यप्रभृतीनां अंतरालके द्वे द्वे ।

जानीहि अग्निसूर्यचंद्रकसत्याभाः श्रेयःक्षेमकराः ॥ ५३७ ॥

अर्थ—सारस्वत आदित्य आदिकानिके आठ अंतरालनिविषै दोग दोग कुल जानहु । तिन कुलस्थ कौन सो कहै हैं । अग्न्याभ १ सूर्याभ १ चंद्राभ १ सत्याभ १ श्रेयस्कर १ क्षेमंकर १ ॥ ५३७ ॥

वसहिद्वकामधरणिम्माणरजा भिगंतअप्पसन्वादी ।

रक्खिदमरुवसुअस्सविसा ढमरुणसम पुव्वचयमुवरिं ॥ ५३८ ॥

वृषभेष्टकामधरनिर्माणरजोदिगंतात्मसर्वादिः ।

रक्षितमरुद्वस्वश्वविश्वाः प्रथमअरुणसभाः पूर्वचयमुपरि ५३८

अर्थ—वृष भेष्ट १ कामधर १ निर्माण रजा १ दिगंतरिक्षत १ आत्मरक्षित १ सर्व रक्षित १ मरुत १ वसु १ अश्व १ ऐसे ए अपने अपने कुल नामकरि संयुक्त देव प्रथम अग्याम तो अरुण समान संख्या धरै हैं सात हजार सात हैं । बहुरि इस प्रमाणकै उपरि पूर्वोक्त दोग अधिक दोग हजार प्रमाण चय मिलैं सूर्याभादि कानिकी संख्या हो है । भावार्थ—सारस्वत अर आदिभकै विमानिके बीचि अग्राम अर सूर्यामके विमान है । बहुरि आदित्य अर बन्हिके विमानिके बीचि चंद्राभ सत्याभके विमान हैं । वह्नि अर अरुणके विमानिके बीचि श्रेयस्कर क्षेमंकरके विमान हैं । ऐसैं ही अन्य अंतरालनिविषै दोग दोग कुलनिके विमान जाननैं । सो आठ अंतरालनि विषै सोलह कुल भए । तहां अग्न्याभ देव सात हजार सात हैं सूर्याभनव हजार नव हैं । चंद्राभ ग्यारह हजार ग्यारह हैं । सत्याभ तेरह हजार तेरह हैं । इसही क्रमतैं आगैं विश्व पर्यंत दोग हजार दोग वधती प्रमाण क्रमतैं जाननां ॥ ५३८ ॥

आगैं कहे जु लौकांतिक देव तिनका विशेष स्वरूप गाथादोयकरि कहैं हैं;—

ते हीणाहियरहिया विसयविरत्ता य देवरिसिणामा ।

अणुपिक्खदत्तात्ता सेससुराणच्चणिज्जा हु ॥ ५३९ ॥

ते हीनाधिकरहिता विषयविरक्ताश्च देवर्षिनामानः ।

अनुप्रेक्षादत्तात्ताः शेषसुराणामर्चनीया हि ॥ ५३९ ॥

अर्थ—ते लौकांतिक देव परस्पर हीन अधिकता करि रहित हैं । सर्व समान हैं । बहुरि विषयनिविषै विरक्त हैं । बहुरि देवतानिविषै ऋषि समान हैं । तातैं देव ऋषि है नाम जिनका ऐसे हैं । बहुरि अनित्या दि अनुप्रेक्षानिका चितवनविषै दिया है चित्त जिननैं ऐसे हैं । बहुरि अबशेष इंद्रादिक देवनिकरि पूजनीक हैं ॥ ५३९ ॥

चोइसपुव्वधरा पडिवोहपरा तित्थयरविणिक्कमणे ।

एदेसिमहजलहिद्धिदी अरिहस्स णव चैव ॥ ५४० ॥

चतुर्दशपूर्वधराः प्रतिबोधपराः तीर्थकरविनिःक्रमणे ।

एतेषामष्टजलधिः स्थितिः अरिष्टस्य नव चैव ॥ ५४० ॥

अर्थ—बहुरि चौदह पूर्वरूप श्रुतज्ञानके धारक हैं । बहुरि तीर्थकरका निःक्रमण कल्याण विषै संबोधन देनेविषै तत्पर हैं । बहुरि इन लौकांतिकदेवनिका आयु आठ सागर प्रमाण है । विशेष इतनां अरिष्टनिका आयु नव सागर प्रमाण ही है ॥ ५४० ॥

आगै घातायुष्क सम्यकदृष्टि अर मिथ्यादृष्टीकै आयु विशेष कहै हैं;—

उवहिदलं पल्लद्धं भवणे वितरदुगे कमेणहियं ।

सम्मे मिच्छे घादे पल्लासखं तु सव्वत्थ ॥ ५४१ ॥

उदधिदलं पल्यार्थं भवने व्यंतरद्विके क्रमेणाधिकं ।

समीचि मिथ्ये घाते पल्लासखं तु सर्वत्र ॥ ५४१ ॥

अर्थ—घातायुष्क होइ अर सम्यग्दृष्टी होइ तौ ताकै भवनवासीविषै तौ आध सागर अर व्यंतर ज्योतिषीविषै आध पल्य प्रमाण आयु पूर्वोक्त उत्कृष्ट आयुतै अधिक होइ । बहुरि घातायुष्क होइ अर मिथ्यादृष्टी होइ तौ ताकै सर्वत्र भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी कल्पवासीनिविषै पूर्वोक्त उत्कृष्ट आयुके प्रमाणतै पल्यका असंख्यातवां भाग प्रमाण आयु अधिक होइ ॥ ५४१ ॥

आगै कल्पवासिनी स्त्रीनिका आयु प्रमाण कहै हैं;—

साहियपल्लं अवरं कप्पदुगिस्थीण पणग पढमवरं ।

एकारसे चउक्के कप्पे दोसत्तपरिवद्धी ॥ ५४२ ॥

साधिकपल्यं अवरं कल्पद्विके स्त्रीणां पंचकं प्रथमवरं ।

एकादशे चतुष्के कल्पे द्विसप्तपरिवृद्धिः ५४२ ॥

अर्थ—सौधर्म द्विकविषै स्त्रीनिका आयु जघन्य किछू अधिक पल्य प्रमाण है । बहुरि प्रथम स्वर्गविषै उत्कृष्ट आयु पंच पल्य प्रमाण है । उपरि ईशानादि ग्यारह स्वर्गनिविषै अर आन-तादि च्यारि स्वर्गनिविषै दोय अर सातकी वृद्धि जाननी । भावार्थ—देवांगनांनिका उत्कृष्ट आयु सौधर्मादि सोलह स्वर्गनिविषै अनुक्रमतै पांच सात नव ग्यारह तेरह पंद्रह सतरह उनईस इक-ईस तेईस पच्चीस सत्ताईस चौतीस इकतालीस अठतालीस पचास नव पल्य प्रमाण जाननां ॥ ५४२ ॥

अब देवनिके शरीरका उत्सेध कहै हैं;—

दुसु दुसु चदु दुसु दुसु चउ तित्तिसु सेसेसु देहउस्सेहो ।

रयणीण सत्त छप्पणचत्तारि दलेण हीणकमा ॥ ५४३ ॥

द्रयोद्वियोः चतुर्षु द्वयोद्वियोः चतुर्षु त्रिस्त्रिषु शेषेषु देहोत्सेधः ।

रत्तीनां सप्त षट् पंचचत्वारः दलेन हीनक्रमः ॥ ५४३ ॥

अर्थ—दोय दोय च्यारि दोय दोय च्यारिविषै तीन तीनविषै शेषविषै क्रमतै देहका उत्सेध सात छह पांच च्यारि अर्ध अर्द्ध घाटि रत्ति कीहए हस्तप्रमाण जाननां । भावार्थ—देवनिके शरीरकी उचाईका प्रमाण सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै सात हाथ दोयविषै छह हाथ च्यारिविषै पांच हाथ दोयविषै च्यारि हाथ दोयविषै साढ़ा तीन हाथ च्यारिविषै तीन हाथ

अधो तीन प्रैवेयकविषै अढ़ाई हाथ मध्य तीन प्रैवेयकविषै दोय हाथ उपरिम तीन प्रैवेयकविषै ड्यौद हाथ शेष अनुदिश अनुत्तरविषै एक हाथ है ॥ ५४३ ॥

आगै तिनकै उश्वास अर आहारका काल निरूपै हैं;—

पक्वं वाससहस्सं सगसगसायरसलाहि संगुणियं ।

उस्सासाहाराणं कमेण माणं विमाणेसु ॥ ५४४ ॥ -

पक्षो वर्षसहस्सं स्वकस्वकसागरशलाभिः संगुणितं ।

उच्छासाहाराणां क्रमेण मानं विमानेषु ॥ ५४४ ॥

अर्थ—पक्ष कहिए पंद्रह दिन अर हजार वर्ष सोहम्मवरं पढ़े वरमुवहि वि सत्त इत्यादि पूर्वोक्त गाथाविषै जितनां जितनां सागर प्रमाण आयु कह्या तितनां प्रमाण सागर शलाकानिकरि गुण्या हुवा क्रम करि विमाननिविषै उश्वासका प्रमाण हो है । तहां उदाहरण—सौधर्मद्विकविषै आयु दोय सागर है । तहां दोय पक्षके अंतराल लिए उश्वास अर दोय हजार वर्षके अंतराल लिए आहार है । ऐसै ही अन्यत्र भी जाननां ॥ ५४४ ॥

आगै गुणस्थानकौ आश्रय करि देवगतिविषै जै उपजै हैं तिनका स्वरूप गाथा तीन करि कहै हैं;—

णरतिरिय देसअयदा उक्कस्सेणच्चुदोत्ति णिग्गंथा ।

ण य अयद देसमिच्छा गेवेज्जंतोत्ति गच्छंति ॥ ५४५ ॥

नरतिर्यचः देशायता उक्कष्टेनाच्युतांतं निर्प्रथाः ।

न च अयता देशमिथ्या प्रैवेयांतं इति गच्छंति ॥ ५४५ ॥

अर्थ—असंयत वा देश संयत मनुक्ष अर त्रियंच उक्कष्टपनें अच्युत कल्पपर्यंत जाय हैं । तातैं उपरि नाहीं । बहुरि द्रव्य करि निर्प्रथ अर भाव करि असंयत वा देश संयत वा मिथ्यादृष्टि मनुक्ष ते उपरिमप्रैवेयकपर्यंत जाय हैं । तातैं ऊपरि नाहीं ॥ ५४५ ॥

सव्वट्ठोत्ति सुदिट्ठी महव्वई भोगभूमिजा सम्मा ।

सोहम्मदुगं मिच्छा भवणतियं तावसा य वरं ॥ ५४६ ॥

सर्वार्थांतं सुदृष्टिः महाव्रती भोगभूमिजा सम्यंचः ।

सौधर्मद्विकं मिथ्या भवनत्रयं तापसाः च वरं ॥ ५४६ ॥

अर्थ—सम्यग्दृष्टी द्रव्य वा भाव करि महाव्रती मनुक्ष सो सर्वार्थसिद्धिपर्यंत जाय है । बहुरि भोगभूमिया सम्यग्दृष्टी तौ सौधर्म युगलकौ प्राप्त हो हैं । तातैं ऊपरि नाहीं । अर भोगभूमिया मिथ्यादृष्टी भवनवासी व्यन्तर ज्योतिष्ककौ प्राप्त हो हैं । तातैं ऊपरि नाहीं । बहुरि पंचाग्नि आदि-कके साधक जे तापसा ते उक्कष्टपने भवनत्रिककौ प्राप्त हो हैं । तातैं उपरि नाहीं ॥ ५४६ ॥

चरया य परिव्वाजा बहोअच्चदपदोत्ति आजीवा ।

अणुदिसअणुत्तरादो चुदा ण केसवपदं जांति ॥ ५४७ ॥

चरकाश्च परिव्राजा ब्रह्मोच्युतपदांतं आजीवाः ।

अनुदिशानुत्तरतः च्युता न केशवपदं न यान्ति ॥ ५४७ ॥

अर्थ—नग्न अंड है लक्षण जिनका ऐसे चरक ते अर एक दंडी त्रिदंडी आदि लक्षण धरें ऐसे परिव्राजक संन्यासी ते उत्कृष्टपनै ब्रह्मकल्पपर्यंत जाय हैं । तातैं उपरि नाहीं । बहुरि कांजी आदि-कके भोजन करनहारे ऐसे आजीव ते उत्कृष्टपनै अच्युत कल्पपर्यंत जाय हैं । तातैं उपरि नाहीं । अब देवगतितैं चय करि जे उपजै तिनका स्वरूप कहैं हैं । अनुदिश अर अनुत्तर विमानतैं चय कर केशव पद कहिए नारायण प्रतिनारायण पदकों प्राप्त न हो हैं ॥ ५४७ ॥

आगैं जे जीव देवगतितैं चय करि निर्वाण ही जाय तिनके नाम कहैं हैं;—

सोहम्मो वरदेवी सलोगवाला य दक्खिणमरिंदा ।

लोयंतिय सव्वद्दा तदो चुदा णिव्बुदिं जंति ॥ ५४८ ॥

सौधर्मो वरदेवी सलोकपालश्च दक्षिणामरेंद्राः ।

लौकांतिकाः सर्वार्थाः ततश्च्युता निर्वृत्तिं यांति ॥ ५४८ ॥

अर्थ—सौधर्म नामा इन्द्र बहुरि ताहीं की शची नामा पट्ट देवी अर ताहींके सोम आदि ध्यारि लोकपाल बहुरि सनत्कुमारादिक दक्षिण इन्द्र बहुरि सर्व लौकांतिक देव बहुरि सर्व सर्वार्थ सिद्धिविषै उपजे देव ए सर्व तहांस्यौं चय करि मनुक्ष होय नियमकरि निर्वाणकों प्राप्त हो हैं ॥ ५४८ ॥

आगैं तेरसठि शलाका पुरुषनिकी पदवकीं जे न प्राप्त होहैं तिनके नाम कहैं हैं;—

णरतिरियगदीहितो भवणतियादो य णिग्गया जीवा ।

ण लहंते ते पदविं तेवद्विसलागपुरिसाणं ॥ ५४९ ॥

नरतिर्यग्गातिभ्यां भवनत्रयाच्च निर्गता जीवाः ।

न लभते ते पदवीं त्रिषष्टिशलाकापुरुषाणाम् ॥ ५४९ ॥

अर्थ—मनुक्षगति अर तिर्यच गतितैं अर भवनत्रिकतैं निकसिकरि आए जे जीव ते तेरसठि शलाका पुरुषनिकी पदवीकों न पावैं हैं । चौबीस तीर्थकर बारह चक्रवर्ती नव नारायण नव बलभद्र इनकों तेरसठिशलाका पुरुष कहिए हैं ॥ ५४९ ॥

आगैं देवनिकी उत्पात्तिका स्वरूप कहैं हैं;—

सुहसयणग्गे देवा जायंते दिणयरोव्व पुव्वणग्गे ।

अंतोमुहुत्त पुण्णा सुगंधिसुहफाससुचिदेहा ॥ ५५० ॥

सुखशयनाग्गे देवा जायंते दिनकर इव पूर्व्वनग्गे ।

अंतमुहुत्ते पूर्णाः सुगंधिसुखस्पर्शशुचिदेहाः ॥ ५५० ॥

अर्थ—जैसैं पूर्वालय विषै सूर्य उदय होय तैसैं अंतर मुहुत्त विषै छह पर्याप्तिकरि पूर्ण सुगंध सुखरूप स्पर्श धरै पवित्र है शरीर जिनका जैसे ते देव सुखरूप शय्याके ऊपरि जन्म धरैं हैं ॥ ५५० ॥

आगै तहां उत्पन्न भए देव तिनकै उपजनैके अनंतरि कार्य विशेष हो हैं सो गाथा तनि करि कहैं हैं;—

आणंदतूरजयथुदिरवेण जम्मं विबुज्झ सं पत्तं ।
दट्टूण सपरिवारं गयजम्मं ओहिणा णिव्वा ॥ ५५१ ॥
आनंदतूर्यजयस्तुतिरवेण जन्म विबुध्य स्वं प्राप्तं ।
दट्टा सपरिवारं गतजन्म अवधिना ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

अर्थ—जनम होतैं भया जे आनंदरूप वाजित्रनिका शब्द अर जयकारादिस्तुति रूप शब्द तिन करि यहू देवरूप जनम है ऐसा जानि बहुरि प्राप्त भया जो विभव अर अपनां परिवार ताहि देखि बहुरि अवधि ज्ञान करि पूर्व गत पर्यायोंको जानि ॥ ५५१ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

धम्मं पसंसिदूण ण्हादूण दहे भिसेयलंकारं ।
लद्धा जिणाभिसेयं पूजं कुव्वंति सद्विद्वी ॥ ५५२ ॥
धर्मं प्रशंस्य स्नात्वा हृदे अभिषेकालंकारं ।
लब्ध्वा जिनाभिषेकं पूजां कुर्वति सददृष्टयः ॥ ५५२ ॥

अर्थ—धर्मनै प्रशंसि करि जल भरे तद्द्रवविषै स्नान करि पट्टरूप अभिषेक अर अलं-
कारकौ पाइ सम्यगदृष्टि जीव स्वयमेव जिनदेवका अभिषेक अर पूजा ताहि करै हैं ॥ ५५२ ॥

सुरबोहियावि मिच्छा पच्छा जिणपूजणं पकुव्वंति ।
सुहसायरमज्झगया देवा ण विदंति गयकालं ॥ ५५३ ॥
सुरबोधिता अपि मिथ्या पश्चाज्जिनपूजनं प्रकुर्वति ।
सुखसागरमध्यगता देवा न विदंति गतकालं ॥ ५५३ ॥

अर्थ—मिथ्यादृष्टी देव अन्य देवनिकरि संबोधे हुए भी पीछै जिन पूजनकौ करै हैं । ते
सर्व ही सुखसागरके मध्य प्राप्त हुवा थका गए-कालको न जानै हैं ॥ ५५३ ॥

आगै तिन देवनिकै समीचीन कार्य कहैं हैं;—

महपूजासु जिणाणं कल्लाणेसु य पजंति कप्पसुरा ।
अहमिंदा तत्थ ठिया णमंति मणिमउलिघडिटकरा ॥ ५५४ ॥
महापूजासु जिनानां कल्याणेषु च प्रयांति कल्पसुराः ।
अहमिंद्राः तत्र स्थिता नमंति मणिमौलिघटितकराः ॥ ५५४ ॥

अर्थ—जिन तीर्थकर देव तिनकी महा पूजा अर तिनका पंच महाकल्याण तिनविषै कल्प-
वासी देव जावैं हैं । बहुरि अहमिंद्र देव तहां अपनें स्थान ही विषै मणिमई मुकुटनितै लगाए
हैं हाथ जिनुनै ऐसे होत संते नमस्कार करै हैं ॥ ५५४ ॥

आगै देवादिककी संपदा किनकै हो है सो कहैं हैं;—

विविहतवरयणभूसा णाणसुची सीलवत्थसोम्मंगा ।

जे तेसिमेव वस्सा सुरलच्छी सिद्धिलच्छी य ॥ ५५५ ॥

विविधतपोरत्नभूषाः ज्ञानशुचयः शीलवस्त्रसौम्यांगाः ।

ये तेषामेव वश्या सुरलक्ष्मीः सिद्धिलक्ष्मिश्च ॥ ५५५ ॥

अर्थ—जे जीव विविध तपश्चरण करि आभूषित हैं बहुरि ज्ञान करि पवित्र हैं । बहुरि शील रूप वस्त्र संयुक्त सौम्य है अंग जिनका ऐसे हैं । तिन ही जीवनिके देव लक्ष्मी अर मुक्ति लक्ष्मी वश्य हो है ॥ ५५५ ॥

अब अष्टम भूमिका स्वरूप कहें हैं;—

तिहुवणमुड्डारूढा ईसिपभारा धरद्वमी रुंदा ।

दिग्घा इगिसगरज्जू अडजोयणपमिदवाहल्ला ॥ ५५६ ॥

त्रिभुवनमूर्धारूढा ईषत् प्राग्भारा धराष्टमी रुंदा ।

दीर्घा एकसत्तरज्जू अष्टयोजनप्रमितवाहल्या ॥ ५५६ ॥

अर्थ—तीन भुवनका मस्तक करि आरूढ अर ईषत्प्राग्भार हैं नाम जाका ऐसी आठवीं पृथ्वी है । ताकी चौड़ाई एक राज् लंबाई सात राज् मोटाई आठ योजन प्रमाण है । भाव यह—लोकका अंतपर्यंत है अर आठ योजन मोटी है ॥ ५५६ ॥

आगैं तीह आठवीं पृथ्वीविषै तिष्ठता सिद्धक्षेत्रका स्वरूपको गाथा दीय करि कहें हैं;—

तम्मज्झे रूपमयं छत्तायारं मणुस्समहिवासं ।

सिद्धक्खेत्तं मज्झडवेहं कमहीण वेहुलियं ॥ ५५७ ॥

तन्मध्ये रूप्यमयं छत्राकारं मनुष्यमहीव्यासं ।

सिद्धक्षेत्रं मध्येष्टवेधं क्रमहीनं ब्राह्मण्यम् ॥ ५५७ ॥

अर्थ—तीह आठवीं पृथ्वीके मध्य रूपमई श्वेत छत्रके आकारि मनुक्ष क्षेत्र समान गोल पैतालीस लाख योजन प्रमाण व्यासको धरें सिद्ध क्षेत्र है । ताकी मोटाई मध्यविषै आठ योजन प्रमाण है । अन्यत्र सर्वत्र अंत पर्यंत क्रमतैं घटती घटती मोटाई हैं । भाव यह—जैसे पृथ्वीविषै शिला हो है तैसे आठवीं पृथ्वीविषै बीचिमें सिद्धक्षेत्र रूप सुपेद शिला है । सो बीचिमें आठ योजन मोटी है क्रमतैं घटती घटती अंतविषै थोड़ी मोटी है । सो उपरि तल तौ समानरूप है नीचेतैं घाटि बाधि है ऐसा जाननां ॥ ५५७ ॥

उत्ताणद्वियमंते पत्तं व तणु तदुवारि तणुवादे ।

अट्टगुण्डा सिद्धा चिट्ठंति अणंतसुहत्तिता ॥ ५५८ ॥

उत्तानस्थितमंते पात्रमिव तनु तदुपरि तनुवाते ।

अष्टगुणाढ्याः सिद्धाः तिष्ठति अनंतसुखतृप्ताः ॥ ५५८ ॥

अर्थ—अंतविषै तनुरूप है थोड़ा मोटा है । जैसे ऊंचा औंधातिष्ठया पात्र कहिए कटोरा तीह समान है । बहुरि तीह सिद्धक्षेत्रके उपरिवर्ती जो तनुवात तिहविषै सम्यक्वादि अष्ट गुणनि करि संपूर्ण अनंत सुख करि तृप्त ऐसे सिद्ध भगवान तिष्ठैं हैं ॥ ५५८ ॥

आगँ अनंत सुख करि तृप्तपणांविषै दृष्टांत दोग गाथानि करि कहै हैं;—

एयं सत्थं सव्वं सत्थं वा सम्ममेत्थ जाणंता ।

तिव्वं तुस्संति णरा किण्ण समत्थत्थतच्चण्हू ॥ ५५९ ॥

एकं शास्त्रं सर्वं शास्त्रं वा सम्यगत्र जानंतः ।

तीत्रं तुष्यति नराः किं न समस्तार्थतत्त्वज्ञाः ५५९ ॥

अर्थ—एक शास्त्र वा सर्व शास्त्रकों सम्यक प्रकार इस लोकविषै जानते थके मनुक्ष तीत्र संतोष पावै हैं । तौ समस्त पदार्थनिका तत्वस्वरूपके ज्ञायक सिद्ध ते कैसेँ संतोष न पावै ! अपि तु पावै ही पावै । **भावार्थ**—सुख है सो सत्यज्ञानजनित है । इहां संसारविषै भी सत्यज्ञान होतै ही सुख हो है । तौ सिद्ध अनंत ज्ञानवान हैं तिनकेँ सुख होय ही होइ ॥ ५५९ ॥

चक्रिकुरुफणिसुरिदेसहमिंदे जं सुहं तिकालभवं ।

तत्तो अणंतगुणिदं सिद्धाणं खणसुहं होदि ॥ ५६० ॥

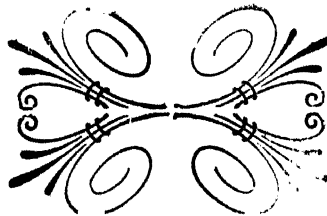
चक्रिकुरुफणिसुरेद्रेषु अहमिंद्रे यत् सुखं त्रिकालभवं ।

ततो अनंतगुणितं सिद्धानां क्षणसुखं भवति ॥ ५६० ॥

अर्थ—चक्रवर्तीका सुखतैँ भोगभूमियाँकेँ सुख अनंत गुणा है । ताँ धरणेन्द्रकेँ सुख अनंत गुणा है । ताँ देवेन्द्रकेँ सुख अनंतगुणा है । ताँ अहमिंद्रनिकेँ सुख अनंत गुणा है । ऐसैँ इनविषै जो अनंत अनंत गुणा सुख है । तीह अतीत अनागत वर्त्तमानकालसंबंधी सर्व सुखकों एकठा करि ताँ सिद्धनिकेँ क्षणमात्र करि उपज्या सुख अनंत गुणा है । सो यहू भी उपदेश मात्र कथन है । बहुरि औरनिकेँ सुख साकुल है । सिद्धानिकेँ सुख निराकुल है । ताँ सो सुख वचन अगोचर ही जानना । इति वैमानिकदेवनिका अधिकार समाप्त भया ॥ ५६० ॥

इति श्रीनेमिचंद्राचार्यविरचित त्रिलोकसारमें पांचमां वैमानिकदेवानिके

लोकका अधिकार समाप्त भयाः ॥ ५ ॥



॥ अथ नरतिर्यग्लोकाधिकार ॥ ६ ॥

अथ यार्तै परै पाया है अवसर जानै ऐसा मनुक्ष लोक तिर्यक लोकका निरूपण करनेका अभिलाष संयुक्त आचार्य सो प्रथम ही दोऊ लोकविषै तिष्ठते जिन मंदिर तिनकी स्तुतिपूर्वक संख्या कहै है;—

णमह णरल्लोयजिणघर चत्तारि सयाणि दोविहीणाणि ।

बावण्णं चउ चउरो णंदीसुर कुंडले रुचगे ॥ ५६१ ॥

नमत नरलोकजिनगृहाणि चत्वारि शतानि द्विविहीनानि ।

द्वापंचाशत् चत्वारि चत्वारि नंदीश्वरे कुंडले रुचके ॥ ५६१ ॥

अर्थ—मनुक्ष लोकविषै दोय घाटि च्यारि सै जिनमंदिर हैं । बहुरि नंदीश्वरद्वीप कुंडलगिरि रुचकद्वीपविषै क्रमतै तिर्यक् लोकसंबंधी बावन च्यारि च्यारि जिनमंदिर हैं । तिन सर्व जिनमंदिरनिकों तुम नमस्कार करहु ॥ ५६१ ॥

आगै मनुक्ष लोकविषै जिनमंदिर कहां कहां हैं सो कहै हैं;—

मंदरकुलवक्खारिसुमणुसुत्तररूपजंबुसामलिसु ।

सीदी तीसं तु सयं चउ चउ सत्तरिसयं दुपणं ॥ ५६२ ॥

मंदरकुलवक्षारिषुमानुषोत्तरजंबूशाल्मलिषु ।

अशीतिः त्रिंशत् तु शतं चत्वारि चत्वारि सप्ततिशतं द्विपंच ॥ ५६२ ॥

अर्थ—मेरु पांच कुलाचल तीस गजदंत सहित वक्षारगिरि एकसो इष्वाकार च्यारि मानुषोत्तर एक विजयाद्विपर्वत एकसौ सत्तरि जंबूवृक्ष पांच शाल्मली वृक्ष पांच इनविषै अनुक्रमतै असी तीस एकसौ च्यारि च्यारि एकसौ सत्तरि पांच पांच जिनमंदिर हैं ॥ ५६२ ॥

आगै अब कहिए हैं अर्थ ते सर्व मेरुका कथनकै आश्रय है तातै प्रथम ही तिन मेरुगिरि-निकों प्रतिपादन करै हैं;—

जंबूदीवे एक्को इसुकयपुव्ववरचावदीवदुगे ।

दो दो मंदरसेला बहुमज्जगविजयबहुमज्जे ॥ ५६३ ॥

जंबूद्वीपे एकः इषुकुतपूर्वापरचापद्वीपद्विके ।

द्वौ द्वौ मंदरशैलौ बहुमध्यगविजयबहुमध्ये ॥ ५६३ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपविषै एक मेरुगिरि है, बहुरि धातुकी खंड अर पुष्करार्द्र इन दोऊ द्वीपनि-विषै दक्षिण उत्तर दिशानै दोय दोय इष्वाकार पर्वत हैं । तिन करि दोय भाग होइ पूर्व पश्चिमविषै दोय दोय धनुषाकार क्षेत्रविषै दोय दोय मेरुगिरि हैं । तहां भी ते मेरु कहां तिष्ठै हैं । भरतादि क्षेत्रनिकै अतिशय करि मध्य तिष्ठतो विदेहक्षेत्र तीहका अत्यंत मध्य प्रदेशविषै तिष्ठै हैं ॥ ५६३ ॥

आगँ तिन मेरुनिका दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्ठते क्षेत्रनिके नाम कहँ हैं;—

दक्खिणदिशादु भरहो हेमवदो हरिविदेहरम्मो य ।

हइरण्यवदेरावदवस्सा कुलपन्वयंतरिया ॥ ५६४ ॥

दक्षिणदिशातः भरतो हैमवतः हरिविदेहरम्यश्च ।

हैरण्यवदेरावतवर्षाः कुलपर्वतांतरिताः ॥ ५६४ ॥

अर्थ— तिन मेरुनिका दक्षिण दिशातँ लगाय क्रमतँ भरत १ हैमवत १ हरि १ विदेह १ रम्यक १ हैरण्यवत १ ऐरावत १ ऐसँ ए वर्ष क्षेत्र हैं । ते ए वाँचि वाँचि हिमवत आदि कुलाचलनिकरि अंतरालकौ धरै हैं । भरत हैमवतकँ वीचि हिमवत कुलाचल है, हैमवत हरिके वाँचि महाहिमवत है । ऐसँ ही सात क्षेत्रनिके वाँचि छह कुलाचल जाननँ । जंबूदीपघातुकीखंड पुष्करार्धविषै मेरुक्षेत्र कुलाचल ऐसँ जाननँ ॥ ५६४ ॥

आगँ तिन कुलाचलनिका नामादिक गाथा दोय करि कहँ हैं;—

हिमवं महादिहिमवं णिसहो णीलो य रुम्मि सिहरी य ।

मूलोवरि समवासा मणिपासा जलणिहिं पुट्टा ॥ ५६५ ॥

हिमवान् महादिहिमवान् निपधः नीलश्च रुक्मी शिखरी च ।

मूलोपरि समव्यसा मणिपार्श्वा जलनिधिं स्पृष्टाः ॥ ५६५ ॥

अर्थ—हिमवत १ महाहिमवत १ निपध १ नील १ रुक्मी १ शिखरी १ ए छह कुलाचल हैं । ते ए सर्व मूलतँ उपरि पर्यंत सर्वत्र समान व्यासकौ धरै हैं । भीति समान नीचे तँ उपरि-पर्यंत समान चौड़े हैं । बहुरि मणि पार्श्वाः कहिए, जिनका अंत प्रदेशमणिमय हैं । बहुरि ते समुद्रकौ स्पर्शें हैं । जिनका दोऊ पार्श्व समुद्रकौ स्पर्श करि रहे हैं । तहां जंबूद्वीपविषै कुलाचलनिके दोऊ पार्श्व लवण समुद्र हीकौ स्पर्शें हैं । धातुकी खंडविषै लवणोद कालोद समुद्रकौ स्पर्शें हैं । पुष्करार्धविषै कालोद समुद्र मानुषोत्तर पर्वतकौ स्पर्शें हैं इतनां जाननां ॥ ५६५ ॥

हेमज्जुणतवणीया कमसो वेलुरियरजदहेममया ।

इगिदुगचउचउदुगइगिसयतुंगा होंति हु कमेण ॥ ५६६ ॥

हेमार्जुनतपनीयाः क्रमशः वैडूर्यरजतहेममयाः ।

एकद्विकचतुश्चतुर्द्विकैकशततुंगा भवन्ति हि क्रमेण ॥ ५६६ ॥

अर्थ—हिमवत् आदि कुलाचल हेम कहिए सुवर्ण समान वर्ण धरै है महाहितवत् अर्जुन कहिए रूपासमान श्वेतवर्ण धरै है निपध तपनीय कहिए ताया सोनां समान कूकड़ाकी किलंगी सदृश वर्ण धरै है । नील वैडूर्य कहिए पन्नां समान मोरका कंठ सदृश वर्ण धरै है । रुक्मी रजत कहिए रूपा समान श्वेतवर्ण धरै है । शिषरी हेम कहिए सोना समान वर्ण धरै है । ऐसँ ए पर्वतनिके क्रमतँ वर्ण हैं । बहुरि हे हिमवत् आदि पर्वतनिका क्रमतँ एकसौ दोयसै च्यारिसै दोयसै एकसौ योजन उचाईका प्रमाण है ॥ ५६६ ॥

अब हिमवत् आदि कुलाचलनिके उपरि तिष्ठै है द्रह । तिनके नाम कहँ हैं;—

पउमाय महापउमा तिगिळ केसरिं महादिपुण्डरिया ।

पुंडरिया य दहाओ उवरि अणुपव्वदायामा ॥ ५६७ ॥

पद्मो महापद्मः तिगिळः केसरिः महादिपुंडरीकः ।

पुंडरीकश्च हृदा उपरि अनुपर्वतायामाः ॥ ५६७ ॥

अर्थ—तिन हिमवत् आदि पर्वतनिकै उपरि क्रमतै पद्म १ महापद्म १ तिगिळ १ केसरि १ महा पुंडरीक १ पुंडरीक १ ए द्रह हैं ते पर्वत अनुसारि हीन अधिक लम्बाईका प्रमाण धरै तिष्ठे हैं ॥५६७ ॥

आगै तिन द्रहनिका व्यासादिककौ प्रतिपादन करत संता तिन द्रहनिविषै तिष्ठते कमल तिनका स्वरूपकौ निरूपै हैं;—

वासायामोगाढं पणदसदसमहदपव्वदुदयं खु ।

कमलस्सुदओ वासो दोविय गाहस्स दसभागो ॥ ५६८ ॥

व्यासायामागाधाः पंचदशदशमहत्पर्वतोदयाः खलु ।

कमलस्योदयः व्यासः द्वावपि गाधस्य दशभागौ ॥ ५६८ ॥

अर्थ—तिन द्रहनिका व्यास अर आयाम अर अगाध क्रमतै अपनै अपनै पर्वतकी उचाईतै पांच गुणां दशगुणां दशवै भाग प्रमाण जाननै । भावार्थ—हिमवत आदि पर्वतनिका उचाईका प्रमाण एक सौ दोयसै च्यारिसै च्यारिसै दोयसै एकसौ योजन प्रमाण है । तीहस्यौ पांच गुणा पद्मादि द्रहनिकी चौड़ाईका प्रमाण जाननां । सो क्रमतै पांचसै हजार दोय हजार दोय हजार हजार पांचसै योजन प्रमाण चौड़े हैं । बहुरि दश गुणां लंबाईका प्रमाण जाननां । सो क्रमतै एक हजार दोय हजार च्यारि हजार च्यारि हजार दोय हजार एक हजार योजन प्रमाण लंबे हैं । बहुरि दशवै भागि ऊंडाईका प्रमाण जाननां । सो क्रमतै दश वीस चालीस चालीस वीस दश योजन प्रमाण ऊंडे हैं । बहुरि तिन द्रहनिविषै कमल हैं । तिनका उचाईका प्रमाण अर चौड़ाईका प्रमाणए दोऊ अपनै अपनै द्रहका अगाध प्रमाणकै दशवै भाग प्रमाण है । सो पद्मादि द्रहनिविषै क्रमतै एक दोय च्यारि च्यारि दोय एक योजन प्रमाण कमल ऊंचे अर इतनेही चौड़े जाननै ॥ ५६८ ॥

आगै तिन कमलनिका विशेषस्वरूप गाथा दोय करि कहै हैं;—

णियगंधवासियदिसं वेलुरियविणिम्मिउच्चणालजुदं ।

एकारसहस्सदलं णववियसियमत्थि दहमज्जे ॥ ५६९ ॥

निजगंधवासितदिशं वैडूर्यविनिर्मितोच्चणालयुतम् ।

एकादशसहस्रदलं नवविकसितमस्ति हृदमय्ये ॥ ५६९ ॥

अर्थ—निज सुगंध करि वासित करी है दिशा जानै ऐसा बहुरि वैडूर्यमणि करि निर्मा-मित जो ऊंची नाली तीह करि संयुक्त बहुरि ग्यारह अधिक एक हजार पत्र जाकै पाईए बहुरि नवा-विकसायमान सारिखा ऐसा कमल तिन द्रहनिकै मध्य हैं । सो कमल पृथ्वी साररूप है वन-स्पतीरूप नाहीं हैं ॥ ५६९ ॥

आगै इस ही अनुसारि गुण धरै प्रक्षेप गाथा है;—

दहमज्जे अरविंदयणालं वादालकोसमुच्चिदं ।

इगिकोसं वाहलं तस्स मुणालं तु रजदमयं ॥ ५७० ॥

हृदमध्ये अरविंदकनालं द्वाचत्वारिंशत्क्रोशोत्सेधम् ।

एककोशं वाहल्यं तस्य मृणालं त्रिः रजतमयम् ॥ ५७० ॥

अर्थ—पद्मद्रहकै मध्य कमलकी नाली बियालीस कोश ऊंची है एक कोश मोटी है । बहुरि तिसका मृणाल तीन कोशका मोटा रूपामई श्वेतवर्ण है ॥ ५७० ॥

कमलदलजलविणिग्गयतुरियुदयं वास कण्णियं तत्थ ।

सिरिरयणगिहं दिग्घति कोसं तस्सद्धमुभयजोगदलं ॥ ५७१ ॥

कमलदलजलविनिर्गततुर्योदयः व्यासः कर्णिकायाः तत्र ।

श्रीरत्नगृहं दैर्घ्यत्रिकं क्रोशः तस्यार्धमुभययोगदलं ॥ ५७१ ॥

अर्थ—कमलका उत्सेधका अर्द्ध प्रमाण सोही नालीकी जल विनिर्गति है । भावार्थ—बियालीस कोश नाली ऊंची है ताके साढ़ा दश योजन भए । तहां दश योजन तौ नाली जलविषै मग्न है अर आध योजन नाली जलतै उपरि है सोई कमलकी उचाई एक योजन कही थी । ताका आधा प्रमाण आध योजन है । बहुरि तिस कमलकी जो कर्णिका ताकी उचाई व चौड़ाई कमल चतुर्थांश प्रमाण है सो कमल एक योजन उदय व्यास धरै ताकी चौथाई एक कोश प्रमाण कर्णिकाका उदयत्रा व्यास जाननां । बहुरि तिस कर्णिका उपरि श्रीदेवीका रत्नमई मंदिर है । तिस मंदिरका दीर्घ त्रिक कोश ताका आधा उभय योगका आधा प्रमाण है । भावार्थ—श्रीदेवीका मंदिर एक कोस लंबा है । आध कोश चौड़ा है पौण कोश ऊंचा है । ऐसै पद्म द्रहविषै कथन किया, अन्य द्रहनिविषै ऐसै ही कथन जाननें प्रमाण यथा संभव जाननां ॥ ५७१ ॥

आगै तिन द्रहनिविषै जे कमल तिनविषै जे देवी वसै है तिनके नाम वा तिनका स्थिति-पूर्वक तिनका परिवार कहै है;—

सिरि हिरि धिदि किच्चीवि य बुद्धी लच्छी य पल्लुठिदिगाओ ।

लक्खं चत्तसहस्सं सयदहपण पउमपरिवारा ॥ ५७२ ॥

श्रीः हीः धृतिः कीर्तिः अपि च बुद्धिः लक्ष्मीः च पत्यस्थितिकाः ।

लक्षं चत्वारिंशत्सहस्रं शतदशपंच पद्मपरिवारः ॥ ५७२ ॥

अर्थ—पद्मादि द्रह संबन्धी कमलनिकैविषै क्रमतै श्री १ ही १ धृति १ कीर्ति १ बुद्धि १ लक्ष्मी १ ए हैं नाम जिनके ऐसी देवांगना वसै हैं । ते पत्य प्रमाण आयुको धरै हैं । बहुरि एक लाख चालीस हजार एकसो पंद्रह तिस एक कमलके परिवाररूप तिस ही द्रहविषै अन्य कमल है ॥ ५७२ ॥

आगै तिन परिवार कमलनिविषै तिष्ठता श्रीदेवीका परिवार ताहि गाथा करि ध्यारि कहै है;—

आइच्चचंदजदुपहुदीओ तिप्परिसमग्गिजमणिरुदी ।

बत्तीस ताळ अडदाल सहस्सा कमलममरसमं ॥ ५७३ ॥

आदित्यचंद्रजतुप्रभृतयः त्रिपारिपदाः अग्नियमनैर्ऋत्यां ।

द्वात्रिंशत् चत्वारिंशत् अष्टचत्वारिंशत्सहस्राणि कमलानि अमरसमानि ॥ ५७३ ॥

अर्थ—आदित्य १ चन्द्र १ जतु इनको आदि दे करि जे तीन प्रकार परिषद देव हैं ते मूल कमलतैं अग्नि यमने ऋति दिशानिविषै तिष्ठै हैं । ते अभ्यन्तर परिषद देव बत्तीस हजार हैं । मध्य परिषद देव चालीस हजार हैं । बाह्य परिषद देव अठतालीस हजार हैं । बहुरि तिनके रहनेके कमल तिन देवानिकै समान जानने । एक एक कमल उपरि एक एक परिषद देवका मंदिर है ५७३

आणीयगेहकमला पच्छिमदिसि सग गयस्सरहवसहा ।

गंधव्वणञ्चपत्ती पत्तेयं दुगुण सत्तकक्खजुदा ॥ ५७४ ॥

आनीकगेहकमलानि पश्चिमदिशि सप्त गजाश्वरथवृषभाः ।

गंधर्वनृत्यपत्तयः प्रत्येकं द्विगुणसप्तकक्षयुताः ॥ ५७४ ॥

अर्थ—आनीक जातिके देवानिके मंदिर सहित सात कमल मूल कमलतैं पश्चिम दिशाविषै है ते आनीक हाथी १ घोड़ा १ रथ बैल १ गंधर्व १ नृत्यकी १ पयादा १ ऐसैं सात प्रकार हैं । तहां एक एक आनीकविषै सात सात कक्ष हैं । तहां प्रथम कक्षविषै अपनां सामानिकनिके समान च्यारि हजार हैं । बहुरि द्वितीयादि कक्षविषै दूणा दूणा प्रमाण जाननां ॥ ५७४ ॥

उत्तरदिसि कोणदुगे सामाणियकमल चदुसहस्समदो ।

अब्भंतरे दिसं पडि पुह तेत्तियमंगरक्खपासादा ॥ ५७५ ॥

उत्तरदिशि कोणद्विके सामानिककमलानि चतुःसहस्रमतः ।

अभ्यंतरे दिशं प्रति पृथक् तावन्मात्रांगरक्षपासादाः ॥ ५७५ ॥

अर्थ—उत्तर दिशाका भागविषै तिष्ठते दोऊ कोण तिनविषै सामानिक देवानिके कमल च्यारि हजार है । बहुरि इन कमलानिकै अभ्यन्तर मूल कमलकी तरफ एक एक दिशा प्रति तिनके ही च्यारि च्यारि हजार अंगरक्षकनिके कमलनि उपरि मंदिर हैं ॥ ५७५ ॥

अब्भंतरदिसि विदिसे पडिहारमहत्तरहसयकमलं ।

मणिदलजलसमणालं परिवारं पउममाणद्धं ॥ ५७६ ॥

अभ्यन्तरदिशि विदिशि प्रतिहारमहत्तराणामष्टशतकमलानि ।

मणिदलजलसमणालं परिवारं पद्ममानार्धम् ॥ ५७६ ॥

अर्थ—तिन अंगरक्षक कमलनितैं अभ्यन्तर मूल कमलकै समीप दिशा वा विदिशानिविषै प्रतीहार महत्तरनिके एक सो आठ कमल हैं । **भावार्थ**—एक एक दिशाविषै चौदह चौदह अर एक एक विदिशाविषै तेरह तेरह मुख्य प्रतीहारनिके कमल हैं । इहां ए कमल ऐसैं जानने । बहुरि ए सर्व परिवार कमल मणि मई रत्ननि करि संयुक्त हैं । अर जलकी उंडाई समान ऊंची है नाली जिनकी ऐसे हैं । जलतैं उपरि ऊंचे नाहीं हैं । बहुरि परिवार कमलनिका व्यासादिकरूप जो विशेष स्वरूप सो मुख्य कमलतैं अर्द्ध प्रमाण सर्व है ॥ ५७६ ॥

सिरिगिहदलमिदरगिहं सोहम्मिदस्स सिरिहिरिधिदीओ ।

कित्ती बुद्धी लच्छी ईसाणहिवस्स देवीओ ॥ ५७७ ॥

श्रीप्रहदलमितरगृहं सौधर्मेन्द्रस्य श्रीहीभृतयः ।

कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः ईशानाधिपस्य देव्यः ॥ ५७७ ॥

अर्थ—श्रीदेवीका मंदिरका जो व्यासादिक प्रमाण ताका आधा परिवारके ग्रहनिका व्यासा-
दिक प्रमाण है ऐसै ही अन्यत्र जाननां । वहुरि श्री १ ही १ धृति १ ए तीन तौ सौधर्म इंद्रकी
देवी हैं । कीर्ति १ बुद्धि १ लक्ष्मी १ ए तीन ईशान अधिपकी देवी हैं ॥ ५७७ ॥

आगै तिन द्रहनिविषै उत्पन्न भई जे महानदी तिनके नाम गाथा दाय करि कहै हैं;—

सरजा गंगासिंधू रोहि तहा रोहिदास णाम णदी ।

हरि हरिकांता सीदा सीतोदा णारि णरकांता ॥ ५७८ ॥

सरोजाः गंगासिंधू रोहित्था रोहितास्या नाम नदी ।

हरित् हरिकांता सीता सीतोदा नारी नरकाता ॥ ५७८ ॥

अर्थ—सरोवरनितै उत्पन्न भई ऐसी नदी गंगा १ सिंधु १ रोहित १ रोहितास्या १ हरित
१ हरिकांता १ सीता १ सीतोदा १ नारी १ नरकांता ॥ ५७८ ॥

सरिदा सुवण्णरूपयकूला रक्ता तहेव रत्तोदा ।

पुव्वावरेण कमसो णाभिगिरिपदक्खणेण गया ॥ ५७९ ॥

सरितः सुवर्णरूपयकूला रक्ता तथैव रत्तोदा ।

पूर्वापरेण क्रमशो नाभिगिरिप्रदक्षिणेन गताः ॥ ५७९ ॥

अर्थ—सुवर्णकूला १ रूथकूला १ रक्ता १ रत्तोदा १ ए सरितः कहिए चौदह महानदी
हैं ते क्रमतै पूर्वै कही गंगा रोहित सीता नारी सुवर्णकूला रक्ता ए तौ पूर्वदिशा मुख करि अर अब
शेष पीछै कही सात नदी ते पश्चिम मुख करि क्षेत्रनिके बीच तिष्ठते जे पर्वत तिनकी प्रदक्षिणा
करि समुद्रकों प्राप्त भई हैं ॥ ५७९ ॥

आगै तिन नदीके दोऊ तटनिका स्वरूप कहै हैं;—

पुण्णागणागपूगीकंकेल्लितमालकेलितंबूली ।

लवलीलवंगमल्लीपहुदी सयलणदिदुतडेसु ॥ ५८० ॥

पुनागणागपूगीकंकेल्लितमालकदलीतांबूली ।

लवलीलवंगमल्लीप्रभृतयः सकलनदीद्वितटेषु ॥ ५८० ॥

अर्थ—पुनाग नागकेशर सुपारी अशोक तमाल केलि तांबूली स्थूल डोडा लवंग मालती आदि
वृक्ष समस्त नदीनिके दोऊ तटनिविषै पाइए हैं ॥ ५८० ॥

आगै किस २ द्रहविषै ए नदी उत्पन्न भई हैं सो कहै हैं;—

गंगादु रोहिदस्सा पउमे रत्तदु सुवण्णमंतदहे ।

सेसे दो दो जोयणदलमंतरिदूण णाभिगिरिं ॥ ५८१ ॥

गंगाद्वे रोहितास्या पद्मे रक्ताद्वे सुवर्णा अंतहृदे ।

शेषेषु द्वे द्वे योजनदलमंतरित्वा नाभिगिरिम् ॥ ५८१ ॥

अर्थ—गंगा सिंधु रोहितास्या ए तीन नदी तौ पद्मद्रहविषै उपजी हैं। बहुरि रक्ता रक्तोदा सुवर्णकूला ए तीन नदी अंतका पुंडरीक द्रहविषै उत्पन्न भई हैं। अवशेष द्रहनिषिषै दोय दोय नदी उत्पन्न भई हैं। तहां गंगा सिंधु रक्ता रक्तोदा इन च्यारि नदीविना अवशेष नदी क्षेत्रनिके बीच तिष्ठता जो नाभिगिरि ताको आध योजन छोड़ि समुद्रको गई हैं। इहां विदेहविषै मेरुगिरिका नाम इहां नाभिगिरि जाननां। हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवतविषै नाभिगिरि है ही सो द्रहनि सौ नदी निकसि नाभिगिरिके सन्मुख सूधी आइ आध योजन उरैतैं मुड़ि तीह नाभिगिरिकी अर्द्ध प्रदाक्षिणा करि समुद्रको प्राप्त हो है। बहुरि भरत ऐरावतविषै नाभिगिरि नाहीं तातैं गंगासिंधु रक्तारक्तोदा इनका वर्णन किया है ॥५८१॥

आगैं तिनविषै गंगानदीकी उत्पत्ति अर ताके गमनका विधान गाथा तीन करि कहैं हैं;—

वज्रमुहदो जणित्ता गंगा पंचसयमेत्थ पुंन्वमुहं ।

गत्ता गंगाकूटं अत्रिपत्ता जोयणद्वेण ॥ ५८२ ॥

वज्रमुखतः जनित्वा गंगा पंचशतमत्र पूर्वमुखं ।

गत्वा गंगाकूटं अप्राप्य योजनार्धेन ॥ ५८२ ॥

अर्थ—पद्मनामा द्रहका पूर्वदिशाविषै जो वज्रद्वार तीहस्यौ गंगानदी उपजि-निकासि करि इस हिमवत् पर्वतके ऊपरि पूर्व दिशा सनमुख पांचसै योजन जाइ हिमवत् पर्वत उपरि गंगा नामा जो कूट है ताको आध योजन अप्राप्त होइ गंगा कूटसौ आध योजन उरै हीतैं मुड़ि करि ॥ ५८२ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

दक्षिणमुहं चलित्ता जोयणतेवीससहियपंचसयं ।

साहियकोसद्वजुदं गत्ता जा विविहमणिरूवा ॥ ५८३ ॥

दक्षिणमुखं चलित्वा योजनत्रयोविंशतिसहितपंचशतम् ।

साधिकक्रोशार्धयुतं गत्वा या विविधमणिरूपा ॥ ५८३ ॥

अर्थ—तहांसौ दक्षिण दिशाके सनमुख तिस हिमवत पर्वत ही उपरि चाळि करि तेईस अधिक पांचसै योजन अर साधिक आध कोश जाइ पर्वतके तटि गई। याकी वासना कहिए हैं। भरतका प्रमाण पांचसै छवीस योजन अर छह उगणीसवां भाग ताको दृणा किए हिमवत् पर्वतका व्यास एक हजार बावन योजन अर बारह उगणीसवां भाग तामैं नदीका व्यास छह योजन एक कोश घटाए एक हजार छियालीस योजन रहे ताके तौ आधा किए पांचसै तेईस तौ योजन भए अवशेष बारहका उगणीसवां भागको चौगुणा करि क्रोश किए अठतालीस कोशका उगणीसवां भाग भया ताके दोय कोस अर दशका उगणीसवां भाग भया तामैं एक कोश तौ नदीका व्यासविषै दिया अवशेष एक कोश अर दशका उगणीसवां भाग रखा ताका आधा आध कोश अर पांच उगणीसवां भाग भया। यातैं पांचसै तेईस योजन अर साधिक आध कोश रखा। भावार्थ—जहां गंगानदी मुड़ी है तहां हिमवतका व्यासविषै गंगाका व्यास घटाइ अवशेष

आधा तौ उत्तरनै रखा अर आधा दक्षिणनै रखा सो गंगा दक्षिणदिशाको जाइ पर्वतका तटको प्रात भई । तहां पर्वतका तटविपै जिहिका नामा प्रणाली नानाप्रकार मणि मई है ॥ ५८३ ॥

कोसदुगदीहवहला वसहायारा य जिम्हिया रुंदा ।

छज्जोयणं सकोसं तिस्से गंतूण पडिदा सा ॥ ५८४ ॥

कोशद्वयदीर्घवाहल्या वृषभाकारा च जिहिका रुंदा ।

पट्टयोजनं सक्रोशं तस्यां गत्वा पतिता सा ॥ ५८४ ॥

अर्थ—सो जिहिका नामा प्रणाली दोय कोश लंबी है । अर दोय ही कोश वाहल्य कहिए ऊंची है । बहुरि वृषभाकारा कहिए गऊमुखकै आकार है । कोश सहित छह योजन चौड़ी है । तिह प्रणालीविपै जाइ सो गंगानदी तिस हिमवत पर्वततै पड़ी है ॥ ५८४ ॥

आगै प्रणालीका वृषभाकारको सार्थीक करै है;—

केसरिमुहसुदिजिम्भादिट्टी भूसीसपहुदिगोसरिसा ।

तेणिह पणालिया सा वसहायारेत्ति णिद्धिटा ॥ ५८५ ॥

केशरिमुखश्रुतिजिह्वादृष्टयः भूशीर्षप्रभृतयः गोसदृशाः ।

तेनेह प्रणालिका सा वृषभाकारा इति निर्दिष्टा ॥ ५८५ ॥

अर्थ—प्रणालिकाकै मुख कान जीभ नेत्रनिका आकार तौ सिंहके समान है । अर भौंह मस्तक आदिका आकार गऊ समान है । तीह कारण करि इहां सो प्रणालिका मुख्यपनै वृषभाकार ऐसी कही है ॥ ५८५ ॥

आगै पड़ी जो नदी ताके पड़नेका स्वरूप गाथा पांच करि कहै है;—

भरहे पणकदिमचलं मुच्चा कहलोवमा दहव्वासा ।

गिरिमूले दहगाहं कुंडं विस्तारसद्विजुदं ॥ ५८६ ॥

भरते पंचकृतिमचलं मुक्त्वा काहलोपमा दशव्यासा ।

गिरिमूले दशगाधं कुंडं विस्तारपष्टियुतम ॥ ५८६ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रविपै पंचकृति कहिए पच्चीस योजन हिमवत् पर्वतको छोड़ि उरै काहलाकै आकारि होइ दश योजनकी चौड़ाई लिए गंगानदी पड़े है । कहां पड़े है सो कहै है । हिमवत पर्वतका मूलविपै दश योजन ऊंडा साठि योजन चौड़ा गोल कुंड है ॥ ५८६ ॥

मज्झे दीओ जलदो जोयणदलमुग्गओ दुघणवासो ।

तम्मज्झे वज्जमओ गिरी दसुस्सेहओ तस्स ॥ ५८७ ॥

मध्ये द्वीपः जलतः योजनदलमुद्रतः द्विघनव्यासः ।

तन्मध्ये वज्रमयः गिरिः दशोस्सेधः तस्य ॥ ५८७ ॥

अर्थ—तीह कुंडकै मध्य जलतै उपरि आध योजन ऊंचा अर द्विघन कहिए आठ योजन चौड़ा ऐसा गोल द्वीप कहिए टापू है । तीह द्वीपकै मध्य वज्रमई दश योजन ऊंचा पर्वत है तिस पर्वतका ॥ ५८७ ॥

कहा सो कहै हैं;—

भूमज्जगगे वासो चतु दुगि सिरिगेहमुवारि तव्वासो ।
चावाणं तिदुगेकं सहस्समुदओ दु दुसहस्सं ॥ ५८८ ॥
भूमध्याप्रे व्यासः चतुः द्विकं एकं श्रीगेहमुपरि तद्व्यासः ।
चापानां त्रिद्विकैकं सहस्त्रमुदयस्तु द्विसहस्रम् ॥ ५८८ ॥

अर्थ—भूमध्य अग्रविषै व्यास च्यारि दोय एक योजनका व्यास है । भावार्थ—सो पर्वत नीचै च्यारि योजन मध्यविषै दोय योजन उपरि एक योजन चौडा है । बहुरि तिह पर्वतकै उपरि श्री देवीका मंदिर है । तिस श्रीमंदिरका चापनिका तीन दोय एक सहस्र है उदय दोय सहस्र है । भावार्थ—श्रीमंदिर नीचै तीन हजार मध्यविषै दोय हजार उपरि एक हजार धनुष प्रमाण चौडा है । अर दोय हजार धनुष ऊंचा है ॥ ५८८ ॥

पणसयदलं तदंतो तहारं ताल वास दुगुणुदयं ।
सव्वत्थ धणू णेयं दोण्णि कवाला य वज्जमया ॥ ५८९ ॥
पंचशतदलं तदंतरं तद्द्वारं चत्वारिंशत् व्यासं द्विगुणोदयं ।
सर्वत्र धनुः ज्ञेयं द्वौ कपाटौ च वज्रमयौ ॥ ५८९ ॥

अर्थ—तिस श्रीमंदिरका अभ्यंतरविषै व्यास पांचसै अर ताका आधा प्रमाण है । भावार्थ—अभ्यंतर श्रीदेवीका मंदिर साढ़ा सातसै धनुष प्रमाण चौडा है । बहुरि तिसका द्वार चालीस व्यास दूणा उदय संयुक्त है । भावार्थ—श्रीमंदिरका द्वार चालीस धनुष चौडा असी धनुष ऊंचा है । ऐसै सर्वत्र श्रीमंदिरका प्रमाण धनुष प्रमित जाननां । तिह द्वारकै दोय वज्रमई कपाट है ५८९ ॥

सिरिगिहसीसठियंबुजकण्णिसिंहासनं जडामकुटं ।
जिनमभिसेत्तुमणा वा ओदिण्णा मत्थए गंगा ॥ ५९० ॥
श्रीगृहशीर्षस्थितांबुजकर्णिकासिंहासनं जटामकुटं ।
जिनमभिषेक्तुमणा वा अवतीर्णा मस्तके गंगा ॥ ५९० ॥

अर्थ—श्रीमंदिरका मस्तक उपरि तिष्ठता कमलकी कणिकाविषै तिष्ठता सिंहासन जटा मुकुट जिनबिंब ताहि अभिषेक करनेका मानौं याका मन है ऐसै जिनाबिंबके मस्तक उपरि गंग अवतरै है । भावार्थ—श्रीमंदिरकै उपरि कमल है ताकी कर्णिका उपरि सिंहासन है । तहां जिनबिंब विराजै है । ताकै उपरि सो गंगा नदी तिस पर्वतसौं पड़ै है ॥ ५९० ॥

आगै कुंडसौं निकसि चाली जो गंगा ताका स्वरूपकों वा तीहका स्थान स्वरूपकों गाथा छह करि कहै हैं;—

कुंडादो दक्खिणदो गत्ता खंडप्पवादणामगुहं ।
अडजोयणवित्थिण्णा विणिग्गया कुदवहिद्दादो ॥ ५९१ ॥
कुंडात् दक्षिणतः गत्वा खंडप्रपातनामगुहाम् ।
अष्टयोजनविस्तीर्णा विनिर्गता कृतपाधस्तात् ॥ ५९१ ॥

अर्थ—कुंडसों निकसि दक्षिण दिशा सनमुख सूधी जाइ विजयार्द्र नामा पर्वतकी खंड प्रपात नामा गुफा ताकी कुतप कहिए देहली ताकै नीचै होय तिस गुफाविषै प्रवेश करि आठ योजन चौडी होत संती गंगा तिस ही गुफाका उत्तर द्वारकी कुतप कहिए देहली तीहकै नीचै होइ करि ही सो गंगा तिस गुफातै वारै निकसै है ॥ ५९१ ॥

दारगुहृच्छयवासा अड वारस पव्वदं व दीहत्तं ।

वज्जलवासकवाडदु वेयडगुहा दृगुभयंते ॥ ५९२ ॥

दारगुहोच्छ्रयव्यासौ अष्ट द्वादश पर्वत इव दीर्घत्वं ।

वज्रपट्टव्यासकपाटद्वयं विजयार्द्रगुहा द्विकोभयांते ॥ ५९२ ॥

अर्थ—गुफाका द्वार अर गुफा ताकी उचाई तौ प्रत्येक आठ योजन है अर चौडाई बारह योजन है । बहुरि विजयार्द्र पर्वतकी चौडाईका जो प्रमाण तितनां ही गुफाका लंबाईका प्रमाण पचास योजन है । बहुरि विजयार्द्रकी गुफाके दोऊ अंत द्वागनिविषै प्रत्येक छह छह योजन चौडे दोय वज्र मई कपाट है ॥ ५९२ ॥

उम्मगगणिमगगणदी गुहमज्जगकुंडजा दृ पुव्ववरे ।

जोयणदुगदीहाओ पुसंति उभयंतदो गंगं ॥ ५९३ ॥

उन्मग्ननिमग्ननद्यो गुहामध्यगकुंडजे तु पूर्वापरस्थाम् ।

योजनद्वयदैर्ध्ये स्पृशतः उभयांततः गंगाम् ॥ ५९३ ॥

अर्थ—उन्मग्न निमग्ननदी पूर्व पश्चिमविषै गुफा मध्यके कुंडतै उपजि दोऊ तटतै दोय योजन चौडी होत संती गंगाकौं स्पर्शे हैं । भावार्थ—गुफाकी पूर्व पश्चिमविषै भीतिकै निकटि दोय कुंड हैं । तिनतै उन्मग्न अर निमग्न नामा नदी उपजै हैं । सो तहांसों चालि सूधी गंगाके दोऊ तटनिविषै आइ गंगाविषै प्रवेश करै हैं । ते नदी दोय योजन चौडी हैं ॥ ५९३ ॥

णियजलपवाहपडिदं द्रव्यं गुरुगंपि णेदि उवरि तडं ।

जम्हा तम्हा भण्णदि उम्मग्गा वाहिणी एसा ॥ ५९४ ॥

निजजलप्रवाहपतितं द्रव्यं गुरुकमपि नयति उपरि तटम् ।

यस्मात् तस्मात् भण्यते उन्मग्गा वाहिनी एसा ॥ ५९४ ॥

अर्थ—अपनां जलका प्रवाहविषै पड्या हुवा भारा भी द्रव्यकों जातै उपरि तटहीकों प्राप्त करै डूबनै दे नाही तातै यह उन्मग्ननामा नदी कहिए हैं ॥ ५९४ ॥

णियजलभरउवरि गदं द्रव्यं लहुगंपि णेदि हिट्ठम्मि ।

जेण्णं तेण्णं भण्णदि एसा सरिया णिमगंति ॥ ५९५ ॥

निजजलभरोपरि गतं द्रव्यं लघुकमपि नयति अधस्तनं ।

येन तेन भण्यते एसा सरित् निमग्गा इति ॥ ५९५ ॥

अर्थ—अपनां जलका प्रवाहकै उपरि प्राप्त भया हलका भी द्रव्यकों नीचे प्राप्त करै है । डूबवै है । जिह कारण करि तीहसों या नदी निमग्गा ऐसी कहिए है ॥ ५९५ ॥

ततो दक्षिणभरहस्सद्धं गंतूण पुव्वदिसवदणा ।

मागहदारंतरदो लवणसमुद्धं पविट्ठा सा ॥ ५९६ ॥

ततो दक्षिणभरतस्सार्धं गत्वा पूर्वादिसावदना ।

मागधद्वारांतरतः लवणसमुद्धं प्रविट्ठा सा ॥ ५९६ ॥

अर्थ—तीह गुफासों निकसि करि दक्षिण भरतका अर्द्ध पर्यंत तो सूधी दक्षिण सन्मुख ही गई सो एकसौ उगणास योजन अर तीन अठतीसवां भाग प्रमाण गई। कैसैं ? भरतका प्रमाणमैं ५२६।६ ÷ १९ सौ विजयार्द्धका व्यास ५० घटाइ अवशेष ४७६।६ ÷ १९, आधा किए २३८। ÷ १९ दक्षिण भरतका प्रमाण हो है। ताका आधा किए ११९।३ ÷ १९ अर्ध दक्षिण भरतका प्रमाण हो है। बहुरि तीह अर्द्ध दक्षिण भरत ताई आय मुडि करि पूर्व दिशाकों सनमुख होइ द्वीपके कोटका मागध नामा द्वार ताकै मांहीं जाय सो गंगा लवण समुद्रकों प्रवेश करै है ॥ ५९६ ॥

अब सिन्धुनदीके स्वरूपकों निरूपै है;—

गंगासमा सिंधुनदी अवरमुहा सिंधुकूडविणिवित्ता ।

तिमिसगुहादवरंबुहिमिया पभासक्खदारादो ॥ ५९७ ॥

गंगासमा सिंधुनदी अपरमुखा सिंधुकूटविनिवृत्ता ।

तिमिसागुहादपरांबुधिमिता प्रभासाख्यद्वारतः ॥ ५९७ ॥

अर्थ—गंगाविषै जो वर्णन कया तीह समान ही सिंधु नदी है। सो सर्व वर्णन सिंधुविषै जाननां। इतनां विशेष, जो यह सिंधु नदी पद्मद्रहके पश्चिम द्वारतैं निकसि पश्चिम सनमुख सिंधु कूटतैं उरैं मुडि करि पर्वत पर्यंत आइ कुंडविषै पडि तहांसों निकसि विजयार्ध पर्वतकी तिमिश्र नामा गुफाविषै प्रवेश करि तहांसों निकसि जंबूद्वीपके कोटका प्रभास नाम द्वारतैं पश्चिम समुद्रकों प्राप्त भई। और सर्व वर्णन गंगावत जाननां ॥ ५९७ ॥

आगैं अवशेष नदीनिका स्वरूप कहैं हैं;—

सेसा रूप्यंता दहवित्थारूणचलरुंददलमुवरिं ।

गंतूण दक्खिणुत्तरमणुपुट्ठा पुव्ववरजलहिं ॥ ५९८ ॥

शेषा रूप्यंता हदविस्तारोनाचलरुंददलमुपरि ।

गत्वा दक्षिणात्तरमनुस्पृष्टाः पूर्वापरजलधिम् ॥ ५९८ ॥

अर्थ—अवशेष रोहित आदि रूप्यकूलापर्यंत नदी अपनां अपनां द्रहका विस्तार करि उन जो पर्वतका विस्तार ताका आधा प्रमाण ताई पर्वतकै ऊपरि दक्षिण उत्तर सनमुख जाइ पीछैं क्षेत्रविषै आधक्षेत्र ताई सूधी जाइ नाभिगिरिके उरैंतैं मुडिकारि पूर्व पश्चिम संमुख होइ पूर्व पश्चिम समुद्रकों प्रवेश करै है। तहां भरतक्षेत्रका जो प्रमाण ५२६।६ ÷ १९ ताको दोय आठ बत्तीस बत्तीस आठ दोय जो हिमवत् आदिकी शलाका तिन करि क्रमतैं गुणें हिमवत् १०५२।१२ ÷ १९ महाहिमवत् ४२१०।१० ÷ १९ निषद्ध १६८४२।२ ÷ १९ नील १६८४२।२ ÷ १९ रक्मी ४२१०।१० ÷ १९ शिषरी १०५२।१२ ÷ १९ का विस्तार हो है यामें अपने अपने द्रहके विस्तारका प्रमाण

५००।१०००।२०००।२०००।१०००।५०० घटाएं जो अवशेष रहे ५५२।११÷१९
 ३२१०।१०÷१९।१४८४।२÷१९।१४८४।२÷१९।३२१०।१०÷१९।५५२।१२
 ÷१९ ताका आधा किए जो प्रमाण होय २७६।६÷१९।१६०५।५÷१९।७४२।१।१÷१९
 ७४२।१।१÷१९।१६०५।५÷१९।२७६।६÷१९ तितनी दूर तो नदी पर्वत उपरि आवै है। पीछे
 अपना अपना क्षेत्रविषै होइ समुद्रको प्रवेश करै है। **भावाथ**—रोहित नदी महापद्म द्रहके दक्षिण द्वारतै
 निकसि सूधी महा हिमवत्के तटपर्यंत सोलहसै पांच योजन उगणीसवां भाग ताई आइ हैमवत
 क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि तहांतै निकसि सूधी नाभिगिरिके उरै ताई आइ मुडि पूर्व सनमुख होइ समुद्र-
 विषै प्रवेश करै है। बहुरि रोहितास्या नदी पद्मद्रहके उत्तर द्वारतै निकसि सूधी हिमवत्के तट
 पर्यंत दोयसै छिहंतरि योजन छह उगणीसवां भाग ताई आइ हैमवत क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि
 निकसि सूधी नाभिगिरिके उरै ताई जाइ मुडि करि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि
 हरित नदी तिगिंछ द्रहके दक्षिण द्वारतै निकसि सूधी निषद्गके तटपर्यंत चहौत्तरिसै इकईस
 योजन एक उगणीसवां भाग ताई आइ हरि क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि निकसि सूधी नाभिगिरिके उरै
 ताई जाइ मुडि करि पूर्व सनमुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि हरिकांता नदी महापद्म
 द्रहके उत्तर द्वारतै निकसि सूधी महा हिमवतके तट पर्यंत सोलहसै पांच योजन पांच उगणीसवां
 भाग ताई आइ हरिक्षेत्रविषै पड़ि निकसि सूधी नाभिगिरिके उरै ताई जाइ मुडि करि पश्चिम
 सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सीता नदी केसरि द्रहके दक्षिण द्वारतै निकसि
 सूधी नील पर्वतके तटपर्यंत चहौत्तरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग पर्यंत आइ विदेह
 क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि सूधी मेरुगिरिका उरां ताई आइ मुडि पूर्व सनमुख होइ इस समुद्रविषै
 प्रवेश करै है। बहुरि सीतोदा नदी तिगिंछ द्रहके उत्तर द्वारतै निकसि सूधी निषद्गका तटपर्यंत
 चहौत्तरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग ताई आइ विदेह क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि सूधी
 मेरुगिरिका उरां ताई जाइ मुडि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि नारी नदी
 महापुंडरीक द्रहके दक्षिण द्वारतै निकसि सूधी रुक्मी पर्वतका तट पर्यंत सोलहसै पांच योजन
 पांच उगणीसवां भाग पर्यंत आइ रम्यक क्षेत्रविषै पड़ि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां ताई
 जाइ मुडि पूर्व सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि नरकांता नदी केसरी द्रहके उत्तर
 द्वारतै निकसि सूधी नील पर्वतका तट पर्यंत चहौत्तरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग
 ताई आइ रम्यक क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां ताई मुडि पश्चिम
 सनमुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सुवर्ण कूला नदी पुंडरीक द्रहके दक्षिण द्वारतै निकसि
 सूधी शिखरी पर्वतका तट पर्यंत दोयसै छिहंतरि योजन छह उगणीसवां भाग पर्यंत आइ हैरण्य-
 वत क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां ताई आइ मुडि करि पूर्व सनमुख
 होइ इस समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि रूप्य कूला नदी महापुंडरीक द्रहके उत्तर
 द्वारतै निकसि सूधी रुक्मी पर्वतका तट पर्यंत सोलहसै पांच योजन पांच उगणीसवां भाग ताई आइ
 हैरण्यवत क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां ताई जाइ मुडि करि पश्चिम

सनमुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है । इहां पर्वत उपरि नदी आवनें आदिविषै योजननिका प्रमाण जंबूद्वीप अपेक्षा कहा है अन्यत्र धातुकीखंड पुष्करार्धविषै प्रमाण भी ऐसै ही यथासंभव जाननां ॥ ५९८ ॥

आगै रक्ता रक्तोदा आदि नदीनिका प्रणालिका आदिकका प्रमाण कहै हैं;—

गंगादुगं व रत्तारक्तोदा जिम्हियादिया सञ्चे ।

सेसाणं पि य णेया तेवि विदेहोत्ति दुगुणकमा ॥ ५९९ ॥

गंगाद्विकं व रत्तारक्तोदा जिहिकादिका सर्वे ।

शेषाणामपि च ज्ञेयाः तेपि विदेहांतं द्विगुणक्रमाः ॥ ५९९ ॥

अर्थ—गंगाद्विक जो गंगासिंधु तिनका जैसे वर्णन किया तैसे ही रक्ता रक्तोदाका वर्णन जाननां । विशेष इतना पद्मद्रहकी जायगा पुंडरीक द्रह कहनां हिमवत पर्वतकी जायगा शिखरी कहनां । बहुरि अबशेष जिहिका आदि प्रमाण विशेष समान जाननें । बहुरि सर्व अबशेष नदीनिके भी प्रणालिका कुंड आदि विशेषनिका व्यासादिकका प्रमाण सो भरत ऐरावत संबंधी नदीनितै अनुक्रमतै विदेह संबंधी नदीपर्यंत दूणा दूणा जाननां ॥ ५९९ ॥

आगै तिन नदीनिके तीरनिका स्वरूप गाथा दोय करि कहै हैं;—

गंगदु रत्तदु वासा सपादछण्णिग्गमे विदेहोत्ति ।

दुगुणा दसगुणमंते गाहो वित्थार पण्णंसो ॥ ६०० ॥

गंगाद्वयोः रक्ताद्वयोः व्यासाः सपादपट् निर्गमे विदेहांतम् ।

द्विगुणा दशगुणा अंते गाधः विस्तारः पंचाशदंशः ॥ ६०० ॥

अर्थ—आगै तिन नदीनिका विस्तार कहै हैं । गंगाद्विक कहिए गंगासिंधु अर रक्ताद्विक कहिए रत्तारक्तोदा इनका व्यास जो चौड़ाईका प्रमाण सो निर्गमे कहिए द्रहसौं निकसितै सवा छह योजन है । अर अन्य नदीनिका विदेह संबंधी नदीनि पर्यंत दोय दोय नदीनिका दूणा दूणा क्रमतै है । बहुरि सर्व नदीनिका अंते कहिए समुद्रविषै प्रवेश करनेविषै द्रहतै निकसनेतै दशगुणा व्यास है । जैसे गंगाका साठा वासठियोजन बहुरि सर्व नदीका गाध कहिए उड़ाईका प्रमाण सो अपने अपने व्यासके प्रमाणतै पचासवै भाग प्रमाण है जैसे गंगाका आधयोजन । ऐसै ही अन्यनदीनिका जाननां ॥ ६०० ॥

णदिणिग्गमे पवेसे कुंडे अण्णत्थ चाचि तोरणयं ।

बिंबजुदं उवरिं तु दिक्कणावाससंजुत्तं ॥ ६०१ ॥

नदीनिर्गमे प्रवेशे कुंडं अन्यत्र चापि तोरणकम् ।

बिंबयुतं उपरि तु दिक्कन्यावाससंयुक्तम् ॥ ६०१ ॥

अर्थ—नदीनिका निर्गमे कहिए निकसनैका द्रहका द्वार अर प्रवेश कहिए समुद्रविषै प्रवेश करनेका द्वीपके कोटका बहुरि कुंडे कहिए कुंडतै निकसनैका द्वार बहुरि अन्यत्रापि कहिए और भी जायगां इनविषै उपरि जिन बिंब करि संयुक्त अर दिक्कुमारीनिके मंदिरनि करि संयुक्त तोरण हैं ॥ ६०१ ॥

आगै पूर्व कहे जे वर्ष अर वर्षधर पर्वत तिनके विस्तारका प्रमाण ल्यावनेविषै करणसूत्र कहै हैं;—

तत्तोरणवित्थारो सगसगणदिवाससरिसगो उदओ ।
 वासादु दिवडूगुणो सन्वत्थ दलं हवे गाहो ॥ ६०२ ॥
 तत्तोरणविस्तारः स्वकस्वकनदीव्याससदृशकः उदयः ।
 व्यासात् द्व्यर्धगुण्यः सर्वत्र दलं भवेत् गाधः ॥ ६०२ ॥

अर्थ—तिन तोरणद्वारनिका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण सो तौ अपनां अपनां नदीका व्यास समान है । बहुरि व्यासतै ज्यौठ गुणां उदय कहिए उचाईका प्रमाण है । जैसे गंगाद्विकका निर्गम द्वारका तोरण सवा छह योजन चौड़ा अर नव योजन तीन आठवां भाग प्रमाण ऊंचा है । ऐसै ही अन्यत्र जाननां । बहुरि सर्वत्र तोरणनिका गाध कहिए उड़ाई नीव ताका प्रमाण तौ आध योजन प्रमाण है । इन गंगा आदि नदीनिका ऐसै गमनादि जाननां ॥ ६०२ ॥

ऐसै कह्या त्रैराशिक करि ल्याया हुवा भरत क्षेत्रविषै व्यासकों कहै हैं;—

विजयकुलद्दी दुगुणा उभयंतादो विदेहवस्सोत्ति ।
 गुणपिंडदीवसगुणगारो हु पमाणफलइच्छा ॥ ६०३ ॥
 विजयकुलाद्रयः द्विगुणा उभयांततः विदेहवर्षान्तं ।
 गुणपिंडद्वीपस्वकगुणकारो हि प्रमाणफलेच्छाः ॥ ६०३ ॥

अर्थ—विजय कहिए क्षेत्र अर कुलाचल पर्वत ते दोऊ दक्षिण उत्तर दिशातै क्रमतै विदेह क्षेत्र पर्यंत दूणे दूणे हैं । तहां गुणकारका पिंड अर द्वीप अर स्वकीय गुणकार इनको प्रमाण फल इच्छा कीजिए इसतै त्रैराशिक करि तिस तिस क्षेत्र वा पर्वतनिका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण सो ल्यावनां । **भावार्थ**—सर्व गुणकारनिका जोड़ दिए एकसां निवै होइ सो तां सर्वत्र प्रमाण राशि करिए । बहुरि जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन सो सर्वत्र फलराशि करिए । बहुरि दोऊ तरफतै विदेह पर्यंत दूणा दूणा गुणकार सो भरतका एक हिमवत्का दोय हैमवतका च्यारि महा हिमवत्का आठ हरिका सोलह निपद्रका बत्तीस विदेहका चौसठि नीलका बत्तीस रम्यकका सोलह रुक्मीका आठ हैरण्यवतका च्यारि शिखरीका दोय ऐरावतका एक गुणकार है । सो इच्छाराशि करिए तहां फल राशिकों इच्छा करि गुणि प्रमाण राशिका भाग दिए अपनां अपनां क्षेत्र वा कुलाचलका चौड़ाईका प्रमाण आगै है ॥ ६०३ ॥

आगै तैसे ही त्रैराशिक करि सिद्ध भया विदेहके विष्कंभका अंक ताहि प्रतिपादन करता संता इहांतै उपरि कहिएगे जे विदेह क्षेत्रादिक तिनके प्रमाण ल्यावनेका विधान कहै हैं;—

भरहस्स य विक्खंभो जंबूदीवस्स णउदिसदभागो ।
 पंचसया छुब्बीसा छुच्च कला ऊणवीसस्स ॥ ६०४ ॥
 भरतस्य च विष्कंभो जंबूद्वीपस्य नवतिशतभागः ।
 पंचशतानि षड्विंशानि षट् च कला एकोनविंशतेः ॥ ६०४ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रका विष्कंभ जो व्यास सो जंबूद्वीपके व्यासके एकसौ निवैवां भाग प्रमाण है । सो कैसा है ? पांचसै छव्तीस योजन अर एक योजनका उगणीस भागविषै छह कला प्रमाण भरतका विष्कंभ है ॥ ६०४ ॥

चुलसीदि छतेत्तीसा चत्तारि कला विदेहविक्खंभो
णदिंहीणदलं विजयावक्खारविभंगवणदीहा ॥ ६०५ ॥

चतुरशीतिः पट्टयत्त्रिंशत् चतस्रः कला विदेहविष्कंभः ।

नदीहीनदलं विजयवक्खारविभंगवनदीर्घं ॥ ६०५ ॥

अर्थ—चौरासी छह तेतीस इन अंकनि करि तेतीस हजार छहसँ चौरासी योजन ३३६८४ अर एक योजनकी उगणीस कलाविषै च्यारि कला इतना विदेह क्षेत्रका विष्कंभ कहिए चौड़ाईका प्रमाण है । तिहकै वीचि सीता वा सीतोदा नदीका प्रवाह है । तातै विदेह विष्कंभमैसौ नदीका विष्कंभ घटाएँ अवशेषका आधाका जो प्रमाण सोई वत्तीस विदेह क्षेत्र सोलह वक्खार गिरि बारह विभंगा नदी देवारण्यादि वन इनका लंबाईका प्रमाण है । सो विदेह विष्कंभ ३३६८४।४ ÷ १९ मैसौ पांच सै योजन नदी व्यास घटाएँ अवशेष ३३६८४।४ ÷ १९ को आधा किएँ सोलह हजार पांचसै बाणवै योजन दोय कला तहां दीर्घताका प्रमाण होइ ॥ ६०५ ॥

अब विदेह क्षेत्रके मध्य तिष्ठता ऐसा जु मेरुगिरि ताका स्वरूपकूं कहै हैं;—

मेरु विदेहमज्जे णवणउदिदहेक्कजोयणसहस्सा ।

उदयं भूमुहवासं उवरुवरिगवणचउक्कजुदो ॥ ६०६ ॥

मेरुः विदेहमध्ये नवनवतिदशैकयोजनसहस्राणि ।

उदयः भूमुखव्यासः उपर्युपरिगवनचतुष्कयुतः ॥ ६०६ ॥

अर्थ—विदेहका मध्य प्रदेशविषै मेरुगिरि है ताका निन्याणवै दश एक हजार योजन उदय भूमुख व्यास है । भावार्थ—मेरु निप्याणवै हजार योजनतौ ऊंचा है । मूळविषै दश हजार योजन चौड़ा है । ऊपरि एक हजार योजन चौड़ा है । बहुरि सो मेरु उपरि उपरि कटनीविषै प्राप्त ऐसे जो च्यारि वन तिन करि संयुक्त है ॥ ६०६ ॥

अब वन चतुष्टयके नाम अर तिनका अंतरालको प्रतिपादन करै है;—

भू भद्रसाल साणुग गंदणसोमणसपांडुगं च वणं ।

इगिपणघणवाबत्तरिहदपंचसयाणि गंतूणं ॥ ६०७ ॥

भुवि भद्रशालं सानुकं नंदनसौमनसपांडुकं च वनम् ।

एक पंचघनद्वासप्ततिहतपंचशतानि गत्वा ॥ ६०७ ॥

अर्थ—भद्रसाल नामा वन तौ भूगत कहिए मेरुके मूळि पृथ्वी ऊपरि है । बहुरि नंदन सौमनस पांडुक ए वन मेरुकी कटनीविषै प्राप्त हैं । वीचि वीचि मेरुका विष्कंभ घटि करि जो गिरदविषै कटनी है तहां पाईए है । सो एक पंच घन वहत्तरि करि गुण्या हुवा पांचसै योजन

जाइ तिष्ठै है । भावार्थ—मेरुगिरिकै चौगिरद भद्रसाल नामा वन तौ पृथ्वी उपरि है । बहुरि तहांतै एक गुणित पांचसै ताका पांचसै योजन उपरि जाइ नंदनवन है । बहुरि तहांतै पंच घन एकसौ पच्चीस तीह करि गुणित पांचसै ताका बासठि हजार पांचसै योजन उपरि जाइ सौमनस वन है । बहुरि तहांतै बहत्तरि गुणित पांचसै ताका छत्तीस हजार योजन उपरि जाइ पांडुक वन है ॥ ६०७ ॥

आगैं तिन वननिधिषं तिष्ठते वृक्षनिकों कहैं हैं;—

मंदारचूदचंपयचंदणघनसारमोचचोचेहिं ।

तंबूलिपूगजादीपहुदीसुरतरुहि कयसोहं ॥ ६०८ ॥

मंदारचूतचंपकचंदनघनसारमोचचोचैः ।

तांबूलीपूगजातिप्रभृतिमुरतरुभिः कृतशोभानि ॥ ६०८ ॥

अर्थ—मंदार अर आंव चंपा चंदन घनसार नालियर तांबूली मुपारी जाय इत्यादि देव संबंधी वृक्षनि करि कीनी है शोभा जिनिनै ऐसे ते वन हैं ॥ ६०८ ॥

अब आंर मेरुनिका वननिकं अंतराल निरूपणकरनेके मिस करि उचाईका प्रमाण कहैं हैं;—

पणसय पणसयसहियं पणवण्णसहस्सयं सहस्साणं ।

अट्ठावीसदराणं सहस्सगाढं तु मेरूणं ॥ ६०९ ॥

पंचशतं पंचशतसहितं पंचपंचाशतसहस्रकं सहस्साणां ।

अष्टाविंशतिरितरेपां सहस्रगाधस्तु मेरूणाम् ॥ ६०९ ॥

अर्थ—इतर जे धातुकी खंड पुष्करार्द्र संबंधी च्यारि मेरु तिनकै पृथ्वी उपरि भद्रसाल वन है । तहांतै पांचसै योजन उपरि जाइ नंदन है । तहां पांचसै सहित पचावन हजार योजन ५५५०० उपरि जाइ सौमनस वन है । बहुरि तहांतै अठाईस हजार योजन उपरि जाइ पांडुक वन है । ऐसैं वननिका अंतरालकै इनका जोड़ दिएं चौरासी हजार योजन भए सोई तिन मेरुनिकी उंचाईका प्रमाण जाननां । बहुरि पांचिही मेरुनिकै गाध कहिए पृथ्वीविषै नीव सो हजार योजन प्रमाण जाननां ॥ ६०९ ॥

आगैं तिन वननिका विस्तारकौं निरूपे हैं;—

वावासं च सहस्सा पणपणल्लकोणपणसयं वासं ।

पट्टमवणं वज्जित्ता सव्वणगाणं वणाणि सरिसाणि ॥ ६१० ॥

द्वाविंशतिः च सहस्रं पंचपंचपट्कोनपंचशतं व्यासं ।

प्रथमवर्नं वर्जयित्वा सर्वनगानां वनानि सदृशानि ॥ ६१० ॥

अर्थ—सुदर्शन मेरुकै भद्रसाल वन तौ पूर्व पश्चिम दिशा करि बाईस हजार योजन चौड़ा है । बहुरि सर्व दिशानिविषै नंदन वन पांचसै योजन चौड़ा है सौमनस पांचसै योजन चौड़ा है । पांडुक छह घाटि पांचसै ४९४ योजन चौड़ा है । बहुरि सुदर्शन मेरुका भद्रसालकौं वर्जित करि अन्य नंदनादि तीन वन सर्व मेरुनिकै चौड़ाई अपेक्षा समान प्रमाणकौं धरै हैं ॥ ६१० ॥

आगै तिस वन चतुष्टयविष तिष्ठते जे चैत्यालय तिनकी संख्या कहै हैं;—

एकेकवणे पडिदिसमेकेकजिनालया सुसोहंति ।

पडिमेरुमुवारि तेसिं वण्णणमणुवण्णइस्सामि ॥ ६११ ॥

एकेकवने प्रतिदिशमेकेकजिनालयाः सुशोभंते ।

प्रतिमेरुमुपरि तेषां वर्णनमनुवर्णयिष्यामि ॥ ६११ ॥

अर्थ—मेरु मेरु प्रति एक एक वनविषै एक एक दिशा प्रति एक एक चैत्यालय है । ते एक मेरु प्रति सोलह चैत्यालय सोभै है । तिन चैत्यालयनिका वर्णन उपरि पीछें नंदीश्वर द्वीपका वर्णनका अवसरविषै वर्णन करौंगा ॥ ६११ ॥

आगै सुदर्शन मेरुकै दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका प्रमाण कहै हैं;—

पढमवणडसीदंसो दक्खिणउत्तरगभद्रसालवणं ।

विसदं पण्णासहिंयं खुल्लयमंदरणगेवि तद्दा ॥ ६१२ ॥

प्रथमवनाष्टाशीत्यंशः दक्षिणोत्तरगभद्रशालवनम् ।

द्विशतं पंचाशदधिकं खुल्लकमंदरनगेपि तथा ॥ ६१२ ॥

अर्थ—सुदर्शन मेरुकै पूर्व पश्चिम भद्रसाल वनका प्रमाण बाईस हजार योजन कह्या ताका अठ्यासीवां भाग प्रमाण दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका प्रमाण हं । सो पचास सहित दोयसै योजन है । **भावार्थ**—सुदर्शन मेरुकै चारयौ गजदंतनिके बीच च्यारौ दिशानिविषै भद्रसाल वन है सो पूर्व पश्चिमविषै तो बाईस हजार योजन चौड़ा है । दक्षिण उत्तरविषै अढ़ाईसै योजन चौड़ा है । बहुरि खुल्लक मंदर नग कहिए छोटे च्यारि मेरुगिरि तिनविषै भी तथा कहिए तैसैं ही आगै कहिए हैं । पूर्व पश्चिम भद्रसालका विष्कंभ ताकै अठ्यासीवै भाग प्रमाण ही दक्षिण उत्तर भद्रसालका विष्कंभ है ॥ ६१२ ॥

वेदी वणुभयपासे इगिदलचरणुदयवित्थरोगाढो ।

हेमी सघंटघंटाजालसुतोरणग बहुद्वारा ॥ ६१३ ॥

वेदी वनोभयपार्श्वे एकदलचरणोदयविस्तारावगाथाः ।

हेमी सघंटघंटाजालसुतोरणका बहुद्वारा ॥ ६१३ ॥

अर्थ—भद्रसालादि वननिके बाह्य अभ्यन्तर दोऊ पार्श्वनविषै वेदी हैं । जैसे बागकै कांगुरा विनां भीति हो है तैसैं जो होइ ताका नाम वेदी है । सो वेदी एक योजन ऊंची आध योजन चौड़ी पाव योजन जाकी नीव ऐसी है । बहुरि सुवर्णमई है । बहुरि महा घंटा अर छोटी घंटानिकर सोभित है ऐसे भटे तोरणनि करि संयुक्त जे बहुत द्वार जाकै पाईए हैं ऐसी वेदी है । आगै मेरुका चित्रा पृथ्वीकै तलविषै व्यास ल्यावनेविषै बहुरि नंदन सौमनस वनका व्यासादिक वा तिनकै निकटि मेरुका व्यास उच्चत्वादि ल्यावनेविषै हानिचय ल्यावनेकौ गाथा दोय करि कहै हैं । तहां प्रथम ऐसा त्रैराशिक जानना । मेरुका उपरि मुख व्यास हजार योजन सो तिसकौ मूलविषै भूमि व्यास दश हजार योजन तामै घटाएं नव हजार रहे । सो निन्याणवै

हजार योजनकी उचाईविषै नव हजार योजन प्रमाण हानि चय होइ तौ एक योजनकी उचाईविषै केता हांनि चय होइ ऐसैं करि नव करि अपवर्त्तन किए एक योजनका ग्यारह्वां भाग हानिचयका प्रमाण आया। एक योजनकी उंचाई भए व्यासविषै इतनां घटै ॥ ६१३ ॥

बहुरि याकौ धरि और त्रैराशिकका विधान कहिए है;—

इगिजोयण एगारहभागो जादि बडूदे पहायदि वा ।

तलणंदणसोमनसे किमिदि चयं हाणिमाणिज्जो ॥ ६१४ ॥

एक योजनस्य एकादशभागः यदि वर्धते प्रहीयते वा ।

तलनंदनसौमनसे किमिति चयं हानिरानेतव्यम् ॥ ६१४ ॥

अर्थ—एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका ग्यारह्वां भाग जो नीचैकी अपेक्षा उपरि घटै वा उपरि अपेक्षा नीचै वधै तौ मेरुका तलकी उचाई हजार योजन नंदनवनकी उचाई पांचसै योजन समरुद्रतैं ऊपरि सौमनसकी उचाई साढा इकावन हजार योजन तीहविषै कितनां वधै वा घटै ऐसैं त्रैराशिक करि हानिचय ल्यावनां । उपरि अपेक्षा घटनेका नाम हानि नीचैकी अपेक्षा वधनेका नाम चय तातैं हानिचय ऐसा नाम कह्या सो तीनों जायगा प्रमाण राशि एक योजन फलसशि एकका ग्यारह्वां भाग इच्छा राशि पांचसै हजार साढा इकावन हजार किए तल व्यासनिविषै वृद्धि निषै योजन अर दश ग्यारह्वां भाग हो है । नंदनविषै हानि पैतालीस योजन पांच ग्यारह्वां भाग हो है । सौमनसविषै हानि च्यारि हजार छसै इक्यासी योजन नव ग्यारह्वां भाग हो है ॥ ६१४ ॥

सगसगहाणिविहीणे भूवासे चयजुदे मुहन्वासे ।

गिरिवणबहिरब्भंतरतलविस्थारप्पमा होदि ॥ ६१५ ॥

स्वकस्वकहानिविहीने भूव्यासे चययुते मुखव्यासे ।

गिरिवनबाह्याभ्यन्तरतलविस्तारप्रमा भवति ॥ ६१५ ॥

अर्थ—मेरु गिरिकै तीह तीह कटनीका भू व्यास कहिए नीचला चौड़ाईका प्रमाण तिह-विषै अपनी अपनी हानिका प्रमाणको घटाएं । बहुरि तीह तीह कटनीका मुख व्यास कहिए उपरिका चौड़ाईका प्रमाण तिह तीहविषै अपनां अपनां चयका प्रमाण मिलाएं मेरुगिरिका तल विस्तार हो है । वा वनका बाह्य अभ्यन्तर विस्तारका प्रमाण हो है । सोई कहिए हैं । पूर्वे ल्याया जो मेरुतलविषै हानिचय निवै योजन अर दश ग्यारह्वां भाग याको मेरुका पृथ्वीविषै व्यास दश हजार योजन तामैं मिलाएं दश हजार निवै योजन अर दश ग्यारह्वां भाग प्रमाण चित्रा पृथ्वीका अंत जहां है तहां नीचै मूलविषै मेरुका तल व्यास है । यामैं तिसही निवै योजनका दश ग्यारह्वां भाग प्रमाण हानि घटाएं दश हजार योजन प्रमाण इस सम पृथ्वीकै निकटि मेरुका भू व्यास है । बहुरि एक योजनका ग्यारह्वां भाग घटनेविषै एक योजन उचाई होइ तो निवै योजन दश ग्यारह्वां भाग घटनेविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि समच्छेद करि अंश हारनिकीं मिलाइ ९९० ÷ ११।१० ÷ ११ ग्यारहका अपवर्त्तन किए मेरु तलतैं लगाय इस पृथ्वी पर्यंत मेरुकी उंचाई एक हजार योजन प्रमाण

हो है । बहुरि नंदनवनका हानिचय पैतालीस योजन पांच ग्यारव्हां भाग सो मेरुका भू व्यास १०००० मैसौं घटाएं नव हजार नवसै चौवन योजन अर छह ग्यारव्हां भाग प्रमाण वन सहित मेरुका व्यासरूप नंदनका बाह्य वास हो है । बहुरि तीह हानिचयका अंश ५ ÷ ११ अंशी ४५ निकौं समच्छेद करि मिलाएं पांचसैका ग्यारव्हां भाग भया तहां एकका ग्यारव्हां भाग घटनेविषै एक योजनकी उचाई होइ तौ पांचसै ग्यारव्हां भागके घटनेविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्तन किए भद्रशालतैं पांचसै योजन नंदनवनकी उचाईका प्रमाण हो है । बहुरि नंदनवनका बाह्य व्यासविषै नंदन वनका पांचसै योजन ताकौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूणा किए हजार योजन होइ सो घटाएं आठ हजार नवसै चौवन योजन छह ग्यारव्हां भाग प्रमाण नंदनवनके अभ्यन्तर वन विना मेरुका व्यास प्रमाण है । सो समरंद्र है । नंदनवनतैं उपरि केतीक उचाई ताई मेरुगिरि समान चौड़ाईका प्रमाण धरैं हैं ॥ ६१५ ॥

आगैं समरंद्रकी उचाई ल्यावनेका विधान कहैं हैं;—

एयारंसोसरणे एगुदओ दससएसु किं लद्धं ।

पांदणसोमणसुवरिं सुदंसणे सरिसरुंदुदओ ॥ ६१६ ॥

एकादशांशापसरणे एकोदयः दशशतेषु किं लब्धं ।

नंदनसौमनसोपरि सुदर्शने सदशरुंदोदयः ॥ ६१६ ॥

अर्थ—एकका ग्यारव्हां भाग घटनेविषै एक योजन उचाई होइ तौ दशसैं १००० का घटनेविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक किए ग्यारह हजार योजन लब्ध राशि भया सोई सुदर्शन मेरुके उपरि नंदन सौमनसविषै सम रंद्रकी उचाईका प्रमाण है । **भावार्थ**—मेरुतलतैं लगाय नंदन पर्यंत तौ क्रमतैं घटता चौड़ा है । बहुरि इहां सर्वत्र गिरदविषै पांचसैं योजन चौड़ी कटनी छूटी है तीहविषै नंदन वन है । तिस वनके मध्य मेरु ग्यारह हजार योजनकी उचाई पर्यंत समान चौड़ा है । सो नंदन वनका दोऊ पार्श्वनिका हजार योजन एकै साथि मेरुका व्यासविषै घट्या सो क्रमतैं जितनी उचाईविषै हजार योजनका व्यास घटता तितनी उचाई ताई किछू भी घट्या नाहीं समान चौड़ा चल्या गया है । उपरि क्रमतैं बहुरि घटता है । बहुरि सौमनसपर्यंत हानिचयका पूर्वोक्त प्रमाण च्यारि हजार छसैं इक्यासी योजन नव ग्यारव्हां भाग ताकौं नंदनवनके अभ्यन्तर मेरु व्यास ८९५४।६ ÷ ११ विषै घटाएं च्यारि हजार दोयसैं बहत्तरि योजन अर आठ ग्यारव्हां भाग प्रमाण सौमनस वन सहित मेरु व्यासरूप सौमनसविषै बाह्य व्यास हो है । बहुरि सौमनसका हानिचय ४६८।१९ ÷ ११ के अंश अंशी मिलाइ ५१५०० ÷ ११ एकका ग्यारव्हां भाग घटनेविषै एक योजन उदय होय तौ साठा इकावन हजारका ग्यारव्हां भाग घटनेविषै केता उदय होइ । ऐसैं त्रैराशिक करि ग्यारहका अपवर्तन किए नंदन वनका समरंद्र उत्सेधतैं उपरि सौमनस वन पर्यंत उचाईका प्रमाण साठा इकावन हजार योजन हो है । बहुरि सौमनसका बाह्य ४२७२।८ ÷ ११ विषै सौमनसका व्यास पांचसैं योजन ताकौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूणा करि १००० घटाएं तीन हजार दोयसैं बहत्तरि योजन आठ ग्यारव्हां भाग प्रमाण सौमनस वनके अभ्यन्तर मेरुका व्यास हो है । इहां भी पूर्वोक्त

प्रकार व्याया हुवा समान चौड़ाईका प्रमाण धरें सौमनसतैं ल्गाय ग्यारह हजार योजन मेरुकी उचाईका प्रमाण जाननां । ताकै उपरि बहुरि क्रमतैं घटता है । बहुरि एक योजनका ग्यारव्हां भाग घटै तौ समरुद्रतैं उपरि पच्चीस हजार योजनकी उचाईविषै कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक किए दोय हजार दोयसै बहत्तरि योजन आठ ग्यारव्हां भाग प्रमाण पांडुक वनविषै हानिचय हो है । इनकौं सौ-
 $२२७२।८ \div ११$ मनसकै अभ्यन्तर मेरु व्यास $३२७२।८ \div ११$ विषै घटाएं वनसहित मेरु व्यासरूप पांडुकवनका बाह्य व्यास एक हजार योजन प्रमाण हो है । बहुरि पांडुकवनका हानिचयका अंश $८ \div ११$ अंशी २२७२ कौं मिलाइ $२५००८ \div ११$ पूर्वोक्त प्रकार एकका ग्यारव्हां भाग इत्यादि विधान करि त्रैराशिक किए सौमनसके समरुद्रतैं ऊपरि पांडुकवन पर्यंत व्यास लिएं क्रमतैं घटता मेरुका उचाईका प्रमाण पच्चीस हजार योजन प्रमाण हो है ॥ ६१६ ॥

आगैं क्षुल्लुक च्यारि मेरुनिका हांनिचय ल्यावनेकौं सूत्र कहैं हैं;—

भूमीदो दसभागो हायदि खुल्लेसु पंदणादुवरिं ।

सयवगं समरुद्रो सोमणसुवरिंपि एमेव ॥ ६१७ ॥

भूमितः दशमभागः हीयते क्षुल्लुकेषु नंदनादुवरि ।

शतवर्गः समरुद्रःसौमनसोपरि अपि एवमेव ॥ ६१७ ॥

अर्थ—भूमितः कहिए नीचतैं एक योजनका दशवां भाग प्रमाण विष्कंभ घटनैविषै एक योजन उचाई होइ तौ दोऊ पार्श्वनिका वन व्यास एक हजार योजन विष्कंभ घटनैविषै केती उचाई चाहिए । ऐसैं त्रैराशिक कीएं सौका वर्ग जो दश हजार तीहरूप उचाईका प्रमाण पाया । सो क्षुल्लुक छोटे च्यारि मेरुनिविषै नंदन वनतैं उपरि समान चौड़ाईका प्रमाण लिएं दश हजार योजन उचाई है । ऐसैं ही सौमनस वनकै उपरि भी समान विष्कंभ लिएं उचाई दश हजार योजन प्रमाण ही है । इन क्षुल्लुक च्यारि मेरुनिविषै उपरि व्यास हजार योजन सो तौ मुख अर समभूमिविषै व्यास नव हजार च्यारिसै योजन सो भूमि तहां भूमिमैसौं मुख घटाएं चौरासीसौ होइ । बहुरि क्षुल्लुक मेरुनिका चौरासी हजार योजन उचाईविषै चौरासीसै योजन विष्कंभ घटै तौ एक योजनकी उचाईविषै कितनां घटै । ऐसैं त्रैराशिक करि चौरासी करि अपवर्त्तन किए एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग प्रमाण हानिचय हो है । याकौं धरि एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग घटै तौ एक हजार योजनकी उचाईविषै कितना घटै ऐसैं त्रैराशिक किए सौ पाए सो क्षुल्लुक मेरुनिका आगैं कहिए है । जो चौराणवैसै योजन भू व्यास तामैं मिलाएं नव हजार पांचसै योजन प्रमाण चित्रा पृथ्वी तलविषै मेरुनिका नीचैं ही नीचैं विष्कंभ है । बहुरि यामैं सांई सौ योजन घटाएं चौराणवैसै योजन समभूमिविषै व्यास हो है । बहुरि एक योजनका दशवां भाग घटनैविषै एक योजनकी उंचाई होइ तौ सौ योजन घटनैविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि मेरुतलतैं समभूमि पर्यंत उंचाई हजार योजन प्रमाण आवै है । बहुरि एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग घटै तौ पांचसै योजनकी उचाईविषै कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्त्तन किए पचास योजन आए सो

भू व्यासमैसौ घटाएं नंदनवनकै बाह्य मेरु व्यास तेरणवसै पचास योजन हो है । बहुरि एकका दशवां भाग घटनेविषै एक योजन उचाई होइ तौ पचास घटनेविषै केती होइ ऐसै त्रैराशिक करि पांचसै योजन पाए सो भद्रसालतै नंदनवन इतनां ऊंचा है । बहुरि नंदनवनका दोऊ पार्श्वसंबंधी हजार योजन व्यास नंदनवनकै बाह्य मेरु व्यासमैसौ घटाएं तियासीसै पचास योजन प्रमाण नंदनवनकै अभ्यन्तर मेरु व्यास है सो इहां भी एककी उचाईविषै एकका दशवां भाग घटे तौ दश हजारकी उचाईविषै केता घटे । ऐसै त्रैराशिक किए हजार योजन पाए सो ए हजार योजन एकै साथि घटे तातै नंदनवनतै लगाइ दश हजार योजन पर्यंत समान उंचाई साढा तियासीसै योजन प्रमाण व्यास है । बहुरि एकका उदयविषै एकका दशवां भाग घटे तौ साढा पैतालीस हजार योजन उचाईविषै केता घटे ऐसै त्रैराशिक करि अपवर्त्तन किए साढा पैतालीस योजन आए सो इतने तिस सम विष्कंभ व्यास ८३५० मैसौ घटाएं अडतीससै योजन सौमनस वनकै बाह्य व्यास हो है । बहुरि एकका दशवां भाग घटनेविषै एक योजन उंचाई होइ तौ साढा पैतालीससै योजन घटनेविषै केती होइ । ऐसै त्रैराशिक किए साढा पैतालीस हजार पाए सो इतनां नंदनसंबंधी समरुद्रतै उपरि सौमनस ऊंचा है । बहुरि एककी उंचाईविषै एक दशवां भाग घटे तौ दश हजार योजनकी उचाईविषै केता घटे ऐसै त्रैराशिक किए हजार योजन होइ सोई सौमनसवनका दोऊ पार्श्वसंबंधी हजार योजन व्यास एकै साथि सौमनसकै बाह्य व्यास ३८०० मैसौ घटे अठाईसै योजन प्रमाण सौमनसकै अभ्यन्तर मेरु व्यास हो है । सो इतनै ही प्रमाण समान व्यास लिए उंचाईका प्रमाण दश हजार योजन पूर्वै ल्याये ही थे । बहुरि एककी उंचाईविषै एकका दशवां भाग घटे तौ अठारह हजार योजन उचाईविषै केता घटे ऐसै त्रैराशिक करि अपवर्त्तन किए अठारहसै पाए सो सौमनसका अभ्यन्तर व्यासमैसौ घटाएं हजार योजन प्रमाण मेरुका उपरि व्यास हो है । बहुरि एकका दशवां भाग घटनेविषै एककी उचाई होइ तौ अठारहसै घटनेविषै केती होइ । ऐसै त्रैराशिक करि अठारह हजार पाए सो इतनां सौमनस संबंधी समव्यासतै उपरि पांडुकवन है । बहुरि सर्व मेरुनिका पांडुकवनकै मध्य चूलिका है । ताकी उंचाई वा नीचै ऊपरि व्यास सो आगै कहेंगे ॥ ६१७ ॥

आगै मेरुनिका वर्ण विशेषकों निरूपे है;—

पाणारयणविचित्तो इगिसद्विसहस्सगेसु पठमादो ।

तत्तो उवरि मेरु सुवर्णवर्णाण्णिदो होदि ॥ ६१८ ॥

नानारत्नविचित्रः एकपष्टिसहस्रकेषु प्रथमतः ।

तत उपरि मेरुः सुवर्णवर्णान्वितः भवति ॥ ६१८ ॥

अर्थ—मेरु प्रथम नीचेतै लगाय इकसठि हजार योजन उचाई पर्यंत तौ नानाप्रकार अनेक वर्ण रत्ननि करि विचित्र है । बहुरि तातै उपरि मेरु केवल सुवर्ण सदृश वर्ण करि संयुक्त है ॥ ६१८ ॥

आगै नंदनादि वननिविषै तिष्ठते जो भवन तिनके नामादिक गाथा दायकरि कहै है;—

माणीचारणगंधर्वचित्तनामाणि वट्टभवणाणि ।

णंदणचउदिसमुदओ पण्णासं तीस वित्थारो ॥ ६१९ ॥

मानीचारणगंधर्वचित्रनामानि वृत्तभवनानि ।

नंदनचतुर्दिक्षु उदयः पंचाशत् त्रिंशत् विस्तारः ॥ ६१९ ॥

अर्थ—मानी १ चारण १ गंधर्व १ चित्र १ ए हैं नाम जिनके ऐसे गोलं मंदिर नंदनवन-
विषै पूर्वादि च्यारि दिशानिविषै हैं । तिनकी उंचाई पचास योजन चौड़ाई तीस योजन प्रमाण है ६१९.

सोमणसदुगे वज्जं वज्जादिप्पह सुवण्ण तप्पहयं ।

लोहिदअंजनहारिदपांडुरा दल्लिददलमाणा ॥ ६२० ॥

सौमनसद्विके वज्जं वज्जादिप्रभं सुवर्णं तत्प्रभं ।

लोहितांजनहारिद्रपांडुरा दल्लितदलमानाः ॥ ६२० ॥

अर्थ—सौमनस पांडुक इन दोऊ वननिविषै भी पूर्वादि दिशानिविषै च्यारि च्यारि गोल
भवन हैं । ते कौन ? वज्र १ वज्रप्रभ १ सुवर्ण १ सुवर्णप्रभ १ ए सौमनसविषै मंदिरनिके नाम हैं ।
लोहित १ अंजन १ हरिद्र १ पांडुर १ ए पांडुकविषै मंदिरनिके नाम हैं । तहां नंदनविषै मंदिर-
निका जो उचाई चौड़ाईका प्रमाण कथा तातें सौमनसविषै आधा अर तीहसौ भी पांडुकविषै आधा
प्रमाण जाननां ॥ ६२० ॥

आगै तिन भवननिके स्वामी अर तिनकी स्त्री तिनकौ कहै हैं;—

तवभवणवदी सोमो यमवरुणकुबेरलोयवालक्खा ।

पुव्वादी तेसिं पुह गिरिकण्णा साद्धकोडितियं ॥ ६२१ ॥

तद्भवनपतयः सोमः यमवरुणकुबेराः लोकपालाख्याः ।

पूर्वादिषु तेषां पृथक् गिरिकन्यकाः सार्धकोटित्रयम् ॥ ६२१ ॥

अर्थ—तिन भवननिके अधिपति स्वामी सोम १ यम १ वरुण १ कुबेर १ नाम धारक
सौधर्म इंद्रके लोकपाल पूर्वादि दिशानिविषै तिष्ठें हैं । ये मंदिर लोकपालनिकेहैं तिन एक एक
लोकपालके साढा तीन कोडि गिरि कन्या कहिये व्यंतरी देवांगना पाईए हैं ॥ ६२१ ॥

आगै तिनका आयु आदि कहै हैं;—

सोमदु वरुणदुगाऊ सदलदु पल्लत्तयं च देसूणं ।

ते रत्तकिण्हकंचणसिदणवत्थंक्रिया कमसो ॥ ६२२ ॥

सोमद्वयोः वरुणद्विकायुः सदलद्वि पल्यत्रयं च देशोनम् ।

ते रत्तकृष्णकांचनसितनेपथ्याकिताः क्रमशः ॥ ६२२ ॥

अर्थ—सोम यम इन दोयका आयु अर्द्धसहित दोय पल्य प्रमाण है । बहुरि वरुण कुबेर इन
दोयका आयु किछु घाटि तीन पल्य प्रमाण है । बहुरि ते सोमादिक क्रमतैं लालवर्ण श्यामवर्ण
कांचनवर्ण श्वेतवर्ण आभूषणादिकनिकरि संयुक्त हैं ॥ ६२२ ॥

आगै तिनके कल्पविमान संबंधीपणांकौ कहै हैं;—

ते य सयंपहरिद्वजलप्पहवग्गुप्पहा विमाणासा ।

कप्पेसु लोयवाला पहुणो बहुसयविमाणणं ॥ ६२३ ॥

ते च स्वयंप्रभारिष्टचलप्रभवल्गुप्रभा विमानेशाः ।

कल्पेषु लोकपाला प्रभवः बहुशतविमानानाम् ॥ ६२३ ॥

अर्थ—तो सौधर्मके लोकपाल स्वर्गविषै स्वयंप्रभ १ अरिष्ट १ जलप्रभ १ वल्गुप्रभ १ विमाननिके क्रमतै ईस-स्वामी हैं । **भावार्थ**—लोकपालनिका स्वर्गविषै वसनेके विमान हैं । अर इहां मेरु उपरि भी तिनके भवन पाइए हैं । बहुरि ते लोकपाल बहुत सैंकड़ों विमाननिके प्रभु हैं । छह लाख छयासठि हजार छहसैं छयासठि विमाननिके स्वर्गविषै अधिपति हैं ॥ ६२३ ॥

आगैं नंदनवनविषै तिष्ठता व्यंतरदेवकों परिवारसहित कहैं हैं;—

बलभद्रनामकूटे णंदणगे मेरुपव्वदीसाणे ।

उदयमहियसयदलगो तण्णामो वेंतरो वसई ॥ ६२४ ॥

बलभद्रनामकूटे नंदनगे मेरुपर्वतेशान्याम् ।

उदयमहीकशतदलकः तन्नामा व्यंतरो वसति ॥ ६२४ ॥

अर्थ—मेरु पर्वतकी ईशान विदिशाविषै नंदनविषै पाइए ऐसा सौ योजन नीचे चौड़ा ताका आधा पचास योजन उपरि चौड़ा जो बलभद्र नामा कूट है । तीह उपरि बलभद्र नामा व्यन्तर देव वसै हैं ॥ ६२४ ॥

आगैं नंदनवनविषै तिष्ठते जो भवन तिनके दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्ठते जे कूटादिक तिनकों गाथा तीन करि कहैं हैं;—

णंदण मंदर णिसहा हिमवं रजदो य रुजयसायरया ।

वज्जो कूडा कमसो णंदणवसईण पासदुगे ॥ ६२५ ॥

नंदनो मंदरः निपथः हिमवान् रजतश्च रुचकसागरको ।

वज्रः कूटाः क्रमशः नंदनवसतीनां पार्श्वदिके ॥ ६२५ ॥

अर्थ—नंदन १ मंदर १ अर निपथ १ हिमवन अर रजत १ रुचक १ अर सागर १ वज्र निए आठ कूट क्रमतै नंदनवनविषै तिष्ठते जु वसती कहिए पूर्वोक्त च्यारि भवन तिनके दोऊ पार्श्व- १ विषै पाईए है ॥ ६२५ ॥

हेममया तुंगधरा पंचसयं तद्वलं मुहस्स पया ।

सिहिरिगहे दिक्कणा वसंति तासिं च णाममिणं ॥ ६२६ ॥

हेममयाः तुंगधराः पंचशतं तद्वलं मुखस्य प्रमा ।

शिखरगृहे दिक्कन्याः वसंति तासां च नामानीमानि ॥ ६२६ ॥

अर्थ—ते कूट सुवर्ण मई हैं । बहुरि तिनकी उचाई पांचसैं योजन है । नीचे भू व्यास पांचसैं योजन है । ताका आधा अढ़ाईसैं योजन उपरि मुख व्यास है । तिन कूटनिके शिखर मंदरनिविषै दिक्कुमारी वसै हैं ॥ ६२६ ॥

तिनके ए नाम आगैं कहिए हैं;—

मेहंकर मेहवदी सुमेह मेहादिमालिणी तत्तो ।

तोयंधरा विचित्रा पुष्पादिममालिणिंदिया ॥ ६२७ ॥

मेघंकरा मेघवती १ सुमेघा मेघादिमालिनी ततः ।

तोयंधरा विचित्रा पुष्पादिममाला अनिंदितका ॥ ६२७ ॥

अर्थ—मेघंकरा १ मेघवती १ सुमेघा १ मेघमालिनी १ तोयंधरा १ विचित्रा १ पुष्पमाला १ अनंदिता ए नाम हैं ॥ ६२७ ॥

आगैं नंदनविपै जे बावड़ी हैं तिनका स्वरूप गाथा तीन करि कहैं हैं;—

अग्निदिसादो चउ चउ उत्पलगुम्मा य णलिणि उप्पलिया ।

वावीओ उत्पलुज्जल भिंगा छठी दु भिंगणिभा ॥ ६२८ ॥

अग्निदिशः चतस्रः चतस्रः उत्पलगुल्मा च नलिनी उत्पलिका ।

वाप्यः उत्पलोज्ज्वला भृंगा षष्ठी तु भृंगनिभा ॥ ६२८ ॥

अर्थ—अग्निदिशातैं लगाय च्यारौं विदिशानिविपै च्यारि च्यारि बावड़ी हैं । तिनके नाम क्रमतैं कहिए हैं । उत्पल गुल्मा १ नलिनी १ उत्पला १ उत्पलोद्वकला १ बहुरि भृंगा १ छठी भृंगनिभा १ ॥ ६२८ ॥

कज्जल कज्जलपह सिरिभूदा सिरिकंद सिरिजुदा महिदा ।

सिरिणिलय णलिणि णलिणादिमगुम्मिय कुमुद कुमुदपहा ॥ ६२९ ॥

कज्जला कज्जलप्रभा श्रीभूता श्रीकांता श्रीयुता महिता ।

श्रीनिलया नलिनी नलिनादिमगुल्मी कुमुदा कुमुदप्रभा ॥ ६२९ ॥

अर्थ—कज्जला १ कज्जल प्रभा १ बहुरि श्रीभूता १ श्रीकांता १ श्रीमहिता १ श्रीनिलया १ बहुरि नलिनी १ नलिनगुल्मा १ कुमुदा १ कुमुदप्रभा १ ए बावड़िके नाम हैं ॥ ६२९ ॥

मणितोरणरयणुब्भवसोवाणा हंसमोरजंतजुदा ।

पण्णदलदीहवासा दसगाहा सोलवावीओ ॥ ६३० ॥

मणितोरणरत्नोद्भवसोपानाः हंसमयूरयंत्रयुताः ।

पंचाशहलदीर्घव्यासाः दशगाधाः षोडशवाप्यः ॥ ६३० ॥

अर्थ—ते सोलह बावड़ी मणिमई तोरण द्वार अर रत्नमई सिवाणनिकरि संयुक्त हैं । बहुरि हंस मोर आदिनिके यंत्र करि संयुक्त हैं । बहुरि ते पचास योजन लंबी ताकी आधी पचास योजन चौड़ी दश योजन उंडी बावड़ी हैं ॥ ६३० ॥

आगैं तिनके मध्य प्रासाद हैं तिनका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

दक्खिणउत्तरवावीमज्जे सोहम्मजुगलपासादा ।

पणघणदलचरणुच्छयवासा दलगाढचउरस्सा ॥ ६३१ ॥

दक्षिणोत्तरवापीमध्ये सौधर्मयुगलप्रासादाः ।

पंचघनदलचरणोच्छ्रयव्यासाः दलगाढचतुरस्राः ६३१ ॥

अर्थ—मेरुकी अपेक्षा दक्षिण उत्तर वावड़ीनिचै मध्य सौधर्म अर ईशान इंद्रके प्रासाद मंदिर हैं । तहां अग्नि नैऋति दिशानिधिपै आठ वावड़ी हैं तिनधिपै सौधर्मके मंदिर हैं । अर वायु ऐसानवि दिशानिधिपै आठ वावड़ी हैं तिनधिपै ईसानके मंदिर हैं । ते प्रासाद पांचके घनका आधा साढा बासठि योजन तौ ऊंचे हैं । अर ताहीका चौथा भाग सत्रा इकतीउ योजन चौड़े हैं । अर आध योजन जिनकी नीव है । ऐसे चौकोर मंदिर हैं ॥ ६३१ ॥

सोचिदठाणासिदपरिवारेणंदो षिद्रो सपासादे ।

सव्वमिणं कहियव्वं सोमणसवणोवि सविसेणं ॥ ६३२ ॥

स्वोचितस्थानसितपरिवारेणंद्रः स्थितः स्वप्रसादे ।

सर्वमिदं कथितव्यं सौमसवनेपि सविशेषं ॥ ६३२ ॥

अर्थ—स्वर्गविपै सुधर्मा नाम सभाविपै जैसे तिष्ठे हैं । तैसे अपनां अपनां योग्य आस्थानधिपै तिष्ठता अपनां परिवारसहित अपनां प्रसादधिपै इहां इंद्र आवै है तत्र तिष्ठे हैं । बहुरि जो भवननिके पार्श्वनिधिपै कूटादिक व अग्नादि दिशानिधिपै वावड़ी वा तिनके मध्य प्रासाद जैसे मंदनवनधिपै कहे तैसे ही सर्व विशेष सहित सोमनस वनधिपै भी जानने ॥ ६३२ ॥

अब याके अनंतरि मेरुका शिखर ऊपरि तिष्ठती जे शिला तिनका नाम स्थान वर्ण है;—

पांडुकपांडुकंवलरक्ता तह रक्तकंवलवख सिला ।

ईसाणादो कंचणरूपयतवणीयरुहिरणिहा ॥ ६३३ ॥

पांडुकपांडुकंवलरक्ता तथा रक्तकंवलवख्याः शिलाः ।

ईशानात् कांचनरूपयतपनीयरुधिरनिभाः ॥ ६३३ ॥

अर्थ—ईशानतै लगाय च्यारयौ विदिशानिधिपै क्रमतै कांचन कहिए सोनों रूप्य कहिए रूपो तपनीय कहिए तायो सोनों रुधिर कहिए छोही तीह समान वर्ण धरै ऐसी पांडुक १ पांडुक-वला १ रक्ता १ रक्तकंवला १ हैं नाम जिनके ऐसी च्यारि शिला मेरुके मस्ताकि पांडुक वन है तहां पाइए हैं ॥ ६३३ ॥

आगै ते शिला कौन संबधी हैं कैसे तिनकी स्थिति है सो कहै हैं;—

भरहवरविदेहेरावदपुव्वविदेहजिणणिवद्धाओ ।

पुव्ववरदक्खिणुत्तरदीहा अथिरथिरभूमिसुहा ॥ ॥ ६३४ ॥

भरतापरविदेहेरावतपूर्वविदेहजिननिवद्धाः ।

पूर्वापरदक्षिणोत्तरदीर्घा अस्थिरस्थिरभूमिसुखाः ॥ ६३४ ॥

अर्थ—ते पांडुकादि शिला क्रमतै भरतक्षेत्र पश्चिम विदेह ऐरावत क्षेत्र पूर्व विदेहविपै जे तीर्थकर उपजै हैं तिन संबधी हैं । तहां तिनका जन्माभिपेक हो है । बहुरि ते शिला क्रमतै पूर्व

पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानि प्रतिलंबी हैं। बहुरि अस्थिर स्थिर भूमि मुख संयुक्त हैं। इस विशेषणका अर्थ भेरे समझनेमें न आया तार्ते नाहीं लिखा है ॥ ६३४ ॥

आगैं दृष्टांत करि तिन शिलातलनिका आकार कहत संता तिनकी लंबाई कहैं हैं;—

अद्धिदुणिहा सन्वे सयपण्णासद्वदाहवासुदया ।

आसणनियं तदुवरिं जिणसोहम्मदुगपडिवद्धं ॥ ६३५ ॥

अर्धेदुनिभाः सर्वाः शतपंचाशदष्टदीर्घव्यासोदयाः ।

आसनत्रयं तदुपरि जिनसौधर्मद्वयप्रतिबद्धं ॥ ६३५ ॥

अर्थ—ते सर्व शिला अर्द्ध चन्द्रमाके आकार हैं। बहुरि सौ योजन लंबी हैं। वीचिमें पचास योजन चौड़ी हैं। आठ योजन मोटी हैं। तिन शिलानिके उपरि तीर्थकर सौधर्म ईशान संबंधी तीन सिंहासन हैं ॥ ६३५ ॥

आगैं तिन उपरि तीन सिंहासननिके स्वामी इत्यादिक विशेष कहैं हैं;—

मज्झे सिंहासणयं जिणस्स दक्खिणगतं तु सोहम्मे ।

उत्तरमसिणिंदे भद्रासणमिह तयं वट्टं ॥ ६३६ ॥

मध्ये सिंहासनं जिनस्य दक्षिणगतं तु सौधर्म ।

उत्तरमीशानेन्द्रे भद्रासनमिह त्रयं वृत्तम् ॥ ६३६ ॥

अर्थ—तिन तीन सिंहासननिविपै मध्य वीचि तौ जिनेन्द्र देवका सिंहासन है। ताकी दक्षिण दिशाको प्राप्त सौधर्म इंद्रका भद्रासन है। उत्तर दिशाको प्राप्त ईशान इंद्रका भद्रासन है। इहां ए तीन आसन हैं ते गोल हैं ॥ ६३६ ॥

आगैं तिन आसननिका उदयादिक अर मेरुकी चूलिकाका स्वरूप कहैं हैं;—

उदयं भूमुहवासं धणु पणपणसय तदद्धपुव्वमुहा ।

वेलुरिय चूलियस्स य जोयण चत्तं तु वार चउ ॥ ६३७ ॥

उदयं भूमुखव्यासं धनुः पंचपंचशतं तदर्धपूर्वमुखानि ।

वैदूर्यचूलिकायाश्च योजनं चत्वारिंशत् तु द्वादश चत्वारि ॥ ६३७ ॥

अर्थ—तिन आसननिकी उचाई पांचसै धनुष अर नीचै चौड़ाई पांचसै धनुष उपरि चौड़ाई अर्द्धासै धनुष प्रमाण है। बहुरि ते आसन पूर्वदिशाको सनमुख हैं। बहुरि पांडुकवनके मध्य मेरुकी वैदूर्य रत्नमई चूलिका है ताकी उचाई चालीस योजन नीचै चौड़ाई बारा योजन उपरि चौड़ाई च्यारि योजन प्रमाण है ॥ ६३७ ॥

आगैं कहे जु ए सर्व तिनका किछू विशेष कहैं हैं;—

पव्वदवावीकूडा सन्वाओ पंडुगादिय सिलाओ

वणवेदितोरणोहिं णाणामणिणिम्मिण्हिं जुदा ॥ ६३८ ॥

पर्वतवापीकूटाः सर्वे पांडुकादिकाः शिलाः ।

वनवेदीतोरणैः नानामणिनिर्मितैः युताः ॥ ६३८ ॥

अर्थ—पर्वत वावडी कूट पांडुक आदि शिला ए सर्व ही नाना प्रकार माणि कर निर्मापित ऐसे जु वन अर वेदी अर तोरण तिन करि संयुक्त जाननें । पर्वतादिकके चौगिरद वन हैं तिनके वेदी है । तीह वेदीके तोरणसहित द्वार पाईए हैं ॥ ६३८ ॥

आगैं जंबूवृक्षका स्थानादिक परिवारसहित ग्यारह गाथानिकरि कहैं हैं;—

णीलसमीचे सीदापुव्वतडे मंदराचलासाणे ।

उत्तरकुरुम्हि जंबूथली सपंचसयतलवासा ॥ ६३९ ॥

नीलसमीपे सीतापूर्वतटे मंदराचलेशान्यां ।

उत्तरकुरौ जंबूस्थली सपंचशततलव्यासा ॥ ६३९ ॥

अर्थ—नील नामा कुलाचल पर्वतके समीपि दक्षिण सन्मुख जाती सीतानदीका पूर्व दिशासंबंधी तट मेरु पर्वततै ईशान नामा विदिशा तहां उत्तरकुर नामा भोगभूमिका क्षेत्रविषै जंबूनामा वृक्षकी स्थली है । जैसे वृक्षके थांहला इहां हो ह तैसे तहां स्थली जाननी सो वह स्थली पांचसें योजन प्रमाण है । तलव्यास कहिए नीचे चौड़ाई जाकी ऐसी ह ॥ ६३९ ॥

अंते दलवाहला मज्जे अद्दुदय वट्ट हेममया

मज्जे थलिसस पीठीमुदयतियं अट्टवारचऊ ॥ ६४० ॥

अंते दलवाहल्या मध्ये अष्टोदया वृत्ता हेममया ।

मध्ये स्थल्याः पीठमुदयत्रयं अष्टद्वादशचतुः ॥ ६४० ॥

अर्थ—बहुरि सो स्थली अंतविषै छेहडें तो आध योजन प्रमाण मोटी है । बहुरि मध्यविषै वीचि आठ योजन ऊंची है गोल आकार लिए है अर सुवर्णमई है । बहुरि तीह स्थलीके मध्य वीचि आठ योजन ऊंचा बारह योजन नीचे चौड़ा च्यारि योजन उपरि चौड़ा ऐसा पीठ है पीठ नाम पीठका है ॥ ६४० ॥

तत्थलिउवरिमभागे बाहिं बाहिं पवेठिऊण ठिया ।

कंचणवल्यसमाणा वारंबुजवेदिया णेया ॥ ६४१ ॥

तत्थल्युपरिमभागे बहिर्वहिः प्रवेष्ट्य स्थिताः ।

कांचनवल्यसमानाः द्वादशांबुजवेदिकाः ज्ञेयाः ॥ ६४१ ॥

अर्थ—तीह स्थलीका उपरला भागविषै बाह्य वेठि करि सुवर्णका वलय समान आध योजन ऊंची ताके आठवें भाग चौड़ी नाना रत्ननिकरि व्याप्त ऐसी बारह अंबुज वेदिका जाननी ।

भावार्थ—स्थलीके उपरि प्रथम वेदीको वेठि दूसरी वेदी है । दूसरीको वेठि तीसरी है । ऐसें बारह वेदी जाननी । ते सर्व वेदी सुवर्णमई रत्नजडित हैं आध योजन ऊंची हैं । एक योजनके सोलहं भाग प्रमाण चौड़ी हैं ॥ ६४१ ॥

चउगोउरवं वेदीबाहिरदो पडमाविदियगे सुण्णं

तदिए सुरुत्तमाणं अट्टदिसे अट्टसयरुक्खा ॥ ६४२ ॥

चतुर्गोपुरका वेदीबाह्यतः प्रथमद्वितीयके शून्यं ।

तृतीये सुरोत्तमानां अष्टदिशासु अष्टशतवृक्षाः ॥ ६४२ ॥

अर्थ—ते बारह वेदी प्रत्येक च्यारि द्वारनिकरि संयुक्त हैं । बहुरि इन वेदीनिविषै सर्वतैं बाह्य वेदीतैं लगाय अभ्यन्तर वेदीनिकै बीचि अंतराल है । तहां बाह्य वेदी अर ताकै अभ्यन्तर वेदीकै बीचि जो अंतराल ताकौं प्रथम अंतराल कहिए । ऐसैं क्रमतैं माहीं माहिं द्वितीयादि अंतराल जाननैं । तहां प्रथम अंतराल अर द्वितीय अंतरालविषै तौं शून्य है । तहां जंबूवृक्ष आदि नाहीं हैं । बहुरि तीसरा अंतरालविषै उत्कृष्ट यक्षदेवनिके आठों दिशानिविषै मिलि करि एकसो आठ वृक्ष हैं ॥ ६४२ ॥

तुरिए पुव्वदिसाए देवीणं चारि पंचमे दु वणं

वावीय वट्टचउरस्सादी छट्ठे हवे गयणं ॥ ६४३ ॥

तुर्ये पूर्वदिशि देवीनां चत्वारः पंचमे तु वनं ।

वाग्यः वृत्तचतुरस्रादयः षष्ठे भवेत् गगनं ॥ ६४३ ॥

अर्थ—चौथा अंतरालविषै पूर्व दिशाविषै यक्षनिकी देवांगनानिके च्यारि जंबूवृक्ष हैं । बहुरि पांचवां अंतरालविषै वन है । तहां वनविषै गोल चौकोर आदि बावड़ी हैं । बहुरि छठां अंतराल-विषै शून्य है । जंबूवृक्ष आदि रचना तहां नाहीं है ॥ ६४३ ॥

चउदिस सोलसहस्सं तणुरक्खे सत्तमम्हि अट्टमगे ।

ईसाणुत्तरवादे चदुस्सहस्सं समाणाणं ॥ ६४४ ॥

चतुर्दिक्षु षोडशसहस्रं तनुरक्षाणां सप्तमे अष्टमके ।

ऐशान्युत्तरवातासु चतुःसहस्रं समानानाम् ॥ ६४४ ॥

अर्थ—सातवां अंतरालविषै च्यार्यौं दिशानिविषै मिलि करि सोलह हजार तिनही यक्षनिके अंगरक्षक देवनिके वृक्ष हैं । बहुरि आठवां अंतरालविषै ईशान दिशा अर उत्तर दिशा अर वायवी दिशानिविषै मिलि करि च्यारि हजार सामानिक देवनिके वृक्ष हैं ॥ ६४४ ॥

णवमतिए जलणजमे णेरिदि अब्भंतरत्तिपरिसाणं ।

वत्तीस ताल अडदालसहस्सा पायवा कमसो ॥ ६४५ ॥

नवमत्रिके ज्वलनयाम्ययोः नैऋत्यां अभ्यन्तरत्रिपरिपदां ।

द्वात्रिंशत् चत्वारिंशत् अष्टचत्वारिंशत् सहस्राणि पादपाः क्रमशः ॥ ६४५ ॥

अर्थ—नवमत्रिके कहिए नवां दशवां ग्यारवां अंतरालविषै क्रमतैं अग्नि यम नैऋति दिशानिविषै अभ्यन्तर मध्य बाह्य परिपद् देवनिके बत्तीस हजार चालीस हजार अठतालीस हजार पादप कहिए जंबूवृक्ष क्रमतैं हैं ॥ ६४५ ॥

सेणामहत्तराणं बारसमे पच्छिमम्हि सत्तेव

मुक्खजुदा परिवारा पडमादो पंचयज्झहिया ॥ ६४६ ॥

सेनामहत्तराणां द्वादशे पश्चिमायां सत्तैव ।

मुख्ययुताः परिवाराः पद्मेभ्यः पंचाम्यधिकाः ॥ ६४६ ॥

अर्थ—बारहवां अंतरालविषै पश्चिम दिशाविषै सात प्रकार सेनाका जु महत्तर प्रधान तिनके सात जंबूवृक्ष हैं । ऐसै एक मुख्य वृक्ष संयुक्त सर्व परिवारके वृक्ष पद्म नामा द्रहविषै जो श्री-देवीके कमलनिका प्रमाण कइया था तातैं पांच अधिक जाननैं । इहां चौथा अंतरालविषै च्यारि देवा-गनानिके वृक्ष अर एक मुख्य वृक्ष ऐसैं पांच अधिक जाननैं । १०८।४।१६०००।४०००।३२०००।४००००।४८०००।७।१ ए सर्व जंबूवृक्ष एक लाख चालीस हजार एकसौ वीस भए ॥ ६४६ ॥

दलगाढवासमरगय जोयणदुगतुंग सुस्थिरस्कंधो

पीठिय उवरिं जंबू वज्रदलाष्टव्यासदीह चउसाहा ॥ ६४७ ॥

दलगाढव्यासमरकतः योजनद्विकतुंगः सुस्थिरस्कंधः ।

पीठादुपरि जंबू वज्रदलाष्टव्यासदीर्घः चतुःशाखः ॥ ६४७ ॥

अर्थ—आध योजन है गाध कहिए पृथ्वीविषै जड़ जाकी बहुरि मरकत मणिमई बहुरि पीठतैं उपरि दोय योजन ऊंचा बहुरि भलै प्रकार स्थिर है पेड जाका ऐसा मुख्य जंबूवृक्ष है । बहुरि स्कंध जो पेड ताकै उपरि वज्रमई आध योजन चौड़ी आठ योजन लंबी च्यारि शाखा कहिए डाली हैं ॥ ६४७ ॥

णाणारयणुवसाहा पवालमुमणा मिदिंगसरिसफला ।

पुढविमया दसतुंगा मज्झग्गे छच्चदुव्वासा ॥ ६४८ ॥

नानारत्नोपशाखः प्रवालमुमनाः मृदंगसदृशफलः ।

पृथ्वीमयः दशतुंगः मध्येप्रे पट्चतुर्व्यासः ॥ ६४८ ॥

अर्थ—बहुरि सो जंबूवृक्ष नाना प्रकार रत्नमई उपशाखाः कहिए छोटी डाली ते हैं जाके पाइए ऐसा है । बहुरि प्रवाल कहिए मृगा तीह समान वर्णन धरें हे मुमन कहिए फूल जाके ऐसा है । बहुरि मृदंग समान है फल जाके ऐसा है । बहुरि पृथ्वीकायमई है वनस्पतीरूप नाही है । जांमूणिके वृक्षकासा आकार है । तातैं जंबूवृक्ष नाम है । बहुरि दश योजन ऊंचा है मध्यविषै छह योजन चौड़ा है । ऊपरि च्यारि योजन चौड़ा है । इस जंबूवृक्षकी वेदीका अर स्थली पीठ वृक्षका ऐसैं अवस्थान जाननां ॥ ६४८ ॥

उत्तरकुलगिरिसाहे जिणगेहो सेससाहतिदयम्हि ।

आदरअणादराणं जक्खकुलुत्थाणमावासा ॥ ६४९ ॥

उत्तरकुलगिरिशाखायां जिनगेहः शेषशाखात्रितये ।

आदरानादरयोः यक्षकुलोत्थयोरावासाः ॥ ६४९ ॥

अर्थ—तीह मुख्य जंबूवृक्षकी उत्तर दिशा संबंधी नील कुलाचलकी तरफ जो शाखा तीह उपरि तौ श्री जिनमंदिर है । बहुरि अबशेष तीन शाखानिके उपरि यक्षकुलविषै उपजे ऐसे आदर अर अनादर नामा व्यंतर देव तिनके मंदिर हैं ॥ ६४९ ॥

आगै परिवार वृक्षनिका प्रमाण अर तिनका स्वामित्वकौ कहै हैं;—

जंबूतरुदलमाणा जंबूरुक्खस्स कहिदपरिवारा ।

आदरअणादराणं परिवारावासभूदा ते ॥ ६५० ॥

जंबूतरुदलमाना जंबूवृक्षस्य कथितपरिवाराः ।

आदरानादरयोः परिवारावासभूतास्ते ॥ ६५० ॥

अर्थ—मुख्य जंबूद्वीपका जो उचाई आदि प्रमाण कहा तीहसों परिवाररूप अन्य जंबूवृक्ष-निका आधा प्रमाण है बहुरि ते आदर अनादरनिका परिवारके आवास रूप हैं । भावार्थ—परिवाररूप जंबूवृक्षनिकी शाखानिके उपरि आदर अनादर देवनिका जो परिवार तिनके मंदिर पाईए हैं ॥ ६५० ॥

आगै शाल्मली वृक्षका स्वरूपकौ गाथा दोग करि कहै हैं;—

सीतोदावरतीरे णिसहसर्मावे सुरदिणेरदिए ।

देवकुरुम्हि मणोहररूपथले सामली सपरिवारो ॥ ६५१ ॥

सीतोदापरतीरे निपुत्रसमीपे सुराद्रिनैर्कृत्यां ।

देवकुरां मनोहररूप्यस्थले शाल्मली सपरिवारः ॥ ६५१ ॥

अर्थ—उत्तर सनमुख जाती सीतोदा नदीका पश्चिम दिशा संबंधी तटविषै निपद्म कुलांचलकै समीप मेरुपर्वततै नैऋत दिशाविषै देवकुरु भोगभूमिका जो क्षेत्र तहां मनोहर रूपामई शाल्मली वृक्षनिकी स्थली है । तहां अपना परिवार वृक्षनिकरि संयुक्त शाल्मली वृक्ष हैं ॥ ६५१ ॥

जंबुसमवण्णणो सो दक्खिणसाहम्हि जिणगिहं सेसे ।

दिससाहतिए गरुडवड्डवेणुवेणादिधारिगिहं ॥ ६५२ ॥

जंबूसमवर्णनः स दक्षिणशाखायां जिनगृहं शेषे ।

दिशाशाखात्रये गरुडपतिवेणुवेण्वादिधारिगृहम् ॥ ६५२ ॥

अर्थ—यह शाल्मली वृक्ष जंबूवृक्ष समान है वर्णन जाका ऐसा है सो वर्णन जंबूवृक्षका किया सोई सर्व याका जाननां । विशेष इतनां याकी दक्षिण शाखा उपरि जिनमंदिर है । अवशेष दिशा संबंधी तीन शाखानिके उपरि गरुड कुमारनिके स्वामी ऐसे वेणु अर वेणुधारीदेव तिनके मंदिर हैं । परिवार वृक्षनिकी शाखानिके उपरि इनहीके परिवाररूप देवादिकनिके मंदिर जाननें ॥ ६५२ ॥

आगै भोगभूमिकर्मभूमिका विभाग कहै हैं;—

कुरुओ हरिरम्मगभू हेमवदेरणवदस्विदी कमसो ।

भोगधरा वरमज्झिमवराय कम्मावणी सेसा ॥ ६५३ ॥

कुरू हरिरम्यकभुवौ हैमवतैरण्यवतक्षिती क्रमशः ।

भोगधराः वरमध्यमावराः कर्मविनयः शेषाः ॥ ६५३ ॥

अर्थ—देवकुरु अर उत्तर कुरुक्षेत्रविषै दोग उत्तम भोगभूमि हैं । बहुरि हरि अर रम्यक क्षेत्रविषै दोग मध्यम भोगभूमि हैं । बहुरि हैमवत अर हैरण्यवत क्षेत्रविषै दोग जघन्य भोगभूमि हैं । अवशेष सर्व भरत एरावत विदेह क्षेत्रविषै कर्मभूमि है ॥ ६५३ ॥

आगैं यमकगिरिका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

णीलणिसहादु गत्ता सहस्समुभए तडे वरणईणं ।

दुगदुगसेला पुण्वो चित्तो अवरो विचित्तक्खो ॥ ६५४ ॥

नीलनिषधतो गत्वा सहस्रमुभये तटे वरनद्योः ।

द्विकद्विकशैलौ पूर्वः चित्रः अपरः विचित्राख्यः ॥ ६५४ ॥

अर्थ—नील निषद्ग कुलाचलतैं मेरुकी तरफ आगैं हजार योजन जाइ उक्कष्ट सीता सीतोदा नदीनिका पूर्व पश्चिम दोऊ तटनिविषै दोय पर्वत हैं । तिनविषै सीताका पूर्वतटविषै प्राप्त चित्र नामा पर्वत है । पश्चिम तटविषै प्राप्त विचित्र नामा पर्वत है ॥ ६५४ ॥

जमगो मेघो वट्टा पंचसयंतरठिया तदुदयधरा ।

वदणं सहस्समद्धं गिरिणामसुरा वसंति गिरिकूडे ॥ ६५५ ॥

यमकः मेघः वृत्ताः पंचशतांतरस्थिताः तदुदयधराः ।

वदनं सहस्रमर्थं गिरिनामसुरा वसति गिरिकूटे ॥ ६५५ ॥

अर्थ—सीतोदाका पूर्व तटविषै यमक अर पश्चिम तटविषै मेघनामा पर्वत है । ऐसैं ए च्यारि यमकगिरि गोल हैं । बहुरि चित्रविचित्रकै बीचि अर यमक मेघकैं बीचि पांचसै योजनका अंतराल है तीह अंतरालविषै सीता वा सीतोदा नदी जाननी । बहुरि तिन च्यारयौ पर्वतनिकी उचाई हजार योजन नीचैं चौड़ाई हजार योजन उपरि चौड़ाई पांचसै योजन प्रमाण है । बहुरि तिन पर्वत कूटानिकै उपरि अपनां अपनां जो पर्वतका नाम तिस ही नाम धारक देव वसै हैं ६५५

आगैं मेरुकी पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानिविषै स्थित जे द्रह तिनका प्रमाण बहुरि एक एक द्रहके दोऊ तटनिविषै तिष्ठते ऐसे कांचन पर्वत तिनकी संख्या ताकौ तिनका उत्सेध सहित गाथा चारि करि कहैं हैं;—

गमिय तदो पंचसयं पंचसरा पंचसयमिदंतरिया ।

कुरुभद्रशालमज्जे अणुणदिदीहा हु पउमदहसरिसा ॥ ६५६ ॥

गत्वा तत पंचशतं पंच सरांसि पंचशतमितांतरिताः ।

कुरुभद्रशालमध्ये अनुनदिदीर्घाणि हि पद्महृदसदृशानि ॥ ६५६ ॥

अर्थ—यमक गिरि जहां पाईए तीहस्यौ पांचसै योजन जाइ सीता अर सीतोदा नदीविषै देवकुरु उत्तरकुरु भोगभूमिके दोय क्षेत्र अर पूर्व पश्चिम भद्रशालके दोय क्षेत्र तिनविषै पांच पांच द्रह हैं । ते द्रह पांचसै पांचसै योजन प्रमाण परस्पर अंतराल धरै हैं । बहुरि ते द्रह नदीके अनुसारी यथायोग्य दीर्घ हैं । आयाम कमलादिक करि पद्मद्रह समान हैं । भावार्थ—यमक गिरि जहां नदीनिकै तटि पाईए थे तीह क्षेत्रस्यौ पांचसै योजन परैं मेरुकी तरफ सीता वा सीतोदा नदीविषै एक एक द्रह है । तीह द्रहस्यौ पांचसै योजन परैं जाय और एक द्रह है । ऐसे पांच पांच द्रह देवकुरु अर उत्तर क्षेत्रविषै जाननें । बहुरि तिनही सीता सीतोदा नदीविषै पांच पांच द्रह पूर्व पश्चिम भद्रशालविषै जाननें । ऐसैं ए वीस द्रह

सीता सीतोदा नदीके बीचि बीचि जानने । तहां जितनां नदीका चौड़ाईका प्रमाण तितना ही द्रह-
निका चौड़ाईका प्रमाण जाननां । बहुरि पद्म द्रह समान हजार योजन तिन द्रहनिकी लंबाईका
प्रमाण जाननां । सो इन द्रहनिकी चौड़ाई तौ नदीनिकी चौड़ाईविषै अर लंबाई नदीनिका प्रवाह-
विषै जाननी । बहुरि जैसे पद्मद्रहविषै कमलादिक कहे हैं तैसें इन द्रहनिविषै भी कमलादिक
जानने ॥ ६५६ ॥

णिलुत्तरकुरुचंद्रा एरावतमल्लवंत णिसहा य ।

देवकुरुसूरमुलसाविज्जू सदिदुगदहणामा ॥ ६५७ ॥

नीलोत्तरकुरुचंद्रा ऐरावतमाल्यवंतौ निषधश्च ।

देवकुरुसूरमुलसविद्युतः सीताद्विकहदनामानि ॥ ६५७ ॥

अर्थ—नील १ उत्तर कुरु १ चन्द्र १ ऐरावत १ माल्यवत १ ए पंच बहुरि निषध १
देवकुरु १ सूर १ मुलस १ विद्युत १ ए पंच सीता अर सीतोदा नदीनिविषै जे द्रह हैं तिनके
नाम जानने ॥ ६५७ ॥

णइणिग्गमदारजुदा ते तप्परिवारवण्णणं चेसिं ।

पउमच्च कमलगेहे णागकुमारीउ णिवसंति ॥ ६५८ ॥

नदीनिर्गमद्वारयुतानि तानि तप्परिवारवर्णनं चैषां ।

पद्ममिव कमलगेहेषु नागकुमार्यो निवसंति ॥ ६५८ ॥

अर्थ—ते सर्व द्रह नदीके प्रवेश करनेका अर निकसनेका द्वारनि करि संयुक्त हैं ।
भावार्थ—नदीनिका प्रवाहके बीचि द्रह हैं अर तिन द्रहनिके वेदिका हैं । सो वेदिका नदीके प्रवेश
करनेके अर निकसनेके द्वारनि करि संयुक्त हैं । बहुरि इन द्रहनिका कमलादिकरूप सर्व परिवार
वर्णन पद्म नामा द्रह समान जाननां । इतना विशेष, इन द्रहनिविषै जे कमल हैं तिनके ऊपरि
जे मन्दिर हैं तिनविषै अपनां अपनां परिवार सहित नागकुमारी वसें हैं ॥ ६५८ ॥

दुतडे पण पण कंचणसेला सयसयतदद्दमुदयतियं ।

ते दहमुहा णगक्खा सुरा वसंतीह सुगवण्णा ॥ ६५९ ॥

द्वितटे पंच पंच कांचनशैलाः शतशततदर्धमुदयत्रयम् ।

ते हदमुखा नगाख्याः सुरा वसंति इह शुक्वर्णाः ॥ ६५९ ॥

अर्थ—तिन द्रहनिके दोऊ तटनिविषै पंक्तिरूप पांच पांच कांचन पर्वत हैं । तिन पर्वतनिकी
उचाई सौ योजन है । नीचै भू व्यास सौ योजन है उपरि मुखव्यास ताका आधा पचास योजन
है । बहुरि ते सर्व पर्वत अपने अपने द्रहके सनमुख हैं । इहां प्रश्न—पर्वतनिके सनमुखपणौ कैसे
होइ ? ताका समाधान—इन पर्वतनिके उपरि जे देवानिके नगर हैं । तिनके द्वार प्रवाहानिके सनमुख
हैं । तातैं इन पर्वतनिकों द्रह सनमुख कहे । बहुरि तिन पर्वतनिके उपरि अपनां अपनां पर्वतका जो
नाम तिस नामके धारक देव वसें हैं । ते देव शुक्वर्ण हैं । सूबाकासा वर्ण संयुक्त हैं ॥ ६५९ ॥

आगैं तहांतैं ऊपरि नदीनिका गमनस्वरूप कहैं हैं;—

दहदो गंतूणग्गे सहस्सदुगणउदिदोणि वे च कला ।

पादिदारजुदा वेदी दक्खिणउत्तरगभद्रसालस्स ॥ ६६० ॥

हदतः गत्वाप्रे सहस्रद्विकनवतिद्वि द्वे च कले ।

नदीद्वारयुता वेदी दक्षिणोत्तरगभद्रशालस्य ॥ ६६० ॥

अर्थ—द्रहर्ते आगै दोय हजार बाणवै योजन अर एक योजनका उगणीस भागनिविपै दोय कला प्रमाण जाइ नदीका प्रवेश करनेके जो द्वार तीह करि संयुक्त दक्षिण भद्रसाल अर उत्तर भद्रसालकी वेदी तिष्ठै हैं । कैसे सो याकी वासना कहिए है । दक्षिण भद्रसाल अर्द्धाईसै योजन उत्तर भद्रसाल अर्द्धाईसै योजन मेरु व्यास दश हजार योजन इनको जोड़ें दश हजार पांचसै योजन भए । सो इनको विदेहका व्यास तैतीस हजार छसै चौरासी योजन च्यारि कला तीहमैसो घटाइ २३१८४।४ ÷ १९ ताका आधा करिए तत्र ग्यारह हजार पांचसै बाणवै योजन दोय कला होइ । बहुरि यामै यमकगिरि कुलाचलका अंतराल हजार योजन अर यमक गिरिका व्यास हजार योजन अर यमक गिरि द्रहर्के अंतराल पांचसै योजन अर पाचौं द्रहनिकी लंबाई पांच हजार योजन अर पांचौं द्रहनिके वीचि च्यारि अंतराल तिनके दोय हजार योजन इस सवनिकों जोड़ें नव हजार पांचसै योजन होइ सो घटाए दोय हजार बाणवै योजन दोय कला प्रमाण अंतका द्रह अर भद्रसालकी वेदीके वीचि अंतराल जाननां ॥ ६६० ॥

आगै दिग्गज पर्वतनिका स्वरूप गाथा दोय करि कहै हैं;—

कुरुभद्रसालमज्जे महाणदीणं च दोसु पासेसु ।

दो दो दिसागइंदा सयतत्तियतइलुदयतिया ॥ ६६१ ॥

कुरुभद्रशालमध्ये महानद्योश्च द्वयोः पार्श्वयोः ।

द्वौ द्वौ दिशागजेंद्रौ शततावत्तइलमुदयत्रयाणि ॥ ६६१ ॥

अर्थ—देवकुरु उत्तर कुरु भोगभूमिनिविपै बहुरि पूर्व पश्चिम भद्रसालनिविपै महानदी सीता सीतोदा तिनके दोऊ तटनिविपै दोय दोय दिग्गजेन्द्र पर्वत हैं । ते ए सर्व आठ भए सो तिन आठौं दिग्गज पर्वतनिकी उंचाई सो योजन अर नीचै चांडाई सो योजन ऊपरि चांडाई पचास योजन प्रमाण है ॥ ६६१ ॥

तण्णामा पुब्बादी पउमुत्तरणीलसोत्थियंजणया ।

कुमुदपलासवतंसयरोचणमिह दिग्गजेंद्रसुरा ॥ ६६२ ॥

तन्नामानि पूर्वादे, पद्मोत्तरनीलस्वस्तिकांजनकाः ।

कुमुदपलाशावतंसरोचनमिह दिग्गजेंद्रसुराः ॥ ६६२ ॥

अर्थ—पूर्वादि दिशानिविपै तिनके नाम कहिए है । पूर्व भद्रसालविपै पद्मोत्तर १ नील १ देवकुरुविपै स्वस्तिक १ अंजन १ पश्चिम भद्रसालविपै कुमुद १ पलाश १ उत्तर कुरुविपै अवतंश १ रोचन १ तिन दिग्गजानिके नाम हैं । तिन पर्वतनिके उपरि दिग्गजेन्द्र देव तिष्ठै हैं ॥ ६६२ ॥ आगै गजदंत पर्वतनिका नामादिक गाथा दोय करि कहै हैं;—

मल्लव महसोमणसो विज्जुप्पह गंधमादणिभदंता ।

ईसाणादो वेलुरियरुप्पतवणीयहेममया ॥ ६६३ ॥

माल्यवान् महासौमनसः विद्युत्प्रभः गंधमादन इभदंताः ।

ईशानतः वैदूर्यरूप्यतपनीयहेममयाः ॥ ६६३ ॥

अर्थ—माल्यवान् १ महासौमनस १ विद्युत्प्रभ १ गंधमादन १ ऐसैं नामधारक . गजदंत पर्वत हैं । ते क्रमतैं वैदूर्य मणि अर रूपो अर तायो सोनों अर सोनों तींह समान वर्ण धरैं हैं । बहुरि ते क्रमतैं मेरुकी ईशानतैं लगाय च्यारथौं विदिशानिविषै तिष्ठैं हैं ॥ ६६३ ॥

णीलणिसहे सुरदिं पुट्टा मल्लवगुहादु सीदा सा ।

विज्जुप्पहगिरिगुहदो सीदोदा णिस्सरिचु गया ॥ ६६४ ॥

नीलनिषधौ सुराद्रिं स्पृष्टाः माल्यवद्गुहायाः सीता सा ।

विद्युत्प्रभगिरिगुहातः सीतोदा निस्तृत्य गता ॥ ६६४ ॥

अर्थ—ते गजदंत पर्वत नील वा निषध कुलाचल अर मेरुगिरिकौं स्पशैं हैं । **भावार्थ**—मेरुकी च्यारथौं विदिशानिविषै मेरुपर्वतसौं लगाय नील वा निषध कुलाचलपर्वत लंबे गजदंत पर्वत हैं । बहुरि तहां सीता नामा नदी मुडि करि माल्यवत नामा गजदंत पर्वतकै नदी निकसनेकी गुफा है तामैं होइ मेरुकी अर्द्ध प्रदक्षिणा देइ पूर्व भद्रसालादिविषै गमन करै है । बहुरि सीतोदा नदी मुडि करि विद्युत्प्रभ नामा गजदंतकै नदी निकसनेकी गुफा है । तामैं होइ मेरुकी अर्द्ध प्रदक्षिणा देइ पश्चिम भद्रसालादिविषै गमन करै है ॥ ६६४ ॥

अत्र विदेह देसनिका विभागकौं कहैं हैं;—

उभयंतगवणवेदियमज्जगवेभंगणादितियाणं च ।

मज्जगवक्खारचऊ पुव्ववरविदेहविजयद्धा ॥ ६६५ ॥

उभयांतगवणवेदिकामध्यगविभंगनदीत्रयाणां च ।

मध्यगवक्षारचतुर्भिः पूर्वापरविदेहविजयार्थाः ॥ ६६५ ॥

अर्थ—दोऊ अंतविषै तौ वन वेदिका अर मध्यविषै प्राप्त तीन विभंगा नदी अर मध्यविषै प्राप्त च्यारि वक्षारगिरि पर्वत तिन करि पूर्व पश्चिम विदेहके देश सीता सीतोदा नदीनिके दोऊ तटनिविषै आघे आघे हैं । **भावार्थ**—मेरुकी पूर्व दिशाविषै पूर्व विदेह है । पश्चिम दिशाविषै पश्चिम विदेह है । बहुरि पूर्व विदेहविषै वीचि सीता नदी है । अर पश्चिम विदेहकै वीचि सीतोदा नदी है । सो इन दोऊ नदीनिके दक्षिण उत्तर तट करि च्यारि विभाग हो है । बहुरि एक एक विभागविषै आठ आठ विदेह देश हैं । तहां पूर्व वा पश्चिम भद्रसालकी वेदी ताकै आगैं वक्षार ताकै आगैं विभंगा ताकै आगैं वक्षार ताकै आगैं विभंगा ताकै आगैं वक्षार ताकै आगैं देवारण्य वा भूतारण्यवनकी वेदी ऐसैं ए नव भए । सो इन नवनिके वीचि वीचि आठ विदेह देश हैं । या प्रकार बत्तीस विदेह देश जाननें ॥ ६६५ ॥

आगैं वक्षार पर्वत अर विभंगा नदीनिका नामादिक गाथा छह करि कहैं हैं;—

तण्णामा सीदुत्तरतीरादो पढमदो पदक्खिणदो ।

चेत्तादिकूडपउमादिमकूडा णल्लिण एगसेलगगो ॥ ६६६ ॥

तन्नामानि सीतोत्तरतीरात् प्रथमतः प्रदक्षिणतः ।

चित्रादिकूटपद्मादिमकूटौ नलिनः एकशैलकगः ॥ ६६६ ॥

अर्थ—सीता नदीका उत्तर तट ताकौ प्रथम करि प्रदक्षिणातै तिन वक्षार पर्वत वा विभंगा नदीनिके नाम ऐसै हैं । तहां सीता नदीका उत्तर तटविषै भद्रसालकी वेदीतै आगै लगाय क्रमतै चित्रकूट १ पद्मकूट १ नलिन १ एकशैल १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं ॥ ६६६ ॥

गाहदहपंकवदिणादि तिकूडवेसवणअंजणप्पादि ।

अंजणगो तत्तजला मत्तजलुम्मत्तजल सिंधु ॥ ६६७ ॥

गाधद्रहपंकवतीनद्यः त्रिकूटवैश्रवणाञ्जनात्मादिः ।

अंजनकाः तप्तजला मत्तजला उन्मत्तजला सिंधुः ॥ ६६७ ॥

अर्थ—गाधवती १ द्रहवती १ पंकवती १ नाम धारक तीन विभंगा हैं । बहुरि सीताका दक्षिण तटविषै देवारण्य वेदीतै आगै लगाय क्रमतै त्रिकूट १ वैश्रवण १ अंजनात्मा १ अंजन १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं । बहुरि तप्तजला १ मत्तजला १ उन्मत्तजला १ नाम तीन विभंगा नदी हैं ॥ ६६७ ॥

सड्ढावं विजडावं आसीविस सुहवहा य वक्खारा ।

खारोदा सीतोदा सोदोवाहिणि णदी मज्झे ॥ ६६८ ॥

श्रद्धावान् विजटावान् आशीविपः सुखावहश्च वक्षाराः ।

क्षारोदा सीतोदा श्रोतोवाहिनी नद्यः मध्ये ॥ ६६८ ॥

अर्थ—पश्चिम विदेह सीतोदा नदीका दक्षिण तटविषै भद्रसाल वेदीतै आगै लगाय क्रमतै श्रद्धावान् १ विजटावान् १ आशीविप १ सुखावह १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं । बहुरि क्षारोदा १ सीतोदा १ श्रोतोवाहिनी १ नाम धारक तीन विभंगा नदी वक्षारनिकै वीचि वीचि हैं ॥ ६६८ ॥

तो चंदसूरणागादिममाला देवमाल वक्खारा ।

गंभीरमालिणी फेणमालिणी उम्मिमालिणी सरिदा ॥ ६६९ ॥

ततः चंद्रसूर्यनागादिममालदेवमालाः वक्षाराः ।

गंभीरमालिनी फेनमालिनी उर्मिमालिनी सरितः ॥ ६६९ ॥

अर्थ—तहां पीछै पश्चिम विदेह सीतोदा नदीका उत्तर तटविषै देवारण्य वेदीतै आगै लगाय क्रमतै चंद्रमाल १ सूर्यमाल १ नागमाल १ देवमाल १ ए च्यारि वक्षार पर्वत हैं । बहुरि गंभीरमालिनी १ फेनमालिनी १ उर्मिमालिनी १ ए तीन विभंगा नदी हैं ॥ ६६९ ॥

हेममया वक्खारा वेभंगा रोहिसरिसवणणगा ।

ताहिं पवेसतोरणगेहे णिवसंति दिक्खणा ॥ ६७० ॥

हेममया वक्षाराः विभंगा रोहितसदृशवर्णनकाः ।

तासां प्रवेशतोरणगेहे निवसंति दिक्कन्याः ॥ ६७० ॥

अर्थ—ते सर्व वक्षार पर्वत सुवर्णमय हैं । बहुरि ते विभंगा नदी सर्व रोहित नदी समान वर्णन लिए हैं । जैसे रोहित नदीका निर्गमादिविषै व्यासादिकका प्रमाण है सोई विभंगा नदीनिविषै है । सो ए विभंगा नदी निषद्ग वा नील कुलाचलनिकै निकटि कुंड हैं तिनमेंसौं निकसी है । तहां निकसतैं साढ़ा बारा योजन चौड़ी हैं । बहुरि निकासि सूधी जाइ सीता वा सीतोदाविषै प्रवेश करै हैं । तहां प्रवेश करतै एकसौं पच्चीस योजन चौड़ी हैं । बहुरि इन एक एककी परिवार नदी अठाईस हजार है । बहुरि निकसनैका कुंडकी वेदीका तोरण द्वार अठारह योजन अर तीन चौथा भाग प्रमाण ऊंचा है । अर प्रवेश करनैका सीता वा सीतोदाका वेदीका तोरण द्वारण एकसौ साढ़ा सित्यासी योजन ऊंचा है । ऐसैं रोहित समान वर्णन जाननां । बहुरि तिनका निकसनैका प्रवेश करनेका तोरण द्वारनकै उपरि मंदिर हैं । तहां दिक्कुमारी वसै हैं ॥ ६७० ॥

आगैं तिन वक्षारनिकै उपरि तिष्ठते देवनिकौ कहैं हैं;—

वीसदिवक्खाराणं सिहरे तत्तन्विसेसणामसुरा ।

चिष्टंति तण्णगाणं पुह कंचणवेदियावणोहिं जुदा ॥ ६७१ ॥

विंशतिवक्षाराणां शिखरे तत्तद्विशेषनामसुराः ।

तिष्ठंति तन्नगानां पृथक् कांचनवेदिकावनैः युताः ॥ ६७१ ॥

अर्थ—च्यारि गजदंत सोलह वक्षार मिलि वीस वक्षार पर्वत भए तिनका शिखरि अपनैं अपनैं वक्षार पर्वतका जो नाम तिसही नामके धारक देव तिष्ठै हैं । बहुरि ते पर्वत जुदे जुदे सुवर्ण मय वेदी अर वननि करि संयुक्त हैं ॥ ६७१ ॥

अब देवारण्य वननिका स्थान कहैं हैं;—

पुव्ववरविदेहंते सीतदु दुतडेसु देवरण्णाणि ।

चारि लवणुवाहिपासे तव्वेदी भद्रसालसमा ॥ ६७२ ॥

पूर्वापरविदेहांते सीताद्वयोः द्वितटेषु देवारण्यानि ।

चत्वारि लवणोदधिपाश्चे तद्वेदी भद्रसालसमा ॥ ६७२ ॥

अर्थ—पूर्व पश्चिम विदेहकै अंति सीता अर सीतोदा नदीका दक्षिण उत्तर दोऊ तटनि-विषै च्यारि देवारण्य नामा वन हैं । जैसे पूर्व पश्चिम भद्रसालकी वेदी निषद्ग नीलकौं स्पर्शि करि तिष्ठै है । तैसे लवणसमुद्रकै निकटि देवारण्यकी वेदी निषद्ग नीलकौं स्पर्शि करि तिष्ठै है ।

भावार्थ—विदेहकै अंति समुद्रकै निकटि देवारण्य नामा वन हैं ॥ ६७२ ॥

अब तिन वननिके वृक्षादिक कहैं हैं;—

जंबीरजंबुकेलीकांकिल्लीमलिवल्लिपहुदीहिं ।

बहुदेवसरीवावीपासादागिहेहिं जुत्ताणि ॥ ६७३ ॥

जंबीरजंबूकदलीकंककल्लिमल्लिवल्लिप्रभृतिभिः ।

बहुदेबसरोवापीप्रासादगृहैः युक्तानि ॥ ६७३ ॥

अर्थ—ते देवारण्य वन जंभीरी जामूणि केलि कंकली मालती वेलि आदि वृक्षनि करि संयुक्त हैं । बहुरि बहुत देव सरोवर अर वावड़ी अर प्रासाद मंदिरनि करि संयुक्त हैं ॥ ६७३ ॥
आगै विदेह देशनिका ग्रामादिकका लक्षण तीन गाथानि करि कहै हैं;—

देसे पुह पुह गामा छण्णउदीकोडि णयरखेडा य ।

खव्वड मडंव पट्टण दोणा संवाह दुग्गडवी ॥ ६७४ ॥

देशे पृथक् पृथक् ग्रामाः षण्णवतिकोव्यः नगरखेटाः च ।

खर्वडा मडंवाः पट्टनानि द्रोणाः संवाहा दुर्गाटव्यः ॥ ६७४ ॥

अर्थ—विदेह क्षेत्रविषै तिष्ठते जे बत्तीस देश तिन एक एक विषै पृथक् पृथक् छिनवै कोडि ग्राम हैं । बहुरि नगर खेट खर्वड मडंव पत्तन द्रोण संवाह ए दुर्गाटवी हैं ॥ ६७४ ॥

छव्वीसमदो सोलं चउवीसचउक्कमेव अडदालं ।

णवणउदी चोद्वस अडवीसं कमसो सहस्सगुणा ॥ ६७५ ॥

षड्विंशमतः षोडशः चतुर्विंशं चतुष्कमेव अष्टचत्वारिंशत् ।

नवनवतिः चतुर्दश अष्टाविंशं क्रमशः सहस्सगुणानि ॥ ६७५ ॥

अर्थ—छव्वीस सोलह चौवीस च्यारि अठतालीस निन्याणवै चौदह अठार्ईस क्रमतै हजार गुणे हैं । भावार्थ—एक एक विदेह देशविषै छव्वीस हजार नगर है । सोलह हजार खेट हैं । चौवीस हजार खर्वड हैं । च्यारि हजार मडंव हैं । अठतालीस हजार पतन हैं । निन्याणवै हजार द्रोण हैं । चौदह हजार संवाह हैं । अठार्ईस हजार दुर्गाटवी हैं ॥ ६७५ ॥

वइ चउगोउरसालं णदिगिरिणगवेठि सपणसयगामं ।

रयणपदसिंधुवेलावलइय णगुवरि ट्ठियं कमसो ॥ ६७६ ॥

वृतिः चतुर्गोपुरशालः नदीगिरिनगवेष्ट्यं सपंचशतग्रामं ।

रत्नपदसिंधुवेलावलयितः नगोपरि स्थितं क्रमशः ॥ ६७६ ॥

अर्थ—वृति जो वाडि तीह करि वेष्टित सो ग्राम हैं । बहुरि च्यारि दरवाजे कोट संयुक्त नगर हैं । बहुरि नदी अर पर्वत दोऊनि करि वेष्टित खेट हैं । बहुरि पर्वत करि वेष्टित खर्वड है । पांचसै ग्रामनि करि संयुक्त अडंव है । जहां रत्न वस्तु निपजै सो पत्तन है । नदी करि वेष्टित द्रोण है । बहुरि उप समुद्रकी वेला करि वेष्टित जो होइ सो संवाह है । पर्वतकै उपरि जो होइ सो दुर्गाटवी है । ऐसै क्रमतै ग्रामादिकका स्वरूप जाननां ॥ ६७६ ॥

आगै विदेह देशविषै जो उपसमुद्र हैं ताकै अभ्यतर जे द्वीप हैं तिनका स्वरूप कहै हैं;—

छप्पणंतरदीवा छव्वीससहस्स रयणआयरया ।

रयणाण कुक्खिवासा सत्तसयं उवसमुद्दम्हि ॥ ६७७ ॥

षट्पंचाशदंतरद्वीपाः षड्विंशसहस्रं रत्नाकराः ।

रत्नानां कुक्षिवासाः सप्तशतानि उपसमुद्रे ॥ ६७७ ॥

अर्थ—एक एक विदेह देशविषै एक एक उपसमुद्र है सो मुख्य नगरी अर महानंदीके वीचि आर्यखंडविषै पाईए है । तीह उपसमुद्रकैविषै टापू है । तहां छप्पन तौ अंतरद्वीप हैं । बहुरि छवीस हजार रत्नाकर हैं तहां रत्न उपजं हैं । रत्निके वेचने लैनेके स्थानभूत कुक्षिवास सातसै हैं ॥ ६७७ ॥

आगैं मागधादि तीन देवनिका स्थान कहै हैं;—

सीतासीतोदाणदितीरसमीवे जलम्हि दीवतियं ।

पुन्वादी मागधवरतणुप्पभासामराण हवे ॥ ६७८ ॥

सीतासीतोदानदीतीरसमीपे जले द्वीपत्रयं ।

पूर्वादिना मागधवरतनुप्रभासामराणां भवेत् ॥ ६७८ ॥

अर्थ—सीता सीतोदा नदीके तीर समीप जलविषै पूर्व पश्चिम करि मागध १ वरतनु १ प्रभास १ देवनिके तीन द्वीप हैं । भावार्थ—चक्रवर्ती करि साधने योग्य मागध वरतनु प्रभास देव तिनके स्थान जैसे भुव्व एरावतके समुद्रविषै हैं । तैसे विदेह देशनिके सीता सीतोदा नदीविषै है । पूर्व विदेहके सीता नदीके तीर जलविषै है । पश्चिम विदेहके सीतोदा नदीके तीर समीप जलविषै है । तहां एक एक देशसंबंधी दोय दोय नदी जिन द्वारनि करि सीता सीतोदाविषै प्रवेश करै हैं । तिन द्वारनिके अर तिन द्वारनिके वीचि द्वार है ताके समीप जलविषै तिन देवनिके द्वीप जानने ॥ ६७८ ॥

आगैं विदेह क्षेत्रविषै प्रात वर्षादिकका स्वरूप गाथा दोय करि कहै हैं;—

वरिसंति कालमेहा सत्तविहा सत्त सत्त दिवसवही ।

वरिसाकाले धवला बारस द्रोणाभिहाणम्भा ॥ ६७९ ॥

वर्षति कालमेघाः सप्तविधाः सप्त सप्त दिवसावधीन् ।

वर्षाकाले धवला द्वादश द्रोणाभिधाना अम्भाः ॥ ६७९ ॥

अर्थ—सात प्रकार काल मेघ है । ते सात सात दिन मर्याद लिए वर्षाकालविषै वर्षे हैं । बहुरि स्वेतवर्ण द्रोण नामा बारह अन्न कहिए बादले ते तैसेही सात सात दिन मर्याद लिए वर्षे हैं । ऐसे वर्षाकालविषै एकसौ तेतीस दिन वर्षा हो हे ॥ ६७९ ॥

देसा दुम्भिवस्वीदीमारिकुदेववण्णलिगिमदहीणा ।

भरिदा सदावि केवलिसलागपुरिसिद्धिसाहृहिं ॥ ६८० ॥

देशा दुम्भिक्षेतिमारिकुदेववर्णलिगिमतहीनाः ।

भृताः सदापि केवलिशलाकापुरुषधिसाधुभिः ॥ ६८० ॥

अर्थ—विदेह क्षेत्रविषै तिष्ठते देश ते अतिवृष्टि १ अनावृष्टि १ मूसा १ टीडी १ सुवा १ अपनी फौज १ अन्य वैरीकी फौज १ ऐसे सात प्रकार ईति करि रहित हैं । बहुरि गाय मनुक्षा दिक् जातै अग्निक मरै ऐसी मरी तिन करि रहित है । बहुरि जिनदेवतै अन्य कुदेव जिनालि-

गीतें अन्य कुलिगी जिनमततै अन्य कुमत तिन करि रहित हैं । बहुरि ते देश सदा ही केवलज्ञानी बहुरि तीर्थकरादि शलाका पुरुष बहुरि ऋद्धिधारी साधु तिन करि भरे हैं ॥ ६८० ॥

आगै तीर्थकर सकल चक्री अर्द्धचक्रीनिकी पंचमेरु अपेक्षा करि जघन्य उत्कृष्ट संख्या करि प्रवर्तन कहैं हैं;—

तित्थद्भ्रसयलचकी सट्टिसयं पुह वरेण अवरेण ।

वीसं वीसं सयले खेत्ते सत्तरिसयं वरदो ॥ ६८१ ॥

तीर्थार्थसकलचाक्रिणः पष्टिशतं पृथक् वरेण अवरेण ।

विंशं विंशं सकले क्षेत्रे सप्ततिशतं वरतः ॥ ६८१ ॥

अर्थ—तीर्थकर अर अर्द्धचक्री नारायण प्रतिनारायण अर सकल चक्री चक्रवर्ती ए प्रथक प्रथक एक एक विदेह देशविषै एक एक होइ तत्र उत्कृष्टपनै करि एकसौ साठि होइ । बहुरि जघन्यपनै करि सीता सीतोदाका दक्षिण उत्तर तटविषै एक एक होइ ऐसैं एक मेरु अपेक्षा च्यारि होहिं मिलि करि पंच मेरुके विदेह अपेक्षा करि वीस हो है । बहुरि ते उत्कृष्टपनैथकी पांच भरत पांच ऐरावतसम्बन्धी मिलाए तीर्थकरादिक एकसौ सत्तरि हो हैं ॥ ६८१ ॥

अब चक्रवर्तीकी संपदाका स्वरूप कहैं हैं;—

चुलसीदिलखभदिभ रहा हया विगुणवयकोडीओ ।

णवणिहि चोद्दसरयणं चक्किथीओ सहस्सच्छणउदी ॥ ६८२ ॥

चतुरशीतिलक्षभद्रेभाः रथा हया द्विगुणनवकोट्यः ।

नवनिधयः चतुर्दशरत्नानि चक्रिस्त्रियः सहस्रं पण्णवतिः ॥ ६८२ ॥

अर्थ—चौरासी लाख कल्याणरूप हाथी हैं । तितनेही चौरासी लाख रथ हैं । घोडे दुगुणा नव कोड़ि ताके अठारह कोड़ि हैं । बहुरि छह ऋतु योग्य वस्तुका देनेवाला कालनिधि है भाजनपात्रका दायक महाकालनिधि है । अन्नका दायक पांडुनिधि है । आयुधका दायक माणवकनिधि है । वाजित्रका दायक शंखनिधि है । मंदिरका दायक नैसर्पनिधि है । वस्त्रका दायक पद्मनिधि है । आभूषणका दायक पिंगलनिधि है । नानाप्रकार रत्नसमूहका दायक नाना रत्ननिधि है । ऐसैं नवनिधि हैं । गाडाके आकारिनिधि है तामैं ऐसैं वस्तु निकस्य करै है । बहुरि चक्र १ असि १ छत्र १ दंड १ मणि १ चर्म १ काकिणी १ ए सात अचेतन अर ग्रहपति १ सेनापति १ हाथी १ घोड़ो १ सिलप १ स्त्री १ पुरोहित १ ए सात सचेतन ऐसैं चौदह रत्न हैं । बहुरि छिनवैं हजार स्त्री हैं । ऐसैं चक्रवर्तीके संपदा हैं ॥ ६८२ ॥

अब राजाधिराजादिकनिका लक्षण गाथा तीन करि कहैं हैं;—

अण्णे सगपद्विडिया सेणागणवणिजदंडवइ मंती ।

महयर तलयर वण्णा चउरंगपुरोहमच्चमहमच्चा ॥ ६८३ ॥

अन्ये स्वकपद्वीस्थिताः सेनागणवणिगदंडपतिः मंत्री ।

महत्तरः तलवरः वर्णः चतुरंगपुरोहितामात्यमहामात्यः ॥ ६८३ ॥

अर्थ—अन्य राजादिक हैं ते अपनी अपनी पदवीविषै स्थित हैं । तहां सेनापति कहिए सेनाका नायक बहुरि गणकपती कहिए ज्योतिषी आदिकका नायक बहुरि वणिक्पति कहिए व्यापारीनिका नायक बहुरि दंडपति कहिए समस्त सेनाका नायक बहुरि मंत्री कहिए पंचांग मंत्रविषै प्रवीण बहुरि महत्तर कहिए कुलविषै बड़ा बहुरि तलवर कहिए कोटवाल बहुरि वर्ण कहिए क्षत्रियादिक च्यारि प्रकार वर्ण बहुरि चतुरंग कहिए च्यारि प्रकार सेना बहुरि पुरोहित कहिए हितकार्यका अधिकारी बहुरि आमात्य कहिए देशका अधिकारी बहुरि महामात्य कहिए सर्व राज्य-कार्यका अधिकारी ॥ ६८३ ॥

इदि अटारसेठीणहिओ राजो हवेज्जमउडधरो ।

पंचसयरायसामी अहिराजो तो महाराजो ॥ ६८४ ॥

इति अष्टादशश्रेणीनामधिपो राजा भवेत् मुकुटधरः ।

पंचशतराजस्वामी अधिराजः ततः महाराजः ॥ ६८४ ॥

अर्थ—ऐसैं अटारह श्रेणीनिका जो स्वामी सो राजा कहिए सोई मुकुटधारी हो है । बहुरि ऐसैं पांचसै राजानिका स्वामी सो अधिराजा हो है । बहुरि हजार राजनिका स्वामी महाराजा हो है ॥ ६८४ ॥

तह अद्धमंडलीओ मंडलिओ तो महादिमंडलिओ ।

तियल्लखखंडाणहिवा पहुणो राजाण दुगुणदुगुणाणं ॥ ६८५ ॥

तथा अर्धमंडलिकः मंडलिकः ततो महादिमंडलिकः ।

त्रिकपटखंडानामधिपाः प्रभवः राज्ञां द्विगुणद्विगुणानाम् ॥ ६८५ ॥

अर्थ—तैसैं दोय हजार राजानिका स्वामी अर्द्धमंडलीक हो है । बहुरि चारि हजार राजानिका स्वामी मंडलीक हो है । बहुरि आठ हजार राजानिका स्वामी महामंडलीक हो है । बहुरि सोलह हजार राजानिका स्वामी तीन खंडका अधिपति नारायण वा प्रतिनारायण हो है । बहुरि बत्तीस हजार राजानिका स्वामी छह खंडका अधिपति चक्रवर्ती हो है । ऐसैं अधिराजादिक सर्व राजातैं दूणे दूणे क्रमतैं जाननैं ॥ ६८५ ॥

अत्र तीर्थकरका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

सयल्लभुवणेक्कणाहो तित्थयरो कोमुदीव कुंदं वा ।

धवलैहिं चामरैहिं चउसट्ठिहिं विज्जमाणो सो ॥ ६८६ ॥

सकलभुवनैकनाथः तीर्थकरः कौमुदीव कुंदं वा ।

धवलैः चामरैः चतुःपष्टिभिः वीज्यमानः सः ॥ ६८६ ॥

अर्थ—जो सकल लोकका एक अद्वितीय नाथ है । बहुरि गडूलनी समान वा कुंदेका फूल समान स्वेत चौसठि चमरनि करि वीज्यमान है सो तीर्थकर जाननां ॥ ६८६ ॥

आगैं विदेह देशनिके नाम गाथा श्लोक च्यारि करि कहैं हैं;—

कच्छा सुकच्छा महाकच्छा चउत्थी कच्छकावदी ।

आवत्ता लांगलावत्ता पोक्खला पोक्खलावदी ॥ ६८७ ॥

कच्छा सुकच्छा महाकच्छा चतुर्थी कच्छकावती ।

आवर्ता लांगलावर्ता पुष्कला पुष्कलावती ॥ ६८७ ॥

अर्थ—कछा १ सुकछा १ महाकछा १ चौथी कछकावती १ आवर्ता १ लांगलावर्ता १ पुष्कला १ पुष्कलावती १ ए आठ देश सीता नदीका उत्तर तटविषे भद्रसाल वेदीतें आगें लगाय करि क्रमतें जाननै ॥ ६८७ ॥

वच्छा सुवच्छा महावच्छा चउत्थी वच्छकावदी ।

रम्मा सुरम्मगा चैव रमणेज्जा मंगलावदी ॥ ६८८ ॥

वत्सा सुवत्सा महावत्सा चतुर्थी वत्सकावती ।

रम्या सुरम्यका चैव रमणीया मंगलावती ॥ ६८८ ॥

अर्थ—वत्सा १ सुवत्सा १ महावत्सा १ चौथी वत्सकावती १ रम्या १ सुरम्यका १ रमणीया १ मंगलावती १ ए आठ देश सीता नदीका दक्षिण तटविषे देवारण्यकी वेदीतें उरें लगाय करि क्रमतें जाननै ॥ ६८८ ॥

पम्मा सुपम्मा महापम्मा चउत्थी पम्मकावदी ।

शंखा च नलिणी चैव कुमुदा सरिदा तथा ॥ ६८९ ॥

पद्मा सुपद्मा महापद्मा चतुर्थी पद्मकावती ।

शंखा च नलिनी चैव कुमुदा सरित् तथा ॥ ६८९ ॥

अर्थ—पद्मा १ सुपद्मा १ महापद्मा १ चौथी पद्मकावती १ शंखा १ नलिनी १ कुमुद १ सरित १ ए आठ देश सीतोदा नदीका दक्षिण तटविषे भद्रसाल वेदीतें आगें लगाय क्रमतें जाननै ॥ ६८९ ॥

वप्पा सुवप्पा महावप्पा चउत्थी वप्पकावदी ।

गंधा खलु सुगंधा च गंधिला गंधमालिणी ॥ ६९० ॥

वप्रा सुवप्रा महावप्रा चतुर्थी वप्रकावती ।

गंधा खलु सुगंधा च गंधिला गंधमालिनी ॥ ६९० ॥

अर्थ—वप्रा १ सुवप्रा १ महावप्रा १ चौथी वप्रकावती १ गंधा १ सुगंधा १ गंधिला १ गंधमालिनी १ ए आठ देश सीतोदा नदीका उत्तर तटविषे देवारण्य वेदीतें उरें लगाय क्रमतें जाननै ॥ ६९० ॥

आगें इन देशनिविषे खंड कैसें जानिए ऐसैं प्रश्न कहतैं उत्तर कहैं हैं;—

विजयं पडि वेयड्डो गंगासिंधुसम दोण्णि देण्णि णई ।

तेहिं कया छक्खंडा विदेहे बत्तीस विजयाणं ॥ ६९१ ॥

विजयं प्रति विजयार्धः गंगासिंधुसमे द्वे द्वे नद्यौ ।

तैः कृतानि षट्खंडानि विदेहे द्वात्रिंशत् विजयानाम् ॥ ६९१ ॥

अर्थ—देश देश प्रति एक एक विजयार्द्ध पर्वत है । कुलाचलतैं लगाय महानदी पर्यंत जो देशनिकी लंबाई तीहकै मध्य प्रदेशविषै विजयार्द्ध पर्वत जाननां । सो विजय कहिए देश सो इस करि आधा किया तातैं याका विजयार्द्ध ऐसा सार्थाक नाम है । बहुरि तिनही देशनिविषै गंगा सिंधुसमान निकसतैं सधा छह योजन चौड़ी प्रवेश करतैं साहा बासठि योजन चौड़ी इत्यादि गंगासिंधुका जो प्रमाण तीह सदृश दोग दोग नदी हैं । तिन नदी अर विजयार्द्धनि करि विदेह संबंधी बत्तीस देशनिविषै प्रत्येक छह छह खंड किए हैं ॥ ६९१ ॥

आगैं तहां तिष्ठते विजयार्द्धनिका वा नदीनिका व्यास गाथा दोग करि कहैं हैं;—

ते पुञ्चावरदीहा जणवयमज्जे गुहादु पुच्वं वा ।

गंगादु नीलमूलगकुंडा रत्तुग णिसहणिससरिदा ॥ ६९२ ॥

ते पूर्वापरदीर्घा जनपदमध्ये गुहाद्वयं पूर्वं वा ।

गंगाद्वयं नीलमूलगकुंडा रक्ताद्विकं निपधनिःसुताः ॥ ६९२ ॥

अर्थ—ते विजयार्द्ध पूर्वं पश्चिम लंघे हैं । बहुरि जनपद जो देश तीहकै मध्यभागविषै हैं । बहुरि तहां विजयार्द्धविषै दोग गुफा हैं सो गुफा पूर्वं भरतका विजयार्द्धविषै कही तैसैं ही इहां जाननी । बहुरि एक एक देशविषै दोग दोग नदी हैं । तहां सीता वा सीतोदाका दक्षिण तटविषै जे देश हैं तिनविषै जे दोग दोग नदी हैं तिनका नाम गंगा सिंधु है । बहुरि उत्तर तटविषै जे देश हैं तिनविषै जे दोग दोग नदी हैं तिनका नाम रक्ता रक्तोदा है । तहां गंगासिंधु दोग नदी नील पर्वतक निकटि मूलविषै स्थित जो कुंड तीहसौं उत्तर सनमुख निकसि सूधी आइ विजयार्द्धकी गुफामें होइ सीता वा सीतोदाविषै तिसकी वेदीका तोरण द्वारविषै प्राप्त होइ प्रवेश करै है । बहुरि रक्ता रक्तोदा दोग नदी निपध पर्वतक निकटि मूलविषै स्थित जो कुंड तीहसौं दक्षिण सनमुख निकसि सूधी आइ विजयार्द्धकी गुफामें होइ सीता वा सीतोदाविषै तिसकी वेदीका तोरण द्वारविषै प्राप्त होइ प्रवेश करै है ॥ ६९२ ॥

दसदसपणोत्ति पण्णं तीसं दसयं च रूपगिरिवासा ।

खयराभिजोग सेठी सिहरे सिद्धादिकूटं तु ॥ ६९३ ॥

दश दश पंचांतं पंचाशत् त्रिंशत् दशकं च रूपगिरिव्यासा ।

खचराभियोग्या श्रेणी शिखरे सिद्धादिकूटं तु ॥ ६९३ ॥

अर्थ—तीह विजयार्द्धकै दश योजन ऊंची प्रथम श्रेणी है । पचास योजन प्रमाण नीचें उपरि समान व्यास धरै है । बहुरि तातैं उपरि दस योजन ऊंची दूसरी श्रेणी है । तीस योजन समान व्यास धरै है । ताकैं उपरि पांच योजन ऊंचा उपरिका शिखर है । दश योजन समान व्यास धरै है । भावार्थ—विजयार्द्ध पर्वत नीचैतैं लगाय दश योजनकी उचाई पर्यंत पचास योजन चौड़ा है । बहुरि उपरि दक्षिण उत्तरविषै दश दश योजनकी चौड़ी कटनी छूटि वीचिमैं दश योजन उचाई पर्यंत तीस योजन चौड़ा है । बहुरि उपरि दक्षिण उत्तरविषै दश दश योजन कटनी छूटि वीचिमैं पांच योजन उचाई पर्यंत दश योजन चौड़ा है । बहुरि तहां दक्षिण उत्तर दोऊ तट-

विषै प्रात प्रथम श्रेणीविषै विद्याधर वसै हैं । बहुरि द्वितीय श्रेणी जो कटनी तिह विषै आमियोग्य देव वसै हैं । बहुरि शिखरविषै सिद्धायतन आदि नवकूट हैं ॥ ६९२ ॥

आगै तहां ही द्वितीयादि श्रेणीविषै विशेष कहै हैं;—

सोहम्मआभिजोगगमणिचित्तपुराणि विदियसेद्विम्हि ।

वेयडुकुमारवई सिहरतले पुण्णभद्वक्खे ॥ ६९४ ॥

सौधर्माभियोग्यगमणिचित्रपुराणि द्वितीयश्रेण्याम् ।

विजयार्धकुमारपतिः शिखरतले पूर्णभद्राख्ये ॥ ६९४ ॥

अर्थ—तहां ही द्वितीय श्रेणीविषै सौधर्म संबंधी आभियोग्य देवनिके मणिमई नानाप्रकार नगर हैं । बहुरि तिस विजयार्द्धका शिखरविषै पूर्णभद्र नामा कूट तीह उपरि विजयार्द्ध कुमार पति देव वसै हैं ॥ ६९४ ॥

आगै तहां प्रथम दोऊ श्रेणिनिविषै तिष्टते विद्याधरनिके नगर तिनकी संख्या वा तिनके नाम पंद्रह गाथानि करि कहै हैं;—

पणवण्णं पणवण्णं विदेहवेयइठपढमभूमिम्हि ।

णयरणि पण्णसट्ठी जंबूउभयंतवेयइठे ॥ ६९५ ॥

पंचपंचाशत् पंचपंचाशत् विदेहविजयार्धप्रथमभूमौ ।

नगराणि पंचाशत् षष्टिः जंबूभयांतविजयार्धे ॥ ६९५ ॥

अर्थ—विदेह संबंधी विजयार्द्धनिकी दक्षिण उत्तररूप प्रथम दोऊ श्रेणी तीहविषै पचावन पचावन नगर विद्याधरनिके हैं । बहुरि जंबूद्वीपका दोऊ अंत जे भरत ऐरावत तिन संबंधी विजयार्द्ध तहां प्रथम दोऊ श्रेणीविषै पचास साठि नगर हैं ॥ ६९५ ॥

सेलायामे दक्खिणसेठीए पण्णमुत्तरे सट्ठी ।

तण्णामा पुव्वादी किंणामिद किंणरंगीदं ॥ ६९६ ॥

शैलायामे दक्षिणश्रेण्यां पंचाशदुत्तरस्यां षष्टिः ।

तन्नामानि पूर्वादितः किनामितं किन्नरगीतं ॥ ६९६ ॥

अर्थ—भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्ध तीहकी पूर्व पश्चिम लंबाईविषै दक्षिण श्रेणीविषै तो पचास नगर हैं । उत्तर श्रेणीविषै साठि नगर हैं तिन नगरनिके नाम पूर्व दिशातै लगाय अनुक्रमतै कहिए हैं । किनामित १ किन्नरगीत १ ॥ ६९६ ॥

णरगीदं बहुकेतू पुंडरियं सीहसेदगरुडधजं ।

सिरिपहधर लोहगगलपरिंजयं वज्जअम्मलडूपुरं ॥ ६९७ ॥

नरगीतः बहुकेतुः पुंडरीकं सिंहध्वजं ।

श्रीप्रभधरं लोहार्गलपरिंजयं वज्जार्गलाढ्यपुरं ॥ ६९७ ॥

अर्थ—नरगीत १ बहुकेतु १ पुंडरीक १ सिंहध्वज १ श्वेतध्वज १ गरुडध्वज १ श्रीप्रभ १ श्रीधर १ लोहार्गल १ अरिंजय १ वज्जार्गल १ वज्जाढ्यपुर १ ॥ ६९७ ॥

होइ विमोइ पुरं जय सयडचदुवहुमुही य अरजक्खा ।

विरजक्खा रहणूपुर मेहलअग्गपुर खेमचरी ॥ ६९८ ॥

भवति विमोचि पुरंजयं शकटचतुर्वहुमुखी च अरजस्का ।

विरजस्का रथनूपुरं मेखलाप्रपुरं क्षेमचरी ॥ ६९८ ॥

अर्थ—भवति कहिए नगर है । विमोचिपुर १ जय १ शकटमुखी १ चतुर्मुखी १ बहुमुखी १ अरजस्का १ विरजस्का १ रथनूपुर १ मेखलाप्रपुर १ क्षेमचरी १ ॥ ६९८ ॥

अवराजिद कामादीपुष्पं गगनचरि विणयचरि सुक्कं ।

तो सजयंतिणगरं जयंति विजया वइजयती य ॥ ६९९ ॥

अपराजितं कामादिपुष्पं गगनचरी विनयचरी शुक्रं ।

ततः संज तिनगरं जयंति विजया वैजयंती च ॥ ६९९ ॥

अर्थ—अपराजित १ मपुष्प १ गगनचरी १ विनयचरी १ शुक्र १ संजयंतिनगर १ जयंती १ विजया १ वैजयंती १ ॥ ६९९ ॥

खेमंकर चंद्राहं सूरुाहं चित्तकूड महकूडं ।

हेमतिमेहविचित्तयकूडं वैसवणकूडमदो ॥ ७०० ॥

क्षेमकरं चंद्राभं सूर्याभं चित्रकूटं महाकूटं ।

हेमत्रिमेघविचित्रकूटं वैश्रवणकूटमतः ॥ ७०० ॥

अर्थ—क्षेमंकर १ चंद्राभ १ सूर्याभ १ चित्रकूट १ महाकूट १ हेमकूट १ त्रिकूट १ मेघकूट १ विचित्रकूट १ वैश्रवणकूट १ ॥ ७०० ॥

सूरपुर चंद्रपुर णि ज्जोदिणि विमुहि णिच्चवाहिणियो ।

सुमुही चरिमा पच्छिमभागादो अज्जुणी अरुणी ॥ ७०१ ॥

सूर्यपुरं चंद्रपुरं नित्योद्योतिनी विमुखी नित्यवाहिनी ।

सुमुखी चरमा पश्चिमभागात् अर्जुनी अरुणी ॥ ७०१ ॥

अर्थ—सूर्यपुर १ चंद्रपुर १ नित्योद्योतिनी १ विमुखी १ नित्यवाहिनी १ सुमुखी १ अंतकी नगरी १ ऐसै दक्षिण श्रेणीविषै पचास नगरी हैं । अब उत्तर श्रेणीविषै पश्चिम भागतै लगाय क्रमतै नगरीनिके नाम कहिए हैं । अर्जुनी १ अरुणी १ ॥ ७०१ ॥

केलास वारुणीपुरि विज्जुप्पह किलिकिलं च चूडादी ।

मणि ससिपह वंशालं पुष्पादी चूलमिह दशमं ॥ ७०२ ॥

कैलाशो वारुणी पुरी विद्युत्प्रभं किलिकिलं च चूडादिः ।

मणिः शशिप्रभं वंशालं पुष्पादिः चूलमिह दशमं ॥ ७०२ ॥

अर्थ—कैलाश १ वारुणीपुरी १ विद्युत्प्रभ १ किलिकिल १ चूडामणि १ शशिप्रभ १ वंशाल १ पुष्पचूलनामा दशवां नगर है ॥ ७०२ ॥

ततोवि हंसगर्भं बलाहगं तेरसं सिवकरयं ।

सिरिसोध चमर सिवमंदिर वसुमक्का वसुमदी य ॥ ७०३ ॥

ततोपि हंसगर्भं बलाहकं त्रयोदशं शिवकरं ।

श्रीसौधं चमरं शिवमंदिरं वस्तुमक्का वसुमती च ॥ ७०३ ॥

अर्थ—तहां पीछे हंसगर्भ १ बलाहक १ शिवकर १ तेरव्हां हे श्रीसौध १ चमर १ शिवमंदिर १ वसुमक्का १ वसुमती १ ॥ ७०३ ॥

सिद्धत्थं सचुंजय धयमाल सुरिंदकंत गयणादि ।

पंदणमवि वीदादिमसोगो अलगा तदो तिलगा ॥ ७०४ ॥

सिद्धार्थं शत्रुंजयं ध्वजमालं सुरेंद्रकांतं गगनादिः ।

नंदनमपि वीतादिमशोकः अलका ततस्तिलका ॥ ७०४ ॥

अर्थ—सिद्धार्थ १ शत्रुंजय १ ध्वजमाल १ सुरेंद्रकांत १ गगननंदन १ अशोका १ विशोका १ वीतशोका १ अलका १ तहां पीछे तिलका १ ॥ ७०४ ॥

अंबरतिलगं मंदर कुमुदं कुंदं च गयणवल्लभयं ।

तो दिव्यतिलयं भूमीतिलयं गंधव्वणयरमदो ॥ ७०५ ॥

अंबरतिलकं मंदरं कुमुदं कुंदं च गगनवल्लभं ।

ततो दिव्यतिलकं भूमीतिलकं गंधर्वनगरमतः ॥ ७०५ ॥

अर्थ—अंबरतिलक १ मंदर १ कुमुद १ कुंद १ गगनवल्लभ १ तहां पीछे दिव्यतिलक १ भूमितिलक १ गंधर्वनगर १ इहांतें आगै ॥ ७०५ ॥

मुक्ताहारं नेमिसमग्निमहज्जालसिरिणिकेद्वुरं ।

जयवह सिरिवासं मणिवज्रं भद्रस्सपुरं धनंजययं ॥ ७०६ ॥

मुक्ताहारं नैमिषमग्निमहाज्वालं श्रीनिकेतपुरं ।

जयावहं श्रीवासं मणिवज्रं भद्राश्वपुरं धनंजयं ॥ ७०६ ॥

अर्थ—मुक्ताहार १ नैमिष १ अग्निज्वाल १ महाज्वाल १ श्रीनिकेतपुर १ जयावह १ श्रीनिवास १ मणिवज्र १ भद्राश्वपुर १ धनंजय १ ॥ ७०६ ॥

गोखीरफेणमक्खोभं गिरिसिहरं च धरणि धारिणियं ।

दुर्गं दुद्धरणयरं सुदर्शनं तो महेंद्रविजयपुरं ॥ ७०७ ॥

गोक्षीरफेणमक्षोभं गिरिशिखरं च धरणि धारिणिकं ।

दुर्गं दुर्धरनगरं सुदर्शनं ततो महेंद्रविजयपुरं ॥ ७०७ ॥

अर्थ—गोक्षीरफेण १ अक्षोभ १ गिरिशिखर १ धरणिपुर १ धारणीपुर १ दुर्ग १ दुर्धर-नगर १ सुदर्शन १ तहां पीछे महेंद्रपुर १ विजयपुर ॥ ७०७ ॥

णगरी सुगंधिणी वज्जदतरं रयणपुव्वआयरयं ।

रयणपुरं चरिमं ते रयणमया राजधाणीओ ॥ ७०८ ॥

नगरी मुगंधिनी वज्राद्धतरं रत्नपूर्वमाकरं ।

रत्नपुरं चरमं ताः रत्नमया राजधान्यः ॥ ७०८ ॥

अर्थ—मुगंधिनी नगरी १ वज्राद्धतर २ रत्नाकर १ रत्नपुर १ अंतका नगर है । ऐसै साठि नगरी उत्तर श्रेणीविषै हैं । ते ए सर्व नगरी रत्नमई हैं । बहुरि राजानिका जहां वास पाइए ऐसी राजधानी हैं ॥ ७०८ ॥

पायारगोउरट्टलचरियासरवण विराजिया तत्थ ।

विज्जाहरा त्रिविज्जा वसंति ल्ळक्कम्मसंजुत्ता ॥ ७०९ ॥

प्राकारगोपुराट्टालचर्यासरोवननः विराजिता तत्र ।

विद्याधरा त्रिविद्या वसंति पक्कमसंयुक्ताः ॥ ७०९ ॥

अर्थ—कोट दरवाजा मंदिर मार्ग सरोवर वन इनकरि ते नगरी विराजित हैं । तहां तिन नगरीनिविषै विद्याधर वसै हैं । ते विद्याधर साधित कुल जातिविद्यानि करि त्रिविद्य हैं । जाकौं आप साधिए सो साधित विद्या १ बहुरि पितृपक्ष कुलक्रमतैं चली आई सो कुलविद्या १ बहुरि मातृपक्ष जातिविषै चली आई सो जाति विद्या १ ऐसी तीन विद्यानि करि संयुक्त हैं । बहुरि इज्या वार्त्ता दत्ति स्वाध्याय संयम तप इन पट कर्मनि करि संयुक्त हैं । तहां पूज्यका पूजना सो इज्या, असि मणि आदि जीवनैका उपायरूप व्यापार सो वार्त्ता १ दान दैनां सो दत्ति १ पठन पाठन करनां सो स्वाध्याय १ अविरति त्याग करनां सो संयम १ तपश्चरण करना सो तप जाननां ॥ ७०९ ॥

आगैं विजयार्द्र कर किया पट खंडविषै म्लेच्छखंडविषै तिष्ठता जो वृषभाचल ताका स्वरूपकौ निरूपै हैं;—

सत्तरिसयवसहगिरी मज्झगयमिलेच्छखंडबहुमज्झे ।

कणयमणिकंचणुदयति भरिया गयचक्किणामेहिं ॥ ७१० ॥

सप्ततिशतं वृषभगिरयः मध्यगतम्लेच्छखंडबहुमध्ये ।

कनकमणिकांचनोदयत्रिकं भृता गतचक्रिनामभिः ॥ ७१० ॥

अर्थ—कुलाचल विजयार्द्र दोय नदीनिकै वीचि मध्यका जो म्लेच्छ खंड तीहका बहुत मध्य प्रदेशविषै वृषभाचल है सो एक एक देशविषै एक एक है । सो पांचौ मेरुसंबंधी विदेह देश अर भरत ऐरावतविषै एकसौ सत्तरि वृषभाचल हैं । ते सुवर्णवर्ण हैं मणिमई हैं । कांचन पर्वत समान उदयादि तीन तिनके हैं । सो उचाई सांयोजन, नीचै भूव्यास सां योजन, उपरि मुख व्यास पचास योजन जाननां । बहुरि अतीत कालविषै भए चक्रवर्ती तिनके नामनि करि भरया है । जो चक्रवर्ती होइ सो तिस पर्वतविषै अपनां नाम अक्षर लिखै है ॥ ७१० ॥

आगैं तैसैही आर्यखंडकै मध्य तिष्ठै है जो राजधानी नगरी तीहविषै व्यास आयाम कहै हैं;—

सत्तरिसयणयराणि य उवजलधिगअज्जखंडमज्झस्सि ।

चक्कीण णवय बारस वासायामेण होंति कमे ॥ ७११ ॥

सप्ततिशतनगराणि च उपजलधिगार्यखंडमध्ये ।

चक्रिणां नव द्वादश व्यासायामाभ्यां भवति क्रमेण ॥ ७११ ॥

अर्थ—उप समुद्र कहिए खाड़ी समुद्र ताकौं प्राप्त जो आर्यखंड तीहकें मध्य व्यास जो चौड़ाई अर आयम जो लंबाई तिनकरि क्रमै नव बारह योजन प्रमाण पंच मेरुसंबंधी विदेह देश अर भरत ऐरावतनिविपै एकसौं सत्तरि चक्रवर्तीनिके व्यास योग्य मुख्य नगर हैं ॥ ७११ ॥

आगैं तिन नगरनिके नाम गाथा वा श्लोक च्यारि करि कहैं हैं;—

खेमा खेमपुरी चैव रिहापुरी तहा ।

खग्गा य मंजुसा चैव ओसही पुंडरीकिणी ॥ ७१२ ॥

क्षेमा क्षेमपुरी चैव अरिष्टा अरिष्टपुरी तथा ।

खङ्गा च मजूपां चैव औपथी पुंडरिकिणी ॥ ७१२ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त कच्छादि विदेह देशनिविपै मुख्य राजधानी नगरीनिके क्रमै नाम कहिए हैं ।
क्षेमा १ क्षेमपुरी १ अरिष्टा १ अरिष्टपुरी १ खङ्गा १ मंजूपा १ औपथी १ पुंडरीकिणी १ ॥ ७१२ ॥

सुसीमा कुंडला चैवापराजिद प्रभंकरा ।

अंका पडमावदी चैव सुभा रयणसंचया ॥ ७१३ ॥

सुसीमा कुंडला चैव अपराजिता प्रभंकरा ।

अंका पद्मावती चैव शुभा रत्नसंचया ॥ ७१३ ॥

अर्थ—सुसीमा १ कुंडला १ अपराजिता १ प्रभंकरा १ अंका १ पद्मावती १ शुभा १ रत्नसंचया १ ॥ ७१३ ॥

अस्सपुरी सीहपुरी महापुरी तह य होदि विजयपुरी ।

अरया विरया चैव असोगया वीदसोगा य ॥ ७१४ ॥

अश्वपुरी सिंहपुरी महापुरी तथा च भवति विजयपुरी ।

अरजा विरजा चैव अशोका वीतशोका च ॥ ७१४ ॥

अर्थ—अश्वपुरी १ सिंहपुरी १ महापुरी १ तैसैं ही विजयपुरी १ अरजा १ विरजा १ अशोका १ वीतशोका १ ॥ ७१४ ॥

विजया च वड्जयती जयंत अवराजिदा य बोधन्वा ।

चक्रपुरी खग्गपुरी होदि अयोज्झा अवज्झा य ॥ ७१५ ॥

विजया च वैजयंती जयंता अपराजिता च बोद्धव्या ।

चक्रपुरी खङ्गपुरी भवति अयोध्या अवध्या च ॥ ७१५ ॥

अर्थ—विजया १ वैजयंती १ जयंता १ अपराजिता १ जाननी १ चक्रपुरी १ खङ्गपुरी १ अयोध्या १ अवध्या १ तैसैं ए वत्तीस नाम जाननैं । वहुरि भरत ऐरावत विषै चक्रवर्तीके नगरनिका नाम कोई एक नियमरूप नाहीं तातैं इनि पूर्वोक्त नामनिविपै कोई एक नाम हो है । तातैं जुदा नाम न कहा ॥ ७१५ ॥

आगै तिन नगरनिका विशेष स्वरूप गाथा दाय करि कहै हैं;—

रयणकवाडवरावर सहस्सदलदार हेमपायारा ।

वारसहस्सा वीही तत्थ चउप्पह सहस्सेकं ॥ ७१६ ॥

रत्नकपाटवरावराः सहस्रदलद्वारा हेमप्राकाराः ।

द्वादशसहस्राणि वीथ्यः तत्र चतुष्पथानि सहस्रैकम् ॥ ७१६ ॥

अर्थ—तिन नगरनिके द्वारनिविषै रत्नमई किवाड़ हैं । उक्कष्ट बड़े हजार द्वार हैं । जघन्य छोटे ताके आधे पांचसै द्वार हैं सुवर्ण मई कोट है तीह नगरके अभ्यंतर बारह हजार वीथी गली हैं । तहां एक हजार चतुष्पथ चोपटा मार्ग हैं ॥ ७१६ ॥

णयराण वहिं परिदो वणाणि तिसदं ससद्धि पुरमज्जे ।

जिणभवणा णरवइजणगेहा सोहंति रयणमया ॥ ७१७ ॥

नगराणां बहिः परितः वनानि त्रिशतं सषष्टिः पुरमध्ये ।

जिनभवनानि नरपतिजनगेहानि शोभन्ते रत्नमयानि ॥ ७१७ ॥

अर्थ—नगरनिके बाह्य चौगिरद साठि सहित तीनसै वन कहिए बाग हैं । बहुरि नगरके मध्य जिन मंदिर अर नरपति राजाका मंदिर अर अन्य जननिके मंदिर रत्नमई सोभै हैं । इहां विदेह क्षेत्रविषै मेरु आदिका अवस्थान ऐसै जाननां ॥ ७१७ ॥

अब नाभि गिरिनिका अवस्थान अर तिनका उत्सव आदिक गाथा दायकरि कहै हैं;—

थिरभोगावणिमज्जे णाभिगिरीओ हवंति वीसाणि ।

वट्ठा सहस्सतुंगा मूलुवरिं तत्तिया रुंदा ॥ ७१८ ॥

स्थिरभोगावनिमध्ये नाभिगिरयः भवंति त्रिशतिः ।

वृत्ताः सहस्रतुंगा मूलोपरि तावन्तः रुंदाः ॥ ७१८ ॥

अर्थ—स्थिर भोग भूमि हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवत क्षेत्र तिनके मध्य प्रदेशविषै एक एक नाभि गिरि गोल हैं । बहुरि हजार योजन ऊंचे हैं । बहुरि नीचै वा उपरि तितनेही हजार योजन चौड़े हैं । भाव यहू ऊभा ढोलके आकारि हैं ते पंचमेरु संबंधी वीस नाभि गिरि हैं ॥ ७१८ ॥

सइढावं विजडावं पउमगंधवण्णाम सुक्किला सिहरे ।

सक्कदुगणुचर सादीचारणपउमप्पहास वाणसुरा ॥ ७१९ ॥

श्रद्धावान् विजटावान् पद्मगंधवन्नामानि शुक्लाः शिखरे ।

शक्रद्विकानुचराः स्वातिचारणपद्मप्रभासाः वानसुराः ॥ ७१९ ॥

अर्थ—हैमवतादि विषै श्रद्धावान् १ विजटावान् १ पद्मवान् १ गंधवान् १ ऐसै पंचमेरु संबंधी थ्यारि नाभि गिरिनिके नाम हैं । बहुरि ते नाभिगिरि स्वैतवर्ण हैं । बहुरि तिनि नाभि गिरिनिके शिखरि संधर्म ईशान इन्द्रके अनुचर चाकर स्वाति १ चारण १ पद्म १ प्रभासनामा ध्येतर देव वसै हैं ॥ ७१९ ॥

अब हिमवत् आदि कुलाचल अर विजयाद्वे पर्वत तिनकै उपरि तिष्ठते जे कूट तिनकी संख्यादिक कहैं हैं;—

एकारसदृगणवणव अद्वेकारस हिमादिकूलाणि ।

वेयड्ढाणं णव णव पुब्बगकूलम्हि जिणभवणं ॥ ७२० ॥

एकादशाष्ट नव नव अष्टैकादश हिमादिकूटानि ।

विजयार्धानां नव नव पूर्वकूटे जिनभवनानि ॥ ७२० ॥

अर्थ—ग्यारह ११ आठ ८ नव ९ नव ९ आठ ८ ग्यारह ११ प्रमाण क्रमतेँ हिमवत् आदि कुलाचलनि उपरि कूट हैं । बड्डरि विजयार्ध पर्वतनिकै उपरि नव नव कूट हैं । नीचैतैं बहुत चौडे उपरि थोडे चौडे गोल आकार पर्वतनिकै उपरि ए कूट जाननें । तहां पूर्वदिशाविषै प्राम सिद्धायतन नामा कूट तिन उपरि जिन मंदिर हैं ॥ ७२० ॥

आगैं कहे कूट तिनके नाम आदिक गाथा दश करि कहैं हैं;—

क्रमसो सिद्धायदणं हिमवं भरहं इला य गंगा य ।

सिरिकूडरोहिदस्सा सिंधु सुरा हेमवदय वेसवणं ॥ ७२१ ॥

क्रमशः सिद्धायतनं हिमवान् भरतं इला च गंगा च ।

श्रीकूटं रोहितास्या सिंधुः सुरा हेमवतकं वैश्रवणं ॥ ७२१ ॥

अर्थ—क्रमकरि तिनके नाम कहिए हैं । सिद्धायतन १ हिमवत १ भरत १ इला १ गंगा १ श्रीकूट १ रोहितास्या १ सिंधु १ सुराकूट १ हेमवतक १ वैश्रवण १ असैं हिमवत् कुलाचल उपरि ग्यारह कूट हैं ॥ ७२१ ॥

पढमे जिणिंदगेहं देवीओ जुवदिणावकूडेसु ।

सेसेसु कूडणामा वेंतरदेवावि णिवसंति ॥ ७२२ ॥

प्रथमे जिनेंद्रगेहं देव्यो युवतीनामकूटेपु ।

शेषेषु कूटनामानः व्यंतरदेवा अपि निवसंति ॥ ७२२ ॥

अर्थ—तहां प्रथम सिद्धायतन कूट उपरि जिनेंद्र मंदिर हे । बड्डरि स्त्रीलिंग रूप नाम धारक जे कूट हैं जैसेँ हिमवत उपरि इला गंगा श्री रोहितास्या सिंधु सुराकूट हैं तिन उपरि व्यंतर देवी बसैं हैं । बड्डरि अवशेष कूटनिके उपरि अपने अपने कूटके नाम धारक व्यंतर देव बसैं हैं ॥ ७२२ ॥

वट्टा सव्वे कूडा रयणमया सगणगस्स तुरियुदया ।

तत्तिय भूवित्थारा तदद्धवदणा हु सव्वत्थ ॥ ७२३ ॥

वृत्ताः सर्वे कूटा रत्नमयाः स्वकनगस्य तुर्योदयाः ।

तावद्भूविस्ताराः तदर्धवदना हि सर्वत्र ॥ ७२३ ॥

अर्थ—ते सर्व कूट वृत्ताः कहिए गोल हैं । बड्डरि रत्नमई हैं । बड्डरि जितनी अपने अपने पर्वतकी उचाई ताकै चौथे भाग प्रमाण ऊंचे हैं । बड्डरि नीचै भूव्यास तितना ही उचाईकै समान

जाननें । तिस भूमिविस्तारतैं आधा उपरि मुख व्यास है । अैसें इन दोय गाथानिकरि कथा विशेष सो सर्वत्र महाहिमवदादिकनिके कूटनिविषै भी जाननां ॥ ७२३ ॥

तो सिद्ध महाहिमवं हेमवदं रोहिदा हिरिकूडं ।

हरिकंता हरिवरिसं वेलुरियं पच्छिमं कूडं ॥ ७२४ ॥

ततः सिद्धं महाहिमवान् हैमवतं रोहिता हीकूटं ।

हरिकांता हरिवर्षं वैडूर्यं पश्चिमं कूटं ॥ ७२४ ॥

अर्थ—तहां पीछें सिद्धकूट १ महा हिमवत् १ हैमवत् १ रोहिता १ हीकूट १ हरिकांता हीरवर्ष १ वैडूर्य अंतका कूट १ अैसें महा हिमवत् उपरि आठ कूट हैं ॥ ७२४ ॥

सिद्धं णिसहं च हरिवरिसं पुव्वविदेह हरिधिदीकूडं ।

सीतोदा णाममदो अवरविदेहं च रुजगंतं ॥ ७२५ ॥

सिद्धं निषधं च हरिवर्षं पूर्वविदेहं हरिधृतिकूटं ।

सीतोदा नाम अतः अपरविदेहं च रुचकांतम् ॥ ७२५ ॥

अर्थ—सिद्धकूट १ निषध १ हरिवर्ष १ पूर्वविदेह १ हरिकूट १ धृतिकूट १ सीतोदा नाम कूट १ यातैं परैं अपर विदेह कूट अंतविषै रुचक कूट अैसें निषध पर्वत उपरि नवकूट हैं ॥ ७२५ ॥

सिद्धं णीलं पुव्वविदेहं सीदा य कित्ति णरकंता ।

अवरविदेहं रम्मगमपदंसणमंतिमं णीले ॥ ७२६ ॥

सिद्धं नीलं पूर्वविदेहं सीता च कीर्तिः नरकांता ।

अपरविदेहं रम्यकं अपदर्शनं आंतिमं नीले ॥ ७२६ ॥

अर्थ—सिद्ध १ नील १ पूर्व विदेह १ सीती १ कीर्ति १ नरकांता १ अपरविदेह १ रम्यक १ अंतका अपदर्शन १ ए नील पर्वत उपरि नवकूट हैं ॥ ७२६ ॥

सिद्धं रुक्मी रम्मग णारी बुद्धी य रूप्पकूलक्खा ।

हैरण्णं कूडमदो मणिकंचणमट्टमं होदि ॥ ७२७ ॥

सिद्धं रुक्मी रम्यकं नारी बुद्धिश्च रूप्यकूलाख्या ।

हैरण्यं कूटमतो मणिकांचनमट्टमं भवति ॥ ७२७ ॥

अर्थ—सिद्ध १ रुक्मी १ रम्यक १ नारी १ बुद्धि १ रूप्यकूला नाम १ हैरण्य कूट १ यातैं मणिकांचन आठवां कूट हो है । ए रुक्मी उपरि आठ कूट हैं ॥ ७२७ ॥

सिद्धं सिहारि य हैरण्णं रसदेवी तदो य रत्तक्खा ।

लच्छी सुवण्ण रत्तवदी गंधवदीय कूडमदो ॥ ७२८ ॥

सिद्धं शिखरी च हैरण्यं रसदेवी ततश्च रक्ताख्या ।

लक्ष्मीः सुवर्णं रक्तवती गंधवती कूटमतः ॥ ७२८ ॥

अर्थ—सिद्धायतन १ शिखरी १ हैरण्य १ रसदेवी १ तहां पीछें रक्तानाम १ लक्ष्मी १ सुवर्ण १ रक्तवती १ गंधवती कूट १ यातैं परैं ॥ ७२८ ॥

एरावदमणिकंचणकूडं सिंहिरिम्हि सव्वसेलाणं ।

मूले सिहरेवि हवे दहेवि वणखंडमेदस्स ॥ ७२९ ॥

एरावतमणिकांचनकूटं शिखरे सर्वशैलानाम् ।

मूले शिखरेपि भवेत् हदेपि वनखंडमेतस्य ॥ ७२९ ॥

अर्थ—एरावत १ मणि कांचन १ कूट १ ए शिखरी पर्वत उपरि ग्यारह कूट हैं । ऐसैं ए कूट कहे इन कूटनिका ऐसा आकार जानना । बहुरि सर्व ही पर्वतनिकै मूलविषै नीचै अर शिखरिविषै ऊपरि अर द्रहनिविषै चौगिरद वन खंड हैं ॥ ७२९ ॥

याका कहा सो कहैं हैं;—

गिरिदीहो जोयणदलवासो वेदी दुकोसतुंगजुदा ।

धनुषणसयवासा णगवणणदिदहपहुदिएसु समा ॥ ७३० ॥

गिरिदैर्ध्यं योजनदलव्यासं वेदी द्विक्रोशतुंगयुता ।

धनुःपंचशतव्यासा नगवननदीहृदप्रभृतिषु समा ॥ ७३० ॥

अर्थ—इस वनखंडका जितनां अपने अपने पर्वतका लंबाईका प्रमाण है तितनां लंबाईका प्रमाण है । बहुरि आध योजन चौड़ाईका प्रमाण है । बहुरि तिस वन खंडकी वेदी सो पांचसै धनुष चौड़ी दोय कोस उंची है । सो ए वेदी पर्वत वन नदी द्रह आदिविषै उंचाई चौड़ाईका प्रमाण करि समान है । जैसे वागकै चौगिरद विनां कांगुरां भीति हो है ताका नाम वेदी जाननां ॥ ७३० ॥

अब पर्वतादिकनिविषै सर्वत्र वेदिकानिकी संख्या कहैं हैं;—

तिसदेकारससेले णउदीकुंडे दहाण छवीसे ।

तावदिया मणिवेदी णदीसु सगमाणदो दुगुणा ॥ ७३१ ॥

त्रिशतैकादशशैलेषु नवतिकुंडेषु हृदानां षड्विंशतौ ।

तावंत्यः मणिवेद्यः नदीषु स्वकमानतः द्विगुणाः ॥ ७३१ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपविषै तीनसै ग्यारह पर्वत हैं तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं । बहुरि निवै कुंड हैं तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं । बहुरि छवीस द्रह हैं । तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं । बहुरि जे नदी हैं तहां दोऊ पार्श्वनिविषै वेदी पाईए है । तातैं अपने नदीनिका प्रमाणतैं दूणी मणिमई वेदी हैं । यातै इस कहे अर्थको विशेष वर्णें हैं । जंबूद्वीपविषै एक तौ मेरु १ छह कुलाचल ६ च्यारि यमक पर्वत ४ दोयसै कांचनगिरि २०० आठ दिग्गज पर्वत हैं ८ सोलह वक्षार हैं १६ च्यारि गजदंत हैं ४ चौतीस विजयार्द्ध हैं ३४ चौतीस वृषभाचल हैं ४ च्यारि नाभि गिरि हैं ४ इनको मिलए तीनसै ग्यारह पर्वतनिकी संख्या हो है । बहुरि गंगादि महानदी जहां कुलाचलतैं पड़ैं हैं ते कुंड चौदह १४ विभंगानदी जिनतैं उपजै हैं ते कुंड बारह १२ गंगा सिंधु समान विदेह देशनिविषै दोय दोय नदी जिनतैं उपजै हैं ते कुंड चौसठि ए मिलैं निवै कुंड हो हैं । बहुरि कुलाचलनिकै उपरि द्रह छह ६ सीतानदीविषै द्रह दश १० सीतांदा नदीविषै द्रह दश १० ए सर्व मिलें छवीस द्रह हो हैं । बहुरि गंगा सिंधु रक्ता रक्तोदा इन एक एककै परिवार नदी चौदह हजार

हैं। सो अपना गुणकार नदीनिका प्रमाण च्यारि करि गुणें छप्पन हजार भई। रोहित रोहितास्या सुवर्णकूला इन एक एककै परिवार नदी अठाईस हजार हैं सो अपना गुणकार च्यारिकरि गुणें एक लाख बारह हजार हो है। हरित हरिकांता नारी नरकांता इन एक एककै परिवार नदी छप्पन हजार हैं। सो अपना गुणकार च्यारि करि गुणें दोय लाख चौईस हजार हो है। देव कुरु उत्तर कुरुविषै तिष्ठती सीता सीतोदा इन एक एक कै परिवार नदी चौरासी हजार हैं। सो अपना गुणकार प्रमाण दोयकरि गुणें एक लाख अडसठि हजार हो है। बहुरि बारह विभंगा नदी इन एक एककै परिवार नदी अठाईस हजार हैं सो अपना गुणकार बारह करि गुणें तीन लाख छत्तीस हजार हो है। बहुरि गंगा सिंधु वा रक्ता रक्तोदा नाम धारक विदेह देशनिविषै तिष्ठती चौसठि नदी तिन एक एकके परिवार नदी चौदह हजार हैं सो अपना गुणकार चौंसठि करि गुणें आठ लाख छिनवै हजार हो है। इन सर्व अंकनिकों मिलाएं सतरह लाख वाणवै हजार परिवार नदी हो हैं। बहुरि गुणकाररूप अंकनिकों जोड़ें मुख्य नदी निवै हो हैं। सर्व मिलाएं जंबूद्वीपविषै सतरह लाख वाणवै हजार निवै नदी हो हैं। इनके दोऊ पाश्वनिविषै वेदी है। ताँतै दूणा किए पैतीस लाख चौरासी हजार एकसौ असी नदीनिकै मणिमई वेदी जाननी ॥ ७३१ ॥

आगैं भरत ऐरावत विषै तिष्ठते विजयार्द्ध तिनके कूटनिकों अर तहां तिष्ठते देवनिकों गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

सिद्धं दक्खिणअद्धादिमभरहं खंडयप्पवादमदो ।

तो पुण्णभद्द वेयड्ढकुमारं माणिभद्दखं ॥ ७३२ ॥

सिद्धं दक्षिणार्धादिमभरतं खंडप्रपातमतः ।

ततः पूर्णभद्रं विजयार्धकुमारं माणिभद्राख्यं ॥ ७३२ ॥

अर्थ—सिद्धकूट १ दक्षिणार्द्धभरतकूट १ खंडप्रपात १ पूर्णभद्र १ विजयार्द्ध कुमार १ माणिभद्रनामा कूट १ ॥ ७३२ ॥

तामिस्सगुहगमुत्तरभारहकूडं च चरिमं वेसवणं ।

सिद्धुत्तरद्धतामिस्सादिमगुहगं च माणिभद्दमदो ॥ ७३३ ॥

तामिश्रगुहमुत्तरभरतकूटं च चरमं वैश्रवणं ।

सिद्धोत्तरार्धतामिश्रादिमगुहं च माणिभद्रमतः ॥ ७३३ ॥

अर्थ—तामिश्रगुहकूट १ उत्तर भरतकूट १ अंतका वैश्रवणकूट १ ए भरतसंबंधी विजयार्द्ध ऊपरि नवकूट हैं। यातैं परैं ऐरावतसंबंधी विजयार्द्ध उपरि कूट कहिये हैं। सिद्धकूट १ उत्तरार्द्ध ऐरावत कूट १ तामिश्रगुह १ मणिभद्र १ यातैं परैं ॥ ७३३ ॥

तो वेयड्ढकुमारं पुण्णादीभद्द खंडयपवादं ।

दक्खिणरेवतअद्धं वेसवणं पुण्वदो दुवेयड्ढे ॥ ७३४ ॥

ततो विजयार्धकुमारं पूर्णादिभद्रं खंडप्रपातं ।

दक्षिणैरावतार्धं वैश्रवणं पूर्वतः द्विविजयार्धे ॥ ७३४ ॥

अर्थ—तहां पीछै विजयार्द्धकुमार कूट १ पूर्णभद्र १ खंडप्रपात १ दक्षिणैरावतार्द्ध १ वैश्रवण १ ए नव कूट हैं । ए अठारह कूट भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्धनिकै उपरि पूर्व दिशातै लगाय क्रमतै हैं ॥ ७३४ ॥

कंचनमयाणि खंडप्पवादए णट्टमाल तामिस्से ।

कदमालो छकडे वसंति सगणामवाणसुरा ॥ ७३५ ॥

कंचनमयानि खंडप्रपाते नृत्यमालः तामिश्रे ।

कृतमालः षट्कूटेषु वसंति स्वकनामवानसुराः ॥ ७३५ ॥

अर्थ—ते सर्वकूट सुवर्ण मय हैं । तहां खंड प्रपात नामा कूट उपरि नृत्य माल नामा व्यंतर देव बसै है । बहुरि तामिश्र कूट उपरि कृतमाल नामा व्यंतर देव बसै हैं । बहुरि अन्य छह कूटनिकै उपरि अपने अपने कूट हीके नाम धारक व्यंतर देव बसै हैं ॥ ७३६ ॥

आगै कहे विजयार्द्ध तिनके सिद्ध कूट उपरि जिन मंदिर हैं तिनका उत्सेधादिक तीन गाथाकरि कहै हैं;—

कोसायामं तद्वलविन्थारं तुरियहीणकोसुदयं ।

जिनगेहं कूडुवरिं पुव्वमुहं संठियं रम्मं ॥ ७३६ ॥

क्रोशायामं तद्वलविस्तारं तुरीयहीनक्रोशोदयं ।

जिनगेहं कूटोपरि पूर्वमुखं संस्थितं रम्यं ॥ ७३६ ॥

अर्थ—सिद्ध कूटकै उपरि एक कोश लंबा ताका आधा चौड़ा चौथाई घाटि ऊंचा पूर्व दिशा सनमुख रमणीक जिनमंदिर तिष्ठै हैं । भावार्थ—विजयार्द्धनिके सिद्धकूट उपरि जो चैत्यालय हैं सो दोय हजार धनुष लंबा हजार धनुष चौड़ा पंद्रहसै धनुष ऊंचा जाननां ॥ ७३६ ॥

आगै गजदन्त है नाम जिनका अैसे च्यारि वक्षार अर और सोलह वक्षार तिनके कूटनिकी संख्या अर तिन कूटनके नामादिक गाथा आठ करि कहै हैं;—

णव सत्त य णव सत्त य ईसाणदिसा दुदंतसेलाणं ।

वक्खाराणं चउचउकूडं तण्णाममणुकमसो ॥ ७३७ ॥

नव सत्त च नव सत्त च ईशानदिशः द्विद्वंतशैलानां ।

वक्खाराणां चत्वारि चत्वारि कूटानि तन्नामानि अनुक्रमशः ॥ ७३७ ॥

अर्थ—ईशान दिशातै लगाय च्यारि गजदंत पर्वतनिके क्रमकरि नव सात नव सात कूटनिकी संख्या है । बहुरि अन्य सोलह वक्षार तिनके च्यारि च्यारि कूट हैं तिन कूटनिके नाम अनुक्रम करि कहै हैं ॥ ७३७ ॥

सिद्धं मल्लवमुत्तरकउरव कच्छं च सागरं रजदं ।

पुण्णादिभद्द सीदा हरिसहकूडं हवे णवमं ॥ ७३८ ॥

सिद्धं मात्थवान उत्तरकौरवं कच्छं च सागरं रजतं ।

पूर्णादिभद्रं सीता हरिसहकूटं भवेत् नवमं ॥ ७३८ ॥

अर्थ—सिद्ध कूट १ माल्यवत १ उत्तर कौरव १ कछ १ सागर १ रजत १ पूर्णभद्र १ सीता १ हरिसह कट नवमां हो है । ए माल्यवत गजदंत उपरि नव कूट हैं ॥ ७३८ ॥

तो सिद्धं सोमणस कूडं देवकुरु मंगलं विमलं ।

कंचण वसिष्ठमते सिद्धं विज्जुप्पहं ततो ॥ ७३९ ॥

ततः सिद्धं सौमनसं कूटं देवकुरु मंगलं विमलं ।

कांचनं अवशिष्टमते सिद्धं विद्युत्प्रभं ततः ॥ ७३९ ॥

अर्थ—तहां पीछें सिद्धकूट १ सौमनस कूट १ देव कुरु कूट १ मंगल १ विमल १ कांचन १ अंत विषै वशिष्ट कूट जैसे ए सौमनस गजदंत उपरि सातकूट हैं । बहुरि तहां पीछें सिद्ध कूट १ विद्युत्प्रभ ॥ ७३९ ॥

देवकुरु पद्म तवणं सोत्थियकूडं सदज्जलं ततो ।

सीतोदा हरि चरिमं तो सिद्धं गंधमादनयं ॥ ७४० ॥

देवकुरुः पद्मं तपनं स्वस्तिककूटं शतज्वालं ततः ।

सीतोदा हरि चरमं ततः सिद्धं गंधमादनकं ॥ ७४० ॥

अर्थ—देव कुरु १ पद्म १ तपन १ स्वस्तिककूट १ शतज्वालं १ तहां पीछें सीतोदा १ अंतका हरिकूट १ ऐसे ए विद्युत् प्रभ गजदंत उपरि नव कूट हैं । बहुरि तहां पीछें सिद्धकूट १ गंधमादन ॥ ७४० ॥

उत्तरकुरु गंधादीमालिणी तो लोहिदक्ख फलिहंते ।

आणंदं सायरदुग तिया सुभोगा य भोगमालिणिया ॥ ७४१ ॥

उत्तरकुरुः गंधादिमालिनी ततो लोहिताक्षं स्फटिकमते ।

आनंदं सागरद्विके स्त्रियौ सुभोगा च भोगमालिनी ॥ ७४१ ॥

अर्थ—उत्तरकुरु १ गंध मालिनी १ तहां पीछें लोहितनामा कूट १ स्फटिक १ अंत विषै आनंदकूट १ ए गंधमादन गजदंत उपरि सात कूट हैं । ए कहे गजदंत संबंधीकूट तिनविषै सागर अर रजत नामा कूटनि विषै सुभोगा अर भोगमालिनी नामा व्यंतर देवी वसै हैं ॥ ७४१ ॥

विमलदुगे वच्छादीमित्त सुमित्ता य वारिसेण बला ।

तवणदुगे भोगंकर भोगवती फलिहलोहिदे देवी ॥ ७४२ ॥

विमलद्विके वत्सादिमित्रा सुमित्रा च वारिषेणा बला ।

तपनद्विके भोगंकरा भोगवती स्फटिकलोहितयोः देव्यौ ॥ ७४२ ॥

अर्थ—विमल अर कांचन कूटनिविषै वत्सामित्रा अर सुमित्रा नामा व्यंतर देवी वसै हैं । बहुरि तपन अर स्वस्तिक नाम कूटनि विषै वारिषेणा अर अबला नामा व्यंतर देवी वसै हैं । बहुरि स्फटिक अर लोहित कूटनिके उपरि भोगंकरा भोगवती नामा व्यंतर देवी वसै हैं ॥ ७४२ ॥

सिद्धं वक्खारक्खं हेहुवरिमदेसणामकूडदुगं ।

दुगणव पण सोलं दुगकला य वक्खारदीहत्तं ॥ ७४३ ॥

सिद्धं वक्षारारख्यं अधस्तनोपरिमदेशनामकूटद्वयं ।

द्विनव पांच षोडश द्विककला च वक्षारदीर्घत्वम् ॥ ७४३ ॥

अर्थ—यातैं उपरि सोलह वक्षार गिरिनि उपरि च्यारि च्यारि कूट हैं । तहां एक तौ सिद्ध कूट है । बहुरि एक जो जो अपनैं अपनैं वक्षारका नाम तीह नामका धारक कूट है । बहुरि दोय जो जो अपनैं अपनैं वक्षारकै पूर्व पश्चिम पार्श्वविषै दोय विदेह देशनिका जे नाम तिन नामनिके धारक कूट हैं । ऐसैं च्यारि च्यारि कूट जाननैं । जैसैं चित्रकूट वक्षार उपरि सिद्धायतन १ चित्रकूट १ कला १ सुकला ए च्यारि कूट हैं । ऐसैं ही अन्यत्र जाननैं । बहुरि वक्षार पर्वतनिकी लंबाई दोय नव पांच सोलह ताके सोलह हजार पांचसै वाणवै योजन अर एकका उगणीसवां भाग विषै दोय कला इतने प्रमाण जाननीं । यहू कैसैं ? तेतीस हजार छसैं चौरासी योजन च्यारि कला विदेहका विष्कंभ है । तामैं सीता सीतोदानदीका विवक्षित व्यास पांचसै योजन ५०० घटाइ अवशेष ३३१८४४ ÷ १९ को आधा किए १६५९२।२ ÷ १९ वक्षार गिरिनिकी लंबाईका प्रमाण आवै है ॥ ७४३ ॥

कुलगिरिसमीपकूटे दिक्कणाओ वसंति सेसेमु ।

वाणा कूटप्रमाहिद नगदीहो कूडअंतरयं ॥ ७४४ ॥

कुलगिरिसमीपकूटे दिक्कन्याः वसंति शेषेषु ।

वानाः कूटप्रमाहितं नगदैर्घ्यं कूटांतरं ॥ ७४४ ॥

अर्थ—कुलगिरि कहिए कुलाचल तिनकै समीप जे वक्षारक लिए गजदंत वा वक्षार पर्वत तिनके ऊपरि जो कूट हैं तहां दिक्कुमारी वसैं हैं । अवशेष दोय गजदंतनिके सात सात कूट दोय गजदंतनिके पांच पांच कूट वक्षार गिरिनिके दोय दोय कूट तिन उपरि व्यंतर देव वसैं हैं । सिद्धकूट उपरि जिन मंदिर है ही । बहुरि अपनां अपनां कूटके प्रमाणका भाग अपनां अपनां पर्वतकी लंबाईका प्रमाणको दीएं जो जो प्रमाण आवै तितनां तितनां कूट कूटनिकै बीचि अंतराल है । तहां दोय गजदंतनिकै नव नवकूट दोय गजदंतनिके सात सात कूट वक्षार गिरिनिकै च्यारि च्यारि कूट जाननैं । बहुरि गज दंतनिकी लंबाई तीस हजार दोयसै नव योजन छह कला है । वक्षार गिरिनिकी लंबाई सोलह हजार पांचसै वाणवै योजन दोय कला है । तहां नव कूटनिका अंतरालकै तीस हजार दोयसै नव योजन छह कला प्रमाण गजदंत क्षेत्र होय तौ एक कूटका अंतरालका कितनां क्षेत्र होय । ऐसैं त्रैराशिक किए तीन हजार तीनसै छप्पन योजन पाए अर अवशेष पांच योजनका नवां भाग अर छहकलाका नवां भागको समझेद करि मिलाएं ९५ ÷ १७१६ ÷ १७१ एकसौ एकका एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण एक कूटका अंतराल होइ यहू ही नव कूटनिकै बीचि अंतराल जाननां । बहुरि ऐसैंही सात कूटनिका अंतरालका त्रैराशिक विधान जाननां । इहां प्रमाण राशि सात सात फल राशि गजदंत क्षेत्र ३०२०९।६ ÷ १९ इछा राशि एक १ लब्धिराशि च्यारि हजार तीनसै पंद्रह योजन अर वियासीका एकसौ तेतीसवां भाग प्रमाण सात कूटनिकै बीचि बीचि अंतराल जाननां । बहुरि च्यारि कूटनिका अंतरालका सालह हजार पांचसै वाणवै योजन दोय कला प्रमाण वक्षार

गिरिका क्षेत्र हाइ तौ एक कूटके अंतरालका केता क्षेत्र होइ असै त्रैराशिक करि अंश अंशिकौ भाग देइ मिलाए च्यारि हजार एकसौ अठतालीस योजन अर एकका अठतालीसवां भाग प्रमाण च्यारि कूटनिके वाचि अंतराल हो है ॥ ७४४ ॥

आगै वक्षारनिकी उचाई तहां तिष्ठते अकृत्रिम चैत्यालयनिका स्थान ताहि निर्देश करै है;—

वक्षारसयाणुदओ कुलगिरिपासाम्हि चउसयाणुड्ढा ।

णइमेरुस्स य पासे पंचसया तत्थ जिणगेहा ॥ ७४५ ॥

वक्षारशतानामुदयः कुलगिरिपार्श्वे चतुःशतं वृद्धया ।

नदीमेरोश्च पार्श्वे पंचशतानि तत्र जिणगेहाः ॥ ७४५ ॥

अर्थ—पांचमेरुसंबंधी गजदंतसहित वक्षारगिरि एकसौ है । तिनकी उचाई कुलाचलनिके निकटि तौ च्यारिसै योजन प्रमाण है । बहुरि तातैं परैं अनुक्रमकरि वधते वधते विदेहविषै प्राप्त जे वक्षारगिरि तेतौ सीता वा सीतोदा नदीके निकटि अर गजदंत मेरु गिरिकै निकटि पांचसै योजन ऊंचे हैं । तहां पांचसै योजन उचाई जहां पाईए तहां सिद्धकूट जाननां । तीह उपरि जिन मंदिर हैं ॥ ७४५ ॥

आगै नव आदि कूटनिकी उचाई ल्यावनैकौं करणसूत्र कहैं हैं;—

गिरितुरियं पढमंतिमकूडुदओ उभयसेसमवहरिदं ।

वेगपदेण चयो सो इष्टगुणो मुहजुदो इष्टं ॥ ७४६ ॥

गिरितुरीयं प्रथमांतिमकूटोदयः उभयशेषमपहतं ।

व्येकपदेन चयः स इष्टगुणः मुखयुतः इष्टः ॥ ७४६ ॥

अर्थ—वक्षार गिरिनिकी उचाईका चौथा भाग प्रमाण तौ तहां उपरि तिष्ठता प्रथम अर अंतकूटकी उचाईका प्रमाण जाननां । बहुरि इनविषै प्रथम कूटकी उचाईका प्रमाण अंतकूटकी उचाईका प्रमाणमैसौ घटाए जो अबशेष रहे ताकौं प्रथम हानिवृद्धिका अभाव है । तातैं एक घाटि अपनां अपनां कूट प्रमाण गच्छका भाग दिए हानिचयका प्रमाण आवै है । सो हानिचय एक घाटि अपनां इष्ट जेथवां कूट होइ तीह प्रमाण गछकरि गुण्या हुवा अर प्रथम कूटकी उचाईका प्रमाण रूप जो मुख तीह करि संयुक्त किया हुवा द्वितीयादि इष्ट कूटकी उचाईका प्रमाण आवै है । तहां वक्षार गिरिनिकी उचाई आदि अंतविषै च्यारिसै पांचसै योजन तिनका चौथा भाग प्रथम कूटकी उचाई सौ योजन अंतकूटकी उचाई एकसौ पच्चीस योजन इन दोऊनका अबशेष प्रहैं पच्चीस योजन याकौं एक घाटि गछ दोय गजदंतनिविषै आठ दोय गजदंतनिविषै छह वक्षार गिरिनिविषै तीन ताका भाग दिए जो जो प्रमाण आवै सो सो दोय गजदंतनिविषै तीन योजन एकका आठवां भाग दोय गजदंतनिविषै च्यारि योजन एकका छठा भाग वक्षारनिविषै आठ योजन एकका तीसरा भाग प्रमाण हानिचय हो है । याकौं एक घाटि गछकरि गुणें मुख युक्त किए द्वितीयादि कूटनिकी उचाईका प्रमाण आवै है । तहां नवकूट वाला गजदंतनिविषै जेथवां दूसरा तीसरा आदि कूटविषै विवक्षित होइ तीह प्रमाण गछमै सौ एक घटाइ अबशेष एक दो आदि रहे तीह करि हानि

चयकों गुणै द्वितियादि कूटविषै जो जो प्रमाण होइ ३।१÷८६।१÷४।९।३÷८।१२।१÷२।१५
५÷८।१८।३÷४।२।१७÷८।२५ ताकों मुख जो आदि कूटकी उचाई सौ योजन तीह करि जोडै द्विती-
यादि कूटनिकी उचाईका प्रमाण आवै है १०३।१÷८।१०६।१÷४।१०९।३÷८।११२।१÷२।
११५।५÷८।११८।३÷४।१२।१७÷८।१२५। अैसेही सात कूट च्यारि कूटनिकी उचाईका
प्रमाण ल्यावना ॥ ७४६ ॥

अब भरत आदि क्षेत्रनिका आश्रयकरि परिवार रूप नदीनिका प्रमाण गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

भरहइरावदसरिदा विदेहजुगले च चौदससहस्सा ।

णइपरिवारा तत्तो दुगुणा हरिरम्मगखिदित्ति ॥ ७४७ ॥

भरतैरावतसरितः विदेहजुगले च चतुर्दशसहस्राणि ।

नदीपरिवाराः ततः द्विगुणा हरिरम्यकक्षेत्रांतं ॥ ७४७ ॥

अर्थ—भरत ऐरावतविषै च्यारि नदी अर पूर्व पश्चिम विदेह युगलविषै गंगादि चौसठि नदी
तिन एक एक नदीकी चौदह हजार परिवार नदी हैं । तातें परै भरततें हरिक्षेत्रपर्यंत ऐरावततें
रम्यकपर्यंत दृणा दृणा अनुक्रम जाननां । **भावार्थ**—हैमवत हैरण्यवत संबंधी च्यारि नदीनिकै
एक एककै अठाईस हजार परिवार नदी हैं । अर हरि रम्यक क्षेत्रसंबंधी च्यारि नदीनिकै एक एककै
छप्पन हजार परिवार नदी हैं ॥ ७४७ ॥

वादालसहस्सं पुह कुरुदुणदी दुगदुपासजादणदी ।

चौदसलक्खंडसदरी विदेहदुगसव्वणइसंखा ॥ ७४८ ॥

द्राचत्वारिंशसहस्राणि पृथक् कुरुद्वयनद्यः द्विकद्विपार्श्वजातनद्यः ।

चतुर्दशलक्षाष्टसप्ततिः विदेहद्विकसर्वनदीसंख्या ॥ ७४८ ॥

अर्थ—देवकुरु उत्तर कुरुविषै नदीनिका दोय पार्श्वनितै उपजी प्रथक प्रथक वियालीस
हजार नदी हैं । **भावार्थ**—देव कुरुविषै सीतोदा नदीका पूर्व पार्श्वविषै वियालीस हजार पश्चिम
पार्श्वविषै वियालीस हजार परिवार नदी हैं । अैसे देव कुरुविषै निपजी चौरासी हजार नदी हैं ।
बहुरि उत्तर कुरुविषै सीता नदीका पूर्व पार्श्वविषै वियालीस हजार पश्चिम पार्श्वविषै वियालीस
हजार परिवार नदी हैं । अैसे उत्तर कुरुविषै निपजी चौरासी हजार नदी हैं । बहुरि विदेह क्षेत्रविषै
प्राप्त सर्व नदीनिकी संख्या अठहत्तरि अधिक चौदह लाख है । सो कैसे ? विदेहविषै प्राप्त गंगासिधु
समान चौसठि नदी तिनकी प्रत्येक परिवार नदी चौदह हजार हैं । बहुरि विभंगा नदी वारह
तिनकी प्रत्येक परिवार नदी अठाईस हजार । देव कुरु उत्तर कुरुविषै सीता सीतोदाकी प्रत्येक
परिवार नदी चौरासी हजार इन परिवार नदीनिका प्रमाणकों मूल नदीनिका प्रमाणरूप अपनां
अपनां गुणकार गुणै तहां मूलनदी अठहत्तरि मिलाएं सर्व मिली हुई विदेहविषै चौदह लाख
अठहत्तरि नदी हो हैं ॥ ७४८ ॥

लक्खतियं वाणउदीसहस्स वारं च सव्वणइसंखा ।

भरहेरावदपहुदी हरिरम्मगखेत्तओत्ति णादच्चा ॥ ७४९ ॥

लक्षत्रयं द्वावतिसहस्रं द्वादश च सर्वनदीसंख्या ।

भरतैरावतप्रभृति हरिरम्यकक्षेत्रांतं ज्ञातव्या ॥ ७४९ ॥

अर्थ—तीन लाख वाणवै हजार बारह सर्व नदीनिकी संख्या भरत ऐरावत आदि हरि रम्यकपर्यंत जाननी । सो कैसें ? भरतविषै गंगासिंधुकी प्रत्येक परिवार नदी चौदह हजार हैं । हैमवत-विषै रोहितास्याकी प्रत्येक परिवार नदी अठाईस हजार, हरि क्षेत्रविषै हरित हरिकांताकी प्रत्येक परिवार नदी छप्पन हजार । अैसेंही ऐरावतविषै रक्ता रक्तोदाकी प्रत्येक परिवार नदी चौदह हजार हैरण्यवतविषै सुवर्ण कूला रूष्यकूलाकी प्रत्येक परिवार नदी अठाईस हजार, रम्यक क्षेत्रविषै नारी नरकांताकी प्रत्येक परिवार नदी छप्पन हजार । इन परिवार नदीनिका प्रमाणकों अपनां अपनां मुख्य नदीका प्रमाणरूप गुणकार करि गुणें बारह मुख्य नदी मिलाएं तीन लाख वाणवै हजार बारह नदी हो हैं ॥ ७४९ ॥

सत्तरसं वाणउदी णभणवसुण्णं णईण परिमाणं ।

गंगासिंधुमुहाणं जंबूद्वीविप्पभूदाणं ॥ ७५० ॥

सप्तदश द्वावतिसहस्रं नदीनां परिमाणं ।

गंगासिंधुमुखानां जंबूद्वीपप्रभूतानाम् ॥ ७५० ॥

अर्थ—सतरह वाणवै विदी नव विदी इन अंकनिकरि भए सतरह लाख वाणवै हजारनि-जंबूद्वीपविषै उत्पन्न गंगासिंधु प्रमुख सर्व नदीनिका प्रमाण है । सो यह प्रमाण विदेह नदी अर अन्य क्षेत्रनदीनिका पूर्वे दाय गायानि करि जो प्रमाण कह्या ताको मिलाएं संतैं हो है ॥ ७५० ॥

आगैं जंबूद्वीपविषै तिष्ठते मेरु आदि तिनका पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि व्यास निरूपै हैं;—

गिरिभद्रशालविजयावक्षारविभंगदेवरण्णाणं ।

पुव्वावरेण वासा एवं जंबूविदेहम्हि ॥ ७५१ ॥

गिरिभद्रशालविजयवक्षारविभंगदेवारण्यानाम् ।

पूर्वापरेण व्यासा एवं जंबूविदेहे ॥ ७५१ ॥

अर्थ—मेरु भद्रशाल विदेह देश वक्षारगिरि विभंगा नदी देरारण्य इनका जंबूद्वीपसंबंधी विदेह क्षेत्रविषै पूर्व पश्चिम अपेक्षा व्यास ऐसें आगैं कहिए हैं तीह प्रकार जाननां ॥ ७५१ ॥

गिरिपहुदीणं वासं इट्ठुणं सगुणेहिं गुणिय जुदं ।

अवणिय दीवे सेसं इट्ठुणोवट्टिदे तु तव्वासं ॥ ७५२ ॥

गिरिप्रभृतीनां व्यासं इष्टोनें स्वकगुणैः गुणयित्वा युतं ।

अपर्णाय द्वीपे शेषं इष्टगुणापवर्तिते तु तद्व्यासं ॥ ७५२ ॥

अर्थ—जो व्यास जाननां होइ तिस मेरु आदिक कोईका व्यासको छोड़ि अन्य सर्वगिरि आदिनिका वक्षमाण व्यासको अपनां अपनां गुणकारकरि गुणि सर्वकू मिलाइ जो प्रमाण होइ सो जंबूद्वीपका व्यासमैसी घटाइ अवशेष रहै तिनको जाका व्यास जाननां होइ ताका जो प्रमाण ताका भाग दिएं जाननेको इष्टरूप गिरि आदिकका व्यास प्रमाण आवै है । ताका

उदाहरण—मेरुका व्यास जाननां होइ तो मेरु बिना औरनिका व्यास भद्रसालका बाईस हजार योजन विदेहदेसका वाईसै वारह योजन सात आठवां भाग, वक्षारका पांचसै योजन, विभंगाका एकसौ पच्चीस योजन, देवारण्यका दोय हजार नवसै वाईस योजन । इनको अपनां अपनां प्रमाण पूर्व पश्चिम भद्रसाल दोय विदेह देश एक तटसंबंधी सोलह वक्षार, एक तटसंबंधी आठ विभंगा, एक तटसंबंधी छह देवारण्य एक तटसंबंधी दोय इन प्रमाणरूप गुणकार करि गुणें भद्रसाल-क्षेत्र चवालीस हजार विदेह देश क्षेत्र पैतीस हजार च्यारिसै छह, वक्षारक्षेत्र च्यारि हजार, विभंगाक्षेत्र साढा सातसै, देवारण्य क्षेत्र पांच हजार आठसै चवालीस योजन होइ । इन सबको मिलाए निवै हजार होइ सो जंबूद्वीपका व्यास लाख योजनमैसौं घटाएं दश हजार अवशेष रहे । इनको इष्ट मेरुका प्रमाण एक ताका भाग दिए भी दश हजार ही रहे सोई मेरु गिरिका व्यास जाननां । औसैही औरनिका व्यास जाननां ॥ ७५२ ॥

औसै ल्याया हुवा व्यासका प्रमाणके सिद्ध भए अंक कहै हैं;—

दसबाबीससहस्सा बारसबावीस सत्तअट्टकला ।

कमसो पणसय पणघण बावीसुगुतीसमंककमो ॥ ७५३ ॥

दशद्वाविंशसहस्त्राणि द्वादशद्वाविंशतिः सप्ताष्टकला ।

क्रमशः पंचशतानि पंचघनः द्वाविंशैकोनत्रिंशदंकक्रमः ॥ ७५३ ॥

अर्थ—मेरुका दश हजार योजन बहुरि भद्रसालका बाईस हजार योजन बहुरि विदेह देशका बारह बावीस अंकनि करि दोय हजार दोय सै वारा योजन अर सप्ताष्ट कला कहिए सात आठवां भाग बहुरि वक्षारका पांचसै योजन बहुरि विभंगाका पंचका घन एकसौ पच्चीस योजन बहुरि देवारण्यका वाईस गुणतीस अंकनि करि दोय हजार नवसै वाईस योजन अनुक्रमतै पूर्व पश्चिम करि व्यासका प्रमाण है ॥ ७५३ ॥

अब धातुकी खंड पुष्करार्द्ध विषै तिष्ठते मेरु तिनका अर तिन संबंधी दोय भद्रसालनिका व्यास निरूपै हैं;—

चउणउदिसयं णवसत्तडसत्तिगिलक्खट्टमपणसत्तं ।

पण्णरसं वे लक्खा खुल्ले तं भद्रसालदुगे ॥ ७५४ ॥

चतुर्नवतिशतानि नवसप्ताष्टसप्तैकलक्षमष्टपंचसप्त ।

पंचदशे द्वे लक्षे क्षुल्लके ते भद्रशालद्वये ॥ ७५४ ॥

अर्थ—चौराणवसै योजन क्षुल्लक च्यारि मेरुनिका व्यास है । बहुरि नव सात आठ सात अंकनि करि उत्तर एक लाख ताके एक लाख सात हजार आठसै गुण्यासी योजन धातुकी खंड संबंधी मेरुनिका पूर्व पश्चिम भद्रसालका व्यास है । बहुरि आठ पांच सात पंद्रह अंकनि करि उत्तर दोय लाख ताके दोय लाख पंद्रह हजार सातसै अठावन योजन पुष्करार्द्ध संबंधी मेरुनिकै पूर्व पश्चिम भद्र सालका व्यास है ॥ औसै क्षुल्लक मेरु तिनके दोऊ भद्र साल विषै व्यास जाननां । बहुरि पट्टम वणडसीदंसो दक्खिण उत्तरग भद्रसालवणे इत्यादि पूर्वोक्त गाथा करि धातुकीखंडका पूर्व

पश्चिम भद्रसालका अंक १०७८७९ बहुरि पुष्करार्द्ध संबंधी पूर्व पश्चिम भद्र सालका अंक २१५७
५८ तिनको अठ्यासीका भाग दिए तिनके दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका व्यास हो है। सो धातुकी
खंड विषै बारहसै पचास योजन अर गुण्यासी अठ्यासीवां भाग अर पुष्करार्द्ध विषै दोय हजार
घ्यारिसै इकावन योजन अर पैतीस चवालीसवां भाग प्रमाण दक्षिण उत्तर भद्रसालका व्यास
जाननां ॥ ७५४ ॥

आगै दोय द्वीप संबंधी विदेह देशनिका व्यासकी संख्या कहै हैं;—

तियणभच्छणव तिण्णट्टमं तु चउणउदिसत्तणउदेक्कं ।

जोयण चउत्थभागं दुदीवविजयाण विक्खंभो ॥ ७५५ ॥

त्रिनभःषण्णव त्र्यष्टमं तु चतुण्वतिसप्तनवत्येकं ।

योजनं चतुर्थभागं द्विद्वीपविजयानां विक्खंभः ॥ ७५५ ॥

अर्थ—तीन विन्दी छह नव अंकनि करि नव हजार छसै तीन योजन अर तीन आठवां भाग
प्रमाण धातुकी खंड संबंधी विदेह देशनिका व्यास है। बहुरि चौराणवै सित्याणवै एक अंकनि करि
उगणीस हजार सातसै चौराणवै योजन अर योजनका चौथा भाग प्रमाण पुष्करार्द्ध संबंधी विदेह
देशनिका व्यास है। ऐसै दोय द्वीपके विदेह देशनिका पूर्व पश्चिम अपेक्षा व्यास है ॥ ७५५ ॥

अब तीन द्वीपनिविषै तिष्ठते गजदंतनिका आयाम गाथा दोय करि कहै हैं;—

सरिसायदगजदंता णवणभदुगसुण्णतिण्णि छच्चकला ।

तिघणदुगच्छकपणतिय णवपणकदिणवयच्छप्पणं ॥ ७५६ ॥

सदशायतगजदंता नवनभोट्टिकशून्यत्रीणि षट्कलाः ।

त्रिघनट्टिकपट्पंचत्रीणि नवपंचकृतिनवकषट्पंचाशत् ॥ ७५६ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपविषै तिष्ठते समान लंबाई धरै च्यारि गजदंत तिनका नव विन्दी दोय
विन्दी तीन अंकनि करि तीस हजार दोय सै नव योजन अर एकका उगणीस भागविषै छह कला
लंबाईका प्रमाण है। बहुरि धातुकी खंडविषै जे दोय गजदंत लवण समुद्रकी तरफ हैं तिनकी लंबाईका
थोड़ी है। तातै ते अल्प गजदंत कहिए। बहुरि जे दोय गजदंत कालोदधिकी तरफ हैं तिनकी
लंबाई बहुत है। तातै ते महागजदंत कहिए। तहां तीनका घन दोय छह पांच तीन अंकनि करि तीन
लाख छप्पन हजार दोयसै सत्ताईस योजन अल्प गजदंतनिका आयाम है। बहुरि नव पांचका
वर्ग नव छह पांच इन अंकनि करि पांच लाख गुणहत्तरि हजार दोयसै गुणसठि योजन महागज-
दंतनिका आयाम है ॥ ७५६ ॥

सोलेकट्टिबिसट्टिणि णवेक्कदुगदोणिदुकदिणभदोण्णि ।

देउत्तरकुरुचावं जीवा बाणं च जाणेज्जो ॥ ७५७ ॥

षोडशैकषष्टिद्विप्रष्टयेकं नवैकद्विकद्वयद्विकृतिनभोट्टे ।

देवोत्तरकुरुचारुपं जावां बाणं च ज्ञातव्याः ॥ ७५७ ॥

अर्थ—पुष्कराद्भिविषै कालोद समुद्रकी तरफ दोग गजदंत स्तोक लंबाई धरै हैं । ते अल्प गजदंत कहिए । अर मानुषोत्तरकी तरफ दोग गजदंत बहुत लंबाई धरै हैं ते महागजदंत कहिए । तहां सोलह इकसठि वासठि एक इन अंकनि करि सोलह लाख छत्तीस हजार एकसौ सोलह योजन अल्प गजदंतनिका आयाम है । बहुरि नव दोग दोग दोगका वर्ग विन्दी दोग इन अंकनि करि बीस लाख वियासी हजार दोगसै उगणीस २०८२२१९ योजन महागजदंतनिका आयाम है । इहां प्रसंग पाइ धातुकी खंड पुष्करार्धसंबंधी किछू वर्णन किया है सो तिनकी रचनादिक आगै लिखेंगे तैसे जाननी । बहुरि देव कुरु उत्तर कुरु नामधारक भोगभूमि क्षेत्रकी जीवा चाप वाण आगै कहिए है तिस प्रकार करि जानने । **भावार्थ**—देवकुरु उत्तर कुरुका क्षेत्र धनुषाकार है ऐसे जाननां । तहां धनुषकै जो चिह्न ताकौ जीवा कहिए चिह्न अर धनुषकै बीचि मध्यविषै जेता वाणका क्षेत्र सो वाण कहिए । धनुषका जो पीठ ताकौ चाप कहिए है । सो इहां दोग गजदंतनिकै बीचि जितनां कुलाचलनिकी लंबाईका प्रमाण सो तो जीवा जाननी । अर जीवा अर मेरु गिरि बीचि मध्यविषै जो क्षेत्र सो वाण जाननां । अर दोग गजदंतनिकी लंबाई मिलि चाप हो है । सो इनका विधान कहिए है ॥ ७५७ ॥

आगै चापादिकके ल्यावनेका विधान गाथा नव करि कहै हैं;—

वक्खारवास विरहिय पढमवणे दुगुणिदे जुदे मेरुं ।

जीवा कुरुस्स चावं गजदंतायाममेलिदे होदि ॥ ७५८ ॥

वक्खारव्यासं विरहितं प्रथमवने द्विगुणिते युते मेरौ ।

जीवा कुरोः चापो गजदंतायाममेलिते भवति ॥ ७५८ ॥

अर्थ—वक्खार जो गजदंत ताका व्यास प्रथम भद्रसालवनमैसौ घटाइ दूणां करि मेरु मेरु व्यास जोड़ें कुरु क्षेत्रकी जीवाका प्रमाण हो है । तहां जंबूद्वीप विषै वक्खार व्यास पांचसै योजन भद्रसाल नव वाईस हजार योजनमैसौ घटाइ अवशेष २१५०० दूणा करि ४३००० मेरुका व्यास दश हजार योजन जोड़ें देव कुरु वा उत्तर कुरु क्षेत्रकी जीवाका प्रमाण तरेपन हजार योजन हो है । पूर्व पश्चिम भद्रसालकी वेदीके निकटि गजदंत कुलाचलनिस्यौ जाइ अडे है तातैं दोग गजदंतनिके बीचि इतनीं कुलाचलकी लंबाई जाननी । बहुरि दोग गजदंतनिका आयाम मिलाए कुरु क्षेत्रका चाप हो है । सो जंबूद्वीप विषै तीस हजार दोगसै नव योजन छह कला गजदंतका आयाम है ताकौ दूणा किए देवकुरु वा उत्तर कुरुका चाप साठि हजार च्यारिसै अठारह योजन बारह कला प्रमाण हो है ॥ ७५८ ॥

मेरुगिरिभूमिवासं अवणीय विदेहवस्सवासादो ।

दल्लिदे कुरुविक्खंभो सो चेव कुरुस्स बाणं च ॥ ७५९ ॥

मेरुगिरिमूमिव्यासं अपनीय विदेहवर्षव्यासतः ।

दल्लिते कुरुविक्खंभः स चैवं कुरोः बाणः च ॥ ७५९ ॥

अर्थ—मेरु गिरिका भूम्यास विदेह क्षेत्रका व्यासमै घटाइ आधा किए कुरु क्षेत्रका विक्खंभ हो है । सो जंबूद्वीप विषै एकसौ निवै शलाकानिका एक लाख योजन होइ, तौ विदेह-

की चौसठि शलाकानिका केता क्षेत्र होइ औसै त्रैराशिक करि दश करि अपवर्त्तन किए छह लाख चालीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण विदेह क्षेत्रका व्यास हो है । यामै मेरु गिरिका भूव्यास दशहजार योजन समछेद करि घटाए साढा च्यारि लाखका उगणीसवां भाग होइ याकौ आधा किए दोय लाख पच्चीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका व्यास हो है । कुलाचल अरु मेरुविषै इतनां अंतराल है सोई यहु कुरु क्षेत्रका बाण जाननां ॥ ७५९ ॥

अब याकौ धरि जीवाकी कृति अर चापकी कृति कौ ल्यावै है;—

इसुहीणं विक्रवंभं चउगुणिदिसुणा हदे दु जीवकदी ।

बाणकर्दि छहिं गुणिदे तत्थ जुदे धणुकदी होदि ॥ ७६० ॥

इषुहीनं विष्कंभं चतुर्गुणितेषुणा हते तु जीवाकृतिः ।

बाणकृति पड्भिः गुणिते तत्र युते धनुःकृतिः भवति ॥ ७६० ॥

अर्थ—वाण करि हीन जो वृत्त विष्कंभ ताकौ चौगुणा वाण करि गुणै जीवाकी कृति हो है । बहुरि वाणकी कृतिकौ छह गुणी करि तिस जीवाकी कृति विषै मिलाए धनुषकी कृति हो है । जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करनां होइ अँसा जो वर्गरूप राशि ताका नाम कृति है । सो जब्द्वीप विषै देव कुरु वा उत्तर कुरुका आगै कहिए हैं जो वृत्त विष्कंभका प्रमाण एक कोडि इकईस लाख पैसठि हजार च्यारिसै निवै योजनका एकसौ इकहत्तरिवां भाग $१२१६५४९० \div १७१$ तामै-सौ वाणका जो प्रमाण दोय लाख पच्चीस हजार योजनका उगणीसवां भाग $२२५०० \div १९$ ताकौ भाज्य भाजक नव गुणांकरि समछेद करि $२०२५००० \div १७१$ घटाइ अवशेष एक कोडि एक लाख चालीस हजार च्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग रह्या $१०१४०४९० \div १७१$ ताकौ चौगुणा वाणका प्रमाण नव लाखका उगणीसवां भाग करि गुणिए तहां गुणकारकी पांच विंदी गुण्यकै आगै स्थापिए $१०१४०४९०००००० \div १७१$ । बहुरि गुण्यका भागहार एकसौ इकहत्तरिकौ चौगुणा वाणविषै नवका अंक था तीह सहित अपवर्त्तन किए उगणीस भए । बहुरि चौगुणा वाण गुण्यविषै उगणीसका भागहार था तिसकरि याकौ गुणै तीनसौ इकसठि भए । औसै एक लाख एक हजार च्यारिसै च्यारि कोडि निवै लाखका तीनसै इकसठिवां भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रकी जीवाकी कृति भई । याका वर्गमूल ग्रहण किए दशलाख सात हजारका उगणीसवां भाग भया सो अपनां भागहारका भाग दिए तरेपन हजार योजन प्रमाण देवकुरु वा उत्तर कुरुकी जीवा हो है । बहुरि दोय लाख पच्चीस हजार योजनका उगणीसवां भाग प्रमाण जो वाण $२२५००० \div १८$ ताकी कृति करिए $५०६२५०००००० \div ३६१$ बहुरि ताकौ छह गुणा करि याकौ $३०३७५०००००० \div ३६१$ पूवै कही थी जो जीवाकी कृति $१०१४०४९०००००० \div ३६१$ तामै जोडिए $१३१७७९९०००००० \div ३६१$ तब धनुषकी कृति हो है । याका वर्गमूल ग्रहण करि $११४७९५४ \div १९$ अपनां भागहारका भाग दिए साठि हजार च्यारिसै अठारह योजन अर बारह उगणीसवां भाग $६०४१८।१२ \div १९$ प्रमाण देवकुरु वा उत्तर कुरुका चाप हो है । बहुरि पूवै कही जो वाणकी कृति $५०६२५००००००० \div ३६१$ ताका वर्ग मूल ग्रहणकरि $२२५००० \div १९$ अपनां भाग

हारका भाग दिए ग्यारह हजार आठसैं वियालीस योजन अर दोय उगणीसवां भाग प्रमाण देव कुरु वा उत्तर कुरुका वाण हो है ॥ ७६० ॥

अब याकै अनंतरि कुरु आदि क्षेत्रनिका वृत्त विष्कंभ ल्यावनैकौ करण सूत्र कहै है;—

इसुवर्गं चउगुणिदं जीवावग्गमिह पक्खवित्ताणं ।

चउगुणिदिसुणा भजिदे णियमा वट्टस्स विक्खंभो ॥ ७६१ ॥

इपुवर्गं चतुर्गुणितं जीवावर्गे प्रक्षिप्य ।

चतुर्गुणितेषुणा भक्ते नियमात् वृत्तस्य विष्कंभः ॥ ७६१ ॥

अर्थ—इपु जो वाण ताका जो वर्ग ताकौ चौगुणा करिण बहुरि याकौ जीवा वर्गविषै मिलाइए जो प्रमाण होइ ताकौ चौगुणा वाणका भाग दीजिए जैसें करतैं नियमतैं वृत्तक्षेत्रका विष्कंभका प्रमाण आवै है । सो जेवृद्धीपविषै कुरुक्षेत्रका वाण दोयलाख पचीस हजारका उगणीसवां भागका वर्ग करि $५०६२५०००००० \div ३६१$ याकौ चौगुणा करिए $२०२५०००००००० \div ३६१$ बहुरि इसकौ पूर्वे कही थी जीवाकी कृति $१०१४०४९०००००० \div ३६१$ तामैं मिलाइए तब एक लाख इकईस हजार छसैं चौवन कोडि निवै लाखका तीनसैं इकसठिवां भाग होइ $१२१६५४९०००००० \div ३६१$ बहुरि जो प्रमाण भया ताकौ चौगुणां वाण नव लाखका उगणीसवां भाग $९००००० \div १९$, ताका भाग दीजिए तहां इस भागहारकी पंचविदी अर भाज्यकी पंचविदीका अपवर्तन करिए $१२१६५४९० \div ३६१९$, बहुरि हारस्य हारो गुणकोइ राशे: इस वचनतैं भागहारका भागहार भाज्यका गुणकार होइ सो इहां भागहारका भागहार उगणीस है सो भाज्यके गुणकार भया । बहुरि इहां भागहार तीनसैं इकसठि थे ताकौ भाज्यका गुणकार उगणीस करि अपवर्तन किए उगणीस भए $१२१६५४९० \div १९९$, बहुरि उगणीस अर नव भाग हारके अंकनिकों परस्पर गुणें एक कोडि इकईस लाख पैसठि हजार च्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग भया सो अपनां भागहारका भाग दिए इकहत्तरि हजार एकसौ तियालीस योजन अर सैंतास एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रका वृत्त विष्कंभ हो है । वृत्त विष्कंभका स्वरूप कहा सो कहिए है । गोल क्षेत्रके व्यासकौ वृत्त विष्कंभ जाननां सो इहां कुरु क्षेत्रविषै गोल क्षेत्र तां है नाहीं परंतु जीवादिकका ज्ञान होनैके अर्थे वृत्त विष्कंभ क्षेत्रका प्रमाण कल्पना करि कहा है । सो याका ऐसा अभिप्राय जाननां । इकहत्तरि हजार सौ तियालीस योजन अर सैंतास एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण व्यासकौ धरै जो गोल क्षेत्र होइ तिस विषै जहां तरेपन हजार योजन व्यासका प्रमाणरूप जीवा होइ तहांतैं अंतपर्यंत ग्यारह हजार आठसैं वियालीस योजन अर दोय उगणीसवां भाग प्रमाण वाण हो है । ऐसैही अन्यत्र साधन करनां ॥७६१॥

आगैं कुरु आदि क्षेत्रनिका स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनैकौ करण सूत्र कहै है;—

जीवाहदइसुपादं जीवाइसुजुददलं च पत्तेयं ।

दसकरणिवाणगुणिदे सुहुमिदरफलं च चणुखेत्ते ॥ ७६२ ॥

जीवाहतेपुपादं जीवाइप्युतदलं च प्रत्येकं ।

दशकरणिवाणगुणिते सूक्ष्मेतरफलं च धनुःक्षेत्रे ॥ ७६२ ॥

अर्थ—जीवा करि गुण्या हुवा वाणका चौथा भागको जुदा स्थापिए । बहुरि जीवा अर वाणको जोडि ताका आधाको जुदा स्थापिए । तहां पहलै स्थापन किया ताका विष्कंभ वग इत्यादि सूत्रतै वर्ग करि दश गुणां करि मूल ग्रहण योग्य राशि रूप करिए ताका वर्ग मूल ग्रहण किए धनुपाकार क्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है । बहुरि पीत्रै स्थापन कीया ताको वाण करि गुणें वादर क्षेत्र फल हो है । सो जंबू द्वीपके कुरु क्षेत्रनिविषै दोय लाख पचास हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण वाण है ताका चौथा भाग $५६२५० \div १९$ को जीवा तरेपन हजार करि गुणिए है $२९८१२५०००० \div १९$ बहुरि विष्कंभ वगदह गुण इत्यादि सूत्रतै याका वर्ग करि दश गुणां करि करणि करिए है । $८८८७८५१५६२५०००००००० \div ३६१$ याका वर्ग मूल ग्रहण किए नवसै वियालीस कोडि पिचहत्तरि लाख चार्लिस हजार दोयसै चौहत्तरि योजनका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका सूक्ष्म फल हो है । तार तम्य करि एक योजनके लंबे चौड़े खंड कल्पे इतने हो है । बहुरि जीवा तरेपन हजार योजन ताको उगणीस करि समछेद करि $१००७००० \div १९$ वाणका प्रमाण दोय लाख पचास हजारका उगणीसवां भागमे जोडि $१२३२००० \div १९$ ताको आधाकरि $६१६००० \div १९$ बहुरि याको वाण $२२५००० \div १९$ करि गुणें तरह हजार आठसै साठि कोडिका तीनसै इकसठिवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका स्थूल क्षेत्र फल हो है । स्थूल पने करि एक एक योजन लंबे चौड़े खंड कल्पे इतने हो है ॥ ७६२ ॥

आगे अन्य प्रकार करि वृत्त विष्कंभ अर वाणके ल्यावनेको करण सूत्र कहै हैं;—

दुगुणिसु कदिजुद जीवावगं चउवाणभाजिए वटं ।

जीवा धणुकदिसेसो छन्भत्तो तप्पदं वाणं ॥ ७६३ ॥

द्विगुण्येषु कृतियुतं जीवावर्गं चतुर्वाणभक्ते वृत्तं ।

जीवा धनुःकृतिशेषः षड्भक्तः तत्पदं वाणम् ॥ ७६३ ॥

अर्थ—दुगुण वाणका वर्ग करि जोड्या हुवा जीवाका वर्गको चौगुणा वाणका भाग दिए वृत्त विष्कंभ हो है । बहुरि जीवाकी कृति चापिकी कृतिमैसो घटाइ अवशेषको छहका भाग दिए जो प्रमाण होइ ताका पद कहिए वर्गमूल सो वाण हो है । सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रनि विषै दोय लाख पचास हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण वाणको दूणा करि $४५०००० \div १९$ ताका वर्गकरि $२०२५००००००० \div ३६१$ यामै जीवा तरेपन हजार प्रमाण ताका वर्ग २८०९०००००० सम छेद करि १०१४०४९०००००० जोडिए $१२१६५४९०००००० \div ३६१$ बहुरि याको चौगुणा वाणका प्रमाण $९००००० \div १९$ का पूर्वोक्त अपवर्तन विधान करि भाग दीएं एक कोडि इकईस लाख पैसठि हजार च्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रका वृत्त विष्कंभ हो है । बहुरि पूर्वोक्त जीवाका वर्गको ४ समछेद करि १०१४०४९०००००० धनुषकी कृति $१३१७७९९०००००० \div ३६१$ मैसो घटाइ $३०३७५०००००० \div ३६१$ अवशेषका छहका

भाग दिएं जो प्रमाण $५०६२५०००००० \div ३६१$ होइ ताका वर्ग मूल ग्रहण किए दिय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका वाण हो है ॥ ७६३ ॥

आगैं अन्य प्रकारका करि वाण ल्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

जीवाविक्खंभाणं वर्गविसेसस्स होदि जम्मूलं ।

तं विक्खंभा सोहय सेसद्धामिसुं विजाणाहि ॥ ७६४ ॥

जीवाविक्खंभयोः वर्गविशेषस्य भवति यन्मूलं ।

तत् विक्खंभात् शोधय शेषार्धमिष्टं विजानीहि ॥ ७६४ ॥

अर्थ—जीवाका वर्ग वृत्त विक्खंभका वर्गमैसौ घटाएं अवशेष जो रहै ताका जो वर्गमूल ताका वृत्त विक्खंभका प्रमाणमैसौ घटाएं अवशेष रहै ताका आधा वाणका प्रमाण जानहु । सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रविषै जीवा तरेपन हजार ताका वर्ग २८०९०००००० का वृत्त विक्खंभ एक कोड़ि इक ईस लाख पैसठि हजार च्यारिसै निथैका एक सौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण ताका वर्ग १४७९९९१४६९४०१०० मैसौ जीवाका वर्गका समछेद करि $८२१३७९६९०००००० \div २९२४१$ घटाएं अवशेष जो रहे $६५८६११५७९४०१०० \div २९२४१$ ताका वर्गमूल का जो प्रमाण $८११५४९० \div १७१$ ताका पूर्वोक्त वृत्त विक्खंभका प्रमाण $१२१६५४-९० \div १७१$ मैसौ घटाएं अवशेष जो रहै $४०५००००६ \div १७१$ ताका आधा बीस लाख पचीस हजारका एकसौ इकहत्तरिवां भाग मात्र होइ सो इहां भाग हार एकसौ इकहत्तरिकों नव गुणा उगणीस रहे सो स्थापि पूर्वोक्त अर्द्ध प्रमाणके भाज्यकों २०२५००० नवका भाग दिएं दिय लाख पचीस हजार भाज्य होइ अर अवशेष उगणीस भागहार रहे सो इतनां कुरुक्षेत्रका वाण जाननां ॥ ७६४ ॥

आगैं अन्य प्रकार करि वृत्त विक्खंभ अर वाणके ल्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

दुगुणिसुहिदधणुवग्गो वाणोणो अद्धिदो हवे वासो ।

वासकदिसहिदधणुकदिदलस्स मूलेवि वासमिसुसेसं ॥ ७६५ ॥

द्विगुणेषुहितधनुर्वर्गो वाणोनः अर्धितो भवेत् व्यासः ।

व्यासकृतिसहितधनुःकृतिदलस्य मूलेपि व्यासमिपुशेषं ॥ ७६५ ॥

अर्थ—दूणा वाणका भाग धनुषका वर्गकों दिएं जो प्रमाण होइ तामैं वाणका प्रमाण घटाइ अवशेषको आधा किए वृत्त विक्खंभका प्रमाण हो है । बहुरि वृत्त व्यासका वर्ग करि जोड्या हुवा ऐसा जो धनुषके वर्गका आधा प्रमाणका वर्ग मूल तामैंसौ वृत्त विक्खंभका प्रमाण घटाएं वाणका प्रमाण हो है । सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रविषै वाण दिय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग ताका दूणा करि $४५०००० \div १९$ याका भाग पूर्वोक्त धनुषका वर्गकों $१३१७७९९०००००० \div ३६१$ पूर्वोक्त प्रकार अपवर्तन विधान करि दीएं एक लाख चौवन हजार एकसौ अठाईस अर अवशेष च्यारिसै साठका आठसै पचावनवां भाग होइ सो अवशेषके भाज्य भाणककों पंचकरि अपवर्तन किए वाणवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग होइ सो इनकों समछेद करि मिलाइ $२६३५५९८० \div १७१$ यामैं समछेद विधानकरि वाणका प्रमाण $२०२५००० \div १७१$ घटाएं अवशेष $२४३३०९८० \div १७१$

कों आघाकरि १२१६५४९० ÷ १७१ अपनां भाग हारका भाग दिएं ७११४३३७ ÷ १७१ कुरुक्षेत्रका वृत्त विष्कंभ हो है । बहुरि समछेद करि अपने अंशकरि जोड्या हुवा जो वृत्त विष्कंभका प्रमाण १२१६५४९० ÷ १७१ ताका वर्ग करि १४७९९९१४६९४०१०० ÷ २९२४१ यामें पूर्वोक्त धनुषकी कृति १३१७७९९०००००० ÷ ३६१ ताका अर्द्धप्रमाण ६५८८९९५०००० ÷ ३६१ कों भाज्य भाजककों इक्यासी गुणां करि समछेद करि ५३३७०८५९५००००० ÷ २९२४१ जोडिए २०१३७०००६४४०१०० ÷ २९२४१ याका वर्गमूलका जो प्रमाण १४१९०४९० ÷ १७१ तामें वृत्त विष्कंभ १२१६५४९० ÷ १७१ कों घटाइ अबशेष बीस लाख पचीस हजारकों एकसौ इकहत्तरिवां भाग होइ सो इहां भाग हार उगणीस नवरूप स्थापि नव करि तिस भाज्यकों भाग दिएं दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग होइ सो वाणका प्रमाण है ॥ ७६५ ॥

आगैं अन्य प्रकार करि धनुषकी कृति अर जीवाकी कृति ल्यावनैकों करण सूत्र कहैं हैं;—

इसुदलजुदविक्रंभो चउगुणिदिसुणा हदे दु धणुकरणी ।

वाणकदिं छहिं गुणिदं तत्थूणे होदि जीवकदी ॥ ७६६ ॥

इसुदलयुताविष्कंभः चतुर्गुणितेपुणा हते तु धनुःकरणी ।

वाणकृतिं पइभिः गुणितं तत्रोने भवति जीवकृतिः ॥ ७६६ ॥

अर्थ—वाणका अर्द्ध प्रमाण करि ' जोड्या हुवा विष्कंभ ताकों चौगुणा वाणका प्रमाण करि गुणें धनुषकी कृति हो है । बहुरि वाणकी कृतिकों छह गुणी करि ताकों तिस धनुषकी कृतिमें स्यों घटाएं जीवाकी कृति हो है । सो इस जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रविषै वाण दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग ताकों आधा करि ११२५०० ÷ १९ याकों नव करि समछेद करि १०१२५०० ÷ १७१ पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभका प्रमाण १२१६५४९० ÷ १७१ विषै जोडि याकों १३१७९९९० ÷ १७१ चौगुणा वाण ९००००० ÷ १९ करि गुणिए तहां गुण्य राशिका भागहार एकसौ इकहत्तरिकों उगणीस नव गुणाकरि दोय जायगा स्थापिए १९।९ बहुरि गुणकारकी पांच विंदा गुण्य राशिकै आगैं स्थापिए १३१७७९९०००००० बहुरि गुणकारका नवका अंक करि गुण्यका भागहार दोय जायगा स्थापन किया था तामें नवका अंककरि अपवर्त्तन करिए अबशेष गुण्यका भाग हार उगणीस अर गुणकारका भागहार परस्पर गुणें तीनसै इकसठि भागहार होइ अैसें करतैं धनुषकी कृतिका प्रमाण १३१७७९९०००००० ÷ ३६१ हो है । बहुरि वाणका वर्ग करि ५०६२५०००००० ÷ ३६१ ताकों छह गुणाकरि ३०३७५०००००० ÷ ३६१ तिस धनुषकी कृति १३१७७९९०००००० ÷ ३६१ मैसौं घटाएं अबशेष १०१४०४९०००००० ÷ ३६१ प्रमाण जीवाकी कृति हो है । अैसें इसुहीणं विष्कंभ इत्यादि सात गाथानि करि कथा जु विधान सो भरतादि क्षेत्रनि विषै अर हिमवन आदि कुलाचलनिविषै भी करना । जातैं जंबूद्वीपविषै इनका भी धनुषाकार क्षेत्र हो है । सो कैसें सो कहिए हैं । पूर्व पश्चिमकी तरफ क्षेत्र वा पर्वतनिका जो लंबाईका आदिविषै प्रमाण सोतौ जीवा जाननी । सो विजयार्द्धकै समीप भरतकी

प्रमाण सो दक्षिण भरतकी जीवा है । विजयार्धकी उत्तर दिसाका तटका प्रमाण विजयार्धकी जीवा है । हिमवतके समीप भरतका प्रमाण संपूर्ण भरतकी जीवा है । हिमवत्का उत्तर तटका प्रमाण हिमवत्की जीवा है । महाहिमवतके समीप हैमवतका प्रमाण हैमवतकी जीवा है । महाहिमवतके उत्तर तटका प्रमाण महाहिमवतपर्यंतकी जीवा है । निषद्भके समीप हरिका प्रमाण हरिकी जीवा है । निषद्भके उत्तर ताटका प्रमाण सो निषद्भकी जीवा है । विदेश क्षेत्रका मध्यविपे विदेहका प्रमाण विदेहकी जीवा है । जैसे पूर्व पश्चिम लंबाईका प्रमाण तौ जैसे धनुषको चिह्ना हो है तैसे जीवा जाननी । अर जैसे धनुष हो है तैसे जीवाका एक पार्श्वतें लगाय दूसरे पार्श्व पर्यंत जंबूद्वीपका जो तट परिधिरूप पाइए सो चाप जाननां । वा याको धनुष वा धनुः पृष्ठ भी कहिए । बहुरि जैसे चिह्ना धनुषके बीच वाणका क्षेत्र हो है तैसे तिस जीवाका मध्यतें लगाय सनमुख जंबूद्वीपका अंतपर्यंत जो प्रमाण सो वाण जाननां । जैसेही उत्तर ऐरावत आदि क्षेत्र इपरी आदि कुलाचलनिका कथन जाननां । विशेष इतना जहां उत्तर ताटका कथा है तहां दक्षिण तट जाननां । क्षेत्र कुलाचलनिका जो नाम है सो तही नाम जाननां ॥ ७६६ ॥

आगै अब दक्षिण भरत अर विजयार्द्ध अर उत्तर भरत क्षेत्रके वाण ल्यावनैको सूत्र कहै हैं;—

रूपगिरिर्हाणभरहव्वासदलं दक्खिणडुभरहइसू ।

णगजुद णगसरमुत्तरभरहजुदं भरहखिदिवाणो ॥ ७६७ ॥

रूपगिरिहीनभरतव्यासदलं दक्षिणार्धभरतेषुः ।

नगयुते नगशरः उत्तरभरतयुते भरतक्षेत्रवाणः ॥ ७६७ ॥

अर्थ—रूप गिरि जो विजयार्द्ध ताका व्यास योजन पचास सो भरतका व्यास पांचसै छवीस छह कलामैसौ घटाइ अवशेष ४७६६ ÷ १९ को आधा किए दोयसै अठतीस योजन तीन कला प्रमाण दक्षिण आधा भरतका वाण हो है । यामै विजयार्द्ध पर्यंतका व्यास पचास योजन जोड़े दोयसै अठयासी योजन तीन कला प्रमाण विजयार्द्धका वाण हो है । यामै उत्तर भरतका व्यास दोयसै अठतीस योजन तीन कला जोड़े पांचसै छवीस योजन छह कला संपूर्ण भरतका वाण हो है । इन तीनों वाणानिके समछेद करि अपनां अपना अंश मिलाए दक्षिण भरतका च्यारि हजार पांचसै पच्चीसका उगणीसवां भाग विजयार्द्ध पांच हजार च्यारिसै पिचहत्तरिका उगणीसवांभाग संपूर्ण भरतका दश हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण जाननां ॥ ७६७ ॥

आगै हिमवत आदि पर्वतानिका अर हैमवत आदि क्षेत्रनिका वाण ल्यावनैको करण सूत्र कहै हैं;—

हिमणगपहुर्दीवासो दुगुणो भरहूणिदो य णिसहोत्ति ।

ससवाणा णिसहसरो सविदेहदलो विदेहसस ॥ ७६८ ॥

हिमनगप्रभृतिव्यासः द्विगुणः भरतो नितश्च निषधांतम् ।

स्वस्ववाणा निषधशरः सविदेहदलः विदेहस्य ॥ ७६८ ॥

अर्थ—हिमवत पर्वत आदिका व्यास दूणा करि भरतका व्यास घटाएँ निषध पर्यंत स्वर्काय स्वर्काय वाण हो हैं । सो एकसौ निवै शल्यकानिका एक लाख योजन क्षेत्र होइ तौ हिमवत आदिकी द्यौ च्यारि आठ सोलह वत्तीस शल्यकानिका कीत क्षेत्र होइ अैसेँ त्रैाशिक करि अपवर्तन किएँ हिमवत आदिका व्यास हो हैं । सो हिमवतका बीस हजारका हैमवतका चालीस हजारका महा हिमवतका असी हजारका हरिका एक लाख साठि हजारका निषधका तीन लाख बीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण व्यास है । सो याकों दूणा करि यामैं सर्वत्र भरतका वाण दश हजारका उगणीसवां भाग घटाएँ हिमवत आदिका क्रमैँ तीस हजार एक लाख $४०००० \div १९। ८०००० \div १९। १६०००० \div १९। ३२०००० \div १९। ६४०००० \div १९।$ पचास हजार तीन लाख दश हजार छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण वाण जाननां । बहुरि निषधका वाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग तामैं विदेहके व्यास छह लाख चालीस हजारका उगणीसवां भाग ताका आधा तीन लाख बीस हजारका उगणीसवां भाग जोड़े अर्द्ध विदेहका वाण नव लाख पचास हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है । अब इन वाणनकों धरिँ तिन क्षेत्र वा पर्वतनिकी जीवा कृति अर धनुः कृतिकों हसुहीणं विष्कंभं इत्यादि करण मूत्र करि ल्याइएँ सो कहिएँ हैं । दक्षिण भरत विषै समच्छेदरूप वाण च्यारि हजार पांचसै पचीसका उगणीसवां भाग ताकों जंबू-द्वीपका व्यास लाख योजन सो इहां वृत्त विष्कंभ जाननां । ताकों उगणीसकरि समच्छेद करि $१९-००००० \div १९$ यामैंसों घटाइएँ $१८९५४७५ \div १९$ अब शेषकों चौगुणा वाण $१८१०० \div १९$ करि गुणें $३४३०८०९७५०० \div ३१$ जीवाकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि $१८-५२२४ \div १९$ अपनां भाग हारका भाग दीएँ नव हजार सातसै अठतालीस योजन बारह उगणीसवां भाग प्रमाण दक्षिण भरत क्षेत्रकी शुद्ध जीवा हो है । बहुरि वाण $४५२५ \div १९$ का वर्ग करि $२०४७५६२५ \div ३६१$ याकों छह गुणा करि $१२२८५३७५० \div ३६१$ यामैं तीह जीवाकी कृति ३४३०८०९७५०० को जोड़े $३४४३०९५१२५० \div ३६१$ धनुषकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि $१८५५५५ \div १९$ अपनां भागहारका भाग दिएँ नव हजार सात सै छयासठि योजन एक उगणीसवां भाग प्रमाण दक्षिण भरतका धनुष हो डै । बहुरि विजयार्द्ध विषै समच्छेदरूप वाण पांच हजार च्यारिसै पिचहत्तरिका उगणीसवां भाग प्रमाण ताहि समच्छेदरूप वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भाग प्रमाणमैंसौँ घटाइ अवशेष $१८९४५२५ \div १९$ को चौगुणा वाणका प्रमाण $२१९०० \div १९$ करि गुणें $४१४९००९७५०० \div ३६१$ विजयार्द्धकी जीवाकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि $२०३६९१ \div १९$ अपनां भागहारका भाग दीएँ दश हजार सातसै बीस योजन अर ग्यारह उगणीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्ध पर्वतकी जीवा हो है । बहुरि वाण $५४७५ \div १९$ का वर्ग करि $२९९७५६२५ \div ३६१$ ताकों छह गुणा करि $१७९८५३७५० \div ३६१$ तीह विषै पूर्वोक्त जीवाकी कृति $४१४९००९-७५०० \div ३६१$ जोड़े $४१६६९९५१२५० \div ३६१$ धनुषकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि $२०४१३२ \div १९$ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएँ दश हजार सात सै तियालीस योजन

अर पंद्रह उगणीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्ध पर्वतका धनुष हो है । बहुरि उत्तर भरतका समछेद रूप वांण दश हजारका उगणीसवां भाग ताकौं समछेदरूप वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भाग प्रमाणमैसौं घटाइ अवशेष १८९,००००÷१९, कौं चौगुणा वाण ४०००००÷१९, करि गुणें ७५६०००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि २७४९-५४÷१९ अपनां भाग हार १९, का भाग दिएं चौदह हजार च्यारिसैं इकहत्तरि योजन पांच उगणीसवां प्रमाण उत्तर भरत क्षेत्रकी जीवा हो है । बहुरि वाण १०००००÷१९, का वर्ग करि १०००००००००÷३६१ ताकौं छह गुणा करि ६०००००००००÷३६१ यात्रिपै जीवाकी कृति ७५६०००००००००÷३६१ जोड़ें ७६२०००००००००÷३६१ धनुषकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि २७६०४३÷१९, अपना भाग हार १९, का भाग दिएं चौदह हजार पांचसैं अठारसैं योजन अर ग्यारह उगणीसवां भाग प्रमाण उत्तर भरत क्षेत्रका धनुष हो है । बहुरि हिमवत पर्वतका वाण तीस हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीस लक्षका उगणीसवां भाग में सौं घटाइ अवशेष १८७०००००÷१९, कौं चौगुणावाण १२०००००÷१९, करि गुणें २२४४०००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि ४७३७०९÷१९, अपना भाग हार १९, का भाग दिएं चौईस हजार नवसैं वत्तीस योजन अर किछू घाटि एक उगणीसवां भाग प्रमाण हिमवतकी जीवा हो है । बहुरि वाण ३०००००÷१९, का वर्ग करि ९,००००००००००÷३६१ याकौं छह गुणां करि ५४०००००००००÷३६१ तीह त्रिपै जीवाकी कृति २२४४००००००००००÷३६१ जोड़ें धनुषकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि ४७९,३७४÷१९, अपनां भाग हार उगणीस १९ का भाग दिएं पचीस हजार दोय सैं तीस योजन अर च्यारि उगणीसवां भाग प्रमाण हिमवत पर्वतका धनुषहो है । बहुरि हैमवत क्षेत्रका वाण हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीसवां भागमैसौं घटाइ अवशेष १८३०००००÷१९, कौं चौगुणा वाण २८०००००÷१९, करि गुणें ५१२४००००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि ७१५८२२÷१९, अपना भाग हार १९ का भाग दिएं सैंतीस हजार छसैं बहतरि योजनां अर किचिदून सोलह उगणीसवां भाग प्रमाण हैमवत क्षेत्रकी जीवा हो है । बहुरि ७०००००÷१९, वर्ग करि ४९,००००००००००÷३६१ ताकौं छह गुणां करि २९४००००००००००÷३६१ यामैं जीवाकी कृति ५१२४००००००००००००÷३६१ जोड़ें ५४१८००००००००००÷३६१ धनुषकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि ७३६०७००÷१९, अपनां भाग हार १९, का भाग दिएं अठतीस हजार सातसैं चालीस योजन अर दश उगणीसवां भाग प्रमाण हैमवत क्षेत्रका धनुष हो है । बहुरि महा हिमवत पर्वतका वाण एक लाख पचास हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भागमैसौं घटाइ अवशेष १७५०००००÷१९, कौं चौगुणा वाण ६००००००÷१९, करि गुणें १०५००००,०००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि १०२४६९५÷१९, अपना भाग हारका

भाग दिएं तरेपन हजार नवसै इकतीस योजन अर छह उगणीसवां भाग प्रमाण महा हिमवत पर्वतकी जीवा हो है । बहुरि वाण १५००००÷१९ का वर्गकरि २२५००००००००० याकों छह गुणाकरि १३५००००००००००÷३६१ याविषै जीवाकृति १०५००००००००००÷३६१ जोड़ें ११८५००००००००००÷३६१ धनुषकी कृति हो है । या वर्ग मूल ग्रहण करि १०८८-५७७÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं सत्तावन हजार दोयसै तरेणवै योजन अर दश उगणीसवां भाग प्रमाण महा हिमवत पर्वतका धनुष हो है । बहुरि हरि क्षेत्रका वाण तीनलाख दश हजारका उगणीसवां भाग ताकों वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भागमैसैं घटाइ अबशेष कौ १५९००००÷१९ चौगुणा वाण १२४००००÷१९ करि गुणें १९७१६००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि १४०४१३६÷१९ अपनां भाग-हार उगणीस १९ का भाग दिएं तिहेत्तरि हजार नवसै एक योजन अर सतरह उगणीसवां भाग प्रमाण हरि क्षेत्रकी जीवा हो है । बहुरि वाण ३१००००÷१९ का वर्गकरि ९६१०००००-०००÷३६१ ताकों छह गुणांकरि ५७६६ विंदी ८÷३६१ यामैं जीवाकी कृति १९७१६ विंदी ८÷३६१ जोड़ें २५४८२ विंदी ८÷३६१ धनुषकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि १५९६३०८÷१९ अपनां भाग हार उन्नीसका भाग दिएं चौरासी हजार सोलह योजन च्यारि उगणीसवां भाग प्रमाण हरिवर्ष क्षेत्रका धनुष हो है । बहुरि निषध यर्वतका वाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग ताकों वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भागमैसैं घटाइ अबशेष १२७००००÷१९ का चौगुणा वाण २५२००००÷१९ करि गुणें ३२००४ विंदी ८÷३६१ जीवाकी कृति हो है । याका वर्गमूल ग्रहण करि १७८८९६६÷१९ अपनां भागहारका भाग दिएं चौराणवै हजार एकसौ छप्पन योजन अर दोय उगणीसवां भाग प्रमाण निषध पर्वतकी जीवा हो है । बहुरि वाण ६३००००÷१९ का वर्ग करि ३९६९ विंदी ८÷३६१ ताकों छह गुणा करि २३८१४ विंदी ८÷३६१ यामैं जीवाकी कृति ३२००४ विंदी ८÷३६१ जोड़े ५५८१८ विंदी ८÷३६१ धनुषकी कृति हो है । याका वर्गमूल ग्रहण करि २३६२५८३÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं एकलाख चौईस हजार तीनसै छियालीस हजार योजन अर नव उगणीसवां भाग प्रमाण निषध पर्वतका धनुष हो है । बहुरि अर्द्ध विदेहका वाण नवलाख पचास हजार योजनका उगणीसवां भाग ताकों वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भागमै-सैं घटाइ अबशेष ९५००००÷१९ कौ चौगुणा वाण ३८०००००÷१९ करि गुणें ३६१ विंदी १०÷३६१ जीवाकी कृति होइ याका वर्गमूल ग्रहण करि १९÷१९ विंदी ५ अपनां भागहार १९ का भाग दिएं एक लक्ष योजन प्रमाण अर्द्ध विदेहकी जीवा हो है । बहुरि वाण ९५००००÷१९ का वर्ग करि ९०२५÷३६१ विंदी ८ याकों छह गुणा करि ५४१५÷३६१ विंदी आठ यामैं जीवा कृति ३६१÷३६१ विंदी १० जोड़े ९०२५÷३६१ विंदी ९ धनुषकी कृति हो है । याका वर्गमूल ग्रहण करि ३००४१६४÷१९ अपनां भागहारका भाग दिएं एक लाख अठावन हजार एकसौ चौदह योजन विदेह क्षेत्रका अर्द्ध मध्यविषै धनुष हो है । बहुरि जैसे

ही दक्षिण भरतवत् उत्तर ऐरावतका विजयार्द्धवत् विजयार्द्धका संपूर्ण भरतवत् संपूर्ण ऐरावतका हिमवत शिखरी पर्वतका हैमवत हैरण्यवत्क्षेत्रका महाहिमवत् रुक्मी पर्वतका हरिवत् रम्यकक्षेत्रका निषधवत् नील पर्वतका अर्धविदेह वत् अर्द्ध विदेहका वाण जीवा धनुः पृष्ठका कथन जाननां ॥ ७६८ ॥

आगौ दक्षिण भरतादि क्षेत्र या पर्वतानिका जीवा धनुषानिके पूर्वे ल्याए अंक नव गाथानि करि कहै हैं;—

दक्षिणभरहे जीवा अडचउसगणवय होंति वारकला ।

चापं छलकसगसयणवयसहस्रं च एककला ॥ ७६९ ॥

दक्षिणभरते जीवा अष्टचतुःसप्तनव भवंति द्वादशकलाः ।

चापं पट्पट्सप्तशतनवसहस्रं च एककला ॥ ७६९ ॥

अर्थ—दक्षिण भरत क्षेत्रविषै जीवा आठ च्यारि सात नव इन अंकनि करि नव हजार सातसै अठतालीस योजन अर बारह कला प्रमाण है । बहुरि तिसहीका चाप जो धनुष सो छयासठि अधिक सातसै करि सहित नव हजार योजन अर एक कला प्रमाण है ॥ ७६९ ॥

वेयडुंते जीवा णभदुगसगदहसहस्सेगारकला ।

तेदालसगणभेकं पण्णरसकला य तच्चावं ॥ ७७० ॥

विजयाधि^प जीवा नभोद्विकसप्तदशसहस्रैकादशकला ।

त्रिचत्वारिंशत् सप्त नभःएकं पंचदशकलाश्च तच्चापं ॥ ७७० ॥

अर्थ—विजयार्द्धका अंत विषै जीवा विंदि दोइ सात इन अंकनि करि सातसै वीस सहित दश हजार योजन अर ग्यारह कला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप तियालीस सात विंदि इन अंकनि करि दश हजार सातसै तियालीस योजन अर पंद्रह कला प्रमाण है ॥ ७७० ॥

भरहस्रंते जीवा इगिसगचउचोइसं च पंचकला ।

चावं अडदुगपणचउरेकं एकारसकला य ॥ ७७१ ॥

भरतस्यांते जीवा एक सप्त चतुश्चतुर्दश च पंचकलाः ।

चापं अष्टद्विकपंचचतुरंके एकादशकलाः च ॥ ७७१ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रका अंत विषै एक सात च्यारि चौदह इन अंकनि करि चौदह हजार च्यारिसै इकहत्तरि योजन अर पांचकला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप आठ दोय पांच च्यारि एक इन अंकनि करि चौदह हजार पांचसै अठईस योजन अर ग्यारह कला प्रमाण है ॥ ७७१ ॥

हिमवण्णगंत जीवा दुगतिगणवचउदुगं कला चूणा ।

चावं णभतियदुगपणवीससहस्रं च चारिकला ॥ ७७२ ॥

हिमवण्णगंते जीवा द्विकत्रिकनवचतुर्द्वयं कला चोना ।

चापं नभस्त्रिद्विपंचविंशतिसहस्रं च चतुःकला ॥ ७७२ ॥

अर्थ—हिमवत पर्वतका अंतविषै जीवा दोय तीन नव च्यारि दोय इन अंकनि करि चौईस हजार नवसै बत्तीस योजन अर किंचिदून एक कला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप विंदि

तीन दोय पांच इन अंकनि करि पांच हजार दोयसै तीस तीह करि अधिक बीस हजार योजन अर च्यारि कला प्रमाण है ॥ ७७२ ॥

हेमवदंतिमजीवा चउसगछस्सगाति उणसोलकला ।

धणुहं णभचउसगअडतिणिण विसेसहियदसयकला ॥ ७७३ ॥

हेमवतांतिमजीवा चतुःसप्तपट्सप्तत्रयः ऊनपोडशकला ।

धनुः नभश्चतुःसप्ताष्टत्रीणि विशेषाधिकदशकला ॥ ७७३ ॥

अर्थ—हेमवत क्षेत्रका अंत विपै जीवा च्यारि सात छह सात तीन इन अंकनि करि सैं-तीस हजार छसै चहौत्तरि योजन अर किछू घाटि सोलह कला प्रमाण है । बहुरि ताका धनुष विदी च्यारि सात आठ तीन इन अंकनि करि अठतीस हजार सातसै चाळीस योजन अर किछू अधिक दश कला प्रमाण है ॥ ७७३ ॥

महाहिमवचरिमजीवा इगतिणवत्तिदयपंच छक्ककला ।

तच्चावं तियणवदुगसगवण्णसहस्स दसयकला ॥ ७७४ ॥

महाहिमवच्चमरजीवा एकत्रिनवत्रितयपंच षट्कलाः ।

तच्चापं त्रिनवद्विसप्तपंचाशत्सहस्रं दशकलाः ॥ ७७४ ॥

अर्थ—महाहिमवत पर्वतका अंत विपै जीवा एक तीन नव तीन पंच इन अंकनि करि तरेपन हजार नवसै इकतीस योजन अर छह कला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप तीन नव दोय इन अंकनि करि दोयसै तेरणवै तिन करि सहित सत्तावन हजार योजन अर दश कला प्रमाण है ॥ ७७४ ॥

हरिजीवा इगिणभणवतियसत्तयमिह कलावि सत्तरसा ।

चावं सोलसणभचउसीदिसहस्सं च चारि कला ॥ ७७५ ॥

हरिजीवा एकनभोनवत्रिसप्तक इह कला अपि सप्तदश ।

चापं षोडशनभश्चतुरशीतिसहस्रं च चतस्रः कलाः ॥ ७७५ ॥

अर्थ—हरिक्षेत्र विपै जीवा एक विदी नव तीन सात इन अंकनि करि तेहत्तरि हजार नवसै एक योजन अर सत्तरह कला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप सोलह विन्दी इन अंकनि करि सोलह तिन करि अधिक चौरासी हजार योजन अर च्यारि कला प्रमाण है ॥ ७७५ ॥

णिसहावसाणजीवा छप्पण्णइगिचारिणवय दोणिण कला ।

धणुपुट्टं छादालत्तिचउवीसेकं च णवय कला ॥ ७७६ ॥

निषधावसानजीवा षट्पंचकचतुर्नवकं द्वे कले ।

धनुःपृष्ठं षट्चत्वारिंशत् त्रिचतुर्विंशत्येकं च नव कलाः ॥ ७७६ ॥

अर्थ—निषद्ध पर्वतका अंतविपै जीवा छह पांच एक च्यारि नव इन अंकनि करि चौरा-णवै हजार एकसौ छप्पन योजन अर दोय कला प्रमाण है । बहुरि धनुःपृष्ठ छियालीस तीन चौबीस एक इन अंकनि करि एक लाख चौईस हजार तीनसै छियालीस योजन अर नव कला प्रमाण है ॥ ७७६ ॥

जीवदु विदेहमज्जे लक्खा परिहिदलमेवमवरद्धे ।

माहवचंदुद्धरिया गुणधम्मप्रसिद्ध सव्वकला ॥ ७७७ ॥

जीवाइयं विदेहमध्ये लक्षं परिधिदलं एवमपारार्धे ।

माधवचंद्रोद्धृताः गुणधर्मप्रसिद्धाः सर्वकलाः ॥ ७७७ ॥

अर्थ—विदेहकै मध्य जीवा अर धनुष ए दोऊ क्रमतेँ जीवा तौ लक्ष योजन प्रमाण अर धनुष्य जंबूद्वीपकी परिधिका जो प्रमाण ३१६२२७ क्रोश ३ दंड १२८ अंगुल १३^३ ताकै अर्द्ध प्रमाण किल्लू घाटि एक लाख अठावन हजार एक सौ चौदह योजन प्रमाण है । ऐसै ही ऐरावतादिक क्षेत्र वा पर्वतनिका कथन अर दूसरी तरफका आधा जंबूद्वीप विषै जाननां । बहुरि गुण कहिए चिला जीवा अर धर्म कहिए धनुष तिनविषै प्रसिद्ध कहिए पूवै कही ऐसी जु सर्वकला कहिए योजनका अंश ते माधव कहिए नारायण नव अर चंद्र कहिए चंद्रमा एक इन अंकनि करि उगणीस भए तिनकरि उद्धृत कहिए भागरूप जाननी । भावार्थ—पूवै जो जीवा अर धनुषका कथन विषै कला कही है सो एक कलाका प्रमाण एक योजनका उगणीसवां भाग जाननां । बहुरि गुण धर्म इत्यादि पदका दूसरा अर्थ कहिए हैं—गुण ज्ञानादिक धर्म अहिंसादिक विषै प्रसिद्ध ऐसी जु सर्व कला चातुर्य तातै माधवचंद्र नाम त्रैविद्य देव ताकरि उद्धृत कहिए प्रकाशित हैं । भावार्थ—माधव चंद्र आचार्यने गुण धर्म संबंधी सर्वकला प्रगट करी हैं ऐसा दूसरा अर्थ भी जाननां ॥ ७७७ ॥

आगै जीवानिकी चूलिका अर धनुषनकी पार्श्वभुजाकौ कहै है;—

पुव्ववरजीवसेसे दलिदे इह चूलियात्ति णाम ह्वे ।

धणुदुगसेसे दलिदे पासभुजा दक्खिणुत्तरदो ॥ ७७८ ॥

पूर्वापरजीवाशेषे दलिते इह चूलिका इति नाम भवेत् ।

धनुर्द्विकशेषे दलिते पार्श्वभुजः दक्षिणोत्तरतः ॥ ७७८ ॥

अर्थ—दक्षिणविषै तौ भरतादिक विषै अर उत्तरविषै ऐरावतादिविषै जो पूर्वापर जीवा कहिए पहलै अर पीछै कही जे जीवा तिनविषै अधिक प्रमाणमै सौ हीन प्रमाण घटाइ अवशेष रहै ताका आधा किए जो प्रमाण होइ ताका चूलिका ऐसा नाम हो है । बहुरि पूर्व अपर धनुषनिविषै अधिकमैसौ हीन घटाइ अवशेषकौ आधा किए जो प्रमाण होइ ताका नाम पार्श्वभुजा है सो इसहीकौ कहै हैं । पहलै कह्या दक्षिण भरत ताकी जीवा नव हजार सातसै अठतालीस योजन बारह कला अर ताकै पीछै कह्या विजयार्द्ध ताकी जीवा दश हजार सातसै बीस योजन ग्यारह कला इन दोऊनिविषै अधिक प्रमाण विजयार्द्धकी जीवा तामै हीन प्रमाण दक्षिण भरतकी जीवा घटाइए तब अवशेष नवसै बहत्तरि योजन रहे अर ग्यारह कलामै बारह कला घटे नाहीं तातै एक योजन घटाइ ताकी उगणीस कलामैसौ बारह कला घटाइ अवशेष सात कला ग्यारह कलाविषै मिलाए नवसै इकहत्तरि योजन अर अठारह कला होइ ताका आधा करनां सो विषम राशिका आधा न होइ तातै योजन प्रमाणमैसौ एक घटाइ अवशेष नवसै सत्तरिका आधा किए च्यारिसै पिच्यासी तौ योजन होइ अर घटाया एकका आधा ^३ अर अठारह कलाका आधा ^३ तिनका समछेद करि ^{१८} ^{१८} मिलाए

सैंतीस अठतीसवां भाग होइ सो विजयार्द्ध पर्वतकी चूलिका च्यारिसै पिच्यासी योजन अर सैंतीस अठतीसवां भाग प्रमाण है । विजयार्द्धका उत्तर तटकी सूधितै दक्षिण तट एक तरफ इतनां घटि है । बहुरि दक्षिण भरतका चाप नव हजार सातसै छयासठि योजन एक कला अर विजयार्द्धका चाप दश हजार सातसै तियालीस योजन पंद्रह कला सां अधिकमेंसौं हीन घटाइ अबशेष नवसै सत-हत्तरि योजन चौदह कला होइ ताका पूर्ववत आधा किए च्यारिसै अठ्यासी योजन अर तेतीस अठतीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्धकी पार्श्वभुजा हो है । विजयार्द्धका उत्तर तटतै लगाय चापके प्रमाणतै विजयार्द्धका दक्षिण तटतै लगाय चाप एक तरफ इतनां घाटि जाननां । असैही विजयार्द्धकी जीवावा चाप संपूर्ण भरतकी जीवा चापविषै घटाइ अबशेषकों आधा किए संपूर्ण भरतकी चूलिका वा पार्श्वभुजा हो है । संपूर्ण भरतकी जीवा चाप हिमवत पर्वतकी जीवा चापविषै घटाइ अबशेषकों आधा किए हिमवत पर्वतकी चूलिका वा पार्श्वभुजा हो है । सो हिमवतकी चूलिका पांच हजार दोयसै तीस योजन पंद्रह अठतीसवां भाग अर पार्श्वभुजा पांच हजार तीनसै पचास योजन इक-तीस अठतीसवां भाग प्रमाण है । महा हिमवतकी चूलिका आठ हजार एकसौ अठाईस योजन नव अठतीसवां भाग अर पार्श्वभुजा नव हजार दोयसै छिहंतिरि योजन उगणीस अठतीसवां भाग प्रमाण है । निषधकी चूलिका दश हजार एकसौ सत्ताईस योजन दोय उगणीसवां भाग अर पार्श्वभुजा बीस हजार एकसौ पैसठि योजन पांच अठतीसवां भाग प्रमाण है । अर्धविदेहकी चूलिका दोय हजार नवसै इकईस योजन अठारह उगणीसवां भाग अर पार्श्वभुजा सोलह हजार आठसै तियासी योजन उगणीस अठतीसवां भाग प्रमाण हो हैं । ऐसै ही अन्यत्र चूलिका वा पार्श्वभुजाका प्रमाण ल्यावनां ॥ ७७८ ॥

आगैं भरत ऐरावत क्षेत्रनिविषै कालके वर्त्तनेका अनुक्रमकों प्रतिपादन करै हैं;—

भरहेसुरेवदेसु य ओसप्पुस्सप्पिणत्ति कालदुगा ।

उस्सेधाउबलाणं हाणीवड्डी य होंत्ति ॥ ७७९ ॥

भरतेषु ऐरावतेषु च अबसर्पिण्युत्सर्पिणीति कालद्वयं ।

उत्सेधायुर्बलानां हानिवृद्धी च भवत इति ॥ ७७९ ॥

अर्थ—पांचमेरु संबंधी पांच भरत क्षेत्र पांच ऐरावतक्षेत्रनिविषै अबसर्पिणी अर उत्स-र्पिणी ए दोयकाल वर्ते हैं । तिन कालनिविषै तिष्ठते जीवनिके क्रमतै शरीरकी उचाई आयु शरीरका बल तिनकी हानि वा वृद्धि हो है । अबसर्पिणीकालविषै हानि हो है, उत्सर्पिणीविषै वृद्धि हो है । ऐसा जाननां ॥ ७७९ ॥

आगैं इन दोय कालनिके भेदनिका नाम कहैं हैं;—

सुसमसुसमं च सुसमं सुसमादी अंतदुस्समं कमसो ।

दुस्सममतिदुस्सममिदि पढमो बिदियो दु विवरीयो ॥ ७८० ॥

सुषमसुषमः च सुषमः सुषमादिः अंतदुःषमः क्रमशः ।

दुषमः अतिदुःषम इति प्रथमः द्वितीयस्तु विपरीतः ॥ ७८० ॥

अर्थ—सुषम सुषम १ अर सुषम १ अर सुषम दुःषम १ अर दुःषमसुषम १ अर दुःषम अर अतिदुःषम १ अैसें क्रमकरि पहला अवसर्पिणीकाल छह भेद संयुक्त है । बहुरि दूसरा उत्सर्पिणी काल इसतै विपरीत अनुक्रम करि छह भेद संयुक्त है । तहां अंति दुःषम १ दुषम १ दुःषम सुषम १ सुषम दुःषम १ सुषम १ सुषम सुषम अैसा क्रम जाननां ॥ ७८० ॥

आगै प्रथमादि कालनिका स्थिति प्रमाण कहै हैं;—

चदुतिदुगकोडकोडी वादालसहस्रवासहीणेकं ।

उदधीणं हीणदलं तत्तियमेत्तद्विदी ताणं ॥ ७८१ ॥

चतुस्त्रिद्विककोटिकोटिः द्वाचत्वारिंशत्सहस्रवर्षहीनैकम् ।

उदधीनां हीनदलं तावन्मात्रा स्थितिः तेषां ॥ ७८१ ॥

अर्थ—तिन छहौं कालनिका क्रमतै स्थिति सुषम सुषमकी च्यारि कोड़ा कोड़ी सागर, सुषमकी तीन कोड़ाकोड़ी सागर सुषम दुःषमकी दोय कोड़ा कोड़ी सागर दुःषम सुषमकी च्यारि कोड़ाकोड़ी सागर सुषमकी तीन कोड़ाकोड़ी सागर, सुषम दुषमकी दोय कोड़ाकोड़ी सागर दुःषम सुषमकी वियालीस हजार वर्ष घाटि एक कोड़ाकोड़ी सागर, दुषमकी घटाया प्रमाण ४२००० का आधा इकईस हजार वर्ष, अतिदुःषमकी भी इकईस हजार वर्ष प्रमाण जाननी ॥ ७८१ ॥

आगै छह काल संवंधी जीवनिका आयु प्रमाण कहै हैं;—

तत्थादि अंत आज्ज तिदुगेकं पलपुण्वकोडी य ।

वीसहियसयं वीसं पण्णरसा होंति वासाणं ॥ ७८२ ॥

तत्रादौ अंते आयुः त्रिद्विकैकं पल्यं पूर्वकोटिः ।

विंशाधिकशतं विंशं पंचदश भवन्ति वर्षाणां ॥ ७८२ ॥

अर्थ—तहां इन कालनि विषै प्रथम कालकै आदि विषै जीवनिका आयु तीन पल्य है । ताके अंत विषै दोय पल्य है । बहुरि सोई दोय पल्य आयु द्वितीय कालके आदि विषै है ताके अंत विषै एक पल्य है । बहुरि सोई एक पल्य आयु तृतीयकालके आदि विषै है ताके अंत विषै कोटि पूर्व वर्ष प्रमाण है । बहुरि सोई कोटि पूर्व वर्षका आयु चतुर्थ कालका आदि विषै है ताके अंत विषै एक सौ वीस वर्ष प्रमाण है । बहुरि सोई एकसौ वीस वर्षका आयु पंचम कालके आदि विषै है ताके अंत विषै वीस वर्षका आयु है । बहुरि सोई वीसवर्षका आयु षष्ठम कालका आदि विषै है ताके अंत विषै पंद्रह वर्ष प्रमाण आयु है ॥ ७८२ ॥

तैसेही मनुक्षनिका उचाईका प्रमाण कहै हैं;—

तिदुगेककोसमुदयं पणसयचावं तु सत्तरदणी य ।

दुगमेकं चय रदणी छक्कालादिभिह अंतभिह ॥ ७८३ ॥

त्रिद्विकैकक्रोशमुदयः पंचशतचारपं तु सत्तरन्नयः च ।

द्विकमेकं च रत्निः षट्कालादौ अंते ॥ ७८३ ॥

अर्थ—मनुक्षनिके शरीरकी उचाई प्रथम कालकी आदि विषै तीनकोश ताके अंत विषै दोय कोश सोई दूसरा कालकी आदि विषै दोय कोश ताके अंत विषै एक कोश सोई तृतीय कालकी आदि विषै एक कोश ताके अंत विषै पांचसै धनुष सोई चतुर्थ कालकी आदि विषै पांचसै धनुष अंत विषै सात हाथ सोई पंचम कालकी आदि विषै सात हाथ अंतविषै दोय हाथ सोई षष्ठम कालकी आदि विषै दोय हाथ अर अंत विषै एक हाथ प्रमाण है । ऐसै छह कालनिका आदि अंत विषै मनुक्षनिका उत्सेध जाननां ॥ ७८३ ॥

आगै छह काल वर्त्ती मनुक्षनिका वर्णका अनुक्रम कहै हैं;—

उदयरवी पुर्णिणद् पियंगुसामा य पंचवण्णा य ।

लुक्खसरीरावण्णे धूमसियामा य छक्काले ॥ ७८४ ॥

उदयरवयः पूर्णेदवः प्रियंगुश्यामाश्च पंचवर्णाश्च ।

रूक्षशरीरावर्णाः धूमश्यामाः च षट्काले ॥ ७८४ ॥

अर्थ—प्रथम काल विषै मनुक्ष उदय होता सूर्यकै समान वर्ण युक्त है । दूसरे काल विषै संपूर्ण चंद्रमा समान वर्ण युक्त है । तीसरे काल विषै हरित श्याम वर्ण संयुक्त है । चौथा काल विषै पांचौ वर्ण संयुक्त है । पांचवां काल विषै कांति करि हीन तूखा मिश्र रूप पांच वर्ण संयुक्त हैं । छठा काल विषै धुवांवत् श्याम वर्ण संयुक्त है । ऐसै छह कालनि विषै वर्णका अनुक्रम जाननां ॥ ७८४ ॥

आगै तिनके आहारका अनुक्रम कहै है;—

अट्टमछट्टचउत्थेणाहारो पडिदिणेण पायेण ।

अतिपायेण य कमसो छक्कालणरा हवंतित्ति ॥ ७८५ ॥

अष्टमषष्टचतुर्थेनाहारः प्रतिदिनेन प्रायेण ।

अतिप्राचुर्येण च क्रमशः षट्कालनरा भवन्तीति ॥ ७८५ ॥

अर्थ—पहला काल विषै अष्टम वेलायां कहिए तीन दिनके आंतरे आहार करै हैं । बहुरि दूसरा काल विषै षष्ठम वेलायां कहिए दोयदिनके आंतरे आहार करै है । बहुरि तीसरा काल विषै चतुर्थ वेलायां कहिए एक दिनके आंतरे आहार करै है । बहुरि चौथा काल विषै प्रति दिन कहिए दिन प्रति एक वार आहार करै है । बहुरि पांचवां काल विषै प्रायेण कहिए बहुतवार आहार करै है । बहुरि छठा काल विषै अतिपाएण कहिए अति प्रचुर वृत्ति करि वारंवार आहार करै हैं । ऐसै छह कालनि विषै मनुक्षनिके आहारका अनुक्रम है ॥ ७८५ ॥

आगै भोग भूमियांनिकै आहारका प्रमाण कहै हैं;—

वदरक्खामलयप्पमक्कप्पहुमदिण्णदिव्वाआहारा ।

वरपहुदितिभोगभुमा मंदकसाया विणीहारा ॥ ७८६ ॥

वदराक्षामलकप्रमकल्पद्रुमदत्तदिव्याहाराः ।

वरप्रभृतित्रिभोगभूमानः मंदकषाया विनीहाराः ॥ ७८६ ॥

अर्थ—सुषम सुषमादि तीन कालनि विषै उत्कृष्टादि तीन भोग भूमिके उपजे मनुक्ष क्रमत्तै बदरीफल अर अक्षफल अर आंवला प्रमाण कल्पवृक्षनिकरि दीया दिव्य आहार ग्रहण करै हैं । बहुरि ते मंद कषायी हैं । बहुरि मल मूलादि नीहार करि रहित है ॥ ७८६ ॥

आगै तिन भोगभूमियांनिकै कल्पवृक्षनिका प्रमाण कहै है;—

तूरंगपत्तभूसणपानाहारंगपुष्पजोइतरू ।

गेहेगा बत्थंगा दीवंगेहिं दुमा दसहा ॥ ७८७ ॥

तूर्यांगपात्रभूपणपानाहारंगपुष्पज्योतिरवः ।

गेहांगा वस्त्रांगा दीपांगैः द्रुमा दशात्रा ॥ ७८७ ॥

अर्थ—वाजिनिके दाता तूर्यांग अर पात्रनिके दाता पात्रांग अर आभूपणनिके दाता भूषणांग अर पीवनेकी वस्तुके दाता पानांग अर आहारके दाता आहारंग अर फूलनिके दाता पुष्पांग अर उद्योतमई ज्योतिरंग अर मंदिरनिके दाता गुहांग अर वस्त्रनिके दाता वस्त्रांग अर दीपकनिके दाता दीपांग कल्प वृक्ष है । जैसे कल्प वृक्ष दश प्रकार है ॥ ७८७ ॥

आगै भोगभूमिका स्वरूप कहै हैं;—

दप्यणसम मणिभूमी चउरंगुलसुरसगंधमउगतणा ।

खीरेच्छुतोयमधुघटपूरिदवावीदहाइण्णा ॥ ७८८ ॥

दर्पणसमा मणिभूमिः चतुरंगुलसुरसगंधमृदुतृणा ।

क्षीरेक्षुतोयमधुघृतपूरितवापीन्हदाकीर्णा ॥ ७८८ ॥

अर्थ—दर्पण जो आरसा तीह समान मणिमई भोगभूमि जाननी । बहुरि सो ब्यारि अंगुल ऊंचे भला रस गंधसहित कोमल तिणानि करि संयुक्त हे । अर दुग्ध वा मिष्ट रस वा जल वा मधु समान रस वा घृतकरि पूर्ण अैसी वावड़ी वा द्रह तिन करि व्याप्त है ॥ ७८८ ॥ आगै भोगभूमियानिकै उपजनें मरणेका विधान गाथा तीन करि कहै है;—

जादजुगलेसु दिवसा सगसग अंगुद्वलेह रंगिदए ।

अधिरधिरगदि कलागुणजोवणदंसणगहे जंति ॥ ७८९ ॥

जातयुगलेषु दिवसाः सप्तसप्त अंगुद्वलेह रंगिते ।

अस्थिरस्थिरगत्योः कलागुणयौवनदर्शनग्रहे यांति ॥ ७८९ ॥

अर्थ—माताके गर्भतै जुगपत स्त्री पुरुष युगल उपजे है । तिनके उत्पत्ति दिनसौं लगाय सात दिन पर्यंत अनुक्रमतै अंगूठाका चाटनां बहुरि ऊंचा वा नीचा होना बहुरि डिगता चलनां बहुरि स्थिर रूप नीकै चलनां बहुरि कला गुणका ग्रहण होनां बहुरि यौवनका ग्रहण होनां बहुरि परस्पर दर्शनका ग्रहण होनां हो है । अैसें गुणचास दिननि करि संपूर्णता हो है ॥ ७८९ ॥

तइंपदीणमा लिः संहदिसंठाणमज्जणामजुदा ।

सुलहेसुवि णो तिच्ची तेसि पंचक्खविसएसु ॥ ७९० ॥

तद्वपतीनामादिमसंहतिसंस्थानं आर्यनामयुताः ।

सुलभेषु अपि नो तृप्तिः तेषां पंचाक्षविषयेषु ॥ ७९० ॥

अर्थ—तिन दंपति कहिए स्त्री पुरुष जुगलनिकै आदिका संहनन संस्थान हो है । बज्र वृषभ नाराच संहनन हो है समचतुरस्र संस्थान हो है । बहुरि ते मंद कषायी हैं तातैं आर्य ऐसे नाम संयुक्त हैं । बहुरि तिनकै सुलभ पाए हैं पंच इन्द्रीनिकै विषय तौभी तिन विषै तृप्ति न हो है । भावार्थ यहु जो विषयनिस्थौ अरुचि न हो है ॥ ७९० ॥

चरिमे खुदजंभवसा णरणारि विलीय सरदमेघं वा ।

भवणतिगामी मिच्छा सोहम्मदुजाइणो सम्मा ॥ ७९१ ॥

चरमे क्षुतजृंभवशात् नरनार्यो विलीय शरन्मेघं वा ।

भवनत्रिगामिनः मिथ्याः सौधर्मद्वियायिनः सम्यंचः ॥ ७९१ ॥

अर्थ—आयुका अंत विपै पुरुष तौ छीक करि, स्त्री जंभाई करि मरण पाइ शरद कालका भेघवत विलय हो हैं । तिनके शरीरका अंश भी पड़ा न रहै । बहुरि ते मरि करि मिथ्यादृष्टि तौ भवन वासी व्यंतर ज्योतिष्क विपै उपजै हैं । अरु सम्यगदृष्टी सौधर्म ईशान विषै उपजै हैं अन्यत्र नाही उपजै हैं । जैसे प्रथम कालकी आदि विषै उत्कृष्ट भोग भूमि है । बहुरि क्रमतै घटि द्वितीय कालकी आदि विषै मध्य भोगभूमि है । बहुरि क्रमतै घटि तृतीय कालकी आदि विषै जघन्य भोग भूमि है । क्रमतै घटि अंत विपै कुलकरादि होइ कर्मभूमि हो है । ॥ ७९१ ॥

सो कर्मभूमिके प्रवेशका अनुक्रम अरु तहां तिष्ठते कुलकरनिका स्वरूप तीन गाथानि करि प्रतिपादन करै हैं;—

पल्लट्टमं तु सिद्धे तदिष्टे कुलकरणरा पडिस्सुदिओ ।

सम्मदि खेमंकरधर सीमंकरधर विमलादिवाहणओ ॥ ७९२ ॥

पल्याष्टमे तु शिष्टे तृतीये कुलकरनराः प्रतिश्रुतिः ।

सम्मतिः क्षेमंकरधरः सीमंकरधरः विमलादिवाहनः ॥ ७९२ ॥

अर्थ—तृतीय काल विपै पत्यका आठवां भाग अवशेष रहै कुलकर मनुक्ष उपजै हैं । ते कौन ? प्रतिश्रुति १ सम्मति १ क्षेमंकर १ क्षेमंघर १ सीमंकर १ सीमंघर १ विमलावाहन १ ॥ ७९२ ॥

चक्खुम्म जस्ससी अहिचंदो चंदाहओ मरुद्देवा ।

होदि पसेणजिदंको णाभी तण्णंदणो वसहो ॥ ७९३ ॥

चक्षुष्मान् यशस्वी अभिचंद्रः चंद्राभः मरुद्देवः ।

भवति प्रसेनजितांकः नाभिस्तनंदनो वृषभः ॥ ७९३ ॥

अर्थ—चक्षुष्मान् १ यशस्वी १ अभिचंद्र १ चंद्राभ १ मरुद्देव १ प्रसेनजित १ नाभि १ जैसे चौदह कुलकर हो हैं । तिस नाभिकुलकरका नंदन वृषभनाथ प्रथम तीर्थंकर है ॥ ७९३ ॥

वरदाणदो विदेहे बद्धणराज्य खइयसंदिष्टी ।

इह स्वत्तियकुलजादा केइज्जाइभरा ओही ॥ ७९४ ॥

वरदानतो विदेहे बद्धनरायुपः क्षायिकसंदृष्टयः ।

इह क्षत्रियकुलजाताः केचिज्जातिस्मरा अवधयः ॥ ७९४ ॥

अर्थ—समीचीन पात्रके दान देनेके फलतैं वांधी है मनुक्षायु जिनि अर पीछे क्षायिक सभ्यगृष्टी भए जैसे जीव आइ कुलकर उपजै हैं । ते इहां क्षत्रिय कुल विपै उपजै हैं । यद्यपि कुलादिककी प्रवृत्ति अब हीन भई पर होनहार विपै हुएका उपचार करि इनके कुलके क्षत्रिय हों, हिगे तातैं इनकों क्षत्रिय कुल विपै उपजे कहे । बहुरि ते कुलकर केई तौ जातिस्मरण संयुक्त हैं, केई अवधिज्ञान संयुक्त हैं ॥ ७९४ ॥

आगैं कुलकरनिका शरीरका उत्सेध कहैं हैं;—

अद्वारस तेरस अडसदाणि पणुवीसहीणयाणि तदो ।

चावाणि कुलयराणं सररीरतुंगत्तणं कमसो ॥ ७९५ ॥

अष्टादश त्रयोदश अष्टशतानि पंचविशतिहीनानि ततः ।

चापानि कुलकराणां शरीरतुंगत्वं क्रमशः ॥ ७९५ ॥

अर्थ—अठारहसै धनुष १८०० तेरह सै धनुष १३०० धनुष्य आठसै धनुष ८०० तहां पीछैं पचीस पचीस घाटि धनुष ७७५।७५०।७२५।७००।६७५।६५०।६२५।६००।५७५।५५०। ५२५। प्रमाण प्रतिश्रुत आदि कुलकरनिके शरीरका उच्चत्व अनुक्रमतैं जाननां ॥ ७९५ ॥

आगैं तिनका आयु कहैं हैं;—

आऊ पल्लदसंसो पढमे सेसेसु दसहि भजिदकमं ।

चारिमे दु पुव्वकोडी जोगे किंचूण तण्णवमं ॥ ७९६ ॥

आयुः पल्यदशांशः प्रथमे शेषेषु दशभिः भक्तक्रमः ।

चरमे तु पूर्वकोटिः योगे किंचिदूनं तन्नवमं ॥ ७९६ ॥

अर्थ—पहला कुलकरका आयु पल्यका दशवां भाग प्रमाण है । द्वितीयादि कुलकरनिका आयु क्रमतैं दश दश गुणां भाग पल्यकों दीजिए तीह प्रमाण है । $प१ \div १००। प१० \div १०००। प१ \div १०००० प१ \div १ ल० प१ \div १ ल० प१ \div १ को० प१ \div १० कोडि। प१ \div १०० को० । प१ \div १००० को० प१ \div १०००० को० । प१ \div लक्ष को० प१ \div १० ल० को० । बहुरि अंतका नाभिकुल करका आयु पूर्व कोडि वर्ष प्रमाण है सो पूर्व कोडि वर्षका आयु विनां और कुलकरनिका आयुकों समछेद विधान करि मिलाइए तब पल्यके दशलख कोडिका भाग दीजिये ऐसा होइ $प११११११११११११ \div १०००००००००००००००००$ । बहुरि सुगम अपवर्तन करनेकै अर्थि यामें पल्यका निवै लाख कोडिवां भाग प्रमाण ऋण मिलाइए पल्य १।९ बिंदी १३ सो समछेद करनेके अर्थि पूर्वराशिके भाज्य भागहारकों नव गुणां किए औसा होइ $प९९९९९९९९९९९९ \div ९$ बिंदी १३ या विपै ऋण प्रमाण जोड़े औसा होइ । $प \div ९$ बिंदी १३ बहुरि$

भाज्यकों तेरह बिंदीनि करि भाग हारकी तेरह बिंदीनिका अपवर्तन किए एक पत्यका नवमां भाग आया प १ बिंदी १३ ÷ ९ बिंदी १३ । बहुरि यामैं पूर्वे जो ऋण मिलाया था ताकूं ज्यूंका त्यूं घटाइ दिए एक पत्यका नवमां भागमें पत्यका निवै लाख कोड़िवां भाग घट्या औसैं सबनिका जोड़ किंचिदून पत्यका नवमां भाग प्रमाण हो है । अब याका जोड़का विधान करण सूत्र करि सावै है । अंत धणं गुण गुणियं आदि विहीणं रूऊणुत्तर भजियं । अंतका धन पत्यका दशवां भाग ताकौं गुणकार दशकरि गुणें पत्य भया । यामैं आदिका प्रमाण पत्य दशका लक्ष कोड़िवां भाग समछेद करि घटाएं औसा होइ प ९९९९९९९९९९९९९९ ÷ १ बिंदी १३ याकौं एक घाटि गुणकारका प्रमाण नवका भाग दीजिये तब औसा होइ प ९९९९९९९९९९९९९९ ÷ ९ बिंदी १३ इहां पूर्वोक्त प्रमाण ऋण मिलाएं औसा होइ प १ बिंदी १३ ÷ ९ बिंदी १३ याका अपवर्तन किए पत्य प १ ÷ ९ बिंदी १३ का नवमां भाग भया यामैं । पूर्वे मिलाया था ऋण सो घटाएं किंचिदून पत्य हो है । अब याका विधान अंक संदृष्टिविषै दिखावै हैं । राशिविषै ऋण घटाइ अवशेषकों भाग दिए जो पावै सोई तिस राशिविषै भागहारको अधिक करि भाग दिए पावै । सो इहां राशि साठिका चौथा भाग $\frac{६०}{१००}$ तामें वीसका चौथा भाग प्रमाण ऋण घटाएं चालीसका चौथा भाग रहै ताकौं अपनां भागहारका भाग दिए जो दश पाए सोई तिस राशि साठिका चौथा भाग विषै भागहारविषै दोय अधिक करि भाग दिए साठिका छठा भाग होइ सो इहां भी भाग दिए दश ही पाए । भागहार विषै अधिकका प्रमाण कैसैं जानिए ? ऋण राशिकों पाया राशिका भाग दिए जानिए सो इहां ऋण राशि वीसकों पाया राशि दशका भाग दिए दोय पाए सोई भागहारविषै अधिकका प्रमाण जानिए । बहुरि जो ऋणका प्रमाण न जानिए तौ भागहारविषै जेता अधिक होइ तीह करि लब्ध राशिकौं गुणें ऋणका प्रमाण जानिए । इहां अधिक दोयकौं लब्ध दश करि गुणें ऋण राशि वीस जाननां । सो इहां राशि पत्यका नवमां भागमैसौं पूर्वोक्त ऋण घटाइ अवशेषकों भाग दिए जो पावै सोई पाया राशिका भाग ऋण राशिकौं देइ जो पावै तितना अधिक भागहारका भाग राशिकौं दिए पावै औसा प्रयोजन जानना ॥ ७९६ ॥

आमैं तिन कुलकरनिका अंतरालका काल कहै है;—

पल्लासीदिममंतरमादिममवसेसमेत्थ दसभजिदा ।

जोगे बावत्तरिमं सयलजुदे अट्टमं हीणं ॥ ७९७ ॥

पत्याशीतिमंतरमादिममवशेषमत्र दशभक्तं ।

योगे द्वास्ततिः सकलयुते अष्टमो हीनः ॥ ७९७ ॥

अर्थ—पूर्व कुलकरका मरण भए पीछैं पिछला कुलकर जितने काल गए जनम धरे सो इहां अंतर काल जानना । सो चौदह कुलकरनिके तेरह अंतराल हैं । तिन विषै पहला अंतर पत्यका असीवां भाग प्रमाण है । प्रथम कुलकर भए पीछैं पत्यका असीवां भाग भए दूसरा कुल कर उपज्या है । औसैही अवशेष बारह अंतर दश दश गुणा भागहार करि भाजित पत्य प्रमाण जाननें । प १ ÷ ८०० । प १ ÷ ८००० । प १ ÷ ८०००० । प १ ÷ ८ ल प १ ÷ ८० ल ।

इनशशिताराश्रापदविभयं दंडादिसीमचिह्नकृति ।

तुरगादिवाहनं शिशुमुखदर्शननिर्भयं ब्रुवति ॥ ७९९ ॥

अर्थ—पहला कुलकर है सो प्रजानिकै ज्योतिरंग जातिके कल्प वृक्ष मंद होतैं सूर्य चंद्रमा दीखनें लगा तातैं उपजा जो भय ताकूं निवारै है । बहुरि दूसरा कुलकर तारा दीखनैतैं उपज्या भयकौं निवारै है । बहुरि तीसरा कुलकर जे मृग आदि जीव क्रूर भए तिनका घेरनेका उपाय करि भयकौं निवारै है । बहुरि चौथा कुलकर मृग आदि जीव अति क्रूर भए तिनका दंडादिक उपाय करि भयकौं निवारै है । बहुरि पांचवां कुलकर कल्प वृक्ष थोड़ा फल दैनैं लगे तहां प्रजानिकै परस्पर झगड़ा देखि सीमा जो अपनी अपनी मर्यादा ताकौं करै है । बहुरि छठा कुलकर कल्प वृक्ष बहुत मंद फल दैनैं लगे तहां प्रजानिकै तिस मर्यादा भए भी झगड़ा होतैं ते तिससीमा विषै चिह्न जो सहनानी ताकौं करै हैं । बहुरि सातवां कुलकर गमन करनेविषै घोड़ा आदि वाहनकौं करै है । बहुरि आठवां कुलकर बालकका जन्म भए पीछैं भी किछू काल माता पिता जीवनें लगे तहां बालकनिका मुख देखनेतैं भया जो भय तातैं निर्भयपणांकौं कहैं हैं ॥ ७९९ ॥

आशीवादादि ससिपहुदिहिं केलिं च कदिचिदिणओत्ति ।

पुत्तेहिं चिरं जीवण सेदुवहित्तादि तरणविहिं ॥ ८०० ॥

आशीवादादि शशिप्रभृतिभिः केलिं च कतिचिदिनांतम् ।

पुत्रैः चिरं जीवनं सेतुवहित्रादिभिः तरणविधिम् ॥ ८०० ॥

अर्थ—नवमां कुलकर बालक जनम भए पीछैं माता पिता बहुत काल जीवनें लगे तहां बालनिकै ताई आशीवादादिक दैनैं सिखावै हैं । बहुरि दशवां कुलकर बालक जनम भए पीछैं के-तेइक दिन पर्यंत माता पिता जीवनें लगे तहां बालकनि सहित चंद्रमा दिखावनां आदि केलि क्रीड़ाकौं यिस खावै हैं । बहुरि ग्यारहवां कुलकर बालक जन्म भए पीछैं माता पिता बहुत घनें काल जीवनें लगे ताका प्रजानिकै भय भया ताकौं निवारै हैं । बहुरि बारहवां कुलकर मेघवृष्टि होनेतैं नदी आदि जल स्थान भए तिनके तरणका विधान जिहाज नाव आदि बतवै हैं ॥ ८०० ॥

सिक्खंति जराउच्छिदिं णाभिविणासिंदचावतडिदादिं ।

चरिमो फलअकदोसहिभुत्तिं कम्मावणी तत्तो ॥ ८०१ ॥

शिक्षयति जरायुच्छिदिं नाभिविनाशं इंद्रचापतडिदादिं ।

चरमः फलाकृतौपधिभुक्तिं कर्मावनिस्ततः ॥ ८०१ ॥

अर्थ—तेरहवां कुलकर जरा सहित बालकनिका जनम होनें लगा तहां जरायुके छेदनेकौं सिखावै हैं । बहुरि अंतका कुलकर नाल सहित बालकनिका जनम होनें लगा तहां नाभि छेदनेकौं सिखावै है । अर इन्द्र धनुष वीजुरी इत्यादि होनें लगे तिनके देखनेतैं प्रजानिका उपज्या भयकौं निवारै है । अर वृक्षानिके फलनिकी आकृति विषै यह औषध है, यह भोजन योग्य है, इत्यादि सिखावै है । बहुरि इहांतैं परैं कर्मभूमि प्रवतै है ॥ ८०१ ॥

पुरगामपट्टणादी लोयियसत्थं च लोयववहारो ।

धम्मो वि दयामूलो विणिम्मियो आदिबम्हेण ॥ ८०२ ॥

पुरग्रामपट्टनादिः लौकिकशास्त्रः लोकव्यवहारः ।

धर्मोपि दयामूलः विनिर्मितः आदिब्रह्मणा ॥ ८०२ ॥

अर्थ—नगर ग्राम पत्तन आदि रचना अर लौकिक कार्य संबंधी शास्त्र अर असि मसि आदि लौकीक व्यवहार अर दया है मूल जाका अैसा धर्म सो आदि ब्रह्मा श्री वृषम तीर्थकर देव स्थापन कीया है ॥ ८०२ ॥

आगैं चौथा काल विषै उपजे जे शलाका पुरुष तिनकों निरूपै हैं;—

चउवीसवारतिघणं तित्थयरा छत्तिखंडभरहवई ।

तुरिए काले हॉति हु तेवट्टिसलागपुरिसा ते ॥ ८०३ ॥

चतुर्विंशतिः द्वादश त्रिघनः तीर्थकराः षट्त्रिखंडभरतपतयः ।

तुर्ये काले भवति हि त्रिषष्टिशलाकापुरुषास्ते ॥ ८०३ ॥

अर्थ—चौवीस तीर्थकर अर बारह षट्खंड भरतका पति चक्रवर्ती अर तीनका घन सत्ताईस त्रिखंड भरतका पति तहां नव नारायण नव प्रतिनारायण नव बलभद्र अैसैं ए तरेसठि शलाका पुरुष चौथे काल विषै हो हैं ॥ ८०३ ॥

आगैं तीर्थकरनिका शरीरका उत्सेध कहैं हैं;—

धणु तणुतुंगो तित्थे पंचसयं पण्ण दसपण्णकमं ।

अट्टसु पंचसु अट्टसु पासदुगे णवयसत्तकरा ॥ ८०४ ॥

धनूंषि तनुतुंगः तीर्थे पंचशतं पंचाशदशपंचोनक्रमः ।

अष्टसु पंचसु अष्टसु पार्श्वद्विकयोः नव सप्तकराः ॥ ८०४ ॥

अर्थ—तीर्थकरनिके शरीरकी उचाई क्रमतैं अैसैं धनुष प्रमाण है । पहला तीर्थकरके पांचसै बहुरि द्वितीयादि आठ कै पचास पचास घाटि ४५० । ४०० । ३५० । ३०० । २५० । २०० । १५० । १०० । बहुरि दशवां आदि पांचकै दश दश घाटि ९० । ८० । ७० । ६० । ५० । बहुरि पंद्रहवां आदि आठकै पांच पांच घाटि ४५ । ४० । ३५ । ३० । २५ । २० । १५ । १० । धनुष प्रमाण शरीर ऊंचा है । बहुरि पार्श्वद्विक विषै पार्श्व जिनका नव हाथ वर्द्धमान जिनका सात हाथ शरीर ऊंचा है ॥ ८०४ ॥

आगैं तीर्थकरनिका आयु गाथा दोय करि कहैं हैं;—

तिथाऊ चुलसीदीविहत्तरीसट्टि पणसु दसहीणं ।

बिगि पुव्वलक्खमेत्तो चुलसीदि विहत्तरी सट्टी ॥ ८०५ ॥

तीर्थायुः चतुरशीतिद्वासप्ततिषष्टिः पंचसु दशहीनं ।

द्वयेकं पूर्वलक्षमात्रं चतुरशीतिः द्वासप्ततिः षष्टिः ॥ ८०५ ॥

अर्थ—तीर्थकरनिका आयु क्रमत्तै चौरासीलाख पूर्व बहत्तरि लाख पूर्व साठि लाख पूर्व याते उपरि पांच तीर्थकरनिका दश दश घाटि लाख पूर्व सो पचास चाळीस तीस वीस दश लाख पूर्व बहुरि दोय लाख पूर्व एक लाख पूर्व बहुरि यातै उपरि चौरासी लाख वहत्तर लाख साठि लाख ॥ ८०५ ॥

तीसदसएकलखवा पणणवदीचदुरसीदिपणवण्णं ।

तीसं दसिगिसहस्सं सय वावत्तरिसमा कपसो ॥ ८०६ ॥

त्रिंशद्दशैकलक्षाणि पंचनवतिचतुरशीतिपंचपंचाशत् ।

त्रिंशत् दशैकसहस्रं शतं द्वासप्ततिसमाः क्रमशः ॥ ८०६ ॥

अर्थ—तीस लाख दस लाख एक लाख तातै उपरि पिच्याणत्रै हजार चौरासी हजार पचावन हजार तीस हजार दस हजार एक हजार बहुरि एक सौ अर बहत्तरि इतने वर्षे प्रमाण वृषभादि तीर्थकरनिका क्रमकरि आयु है ॥ ८०६ ॥

अब तीर्थकरनिका अंतराल गाथा सातकरि कहै हैं;—

उवहृणि पण्णकोडी सतिवासडमासपक्खया पढमं ।

अंतरमेत्तो तीसं दस णव कोडी य लक्खगुणा ॥ ८०७ ॥

उदधीनां पंचाशत्कोटिः सत्रिवर्षाष्टमासपक्षकः प्रथमं ।

अंतरमितः त्रिंशत् दश नव कोटिश्च लक्षगुणाः ॥ ८०७ ॥

अर्थ—पूर्व तीर्थकर पीछे पिछला तीर्थकर जेते काल पीछे होइ ताका नाम अंतरकाल है । सो पहला अंतर पचास कोडिसागर तीन वर्षे आठ महिना एक पक्ष प्रमाण है । इतने काल भए वृषभ देव पीछे अजित नाथ भए अैसे ही यातै उपरि क्रमत्तै तीस लाख कोडि सागर दश लाख कोडि सागर नव लाख कोडि सागर अंतर जाननां ॥ ८०७ ॥

दसदसभजिदा पंचसु तो कोडी सायराण सदहीणा ।

छव्वीससहस्ससमा छावट्टीलक्खण्णावि ॥ ८०८ ॥

दश दश भक्तानि पंचसु ततः कोटिः सागराणां शतहीना ।

षट्षिंशसहस्रसमा षट्षष्टिलक्षकेनापि ॥ ८०८ ॥

अर्थ—तातै उपरि पांचवां अंतरकौ आदि दैकरि पंच अंतरनि विषे नव लाख कोडि सागर दश दश करि भाजित तिनका निवै हजार कोडि नव हजार कोडि नव हजार कोडि नवसै कोडि निवै कोडि नव कोडि सागर प्रमाण जानना । तातै उपरि दशवां अंतर एकसौ सागर अर छयासठि लाख छवीसहजार वर्षकरि हीन एक कोडि सागर प्रमाण जाननां ॥ ८०८ ॥

चडवण्णतीसणवचउजलहितियं पल्लतिण्णिपादूणं ।

पल्लस्स दलं पादो सहस्सकोडीसमाहीणो ॥ ८०९ ॥

चतुःपंचाशत् त्रिंशन्नवचतुर्जलधित्रयं पल्यत्रयपादोने ।

पल्यस्य दलं पादः सहस्रकोटिसमाहीनः ॥ ८०९ ॥

अर्थ—तातैं उपरि ग्यारह्वां अंतर आदिक चौवन सागर तास सागर नव सागर च्यारि सागर प्रमाण है । बहुरि पंद्रह्वां अंतर पौंण पत्य घाटि तीन सागर प्रमाण है । सोलह्वां आधपत्य है । सत्तरह्वां हजार कोड़ि वर्ष घाटि चौथाई पत्य प्रमाण अंतर है ॥ ८०९ ॥

वस्सा कोडिसहस्सा चउवण्णछपंचलक्खवस्साणि ।

तेसीदिसहस्समदो सगसयपण्णाससंजुत्तं ॥ ८१० ॥

वर्षाणि कोटिसहस्राणि चतुष्पंचाशत् षट् पंचलक्षवर्षाणि ।

त्र्यशीतिसहस्रमतःसप्तशतपंचाशत्संयुक्तं ॥ ८१० ॥

अर्थ—तातैं उपरि अठारह्वां आदि अंतर हजार कोड़ि वर्ष चौवन लाख वर्ष छह लक्ष वर्ष पांच लाख वर्ष तियासी हजार सातसै पचास वर्ष प्रमाण है ॥ ८१० ॥

सदलबिसदं समातिय पक्खडमासूणमंतिमं तंतु ।

मोक्खंतरं सगाउगहीणं तमिणं जिणंतरयं ॥ ८११ ॥

सदलद्विशतं समात्रयं पक्षाष्टमासोनमंतिमं तंतु ।

मोक्षांतरं स्वकायुष्कहीनं तदिदं जिनांतरं ॥ ८११ ॥

अर्थ—बहुरि अंतका तेइसवां अंतर तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष हीन दोयसै पचास वर्ष ताका दोयसै छियालीस वर्ष तीन मास एक पक्ष प्रमाण है । जैसे यह चौवीस तीर्थकरनिकै वीचि तेईस अंतराल कहे ते ए सर्व मोक्षतैं मोक्षांतर जाननां । वृषभ देवके मोक्ष जानां अर अजितदेवके मोक्ष जानां इन दोऊनकै वीचि जितनां काल भया सो प्रथम अंतर जाननां । जैसे ही अन्य मोक्षतैं मोक्षांतर जाननै । बहुरि यह ही अंतर अपनां अपनां आयु करि हीन किए जिनतैं जिनकां अंतर जाननां । प्रथम अंतरका प्रमाण विषै अजित देवका आयुका प्रमाण घटाए प्रथम तीर्थकरका मुक्ति जाननां अर द्वितीय तीर्थकरका जनम होनां तिनकै वीचि कालका प्रमाण होइ । जैसे ही अन्य जिनतैं जिनांतर जाननै ॥ ८११ ॥

वीरजिणतित्थकालो इगिवीससहस्सवास दुस्समगो ।

इह सो तेत्तियभेत्तो अइदुस्समगोवि मिलिदव्वो ॥ ८१२ ॥

वीरजिनतीर्थकालः एकविंशतिसहस्रवर्षाणि दुःषमः ।

इह स तावन्मात्रः अतिदुःषमकोपि मेलयितव्यः ॥ ८१२ ॥

अर्थ—दुःखम नामा काल वीर तीर्थकरका तीर्थकाल है । सो इकईस हजार वर्ष प्रमाण है । बहुरि इहां अति दुःखम काल सो प्रसिद्ध रूप तितनाही इकईस हजार वर्ष मात्र है । सोभी मिलावना ॥ ८१२ ॥

तदिय तुरिण काले तिवासअडमासपक्खपरिसेसे ।

वसहो वीरो सिद्धो पुव्वे तित्थेयराउस्सं ॥ ८१३ ॥

तृतीये तुर्ये काले त्रिवर्षअष्टमासपक्षपरिशेषे ।

वृषभो वीरः सिद्धः पूर्वे तीर्थकरायुष्यं ॥ ८१३ ॥

अर्थ—तीसरा कालका तीन वर्ष आठ महीनां एक पक्ष अवशेष रहें वृषभ देव सिद्ध भए । बहुरि चौथा कालका सोई तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष अवशेष रहें वीर जिन सिद्धभए बहुरि पहला पहला तीर्थकरका अंतर विषै उत्तर उत्तर तीर्थकरका आयु प्रमाण तिष्ठै है औसा जाननां । पहला अंतर वृषभ देवका तीर्थकाल है । तामें उत्तर अजित जिनका आयु प्रमाणका संयुक्तपना जाननां । औसै ही अन्य जाननां । वीर जिन मुक्ति होनैका कालतैं चतुर्थ कालका अवशेष तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष सो पार्श्व तिनका अंतर विषै मिलाएं अढ़ाईसै वर्ष होइ अर और सर्व अंतर मिलाएं संतै एक कोड़ा कोड़ि सागर प्रमाण हो है ॥ ८१३ ॥

अब जिनधर्म उल्लेह होनेका काल कहै हैं;—

पल्लतुरियादि चय पल्लंतचउत्थूण पाद परकालं ।

ण हि सद्धम्मो सुविहीदु संतिअंते सगंतरए ॥ ८१४ ॥

पल्यतुर्यादिः चयः पल्यमंतं चतुर्थोनें पादपरकालं ।

न हि सद्धर्मः सुविधितः शांत्यंते सतांतरे ॥ ८१४ ॥

अर्थ—पल्यका चौथा भाग आदि अर तितनांही चय प्रतिस्थान वधनेका प्रमाण अर अंत विषै एक पल्य तातैं परै चौथाई चौथाई पल्य घाटि यावत चौथाई पल्य अंतविषै होइ इन प्रमाण कालनिविषै सुबुधि जो पुष्पदंत तातैं लगाय शांतिनाधपर्यंत सात अंतरनिविषै वक्ता श्रोता आचरनकरनेवालेनिकै अभावतैं समीचीन जैनधर्म नास्तिरूप हो है । **भावार्थ**—नवमां पुष्पदंत शीतलका अंतरविषै पाव पल्य शीतल श्रेयोका अंतरविषै आध पल्य श्रेयो वासपूज्यका अंतरविषै पौण पल्य वासुपूज्य विमलका अंतरविषै एक पल्य विमल अनंतका अंतरविषै पौण पल्य अनंत धर्मका अंतरविषै आधिपल्य धर्मशांतिका अंतरविषै पाव पल्यप्रमाण कालविषै जिनधर्मका अभाव चतुर्थकालमें भया है ॥ ८१४ ॥

चकी भरहो सगरो मघव सणकुमार संतिकुंथुजिणा ।

अरजिण सुभोममहापउमा हरिसेणजयब्रह्मदत्तक्खा ॥ ८१५ ॥

चक्रिणः भरतः सगरः मघवा सनत्कुमारः शांतिकुंथुजिनौ ।

अरजिनः सुभौममहापद्मौ हरिषेणजयब्रह्मदत्ताख्याः ॥ ८१५ ॥

अर्थ—भरत १ सगर १ मघवान् १ सनत्कुमार १ शांति जिन १ कुंथुजिन १ अर जिन १ सुभौम १ महापद्म १ हरिषेण १ जय १ ब्रह्मदत्त १ ए वारह चक्रवर्ती हैं ॥ ८१५ ॥

इनका वर्तनाकालकौं गाथा दोय करि कहै हैं;—

भरहदु वसहदुकाले मघवदु धम्मदुगअंतरे जादा ।

तिजिणा सुभोमचकी अरमल्लीणंतरे होदि ॥ ८१६ ॥

भरतद्वयं वृषभद्वयकाले मघवद्वौ धर्मद्वयांतरे जातौ ।

त्रिजिनाः सुभौमचकी अरमल्लयोरंतरे भवति ॥ ८१६ ॥

अर्थ—भरत सगर ए दोय तौ क्रमतेँ वृषभ अर अजित जिनके कालविषै भए । बहुरि मघवान् अर सनत्कुमार ए दोय धर्म शांति जिनके वीचि अंतर कालविषै भए । बहुरि शांति कुंथु अर ए तीन आप ही तीर्थकर भी भए तातेँ जिनांतर कहना न आवै । बहुरि सुभौमचक्री अर मल्लि जिनके वीचि अंतर कालविषै भए ॥ ८१६ ॥

मल्लिदुमज्जे णवमो मुणिसुव्वयणमिजिणंतरे दसमो ।

णमिदुविरहे जयक्खो बह्मो णेमिदुगअंतरगो ॥ ८१७ ॥

मल्लिद्वयमध्ये नवमो मुनिसुव्रतनमिजिनांतरे दशमः ।

नमिद्विविरहे जयाख्यो ब्रह्मो नेमिद्वयांतरगः ॥ ८१७ ॥

अर्थ—मल्लि मुनिसुवृतके मध्य अंतरविषै नवमां महापद्मचक्री भया । बहुरि मुनिसुवृत नमि जिनका अंतरविषै दशवां हरिषेण चक्री भया । बहुरि नमि नेमि जिनका अंतरविषै जयनामा चक्री भया नेमि पार्श्वका अंतरविषै ब्रह्मदत्त चक्री भया है ॥ ८१७ ॥

आगै चक्रवर्तिनिका शरीरका वर्ण उचाई तिनका आयु गाथा तीन करि कहै हैं;—

सव्वे सुवण्णवण्णा तद्देहुदआ धणूण पंचसयं ।

पण्णासूणं सदलं वादालिगिदालयं तालं ॥ ८१८ ॥

सर्वे सुवर्णवर्णा तद्देहोदयो धनुषां पंचशतं ।

पंचाशदूनं सदलं द्वाचत्वारिंशदेकचत्वारिंशत् चत्वारिंशत् ॥ ८१८ ॥

अर्थ—सर्व ही चक्रवर्ती सुवर्ण समान वर्ण संयुक्त हैं । बहुरि तिन भरतादि चक्रीनिके शरीरकी उचाई क्रमकरि पांचसै अर पचास घटी ताका साढा च्यारिसै अर आधा सहित वियालीस अर आधा सहित इकतालीस अर चालीस अर ॥ ८१८ ॥

पणतीस तीस अडदुवीसं पण्णरसगाउ चुलसीदि ।

बावत्तरिपुव्वाणं पणातिगिवासाणमिह लक्खा ॥ ८१९ ॥

पंचत्रिंशत् त्रिंशदष्ट द्विःखत्रिंशतिः पंचदशकमायुः चतुरशीतिः ।

द्वासप्ततिपूर्वाणां पंचत्रिकैकवर्षाणामिह लक्षाणि ॥ ८१९ ॥

अर्थ—पैंतीस अर तीस अर अठाईस अर वाईस अर बीस अर पंद्रह अर सात धनुषप्रमाण है । यातेँ पैं तिनका आयु क्रमतेँ कहिए है । चौरासी लाख पूर्व अर बहत्तरि लाख पूर्व अर पांच लाख अर तीन लाख अर एक लाख वर्ष प्रमाण । बहुरि ॥ ८१९ ॥

संवच्छरा सहस्सा पण्णउदी चउरसीदि सट्ठी य ।

तीसं दसयं तिदयं सत्तसया बम्हदत्तस्स ॥ ८२० ॥

संवत्सराः सहस्राः पंचनवतिः चतुरशीतिः षष्टिश्च ।

त्रिंशत् दशकं त्रितयं सप्तशतानि ब्रह्मदत्तस्य ॥ ८२० ॥

अर्थ—पिच्याणवै हजार अर चौरासी हजार अर साठि हजार अर तीस हजार अर दश हजार हजार अर तीन हजार वर्ष अर ब्रह्मदत्तका सातसै वर्ष प्रमाण आयु है ॥ ८२० ॥

आगँ तिन चक्रवर्तीनिकै नवनिधि हो हैं तिनके नाम कहै;—

कालमहाकालमाणवपिंगलणैसर्पपउमपांडु तदो ।

संखो णाणारयणं णवणिहिओ दैति फलभेदं ॥ ८२१ ॥

कालमहाकालमाणवकपिंगलणैसर्पपउमपांडुस्ततः ।

शंखः नानारवः नवनिधयः ददति फलमेतत् ॥ ८२१ ॥

अर्थ—काल १ महाकाल १ माणवक १ पिंगल १ नैसर्प १५ पद्म १ पांडु १ शंख नाना रत्न १ ए नव निधि हैं । ते ए आगँ कहिए है फल ताकौं देवें हैं ॥ ८२१ ॥

आगँ नवनिधिनिकरि दिया हुवा फलकौं कहै हैं;—

उडु जोग्गकुसुमदामप्पहुदिं भाजणयमाउहाभरणं ।

गेहं वत्थं धणं तूरं वहुरयणमणुकमसो ॥ ८२२ ॥

ऋतुयोग्यकुसुमदामप्रभृति भाजनायुधाभरणं ।

गेहं वस्त्रं धान्यं तूर्यं बहुरत्नमनुक्रमशः ॥ ८२२ ॥

अर्थ—ते कालादिक निधि अनुक्रमतै ऋतु योग्य पुष्पमाल आदि वस्तुकों बहुरि भाजनकों बहुरि आयुधकों बहुरि आभरणकों बहुरि मंदिरकों बहुरि वस्त्रकों बहुरि धान्यकों बहुरि वाजित्रकों बहुरि बहुत प्रकार रत्नकों देवें हैं । भावार्थ—निधि आठ पद्या सहित गाढोकै आकारि हैं इनमैसौं ए वस्तु निकासिए हैं ॥ ८२२ ॥

आगँ तिनके चौदह रत्ननिका संज्ञा पूर्वक उपजनेका स्थान कहै हैं;—

सेणगिहथवदि पुरहो गयहयजुवई हवंति वेयड्डे ।

सिरिगेहे कागिणिमणिचम्माउहगेसिदंडछत्रमरो ॥ ८२३ ॥

सेनागृहस्थपतिः पुरोधा गजो हयो युवतिः भवंति विजयार्थं ।

श्रीगेहे काकिणीमणिचर्मायुधके असिदंडछत्रमरः ॥ ८२३ ॥

अर्थ—सेनापति सेनाका नायक अर ग्रहपति भंडारी अर स्थपति कारीगर अर पुरोधाः पुरोहित अर गज हाथी अर हय घोड़ो अर युवति स्त्री ए रत्न विजयार्थ पर्वत विषै उपजै हैं । बहुरि वृष-भाचलनि विषै नाम लिखने आदिको कारण काकिणी रत्न अर गुफा विषै उज्जास आदिको कारण चूड़ामणि रत्न अर सेनाकों म्लेच्छराज कृत जलवाधानिवारण आदिको कारण चर्म रत्न ए तीन श्रीदेवीका मंदिरविषै उपजै हैं । बहुरि असि खड्ग अर दंड गुफा द्वार उद्घाटन आदिको कारण अर छत्र उपरिम बाधा निवारण आदिको कारण अर चक्र रत्न वैरीनिका अभावको कारण ए च्यारि रत्न आयुधशालाविषै उपजै हैं ॥ ८२३ ॥

आगँ तिनके गतिविशेष कहै हैं;—

मघवं सणकुमारो सणकुमारं सुभोम बम्हा य ।

सत्तमपुढर्वि पत्ता मोक्खं सेसहचक्कहरा ॥ ८२४ ॥

मघवान् सनत्कुमारः सनत्कुमारं सुभौमो ब्रह्मश्च ।

सतमपृथिवीं प्राप्तौ मोक्षं शेषाष्टचक्रधराः ॥ ८२४ ॥

अर्थ—मघवान् सनतकुमार ए दोय तौ सनतकुमार नामा स्वर्गको प्राप्त भए । बहुरि सुभौम ब्रह्मदत्त ए दोय सातवीं नरक पृथ्वीको प्राप्त भए । बहुरि अवशेष आठ चक्री मोक्ष पदको प्राप्त भए ॥ ८२४ ॥

अब अर्द्ध चक्री नारायण तिनके नाम कहैं हैं;—

तिविद्दुविद्वसयंभू पुरिसुत्तमपुरिससिंहपुरिसादी ।

पुंडरियदत्त नारायण किण्हो अद्भुत्तकहरा ॥ ८२५ ॥

त्रिपृष्टद्विपृष्टस्वयंभूः पुरुपोत्तमः पुरुपसिंहः पुरुपादिः ।

पुंडरीकदत्तः नारायणः कृष्णः अर्धचक्रधराः ॥ ८२५ ॥

अर्थ—त्रिपृष्ट १ द्विपृष्ट १ स्वयंभू १ पुरुपोत्तम १ पुरुपसिंह १ पुरुप पुंडरीक १ पुरुप दत्त १ नारायण (लिछमन) १ कृष्ण १ ए नव अर्द्ध चक्री हैं । इहां प्रसंग पाइ बलभद्र नारायणनिके आयुध रत्न कहिए हैं । असि १ शंख १ धनुष १ चक्र १ मणि १ शक्ति १ गदा १ ए सात नारायणके आयुध रत्न हैं । बहुरि रत्ननिकी माला १ हल १ मुसील १ गदा १ ए च्यारि बलभद्रके आयुध रत्न हैं ॥ ८२५ ॥

आगैं तिन नारायणनिका वर्त्तनाकाल कहैं हैं । जो नारायणनिका वर्त्तनाकाल सोई बलभद्र वा प्रतिनारायणका वर्त्तना काल क्रमतैं जाननां;—

सेयादिपणसु हरिपण छट्टरदुगविरह मल्लिदुगमज्जे ।

दत्तो अष्टम सुव्वयदुगविरहे णेमिकालजो किण्हो ॥ ८२६ ॥

श्रेयोआदिपंचसु हरिपंच पष्टः अरद्विकविरहे मल्लिट्टिकमध्ये ।

दत्तः अष्टमः सुव्रतद्वयविरहे नेमिकालजः कृष्णः ॥ ८२६ ॥

अर्थ—श्रेयो जिन आदि पांच तीर्थकरनिधिपै क्रमतैं त्रिपृष्ट आदि पांच नारायण भए हैं । बहुरि छठा पुरुप पुंडरीक नारायण अरहमल्ल तीर्थकरनिका अंतरधिपै भया है । बहुरि पुरुपदत्त है सो मल्लि मुनिसुव्रतके मध्य अंतरधिपै भया है । बहुरि आठवैं नारायण मुनिसुव्रत नमि जिनका विरहकाल जे अंतर तीर्थविपै भया है । बहुरि कृष्ण है सो नेमीश्वर जिनका कालधिपै उपज्या है ॥ ८२६ ॥

आगैं बलभद्र प्रतिनारायणनिका नाम गाथा दोय करि कहैं हैं;—

बलदेवा विजयाचलसुधम्मसुप्पहसुदंसणा णंदी ।

तो णंदिमित्त रामा पउमा उवरिं तु पडिसत्तू ॥ ८२७ ॥

बलदेवाः विजयाचलसुधर्मसुप्रभसुदर्शना नंदी ।

ततो नंदिमित्रः रामः पद्मः उपरि तु प्रतिशत्रवः ॥ ८२७ ॥

अर्थ—विजय १ अचल १ सुधम्म १ सुप्रभ १ सुदर्शन १ नंदी १ नंदिमित्र १ राम १ पद्म १-असैं ए नव बलदेव हैं ॥ ८२७ ॥

बहुरि यातैं उपरि तिन नारायण बलिभद्रनिके प्रतिशत्रु जे प्रति नारायण ते कहिए हैं;—

अस्सग्गीओ तारय मेरयय णिसुंभ कइडहंत महु ।

बलि पहरण रावणया खचरा भूचर जरासंधो ॥ ८२८ ॥

अश्वप्रीवः तारकः मेरकश्च निशुंभः कैटभांतो मधुः ।

बलिः प्रहरणः रावणः खचराः भूचरो जरासंधः ॥ ८२८ ॥

अर्थ—अश्वप्रीव १ तारक १ मेरक १ निशुंभ १ मधुकैटभ १ बलि १ प्रहरण १ रावण १ ए आठ तौ विद्याधर हैं। अर जरासिंध भूमि गोचरी है। अंसैं ए नव प्रतिनारायण हैं ॥ ८२८ ॥
आगैं बलदेव आदि तीनोंका उत्सेध समान है सो कहैं हैं;—

देहुदओ चापाणं सीदी तिसु दसयहीण पणदालं ।

णवदुगवीसं सोलं दस बलकेसव ससत्तूणं ॥ ८२९ ॥

देहोदयः चापानां अर्शातिः त्रिषु दशहीनं पंचचत्वारिंशत् ।

नवद्विकविंशतिः षोडश दश बलकेशवानां सशत्रूणां ॥ ८२९ ॥

अर्थ—शत्रु जो प्रतिनारायण तिन सहित बलिभद्र अर नारायण तिनका समान शरीरका उच्चत्व प्रथमादिकका क्रमतैं असी धनुष बहुरि तीन विपैं दश दश घाटि ताके सत्तरि साठि पचास धनुष बहुरि पैतालीस गुणतीस वाईस सोला दश धनुष प्रमाण है ॥ ८२९ ॥

आगैं नारायण वा प्रतिनारायणनिका समान आयु हैं ताकौं कहैं हैं;—

सम चुलसीदि बहत्तरि सट्ठी तीस दस लख पणसट्ठी ।

वत्तीसं वारकें सहस्समाउस्मसद्धचक्रीणं ॥ ८३० ॥

समा चतुरशीतिः द्वासप्ततिः षष्टिः त्रिंशत् दश लक्षाणि पंचषष्टिः ।

द्वात्रिंशत् द्वादशैकं सहस्रं आयुष्यमर्धचक्रिणाम् ॥ ८३० ॥

अर्थ—अर्ध चक्री जे नारायण वा प्रतिनारायण तिन प्रथमादिकका आयु क्रमतैं चौरासी लाख वर्ष बहत्तर लाख वर्ष साठि लाख वर्ष तिस लाख वर्ष दश लाख वर्ष पैसठि हजार वर्ष वत्तीस हजार वर्ष बारह हजार वर्ष एक हजार वर्ष प्रमाण है ॥ ८३० ॥

आगैं बलदेवनिका आयु कहैं हैं;—

सगसीदि दुसु दसूणं सगतीसं सत्तरससमा लखवा ।

सगसट्ठीतीस सत्तर सहस्स वारसयमाउ बले ॥ ८३१ ॥

सप्ताशीतिः द्वयोः दशोनं सप्तत्रिंशत् सप्तदश समा लक्षाणि ।

सप्त षष्टिः त्रिंशत् सप्तदश सहस्रं द्वादशशतमायुः बले ॥ ८३१ ॥

अर्थ—बलदेवनिका आयु प्रथमादिकके क्रमतैं सित्यासी लाख बहुरि दोयविषै दश दश घाटि ताके सत्तहत्तरि लाख अर सप्तसठि लाख बहुरि सैंतीसलाख सतरह लाख सप्तसठि हजार सैंतीस हजार सतरह हजार बारहसै वर्ष प्रमाण है ॥ ८३१ ॥

आगैं नारायणादि तीन जिस गतिकों प्राप्त भए ताहि गाथा दोय करि कहैं हैं;—

पहमो सत्तमिमण्णे पण छट्ठी पंचमिं गदो दत्तो ।

णारायणो चउत्थीं कसिणो तदियं गुरुयपावा ॥ ८३२ ॥

प्रथमः सप्तमीमन्ये पंच षष्ठीं पंचमीं गतो दत्तः ।

नारायणः चतुर्थीं कृष्णः तृतीयां गुरुपापात् ॥ ८३२ ॥

अर्थ—पहला त्रिपृष्ठ सातवीं नरक पृथ्वीको प्राप्त भया द्वितीयादि पांच नारायण छठी पृथ्वीको प्राप्त भए । पुरुषदत्त पांचवीं पृथ्वीको प्राप्त भया नारायण चौथी पृथ्वीको प्राप्त भया । कृष्ण तीसरी पृथ्वीको प्राप्त भए । ऐसैं ए नारायण महत् पापतैं नरक पृथ्वीको प्राप्त भए हैं ॥ ८३२ ॥

णिरयं गया पडिरिवो बलदेवा मोक्खमट्ट चरिमो दु ।

बह्मं कप्पं किण्हे तित्थयरे सोवि सिज्जेदि ॥ ८३३ ॥

निरयं गताः प्रतिरिपवो बलदेवा मोक्षं अष्ट चरमस्तु ।

ब्रह्म कल्पं कृष्णे तीर्थकरे सोपि सेत्स्यति ॥ ८३३ ॥

अर्थ—इनके प्रतिबैरी प्रतिनारायण तेऊ तिस नारायणको प्राप्त भई जो जो नरक पृथ्वीको प्राप्त भए हैं । बहुरि बलदेव आदिके आठ तौ मोक्ष पदको प्राप्त भए हैं । अंतका नौमा पद्य नामा वलिभद्र ब्रह्म स्वर्गको प्राप्त भया । सोभी कृष्ण नारायणका जीव तीर्थकर होसी तिस समय सिद्ध पदको पासी ॥ ८३३ ॥

आगैं नारदनिके नामादिक गाथा दोय करि कहैं हैं;—

भीम महभीम रुद्रा महरुहो कालओ महाकालो ।

तो दुम्मुह णिरयमुहा अहोमुहो णारदा एदे ॥ ८३४ ॥

भीमो महाभीमः रुद्रो मारुद्रो कालो महाकालः ।

ततो दुर्मुखो निरयमुखः अधोमुखो नारदा एते ॥ ८३४ ॥

अर्थ—भीम १ महाभीम १ रुद्र १ मारुद्र १ काल १ महाकाल १ दुर्मुख १ नरक मुख १ अधोमुख १ ऐसैं ए नव नारद हैं ॥ ८३४ ॥

कलहप्पिया कदाइं धम्मरदा वासुदेवसमकाला ।

भव्वा णिरयगदिं ते हिंसादोसेण गच्छंति ॥ ८३५ ॥

कलहप्रियाः कदाचिद्धर्मरताः वासुदेवसमकालाः ।

भव्याः नरकगतिं ते हिंसादोषेण गच्छंति ॥ ८३५ ॥

अर्थ—ए नारद कलह जिनको प्यारा जैसे हैं । बहुरि कदाचित् धर्मविषै भी रत हैं । बहुरि नारायणादि होतैं ए हो हैं । तातैं नारायण समान है वर्तनाकाल जिनका जैसे हैं । बहुरि भव्य हैं । परंपरा मुक्तिगामी हैं । बहुरि ते नारद हिंसादोष करि नरक गति ही को प्राप्त हो हैं ॥ ८३५ ॥

अब रुद्रनिकी संज्ञा पूर्वक संख्या कहैं हैं;—

भीमावलि जिदस रुद्र विशालणयण सुष्पदिद्वचला ।
तो पुंडरीय अजितंधर जिदणाभीय पीठ सच्चइजो ॥ ८३६ ॥

भीमावलिः जितशत्रुः रुद्रः विशालनयनः सुप्रतिष्ठोऽचलः ।
ततः पुंडरीकः अजितंधरो जितनाभिः पीठः सत्यकिजः ॥ ८३६ ॥

अर्थ—भीमावलि १ जितशत्रु १ रुद्र १ विशाल नयन १ सुप्रतिष्ठ १ चल १ पुंडरीक १ अजितंधर १ जित नाभि १ पीठ १ सत्यक्यतनय ऐसें ए ग्यारह रुद्र हैं ॥ ८३६ ॥

आगैं तिनका वर्तनाकाल कहैं हैं;—

उसहदुकाले पढमदु सत्तण्णे सत्तसुविहिपहुदीसु ।
पीढो संतिजिणिंदे वीरे सच्चइसुदो जादो ॥ ८३७ ॥
वृषभद्विकाले प्रथमद्वौ सप्तान्ये सप्तसुविधिप्रभृतिषु ।
पीठः शांतिजिनेद्रे वीरे सत्यकिमुतो जातः ॥ ८३७ ॥

अर्थ—वृषभ अजित जिननिके कालनि विषै क्रमतैं पहला अर दूसरा रुद्र भया । बहुरि तातैं परैं अन्य तृतीयादि सात रुद्र ते पुष्पदंतादि सात तीर्थकरनिका कालनिविषै क्रमतैं भए । बहुरि पीठ रुद्र शांति जिनेद्रका काल विषै भया ॥ ८३७ ॥

आगैं तिनके शरीरका उत्सेध कहैं हैं;—

पण्णसय पण्णुणसयं पंचसु दसहीणमद्व चउवीसं ।
त्कायधणुस्सेहो सच्चइतणयस्स सत्तकरा ॥ ८३८ ॥
पंचशतं पंचाशदूनशतं पंचसु दशहीनं अष्ट चतुर्विंशतिः
त्कायधनुरुत्सेधः सत्यकितनयस्य सप्तकरः ॥ ८३८ ॥

अर्थ—तिन रुद्रनिके शरीरका उच्चत्व क्रमतैं पांचसै धनुष अर ते पचास घाटि ताके ध्यारि सै पचास धनुष बहुरि सौ धनुष बहुरि पांच विषै दश दश घाटि ताकै निवै असी सत्तरि साठि पचास धनुष बहुरि अठाईस धनुष चौबीस धनुष, बहुरि सत्यकितनयका सात हाथ प्रमाण है ॥ ८३८ ॥

आगैं तिन रुद्रनिका आयु कहैं हैं;—

तेसीदिगिसत्तरि बिगि लक्खापुव्वाणि वासलक्खाओ ।
चुलसादि सट्टि दसु दसहीणदलिगि वस्सणवसट्टी ॥ ८३९ ॥
व्यशातिरेकसप्ततिः द्वयेकं लक्षपूर्वाणि वर्षलक्षानि ।
चतुरशीतिः षष्टिः द्वयोः दशहानदीलैकं वर्षनवषष्टिः ॥ ८३९ ॥

अर्थ—तिन रुद्रनिका आयु क्रमकरि तियासी लाख पूर्व इकहत्तरि लाख पूर्व, दोय लाख पूर्व, एक लाख पूर्व, चौरासी लाख, साठि लाख अर दोय विषै दश दश घाटि ताके पचास लाख चालीस लाख बहुरि ताके आवे बीस लाख बहुरि एक लाख बहुरि गुणहत्तरि वर्ष प्रमाण है ॥ ८३९ ॥

आगै तिन रुद्रनि करि प्राप्त भई गतिकों कहै हैं;—

पढमदु माघविमण्णे पण मघविं अट्टमो दु रिट्टमहिं ।

दो अंजणं पवण्णा मेघं सच्चइतणु जादो ॥ ८४० ॥

प्रथमद्वौ माघवीमन्ये पंच मघवीमष्टमस्तु अरिष्टमहीं ।

द्वौ अंजनां प्रपन्नौ मेघां सत्यकितनुर्जातः ॥ ८४० ॥

अर्थ—तिन रुद्रनि विषै पहला दूसरा तौ माघवी नामा सप्तम नरक पृथ्वीकों प्राप्त भय अन्य तृतीयादि पांच मघवी छठीं पृथ्वीकों प्राप्त भए । आठवां अरिष्टा पांचवीं पृथ्वीकों प्राप्त भया । तातैं परैं नवमां दशवां ए दोय अंजना चौथी पृथ्वीकों प्राप्त भए । सत्यकितनय मेघा तीसरी पृथ्वीकों प्राप्त भया है ॥ ८४० ॥

आगै तिन रुद्रनिका विशेष स्वरूप कहै हैं;—

विज्जाणुवादपठणे दिट्टफला णट्टसंजमा भव्वा ।

कदिचि भवे सिज्झंति हु गहिदुज्झियसम्ममाहिमादो ॥ ८४१ ॥

विद्यानुवादपठने दृष्टफला नष्टसंयमा भव्याः ।

कतिचिद्भवेपु सिध्यंति हि गृहीतोच्चितसम्यमहिम्नः ॥ ८४१ ॥

अर्थ—ते रुद्र विद्यानुवाद नामा पूर्वका पठन होतैं इह लोक संबंधी फलके भोक्ता भए । बहुरि नष्ट भया है अंगीकार किया हुवा संजम जिनका अंसे हैं । बहुरि भव्य हैं ते प्रहि करि छोड्या जो सम्यक्त्व ताके महात्म्यतें केते इक पर्याय भणं सिद्ध पद पावहिंगे ॥ ८४१ ॥

आगै चक्री अर्द्ध चक्री रुद्र इनका वर्तना कालकों बहुरि रचना विशेष करि युगपत पांच गाथानि करि कहै हैं;—

जिणसमकोट्टविदा समकाले सुण्णहेट्ठिमे रचिदा ।

उहयजिणंतरजादा सण्णेया चक्किहरिरुदा ॥ ८४२ ॥

जिनसमकोट्टस्थापिताः समकाले शून्याधस्तते रचिताः ।

उभयजिनांतरजाता संज्ञेया चक्किहरिरुद्राः ॥ ८४२ ॥

अर्थ—जिनदेवनिका समान कोठानि विषै स्थापित किए चक्री अर्द्ध चक्री रुद्र ते तिनके समान काल विषै भए जाननैं । बहुरि शून्यकें नीचै स्थापे ते दोय जिननिके अंतर विषै भए जाननैं । भावार्थ—ब्यारि पंक्ति करि एक एक पंक्ति विषै चौतीस चौतीस कोटे करिए । तहां प्रथम पंक्ति विषै आगै जैसे कहिए हैं तैसें क्रमतैं जिनका वा शून्यका स्थापन करनां सो जिस कोष्ट विषै जिन स्थापन किया ताकै नीचै तीन पंक्ति कोठानि विषै जो चक्री अर्द्ध चक्री रुद्र स्थापन किए तैतौ चक्री आदि तिन जिननिके काल विषै भए जाननैं । बहुरि जो नीचले कोठानि विषै शून्य स्थापन करी तो आदिका चक्री तहां अभाव जाननां बहुरि जिस ऊपरला कोठा विषै शून्य स्थापन किया ताकै नीचै जो चक्री आदि स्थापे तो तिन पिछला आगिला दोय जिननिका बीचि अंतर काल विषै ते चक्री आदि भए जाननैं । बहुरि जो शून्य स्थापन किया तौ जहां तिनका अभाव जाननां ॥ ८४२ ॥

आगैं तिन कोष्टानके स्थापनेका क्रम कैसे है सो कहैं हैं;—

पण्णर जिण खदु तिजिणा सुण्णदु जिण गगणजुगल जिण खदुगं ।

जिण खं जिण खं दुजिणा इदि चोत्तीसालया णेया ॥ ८४३ ॥

पंचदश जिनाः खद्वयं त्रिजिनाः शून्यद्वयं जिनाः गगनयुगलं जिनः खद्वयं ।

जिनः खंजिनः खं द्विजिनौ इति चतुस्त्रिंशदालया ज्ञेयाः ॥ ८४३ ॥

अर्थ—वृषभादि पंद्रह जिन तातैं आगैं दोय शून्य तातैं आगैं तीन जिन आगैं शून्य दोय आगैं जिन आगैं शून्य आगैं जिन आगैं शून्य आगैं जिन आगैं शून्य आगैं दोय जिन आगैं जैसे क्रम करि चौतीस कोठे प्रथम पंक्ति विषै जाननां ॥ ८४३ ॥

ताकै नीचे दूसरी पंक्ति विषै कहा सो कहैं हैं ।

चक्किदु तेरस सुण्णा छच्चक्की गयणातिदय चक्की खं ।

चक्की णभदुग चक्की गयणं चक्कहर सुण्णदुगं ॥ ८४४ ॥

चक्किद्वौ त्रयोदश शून्यानि षट्चक्रिणः गगनत्रितयं चक्की खं ।

चक्की नभोद्विकं चक्की गगनं चक्रधरः शून्यद्वयं ॥ ८४४ ॥

अर्थ—चक्की दोय तातैं आगैं तेरह शून्य तातैं आगैं छह चक्की आगैं शून्य तीन आगैं चक्की आगैं शून्य आगैं चक्की आगैं शून्य दोय आगैं चक्की आगैं शून्य आगैं चक्की आगैं शून्य दोय जैसे क्रम करि द्वितीय पंक्ति विषै कोष्ट जाननें ॥ ८४४ ॥

दसगयणपंचकेसवल्लस्सुण्णा पउमणाभणभविण्हू ।

गयणाति केसव सुण्णदु मुरारि सुण्णत्तियं कमसो ॥ ८४५ ॥

दशगगनं पंचकेशवाः षट्शून्यानि पद्मनाभनभोविष्णुः ।

गगनत्रयं केशवः शून्यद्वयं मुरारिः शून्यत्रयं क्रमशः ॥ ८४५ ॥

अर्थ—तीसरी पंक्तिविषै दशशून्य तातैं आगैं पांच नारायण आगैं छह शून्य आगैं एक नारायण आगैं शून्य आगैं नारायण आगैं शून्यतीन आगैं नारायण आगैं शून्यदोय आगैं नारायण आगैं शून्य तीन जैसे क्रमकरि कोष्ट स्थापन करनें ॥ ८४५ ॥

रुदुदुगं छस्सुण्णा सत्त हरा गयणजुगलमीसाणो ।

पण्णर णभाणि तत्तो सच्चइतणओ महावीरे ॥ ८४६ ॥

रुद्रद्विकं षट्शून्यानि सप्तहराः गगनयुगलमीशानः ।

पंचदशानभांसि ततः सत्यकीतनयः महावीरे ॥ ८४६ ॥

अर्थ—चौथी पंक्तिविषै रुद्र दोय तातैं आगैं छह शून्य तातैं आगैं सात रुद्र आगैं शून्य दोय आगैं रुद्र आगैं पंद्रह शून्य आगैं सत्यकितनय नामा रुद्र श्री महावीर जिनका काल चौतीसवां कोठाविषै हैं । जैसे क्रम करि स्थापन करनें । आगैं च्यारि पंक्तिके कोष्टनि करि वर्तना काल जाननां ॥ ८४६ ॥

आगैं तीर्थकरानिके शरीरका वर्णादिक अर तिनका वंश गाथा तीन करि कहैं हैं;—

पउमप्पहवसुपुज्जा रत्ता धवला हु चंदपहसुविही ।
 णाला सुपासपासा णेमीसुणिसुव्वया किण्हा ॥ ८४७ ॥
 पद्मप्रभवसुपूज्यां रक्तौ धवलौ हि चंद्रप्रभमुविधी ।
 नीलौ सुपार्श्वपार्श्वौ नेमिसुनिमुव्रतौ कृष्णौ ॥ ८४७ ॥

अर्थ—पद्मप्रभ वासुपूज्य ए दोय रक्त वर्ण हैं । बहुरि चंद्रप्रभ पुष्पदंत ए दोय श्वेत वर्ण हैं । बहुरि सुपार्श्व पार्श्व ए दोय नील वर्ण हैं । बहुरि नेमि मुनिमुव्रत ए दोय कृष्ण वर्ण हैं ॥ ८४७ ॥

सेसा सोलस हेमा वसुपुज्जो मल्लिणेमिपासजिणा ।
 वीरो कुमारसवणा महवीरो णाहकुलतिलओ ॥ ८४८ ॥
 शेपाः षोडश हेमा वासुपूज्यो मल्लिनेमिपार्श्वजिनाः ।
 वीरः कुमारश्रमणा महावीरो नाथकुलतिलकः ॥ ८४८ ॥

अर्थ—अवशेष सोलह तीर्थकर मुवर्ण समान वर्ण धरें हैं । बहुरि वामपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व वर्द्धमान ए पांच तीर्थकर कुमार श्रमण हैं । विना विवाह किं दीक्षा ग्रहण किया है । अवशेष उगणीस तीर्थकर विवाह राज भए पीछें दीक्षा ग्रहण किया है । बहुरि महावीर तौ नाथ वंशके तिलक हैं ॥ ८४८ ॥

पासो हु उग्गवंसो हरिवंसो सुव्वओ वि णेमीसो ।
 धम्मजिणो कुंथु अरा कुरुजा इक्खाउया सेसा ॥ ८४९ ॥
 पार्श्वस्तु उप्रवंशः हरिवंश सुव्रतोपि नेमीशः ।
 धर्मजिनः कुंथुः अरः कुरुजाः इक्ष्वाकवः शेपाः ॥ ८४९ ॥

अर्थ—बहुरि पार्श्वजिन उप्रवंशी हैं । मुनिमुव्रत नेमि हरिवंशी हैं । धर्म कुंथु अर जिन कुरुवंशविषे उपजे हैं । अवशेष सतरह तीर्थकर इक्ष्वाकु वंशविषे उत्पन्न हैं ॥ ८४९ ॥

अब शक अर कल्कीकी उत्पत्ति कहैं हैं;—

पणलस्सयवस्सं पणमासजुदं गमिय वीरणिव्वुइदां ।
 सगराजो तो कक्की चटुणवतियमहियसगमासं ॥ ८५० ॥
 पंचषट्शतवर्षे पंचमासयुतं गत्वा वीरनिवृत्तेः ।
 शकराजो ततः कल्की चतुर्णवत्रिकमधिकसप्तमासं ॥ ८५० ॥

अर्थ—श्री वीरनाथ चौबीसवां तीर्थकरको मोक्ष प्राप्त होनेतैं पाँचै छस पांच वर्ष पांच मास सहित गए विक्रम नाम शक राजा हो है । बहुरि तातैं उपरि च्यारि नव तीन इन अंकनि करि तीनसै चौराणवै वर्ष अर सात मास अधिक गए कल्की हो है ॥ ८५० ॥

अब कल्कीका कार्य गाथा छह करि कहैं हैं;—

सो उम्मग्गाहिमुहो चउम्मुहो सदरिवासपरमाऊ ।
 चालीस रज्जओ जिदभूमी पुच्छइ समंतिगणं ॥ ८५१ ॥

स उन्मार्गाभिमुखः चतुर्मुखः सप्ततिवर्षपरमायुष्यः ।

चत्वारिंशत् राज्यः जितभूमिः पृच्छति स्वमंत्रिगणं ॥ ८५१ ॥

अर्थ—सो कल्की उन्मार्ग जो विपरीत आचरण तीह विषै सन्मुख है । बहुरि चतुर्मुख जाका नाम है । बहुरि सत्तरि वर्ष प्रमाण जाका परम आयु है । तीह विषै चालीस वर्ष प्रमाण राज्य करै है । बहुरि सो कल्की जीता है पृथ्वी जानै ऐसा होत संता अपनै मंत्रिके समूहको ऐसै पूछे है ॥ ८५१ ॥

अम्हाणं के अवसा णिगंथा अत्थि केरिसायारा ।

णिद्धणवत्था भिक्खाभोजी जहसत्थमिदिवयणे ॥ ८५२ ॥

अस्माकं के अवशा निर्ग्रथाः संति कीदृशाकाराः ।

निर्धनवस्त्रा भिक्षाभोजिनः यथाशास्त्रमिति वचने ॥ ८५२ ॥

अर्थ—हमारे वश नाही ऐसा कौन है ? तब मंत्री कहै हैं । निर्ग्रथ जैन गुरु अवश हैं । तब बहुरि कल्की पूछै है । ते कैसे आकारि हैं ? तब मंत्री कहै है धन वस्त्र रहित हैं । शास्त्र अनुसारि भिक्षा वृत्ति करि भोजन करै हैं । ऐसा मंत्रीका प्रतिवचन सुणि ॥ ८५२ ॥

कहा सो कहै हैं;—

तत्पाणिउडे णिवडिद पढमं पिंडं तु सुक्कमिदि मेज्झं ।

इदि णियमे सचिवकदे चत्ताहारा गया मुणिणो ॥ ८५३ ॥

तत्पाणिपुटे निपतितं प्रथमं पिंडं तु शुल्कमिति प्राढं ।

इति नियमे सचिवकृते त्यक्ताहारा गताः मुनयः ॥ ८५३ ॥

अर्थ—तिन निरग्रथनिका पाणिपात्र विषै स्थापित किया पहला पिंड प्राप्त सो शुल्क है हांसिल है । जैसे करि सो प्रथम पिंड ग्रहण करना जैसे राजाके मंत्रिनि सहित नियम किए संते आहार समय तैसे ही करने करि छोड्या है आहार जिनिनै जैसे होते संते मुनि वनादि विषै गए हैं ॥ ८५३ ॥

तं सोढुमक्खमो तं णिहणादि वज्जाउहेण असुरबई ।

सो भुंजदि रयणपहे दुक्खग्गाहेक्कजल्लासिं ॥ ८५४ ॥

तं सोढुमक्षमः तं निहंति वज्जायुधेन असुरपतिः ।

स भुंक्ते रत्नप्रभायां दुःखप्राह्येकजल्लासिं ॥ ८५४ ॥

अर्थ—तिस अपराध सहनेको समर्थ न भया ऐसा असुर कुमारनिका स्वामी चमर नाम इन्द्र सो वज्र आयुध करि तिस कल्की राजाको हनै है । सो कल्की मरि रत्नप्रभा नाम बहक भूमि विषै दुःख करि ग्रहण रूप एक सागर प्रमाण आयुको भोगवै है ॥ ८५४ ॥

तव्भयदो तस्स सुदो अजिदंजयसण्णिदो सुरारिं तं ।

सरणं गच्छइ चेलयसण्णाए सह समाहिलाए ॥ ८५५ ॥

तद्भयतः तस्य सुतः अजितंजयसंज्ञितः सुरारिं तं ।

शरणं गच्छति चेलकासंज्ञया सह स्वमहिलया ॥ ८५५ ॥

अर्थ—तीह असुरपतिके भयतै तिस कल्की राजाका अजितंजय नामा पुत्र सो चेलका नामा अपनी स्त्री सहित तिस अपने पिताका बैरी चमर देवेन्द्रनके शरण प्राप्त हो है ॥ ८५५ ॥

सम्मद्सणरयणं हिययाभरणं च कुणदि सो सिग्धं ।

पच्चक्खं दट्टुणिह सुरकयजिणधम्ममाहण्यं ॥ ८५६ ॥

सम्यग्दर्शनरत्नं हृदयाभरणं च करोति स शीघ्रं ।

प्रत्यक्षं दृष्ट्वा इह सुरकृतजिनधर्ममाहात्म्यं ॥ ८५६ ॥

अर्थ—बहुरि सो अजितंजय प्रत्यक्ष जिनधर्मका माहात्म्यको देखि शीघ्र ही जैनश्रद्धानरूप सम्यग्दर्शनको अपने हृदयका आभरण करै है ॥ ८५६ ॥

आगै अंतके कल्कीका स्वरूप गाथा पांच करि कहै हैं;—

इदि पडिसहस्सवस्सं वीसे कक्कीणादिक्रमे चरिमो ।

जलमंथणो भविस्सदि कक्की सम्मग्गमत्थणओ ॥ ८५७ ॥

इति प्रतिसहस्रवर्षं विंशतौ कल्कीनामतिक्रमे चरमः ।

जलमंथनो भविष्यति कल्की सन्मार्गमंथनः ॥ ८५७ ॥

अर्थ—ऐसै हजार हजार वर्ष प्रति एक एक कल्की होइ । कल्कीनिके वीचि वीचि एक एक उपकल्की होइ इतनां विशेष अन्य ग्रंथतै जाननां सो वीस कल्की अतिक्रम भए अंतका इकईसवां जलमंथन नामा कल्की भले मार्गका मथनेवाला विनासनेवाला होसी ॥ ८५७ ॥

इह इंद्रायसिस्सो वीरंगद साहु चरिम सव्वसिरी ।

अज्जा अग्गिल सावय वरसाविय पंगुसेणावि ॥ ८५८ ॥

इह इंद्रराजशिष्यो वीरंगदः साधुश्चरमः सर्वश्रीः ।

आर्या अग्गिलः श्रावकः वरश्राविका पंगुसेनापि ॥ ८५८ ॥

अर्थ—तीह कालविषै इन्द्रराजा नामा आचार्यका शिष्य वीरंगद नामा अंतका साधु होसी । बहुरि सर्वश्री नामा अजिका होसी । बहुरि अग्गिल नामा श्रावक होसी । बहुरि पंगुसेना नामा उल्लुट श्राविका होसी ॥ ८५८ ॥

पंचमचरिमे पक्खडमासतिवासावसेसए तेण ।

मुणिपढमपिंडगहणे सण्णसणं करिय दिवसतियं ॥ ८५९ ॥

पंचमचरमे पक्षाष्टमासत्रिवर्षे अवशेषे तेन ।

मुनिप्रथमपिंडग्रहणे संन्यसनं कृत्वा दिवसत्रयं ॥ ८५९ ॥

अर्थ—ते मुनि आदि च्यारयो पंचमाकालकै अंति एक पक्ष आठ मास तीन वर्ष अवशेष रहे तीह कल्की राजाकरि पूर्वोक्त प्रकार मुनिका पहला प्रास ग्रहण करत सतै तीन दिन पर्यंत संन्यास मरण करि ॥ ८५९ ॥

कहा सां कहैं हैं;—

सोहम्मे जायंते कत्तियअमवास सादि पुव्वण्हे ।

इंगजलद्विठिदी मुणियो सेसतिण् साहियं पळ्ळं ॥ ८६० ॥

सौधर्मे जायंते कार्तिकामावस्यायां स्वातौ पूर्वाह्ने ।

एकजलधिस्थितयो मुनयः शेषत्रयः साधिकं पत्यं ॥ ८६० ॥

अर्थ—तहां मुनि तौ कार्तिक मास अमावास्या तिथि स्वाति नक्षत्र पूर्वाह्न समयविषै मरिंकरि एक सागर आयुके धारी सौधर्म स्वर्गविषै उपजै हैं । बहुरि अवशेष अजिका श्रावक श्राविका ए तीन तहां ही सौधर्म स्वर्गविषै साधिक पत्य आयुके धारी उपजै हैं ॥ ८६० ॥

तव्वासरस्स आदीमज्झंते धम्मरायअग्गीणं ।

णासो तत्तो मणुसा णग्गा मच्छादिआहारा ॥ ८६१ ॥

तद्वासरस्य आदिमध्यांते धर्मराजाग्नीनां ।

नाशः ततो मनुष्या नग्ना मत्स्यायाहाराः ॥ ८६१ ॥

अर्थ—तीह दिनका आदि मध्य अंतविषै क्रमतै धर्मका अर राजाका अर अग्निका नाश हो है । तातै परै मनुक्ष हैं सो नग्न वस्त्रादि रहित अर मछली आदिका है आहार जिनकै असे होसी ॥ ८६१ ॥

आगै धर्मादिकका नाशका कारण कहैं हैं;—

पोग्गलअइरुक्खादो जलणे धम्मे णिरासण हदे ।

असुरवइणा णरिंदे सयलो लोओ हवे अंधो ॥ ८६२ ॥

पुद्गलातिरिक्ष्यात् ज्वलने धर्मे निराश्रयेण हते ।

असुरपतिना नरेन्द्रे सकलं लोको भवेत् अंधः ॥ ८६२ ॥

अर्थ—काल निमित्ततै पुद्गल द्रव्य अतिरुखा भावरूप परणया तातै अग्निका नाश भया बहुरि मुनिआदिका अभाव भए धर्मके आश्रयके अभावतै धर्मका नाश भया । बहुरि असुर कुमारका इन्द्र करि मारया हुवा राजाका नाश भया । असें नाश होतै पीछै समस्त लोक आंधा हो है ॥ ८६२ ॥

आगै तिस काल विषै तिष्ठते जीवानिकै गति विषै गमन अर गतितै आगमनका स्वरूप कहैं हैं;—

एत्थ मुदा णिरयदुगं णिरयतिरक्खादु जणणमेत्थ हवे ।

थोवजलदाइ मेहा भू णिस्सारा णरा तिच्चा ॥ ८६३ ॥

अत्र मृता निरयद्वयं नरकार्तिर्यग्भ्यां जननमत्र भवेत् ।

स्तोकजलदायिनो मेघा भूः निस्सारा नरास्तीत्राः ॥ ८६३ ॥

अर्थ—इस अति दुःषम काल विषै जीव मरे हुए नरक तिर्यच दोग गतिकों प्राप्त हो हैं । अन्यत्र न प्राप्त हो हैं । बहुरि नरक तिर्यच गतितै आये हुए जीवनिर्हाका इहां जनम हो है

अन्यका न हो है । बहुरि इस काल विषै मेघ हैं ते स्तोक जलके देने वाले हो हैं । पृथ्वी रत्नादि सारवस्तु रहित हो है । मनुक्ष तीव्र कषायादि युक्त हो हैं ॥ ८६३ ॥

अब अति दुःषम कालका अंत विषै जो वर्तें है ताका अनुक्रम गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

संवत्तयणामणिलो गिरितरुभूपहुदि चुण्णणं करिय ।

भमदि दिसंतं जीवा मरंति मुच्छंति छट्टंते ॥ ८६४ ॥

संवर्तकनामानिलः गिरितरुभूप्रभृतीनां चूर्णनं कृत्वा ।

भ्रमति दिशांतं जीवा म्रियंते मूर्च्छंति षष्टांते ॥ ८६४ ॥

अर्थ—छाकालका अंत विषै संवर्तक नामा पवन सो पर्वत वृक्ष पृथ्वी आदिकका चूर्णकौं करि स्वक्षेत्र अपेक्षा दिशानिका अंत प्रति भ्रमण करै है । बहुरि तहां तिष्ठते जीव तीह पवन करि मूर्च्छाकौं पावै हैं बहुरि मरै हैं ॥ ८६४ ॥

खगगिरिगंगदुवेदी खुद्बिलार्दि विसंति आसण्णा ।

णैति दया खचरसुरा मणुस्सजुगलादिबहुजीवे ॥ ८६५ ॥

खगगिरिगंगाद्वयवेदीं क्षुद्रविलादि विशंति आसन्नाः ।

नयंति दयाः खचराः सुरा मनुष्ययुगलादिबहुजीवान् ॥ ८६५ ॥

अर्थ—विजयार्द्ध पर्वत अर गंगा सिंधुनदी अर इनकी वेदी अर तिनकै क्षुद्र बिल आदिक तिन प्रति तिनहीके निकट वर्ती प्राणी प्रवेश स्वयमेव करै हैं । बहुरि दयावान विद्याधर वा देव हैं ते मनुक्ष युगल आदि दैकारि बहुत जीवनि कौं तिस बाधा रहित स्थानकौं प्राप्त करै हैं ॥ ८६५ ॥

छट्टमचरिमे होंति मरुदादी सत्तसत्त दिवसवही ।

अदिसीदस्वारविसपरुसग्गीरजधूमवरिसाओ ॥ ८६६ ॥

षष्ठचरमे भवंति मरुदादयः सप्तसप्त दिवसावधि ।

अतिशीतक्षारविषपरुपाग्निरजोधूमवर्षाः ॥ ८६६ ॥

अर्थ—छा कालका अंत विषै पवन आदि सात वर्षा सात सात दिन पर्यंत हो हैं । ते कौन ? पवन १ अत्यंत शीत १ क्षार रस १ विष १ कठोर अग्नि १ धूलि १ धुआं १ इन सात-रूप परिणए पुद्गलनिकी वर्षा गुणचास दिन विषै हो है ॥ ८६६ ॥

तेहिहो सेसजणा णस्संति विसग्गिवरिसदड्ढमही ।

इग्गिजोयणमेत्तमधो चुण्णीकिज्जदि हु कालवसा ॥ ८६७ ॥

तेभ्यः शेषजनाः नश्यंति विपाग्निरवर्षदग्धमही ।

एकयोजनमात्रमधः चूर्णीक्रियते हि कालवशात् ॥ ८६७ ॥

अर्थ—तिन वर्षानितैं अवशेष रहे मनुक्षादिक ते भी नष्ट हो हैं । बहुरि विष अर अग्नि-की वर्षानि करि दग्ध भई पृथ्वी सो एक योजन मात्र नीचा तांई कालकै वशतैं चूर्ण हो है ॥ ८६७ ॥

अब उत्सर्पणी कालके प्रवेशका अनुक्रम गाथा तीन करि कहैं हैं;—

उत्सर्पिणीयपदमे पुक्खरखीरघदमिदरसा मेघा ।
सत्ताहं वरसांति य णग्गा मत्तादिआहारा ॥ ८६८ ॥
उत्सर्पिणीप्रथमे पुक्करक्षीरघृतामृतरसान् मेघाः ।
सत्ताहं वर्षति च नग्ना मृताद्याहाराः ॥ ८६८ ॥

अर्थ—उत्सर्पिणीका अति दुःषम नामा प्रथमकाल विषै आदि ही मेघ हैं ते जल १ दुग्ध १ घीव १ अमृत १ रसानिकों क्रमतैं सात सात दिन पर्यंत वर्षें हैं । बहुरि तिसकाल विषै तिष्ठते जीव ते वस्त्रादि रहित नग्न हैं । बहुरि मृत्तिका आदिका आहार जिनिकै जैसे हो हैं ॥ ८६८ ॥

उण्हं छंडदि भूमि छवि सणिद्धत्तमोसहिं धरादि ।
बल्लिलदागुम्मतरू वड्डेदि जलादिवरसेहिं ॥ ८६९ ॥
उष्णं त्यजति भूमिः छवि सस्निग्धत्वमौषधिं धरति ।
बल्लिलतागुल्मतरवो वर्धते जलादिवर्षैः ॥ ८६९ ॥

अर्थ—जलादिकानिकी वर्षानिकरि पृथ्वी है सो पूर्वैं भया था जो अग्नि आदिकी वर्षा करि उष्णपणा ताकौं छांडे है । बहुरि छवि जो शोभा ताकौं धौर है । बहुरि सच्चिकण पणांकौं धौर है । बहुरि अन्न आदि औषधिकौं धारं है । बहुरि वेलि आदि वधै हैं । तहां पृथ्वी विषैं जड़धिना फैले ताकौं वेलि कहिए । वृक्षका आश्रय करि जो फैले ताकौं लता कहिए । कदाचित भी स्थूल पेडकौं जे न प्राप्त होइं तिनकौं गुल्म कहिए । स्थूल पेड़ रूप होने योग्य जो होइ तिनकौं वृक्ष कहिए । जलादिकानिकी वर्षानि करि ए वधै हैं ॥ ८६९ ॥

णदितीरगुहादिठिया भूसीयलगंधगुणसमाहूया ।
णिग्गमिय तदो जीवा सव्वे भूमिं भरंति कमे ॥ ८७० ॥
नदीतीरगुहादिस्थिता भूशीतलगंधगुणसमाहूताः ।
निर्गत्य ततो जीवाः सर्वे भूमिं भरंति क्रमेण ॥ ८७० ॥

अर्थ—गंगासिंधु नदीके तीर वा विजयार्धकी गुफा आदि विषै पूर्वैं प्राप्त भए थे जे जीव ते अवै भया जो पृथ्वी विषै शीतल सुगंध गुण तीह करि बुलाए हुए सर्व ही तहांतैं निकासि अनुक्रम करि पृथ्वीकौं भरैं हैं । बहुरि इहांतैं क्रमसौं आयुकायादिक जीवनिकै क्रमतैं वधै हैं ॥ ८७० ॥

अब उत्सर्पिणीका दूसरा काल आदि विषै वर्तनाका अनुक्रम कहैं हैं;—

उत्सर्पिणीयविदिए सहस्ससेसेसु कुलयरा कणयं ।
कणयप्पहरायद्धयपुंगव तह णालिण पउम महपउमा ॥ ८७१ ॥
उत्सर्पिणीद्वितीये सहस्त्रशेषेषु कुलकराः कनकः ।
कनकप्रभराजध्वजपुंगवाः तथा नलिनः पद्मः महापद्मः ॥ ८७१ ॥

अर्थ—अति दुःषम प्रथम काल पूर्ण भए पीछे दूसरा दुःषम नामा काल प्रवर्तैं है । तामैं एक हजार वर्ष अवशेष रहैं सोलह कुलकर हो हैं । बहुरि ते कनक १ कनकप्रभ १ कनक राज १ कनक ध्वज १ कनक पुंगव १ नलिन १ नलिन प्रभ १ नलिन राज १ नालेनध्वज १ नलिन

पुंगव १ पद्म १ पद्म प्रभ १ पद्म राज १ पद्म ध्वज १ पद्म पुंगव १ महा पद्म १ जैसे नाम धारक सोलह कुलकर हो हैं ॥ ८७१ ॥

आगै तिनका कार्य वा तृतीय काल विषै तिष्ठते तेरसठि शलाका पुरुष तिनकों गाथा च्यारि करि कहै है;—

तस्सोलसमणुहिं कुलायाराणलपक्कपहुदिया होंति ।

तेवद्विणरा तदिण् सेणियचर पढमतित्थयरो ॥ ८७२ ॥

तत्पोडशमनुभिः कुलाचारानलपक्कप्रभृतयो भवति ।

त्रिषष्टिनरास्तृतीये श्रेणिकचरः प्रथमतीर्थकरः ॥ ८७२ ॥

अर्थ—तिन सोलह मनुभिः कहिए कुलकरनि करि क्षत्रियादि कुलके आचार अग्नि करि अन्नादि पचावनेका विधान इत्यादि कार्य शिखाए हुए प्रवर्तें हैं । बहुरि तहां पीछैं तीसरा दुःखम सुखमा नामा काल प्रवर्तें हैं । तीह विषै तेरसठि शलाका पुरुष हो हैं । तहां श्रेणिक नामा राजाका जीव तौ प्रथम तीर्थकर देव हो है ॥ ८७२ ॥

महपडमो सुरदेवो सुपासणामो सयंपहो तुरियो ।

सव्वप्पभूद देवादीपुत्तो होदि कुलपुत्तो ॥ ८७३ ॥

महापद्मः सुरदेवः सुपार्श्वनामा स्वयंप्रभः तुर्यः ।

सर्वात्मभूतो देवादिपुत्रो भवति कुलपुत्रः ॥ ८७३ ॥

अर्थ—महापद्म १ सुरदेव १ सुपार्श्व १ स्वयंप्रभ चौथो १ सर्वात्मभूत १ देव पुत्र १ कुल पुत्र ॥ ८७३ ॥

तित्थयरुदंक पोट्टिल जयकित्ती मुणिपदादिसुव्वदओ ।

अरणिप्पावकसाया विउल्लो किण्हचरणिम्मलओ ॥ ८७४ ॥

तीर्थकर उदंकः प्रौष्टिलः जयकीर्तिः मुनिपदादिसुव्रतः ।

अरनिष्पापकपाया विपुलः कृष्णचरो निर्मलः ॥ ८७४ ॥

अर्थ—उदंक तीर्थकर १ प्रौष्टिल १ जयकीर्ति १ मुनिसुव्रत १ अर १ निःपाप १ निःकपाय १ विपुल १ कृष्ण नारायणका जीव निर्मल तीर्थकर १ ॥ ८७४ ॥

चित्तसमाहीगुत्तो सयंभु अणिवट्टओ य जय विमलो ।

तो देवपाल सच्चइपुत्तयरोऽणंतविरियंतो ॥ ८७५ ॥

चित्रसमाधिगुतः स्वयंभूरनिवर्तकश्च जयो विमलः ।

ततो देवपालः सत्यकिपुत्रचरोऽनंतवीर्योन्तः ॥ ८७५ ॥

अर्थ—चित्र गुप्त १ समाधि गुप्त १ स्वयंभू १ अनिवर्तक १ जय १ विमल १ देवपाल १ सत्यकितनय रुद्रका जीव अंतका अनंत वीर्य १ जैसे नाम धारक चौबीस तीर्थकर हो हैं ॥ ८७५ ॥

आगै तहां प्रथम अंत तीर्थकरनिका आयु उत्सेध कहै है;—

पद्मजिणो सोलससयवस्साऊ सत्तहत्थदेहुदओ ।
चरिमो दु पुव्वकोडीआउ पंचसयधणुतुंगो ॥ ८७६ ॥

प्रथमजिनः षोडशशतवर्षायुः सप्तहस्तदेहोदयः ।

चरमः तु पूर्वकोट्यायुः पंचशतधनुस्तुंगः ॥ ८७६ ॥

अर्थ—पहला महापद्म जिन एकसौ सोलह वर्ष प्रमाण आयु सात हाथ शरीरका उच्चत्व धरै है । बहुरि अंतका अनंत वीर्य जिन कोटि पूर्व वर्ष प्रमाण आयु पांचसै धनुष शरीरका उच्चत्व धरै है ॥ ८७६ ॥

आगै चक्री अर्द्धचक्री बलिभद्रनिके नाम गाथा च्यारि करि कहै है;—

चक्री भरहो दीहादिमदंतो मुक्तगूढदंता य ।
सिरिपुव्वसेणभूदी सिरिकंतो पउम महपउमा ॥ ८७७ ॥

चक्रिणः भरतः दीर्घादिमदंतो मुक्तगूढदंतौ च ।

श्रीपूर्वसेनभूती श्रीकांतः पद्मो महापद्मः ॥ ८७७ ॥

अर्थ—प्रथमही चक्रवर्ती कहिए हैं । भरत १ दीर्घ दंत १ मुक्त दंत १ गूढ दंत १ श्री-
षेण १ श्रीभूति १ श्रीकांत १ पद्म १ महापद्म १ ॥ ८७७ ॥

तो चित्तविमलवाहण अरिष्टसेणो बलो तदो चंदो ।
महचंद चंद्रहर हरिचंद्रा सीहादिचंद्र वरचंद्रा ॥ ८७८ ॥

ततः चित्रविमलवाहनौ अरिष्टसेनः बलाः ततः चंद्रः ।

महाचंद्रः चंद्रधरः हरिचंद्रः सिहादिचंद्रो वरचंद्रः ॥ ८७८ ॥

अर्थ—तहां पीछै चित्र वाहन १ विमल वाहन १ अरिष्ट सेन १ ए वारह चक्रवर्ती हो हैं ।
तहां पीछै अब बलिभद्र कहिए हैं । चंद्र १ महाचंद्र १ चंद्रधर १ हरिचंद्र १ सिंहचंद्र १ वरचंद्र
॥ ८७८ ॥

तो पुण्णचंद्रसुहचंद्रा सिरिचंद्रो य केसवा णंदी ।
तत्पुव्वमित्तसेणा णंदी भूदी यचलणामा ॥ ८७९ ॥

ततः पूर्णचंद्रः शुभचंद्रः श्रीचंद्रः च केशवाः नंदी ।

तत्पूर्वमित्रसेनौ नंदिभूतिश्चाचलनामा ॥ ८७९ ॥

अर्थ—तहां पीछै पूर्ण चंद्र १ शुभचंद्र १ श्रीचंद्र १ जैसे ए नव बलदेव हो हैं । यातै परै
केशव जे नारायण ते कहिए हैं । नंदी १ नंदिमित्र १ नंदिषेण १ नंदिभूति १ अचल ॥ ८७९ ॥

महअइबला तिविट्ठो दुविट्ठ पडिसत्तुणो य सिरिकंतो ।
हरिणीलअस्ससुसिहिकंठा अस्सहयमोरगीवा य ॥ ८८० ॥

महातिबलौ त्रिपृष्ठः द्विपृष्ठः प्रतिशत्रवः च श्रीकंठः ।

हरिनीलाश्वसुशिखिकंठाः अश्वहयमयूरग्रीवाश्च ॥ ८८० ॥

पहावल १ अतिबल १ त्रिपृष्ठ १ द्विपृष्ठ १ अैसे ए नव वासुदेव हो है । यातै परै तिनके प्रातशत्रु जे प्रतिनारायण ते कहिए है । श्रीकंठ १ हरिकंठ १ अश्वकंठ १ मुक्कठ १ शिखिकंठ १ अश्वप्रीव १ हयप्रीव १ मयूर प्रीव अैसे ए नव प्रतिवासुदेव हो है ॥ ८८० ॥

अब कहे जु ए अर्थ तिनका उपसंहार कहै है;—

एसो सव्वो भेओ परूविदो विंदियतदियकालेसु ।

पुव्वं व गहीदव्वो सेसो तुरियादिभोगमही ॥ ८८१ ॥

एपः सर्वो भेदः प्ररूपितः द्वितीयतृतीयकालयोः ।

पूर्वमिव गृहीतव्यः शेषः तुर्यादिभोगमही ॥ ८८१ ॥

अर्थ—यहु सर्व ही भेद उत्सर्पिणीके दूसरे तीसरे कालनिका प्ररूपण किया बहुरि अवशेष चतुर्थ आदि कालनि विषै भोगभूमि है अैसे पूर्वोक्त प्रकार प्रहण करना । तहां अनुक्रमतै आयु कायादि करि वृद्धि रूप चतुर्थ सुषम दुःषमकाल विषै जघन्य भोगभूमि है । पंचम सुषम काल विषै मध्य भोगभूमि है । षष्ठम सुषम सुषम काल विषै उत्कृष्ट भोग भूमि है ॥ ८८१ ॥

अैसे भरत ऐरावत क्षेत्रनि विषै कहे जे छह काल तिनको अन्य क्षेत्र विषै जोड़नेको गाथा तीन कहै है;—

पढमादो तुरियोत्ति य पढमो कालो अवट्टिदो कुरवे ।

हरिरम्मगे य हेमवटेरणवदे विदेहे य ॥ ८८२ ॥

प्रथमतः तुर्यांतं च प्रथमः कालः अवस्थितः कुर्वोः ।

हरिरम्यके च हैमवद्वैरण्यवतयोः विदेहे च ॥ ८८२ ॥

अर्थ—पहला कालतै लगाय चौथा काल पर्यंत नियम कहिए है । तहां पहला काल तौ देव-कुरु उत्तर कुरु विषै अवस्थित है । भावार्थ पहला सुषम सुषम कालकी आदि विषै जो वर्तना है सो वर्तना देव कुरु उत्तर कुरु विषै सदा काल पाइए है । बहुरि ऐसै ही दूसरा काल हरि अर रम्यक क्षेत्र विषै अवस्थित है । बहुरि तीसरा काल हैमवत अर हैरण्यवत क्षेत्र विषै अवस्थित है । बहुरि चौथा काल विदेह क्षेत्र विषै अवस्थित ही है ॥ ८८२ ॥

भरह इरावद पण पण मिलेच्छखंडेसु खयरसेदीसु ।

दुस्समसुसमादीदो अंतोत्ति य हाणिवड्डी य ॥ ८८३ ॥

भरतः ऐरावतः पंच पंच म्लेच्छखंडेषु खचरश्रेणिषु ।

दुःषमसुषमादित. अंत इति च हानिवृद्धी च ॥ ८८३ ॥

अर्थ—भरत ऐरावत संबंधी पांच पांच मलेच्छ खंड अर विजयार्द्धकी विद्याधर रहनेकी श्रेणी तिन विषै दुःखम सुषम कालका आदितै लगाय ताहीका अंत पर्यंत हानि वृद्धि हो है । सो अवसर्पिणी विषै तौ चौथा कालकी आदितै लगाय अंत पर्यंत आर्य खंडवत् अनुक्रमतै आयु आदि-ककी हानि हो है । तहां पांचवा छठा काल नांही प्रवत्तै है । भावार्थ—जो आर्य खंड विषै अब सर्पिणीका चौथा कालका अंतविषै वर्तना है सोई आर्यखंडविषै अवसर्पिणीका पांचवा छठा अर

उत्सर्पिणीका पहला दूसरा काल प्रवर्तते भी तहां एकरूप वर्तना है। बहुरि उत्सर्पिणीका तीसरा कालका आदि तें लगाय ताहीका अंत पर्यंत आयु आदिककी वृद्धि हो है। तहां चौथा पांचवां छठा काल नाहीं वत्ते है। भावार्थ-इहां आर्य खंड विषै उत्सर्पिणीका चौथा पांचवां छठा अब-सर्पिणीका पहला दूसरा तीसरा काल प्रवर्तते मी उत्सर्पिणीके तीसरा कालका अंत विषै जो वर्तना पाइए सो तहां एकरूप वर्तना है ॥ ८८३ ॥

पढमो देवे चरिमो णिरए तिरिए णरेवि छक्काला ।

तदिथो कुणरे दुस्समसरिसो चरिमुवहिदीवद्धे ॥ ८८४ ॥

प्रथमः देवे चरमः निरये तिरश्चि नरंपि पट्टकालाः ।

तृतीयः कुनरे दुःपमसदशः चरमोदधिद्वीपार्थे ॥ ८८४ ॥

अर्थ—देव गतिविषै प्रथम काल वर्तते है। नरक गतिविषै अंतका छठा काल वर्तते है।

भावार्थ—इहां अति मुख अति दुखकी अपेक्षा पहला छठा कालका वर्तना कइया है। आयु आदि अपेक्षा न कइया है। बहुरि ऐसै ही तिर्यच गति अर मनुक्ष गतिविषै छहौं काल वर्तते है। बहुरि कु-मनुष्य भोगभूमि समुद्रनिविषै है। तहां तीसरा काल वर्तते है। बहुरि आधा स्वयंभू रमण द्वीप अर सर्व स्वयंभूरमण समुद्रविषै दुःखम समान सर्वकाल वर्तते है ॥ ८८४ ॥

ऐसै जंबूद्वीपके वर्णनकों समाप्त करि लवण समुद्रके वर्णनकों आरंभ करत संता तिन दोऊनिके बीचि तिष्ठता जो कोट ताका स्वरूप निरूपणके मिस करि समस्त द्वीप समुद्रनिके अंत विषै पाइए है जे प्रकार तिनकों गाथा दायकारि प्ररूपै हैं;—

चउगोउरसंजुत्ता भूमिमुहे वार चारि अट्टुदया ।

सयलरयणप्पया ते बेकोसवगाढया भूमिं ॥ ८८५ ॥

चतुर्गोपुरसंयुक्ता भूमौ मुखे द्वादश चत्वारः अष्टोदयाः ।

सकलरत्नात्मकास्ते द्विक्रोशावगाढा भूमिं ॥ ८८५ ॥

अर्थ—च्यारि गोपुर जे द्वार तिन करि संयुक्त हैं। बहुरि भूमौ कहिए नीचै ब्रारह योजन चौड़े हैं। मुखे कहिए उपरि च्यारि योजन चौड़े हैं। बहुरि आठ योजन ऊंचे हैं। बहुरि सकल नाना प्रकार रत्नमई हैं ऐसै ते प्राकार हैं। बहुरि ते दाय कोश भूमिकों अवगाहि करि तिष्ठे हैं।

भावार्थ—पृथ्वी विषै दाय कोश इनकी नीव हैं ॥ ८८५ ॥

वज्जमयमूलभागा वेलुरियकयाइरम्मसिहरजुदा ।

दीवीवहीणमंते पायारा होंति सव्वत्थ ॥ ८८६ ॥

वज्रमयमूलभागा वैदूर्यकृतातिरम्यशिखरयुताः ।

द्वीपोदधीनामंते प्राकारा भवंति सर्वत्र ॥ ८८६ ॥

अर्थ—वज्रमई तिनका मूल भाग कहिए नीव है। बहुरि वैदूर्य रत्न करि निर्मापित अति रमणीक शिखरनि करि संयुक्त हैं। ऐसै प्राकार कहिए वेदिका दिवाल सो द्वीपनिका वा समुद्र-निका अंत विषै परिधिरूप सर्वत्र है ॥ ८८६ ॥

आगै तिन प्राकारानिकै उपरि तिष्ठती जु वेदिका ताकौं निरूपै हैं;—

पायाराण उवरिं पुह मज्जे पउमवेदिया हेमी ।

बेकोसपंचसयधणुतुंगा वित्थारया कमसो ॥ ८८७ ॥

प्राकाराणामुपरि पृथक् मध्ये पद्मवेदिका हैमी ।

द्विक्रोशपंचशतधनुस्तुंगविस्तारा क्रमशः ॥ ८८७ ॥

अर्थ—तिन प्राकारानिकै उपरि मध्य विषै पृथक् पृथक् पद्म वेदिका कांगुरेनिकी पंक्ति हैं ।
सो सुवर्ण मई हैं दोय कोश उंची हैं पांचसै धनुष चांडी हैं ॥ ८८७ ॥

आगै तिस पद्म वेदिकाकै माहीं अर वारै दोऊ तरफां तिष्ठते जु वनादिक तिनकों गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

तिस्से अंतो बाहिं हेभशिलातलजुदं वणं रम्मं ।

वावी प्रासादोवि य चित्ता अत्थंति तहिं वाणा ॥ ८८८ ॥

तस्याः अंतर्बहिः हेमशिलातलयुतं वनं रम्यं ।

वाप्यः प्रासादा अपि च चित्रा आसते तत्र वानाः ॥ ८८८ ॥

अर्थ—तिन वेदिकानिकै मांही वारै पैली वा वैली दोऊ तरफां सुवर्णमय शिलातल करि संयुक्त रमणीक वन हैं । तहां चित्र नाना प्रकार वावड़ी वा प्रासाद कहिए मंदिर हैं । तहां मंदिरनि विषै वान व्यंतर देव तिष्ठै हैं ॥ ८८८ ॥

वरमज्जजहण्णाणं वावीणं चाव विसद वित्थारा ।

पण्णासूणं कमसो गाढा सगवासदसभागो ॥ ८८९ ॥

वरमध्यजघन्यानां वापीनां चापाः द्विशतं विस्ताराः ।

पंचाशदूनं क्रमशो गाधः स्वकव्यासदशमभागः ॥ ८८९ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य वावड़ीनिका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण दोयसै अर पचास घाटि क्रमतै है सो दोयसै ड्यौढसै एकसौं योजन प्रमाण है । बहुरि तिनका गाध जो ओंड़ाईका प्रमाण सो अपने व्यासकै दशवै भाग है । सं क्रमतै वीस पंद्रह दश योजन प्रमाण जाननां ॥ ८८९ ॥

वासुदयादीहत्तं जहण्णप्रासादयस्स चावाणं ।

पण्णपणसदरिसयमिह दारे छव्वार चउ गाढो ॥ ८९० ॥

व्यासोदयदीर्घत्वं जघन्यप्रासादस्य चापानां ।

पंचाशत्पंचसप्ततिशतं इह द्वारे षट् द्वादश चतुर्गाढः ॥ ८९० ॥

अर्थ—जघन्य प्रासादनिकी चौड़ाई उचाई लंबाईका प्रमाण क्रमतै पचास पिचहत्तरि एकसौ धनुष प्रमाण है । बहुरि इनके द्वारनिविषै चौड़ाई उंचाई छह अर बारह धनुष प्रमाण है अर गाध जो अवकाश रूप इनकी नींव सो च्यारि धनुष प्रमाण है ॥ ८९० ॥

मज्झिमउक्कस्साणं विगुणा तिगुणा कमेण वासादी ।

दोदोदारा मणिमय णट्टणकीडादिगेहावि ॥ ८९१ ॥

मध्यमोत्कृष्टानां द्विगुणा त्रिगुणाः क्रमेण व्यासादिः ।

द्विद्विद्वाराः मणिमया नर्तनक्रीडादिगेहा अपि ॥ ८९१ ॥

अर्थ—मध्यम अर उत्कृष्ट प्रासादनिका व्यासादिक जघन्य प्रासादनिके व्यासादिकतै क्रमतै इणें अर तिगुणे हैं । अर तिनके द्वारानिके भी तैसैं ही जघन्य प्रासादनिके द्वारानितै दूणे अर तिगुणे व्यासादिक हैं । बहुरि ते जघन्य व्यासादिक धरै प्रासाद दोय दोय द्वारनि करि संयुक्त हैं । तहां मणिमई नर्तन गेह क्रीडा गेह आदि रचना पाइए है । तहां मध्य प्रासादनिकी चौड़ाई उंचाई लंबाई सौ ड्यौढसै दोयसै योजन, उत्कृष्ट प्रासादनिकी ड्यौढसै सवादोसै तीनसै योजन प्रमाण है । बहुरि मध्य प्रासादनिके द्वारनिकी चौड़ाई उंचाई गाध बारह चौईस आठ धनुष है, उत्कृष्ट प्रासादनिके द्वारनिकी चौईस छत्तीस बारह धनुष प्रमाण है ॥ ८९१ ॥

अब अधिकार भूत प्राकारनिके द्वारनिके नाम वा तिनके व्यासादिक कहैं हैं;—

विजयं च वैजयंत जयंतमपराजियं च पुन्वादी ।

दारचउक्काणुदओ अडजोयणमद्धवित्थारो ॥ ८९२ ॥

विजयं च वैजयंतं जयंतमपराजितं च पूर्वादि ।

दारचतुष्काणामुदयः अष्टयोजनानि अर्धविस्ताराः ॥ ८९२ ॥

अर्थ—विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित १ ऐसैं नाम धारक तिन प्राकारनिकै पूर्वादि दिशानि विषे द्वार हैं । तिन च्यारि द्वारनिका उच्चत्व आठ योजन है, विस्तार तातैं आधा च्यारि योजन है ॥ ८९२ ॥

आगैं तिन द्वारनिकै ऊपरि रचनाका स्वरूपकीं आदि दें करि वर्णन गाथा तीन करि कहैं हैं;—

तोरणजुददारुवरिं दुगवास चउक्तुंग पासादो ।

बारसहस्सायददलवासं विजयपुरमुवरि गयणतले ॥ ८९३ ॥

तोरणयुतद्वारोपरि द्विव्यासः चतुष्कतुंगः प्रासादः ।

द्वादशसहस्रायतदलव्यासं विजयपुरमुपरि गगनतले ॥ ८९३ ॥

अर्थ—तिन तोरण संयुक्त द्वारनिकै उपरि दोय योजन चौड़ा च्यारि योजन उंचा प्रासाद है । तिसकै उपरि आकाश तल विषे बारह हजार योजन लंबा तातैं आधा छह हजार योजन चौड़ा विजय नामा नगर है ॥ ८९३ ॥

एवं सेसतिदारे विजयादिठिदी दु साहियं पल्लं ।

जगदीमूले बारस दाराणि णदीण णिग्गम्मणे ॥ ८९४ ॥

एवं शेषत्रिद्वारे विजयादिस्थितिस्तु साधिकं पत्यं ।

जगतीमूल्ये द्वादश द्वाराणि नदीनां निर्गमने ॥ ८९४ ॥

अर्थ—अवशेष तीन द्वारनि विषे भी ऐसैं ही प्रासाद वा वैजयंतादि नगर जाननें । बहुरि तिनि नगरनि विषे तिष्ठते विजयादि व्यंतर देवनिका आयु साधिक पत्य प्रमाण है । बहुरि

जगती जो जंबूद्वीपकी वेदी ताके मूल विषै सीता सीतोदा बिना अवशेष बारह नदी निकसनेके बारह द्वार हैं । सीता सीतोदा पूर्व पश्चिम द्वार करि ही समुद्र विषै प्रवेश करै है । तातैं इनके जुदे द्वारनिका अभाव है ॥ ८९४ ॥

पायारंतवभागे वेदिजुदं जोयणद्ववास वणं ।

दारूणपरिहितुरियो विजयादीदारअंतरयं ॥ ८९५ ॥

प्राकारांतर्भागे वेदीयुतं योजनार्धव्यासं वनं ।

द्वारोनपरिधितुर्यो विजयादिद्वारांतरं ॥ ८९५ ॥

अर्थ—तिस प्राकारकै मांहिली तरफ वेदिका सहित आध योजन चौड़ा पृथ्वी उपरि बन है । बहुरि तिस प्राकारके चारयौं द्वारनिका व्यास सोलह योजन सो जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि प्रमाण ३१६२२८ विषै घटाइ अवशेष ३१६२१२ के च्यारि भाग किए गुण्यासी हजार तेरपन योजन प्रमाण विजयादिक द्वारनिकौ परस्पर अंतराल है । जैसे ही अन्यत्र जानना । जैसे द्वीप अर समुद्रकै बीच तिष्ठता जो प्राकार ताका वर्णन सहित जंबूद्वीपका वर्णन समाप्त भया ॥ ८९५ ॥

आगैं लवण समुद्रके अभ्यंतरवर्ती जे पाताल तिनका स्थान वा तिनकी संख्या वा तिनके व्यासादिकका परिमाण कहै हैं;—

लवणे दिसविदिसंतरदिसासु चउ चउ सहस्र पायाला ।

मज्जुदयं तलवदणं लक्खं दसमं तु दसमकमं ॥ ८९६ ॥

लवणे दिशाविदिशांतरदिशासु चत्वारि सहस्रं पातालानि ।

मध्योदयः तलवदनं लक्षं दशमं तु दशमक्रमं ॥ ८९६ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके मध्यभाग परिधिविषै च्यारि दिशानिविषै अर च्यारि विदिशानिविषै अर इन आठनिकै बीच आठ अंतर दिशा विषै अनुक्रमतैं च्यारि च्यारि एक हजार पाताल हैं । गर्त खाड़ा ताका नाम पाताल है । तहां दिशासंबंधी च्यारि पाताल तिनका उदयका मध्य भागविषै व्यास एक लाख योजन है । बहुरि उदय जो उचाई ताका प्रमाण तैसेही एक लाख योजन है । नीचै ही नीचै तल व्यास ताका दशवां भाग दश हजार योजन है । उपरि मुख व्यास तैसे ही दश हजार योजन है । भावार्थ—ए पाताल ऊभा मृदंगकै आकारि हैं । सो समभूमितैं नीचैका जो उंडाईका प्रमाण सौ उचाई जाननी । ताका मध्यविषै तौ व्यास अधिक है । अर ताकैं उपरि वा नीचै क्रमतैं घटता घटता नीचै ही नीचै अर उपरि समभूमिविषै समान व्यास है । इहां प्रश्न जो लक्ष योजन पर्यंत उंडाई कैसें संभवै ? ताका समाधान—रत्नप्रभा पृथ्वी एक लाख असी हजार योजन मोटी है । तहां खरभाग पंकभाग पर्यंत ते पाताल ऊंडे जानने । बहुरि विदिशासंबंधी च्यारि पातालनिकै दिशासंबंधी पातालनितैं दशवां भागका अनुक्रम जाननां सो मध्य व्यास दश हजार उदय दश हजार तल व्यास एक हजार मुख व्यास एक हजार योजन प्रमाण है । बहुरि अंतर दिशा संबंधी हजार पातालनिका विदिशा संबंधी पातालनितैं दशवां भागका अनुक्रम जाननां । सो मध्य व्यास हजार तल व्यास एकसौ मुख व्यास एकसौ योजन प्रमाण है ॥ ८९६ ॥

आगै दिशा संबंधी पातालनिका नामादिक कहैं हैं;—

बडवामुहं कदंबगपायालं जूवकेसरं वट्टा ।

पुन्वादिवज्जकुड्डा पणसयवाहल्ल दसम कमा ॥ ८९७ ॥

बडवामुखं कदंबकं पातालं यूपकेसरं वृत्तानि ।

पूर्वादिवज्जकुड्ड्यानि पंचशतवाहल्यं दशमं क्रमात् ॥ ८९७ ॥

अर्थ—बडवामुख १ कदंबक १ पाताल १ यूपकेसर १ ऐसें पूर्वीदि दिशा संबंधी पातालनिके नाम हैं । बहुरि ते सर्व पाताल वृत्त कहिए गोल हैं । बहुरि वज्रमई कुड्यकरि संयुक्त है । तहां दिशा संबंधी पातालनिके कुड्यका वाहुल्य जो मोटाईका प्रमाण सो पांचसैं योजन है । बहुरि याका दशावां अंश पचास योजन विदिशा संबंधी पातालनिका कुड्य वाहुल्य है ॥ ८९७ ॥

आगै तिन पातालनिके अभ्यंतर वर्ती जल अर पवन तिनके प्रवर्तनेका क्रम कहैं हैं;—

हेहुवरिमतियभागे णियदं वादं जलं तु मज्झमिह ।

जलवादं जलवड्डी किण्हे सुक्के य वादस्स ॥ ८९८ ॥

अधस्तनोपरिमत्रिभागे नियतः वातो जलं तु मध्ये ।

जलवातः जलवृद्धिः कृष्णं शुक्ले च वातस्य ॥ ८९८ ॥

अर्थ—तिन पातालनिकी उचाईका तीन भाग करिए तहां दिशा संबंधी पातालनिका तीसरा भाग तेतीस हजार तीनसैं तेतीस योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है । विदिशा संबंधीनिका तीन हजार तीनसैं तेतीस योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है । अंतर दिशा संबंधीनिका तीनसैं तेतीस योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है । तहां नीचला तीसरा भाग विषै तौ केवल पवन ही पाइए है । बहुरि उपरिका तीसरा भाग विषै केवल जल ही पाईए है । बहुरि मध्यका तीसरा भाग विषै जल पवन मिश्ररूप पाईए है । तहां कृष्णपक्ष विषै तीह मध्यका तृतीय भाग विषै तिष्ठता जलकी हानि हो हैं । बहुरि शुक्ल पक्ष विषै तहां ही तिष्ठता पवनकी वृद्धि हो है ॥ ८९८ ॥

अब तिस हानि वृद्धिके प्रमाण कों कहैं हैं;—

तम्मज्झमतियभागे लवणसिहा चरिमपणसहस्से य ।

पण्णरदिणोहिं भजिदे इगिदिण जलवादवड्ढि जलवड्डी ॥ ८९९ ॥

तन्मध्यमत्रिभागे लवणशिखा चरमपंचसहस्से च ।

पंचदशदिनैः भक्ते एकदिने जलवातवृद्धिः जलवृद्धिः ॥ ८९९ ॥

अर्थ—तिन पातालनिका मध्य तृतीय भागका पूर्वोक्त प्रमाण ताकों पंद्रहदिननिका भाग दिए जो प्रमाण होइ । दिशा ३३३३ १÷३ विदिशा ३३३३ १÷३ अंतर दिशा ३३३ १÷२ तितना मध्य तृतीय भाग विषै एक एक दिन प्रति । दिशा २२२२ १÷९ विदिशा २२२ ३ अंतर दिशा २२ ३ कृष्णपक्ष विषै जलकी वृद्धि अर शुक्ल पक्ष विषै पवनकी वृद्धिका प्रमाण हो है । पातालनिका मध्य तृतीय भाग विषै नीचै पवन उपरि जल है सो दिन दिन प्रति कृष्णपक्ष विषै

पवनकी जायगा जल होता जाय है । अर शुक्र पक्ष विषै जलकी जायगा पवन होता जाय है ऐसा भाव जानना । बहुरि लवण समुद्रकी जो शिखा समभूमितै ऊंचा जलका प्रमाण ताका अंतका जो पांच हजार योजन ताकू पंद्रह दिननिका भाग दिण् तीनसे तेतीस योजन एक तृतीय भाग आया सो लवण समुद्रकी शिखा विषै दिन दिन प्रति जल वधनेका प्रमाण हो है । समभूमितै झारह हजार योजन ऊंचा जल है ताके ऊपरि शुक्र पक्ष विषै इतना इतना जल ऊंचा चट्टि पूर्णिमाके दिनि सोलह हजार योजन ऊंचा जल हो है । कृष्णपक्ष विषै तैसे ही घट्टि तितना ही आनि रहै है ऐसा भाव जानना । अब इस ही अर्थको वने हैं । पंद्रह दिननिको तेतीस हजार तीन से तेतीस योजन एक तृतीय भाग घटने वधने रूप हानिचय होय तां एक दिन के केता होइ । ऐसै त्रैराशिक करि समछेद विधानतै अंशी ९,९९,९९,९९ अंश १ निको मिलाय १०००००÷३ भागहार तीनको प्रमाण राशि रूप पंद्रहका भाग हार करि गुणै पैतीलीस होइ १००००००÷४५ इस भागहारका भाग दिण् दोय हजार दोय से वाईस योजन भए अर अवशेष १०÷४५ को पांचकरि अपवर्तन किण् दोय नवमां भाग भया सो इतना मध्य तृतीय भाग विषै दिन दिन प्रति जल पवन घट्टे वधै है । ऐसै ही लवण समुद्रकी शिखा विषै वा विदिशा अंतर दिशा संबधी पातालनि विषै क्रमकरि मध्य जलवातका शिखाका हानि वृद्धिका अनुक्रम जानना ॥ ८९,९ ॥

ऐसै हानि वृद्धि युक्त जो लवण समुद्र ताकां भूमुख व्यास कहै है;

पुण्णदिणे अमवासे सोलेकारससहस्स जलउदओ ।

वासं मुहभूमीए दसयसहस्सा य बेलक्खा ॥ ९०० ॥

पूर्णादिने अमावास्यायां षोडशकादशसहस्रं जलोदयः ।

व्यासः मुखभूम्योः दशसहस्रं च द्विलक्ष्यं ॥ ९०० ॥

अर्थ—पूर्णिमाके दिन तो सोलह हजार योजन लवण समुद्र विषै जल ऊंचा हो है । बहुरि अमावस्याके दिन ग्यारह हजार योजन जल ऊंचा हो है । भावार्थ—लवण समुद्रका मध्य भाग विषै अमावस्याके दिन समभूमितै ग्यारह हजार योजन जल ऊंचा रहै है । बहुरि दिन दिन प्रति तीन से तेतीस योजन अर एक तृतीय भाग प्रमाण जलकी उचाई वधै सो पूर्णिमासके दिन सोलह हजार योजन होइ तहां पीछे दिन प्रति तितना ही घट्टे ऐसै जलकी उचाईकी हानि वृद्धि है । बहुरि सोलह हजार योजनकी उचाई विषै मुख व्यास दश हजार योजन है । अर भूव्यास दोय लाख योजन है । भावार्थ—समभूमितै उपरि सोलह हजार योजन जल उंचा है । तहां तिस जलकी चौड़ाईका प्रमाण दश हजार योजन है सो मुख व्यास जानना । बहुरि समभूमि विषै दोय लाख योजन समुद्रकी चौड़ाई है सो भूव्यास जानना । बहुरि सोलह हजार योजनकी उचाई विषै एक लाख निवै हजार योजन चौड़ाईका प्रमाण घट्ट्या तो पांच हजार योजनकी उचाई विषै कितना घट्ट्या ऐसै अपवर्तन करि गुणै ९,५००००० अपनां भागहारका भाग दिण् गुणसठि हजार तीनसे पिचहत्तरि योजन भए । या विषै मुख व्यास दस हजार जोडे ग्यारह हजारकी उचाई विषै मुख व्यास हो है । भावार्थ—समभूमितै ग्यारह हजार योजन ऊंचा जल है । तहां तिसकी

चौड़ाई गुणहत्तरि हजार तीनसै पिचहत्तरि योजन है । बहुरि भूव्यास समुद्रकी चौड़ाई प्रमाण दोग लाख योजन है ही ॥ ९०० ॥

अब जंबूद्वीप संबंधी चंद्रमा सूर्यके अर लवण समुद्रका जलके तिर्यग रूप अंतरालका कहें हैं;—

मुरवायारो जलही हाणिदलं सोदयेण संगुणियं ।

विसमुद्धारमंबुहिजंबूचंद्रविअंतरयं ॥ ९०१ ॥

मुरजाकारः जलधिः हानिदलं स्वोदयेन संगुण्य ।

विसमुद्धारमंबुधिजंबूचंद्रव्यंतरं ॥ ९०१ ॥

अर्थ—लवण समुद्र है सो मृदंगके आकारि है । जैसे मृदंग है सो मध्यतैं उपरि वा नीचैं क्रम हानिरूप है । तैसैं लवण समुद्रके जलका व्यास है । सो भूमिकी बरोबरि स्थानतैं ऊपरि उचाईविषै अर नीचैं ओड़ाईविषै क्रमतैं हानि रूप है । सो भूमितैं लगाय जो उचाईविषै हानिका आधा प्रमाण उचाई करि भाजित ताको चंद्रमा सूर्यकी उचाई करि गुणिए तामैं समुद्र संबंधी चार क्षेत्र घटाइए जो होइ तीह प्रमाण समुद्रके अर जंबूद्वीप संबंधी चंद्रमा सूर्यके तिर्यग्रूप अंतराल है । इसही अर्थको कहें हैं । जलका मुख व्यास दश हजार योजन ताको भूमिव्यास दोग लाख योजन विषै घटाए अवशेष १९,०००० हानिका प्रमाण हो है । याको एक पार्श्वका ग्रहण करनेको आधा किए पिच्याणवै हजार योजन हो हैं । पीछैं सोलह हजार योजनकी उचाईके पिच्याणवै हजार योजन हानि होइ तौ एक योजनकी उचाईके केती होइ जैसे त्रैराशिक करि हजारका अपवर्तन किए पिच्याणवैका सोलहवां भाग आवै है । बहुरि एक योजनकी उचाईके पिच्याणवैका सोलहवां भाग हानिचय होय तौ आठसै असी योजन उचाईके कितनां होइ जैसे त्रैराशिक किए ऐसा $९५।८८० \div १६$ भया इहां आठसै असीका गुणकारको सोलह करि अपवर्तन किए पचावन गुणां पिच्याणवै भया इनको परस्पर गुणें पांच हजार दोगसै पचीस योजन तहां चंद्रकी बरोबरि हानिका प्रमाण आया । **भावार्थ**—समभूमितैं जहां आठसै असी योजन ऊंचा जल है तहां समुद्र तटतैं बावनसै पचीस योजन परैं सो जल पाइए हैं । ऐसा जाननां । बहुरि चंद्रमाका विमान बाह्य परिधि अपेक्षा समुद्र तटतैं समुद्र चार क्षेत्र प्रमाण परैं पाइए हैं । तातैं तामैं समुद्रका चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण घटावनां सो तीनसै तीस घटाए अठतालीससै पिच्याणवै रहे । अर इनमें एक ग्रहण करि तामैं अठतालीस इकसठिवां भाग घटावनेको इकसठि करि समछेद करि $६१ \div ६१$ तामैं विष प्रमाण $४८ \div ६१$ घटाए तेरह इकसठि भाग रहै हैं । **भावार्थ**—चंद्रमाका विमानकी बरोबरि जो जल ऊंचा है ताके अर याके तिर्यग्रूप बीचि अंतराल अठतालीससै चौराणवै योजन अर योजनके तेरह इकसठिवां भाग मात्र जाननां । बहुरि समुद्रके तटतैं पिच्याणवै योजनका सोलहवां भाग परैं जाइ एक योजन मात्र समभूमितैं जल उंचा होइ तौ तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग पूरैं जाइ जल कितनां ऊंचा होइ । जैसे त्रैराशिक करिए । तहां चारक्षेत्र तीनसै तीस योजनको अर सूर्यविष प्रमाण अठतालीस इकसठिवां भागको समछेद करि परस्पर

मिलाएं बीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भाग भया $२०१७८ \div ६१$ याकौं पिच्याणवैका सोलह्वां भागका भाग दैनां सो भिन्न गणित करि छेदलवकों पलटि करि भाज्यकौं सोलह करि अर भागहारकौं पिच्याणवै करि गुणें ऐसा $३२२८४८ \div ५७९५$ भया । इहां भाग दिएं पचावन योजन अर इकतालीससै तेईस योजनका सतावनसै पिच्याणवां भाग मात्र लब्ध प्रमाण आया । सो इतना चंद्र विमानकै नीचें समभूमितै जलकी उचाईका प्रमाण है । बहुरि याकौं चंद्रमाकी उचाई आठसै असी योजन तामें घटाएं आठसै चौईस योजन अर सोलहसै बहत्तरि योजनका सत्तावनसै पिच्याणवां भाग मात्र प्रमाण भया सो चंद्रमाकै अर ताकै नीचें समुद्र जल हें ताकै ऊर्द्धरूप वीचिमें अंतराल जाननां । अब सूर्यका तिर्यग अंतर आदि ल्याइए है । समभूमितै एक योजनकी उचाईकै समुद्र तटतै परै पिच्याणवै योजनका सोलह्वां भाग मात्र क्षेत्र होइ तौ आठसै योजनकी उचाई विपै केता होइ ? ऐसै त्रैराशिक करि सोलह करि आठसै गुणकारका अपवर्त्तन किएं पचास गुणां पिच्याणवै भया । परस्पर गुणें साटा सैतालीससै भए । इहां समुद्र चारक्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग घटाएं चवालीससै उगणीस योजन अर तेरह इकसठिवां भाग मात्र भया सोई सूर्यकै अर ताकी बरोबरि ऊंचा जल ताकै वीचिमें तिर्यगरूप अंतराल जाननां । बहुरि चंद्रमा अर समुद्रकै जो ऊर्द्धरूप अंतराल कथा ८२४ । $१६७२ \div ५७९५$ तामें असी योजन घटाएं अवशेष ७४४ । $१६७२ \div ५७९५$ सूर्यकै अर ताकै नीचें समुद्र जल ताकै वीचि ऊर्द्धरूप अंतराल जाननां । अब प्रसंग पाइ करि लवण समुद्र संबंधी सूर्यनिकै निकटि जल कितनां ऊंचा हें सो साधिए है—लवण समुद्र विपै च्यारि सूर्य हैं । सो एक एक परिधि विपै दौय दौय हैं । तातै दौय परिधिनिकै दौय सूर्य तिनके व्यास ग्रहण करनैकौं सूर्यका व्यास योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग मात्र ताकौं दूणां करि $९६ \div ६१$ याकौं इकसठि करि समछेद किया हूवा लवण समुद्रका व्यास ऐसा $१२२००००० \div ६१$ तामें घटाएं ऐसा $१२१९९९०४ \div ६१$ सर्व अंतराल क्षेत्र हो है । बहुरि दौय अंतरालनिका इतनां $१२१९९९०४ \div ६१$ क्षेत्र होइ तौ एक अंतरालका कितनां होइ ऐसै त्रैराशिक करि दौयकरि अपवर्त्तन किएं ऐसा $६०९९९५२ \div ६१$ भया इहां भाग दिएं एकघाटि एक लाख योजन अर योजनका तेरह इकसठिवां भाग मात्र प्रमाण $९९९९९१३ \div ६१$ आया । सो यह लवण समुद्र संबंधी दौय परिधिवर्ती दौय सूर्यनिकै वीचि अंतराल जाननां । बहुरि याकौं आधा किएं $४९९९९१३७ \div ६१$ लवण समुद्र संबंधी सूर्य अर वेदिकानि वीचि अंतराल हो है । भावार्थ—जंबूद्वीपकी वेदीतै परै गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन अर सैतीस इकसठिवां भाग जाइ लवण समुद्र संबंधी प्रथम परिधि विपै सूर्य है । अर लवण समुद्रकी वेदीतै इतनैही योजन उरै द्वितीय परिधि विपै सूर्य है । दोऊनिकै वीचि अंतराल निन्याणवै हजार नवसै निन्याणवै योजन अर तेरह इकसठिवां भाग मात्र है । दोऊ सूर्यनिका व्यास योजनका छिनवै इकसठिवां भाग मात्र है । इन सबनिकौं जोडै लवण समुद्रका व्यास दौय लाख योजन प्रमाण हो है । बहुरि सूर्य अर वेदिकाकै वीचि ऐसा $४९९९९१३७ \div ६१$ अंतरालको इकसठि करि समछेद करि अपने अंश सहित जोडै ऐसा $३०४९९७६ \div ६१$ भया ।

पीछें जो पिच्याणवै योजनका सोलहवां भागमात्र तटतै परें जल एक योजन ऊंचा होइ तौ सूर्य वेदिकाका अंतराल ३०४९७६÷६१ मात्र तटतै परें जल केता ऊंचा होइ ऐसैं त्रैराशिक करि प्रमाण राशिरूप भागहारके छेद लवनिकौ पलटि परस्पर गुणें ऐसा ४८७९९६१६÷५७९५ भया । इहां भागहारका भाग दिएं चौरासीसैं बीस योजन अर सत्तावनसैं सोलहका सत्तावनसैं पिच्याणवैवां भाग ८४२०।५७१६÷५७९५ मात्र लवण समुद्रसंबंधी सूर्यनिकै निकटि लवण समुद्रका जल ऊंचा है इहां जलके वाचि सूर्यादिक विचरैं हैं ऐसा जाननां ॥ ९०१ ॥

अब पातालनिका अंतरालकौ निरूपे हैं:—

मज्झिमपरिधिचउन्थं विवरमुहं तंवि मज्झमुहमद्धं ।

सयगुणपणघनहीणं तं सयल्लवीसभाजिदे विरहं ॥ ९०२ ॥

मध्यमपरिधिचतुर्थं विवरमुखं तदपि मध्यमुखमर्थं ।

शतगुणपंचघनहीनं तत् शतपड्विंशभाजिते विरहं ॥ ९०२ ॥

अर्थ—लवण समुद्रका मध्यम मूची व्यास तीन लाख योजन ताका स्थूल परिधि नवलाख योजन ताका चौथा भाग दोय लाख पचीस हजार योजन मात्र दिशा संबंधी एक पातालके मुखका अंततै लगाय दूसरे पातालके मुखका अंत पर्यंत क्षेत्र है । यामैं पातालका मध्य व्यास एक लाख योजन घटाएं तौ तिन पातालनिकी उचाईका मध्य विषै परस्पर अंतराल एक लाख पचीस हजार योजन मात्र हां है । अर ताहीमैं पातालका मुख व्यास दश हजार योजन घटाएं तिन पातालनिकै मुखनिका वीचि अंतराल दोय लाख पंद्रह योजन मात्र हो है । बहुरि यामैं विदिशा संबंधी पातालका मुखव्यास हजार योजन घटाइ अबशेष २१४००० का आधा किए दिशा संबंधी पाताल अर विदिशा संबंधी पातालनिका मुखनिकै वीचि अंतराल एक लाख सात हजार योजन हो है । बहुरि यामैंसौ गुणां पांचका घन बारह हजार पांचसैं तिनको घटाइ अबशेष ९४५०० को एकसौ लवीसका भाग दिएं दिशा विदिशा संबंधी पातालनिकै वीचि जे पाताल हैं तिनका मुखनिकै वीचि परस्पर अंतराल सातसैं पचास योजन मात्र हो है ॥ ९०२ ॥

अब लवणोदक समुद्रके पालक जे नागकुमार देव तिनके विमाननिकी संख्याकौ तीन स्थाननिका आश्रयकरि कहैं हैं:—

बेल्धर भुजगविमाणान सहस्त्राणि बाहिरे सिहरे ।

अंते बावत्तरि अडवीसं वादालयं लवणे ॥ ९०३ ॥

बेल्धरभुजगविमानानां सहस्त्राणि बाह्ये शिखरे ।

अंते द्वासप्ततिः अष्टविंशतिः द्वाचत्वारिंशत् लवणे ॥ ९०३ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपकी अपेक्षा लवण समुद्रका बाह्यविषै शिखरविषै बेल्धर जातिके भुजग जे नागकुमार देव तिनके विमान क्रमतैं बहत्तरि हजार अठाईस हजार वियालीस हजार हैं ॥ ९०३ ॥

आगैं तिन विमाननिका जहां अबस्थान है तिस स्थान विशेषकों अर विमाननिके व्यासकों कहैं हैं:—

दुतडादो सत्तसयं दुकोसअहियं च होइ सिहरादो ।

णयराणि हु गयणतले जोयणदसगुणसहस्सवासाणि ॥ ९०४ ॥

द्वितटात् समशतं द्विक्रोशाधिकं च भवति शिखरात् ।

नगराणि हि गगनतले योजनदशगुणसहस्रव्यासानि ॥ ९०४ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके दोऊ तटतैं सातसैं योजन अर ताके शिखरतैं दोयकोम अधिक सातसैं योजन छोड़ि उपरि जाइ आकाशविपै दश हजार योजन व्यास लीएँ नगर हैं । **भावार्थ**—लवण समुद्रका बाह्य अर अर्धंतर जो तट ताके ऊपरि सातसैं योजन जाइ अर लवण समुद्रके मध्य जल ऊंचा हे ताके उपरि सातसैं योजन अर दोय कोश जाइ बेलंधर जातिके नागकुमार देवनिके नगर हैं । ए नगर आकाशविपै जलतैं उपरि जाननैं । तिनका प्रत्येक व्यास दश हजार योजन मात्र जाननां ॥ ९०४ ॥

आगैं दिशा संबंधी पातालनिके दोऊ पार्श्वनिविपै तिष्ठते पर्वतनिकां अर तहां वास करते जे देवादिक तिनकां गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

वडवामुहपहुद्रीणं पासदुगे पव्वदा हु एकैका ।

पुव्वे कोत्थुभसेलो इय विदियो कोत्थुभासो दु ॥ ९०५ ॥

वडवामुखप्रभृतीनां पार्श्वद्वये पर्वता हि एकैकाः ।

पूर्वस्यां कौस्तुभशैलः इह द्वितीयः कौस्तुभासस्तु ॥ ९०५ ॥

अर्थ—वडवा मुख आदि जे दिशा संबंधी पाताल तिनके दोऊ पार्श्वनिविपै एक एक पर्वत है । तहां पूर्वदिशा संबंधी पातालकी पूर्व दिशाविपै कौस्तुभ नामा पर्वत है बहुरि इहां दूसरा पश्चिमदिसा विपै औस्तुभास नामा पर्वत है ॥ ९०५ ॥

तहिं तण्णामदुवाणा दक्खिणदो उदगउदगवासणगा ।

इह सिवसिवदेवसुरा संखमहासंख गिरिदु पच्छिमदो ॥ ९०६ ॥

तत्र तन्नामद्विवानौ दक्षिणद्वये उदकउदकवासनगां ।

इह शिवशिवदेवसुरां शंखमहाशंखां गिरिद्वयौ पश्चिमद्वये ॥ ९०६ ॥

अर्थ—तिन पर्वतनिके उपरि तिन पर्वतनिके समान नामके धारक दोय व्यंतर देव वसैं हैं । बहुरि दक्षिण दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविपै उदग अर उदक वास नामा पर्वत हैं । इनके उपरि शिव अर शिवदेवनामा व्यंतर देव वसैं हैं । बहुरि पश्चिम दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविपै शंख अर महाशंख नामा पर्वत हैं ॥ ९०६ ॥

तन्थुदयुदवासमरा दगदगवासहिजुगलमुत्तरदो ।

लोहिदलोहिदअंका तहिं वाणा विविहवण्णया ॥ ९०७ ॥

तत्रोदकोदवासामरौ दकदकवासाद्रियुगलमुत्तरद्वये ।

लोहितलोहितांकां तत्र बाणा विविधवर्णनकाः ॥ ९०७ ॥

अर्थ—तिन पर्वतनिके उपरि उदक अर उदकवास नामा व्यंतर देव वसैं हैं । बहुरि उत्तर दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविपै दक अर दकवास नामा पर्वत युगल है । तिनके उपरि

लोहित अर लोहतांक नामा व्यंतर वसैं हैं । ते सर्व व्यंतर विविध नाना प्रकार वर्णना जो विभूत्या-
दिक ताकरि संयुक्त हैं ॥ ९०७ ॥

धवला सहस्समुग्गय सव्वणगा अद्धघटसमायारा ।

उभयतडादो गत्ता वादालसहस्समत्थंति ॥ ९०८ ॥

धवलाः सहस्रमुद्रताः सर्वनगाः अर्धघटसमाकाराः ।

उभयतटात् गत्वा द्वाचत्वारिंशत्सहस्रमासते ॥ ९०८ ॥

अर्थ—ते सर्व पर्वत धवल वर्ण हैं । अर जलतैं हजार योजन ऊंचे हैं । अर आधा घड़कै
समान इनका आकार है । बड़िर बाह्य तटतैं उरैं अर अभ्यंतर तटतैं परैं ऐसैं उभय तटतैं वियालीस
हजार योजन जाइ तिष्ठे हैं ॥ ९०८ ॥

आगैं लवण समुद्रकें अभ्यंतर जे द्वीप हैं तिनकौं अर तिनके व्यासादिककौं गाथा च्यारि
करि कहैं हैं;—

तडदो गत्ता तेत्तियमेत्तियवासा हु विदिस अंतरगा ।

अडसोलस ते दीवा वट्टा मूरक्खचंद्रक्खा ॥ ९०९ ॥

तडतः गत्वा तावन्मात्रव्यासा हि विदिक्षु अंतरकाः ।

अष्टषोडश ते द्वीपा वृत्ताः सूर्याख्यचंद्राख्याः ॥ ९०९ ॥

अर्थ—उभय तटनितैं तितनैं ही योजन जाइ तितनैंही व्यासके धारक विदिशा अर अंतर
दिशानिविषे आठ अर सोलह सूर्य नामा अर चंद्रनामा द्वीप वृत्ताकार हैं । **भावार्थ**—अभ्यंतर
तटतैं परैं अर बाह्य तटतैं उरैं वियालीस हजार योजन जाइ वियालीस हजार योजन मात्र व्यास
करि संयुक्त विदिशा अर अंतर दिशानिविषे द्वीप । हैं । तहां च्यारयौं विदिशानिके दोऊ पार्श्वनि-
विषे आठ सूर्यनामा द्वीप हैं । अर दिशा विदिशानिके वीचि जे आठ अंतर दिशा तिनके दोऊ
पार्श्वनिविषे सोलह चंद्रनामा द्वीप हैं । ते सर्व द्वीप गोल आकार हैं । इहां द्वीपनाम टापूका
जाननां ॥ ९०९ ॥

तडदो वारसहस्सं गंतूणिह तेत्तियुदयवित्थारां ।

गोदमदीओ चिद्धदि वायव्वदिसम्मि वट्टुलओ ॥ ९१० ॥

तटतो द्वादशसहस्रं गत्वेह तावदुदयविस्तारः ।

गौतमद्वीपः तिष्ठति वायव्यदिशि वर्तुलः ॥ ९१० ॥

अर्थ—इहां लवण समुद्रके अभ्यंतर तटतैं परैं बारह हजार योजन जाइ तितनांही ऊंचा
१२००० अर तितनांही १२००० व्यासका धारक गोल आकार लिए वायु विदिशाविषे गौतम
नामा द्वीप तिष्ठे है ॥ ९१० ॥

बहुवण्णपासादा वणवेदीसहिय तेसु दीवेषु ।

तस्सामी वेलंधरणागा सगदीवणामा ते ॥ ९११ ॥

बहुवर्णनप्रासादाः वनवेदीसहितेषु तेषु द्वीपेषु ।

तस्वामिनो वेलंधरणागाः स्वकद्वीपनामानस्ते ॥ ९११ ॥

अर्थ—ते ए सर्व द्वीप वन अर वेदिकानि करि सहित हैं । तिनविषै ब्रह्म वर्णना करि संयुक्त मंदिर हैं । बहुरि तिनही द्वीपानिके स्वामी वेल्धर जातिके नागकुमार हैं । ते अपने अपने द्वीपके नाम समान नामके धारक हैं ॥ ९११ ॥

मागहतिदेवदीवत्तिदयं संखेज्जजोयणं गत्ता ।

तीरादो दक्खिणदो उत्तरभागेवि होदित्ति ॥ ९१२ ॥

मागधन्निदेवद्वीपत्रितयं संख्यातयोजनं गत्वा ।

तीरात् दक्षिणतः उत्तरभागेपि भवतीति ॥ ९१२ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रविषै जो समुद्रका दक्षिण तट तातै परे संख्यात योजन परे जाइ मागध अर वरतनु अर प्रभास नाम धारक जे तीन देव तिनके तिनही नाम धारक तीन द्वीप हैं ।

भावार्थ—भरत क्षेत्रकी दोय नर्दाके प्रवेश द्वार अर एक जंबूद्वीपका द्वार इन तीनों द्वारनिके सनमुख केते इक योजन जाइ मागधदिक देवनिके द्वीप हैं । इनको चक्रवर्ति साथे हें । बहुरि तैसैही ऐरावत क्षेत्रका उत्तर भागविषै भी तीन द्वीप हैं ॥ ९१२ ॥

अब लवणोदक समुद्र कालोदक समुद्रके अभ्यंतर तिष्ठते छिनवै कुमनुष्यनिके द्वीप तिनको कहै हैं;—

दिसिविदिसंतरगा हिमरजदाचलसिहरिरजदपणिधिगया ।

लवणदुगे पल्लठिदी कुमणुसदीवा हु लण्णउदी ॥ ९१३ ॥

दिशाविदिशांतरकाः हिमरजताचलशिखरिरजतप्रणिधिगताः ।

लवणद्विके पत्यस्थितयः कुमनुष्यद्वीपा हि पण्णवतिः ॥ ९१३ ॥

अर्थ—लवण समुद्रकी दिशानि विषै च्यारि अर विदिशानि विषै च्यारि अर दिशा विदशानिके वाचि जे अंतर दिशा तिन विषै आठ अर हिमवन कुलाचल भरत संबंधी वैताड्यशिखरी कुलाचल ऐरावत संबंधी वैताड्य इन पर्वतनिके दोऊ अंतनिके निकटि दोय तिनके मिळे हुए आठ ऐसै सर्व मिलि लवण समुद्रका अभ्यंतर तट विषै चौईस द्वीप हैं । बहुरि बाह्य तट विषै भी ऐसै ही चौईस हैं । मिलिकरि अठतालीस भए । ऐसैही कालोदक समुद्रके दोऊ तटनि विषै अठतालीस द्वीप हैं । ऐसे सर्व मिलि छिनवै कुमनुष्यनिके द्वीप जानने । बहुरि तहां तिष्ठते मनुष्य एक पत्य प्रमाण आयुके धारक हैं ॥ ९१३ ॥

आगै दोऊ तटनि विषै तिनका अंतराल अर तिनका विस्तारको क्रम करिकहै हैं;—

दसगुण पण्णं पण्णं पणवण्णं सट्ठिमुवहिमहिगम्म ।

सय पणवण्णं वण्णं पणुवीसं वित्थडा कमसो ॥ ९१४ ॥

दशगुणं पंचाशत् पंचाशत् पंचपंचाशत् षष्ठिरुदधिमाधिगम्य ।

शतं पंचपंचाशत् पंचाशत् पंचविंशतिः विस्तारः क्रमशः ॥ ९१४ ॥

अर्थ—ते द्वीप क्रमतै दस गुणा पचास अर पचास अर पचावन अर साठि योजन तटिनतै समुद्र विषै जाइ सौ पचावन पचावन पच्चीस योजन विस्तार संयुक्त क्रमतै जानने । **भावार्थ**—अभ्यंतर

तटतैं परैं अर बाह्य तटतैं उरैं दिशा संबंधी द्वीप पांचसैं योजन विदिशा संबंधी द्वीप पांचसैं योजन अंतर दिसा संबंधी पांचसैं पचास योजन पर्वत निकटवर्ती छसैं योजन जाय समुद्र विषै द्वीप हैं । तहां दिशा संबंधी सां योजन विदिशा संबंधी पचावन योजन अंतर दिशा संबंधी पचास योजन पर्वत निकटवर्ती पचीस योजन प्रमाण विस्तार अरैं गोल आकार द्वीप जानने ॥ ९.१४ ॥

आगैं तिन द्वीप रूप पर्वतनिका जलतैं उपरि वा नीचैं उच्चत्व कहैं हैं;—

इगिगमणे पणणउदिमतुंगो सोलगुणमुवरि किं पयदे ।

दुगजोगे दीउदओ सवेदिया जोयणुग्गया जलदो ॥ ९.१५ ॥

एकगमने पंचनवतितुंगः षोडशगुणमुपरि किं प्रकृते ।

द्विकयोगे द्वीपोदयः सवेदिका योजनोद्रता जलतः ॥ ९.१५ ॥

अर्थ—इहां ऐसा जाननां सम भूमिकी बरोवरि तौ लवण समुद्रके जलका व्यास दोय लाख योजन है । अर क्रमतैं घटता घटता सम भूमितैं नीचैं एक हजार योजन ऊंडा जल है । तहां जलका व्यास दश हजार योजन है अर सम भूमितैं उपरि सोलह हजार योजन ऊंचा जल है । तहां जलका व्यास दश हजार योजन है सो हानिचयका प्रमाण ल्याइ जहां ए द्वीप हैं तहां सम भूमितैं नीचैंको जो जलकी उंडाईका प्रमाण होइ सो तौ जलका नीचैं उच्चत्व जाननां । अर सम भूमितैं उपरि जो जलकी ऊंचाईका प्रमाण होइ सो जलका उपरि उच्चत्व जाननां सो कहिए है । सम भूमिकी बरोवरि जल व्यास दोय लाख योजन सो तो भूमि अर घटता घटता नीचैं जलव्यास दश हजार योजन सो मुख भूमिमैं मुखको घटाइ अवशेष १९.०००० कौं एक पार्श्व ग्रहण करनैको आधा किए पिच्याणवै हजार योजन भए । बहुरि पिच्याणवै हजार योजनकी जलव्यास विषै हानि होतैं हजार योजन जलकी नांचैतैं उचाई होइ तौ एक योजनकी हानि विषै केती होइ ऐसैं त्रैराशिक किए तटतैं एक योजन गए सम भूमितैं नीचैं जलकी उंचाईका प्रमाण एक योजनका पिच्याणवैवां भाग आया १÷९.५ बहुरि तटतैं एक योजन गए जो एक योजनका पिच्याणवैवां भाग मात्र जलकी उचाई होइ तौ पांचसैं वा साढा पांचसैं वा छहसैं योजन तटतैं गए केती उचाई होइ । ऐसैं त्रैराशिक किए तहां प्रमाण राशिरूप भागहारका भाग दिए अर अवशेष छेदलव रहे तिनका पांच करि अपवर्तन किए तटतैं पांचसैं आदि योजन गए तहां सम भूमितैं नीचैं जलका उदय क्रमतैं पांच योजन पांच उगणीसवां भाग अर पांच योजन पांच उगणीसवां भाग अर पांच योजन पंद्रह उगणीसवां भाग अर छह योजन छह उगणीसवां भाग प्रमाण आवै है । सो दिशा संबंधी आदि द्वीपनिकै निकटि इतनां तौ सम भूमितैं नीचैं जलका उच्चत्व जाननां । भाव यहु तहां इतनां उंडा जल है । अर सम भूमितैं उपरि जलका उदय ल्याइए हैं—समभूमिकी बरोवरि जल व्यास दोय लाख योजन सो भूमि अर उपरि जल व्यास दश दश हजार योजन सो मुख भूमिमैं मुख घटाइ अवशेषकी आधा किए पिच्याणवै हजार योजन भए । सो समभूमितैं उपरि सोलह हजार योजन उंचाई विषै पिच्याणवै हजार योजन जल व्यास विषै हानि होइ तौ एक योजनकी उचाई विषै केती होइ ऐसैं त्रैराशिक

किं पिच्याणवैका सोलह्वां भाग प्रमाण आया । बहुरि तटतै पिच्याणवैका सोलह्वां भाग मात्र जल परै भए एक योजन जल ऊंचा होइ तो तटतै एक योजन परै भए जल केता होइ अैसे त्रैराशिक किं तटतै एक योजन परै जल है सो सोलहका पिच्याणवैवां भाग मात्र ऊंचा जलका प्रमाण आया । बहुरि तटतै एक योजन परै जल भए सोलह गुणां पिच्याणवैवां भाग जल ऊंचा होइ तो पांचसै वा साढा पांचसै वा छसै योजन तटतै परै जल केता ऊंचा होइ अैसे त्रैराशिक किं अर पांच करि अपवर्तन किं अैसा । $१६०० \div १९$ $१६०० \div १९$ $१७६० \div १९$ $१९२० \div १९$ इहां भागहारका भाग दिं पांचसै आदि योजन तटतै परै जलकी उचाई क्रमतै चौरासी योजन च्यारि उगणीसवां भाग अर चौरासी योजन चार उगणीसवां भाग अर वाणवै योजन वारह उगणीसवां भाग अर एकसौ एक योजन एक उगणीसवां भाग मात्र जाननी । दिशा विदिसा संबंधी द्वीपनिकै निकटि समभूमितै जल इतनां ऊंचा है । बहुरि समभूमितै नीचै अर उपरि जो जलकी उचाई ताको मिलां जलका अवगाह प्रमाण तिस तिस द्वीपकी उचाई जाननी अर वेदिका करि सहित ते द्वीप जलतै उपरि एक योजन ऊंचे हैं । तटतै एक योजन भी जल विषै प्राप्त उचाई विषै मिलां । भूमि तलतै दिशा संबंधी द्वीपनिका निवै योजन नव उगणीसवां भाग अर विदिशा संबंधीनिका निवै योजन नव उगणीसवां भाग अर अंतर दिशा संबंधीनिका निन्याणवै योजन आठ उगणीसवां भाग अर पर्वत सनमुखनिका एक सौ आठ योजन सात उगणीसवां भाग मात्र उच्चत्व जाननां अैसे कथा सर्व विधान सो कौस्तुभ आदि पर्वत द्वीपनि विषै भी जाननां । तटतै जितनै योजन दूर कहै हैं ताकै अनुसारि यथा संभवतै उचाईका वा जलतै उचाईका प्रमाण ल्यावनां ॥ ९१५ ॥

अब तिन कुभोगभूमिनि विषै उत्पन्न मनुक्षनिकी आकृतिनका स्थान पांच गाथानि करि कहै हैं;—

एगुरुगा लंगलिका वेसणगाऽभासगा य पुल्वादी ।

सकुलिकण्णा कण्णप्पावरणा लंबकण्ण ससकण्णा ॥ ९१६ ॥

एकोरुकाः लंगलिकाः वैपाणिकाः अभापकाः च पूर्वाद्विप ।

शकुलिकर्णाः कर्णप्रावरणाः लंबकर्णाः शशकर्णाः ॥ ९१६ ॥

अर्थ—एकोरुका कहिए एक ही जांघवाले अर लंगुलिका कहिए पूंछ संयुक्त अर वैपाणिका कहिए सींग युक्त अर अभापका कहिए न बोलने वाले गूंगे अैसे ए च्यारि तौ पूर्वादिक दिशा संबंधी द्वीपनि विषै वसे हैं । बहुरि शकुलिकर्णाः कहिए शकुलि समान हैं कान जिनकै अर कर्ण-प्रावरणा कहिए कान है वस्त्र समान शरीर आच्छादनकौ कारण जिनकौ अर लंबकर्णा कहिए लांबा है कान जिनकै अर शशकर्णा कहिए मुसाका समान हैं कान जिनकै अैसे ए च्यारि विदिशानि विषै वसे हैं ॥ ९१६ ॥

सिंहस्ससाणमहिसवराहमुहा वग्घघूयकपिवदणा ।

झसकालमेसगोमुहमेघमुहा विज्जुदप्पणिभवदणा ॥ ९१७ ॥

सिंहाश्वश्वामहिपवराहमुखाः व्याघ्रघूककापिवदनाः ।

झपकालमेपगोमुखमेघमुखाः विद्युद्वर्षणेभवदनाः ॥ ९१७ ॥

अर्थ—नाहर घोड़ा कुत्ता भैंसा सूर वघेरा धूयू बांदरा समान है मुख जिनका जैसे सिंह मुख अर अश्व मुख अर सुनक मुख अर महिप मुख अर वराह मुख अर व्याघ्र वदन अर घूघू वदन अर कपि वदन हैं । ते ए आठ भए । बहुरि मीन काल मीढा गऊ मेघ वीजुरी आरसा हाथी समान है मुख जिनका जैसे झप मुख अर गोमुख अर मेघ मुख अर विद्युद्वदन अर दर्पण वदन अर इभ वदन हैं तेस आठ भए । इहां विशेष कह्या आकारतै अन्य सर्व आकार मनुक्षका जाननां ॥ ९१७ ॥

अग्निदिसादी सकुलिकण्णादी सिंहवदणणरपमुहा ।

एगूरुगसकुलिसुदिपद्दुदीणं अंतरे णेया ॥ ९१८ ॥

अग्निदिशादिषु शङ्कुलिकर्णादयः सिंहवदननरप्रमुखाः ।

एकोरुशङ्कुलिश्रुतिप्रभृतीनां अंतरे ज्ञेयाः ॥ ९१८ ॥

अर्थ—अग्निदिशादिक जे विदिशा तिन विषै क्रमतै शङ्कुलि कर्ण आदि वसै हैं । बहुरि सिंह वदन युक्त मनुक्ष आदि आठ क्रमतै एको रूक शङ्कुलिकर्णनिका अंतरालादि आठ अंतराल-निविषै वसै हैं ऐसै जाननें ॥ ९१८ ॥

गिरिमन्थयत्थदीवा पुव्वुत्ता सगणगस्स पुव्वदिसे ।

पच्छा भणिदा पच्छिमभागे अत्थंति ते कमसो ॥ ९१९ ॥

गिरिमस्तकस्थद्वीपाः पूर्वोक्ताः स्वकनगस्य पूर्वदिशि ।

पश्चात् भणिताः पश्चिमभागे आसते ते क्रमशः ॥ ९१९ ॥

अर्थ—हिमाचल अर भरत वैताढ्य अर शिखरी अर ऐरावत वैताढ्य इन च्यारि पर्वतनिका मस्तक विषै तिष्ठते द्वीपनिकेवासी झपमुख आदि जाननें । तहां झपमुख काल मुख आदि च्यारि युगलनि विषै जिनकाँ पहलै कहे ते तौ अपनें अपनें पर्वतकी पूर्वदिशा विषै तिष्ठै हैं । पीछै कहे ते तिस पर्वतका पश्चिम भाग विषै तिष्ठै हैं ॥ ९१९ ॥

एगोरुगा गुहाए वसंति जेमंति मिट्ठतरमट्ठि ।

सेसा तरुतलवासा कप्पहुमदिण्णफलभोजी ॥ ९२० ॥

एकोरुका गुहायां वसंति जेमंति मृष्टतरमृत्तिकां ।

शेषाः तरुतलवासाः कल्पद्रुमदत्तफलभोजिनः ॥ ९२० ॥

अर्थ—पूर्वै कहे कुमनुक्ष तिन विषै एकोरूक तौ गुफा विषै वसै हैं अर तहांकी अधिक भाठी मृत्तिकाकाँ जीमै हैं भखै हैं । बहुरि अवशेष सर्व वृक्षनिकै नीचै वसै हैं । अर कल्पवृक्षनिकरि दिए फलनिकाँ भखै हैं । तहां जन्मादिककी जघन्य भोग भूमिवत् प्रवृत्ति जाननी ॥ ९२० ॥

आगै तिन छिनवै द्वीपनिकी संख्याका विशेष वर्णन कहे हैं;—

चउवीसं चउवीसं लवणदुतीरेसु कालदुतडेवि ।

दावा तावादियंतरवासा कुणरा वि तण्णामा ॥ ९२१ ॥

चतुर्विंशं चतुर्विंशं लवणद्वितीरयोः कालद्वितयोरपि ।

द्वीपाः तावदंतरव्यासाः कुनरा अपि तन्नामानः ॥ ९.२१ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके दोय तीरनि विषै चौबीस चौबीस द्वीप हैं। बहुरि कालोदक समुद्रके दोय तटनि विषै भी चौबीस चौबीस द्वीप हैं। इहां दिशा विदिशा अंतर दिशा संबंधी द्वीप तां सर्वत्र तीरनिकी दिशा विदिशा अंतरदिशानि विषै हैं ही। बहुरि पर्वत संबंधी द्वीप लवण समुद्रके अम्यंतर तट विषै तां जंबूद्वीप संबंधी पर्वतनिके दोऊ अंतनिविषै स्थित हैं। अर लवण समुद्रके बाह्य तट विषै अर कालोदकके अम्यंतर तट विषै धातुकी ग्वंड संबंधी पर्वतनिका एक एक अंत विषै स्थित हैं अंसा जाननां। बहुरि द्वीपनिका तटतै अंतराल अर व्यास लवण समुद्रवत तितनै ही पूर्वोक्त प्रमाण जाननै। बहुरि तिन द्वीपनि विषै वसते कुमनुक्ष भी तिस तिस द्वीप नाम समान हैं नाम जिनका ऐसे हैं ॥ ९.२१ ॥

आगै तिन कुभोग भूमि रूप कुमनुक्षनिके द्वीपनि विषै जे उपजै हैं तिनकौ गाथा तीन करि कहै हैं;—

जिणलिंगे मायावी जोइसमंतोवजीवि धणकंखा ।

अइगउरवसणजुदा करोंति जे परविवाहंपि ॥ ९.२२ ॥

जिनलिंगे मायाविनो ज्योतिमंत्रोपजीविनः धनकाक्षिणः ।

अतिगारवसंज्ञायुताः कुर्वंति ये परविवाहमपि ॥ ९.२२ ॥

अर्थ—जे जीव जिन लिंग धरि तीह जिन लिंग विषै कपट संयुक्त मायावी हैं। वा जिन लिंग विषै ज्योतिप मंत्र वैद्य आदि करि आहारादिरूप कपट आजीविका करै हैं। वा जिन लिंग विषै धन चाहै हैं। वा जिन लिंग विषै ऋषि यश साता रूप गारव करि उपयुक्त हैं। वा जिन लिंग विषै आहार भय मैथुन परिग्रहरूप संज्ञानि करि संयुक्त हैं। वा जिन लिंग विषै अन्य ग्रहस्थनिका परस्पर विधि मिलाइ विवाह करै हैं ॥ ९.२२ ॥

दूसणविराहिया जे दोसं णालोचयंति दूसणगा ।

पंचगितवा मिच्छा मोणं परिहरिय भुंजंति ॥ ९.२३ ॥

दर्शनविराधका ये दोषं नालोचयंति दूषणकाः ।

पंचाश्रितपसः मिथ्याः मांनं परिहृत्य भुंजते ॥ ९.२३ ॥

अर्थ—जे जिन लिंग विषै सम्यग्दर्शनके विराधक हैं। जे जिन लिंग विषै अपनै किए हुए दोषकौ श्री गुरुनिकै निकटि आलोचना न करै हैं। जे जिन लिंग विषै अन्य जीवनिकौ दोष लगावै हैं। जे मिथ्यादृष्टी पंचाग्नि साधन आदि तप करै हैं। जे मांनकौ छोड़ि भोजन करै हैं ॥ ९.२३ ॥

दुग्भावअसुचिसूदगपुष्पवईजाइसंकरादीहिं ।

कयदाणा वि कुवत्ते जीवा कुणरेसु जायंते ॥ ९.२४ ॥

दुर्भावाशुचिमूतकपुष्पवतीजातिसंकरादिभिः ।

कृतदाना अपि कुपात्रेषु जीवाः कुनरेषु जायंत ॥ ९.२४ ॥

अर्थ—खोटे भावकरि वा अपवित्रताकरि वा मृतादिकका सूतक करि वा पुष्पवती स्त्रीका संसर्ग करि वा परस्पर विपरीत कुलनिका मिलनें रूप जो जातिसंकर ताकों आदि देकरि संयुक्त जे दान करै हैं । बहुरि जे कुपात्रनि विषे दान करै हैं ते ए जीव कुमुनुक्षनि विषे उपजै हैं जातै ए जीव मिथ्यात्व पाप सहित किंचित पुण्य उपार्जन करै हैं ॥ ९२४ ॥

अथ धातुकी खंड अर पुष्करार्थ द्वीपनि विषे रचना विषैका एक विधान हे तातै आगै करिण हैं जे क्षेत्र तिनक विभागकौ कारण भूत एसे जे तिन द्वीपनिके दोऊ पार्श्वनि विषे तिष्ठते इष्वाकार पर्वतनिका कहै हैं;—

चउगिसुगारा हेमा चउकूड सहस्सवास णिसहुदया ।

सगदीववासदीहा इगिइगिवसदी हु दक्खिणुत्तरदो ॥ ९२५ ॥

चतुरिष्वाकारा हेमाः चतुःकृटाः सहस्रव्यासा निपधोदयाः ।

स्वकद्वीपव्यासदीर्घा एकैकवसतयः हि दक्षिणोत्तरतः ॥ ९२५ ॥

अर्थ—धातुकी अर पुष्करार्थ विषे मिलाए हुए चारि इष्वाकार पर्वत हैं ते सुवर्ण मय हैं । अर च्यारि च्यारि कूटनि करि युक्त हैं पूर्व पश्चिम विषे हजार योजन चौडे हैं । निपध कुलाचल समान च्यारिसै योजन ऊंचे हैं । दक्षिण उत्तर विषे अपने अपने द्वीपका व्यास समान च्यारि व आठ लाख योजन लंबे हैं । एक एक क्षेत्रादि रचना रूप बसती लए हैं । ऐसै इष्वाकार तिन दोऊ द्वीपनिकी दक्षिण अर उत्तर दिसानि विषे तिष्ठे हैं ॥ ९२५ ॥

आगै तिन दोऊ द्वीपनि विषे तिष्ठते कुलाचल आदि तिनका स्वरूप निरूपै हैं;—

कुलगिरिवक्खारणदीदहवणकुंडाणि पुक्खरदलोत्ति ।

ओवेहुस्सेहसमा दुगुणा दुगुणा दु वित्थिण्णा ॥ ९२६ ॥

कुलगिरिवक्खारणदीदहवणकुंडानि पुष्करदल इति ।

अवगाधोत्सेधसमा द्विगुणा द्विगुणाः तु विस्तीर्णाः ॥ ९२६ ॥

अर्थ—धातुकी खंडतै लगाय पुष्करार्थ पर्यंत तिस एक एक द्वीप विषे तिष्ठते दोऊ मेरु संबंधी कुलाचल बारह बहुरि गजदंतनि करि सहित वक्खार चालीस बहुरि गंगा सिंधु आदि अर विभंगा अर कलादि विदेह संबंधी दोय दोय मिलाई हुई नदी एकसौ असी । बहुरि कुलाचलनिके उपरि तिष्ठते अर भोग भूमि भद्रसालनिके मध्य तिष्ठते मिले हुए द्रह बावन बहुरि पर्वत नदी आदिनिके पार्श्व विषे तिष्ठते वन संख्याते अर गंगादिकनिके पडनेके अर विभंगा विदेह नदीनिके उपजनेके मिले हुए कुंड एकसौ असी ए सर्व उंडाई उंचाई इत्यादि करि तौ जंबू द्वीप विषे तिष्ठते कुलाचल आदिकनिके समान जाननें । अर इनका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण सो जंबू द्वीप संबंधीनितै दूणे दूणे हैं । जंबूद्वीप संबंधी कुलाचलादिकनिका विस्तार तौ धातुकी खंडसंबंधीनिका दूणा है । धातुकी खंड संबंधीनिकातै पुष्करार्थ संबंधीनिका दूणा है ॥ ९२६ ॥

आगै ज्यौह द्वीप विषे तिष्ठते क्षेत्र अर कुलाचलनिके आकारकौ निरूपै हैं;—

सयलुद्धिणिभा वस्सा दिवड्ढदीवम्हि तन्थ सेलाआं ।

अंते अंकमुहाओ खुरप्पसंठाणया बाहिं ॥ ९२७ ॥

शकटोर्ध्वनिभा वर्षाः द्रवर्धद्वीपे तत्र शैलाः ।

अंतः अंकमुखाः क्षुरप्रसंस्थानका बहिः ॥ ९२७ ॥

अर्थ—एक तौ धातकी खंड अर आधा पुष्कर अँसें ज्यौं द्वीपविषै जे क्षेत्र ते तौ शकटोर्ध्विका जो गाड़ाकी ऊर्ध्विका तीह समान जाननें अर तहां शैल जे कुलाचल ते अभ्यंतरविषै तौ अंकमुख हैं अर बाह्यविषै क्षुरप्रसंस्थान कहिए हैं । सो इनका आकार ऐसा जाननां । इहां धातकी खंडकी पुष्करार्द्धकी रचना ऐसी जाननी ॥ ९२७ ॥

आगैं धातकी खंड पुष्करार्द्धनि विषै पर्वतनिके क्षेत्रादिकका आकारकी रचना करि रोक्य हुवा क्षेत्रकों कहता तिनकी परिधिनिको व्याव है;—

दृगचउरट्टडसगइगि दुकला चउरडछपंचपणतिण्णि ।

चउकलमगरुद्धरा जाणादिमज्झचरिमपरिहिं च ॥ ९२८ ॥

द्विकचतुरष्टाष्टसत्तैकं द्विकले चतुरष्टपट्पंचपंचत्राणि ।

चतुष्कलमगरुद्धरा जानीहि आदिममध्यचरमपरिधीन् च ॥ ९२८ ॥

अर्थ—दोय च्यारि आठ आठ सात एक इनके अंकनि करि एक लाख अठहत्तरि हजार आठसै वियालीस योजन अर एक योजनके उर्गवीस भागनिविषै दोय कला इतनां तौ धातकी खंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र है । बहुरि च्यारि आठ छह पांच पांच तीन इनके अंकनि करि पैतीस लाख पचावन हजार छसै चौरासी योजन अर उगणीस भागनिविषै च्यारि कला इतनां पुष्करार्द्धका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र है । बहुरि तिन द्वीपनिविषै भरतादि क्षेत्रनिका व्यास जाननेंके अर्थ तिनकी आदि परिधि मध्य परिधि बाह्य परिधि हे शिष्य तू जानि । इहां पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र व्यावनेंका विधानकों प्रगट करै है । धातकी खंडविषै क्षेत्रनिका विस्तार तौ विषमरूप है । अर पर्वतनिका विस्तार जंबूद्वीप संबंधीनितै दूणा ही है । तातैं जंबूद्वीप संबंधी पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र कहि इन द्वीपसंबंधी पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र कहिए है । भरत आदि क्षेत्रनिकी शलाका तौ क्रमतैं एक च्यारि सोलह चौसठि सोलह च्यारि एक सो मिलाई हुई एकसौ छह भई अर हिमवत आदि पर्वतनिकी शलाका क्रमतैं दोय आठ वत्तीस आठ दोय सो मिलाई हुई चौरासी हुई ए सर्व पर्वत सर्व क्षेत्रनिकी शलाका मिलाइए मो मिश्र शलाका कहिए है । सो मिश्र शलाका एकसौ निवै भई । प्रवृत्तिविषै शलाकाका नाम विसवा है । अँसें इन एकसौ निवै मिश्र शलाकानिका क्षेत्रपर्वतनिका मिल्या हुवा क्षेत्र एक लाख योजन होइ तौ क्षेत्र रहित शुद्ध पर्वत शलाका चौरासी तिनका केता क्षेत्र होइ अँसें त्रैराशिक किए जंबूद्वीपविषै पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र चौरासी गुणां एक लाखकों एकसौ निवैका भाग दीजिए इतनां भया १ ल ८४ ÷ १९० बहुरि एक शलाका क्षेत्रका धातकी खंडविषै दूणां विस्तार होइ तौ इतनें १ ल ८४ ÷ १९० शलाका क्षेत्रका कितनां होइ ऐसैं त्रैराशिक किए तातैं दूणां धातकी खंडका एक मेरु संबंधी एक भागविषै पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र अँसा २ ल ८४ ÷ १९० आया । बहुरि एक भागविषै इतनां २ ल ८४ ÷ १९० क्षेत्र है तौ दोय मेरु संबंधी दोय भागनि विषै केता होइ ऐसैं त्रैराशिक किए तातैं दूणां ऐसा

४ ल ८४ ÷ १९० धातकी खंड विषै कुलाचलनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र प्रमाण आया। अब याहीका अन्य विधान कहैं हैं। धातकी खंड विषै जंबूद्वीपतैं पर्वत वा क्षेत्रनिका दूणा प्रमाण है तातैं शलाकाका प्रमाण भी तहां दूणां भया। सो पर्वतनिकी शुद्ध शलाका एकसौ अडसठि तिनका पूर्वोक्त इतनां ४ ल ८४ ÷ १९० क्षेत्र होइ तौ मिश्र शलाका जंबूद्वीप शलाकातैं दूणी तीनसै असी तिनका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं इतनां भया ४ ल ८४।३८० ÷ १९०।१६८ इहां इछा तीनुसैं असीका दोय करि संभेदन किएं अर दोय करि चौरासीको गुणें ऐसा ४ ल १६८।१९० ÷ १९०।१६८ भया अपवर्त्तन किएं धातकी खंडका मिश्र क्षेत्र च्यारि लाख योजन भया। इहां मिश्र क्षेत्र वा मिश्र शलाका ऐसैं हैं नाहीं जातैं जंबूद्वीपवत क्षेत्रनिका पर्वतनितैं दूणां अनुक्रमका इहां अभाव है। तथापि जंबूद्वीप अपेक्षा कथन दिखावनेकों कल्पना करि कह्या है। बहुरि तीनसैं असी मिश्र शलाकानिका क्षेत्र च्यारि लाख योजन होइ तौ एकसौ अडसठि शुद्ध पर्वत शलाकानिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं ऐसा ४ ल १६८ ÷ ३८० भया। इहां दोय करि अपवर्त्तन किएं पूर्वोक्त प्रमाण ही चौरासी गुणा च्यारि लाख एक सौ निवै करि भाजित क्षेत्र आया ४ ल ८४ ÷ १९० इहां इछा चौरासी करि गुणें ऐसा ३३६००००० ÷ १९० भाग-हारका भाग दिएं एक लाख छिहंतर हजार आठसै वियालीस योजन अर दोय उगणीसवां भाग मात्र १७६८४२।२ ÷ १९ कुलाचलनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र जाननां। यामैं दोऊं इष्वाकारनिका व्यास दोय हजार योजन जोड़ैं पूर्वोक्त प्रमाण १७८८४२।२ ÷ १९ धातकी खंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र प्रमाण हो है। बहुरि धातुकी खंडके कुलाचलनिका व्यासतैं पुष्करार्द्धके कुलाचलनिका दूणा व्यास है। तातैं पूर्वोक्त कुलाचलनिका रोक्या हुवा क्षेत्र प्रमाण ऐसा १७८४२।२ ÷ १९ ताको दूणा करि ३५३६८४।४ ÷ १९ यामैं दोय इष्वाकारनिका व्यास दोय हजार योजन जोड़ैं पूर्वोक्त प्रमाण ३५५६८४।४ ÷ १९ पुष्करार्द्धका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्रप्रमाण हो है। अब क्षेत्र व्यास ल्यावनेकों कहिए हैं। धातकी खंडका व्यास च्यारि लाख योजन ताको आदि मध्य अंत करि तीन जायगा स्थापि बहुरि लवणादीण वासं इत्यादि पूर्वोक्त सूत्र करि ताकी लवण समुद्रकै निकटि आदि सूची पांचलाख योजन अर मध्य विषै मध्य सूची नव लाख योजन अर कालोदक समुद्रकै निकटि वाह्यसूची तेरह लाख योजन आवै है। ताको ल्याइ विष्कंभवग्गदह गुणकरिणी वट्टस परिहियं होदि इस करण सूत्र करि मूल प्रहण योग्य करिणीरूप परिधि ऐसा आवै है। आदि २५ विदी ११ मध्य ८१ विदी ११ बाह्य १६९ विदी ११ इनका वर्ग-मूल प्रहण किएं धातकी खंडका अम्यंतर परिधि पंद्रह लाख इक्यासी हजार एकसौ गुणतालीस योजन मध्य परिधि अठाईस लाख छियासी हजार नवसै इकसठि योजन बाह्य परिधि इकतालीस लाख दश हजार नवसै इकसठि योजन प्रमाण हो है। इन तीनों परिधिनि विषै पूर्वोक्त धातुकीखंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र १७८८४२।२ ÷ १९ घटाएं क्रमतैं पर्वत रहित क्षेत्र अम्यंतर परिधि विषै चौदह लाख दोय हजार दोयसै सित्याणवै योजन मध्य परिधि विषै छ्वांस लाख सडसठि हजार दोयसै आठ योजन बाह्य परिधि विषै गुणतालीस लाख बत्तीस हजार एकसौ उगणीस योजन प्रमाण हो है। इहां योजननिके अंश अधिक हीन है तिनको नाहीं गिने हैं। स्थूल रूप वर्णन किया है ॥९२८॥

इन तीन पर्वत रहित क्षेत्रनिकों धारि अब भरतादि क्षेत्रनिका अभ्यंतर आदि विष्कंभ कहैं हैं;—

भरहडरावदवस्सा विदेहवस्सोत्ति चउविगुण वस्सा ।

गिरिविरहियपरिहीणं हारो विण्णिसयवारं च ॥ ९२९ ॥

भरतैरावतवर्पात् विदेहवर्पात् चतुःद्विगुणा वर्षाः ।

गिरिविरहितपरिधीनां हारः द्विशतं द्वादश च ॥ ९२९ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रतै वा ऐरावत क्षेत्रतै लगाइ विदेह क्षेत्र पर्वत क्षेत्रनिका विष्कंभ क्रमतै चौगुणां है । तातै भरतकी एक हैमवतकी चारि हरिकी सोलह विदेहकी चौसठि ऐरावतकी एक हैरण्यवतकी चारि रम्यककी सोलह शलाका जाननी । सब मिलाए एक सौ छह शलाका भई दोय मेरु संबंधी दोऊ भागनिके ग्रहण करनेको दूणी किए दोयसै बारह शलाका भई तातै पर्वत रहित परिधि प्रमाणको दोयसै बारहका भागहार जानना । कैसे सो कहिए हैं । दोयसै बारह शलाकानिका अभ्यंतर परिधि विषै पर्वत रहित क्षेत्र इतनां १०।२२९.७ होइ तौ भरतादिकनिकी एक आदि १।४।१६।६।४।१।४।१६ शलाकानिका केता होइ ऐसै त्रैराशिक करि भरतकी एक शलाका अपेक्षा पर्वत रहित क्षेत्रको भागहार दोयसै बारहका भाग दिए भरतका अभ्यंतर विष्कंभ छह हजार छहसै चौदह योजन अर एक योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै एकसौ गुणतीस अंश प्रमाण हो है । ऐसै ही विधानकरि तिस भरतका मध्य विष्कंभ बारह हजार पांचसै इक्यासी योजन अर छत्तीस अंश प्रमाण हो है । बाह्य विष्कंभ अठारह हजार पांचसै सैंतालीस योजन अर एकसौ पचावन अंश प्रमाण हो है । ऐसैही हैमवत आदि विषै भी विधान करनां । अथवा भरतके अभ्यंतर आदि विष्कंभनिकों क्रमतै चारि चारि गुणें हैमवत हरि विदेह क्षेत्रके अभ्यंतर आदि विष्कंभ हो हैं । ऐसैही ऐरावत पर्वत जानना । बहुरि पुष्करार्द्धकी कालोदक समुद्रकै निकटि अभ्यंतर सूची गुणतीस लाख योजन अर व्यासका मध्य विषै मध्य सूची सैंतीस लाख योजन अर मानुषोत्तरकै निकटि बाह्य सूची पैंतालीस लाख योजन प्रमाण है । इनका पूर्वोक्त विधान किए पुष्करार्द्धका अभ्यंतर परिधि इक्याणवै लग्ब सत्तरि हजार छसै पांच योजन, मध्य परिधि एक कोडि वियालीस लाख तीस हजार दोयसै गुणचास योजन प्रमाण हो है । इन विषै पर्वतनि करि रोक्या हुआ क्षेत्र तीन लाख पचावन हजार छसै चौरासी योजन घटाए पर्वतनिकरि रहित क्षेत्र अभ्यंतर परिधिविषै अठ्यासी लाख चौदह हजार नवसै इकईस योजन अर मध्य परिधिविषै एक कोडि तेरह लाख चवालीस हजार सातसै तियासी योजन, अर बाह्य परिधिविषै एक कोडि अडतीस लाख चहोत्तरि हजार पांचसै पैसठि योजन प्रमाण है । इनको भरतकी शलाका एक ताकरि गुणें अर दोयसै बारहका भाग दिए पुष्करार्द्धके भरतका अभ्यंतर विष्कंभ इकतालीस हजार पांचसै गुण्यासी योजन अर योजनके दोयसै बारा अंशनिविषै एकसौ तहेत्तरि अंश प्रमाण हैं । मध्य विष्कंभ तरेपन हजार पांचसै बारह योजन अर एक सौ निन्याणवै अंश प्रमाण है । बाह्य विष्कंभ पैसठि हजार चारिसै छियालीस योजन अर तेरह अंश प्रमाण है । बहुरि याकौ चौगुणा किए हैमवतके बहुरि याकौ चौगुणां किए हरिके बहुरि याकौ चौगुणा किए

विदेहके अभ्यंतर मध्य बाह्य विष्कंभनिका प्रमाण हो है । ऐसै ही भरत हैमवत हरि ऐरावत हैरण्यवत रम्यक क्षेत्रनिके विष्कंभ जानने ॥ ९२९ ॥

नाम	अभ्यंतर विष्कंभ		मध्य विष्कंभ		बाह्य विष्कंभ	
भरत	६६१४	१२९÷२१२	१२५८१	३६÷२१२	१८५४७	१५५÷२१२
हैमवत	२६४५८	९२÷२१२	५०३२४	१४४÷२१२	७४१९०	१९६÷२१२
हरि	१०५८९३	१५६÷२१२	२०१२९८	१५२÷२१२	२९६७६३	१४८÷२१२
विदेह	४२३३३४	२००÷२१२	८०५१९४	१८४÷२१२	११८७०५४	१६८÷२१२
ऐरावत	६६१४	१२९÷२१२	१२५८१	३६÷२१२	१८५४७	१५५÷२१२
हैरण्यवत्	२६४५८	९२÷२१२	५०३२४	१४४÷२१२	७४१९०	१९६÷२१२
रम्यक	१०५८३३	१५६÷२१२	२०१२९८	१५२÷२१२	२९६७६३	१४८÷२१२

नाम	अभ्यंतर	विष्कंभ	मध्य	विष्कंभ	बाह्य	विष्कंभ
भरत	४१५७९	१७३÷२१२	५३५१२	१९९÷२१२	६५४४६	१३÷२१२
हैमवत	१६६३१९	५६÷२१२	२१४०५१	१६०÷२१२	२६१७८४	५२÷२१२
हरि	६६५२७७	१२÷२१२	८५६२०७	४÷२१२	१०४७१३६	२०८÷२१२
विदेह	२६६५११०५	३५÷२१२	३४२४८२८	१६÷२१२	४१८८५४७	१९६÷२१२
ऐरावत	४१५७९	१७३÷२१२	५३५१२	१९९÷२१२	६५४४६	१३÷२१२
हैरण्यवत्	१६६३१९	५६÷२१२	२१४०५१	१६०÷२१२	२६१७८४	५२÷२१२
रम्यक	६६५२७७	१२÷२१२	८५६२०७	४÷२१२	१०४७१३६	२०८÷२१२

अब धातकी खंडका विदेह क्षेत्र विषै तिष्ठते कछादिक देस तिनका आयामकौ गाथा तीन करि कहै हैं;—

गिरिजुद् दुभद्रसालं मज्झिमसूइम्हि धणरिणे सूई ।

पुव्ववरमेरुबाहिरअभंतरभद्रसालअंतस्स ॥ ९३० ॥

गिरियुतं द्विभद्रशालं मध्यमसूचौ धनर्णे सूची ।

पूर्वापरमेरुबाह्याभ्यंतरभद्रशालांतस्य ॥ ९३० ॥

अर्थ—इहां विदेहके कछादिक देशनिका दक्षिण उत्तर विषै व्यास है सो परिधिविषै है तातै तहांकी परिधि कहिए हैं । धातकी खंडकी मध्यविषै मध्यसूची भई । बहुरि याविषै इतनां सूची व्यास और जोडै वा घटाए जहां जेता सूची व्यास होइ सो कहिए हैं । पूर्व पश्चिम मेरुनिका आधा आधा व्यास ग्रहण किए एक मेरुका व्यास समान चौराणवैसौ योजन भए । अर तिन दोऊ मेरुनिके कालोदकी तरफ जे दोय बाह्य भद्रसाल तिनका व्यास दोयलाख पंद्रह हजार सातसै अठावन योजन इनको जोडि २२५१५८ मध्य सूची नव लाख योजन विषै धन किए जोडै

पूर्व पश्चिम मेरुके जे दोय भद्रसाल तिनकी कालोदकी तरफ अंत विषै बाह्य सूची ग्यारह लाख पचीस हजार एकसौ अठावन योजन प्रमाण हो है । बहुरि तिस मध्य सूची नवलाख योजन विषै दोय मेरुनिका आधा आधा व्यास अर दोय अभ्यंतर भद्र शालनिका व्यास जोड़ि २१५१५८ ऋण किए घटाएं लवण समुद्रकी तरफ जो अंत तहां अभ्यंतर सूची व्यास छह लाख चौत्तरि हजार आठसै वियालीस योजन हो है ऐसै सूची व्यास ल्याइ अब इनकी परिधि कहिए हैं । बहुरि इस अभ्यंतर सूचीव्यासका ६७४८४२ विष्कंभवग्गदहगुण इत्यादि करण सूत्र करि कारणि रूपपरिधि किए ऐसा ४५५४११७२४९६४० भया याका वर्गमूल ग्रहे इकईस लाख चौतीस हजार सैंतीस योजन तिस अभ्यंतर भद्रसालकी सूचीका परिधि हो है । बहुरि यामै धातकी खंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र एक लाख अठहत्तरि हजार आठसै वियालीस योजन घटाएं पर्वत रहित परिधि उगणीस लाख पचावन हजार एकसै पिच्याणवै योजन मात्र हो है ॥ ९३० ॥

गिरिरहिदपरिहिगुणितं अडकदिणा विसयवारसेहिं हिदं ।

पादेहीणदलं दीहं कच्छादिमगंधमालिणी अंते ॥ ९३१ ॥

गिरिरहितपरिधिगुणितं अष्टकृतिना द्विशतद्रादशैः हितं ।

नदीहीनदलं दीर्घं कच्छादिमं गंधमालिनी अंते ॥ ९३१ ॥

अर्थ—दोयसै बारह शलाकानिका पर्वत रहित परिधि प्रमाण क्षेत्र १९५५१९५ होइ तौ चौसठि विदेहकी शलाकानिका केता होइ ऐसै त्रैराशिक करि पर्वत रहित परिधिकौ आठकी कृति चौसठि ताकरि गुणिए १२५१३२४८० अर प्रमाण राशि दोयसै वाराका भाग दीजिए तब लवण्य समुद्रकी तरफ जो अभ्यंतर भद्रशालकी अभ्यंतर सूची स्थानविषै विदेह क्षेत्रका विष्कंभ पांच लाख निवै हजार दोयसै सैंतालीस योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनिविषै एकसौ सोलह अंश प्रमाण हो है । इहां सीतोदा नदीका व्यास एक हजार योजन ताको घटाइ अबशेष ५८९२४७११६ ÷ २१२ का आधा किए दोय लाख चौराणवै हजार छसै तेईस योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनिविषै एकसौ चौसठि अंश प्रमाण अभ्यंतर भद्रशालकी वेदीके निकटि गंधमालिनी नामा देशका अंतविषै दक्षिण उत्तरकी लंबाईका प्रमाण है । पूर्व ल्याया हुवा धातकी खंडके बाह्य भद्रसालका सूची व्यास ११२५१५८ ताकी करणि रूप परिधि किए ऐसा १२६-५९८०५२४९६४० भया याका मूल ग्रहे ताका परिधिका प्रमाण पैतीस लाख अठावन हजार त्रासठि योजन प्रमाण हो है । यामै पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र १७८८४२ घटाएं तेतीस लाख गुण्यासी हजार दोयसै वीस रहे तिनको पूर्वोक्त प्रकार त्रैराशिक करि आठकी कृति जो चौसठि ताकरि गुणै ऐसा २१६२७००८० याको दोयसै बारहका भाग दिए कालोद समुद्रकी तरफ जो बाह्य भद्र सालकी सूचीका स्थान विषै तिस भद्रसालकी वेदीके निकटि विदेह क्षेत्रका विस्तार दश लाख बीस हजार एकसौ इकतालीस योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै एकसौ अठ्यासी अंश प्रमाण हो है । यामै सीता नदीका व्यास एक हजार योजन घटाइ अबशेष १० १९ १४१ । १८८ २१२ का आधा किए बाह्य भद्रसालकी वेदीके निकटि कछा देशका

अभ्यंतर आयाम पांच लाख नव हजार पांचसै सत्तरि योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै दोयसै अंश प्रमाण हो है ॥ ९३१ ॥

अत्र कछादिक देशनिका मध्यविषै आयाम अर अंतविषै आयाम ल्यावनेकों व्याख्यान गाथा दोय करि कहै हैं;—

विजयावक्खाराणं विभंगणदिदेवरण्ण परिहीओ ।

विण्णिसयवारभजिदा वत्तीसगुणा तहिं वड्डी ॥ ९३२ ॥

विजयवक्खाराणां विभंगनदीदेवारण्यानां परिधयः ।

द्विशतद्वादशभक्ता द्वात्रिंशद्रुणा तस्मिन् वृद्धयः ॥ ९३२ ॥

अर्थ—विदेहनिके देश अर वक्खार पर्वत अर विभंगा नदी अर देवारण्य बन इन च्यारिनिके जे परिधि तिनकों वत्तीस करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिए तहां तहां आयामविषै वृद्धिका प्रमाण हो है ॥ ९३२ ॥

सगसगवड्डी णियणियपढमायामम्हि संजुदा मज्झे ।

दीहो पुणरवि सहिदो तिरिए णियचरिमदीहत्तं ॥ ९३३ ॥

स्वस्थकवृद्धयः निजनिजप्रथमायामे संयुता मध्ये ।

दीर्घः पुनरपि सहितः तिर्यक् निजचरमदीर्घत्वम् ॥ ९३३ ॥

अर्थ—देश आदि कहे जे च्यारि तिनका अपनां अपनां आयामविषै जो जो वृद्धिका प्रमाण ताको आप आपकै पहलै जो था ताका आयामविषै जोड़ें अपना अपना मध्यविषै आयाम प्रमाण हो है । बहुरि तिस तिस मध्य आयामविषै वृद्धिप्रमाण जोड़ें तहां तहां अपनां अंतविषै आयाम प्रमाण हो है । सो इन दोऊ गाथानिके अर्थकों वर्णें हैं । धातकी खंडका व्यास च्यारि लाख योजन तामै मेरु अर दोय भद्रशालनिका व्यास दोय लाख पचीस हजार एकसो अठावन योजन घटाएँ विदेहका भद्रशालनिके परै पूर्व पश्चिम विषै अंतका क्षेत्र एक लाख चहोत्तरि हजार आठसै वियालीस योजन प्रमाण हो है । याको आधा किए एक तरफका आधा अंतक्षेत्र सित्यासी हजार च्यारिसै इकईस योजन प्रमाण हो है । पूर्व पश्चिम विषै भद्रशालकी वैदीतै परै समुद्र पर्यंत लंबा विदेहनिका इतनां क्षेत्र है यामै च्यारि वक्खारनिका व्यास च्यारि हजार योजन अर तीन विभंगा नदीनिका व्यास साढा सातसै योजन अर देवारण्यका व्यास अठावनसै चवालीस योजन इनकों मिलाइ १०५९४ घटाएँ अबशेष छिहतरि हजार आठसै सत्ताईस योजन प्रमाण विदेहका एक तरफ पर्वतादि रहित देश संबंधी शुद्ध क्षेत्रका व्यास हो है । याको धारि बहुरि आठ देशनिका शुद्ध क्षेत्र इतनां ७६८२७ भया तौ एक देशका कितनां होइ । असै त्रैराशिक किए कछ नामा देशका पूर्व पश्चिमविषै व्यास नव हजार छसै तीस योजन अर योजनके तीन आठवां भाग प्रमाण हो है । इहां समछेद करि अंश अंशी मिलाएँ छिहत्तरि हजार आठसै सताईसका आठवां भाग भया । याका विष्कंभवग्गदहगुण इत्यादि करण सूत्र करि करणि रूप परिधि किएँ ऐसा ५९०२३८७९२९० ÷ ६४ भया । याका वर्गमूल ग्रहै ऐसा २४२९४८ ÷ ८ भया ।

इहां भागहारका भाग दिएं कछा देशके व्यासका परिधि तीस हजार तीनसै अडसठि योजन अर आधा योजन प्रमाण भया । इहां अंश अंशानिकों समछेद करि मिलाएं साठि हजार सातसै सैतीसका आधा ६०७३७ ÷ २ भया । बहुरि धातकी खंडका एक भाग विषै कछा देशका व्यासकी इतनां ६०७३७ ÷ २ परिधि भया तौ दोय मेरु संबंधी दोऊ भागनिका केता होइ ऐसै ताकों दोय करि गुणें ऐसा ६०७-३७२ ÷ २ भया । बहुरि पीछै पर्वतनिका तौ समान व्यास है तातैं वृद्धिका अभाव जानि पर्वतनिकी एकसौ अडसठि शलाकानिकों धातकी खंडकी सर्व मिश्र शलाका तीनसै असीनिमै घटाइ अवशेष क्षेत्र शलाका दोयसै बारह रहीं सो दोयसै बारह शलाकानिका पूर्वोक्त ऐसा ६०७३७२ वृद्धि क्षेत्र होइ तौ चौसठि विदेहकी शलाकानिका केता होइ ऐसै त्रैराशिक करि चौसठि करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं ऐसा ६०७३७२।६४ ÷ २।२२ विदेहका सर्व वृद्धि क्षेत्र प्रमाण भया । बहुरि नदीनिका दक्षिण उत्तर तट रूप दोय प्रांतनिविषै इतनां ६०७३७२।६४ ÷ २।२।२ वृद्धिक्षेत्र होइ तौ एक प्रांत विषै कितनां होइ ऐसै त्रैराशिककरि ताकों दोयका भाग दिएं भद्रशालकी वेदीका आया-मतैं कछा देशका अंत विषै आयामका वृद्धि प्रमाण क्षेत्र ऐसा ६०७३७२।६४ ÷ २।२।२।२।२ भया । बहुरि मुखभूमिसमासार्द्ध मध्यफल इस न्यायकरि आदितैं अंत विषै वृद्धिका जो यह प्रमाण भया ताकों आधा करनेकों दोयका भाग दिएं ऐसा ६०७३७२।६४ ÷ २।२।२।२।२ भया । इहां यथा योग्य अपवर्त्तन किएं साठि हजार सातसै सैतीसका आधा प्रमाण जो कछा देशके व्यासका परिधि ताकों वत्तीस करि गुणिण अर दोयसै बारहका भाग दीजिए इतनां ६०७३७।३२ ÷ २।२।२ वृद्धिका प्रमाण आया याप्रकार गाथा विषै कथाथा जो देशके व्यासका परिधिकों वत्तीस गुणा करैं दोयसै बारहका भाग दिएं वृद्धि प्रमाण होइ सो सिद्ध भया । बहुरि इस कछा देशका वृद्धिप्रमाणके वत्तीसका गुणकारकों दोयका भागहारकरि अपवर्त्तन किएं सोलहका गुणकार भया ताकारि गुणें ऐसा ९७।७९२ ÷ २।२ इहां भागहारका भाग दिएं देश संबंधी वृद्धि क्षेत्र पैतालीससै तियासी योजन अर दोयसै बारह अंशानि विषै एकसौ छिनवै अंश प्रमाण आया । याकों भद्रशालका अंत आयाम समान जो पूर्वोक्त कछा देशका अभ्यंतर आयाम ऐसा ५०९।५७०।२०० ÷ २।२।२ तामैं जोड़ें कछा देशका मध्य विषै आयाम पांचलाख चौदह हजार एकसौ चौवन योजन अर एकसौ चौरासी अंश प्रमाण हो है । बहुरि याविषै पूर्वोक्त देश संबंधी क्षेत्र वृद्धि प्रमाण जोड़े पांचलाख अठारह हजार सातसै अडतीस योजन अर एकसौ अडसठि अंश प्रमाण कछा देशका अंत विषै आयाम हो है । बहुरि अव वक्षार पर्वतका व्यास हजार योजन याका विष्कंभवगदहगुण इत्यादि सूत्र करि करणिरूप परिधि किएं ऐसा १००००००० याका वर्गमूल ग्रहें वक्षार व्यासका परिधि इकतीससै बासठि योजन भया । बहुरि एक भाग विषै इतनां ३१६२ परिधि भया तौ दोय भाग विषै कितनां होइ ऐसै ताका दूणां भया ३१६२।२ बहुरि दोयसै बारह शलाकानिका ऐसा ३१६२।२ वृद्धिक्षेत्र होइ तौ विदेहकी चौसठि शलाकानिका केता होइ ऐसै विदेह विषै प्राप्त परिधिका वृद्धि क्षेत्र ऐसा ३१६२।२।६४ ÷ २।२ भया । बहुरि नदीके तट रूप दोय प्रांत क्षेत्र विषै इतनां ३१६२।२।६४ ÷ २।२ क्षेत्र भया तौ एक प्रांत विषै केता होइ ऐसै किएं ऐसा

३१६२।२।६४ ÷ २१२।२ वक्षारका अंत विषै परिधिका वृद्धि प्रमाण भया । बहुरि मुख भूमि समासार्द्ध मध्यफलं इस न्याय करि ताका आधा करनेको ताको दाय भाग दिएं असा भया ३१६२।२।६४ ÷ २१२।२।२ इहां यथायोग्य अपवर्तन क्रिएं वक्षारका परिधि प्रमाण इकतीससै बासठि योजनको बत्तीस करि गुणें दायसै बारहका भाग दिएं परिधि विषै क्षेत्र वृद्धिका प्रमाण हो है । अंसै गाथा विषै कहा था वक्षार परिधिकौ बत्तीस करि गुणें दायसै बारहका भाग दिएं वृद्धि प्रमाण हो है सो कथन सिद्ध भया । इहां गुणकार बत्तीस करि गुणें असा १०११८४ ÷ २१२ भागहारका भाग दिएं च्यारिसै सतहत्तरि योजनके दायसै बारह अंशनि विषै साठि अंश प्रमाण वक्षारका आदि आयामतै मध्य आयाम विषै वृद्धि प्रमाण हो है । सो जो पूर्वोक्त कछा देशका बाह्य आयाम प्रमाण सोई वक्षार पर्वतका आदि आयाम प्रमाण असा ५१८७३८।१६८ ÷ २१२ यामै पूर्वे ल्याया हुवा वक्षार वृद्धिक्षेत्र ४७७।६० ÷ १२ जोडै वक्षारका मध्य विषै आयाम ५१९२१६।१६ ÷ २१२ असा हो है । बहुरि यामै तिस हो वक्षारका वृद्धि क्षेत्र जोडै वक्षारका अंत विषै आयाम प्रमाण असा ५१९६९३।७६ ÷ २१२ बहुरि जो यह वक्षारका बाह्य आयाम सोही सुकछा देशका आय आयाम ऐसा ५१९६९३।७६ ÷ २१२ यामै पूर्वेल्याया हुवा देश संबंधी वृद्धिक्षेत्र प्रमाण असा ४५८३।१९६ ÷ २१२ ताको जोडै सुकछाका मध्य आयाम असा ५२४२-७७।६० ÷ २१२ यामै तिस ही देश संबंधी वृद्धिक्षेत्र प्रमाणको ४५८३।१९६ ÷ २१२ जोडै सुकछाका अंत विषै आयाम ऐसा ५२८६१।४४ ÷ २१२ भया । बहुरि इहां विभंगा नदीका व्यास अढाईसै योजन ताका विष्कंभवग्गदहगुण इत्यादि सूत्र करि करणि रूप परिधि असा ६२५०० याका वर्गमूल प्रहै विभंगा व्यासका परिधि सातसै निवै योजन प्रमाण आया । बहुरि एक भाग विषै इतनां ७९० क्षेत्र होइ तौ द्वीपके दोऊ भागनि विषै केता होइ अंसै ताको दूणां करना ७९०।२ बहुरि दायसै बारह शलानिका इतनां ७९०।२ वृद्धि क्षेत्र होइ तौ चौसठि शलानिका केता होइ अंसै ताको चौसठि करि गुणें दायसै बारहका भाग दिएं विदेह संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण असा ७९०।२।६४ ÷ २१२ बहुरि नदीके तट रूप दाय प्रांतनि विषै एता ७९०।२।६४ ÷ २१२ वृद्धि क्षेत्र भया तौ एक प्रांत विषै केता होइ अंसै ताको दायका भाग दिएं असा ७९०।२।६४ ÷ २१२।२ विभंगाका अंत विषै वृद्धि प्रमाण आया । बहुरि मुख भूमि समासार्द्ध मध्यफलं इस न्याय करि ताका आधा करनेको दायका भाग दिएं मध्य विषै वृद्धि प्रमाण असा ७९०।२।६४ ÷ २१२।२।२ आया । यहां यथायोग्य अपवर्तन क्रिएं विभंगा नदीके व्यासका परिधि सातसै निवै योजन ताको बत्तीस करि गुणें दायसै बारहका भाग दिएं विभंगा नदी संबंधी वृद्धि प्रमाण गाथा करि उक्त सिद्ध भया । इहां बत्तीस गुणकार करि गुणें असा २५२८० ÷ २१२ भागहारका भाग दिएं एकसौ उगणीस योजन अर योजनके दायसै बारह अंशनि विषै वाचन अंश प्रमाण विभंगा संबंधी वृद्धि प्रमाण आया । बहुरि जो सुकछा देशका बाह्य आयाम प्रमाण सोई विभंगा नदीका आदि आयाम प्रमाण असा ५२८८६१ । ४४ ÷ २१२ यामै विभंगा संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण ११९ । ५२ ÷ २१२ जोडै विभंगाका मध्य विषै आयाम

ऐसा ५२८९८० । ९६ ÷ २१२ यामै विभंगाका वृद्धि प्रमाण जोड़े विभंगाका अंत विषै आयाम
 बैसा ५२९०९९ । १४८ ÷ २१२ यातै परै महा कछा आदि देशनिका आयाम अर वक्षारनिका
 आयाम अर विभंगानिका आयाम पूर्व पूर्व विषै अपनां अपनां वृद्धि क्षेत्र जोड़नें करि ल्यावनें । बहुरि
 देवारण्यका व्यास अठावनसै चवालीस योजन ताका विष्कंभ वग्गदहगुण इत्यादि सूत्र करि करणि
 रूप परिधि बैसा ३४१५२३३६० याका वर्गमूल ग्रहे देवारण्यका परिधि अठारह हजार च्यारिसै
 असी योजन प्रमाण हो है । बहुरि द्वीपका एक भाग विषै इतनां १८४८० क्षेत्र भया तौ दोऊ
 भागनि विषै केता होइ ऐसै ताको दूणां करनां १८४८०।२ बहुरि दोयसै बारह शलाकानिका
 इतनां १८४८०।२ क्षेत्र होइ तौ चौसठि शलाकानिका केता होइ ऐसै ताके चौसठि करि गुणें
 दोयसै बारहका भाग दिएं विदेह क्षेत्र विषै प्राप्त देवारण्यका वृद्धि क्षेत्र प्रमाण बैसा १८४८०।
 २।६४ ÷ २१२ बहुरि नदीके तट रूप दोऊ प्रांतनिविषै इतनां १८४८०।२।६४ ÷ २१२ वृद्धि
 क्षेत्र प्रमाण आया तौ एक प्रांत विषै केता होइ ऐसै ताको दोयका भाग दिएं बैसा १८४८०।
 २।६४ ÷ २१२।२ देवारण्यका आदितै अंत विषै वृद्धि प्रमाण आया । बहुरि मुखभूमिसमासाद्ध
 मध्यफल इस न्यायकरि ताका आधा किएं बैसा १८४८०।२।६४ ÷ २१२।२।२ इहां यथायोग्य
 अपवर्तन किएं देवारण्यका परिधि अठारह हजार च्यारिसै असी योजनको बत्तीस करि गुणें दोयसै
 बारहका भाग दिएं देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण गाथोक्त सिद्ध भया । इहां गुणकार बत्तीस
 करि गुणें बैसा ५९१३६० ÷ २१२ भागहारका भाग दिएं सताईससै निवासी योजन अर
 योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै वाणवै अंश प्रमाण देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण आया ।
 बहुरि पुष्कलावती नामा देशका जो बाह्य आयाम सोई देवारण्यवनका आदि आयाम पांच लाख
 सित्यासी हजार च्यारिसै सैतालीस योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै सौ । अंश प्रमाण
 है । इस प्रमाण ल्यावनेका विधान कहै है । नदीका एक तट विषै आठ देश च्यारि वक्षार तीन
 विभंगा हैं । बहुरि आदितै मध्य विषै अर मध्यतै अंत विषै ऐसै एक एक विषै दोय दोय वार
 अपनां अपनां वृद्धि प्रमाण बधे है तातै देश वृद्धिका प्रमाण बैसा ४५८३।१९६ ÷ २१२ याको
 सोलह करि गुणें बैसा ७३३२८ । ३१३६ ÷ २१२। बहुरि वक्षार वृद्धिका प्रमाण बैसा
 ४७७।६० ÷ २१२ याको आठ करि गुणें बैसा १८१६।४८० ÷ २१२ बहुरि विभंगा वृद्धि
 प्रमाण बैसा ११९।५२ ÷ २१२ याको छह करि गुणें बैसा ७१४।३१२ ÷ २१२ इहां जे
 अंश हैं तिन सर्व अंशनिकों जोड़े तिनमें कछा देशका आदि आयाम विषै जे दोयसै अंश कहे थे
 तिनको जोड़ें सर्व अंश इकतालीससै अठाईस भए इनको दोयसै बारहका भाग दिएं उगणीस
 योजन पाए अर अब शेष सौ अंश रहे । तातै देवारण्यका आदि आयाम विषै सौ तौ अंश जाननें ।
 बहुरि उगणीस तौ ए योजन अर वृद्धिनिके योजन अर कछा देशका आदि आयामके पांच लाख
 पिच्याणवैसै सत्तरि योजन इन सबनिकों जोड़ें देवारण्यका आदि आयाम विषै पांच लाख सित्यासी
 हजार च्यारिसै सैतालीस योजन जाननें । बहुरि इस देवारण्यका आदि आयाम विषै ५८७४४७।
 १००० ÷ २१२ देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र ऐसा २७८९।९२ ÷ २१२ जोड़ें देवारण्यका मध्य

आयाम औसा ५९०२३६।१९२÷२१२ यामें बहुरि तिस देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र जोड़ें कालोद समुद्रकें निकटि देवारण्यका बाह्य आयाम औसा ५९३०२६।७२ ÷ २१२ हो है । या प्रकार जैसे सीता नदीका उत्तर तट विषै वर्णन किया तैसे ही सीताका दक्षिण तट विषै भी देश वक्षार विभंगा देवारण्यनिका व्यास अर परिधि अर वृद्धिक्षेत्र अर आयाम तहां तहां ल्यावनें । बहुरि जैसे यहू मेरुकी पूर्व दिशा विषै अधिक अधिक अनुक्रम करि कथन किया है तैसे मेरुकी पश्चिम दिशा विषै भद्रसालतें हीन हीन अनुक्रमकरि वर्णन जाननां । तहां हानि प्रमाण वृद्धि प्रमाणवत् जाननां । बहुरि याही प्रकार पुष्करार्थ विषै भी देश वक्षार विभंगा देवारण्यनिके यथा-संभव व्यासानिका परिधि ल्याइ द्वीपका दोऊ भागनिके प्रहण निमित्ति गुणकार दोग करि गुणि दोगसै बारह क्षेत्र शलाकाका भाग देइ चौसठि विदेह शलाकाका भाग देइ लब्ध प्रमाण जो विदेह वृद्धि क्षेत्र ताको दोगका भाग दिएं जो एक प्रांत संबंधी वृद्धि क्षेत्र भया ताको मुखभूमि-समासार्थ इस न्याय करि आधाकरि अपवर्तनकरि तहां तहां लब्ध मात्र वृद्धि क्षेत्रका प्रमाण जाननां । ताको अपनां अपनां आदि आयाम विषै जोड़ें अपनां अपनां मध्य आयाम हो है । बहुरि अपनां अपनां मध्य आयाम विषै अपनां अपनां वृद्धि क्षेत्र जोड़ें अपनां अपनां बाह्य आयाम हो है । बहुरि पूर्व पूर्वका बाह्य आयाम सोई उत्तर उत्तरका आदि आयाम जाननां । मेरुकी पश्चिम दिशा विषै हीन क्रम जाननां ॥ ९३३ ॥

आगें धातुकी खंड पुष्कर द्वीपनि विषै किछु विशेष स्वरूप गाथा दोगकीर कहैं हैं;—

धादइपुक्खरदीवा धादइपुक्खरतरूहिं संजुत्ता ।

तेसिं च वण्णणा पुण जंबूदुमवण्णणं व हवे ॥ ९३४ ॥

धातकीखंडपुष्करद्वीपौ धातकीपुष्करतरुभ्यां संयुक्तौ ।

तयोः च वर्णना पुनः जंबूदुमवर्णना इव भवेत् ॥ ९३४ ॥

अर्थ—धातकी खंड द्वीप अर पुष्कर द्वीप क्रमतै धातकी वृक्ष अर पुष्कर वृक्ष करि संयुक्त हैं । बहुरि तिन वृक्षनिका वर्णन जंबूद्वीप विषै जैसे जंबू वृक्षका कहा तैसे जाननां ॥ ९३४ ॥

धादइगंगारक्तदु हिमसिहरिणगोवरिं उजुं जादि ।

णवणभतिणविगि चलणं जंबू वा पुक्खरे दुगुणं ॥ ९३५ ॥

धातकीगंगारक्ताद्रे हिमशिखरिनगोपरि ऋजुं यातः ।

नवनमस्त्रिनवैकं चलनं जंबू वा पुक्खरे द्विगुणं ॥ ९३५ ॥

अर्थ—धातकी खंड संबंधी गंगा सिंधु दोग नदी अर रक्ता रक्तोदा दोग नदी क्रमतै हिम-वत पर्वत उपरि अर शिखरी पर्वत उपरि पूर्व वा पश्चिम दिशाको नवविंदा तीन नव एक इन अंक रूप उगणीस हजार तीनसै नव योजन सूधी जाइ है । पीछें मुड़नां आदि वर्णन जंबूद्वीप संबंधी वत् जाननां । बहुरि पुष्कर द्वीप विषै पर्वत उपरि नदीनिका सूधा गमन तातै दूणां अठतीस हजार छसै अठारह योजन प्रमाण जाननां ॥ ९३५ ॥

ऐसैं पुष्करार्द्ध पर्यंत जो मनुक्षलोक ताका व्याख्यान करि यातैं बाह्य जो तिर्यग्लोक ताको प्रतिपादन करत संता ही प्रथम ही मनुक्षलोक वा तिर्यग्लोक विषै तिष्ठते पर्वत अर समुद्र तिनका अवगाहको जनावै है;—

मेरुणरलोयवाहिरसेलोगाढं सहस्सपरिमाणं ।

सेसाणं सगतुरियं सञ्जुवहीणं सहस्सं तु ॥ ९३६ ॥

मेरुनरलोकबाह्यशैलावगाधं सहस्रपरिमाणं ।

शेषाणां स्वकतुर्यै सर्वोदधीनां सहस्रं तु ॥ ९३६ ॥

अर्थ—मेरु गिरिनिका अर मानुषोत्तर विना सर्व मनुक्ष लोककै बाह्य तिष्ठते जे पर्वत तिनका तौ अवगाध हजार योजन प्रमाण जाननां । बहुरि मनुक्ष लोककै अभ्यंतर तिष्ठते जे अवशेष हिमवत आदि पर्वत तिनका अवगाध अपने अपने उचाईका प्रमाणकै चौथा भाग प्रमाण जाननां । इहां जैसे मंदिरकै नींव हो है तैसे पृथ्वीकै मध्य जो उंडाई ताका नाम अवगाध जाननां । बहुरि सर्व जे समुद्र तिनका अवगाध जो उंडाईका प्रमाण सो हजार योजन जानहु । तहां लवण समुद्र विषै आदि मध्य अंत विषै विशेष पूर्वे कथा है सो जाननां । अन्य समुद्र सर्वत्र समान अवगाह युक्त हैं ॥ ९३६ ॥

अव मानुषोत्तर पर्वतका स्वरूप गाथा तीन करि कहैं हैं;—

अंते टंकच्छिण्णो बाहिं कमवड्डिहाणि कणयणिहो ।

णदिणिग्गमपहचोद्दसगुहाजुदो माणुसुत्तरगो ॥ ९३७ ॥

अंतः टंकच्छिन्नो बाह्ये क्रमवृद्धिहाणिकः कनकनिभः ।

नदीनिर्गमपथचतुर्दशगुहायुतः मानुषोत्तरः ॥ ९३७ ॥

अर्थ—पुष्कर द्वीपकै मध्य मानुषोत्तर नामा पर्वत तिष्ठै है । सो अभ्यंतर मनुक्ष लोककी तरफ तौ टंकच्छिन्न है । नीचैतैं लगाय उपरि पर्यंत भी तिस समान एकसा है । बहुरि बाह्य तिर्यक लोककी तरफ शिखरतैं लगाय क्रमतैं बधता अर मूलतैं लगाय क्रमतैं घटता है । ताका आकार ऐसा जाननां । बहुरि सो मानुषोत्तर पर्वत सुवर्ण सारिखा वर्णयुक्त है । बहुरि नदी निकसनेके मार्ग ऐसे चौदह गुहा द्वार तिन करि युक्त हैं । **भावार्थ**—मानुषोत्तरकै चौदह गुफारूप द्वार हैं । तिन द्वारनि करि चौदह महा नदी निकसि बाह्य जाय हैं । ऐसा मानुषोत्तर जाननां ॥ ९३७ ॥

मणुसुत्तरुदयभूमुहमिगिवीसं सगसयं सहस्सं च ।

बावीसहियसहस्सं चउवीसं चउसयं कमसो ॥ ९३८ ॥

मानुषोत्तरोदयभूमुखमेकाविंशं सप्तशतं सहस्रं च ।

द्वाविंशाधिकसहस्रं चतुर्विंशतिः चतुःशतं क्रमशः ॥ ९३८ ॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्वतका उदय जो उचाई सो इकईस अधिक सातसै युक्त एक हजार योजन प्रमाण है । १७२१ । बहुरि भू व्यास जो मूल विषै चौड़ाई सो बाईस अधिक एक हजार योजन प्रमाण है । १०२२ । बहुरि मुख व्यास जो शिखर विषै चौड़ाई सो चौईस अधिक च्यारिसै योजन प्रमाण है ४२४ ॥ ९३८ ॥

तण्णगसिहरे वेदी चावाणं चदुस्सहसतुंगजुदा ।
 सोहइ वलयायारा चरणण्णिदकोसवित्थारा ॥ ९३९ ॥
 तन्नगशिखरे वेदी चापानां चतुःसहस्रतुंगयुता ।
 शोभते बलयाकारा चरणान्वितक्रोशविस्तारा ॥ ९३९ ॥

अर्थ—तिस मानुषोत्तरका शिखर विषै उपरि च्यारि हजार धनुष उचाई करि युक्त अर सवा कोस चौडी ऐसी जैसे पर्वत बलयाकार हैं तैसें ताके उपरि बलयाकार वेदी सोभै हैं ॥ ९३९ ॥

आगै इस पर्वत उपरि तिष्ठते कूटनिकों कहैं हैं;—

णइरिदिवायव्वदिसं वज्जिय छस्सुवि दिसासु कूडाणि ।
 तियतियमावळियाए ताणब्भंतरदिसासु चउवसई ॥ ९४० ॥
 नैऋतिवायव्यदिशं वर्जयित्वा षट्स्त्रपि दिशासु कूटानि ।

त्रिकत्रिकमावल्या तेषामभ्यंतरदिशासु चतुष्कवसत्यः ॥ ९४० ॥

अर्थ—नैऋती अर वायवी इन दोय दिशानिकों वर्जि करि अवशेष छह दिशानि विषै पंक्ति रूप तीन तीन कूट हैं । पर्वतकी परिधि विषै तिनकी पंक्ति जाननी । बहुरि तिन कूटनिकै अभ्यंतर मनुक्ष लोककी तरफ च्यारि दिशानि विषै जिन मंदिररूप च्यारि वसतिका हैं ॥ ९४० ॥

आगै तिन कूटनि विषै वसते जे देव तिनकों कहैं हैं;—

अग्नीसाणछकूडे गरुडकुमारा वसंति सेसे दु ।
 दिग्गयवारसकूडे सुवण्णकुलदिकुमारीओ ॥ ९४१ ॥
 अग्नीशानषट्कूटे गरुडकुमारा वसंति शेषेषु तु ।
 दिग्गतद्वादशकूटेषु सुवर्णकुलदिकुमार्यः ॥ ९४१ ॥

अर्थ—आग्नेय दिशा अर ईशान दिशा संबंधी जे छह कूट तिन विषै तौ गरुड कुमार देव वसै हैं । बहुरि अवशेष दिशा संबंधी बारह कूट तिन विषै सुवर्ण कुमार देव अर दिकुमारी देवांगना वसै हैं ॥ ९४१ ॥

आगै मानुषोत्तरका स्थानादिक कहैं हैं;—

पणदाललक्खमाणुसस्सेत्तं परिवेढिऊण सो होदि ।
 उदयचउत्थोगाढो पुक्खरबिदियद्धपढमम्हि ॥ ९४२ ॥
 पंचचत्वारिंशल्लक्षमानुषक्षेत्रं परिवेष्टय स भवति ।
 उदयचतुर्थावगाधः पुष्करद्वितीयार्धप्रथमे ॥ ९४२ ॥

अर्थ—पैतालीस लक्ष योजन व्यास प्रमाण जो मनुक्ष क्षेत्र ताकों बेढि करि पुष्कर द्वीपका दूसरा आधा ताका प्रथम भाग जो आदि क्षेत्र तीह विषै मानुषोत्तर है । ताका अवगाध जो पृथ्वी विषै उंड़ाईका प्रमाण सो उचाईका चौथा भाग मात्र हो है । सो च्यारिस तीस योजन अर चौथाई योजन प्रमाण जाननां ॥ ९४२ ॥

आगै कुंडल गिरि अर रुचक गिरि तिनका उदय भूव्यास मुखव्यास कहैं हैं;—

कुंडलगो दसगुणिओ पणसदरिसहस्स तुंगओ रुजगे ।

चउरासीदिसहस्सा सव्वत्थुभयं सुवण्णमयं ॥ ९४३ ॥

कुंडलगौ दशगुणितौ पंचसततिसहस्रं तुंगो रुचके ।

चतुरशीतिसहस्राणि सर्वत्रोभयौ सुवर्णमयौ ॥ ९४३ ॥

अर्थ—मानुषोत्तरका भू व्यास मुख व्यासतै कुंडल पर्वतका भू व्यास मुख व्यास दस गुणां है । भावार्थ—कुंडल गिरि मूल विषै दस हजार दोयसै बीस योजन चौड़ा है । शिखर विषै च्यारि हजार दोयसै चालीस योजन चौड़ा है । बहुरि तिस कुंडल गिरिका उच्चत्व प्रमाण पचहत्तरि हजार योजन है । बहुरि रुचक पर्वत सर्वत्र उचाई विषै वा भूव्यास मुखव्यास विषै समानरूप चौरासी हजार योजन प्रमाण है । बहुरि ए दोऊ कुंडल गिरि अर रुचक गिरि सुवर्णमय हैं ॥ ९४३ ॥

अब कुंडल गिरिके उपरि जे कूट तिनकों गाथा तीन करि कहै हैं;—

चउ चउ कूडा पडिदिसमिह कुंडलपव्वदस्स सिहरमिह ।

ताणब्भंतरदिग्गय चत्तारि जिणिदकूडाणि ॥ ९४४ ॥

चत्वारि चत्वारि कूटानि प्रतिदिशमिह कुंडलपर्वतस्य शिखरे ।

तेषामभ्यंतरदिग्गतानि चत्वारि जिनेद्रकूटानि ॥ ९४४ ॥

अर्थ—इस कुंडल पर्वतका शिखरविषै एक एक दिशा प्रति च्यारि च्यारि कूट परिधिविषै पंक्तिरूप हैं । तिनके अभ्यंतर मनुक्ष लोककी तरफ दिशानिविषै प्राप्त च्यारि जिनेन्द्र कूट हैं । ऐसैं बीस कूट हैं ॥ ९४४ ॥

वज्जं तप्पह कणयं कणयप्पह रजदकूड रजदाहं ।

सुमहप्पह अंककप्पह मणिकूडं च मणिपहयं ॥ ९४५ ॥

वज्रं तत्प्रभं कनकं कनकप्रभं रजतकूटं रजताभं ।

सुमहप्रभं अंकमकप्रभं मणिकूटं च मणिप्रभं ॥ ९४५ ॥

अर्थ—बहुरि वज्र १ वज्रप्रभ १ कनक १ कनक प्रभ १ रजतकूट १ रजताभ १ सुप्रभ १ महाप्रभ १ अंक १ अंकप्रभ १ मणिकूट १ मणिप्रभ १ ॥ ९४५ ॥

रुजगरुजगाह हिमवं मंदरमिह चारि सिद्धकूडाणि ।

अत्थंति सेसि कूडे कूडक्खसुरा कदावासा ॥ ९४६ ॥

रुचकरुचकाभे हिमवत् मंदिरमिह चत्वारि सिद्धकूटानि ।

आसते शेषेषु कूटेषु कूटाख्यसुराः कृतावासाः ॥ ९४६ ॥

अर्थ—रुचक १ रुचकाभ १ हिमवत् १ मंदर १ ए सोलह कूट जाननें । इन्तै अन्य च्यारि सिद्धकूट हैं । तिनविषै चैत्यालय हैं । अर अबशेष सोलह कूट तिनविषै कूट समान नामके धारक देव वास करते संते तिष्ठै हैं ॥ ९४६ ॥

अब रुचक पर्वतके उपरि जे कूट तिनकों अर तहां वास करती देवांगना तिनकों अर तिनके देवांगनानिका कार्यकों तेरह गाथानि करि कहै हैं;—

पुव्वादिसु पुह अड अड अंते चउ चारि चारि कूडाणि ।

रुजगे सव्वब्भंतरचत्तारि जिणिंदकूडाणि ॥ ९४७ ॥

पूर्वादिषु पृथक् अष्टौ अंतः चतसृषु चत्वारि चत्वारि कूटानि ।

रुचके सर्वाभ्यंतरचत्वारि जिनेंद्रकूटानि ॥ ९४७ ॥

अर्थ—रुचक गिरिविषै पूर्व आदि च्यारि दिशानिविषै प्रथक् प्रथक् परिधिविषै पंक्तिरूप आठ आठ कूट हैं । बहुरि तिनकै अभ्यंतर मनुक्ष लोककी तरफ च्यारि दिशानिविषै एक वार च्यारि कूट हैं । बहुरि तिनकै अभ्यंतर एक वार च्यारि कूट हैं । बहुरि तिनकै भी अभ्यंतर एक वार च्यारिकूट हैं । ऐसै एक एक दिशा विषै तीन तीन कूट ए भए ऐसै चवालीस कूट भए । बहुरि तिन सबनिकै अभ्यंतर वर्ती जे च्यारि कूट कहे ते जिनेन्द्र कूट हैं । चैत्यालय युक्त हैं । इनिका ऐसै स्थान जाननां ॥ ९४७ ॥

कणयं कंचण तवणं सोत्थियकूडं सुभद्रमंजणयं ।

अंजणमूलं वज्जं तत्थेदा दिक्कुमारीओ ॥ ९४८ ॥

कनकं कांचनं तपनं स्वस्तिककूटं सुभद्रमंजनकं ।

अंजनमूलं वज्जं तत्रैता दिक्कुमार्यः ॥ ९४८ ॥

अर्थ—कनक १ कांचन १ तपन १ स्वस्तिककूट १ सुभद्र १ अंजनक १ अंजन मूल १ वज्ज १ ए पूर्व दिशाविषै आठ कूट हैं । तहां ए आगै कहिए हैं दिक्कुमारी ते बसै हैं ॥ ९४८ ॥

विजयाय वइजयंती जयंति अवरजिदाय णंदेति ।

णंदवती णंदुत्तर णामातो णंदिसेणेत्ति ॥ ९४९ ॥

विजया वैजयंती जयंती अपराजिता नंदा इति ।

नंदवती नंदोत्तरा नाम्न्यतो नंदिषेणा इति ॥ ९४९ ॥

अर्थ—विजया १ वैजयंती १ जयंती १ अपराजिता १ नंदा १ नंदावती १ नंदोत्तरा १ नंदिषेणा ए आठ दिक्कुमारनिकी देवांगना वसै हैं ॥ ९४९ ॥

फलिह रजदं व कुमुदं णलिनं पउमं ससीय वेसवणं ।

वेलुरियं देवीओ इच्छापढमा समाहारा ॥ ९५० ॥

स्फटिकं रजतं वा कुमुदं नलिनं पद्मं शशी वैश्रवणं ।

वैदूर्यं देव्यः इच्छाप्रथमा समाहारा ॥ ९५० ॥

अर्थ—स्फटिक १ रजत १ कुमुद १ नलिन १ पद्म १ शशि १ वैश्रवण १ वैदूर्य १ ए आठ दक्षिण दिशाविषै कूट हैं । इनविषै वास करती देवांगना कहिए है । इच्छा १ समाहारा १ ॥ ९५० ॥

सुपइण्णाय जसोहर लच्छी सेसवदि चित्तगुत्तेत्ति ।

चरिम वसुंधरदेवी अमोहमह सोत्थियं कूडं ॥ ९५१ ॥

सुप्रकीर्णा यशोधरा लक्ष्मीः शेषवती चित्रगुप्ता इति ।

चरमा वसुंधरा देव्यः अमोघमथ स्वस्तिकं कूटं ॥ ९५१ ॥

अर्थ—सुप्रकीर्णा १ यशोधरा १ लक्ष्मी १ शेषवती १ चित्रगुप्ता १ वसुंधरा १ ऐसै ए आठ देवी वसै हैं । बहुरि अमोघ १ स्वस्तिक कूट १ ॥ ९५१ ॥

तो मंदर हेमवदं रज्जं रज्जुत्तमं च चंद्रमपि ।

पच्छिम सुदंसणं पुण इलादियाय सुरादेवी ॥ ९५२ ॥

ततो मंदरं हैमवतं राज्यं राज्योत्तमं च चंद्रमपि ।

पश्चिमं सुदर्शनं पुनः इलादिका सुरादेवी ॥ ९५२ ॥

अर्थ—तहां पीछें मंदर १ हैमवत् १ राज्य १ राज्योत्तम १ चंद्र १ सुदर्शन १ ए आठ पश्चिम दिशा विषै कूट हैं । इहां तिष्ठती देवी कहिए हैं । इलादेवी सुरादेवी ॥ ९५२ ॥

पृथ्वी पद्मवती इगिणासो देवी य नवमिया सीता ।

भद्रा तो विजयादीचउकूडं कुंडलं रुजगं ॥ ९५३ ॥

पृथ्वी पद्मावती एकनासा देवी च नवमिका सीता ।

भद्रा ततो विजयादिचतुष्कूटानि कुंडलं रुचकं ॥ ९५३ ॥

अर्थ—पृथ्वी १ पद्मावती १ एकनासा देवी १ नवमिका १ सीता १ भद्रा १ ए आठ देवी वसै हैं । बहुरि तहां पीछें विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित ए च्यारि कूट अर कुंडल १ रुचक १ ॥ ९५३ ॥

तो रयणवंत सन्वादीरयणं उत्तरे अलंबूसा ।

विदियां दु मिस्सकेसी देवी पुण पुंडरीगिणि सा ॥ ९५४ ॥

ततो रत्नवत् सर्वादिरत्नं उत्तरे अलंबूषा ।

द्वितीया तु मिश्रकेशी देवी पुनः पुंडरीकिनी सा ॥ ९५४ ॥

अर्थ—तहां पीछें रत्नवत् १ सर्व रत्न १ ए आठ उत्तर दिशा विषै कूट हैं । इन विषै तिष्ठती देवी कहिए हैं । अलंबूषा १ मिश्रकेशी देवी १ पुंडरीकिणी १ ॥ ९५४ ॥

वारुणि आसा सच्चा हिरि सिरि पुव्वगयदिकुमारीओ ।

भिगारं धरिदूणिह दक्खिणदेवीओ मुकुरंदं ॥ ९५५ ॥

वारुणी आशा सत्या हीः श्रीः पूर्वगतदिकुमार्यः ।

भृंगारं भृत्वा इह दक्षिणदेव्यो मुकुरंदं ॥ ९५५ ॥

अर्थ—वारुणी १ आशा १ सत्या १ ही १ श्री १ ए आठ देवी वसै हैं इन विषै पूर्व-दिशा संबंधी दिक्कुमारी हैं । ते भृंगार जो झारी ताकों धारिकरि अर दक्षिण दिशा संबंधी दिक्कुमारी मुकुरंद जो आरसो ताकों धारि करि ॥ ९५५ ॥

पच्छिमगा छत्ततयं उत्तरगा चामरं प्रमोदजुदा ।

तित्थयरजणणिसेवं जिणजणिकाले पकुव्वंति ॥ ९५६ ॥

पश्चिमगाः छत्रत्रयं उत्तरगाः चामरं प्रमोदयुताः ।

तीर्थकरजननीसेवां जिनजनिकाले प्रकुर्वंति ॥ ९५६ ॥

अर्थ—पश्चिमदिशा संबंधी देवी तीन छत्रनिकों धारि करि अर उत्तर दिशा संबंधी देवी चामरनिकों धारि करि महा प्रमोद करि संयुक्त होती ते सर्व देवी तीर्थकरका उत्पत्ति काल विषै तीर्थकरकी जो माता ताकी सेवा करै हैं ॥ ९५६ ॥

पुंवे विमलं कूलं णिञ्चालोयं सयंपहं अवरै ।

णिच्चुज्जोदं देवी कमसो कणया सदादिदहा ॥ ९५७ ॥

पूर्वयोः विमलं कूटं नित्यालोकं अपरयोः ।

नित्योद्योतं देव्यः क्रमशः कनका शतादिहृदा ॥ ९५७ ॥

अर्थ—रुचक पर्वतके अभ्यंतर कूटनि विषै पूर्व दिशा विषै तो विमलकूट दक्षिण दिशा विषै नित्यालोककूट पश्चिम दिशा विषै स्वयंप्रभकूट उत्तर दिशा विषै नित्योद्योत कूट ऐसैं च्यारि कूट हैं । इहां तिष्ठती देवी क्रमतैं कनका १ शतहृदा १ ॥ ९५७ ॥

कणयादिचित्त सोदामणि सव्वदिसप्पसण्णदं देति ।

तित्थयरजम्मकाले कूलं वेलुरियरुजगमदो ॥ ९५८ ॥

कनकादिचित्रा सौदामिनी सर्वदिशाप्रसन्नतां दधते ।

तीर्थकरजन्मकाले कूटं वैडूर्यं रुचकमतः ॥ ९५८ ॥

अर्थ—कनकाचित्रा १ सौदामिनी १ ऐसैं ए च्यारि देवी वसै हैं ते तीर्थकरका जनम काल विषै सर्व दिशानिकों प्रसन्न धारै हैं निर्मल करै हैं । बहुरि इन्तैं अभ्यंतर पूर्वादि दिशानि विषै वैडूर्य १ रुचक १ ॥ ९५८ ॥

मणिकूडं रज्जुत्तममिह रुजगी रुजगकीत्ति रुजगादी ।

कंता रुजगादिपहा जिणजादयकम्मकदिकुसला ॥ ९५९ ॥

मणिकूटं राज्योत्तममिह रुचका रुचककीर्तिः रुचकादिः ।

कांता रुचकादिप्रभा जिनजातककर्मकृतिकुशलाः ॥ ९५९ ॥

अर्थ—मणिकूट १ राज्योत्तम १ ए च्यारि कूट हैं । इहां तिष्ठती रुचका १ रुचक कीर्ति १ रुचक कांता १ रुचक प्रभा १ ए च्यारि देवी हैं । ते तीर्थकरका जन्म विषै जात कर्म करनेविषै कुशल हैं ॥ ९५९ ॥

आगै कुंडल रुचक संबंधी कूटनिका व्यासादिक कहै हैं;—

सव्वेसिं कूडाणं जोयणपंचसय भूमिवित्थारो ।

पणसयमुदओ तद्वल्लमुहवासो कुंडले रुजगे ॥ ९६० ॥

सर्वेषां कूटानां योजनपंचशतं भूमिविस्तारः ।

पंचशतमुदयः तद्वल्लमुखव्यासः कुंडले रुचके ॥ ९६० ॥

अर्थ—कुंडल गिरि अर रुचक गिरिविषै कहे जे ए कूट तिन सबनिका पांचसै योजन ता भूमि विस्तार कहिए मूलविषै चौड़ाईका प्रमाण है । अर उदय जो उंचाईका प्रमाण सोभी पांचसै योजन है । अर तिनका मुख व्यास जो उपरि चौड़ाईका प्रमाण सो ताका आधा अर्द्धाईसै योजन है ।

इहां जैसे पुष्कर द्वीपके मध्य बलयाकार मानुषोत्तर पर्वत हे तैसे ही कुंडल द्वीपके मध्य कुंडलगिरि अर रुचक द्वीपके मध्य रुचक गिरि बलयाकार जाननां ॥ ९६० ॥

आगै द्वीप समुद्रनिके जे देव स्वामी हैं तिनका पांच गाथानि करि कहै हैं;—

जंबूद्वीवे वाणो अणादरो सुद्विदो य लवणेवि ।

धादइखंडे सामी प्रभासपियदंसणा देवा ॥ ९६१ ॥

जंबूद्वीपे वानौ अनादरः सुस्थितश्च लवणेपि ।

धातकीखंडे स्वामिनौ प्रभासप्रियदर्शनौ देवौ ॥ ९६१ ॥

अर्थ—जंबू द्वीप अर लवण समुद्रविषै तौ स्वामी अनादर अर सुस्थित नामा व्यंतर देव हैं । धातकी खंडविषै स्वामी प्रभास अर प्रियदर्शन देव हैं ॥ ९६१ ॥

कालमहाकाल पडमा पुंडरियो माणुसुत्तरे सेले ।

चक्षुसुमसुचक्षुम्मा सिरिपहधर पुक्खरुवहिम्हि ॥ ९६२ ॥

कालमहाकालौ पद्मः पुंडरीकः मानुषोत्तरे शैले ।

चक्षुष्मसुचक्षुष्माणौ श्रीप्रभधरौ पुष्करोदधौ ॥ ९६२ ॥

अर्थ—कालेद्रक समुद्रविषै स्वामी काल महाकाल देव हैं । पुष्करार्द्र अर मानुषोत्तरविषै स्वामी पद्म अर पुंडरीक देव हैं । पुष्कर द्वीपका बाह्य दूसरा अर्धविषै स्वामी चक्षुष्मान अर सुचक्षुष्मान हैं । पुष्कर समुद्रविषै स्वामी श्रीप्रभ अर श्रीधर हैं ॥ ९६२ ॥

वरुणो वरुणादिपहो मज्झो मज्झिमसुरो य पंडुरओ ।

पुष्पादिदंत विमला विमलप्पह सुप्पहा महप्पहाओ ॥ ९६३ ॥

वरुणो वरुणादिप्रभो मध्यः मध्यमसुरः च पांडुरः ।

पुष्पादिदंतः विमलो विमलप्रभः सुप्रभः महाप्रभ ॥ ९६३ ॥

अर्थ—वारुणी द्वीपविषै स्वामी वरुण अर वरुणप्रभ हैं । वारुणी समुद्रविषै स्वामी मध्य अर मध्यम देव हैं । क्षीर द्वीपविषै स्वामी पांडुर अर पुष्यदंत हैं । क्षीर समुद्रविषै स्वामी विमल अर विमलप्रभ हैं । घृत द्वीपविषै स्वामी सुप्रभ अर महाप्रभ हैं ॥ ९६३ ॥

कणय कणयाह पुण्णा पुण्णप्पह देवगंधमहागंधा ।

तो गंदी गंदिपहो भद्रसुभद्धा य अरुण अरुणपहा ॥ ९६४ ॥

कनकः कनकाभः पुण्यप्रभो देवगंधमहागंधौ ।

ततो नंदी नंदिप्रभः भद्रसुभद्रौ च अरुणः अरुणप्रभः ॥ ९६४ ॥

अर्थ—घृत समुद्र विषै स्वामी कनक अर कनकप्रभ हैं । क्षौद्र द्वीप विषै स्वामी पुण्य अर पुण्य प्रभ हैं । क्षौद्र समुद्र विषै स्वामी देव गंध अर महागंध हैं । तहां पीछें नंदीश्वर द्वीप विषै स्वामी नंदि अर नंदिप्रभ हैं । नंदीश्वर समुद्र विषै स्वामी भद्र अर सुभद्र हैं । अरुण द्वीप विषै स्वामी अर अरुण अरुणप्रभ हैं ॥ ९६४ ॥

ससुगंध सव्वगंधो अरुणसमुदम्हि इदि प्हू दो हो ।

दीवसमुद्दे पद्धमो दक्खिणभागम्हि उत्तरे विदियो ॥ ९६५ ॥

ससुगंधः सर्वगंधः अरुणसमुद्रे इति प्रभू द्वौ द्वौ ।

द्वीपसमुदे प्रथमः दक्षिणभागे उत्तरे द्वितीयः ॥ ९६५ ॥

अर्थ—अरुण समुद्र विषै नायक ससुगंध अरु सर्वगंध देव हैं । जैसे ही द्वीप अरु ससुद्र विषै दोय दोय स्वामी व्यंतर देव हैं । तहां दोय दोय विषै जाका नाम पहलें कहा सो दक्षिण भाग विषै अरु जाका पीछें नाम लिया सो उत्तर भाग विषै स्थित जाननां ॥ ९६५ ॥

अब नंदीश्वर द्वीपकों विशेष रूप प्रतिपादन करत संता आचार्य प्रथम ताका वलय व्यास कहै है;—

आदीदो खलु अष्टमण्दीसरदीवलयविष्कंभो ।

सयसमाहियतेवट्टीकोडी चुलसीदिलक्खा य ॥ ९६६ ॥

आदितः खलु अष्टमनंदीश्वरद्वीपवलयविष्कंभः ।

शतसमधिकत्रिषष्टिकोटिः चतुरशीतिलक्षश्च ॥ ९६६ ॥

अर्थ—आदिका जंबूद्वीपतैं लगाय आठवां नंदीश्वर द्वीप है । ताका विलय विष्कंभ जो वलयाकार विषै चौड़ाई सो सौ अधिक तेरसठि कोडि चौरासी लाख योजन प्रमाण है । कैसें सो कहिए हैं । नंदीश्वर द्वीप सहित यातैं पहलें द्वीप वा समुद्रनिकी संख्या पंद्रह है सो पंद्रहका गछ करि रुऊणाहियपदं इत्यादि पूर्वोक्त सूत्र करि एकसौ तेरसठि कोडि चौरासी लाख योजन प्रमाण व्यास आवै है ॥ ९६६ ॥

आगैं इस द्वीप विषै च्यारौं दिशानि विषै तिष्ठते पर्वत तिनके नाम अरु संख्या अरु स्थानकौं निरूपैं हैं;—

एकचउकट्टंजणदहिमुहरइयरणगा पडिदिसम्हि ।

मज्झे चउदिसवावीमज्झे तब्बाहिरदुकोणे ॥ ९६७ ॥

एकचतुष्काष्ठांजनदधिमुखरतिकरनगाः प्रतिदिशं ।

मध्ये चतुर्दिग्वापीमध्ये तद्वाह्यद्विकोणे ॥ ९६७ ॥

अर्थ—एक एक दिशा प्रति मध्य विषै अरु च्यारि दिशा संबंधी वावड़ीनिकै मध्य अरु तिन वावड़ीनिका वाह्य दोय दोय कोणादि विषै क्रमतैं एक च्यारि आठ संख्या लिएं अंजन दधिमुख रतिकर नामा पर्वत नंदीश्वर द्वीप विषै जाननैं । **भावार्थ**—नंदीश्वरकी चारों दिशा तहां एक एक दिशा विषै बीचि तौ एक अंजन गिरि है । तिस अंजन गिरिकी च्यारों दिशानि विषै च्यारि वावडी हैं । तिन वावड़ीनिकै बीचि च्यारि दधिमुख पर्वत हैं । बहुरि तिन वावड़ीनिके दोय कोण तौ अंजन गिरिकी तरफ अरु दोय कोण दूसरी तरफ तहां दूसरी तरफ जे दोय दोय बाह्य कौण तिनके निकटि आठ रतिकर पर्वत हैं । ऐसें एक दिशा विषै तेरह पर्वत च्यारि वावड़ी भई । च्यारों दिशानि विषै वावन पर्वत सोलह वावड़ी जाननी ॥ ९६७ ॥

आगैं तिन पर्वनिका वर्ण वा परिमाणकों कहैं हैं;—

अंजणदहिकणयणिहा चुलसीदिदहेक्कजोयणसहस्सा ।

वट्टा वासुदणय सरिसा बावण्णसेलाओ ॥ ९६८ ॥

अंजनदधिकनकनिभाः चतुरशीतिदशैकयोजनसहस्राः ।

वृत्ताः व्यासोदयेन सदृशाः द्वापंचाशच्छैलाः ॥ ९६८ ॥

अर्थ—अंजन गिरि तौ अंजन जो कज्जल तीह समान स्याम वर्ण हैं । दधिमुख दही समान स्वेत वर्ण है । रतिकर ताया सुवर्ण समान रक्तता लिए पीत वर्ण है । बहुरि अंजन गिरिका प्रमाण चौरासी हजार योजन दधिमुखका दश हजार योजन रतिकरका एक हजार योजन है । बहुरि ते सर्व वृत्त हैं । गोल आकारि हैं । व्यास उदयकीर समान हैं । अंजनादिक चौरासी दश एक हजार योजन क्रमते ऊंचे हैं । अर इतना ही मूल विषै वा उपरि समान चौड़े हैं । ऊंभा ढोलकै आकार सम व्यास रूप हैं । ऐसे सर्व मिले हुए वावन पर्वत हैं ॥ ९६८ ॥

आगै तिन वावडीनिके नाम गाथा दोय करि कहैं हैं;—

पंदा पंदवदी पुण पंदुत्तर पंदिसेण अरविरया ।

गयवीदसोगविजया वईजयंती जयंती य ॥ ९६९ ॥

नंदा नंदवती पुनः नंदोत्तरा नंदिषेणा अरविरजे ।

गतवीतशोकाविजयाः वैजयंती जयंती च ॥ ९६९ ॥

अर्थ—नंदा १ नंदवती १ बहुरि नंदोत्तरा १ नंदिषेणा १ ए च्यारि पूर्व दिशाविषै हैं । बहुरि अरजा १ विरजा १ गतशोका १ वीतशोका ए च्यारि दक्षिणविषै हैं । बहुरि विजया १ वैजयंती १ जयंती १ ॥ ९६९ ॥

अवराजिदा य रम्या रमणीया सुप्रभा य पुब्वादी ।

रयणतडा लक्खपमा चरिमा पुण सव्वदोभद्दा ॥ ९७० ॥

अपराजिता च रम्या रमणीया सुप्रभा च पूर्वादितः ।

रत्ततट्ठः लक्षप्रमाः चरमा पुनः सर्वतोभद्रा ॥ ९७० ॥

अर्थ—अपराजिता १ ए च्यारि पश्चिमदिशा विषै हैं । बहुरि रम्या १ रमणीया १ सुप्रभा १ अंत विषै यशोभद्रा १ ए च्यारि उत्तरविषै हैं । जैसे ए सर्व वावडी रत्नमय तट युक्त हैं लक्ष योजन प्रमाण हैं । ते पूर्वादिक दिशानिविषै क्रमते जाननी ॥ ९७० ॥

अब तिन वावडीनिका स्वरूप कहैं हैं;—

सव्वे समचउरस्सा टंक्कुक्किण्णा सहस्समोगाढा ।

वेदियचउवणजुत्ता जलयरउम्मुक्कजलपुण्णा ॥ ९७१ ॥

सर्वाः समचतुरस्राः टंकोत्कीर्णाः सहस्रमवगाथाः ।

वेदिकाचतुर्वनयुक्ता जलचरोन्मुक्तजलपूर्णाः ॥ ९७१ ॥

अर्थ—ते सर्व वापी समचतुरस्र हैं । लाख योजन ही लंबी अर इतनी ही चौड़ी समचौकोर आकार युक्त हैं । बहुरि टंकोत्कीर्ण हैं । उपरि नीचै एकरूप हैं । बहुरि एक हजार योजन ऊंडी हैं । बहुरि वेदिका अर च्यारयो दिशानिविषै च्यारि वन तिन करि संयुक्त हैं । बहुरि जलचर जीवनि करि रहित जल करि संपूर्ण भरी हैं ॥ ९७१ ॥

आगे तिन वावडीनिके बननिका स्वरूप कहै हैं;—

वावीणं पुन्वादिषु असोयसत्तच्छदं च चंपवणं ।

चूदवणं च क्रमेण य सगवावीदीर्घदलवासा ॥ ९७२ ॥

वापीनां पूर्वादिषु अशोकसत्तच्छदं च चंपवणं ।

चूतवनं च क्रमेण च स्वकवापीदीर्घदलव्यासानि ॥ ९७२ ॥

अर्थ—तिन एक एक वापीनिकी पूर्वादिक दिशानिविषै अनुक्रम करि अपनी अपनी वावड़ी समान एक लाख योजन लंबे अर तातैं आधे पचास हजार योजन चौड़े जैसे अशोक अर सत्तच्छद अर चंपक अर आम्र बन हैं । जैसे नंदाश्वर द्वीपविषै सर्व चौंसठि बन जानने ॥ ९७२ ॥

अब अंजनादि पर्वतनिके उपरि प्रत्येक एक एक चैत्यालयकौ कहत संता आचार्य सो तिन चैत्यालयनिविषै चतुर्णिकाय देवनि करि काल विशेष विषै किया हुवा पूजा विशेष ताकौ कहनैकै अर्थ पांच गाथानिकरि कहै हैं;—

तन्वावण्णणगेसुवि वावण्णजिणालया ह्वंति तहिं ।

सोहम्मादी वारसकप्पिंदा ससुरभवणतिया ॥ ९७३ ॥

तद्द्वापंचाशन्नगेष्वपि द्वापंचाशज्जिनालया भवंति तेषु ।

सौधर्मादयो द्वादशकल्पेद्राः ससुरभवनत्रिकाः ॥ ९७३ ॥

अर्थ—तिन वावन पर्वतनिविषै उपरि वावन जिन मंदिर हैं । तिनविषै अन्य कल्पवासी देव अर भवनत्रिक देव तिन करि सहित सौधर्म आदि बारह स्वर्गनिके इन्द्र हैं ॥ ९७३ ॥

ते कहा करै हैं ते कैसे हैं सो कहै हैं;—

गयहयकेसरिवसहे सारसपिकहंसकोकगरुडे य ।

मयरसिहिकमलपुष्पयविमाणपहुदिं समारूढा ॥ ९७४ ॥

गजहयकेसरिवृषभान् सारसपिकहंसकोकगरुडान् च ।

मकरशिखिकमलपुष्पकविमानप्रभृतिं समारूढाः ॥ ९७४ ॥

अर्थ—हस्ती १ घोटक १ सिंह १ वृषभ १ सारस १ कोकिला १ हंस १ चकवो १ गरुड १ माछल्लो १ मोर १ कमल १ पुष्पक विमान इत्यादिकनि ऊपरि समारूढ हैं । भावार्थ—सौधर्मादिक बारह इंद्रनिके हस्ती आदि मुख्य वाहन हैं । तिन उपरि चढे हैं ॥ ९७४ ॥

बहुरि कैसे हैं;—

दिव्वफलपुष्पहत्था सत्थाभरणा सचामराणीया ।

बहुधयतूरावा गत्ता कुव्वंति कल्लाणं ॥ ९७५ ॥

दिव्यफलपुष्पहस्ता शस्ताभरणाः सचामरानीकाः ।

बहुध्वजतूर्यारावाः गत्वा कुर्वंति कल्याणं ॥ ९७५ ॥

अर्थ—दिव्य फल पुष्प आदि पूजन द्रव्य हस्त विषै धारै हैं । बहुरि प्रशस्त आभरण पहरे हैं । चामरनि करि सहित सेनायुक्त हैं । बहुत ध्वजा अर वाजित्रनिके शब्द करि संयुक्त हैं । ऐसे

होत संतें अपने स्थाननितै तहां नंदीश्वर द्वीपविषै जाइ ऐंद्रध्वज आदि जो जिन पूजनरूप कल्याण ताहि करै हैं ॥ ९७५ ॥

पडिवारिसं आसाढे तह कत्तियफग्गुणे य अट्टमिदो ।

पुण्णदिणोत्ति यभिवखं दो दो पहरं तु ससुरेहिं ॥ ९७६ ॥

प्रतिवर्षमाषाढे तथा कार्तिके फाल्गुने च अष्टमीतः ।

पूर्णदिनांतं चाभीक्षणं द्वौ द्वौ प्रहरौ तु स्वसुरैः ॥ ९७६ ॥

अर्थ—वर्षे वर्षे प्रति आषाढ मास विषै अर तैसै ही कार्तिके मास विषै अर फाल्गुन मास विषै अष्टमी तिथितै लगाय पूर्णमा दिन पर्यंत अभीक्षण कहिए निरंतर दोय दोय पहर अपने अपने देवनि करि सहित ॥ ९७६ ॥

कौन कहा करै हैं सो कहै हैं;—

सोहम्मो ईसाणो चमरो वइरोयणो पदक्खिणदो ।

पुव्ववरदक्खिणुत्तरदिसासु कुव्वंति कल्लाणं ॥ ९७७ ॥

सौधर्म ईशानः चमरो वैरोचनः प्रदक्षिणतः ।

पूर्वापरदक्षिणोत्तरदिशासु कुर्वंति कल्याणं ॥ ९७७ ॥

अर्थ—प्रथम स्वर्ग युगलके इन्द्र सौधर्म अर ईशान बहुरि असुर कुमारनिके इन्द्र चमर अर वैरोचन ए च्यारयौ प्रदक्षिणा रूप पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानि विषै कल्याण जो जिन पूजन ताहि करै हैं । पूर्ववाला दक्षिण जाइ तब उत्तरवाला पूर्वको आवे ऐसं प्रदक्षिणारूप महोत्सव युक्त पूजन करै हैं ॥ ९७७ ॥

अब तीन लोक विषै तिष्ठते जु अक्रान्तिम चैत्यालय तिनका सामान्य करि व्यासादिक कहै हैं;—

आयामदलं वासं उभयदलं जिणघराणमुच्चत्तं ।

दारुदयदलं वासं आणिद्वाराणि तस्सद्धं ॥ ९७८ ॥

आयामदलं व्यासं उभयदलं जिनगुहाणामुच्चत्वं ।

द्वारोदयदलं व्यासः आणुद्वाराणि तस्यार्धं ॥ ९७८ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट आदि चैत्यालयनिका जो आयाम ताका आधा तौ तिनका व्यास है । बहुरि आयाम अर व्यास दोउनिका मिलाइ ताका आधा जिन मंदिरनिका उच्चत्व है । भावार्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिकी लंबाई क्रमतै सौ पचास पचीस योजन प्रमाण आगे कहेंगे ताका आधा पचास पचीस साढा वारह योजन प्रमाण तिनकी चौडाईका प्रमाण जाननां । बहुरि लंबाई चौडाईको मिलाइ १५०।७५।७५ ÷ २ आधा किए पिचहत्तरि साढासैंतीस पौणा उगणीस योजन प्रमाण तिनकी उचाईका प्रमाण हो है । बहुरि तिन चैत्यालयनिके जे द्वार तिनकी उचाईतै आधा द्वारनिका व्यास प्रमाण है । भावार्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिके बड़े द्वारनिकी उचाई सोलह आठ च्यारि योजन कहेंगे ताका आधा आठ च्यारि दोय योजन तिनकी चौडाईका प्रमाण

जाननां । बहुरि अन्य छोटे द्वार ते तिस वड़े द्वारतैं आधा प्रमाण उदय व्यास संयुक्त हैं । भावार्थ—
उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिके छोटे द्वारनिकी उचाई आठ च्यारि दोय योजन है । चौड़ाई
च्यारि दोय एक योजन है ॥ ९७८ ॥

इस ही कहे अर्थकों विशेषतैं गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

वरमज्झिमअवराणं दलकमं भद्रशालणंदणगा ।

पांदीसरगविमाणगजिणालया होंति जेट्ठा दु ॥ ९७९ ॥

वरमध्यमावराणां दलकमं भद्रशालनंदनकाः ।

नदीश्वरकविमानगजिणालया भवंति ज्येष्ठा हि ॥ ९७९ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिका व्यासादिक क्रमतैं आधा आधा जानहु । तहां
भद्रशाल अर नंदनवन अर नदीश्वर अर दीप वैमानिकनिके विमान इन विषै प्राप्त जे जिनालय हैं
ते तौ व्यासादिक करि उत्कृष्ट हैं ॥ ९७९ ॥

सौमणसरुजगकुंडलवक्खारिसुगारमाणुसुत्तरगा ।

कुलगिरिजा वि य मज्झिम जिणालया पांडुगा अवरा ॥ ९८० ॥

सौमनसरुचककुंडलवक्षारेष्वाकारमानुषोत्तरगाः ।

कुलगिरिजा अपि च मध्यमा जिनालया पांडुगा अवराः ॥ ९८० ॥

अर्थ—सौमनस वन अर रुचक कुंडल वक्षार इष्वाकार मानुषोत्तर पर्वत अर कुलाचल इन
विषै प्राप्त जिनालय हैं ते मध्यम हैं । पांडुक वन विषै प्राप्त जिनालय हैं ते जघन्य हैं ॥ ९८० ॥
याकै अनंतरि उत्कृष्ट जिनालयनिका आयाम अवगाध द्वारनिका उच्चत्व कहैं हैं;—

जोयणसय आयामं दलगाढं सोलसं तु दारुदयं ।

जेट्ठाणं गिहपासे आणिदाराणि दो दो दु ॥ ९८१ ॥

योजनशतमायामः दलगाधः षोडश तु द्वारोदयः ।

ज्येष्ठानां गृहपार्श्वे आणुद्वारे द्वे द्वे तु ॥ ९८१ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट जिनालयनिका आयाम सौ योजन प्रमाण है । अर आध योजन अवगाध
कहिए पृथ्वी मांहीं नीव है । बहुरि सोलह योजन तिनके द्वारनिका उच्चत्व है । बहुरि यह बड़ा द्वार
तौ सनमुख दिशा विषै है । अर जिन मंदिरनिके दोऊ पार्श्वनि विषै दोय दोय छोटे द्वार हैं ।
पीलैको द्वार हैं नाहीं ॥ ९८१ ॥

आगै उत्कृष्ट आदि विशेष रहित जे वसतिका कहिए जिनालय तिनका आयाम कितनां
है सो कहैं हैं;—

वेयडूजंबुसामलिजिणभवणाणं तु कोस आयामं ।

सेसाणं सगजोगं आयामं होदि जिणदिट्ठं ॥ ९८२ ॥

विजयार्धजंबूशात्मलिजिनभवनानां तु क्रोश आयामः ।

शेषाणां स्वकयोग्यः आयामो भवति जिनदृष्टः ॥ ९८२ ॥

अर्थ—विजयार्द्ध पर्वत जंबूवृक्ष शाल्मली वृक्ष इन विषै जिन मंदिरनिका आयाम जो लंबाई सो एक कोश प्रमाण है । अबशेष भवनवासीनिके भवन व्यंतरनिके आवास इत्यादिकनि विषै प्राप्त जे जिनभवन तिनका अपना अपना यथा योग्य आयाम जिन देव देखै हैं । बहुत प्रकार है तातैं इहां न कछा है ॥ ९८२ ॥

आगैं कहे जे जिन भवन तिनका परिवार गाथा सात करि कहैं हैं;—

चउगोउरमणिसालति वीहिं पडि माणथंभ णवथूहा ।

वणधयचेदियभूमी जिणभवणाणं च सव्वेसिं ॥ ९८३ ॥

चतुर्गोपुरमणिशालत्रयं वीथीं प्रति मानस्तंभा नवस्तूपाः ।

वनध्वजाचैत्यभूमयः जिणभवनानां च सर्वेषां ॥ ९८३ ॥

अर्थ—सर्व जिन भवननिके च्यारि द्वारनि करि संयुक्त मणिमई तीन कोट हैं । बहुरि वीथी जो द्वार होइ करि जानैकी गली तिन एक एक वीथी प्रति एक एक मानस्तंभ है । अर नव नव स्तूप हैं । बहुरि तिन तीन कोटनिके वीचि वीचि अंतराल तिन विषै बाह्यतैं लगाय पहला दूसरा कोटकै वीचि वन हैं, दूसरा तीसरा कोटकै वीचि ध्वजा हैं । तीसरा कोटकै वीचि चैत्यालय चैत्यभूमि है ॥ ९८३ ॥

जिणभवणे अट्टसया गढभगिहा रयणथंभवं तत्थ ।

देवच्छंदो हेमो दुगअडचउवासदीहुदओ ॥ ९८४ ॥

जिनभवनेषु अष्टशतानि गर्भगृहाणि रत्नस्तंभवान् तत्र ।

देवच्छंदो हैमः द्विकाष्टचतुर्व्यासदीर्घोदयः ॥ ९८४ ॥

अर्थ—तिन जिन भवननि विषै एकसौ आठ गर्भ ग्रह हैं । जैसे वास करनेके कोठा आदिस्थान तैसे गर्भ ग्रह जानने । बहुरि तहां जिन मंदिरके मध्यविषै रत्ननिका स्तंभनि करि युक्त सुवर्ण मई दोय योजन चौड़ा आठ योजन लंबा च्यारि योजन ऊंचा देवछंद कहिए छप्पर मंडप है ॥ ९८४ ॥

सिंहासणादिसहिया विणीलकुंतल सुवज्जमयदंता ।

विद्रुमअहरा किसलयसोहायरहत्थपायतला ॥ ९८५ ॥

सिंहासनादिसहिता विनीलकुंतलाः सुवज्जमयदंताः ।

विद्रुमाधराः किसलयशोभाकरहस्तपादतलाः ॥ ९८५ ॥

अर्थ—सिंहासन छत्रादिक करि संयुक्त बहुरि विशेषपनै नील हैं मस्तकादिविषै केश जिनके अर भले वज्रमई दंत जिनके अर विद्रुम जो मूंगा तिस सारिखे रक्त होत हैं जिनके अर किसलय जो नवीन कूपल तिस सारिखे हैं रक्तता लिए शोभा युक्त हस्त तल अर पाद तल जिनके ऐसी जिन प्रतिमा हैं । इहां केशादिककासा आकार रूप पुद्रल परण है ऐसा जानना ॥ ९८५ ॥

दसतालमाणलक्खणभरिया पेक्खंत इव वदंता वा ।

पुरुजिणतुंगा पडिमा रयणमया अट्टअहियसया ॥ ९८६ ॥

दशतालमानलक्षणभरिताः प्रेक्ष्यमाणा इव वदंत इव ।

पुरुजिनतुंगाः प्रतिमाः रत्नमया अष्टाधिकशताः ॥ ९८६ ॥

अर्थ—दश ताल प्रमाण लक्षणनिकरि भरी हैं । तालका प्रमाण बारह अंगुल जाननां । बहुरि ते प्रतिमा तीर्थकर वत जानो कि चौथै हैं जानो बोले हैं । बहुरि पुरुजिन जो पहला वृषभ तीर्थकर तीह समान पांचसै धनुष ऊंची हैं । बहुरि रत्न मय हैं । ऐसी एकसौ आठ जिन प्रतिमा तिन गर्भ ग्रहनि विषै एक एक विराज मान हैं ॥ ९८६ ॥

चमरकरणागजक्वगवत्तीसंमिहुणगोहि पुह जुत्ता ।

सरिसीए पंतीए गब्भगिहे सुट्टु सोहंति ॥ ९८७ ॥

चमरकरनागयक्षगद्वात्रिंशन्मिथुनैः पृथक् युक्ताः ।

सदृश्या पंक्त्या गर्भगृहे सुष्टु शोभन्ते ॥ ९८७ ॥

अर्थ—बहुरि ते प्रतिमा कैसी हैं ? चमर है हाथ विषै जिनके ऐसे जु नागकुमारनिके वा यक्षनिके वत्तीस युगल तिनकरि संयुक्त जुदे जुदे एक एक गर्भ गृह विषै सदृश रूप वरोवरि पंक्ति करि भले प्रकार सोभै हैं । **भावार्थ**—वत्तीस नाग कुमार वा यक्षनिके युगल तिनके हस्त विषै चौसठि चमर हैं तिन करि वीज्यमान हैं ॥ ९८७ ॥

सिरिदेवी सुददेवी सव्वाणहसणक्कुमारजक्खाणं ।

रूवाणि य जिणपासे मंगलमष्टविहमवि होदि ॥ ९८८ ॥

श्रीदेवी श्रुतदेवी सर्वाहसनत्कुमारयक्षाणां ।

रूपाणि च जिनपार्श्वे मंगलमष्टविधमपि भवति ॥ ९८८ ॥

अर्थ—तिन जिन प्रतिमानिके पार्श्व विषै श्री देवी अर सरस्वती देवी अर सर्वाह यक्ष अर सनत्कुमार यक्ष इनके रूप जे आकार ते तिष्ठै हैं । **भावार्थ**—जिनप्रतिमाके निकटि इन च्यारनिका प्रतिबिंब हो है । इहां प्रश्न—जो श्री तौ धनादिक रूप है अर सरस्वती जिनवानी है । इनका प्रतिबिंब कैसै हो है । ताकां समाधान—श्री अर सरस्वती दोऊ लोक विषै उत्कृष्ट हैं । तातै इनका देवांगनाका आकार रूप प्रतिबिंब हो है । बहुरि दोऊ यक्ष विशेष भक्त हैं । तातै तिनके आकार हो है । बहुरि आठ प्रकार मंगल द्रव्य जिनप्रतिमानिके निकटि सोभै हैं ॥ ९८८ ॥

भिंंगारकलसदप्पणवीयणधयचामरादवत्तमह ।

सुवइट्ट मंगलाणि य अट्टहियसयाणि पत्तेयं ॥ ९८९ ॥

भृंगारकलशदर्पणवीजनध्वजचामरातपत्रमथ ।

सुप्रतिष्ठं मंगलानि च अष्टाधिकशतानि प्रत्येकम् ॥ ९८९ ॥

अर्थ—झारी १ कलश १ आरसा १ वीजनां १ ध्वजा १ चामर १ छत्र १ अर ठौना १ ए आठ मंगल द्रव्य हैं । ते एक एक मंगल द्रव्य एकसौ आठ प्रमाण तहां हो हैं ॥ ९८९ ॥

आगे गर्भ ग्रहतै बाह्य स्वरूपको गाथा च्यारि करि कहै है,—

मणिकणयपुष्पसोहियदेवच्छंदस्स पुव्वदो मज्जे ।

वसईए रूपकंचणघडासहस्साणि वत्तीसं ॥ ९९० ॥

मणिकनकपुष्पशोभितदेवच्छंदस्य पूर्वतो मध्ये ।

वसत्यां रूप्यकांचनघटसहस्राणि द्वात्रिंशत् ॥ ९९० ॥

अर्थ—मणि अर सुवर्ण मय पुष्पनिकरि सोभित ऐसा जु देवछंद ताके पूर्व विषै आगै वसती जो जिन मंदिर ताका मध्य विषै रूपा अर सोनामई वत्तीस हजार घडे हैं ॥ ९९० ॥

महदारस्स दुपासे चउवीससहस्ममत्थि ध्रुवघटा ।

दारवर्हिं पासदुगे अट्टसहस्साणि मणिमाला ॥ ९९१ ॥

महाद्वारस्य द्विपार्श्वे चतुर्विंशसहस्रं संति ध्रुवघटाः ।

द्वारवहिः पार्श्वद्वये अष्टसहस्राणि मणिमालाः ॥ ९९१ ॥

अर्थ—महा द्वार जो बड़ा द्वार ताके दोऊ पार्श्वनि विषै दांहिणी बाई तरफ चौईस हजार धूपके घडे हैं । बहुरि तिस महा द्वारके बाह्य दोऊ पार्श्वनि विषै आठ हजार मणिमय माला हैं ॥ ९९१ ॥

तम्मज्झ हेममाला चउवीसं वदणमंडवे हेमा ।

कलसामाला सोलस सोलसहस्साणि ध्रुवघटा ॥ ९९२ ॥

तन्मध्ये हेममाला चतुर्विंशतिः वदनमंडपे हेमाः ।

कलशमालाः षोडश षोडशसहस्राणि ध्रुवघटाः ॥ ९९२ ॥

अर्थ—तिन मणिमय मालानिके बीच चौईस हजार सुवर्णमय माला हैं । बहुरि तिस महा-द्वारके आगै सन्मुख मुख मंडप है तिस विषै सुवर्णमय कलश अर सुवर्ण मय माला सोलह सोलह हजार हैं । बहुरि तिसही विषै सोलह हजार धूपके घडे हैं ॥ ९९२ ॥

महुरझणझणणिणादा मोत्तियमणिणिम्मिया सकिंकिणिया ।

बहुविहघटाजाला रइदा सोहांति तम्मज्झे ॥ ९९३ ॥

मधुरजनननिनादाः मौक्तिकमणिनिर्मिताः सकिंकिणिकाः ।

बहुविधघटाजाला रचिताः शोभंते तन्मध्ये ॥ ९९३ ॥

अर्थ—तिस ही मुख मंडपका मध्य विषै मीठा है झण झण शब्द जिनका अर मोती मणिनि करि निपजी किंकणी जे छोटी घंटा तिन करि सहित नाना प्रकार घंटानिके समूह अनेक रचना करि युक्त सोभै हैं ॥ ९९३ ॥

बहुरि तिस मंदिरके झुलुक द्वारादिकका स्वरूप कहै हैं;—

वसईमज्झगदक्खिणउत्तरतणुदारगे तदद्धं तु ।

तप्पुट्टे मणिकंचणमालडचउवीसगसहस्सं ॥ ९९४ ॥

वसतिमध्यगदक्षिणोत्तरतनुद्वारे तदर्वे तु ।

तपुट्टे मणिकांचनमाला अष्टचतुर्विंशकसहस्राणि ॥ ९९४ ॥

अर्थ—वसती जो जिन मंदिर ताका दक्षिण उत्तर पार्श्वका मध्यविषै प्राप्त छोटा द्वार है । तिसविषै मुख्य महा द्वारविषै कहा जो सर्व विधान तातै बाधा आधा है । इहां मणिमाला आदिका

प्रमाण पूर्वोक्ततै आधा है । बहुरि तिस मंदिरका पृष्ठ भाग जो पीछैका भाग तहां मणिमाला अर सुवर्ण माला क्रमतै आठ हजार अर चौईस हजार जाननी । माला तौ चौगिरद भीतिकै द्दंबती जाननी । घड़े पृथ्वीविषै तिष्ठते जाननै । घंटा मंडपके माहीं द्दंबती जाननी ॥ ९९४ ॥

बहुरि कह्या जो मुख मंडपादिक ताका व्यासादिक अर ताकै आगै स्थित जे सर्व तिनका स्वरूप गाथा पंद्रह करि कहै हैं;—

जिणगिहवासयामो तप्पुरदो सोलसोच्छिओ होदि ।

मुहमंडओ तदग्गे पेक्खण चउरस्स मंडवओ ॥ ९९५ ॥

जिनगृहव्यासायामः तत्पुरतः षोडशोच्छ्रितो भवति ।

मुखमंडपः तदग्रे प्रेक्षणः चतुरस्रः मंडपः ॥ ९९५ ॥

अर्थ—जिन मंदिरके समान पचास अर सौ योजन जाका व्यास अर आयाम है अर सोलह योजन ऊंचा है औसा मुख मंडप तिस जिनमंदिरके आगै जाननां । बहुरि तिस मुख मंडपकै आगै चौकोर प्रेक्षण मंडप है ॥ ९९५ ॥

सदवित्थारो साहियसोलुदओ हेमपीडियं पुरदो ।

चउरस्सं जोयणदुगसमुच्छयं सीदिवित्थारं ॥ ९९६ ॥

शतविस्तारः साधिकषोडशोदयः हेमपीठं पुरतः ।

चतुरस्रं योजनद्विकसमुच्छ्रयं अशीतिविस्तारं ॥ ९९६ ॥

अर्थ—सो प्रेक्षण मंडप सौ योजन चौड़ा है साधिक सोलह योजन ऊंचा है । बहुरि तिस प्रेक्षण मंडपकै आगै दोय योजन ऊंचा असी योजन चौड़ा चौकोर सुवर्ण मई पीठ है । पीठ नाम चौतराका जाननां ॥ ९९६ ॥

तम्मज्झे चउरस्सो मणिमय चउविंदवास सोलुदओ ।

अट्ठाणमंडओ तप्पुरदो तालुदयथूवमणिपीठं ॥ ९९७ ॥

तन्मध्ये चतुरस्रः मणिमयः चतुर्वृंदव्यासः षोडशोदयः ।

आस्थानमंडपः तत्पुरतः चत्वारिंशदुदयस्तूपमणिपीठं ॥ ९९७ ॥

अर्थ—तिस पीठका मध्य विषै चौकोर मणिमय च्यारिका घन चौसठि योजन प्रमाण चौड़ा सोलह योजन ऊंचा आस्थान मंडप कहिये सभामंडप है । बहुरि ताकै आगै चालीस योजन ऊंचा स्तूपनिका मणिमय पीठ है ॥ ९९७ ॥

तं पुण चउगोउरजुदबारंबुजवेदियाहिं संजुत्तं ।

मज्झे मेहलतियजुद चउघणदीहुदयवास बहुरयणो ॥ ९९८ ॥

तत् पुनः चतुर्गोपुरयुतद्वादशांबुजवेदिकाभिः संयुक्तः ।

मध्ये मेखलात्रययुतः चतुर्धनदीर्घोदयव्यासः बहुरत्नः ॥ ९९८ ॥

अर्थ—बहुरि सो पीठ च्यारि द्वारनि करि संयुक्त जो बारह अंबुज वेदी तिन करि संयुक्त है । बहुरि तिस पीठकै मध्य तीन मेखला जो कटनी तिन करि संयुक्त च्यारिका घन चौसठि योजन तिह प्रमाण लंबा वा ऊंचा वा चौड़ा ऐसा बहुत रत्नमय ॥ ९९८ ॥

कहा सो कहै हैं;—

थूहो जिणविंबचिदो णवण्हमेवं कमेण तप्पुरदो ।

बासायामसहस्सं वारसवेदिजुद हेममयपीठं ॥ ९९९ ॥

स्तूपः जिनविंबचितः नवानामेवं क्रमेण तत्पुरतः ।

व्यासायामसहस्सं द्वादशवेदीयुतं हेममयपीठं ॥ ९९९ ॥

अर्थ—जिन विंब करि संचित स्तूप है तीन कटनी लिएं जो रत्न राशि ताका नाम स्तूप है । ताकै ऊपरि जिनीवव विराजे हैं । सो नव स्तूप हैं । तिनका ऐसै ही क्रमकरि स्वरूप है । बहुरि तिस स्तूपकै आगै हजार योजन लंबा वा चौड़ा गिरद विषै वारहवेदीनि करि संयुक्त सुवर्ण मय पीठ है ॥ ९९९ ॥

तहिं चउदीहिगिवासक्खंधा बहुमणिमया ससालतिया ।

वारहजोयणआयदचउमहसाहा अणेयतणुसाहा ॥ १००० ॥

तस्मिन् चतुर्दीर्घकव्यासस्कंधौ बहुमणिमयौ सशालत्रयौ ।

द्वादशयोजनायतचतुर्महाशाखां अनेकतनुशाखां ॥ १००० ॥

अर्थ—तिस पीठ उपरि च्यारि योजन लंबा अर एक योजन चौड़ा है स्कंध पेंड़ जिनका अर बहुत मणि मय अर गिरद विषै तिन कोटनि करि संयुक्त अर बारह योजन लंबी है च्यारि महा शाखा जिनकै अर छोटी शाखा अनेक हैं जिनकै ऐसे हैं ॥ १००० ॥

वारहजोयणवित्थडसिहरा सिद्धत्थचेत्तणामतरू ।

णाणादलपुप्फफला पंचाहियपउमपरिवारा ॥ १००१ ॥

द्वादशयोजनविस्तृतशिखरौ सिद्धार्थचैत्यनामतरू ।

नानादलपुष्पफलयौ पंचाधिकपद्मपरिवारौ ॥ १००१ ॥

अर्थ—बहुरि बारह योजन चौड़ा है शिखर कहिए उपरिम भाग जिनका बहुरि नाना प्रकार पांन फूल फल युक्त हैं । बहुरि पद्मादि द्रहनि विषै जो मुख्य कमलके परिवार कमलनिका प्रमाण कथा तातै पांच अधिक हैं परिवारके वृक्ष जिनके ऐसे सिद्धार्थ नामा अर चैत्यनामा दोय वृक्ष हैं ॥ १००१ ॥

मूलगपीठणिसण्णा चउदिसं चारि सिद्धजिणपडिमा ।

तप्पुरदो महकेद् पीठे चिहंति विविहवण्णणगा ॥ १००२ ॥

मूलगपीठनिषण्णा चतुर्दिक्षु चतस्रः सिद्धजिनप्रतिमाः ।

तत्पुरतः महाकेतवः पीठे तिष्ठति विविधवर्णनकाः ॥ १००२ ॥

अर्थ—तिन वृक्षनिका मूल विषै प्राप्त जो पीठ ताकै उपरि तिष्ठते ऐसे च्यारों दिशानि विषै च्यारि सिद्धार्थ वृक्षका मूल विषै तौ सिद्ध प्रतिमा अर चैत्य वृक्षका मूल विषै अरहंत प्रतिमा विराजमान है । इहां ऐसा जानिए है जो सिद्धि प्रतिमानिकै छत्रादिक नाहीं हैं । अरहंत प्रतिमाकै है । विशेष जैसा होइ तैसा सिद्धांततै जानि लेनां । बहुरि तिस वृक्षके आगै पीठ है ताविषै नाना प्रकार वर्णन करि युक्त महा ध्वजा तिष्ठै हैं ॥ १००२ ॥

सोलहय कोसवित्थड कणयत्थंभग्गा हु रयणमया ।

चित्तवडल्लत्तित्तिया बहुगा जणणयणमणरमणा ॥ १००३ ॥

पोडशोदयाः क्रोशविस्ताराः कनकस्तंभाप्रगा हि रत्नमयाः ।

चित्रपटल्लत्रितया बहुका जननयनमनोरमणाः ॥ १००३ ॥

अर्थ—सोलह योजन ऊंचे अर एक कोश चौड़े ऐसे ध्वजानिके सुवर्ण मय स्तंभ हैं । तिन स्तंभनिका अग्र भाग विषै प्राप्त अर रत्न मय अर बहुत अर मनुक्षनिके नेत्र मनकों रमणीक ऐसे नाना प्रकारके ध्वजाकार रूप वस्त्र अर तीन छत्र सोभै हैं । इहां वस्त्रकासा आकार वर्णकोमलता ललितता लिपं, रत्नरूप पुद्गल परिणए हैं तातैं वस्त्र भी रत्नमय जाननें ॥ १००३ ॥

तत्पुरदो जिणभवणं तच्चउदिस विविहकुसुम चउ दहगा ।

दसगाहसयदलायदवासा मणिकणयवेदिजुदा ॥ १००४ ॥

तत्पुरतः जिनभवणं तच्चतुदिशं विविधकुसुमाः चत्वारो हदाः ।

दशावगाधशतदलायतव्यासाः मणिकनकवेदीयुताः ॥ १००४ ॥

अर्थ—तिस ध्वजा पीठकै आगैं जिन मंदिर हैं ताकी च्यारयौं दिशानि विषै नाना प्रकारका फूलनि करि संयुक्त दश योजन ऊंचे सौं योजन लंबे ताके आधे पचास योजन चौड़े मणि सुवर्णमय वेदीनिकरि संयुक्त च्यारि द्रह हैं ॥ १००४ ॥

पुरदो सुरकीडणमणिपासाददु होंति वीहिपासदुगे ।

पण्णुदयं दलवासा तत्पुरदो तोरणं होदि ॥ १००५ ॥

पुरस्तात् सुरक्रीडनमणिमयप्रासादद्वयं भवंति वीथिपार्श्वद्वये ।

पंचाशदुदयं दलव्यासं तत्पुरतस्तोरणं भवति ॥ १००५ ॥

अर्थ—ताकै आगैं जो मार्ग रूप वीथी है । ताके दोऊ पार्श्वनि विषै पचास योजन ऊंचे ताका आधा पच्चीस योजन चौड़े देवनिके क्रीड़ा करनेके म्यान मणिमय दोय मंदिर हैं । बहुरि ताकै आगैं तोरण हैं ॥ १००५ ॥

तं मणिथंभग्गटियं मुत्ताघंटासुजाल पण्णुदयं ।

तद्वलजोयणवासं जिणविंबकदंबरमणिज्जं ॥ १००६ ॥

तत् मणिस्तंभाप्रस्थितं मुक्ताघंटासुजालं पंचाशदुदयम् ।

तद्वलयोजनव्यासं जिनविंबकदंबरमणीयं ॥ १००६ ॥

अर्थ—सो तोरण मणिमय स्तंभनिका अग्र भाग विषै स्थित हैं । दोय स्तंभनिकै वीथि भींति रहित मरगोलकासा आकार ताका ही नाम तोरण है । बहुरि सो तोरण मोतीमाल अर घंटा समूह करि युक्त हैं । ए जाकैं दंबै हैं । बहुरि सो तोरण पचास योजन ऊंचा ताका आधा पच्चीस योजन चौड़ा है । बहुरि सो तोरण जिन विंबनिकै समूह करि रमणीक हैं । जिनविंबनिका आकार जा विषै पाईए हैं ॥ १००६ ॥

पुरदो पासाददुगं फलिहादिमसालदारपासदुगे ।

अब्भंतरं सदुदयं दलवासं रयणसंघडियं ॥ १००७ ॥

पुरतः प्रासादद्वयं स्फटिकादिमशालद्वारपार्श्वद्वये ।

अभ्यंतरं शतोदयं दलव्यासं रत्नसंघटितम् ॥ १००७ ॥

अर्थ—तिस तोरणके आगे स्फटिकमय जो प्रथम कोट ताँक अभ्यंतर कोटके द्वारका दोऊ पार्श्वनि विषे सो योजन ऊंचे ताका आधा पचास योजन चौड़े रत्न निर्मापित दोय मंदिर हैं । ऐसै प्रथम कोट पर्यंत वर्णन किया ॥ १००७ ॥

जं परिमाणं भणितं पुष्पगदारम्ह मंडवादीणं ।

दक्षिणोत्तरद्वारे तदद्धमाणं गद्दीद्वयं ॥ १००८ ॥

यत् परिमाणं भणितं पूर्वद्वारे मंडपादीनाम् ।

दक्षिणोत्तरद्वारे तदर्धमानं प्रहीतव्यं ॥ १००८ ॥

अर्थ—पूर्व द्वार विषे मंडपादिकनिका जो परिमाण कथा ताँक आधा प्रमाण दक्षिण द्वार अर उत्तरद्वार विषे ग्रहण करना । अन्य वर्णन तीनों तरफां समान है ॥ १००८ ॥

वंदणभिसेयणच्चणसंगीयवलयमंडवेहिं जुदा ।

क्रीडणगुणणीगहेहि य विशालवरवट्टशालेहिं ॥ १००९ ॥

वंदनाभिषेकनर्तनसंगीतावलोकमंडपैः युतानि ।

क्रीडनगुणनगृहैश्च विशालवरपट्टशालैः ॥ १००९ ॥

अर्थ—बहुरि ते चैत्यालय सामायिकादि क्रिया करनेके स्थान वंदना मंडप अर स्नान करनेके स्थान अभिषेक मंडप अर नृत्य करनेके स्थान नर्तन मंडप अर सांगीत साधन करनेके स्थान सांगीत मंडप अर अवलोकन करनेके स्थान अवलोकन मंडप तिन करि संयुक्त हैं । बहुरि क्रीडा करनेके स्थान क्रीडन गृह शास्त्रादिक अभ्यासनेके स्थान गुणनग्रह तिन करि अर विस्तीर्ण उत्कृष्ट पट्ट चित्राम आदि दिखावनेके स्थान पट्टशाला तिनकरि संयुक्त हैं ॥ १००९ ॥

अब पहला अर दूसरा कोटके बीचि जो अंतराल ताका स्वरूपका कहै हैं;—

सिंहगयवसहगरुडसिंहिदिणहंसारविदचक्रधया ।

पुह अट्टसया चउदिसमेकैकं अट्टसय खुल्ला ॥ १०१० ॥

सिंहगजवृषभगरुडशिखीद्विनहंसारविदचक्रध्वजाः ।

पृथक् अष्टशतानि चतुर्दिशमेकैकस्मिन् अष्टशतं क्षुल्लाः ॥ १०१० ॥

अर्थ—सिंह १ हस्ती १ वृषभ १ गरुड १ मयूर १ चंद्रमा १ सूर्य १ हंस १ कमल १ चक्र इन दशनिका आकार करि संयुक्त ध्वजा हैं ते पृथक् पृथक् एकसौ आठ हैं । अर प्रत्येक जिन मंदिरकी चारों दिशानि विषे हैं । ऐसै मुख्य ध्वजा चारि हजार तीनसै बीस भई । बहुरि इहां एक एक मुख्य ध्वजा विषे एकसौ आठ क्षुल्लक छोटी ध्वजा हैं ॥ १०१० ॥

आगे दूसरा अर तीसरा कोटके बीचि जो अंतराल ताका स्वरूपका गाथा तान करि कहै हैं;—

चउवणमसोयसत्तच्छदचंपयचृदमेत्थ कप्पतरु ।

कणयमयकुसुमसोहा मरगयमयविविहपत्तडा ॥ १०११ ॥

चतुर्वनमशोकसतच्छदचंपकचूतमत्र कल्पतरवः ।

कनकमयकुमुमशोभाः मरकतमयविविधपत्राढ्याः ॥ १०११ ॥

अर्थ—अशोक अर सतछद अर चंपक अर आम्र इन मई च्यारि वन हैं । बहुरि इहां सुवर्ण मई फूलनि करि शोभित अर मरकत मणिमय नाना प्रकार यंत्रनिकरि पूर्ण ऐसे कल्प वृक्ष हैं ॥ १०११ ॥

वेलुरियफला विद्रुमविसालसाहा दसप्पयारा ते ।

पल्लंकपाडिहेरग चउदिसमूलगय जिणपडिमा ॥ १०१२ ॥

वैडूर्यफला विद्रुमविशालशाखाः दशप्रकारास्ते ।

पल्यंकप्रातिहार्यगाः चतुर्दिशामूलगता जिनप्रतिमाः ॥ १०१२ ॥

अर्थ—बहुरि ते वैडूर्य रत्न मय फल संयुक्त हैं । बहुरि विद्रुम मूंगा मय डाली युक्त है । ऐसे कल्प वृक्ष भोजनांग आदि भेद लीएं दश प्रकार तिन वननि विषै हैं । बहुरि तिन वननिविषै चैस्यवृक्षानिकै निकटि पल्यंक आसन छत्रादि प्रातिहार्य संयुक्त च्यारों दिशानि विषै वृक्षनिका मूलकै निकटि प्राप्त ऐसी जिन प्रतिमा हैं ॥ १०१२ ॥

सालत्तयपीठत्तयजुत्ता मणिसाहपत्तपुष्पफला ।

तच्चउवणमज्झगया चेदिगरुक्खा सुसोहंति ॥ १०१३ ॥

शालत्रयपीठत्रययुक्ताः मणिशाखापत्रपुष्पफलाः ।

तच्चतुर्वनमध्यगताः चैत्यवृक्षाः सुशोभंते ॥ १०१३ ॥

अर्थ—तीन कोट तीन पीठ करि संयुक्त अर मणिमय डाली पांन फूल फल युक्त ऐसे च्यारयो वननिकै मध्य प्राप्त जिन बिंब सहित चैत्य वृक्ष भले प्रकार सोभै हैं ॥ १०१३ ॥

आगै नंदादिक वापी अर मान स्तंभ तिनका विशेष स्वरूप कहै हैं;—

णंदादीय तिमिहल तिवीढया भंति धम्मविहवावि ।

पडिमाधिद्वियमुड्ढा वणभूचउवीहिमज्झमिह ॥ १०१४ ॥

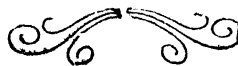
नंदादिकाः त्रिमेखलाः त्रिपीठका भांति धर्मविभवा अपि ।

प्रतिमाधिष्ठितमूर्धानः वनभूचंतुंवीथीमध्ये ॥ १०१४ ॥

अर्थ—पूर्वै कही जे नंदादिक सोलह वावड़ी ते तीन कटनीनि करि संयुक्त सोभै हैं । बहुरि वननिका जु भूमि ताकै निकटि द्वारनितै आवनेका मार्गरूप जो वीथी तिनका मध्य विषै जिन प्रतिमाका स्थान भूत है मस्तक भाग जिनका जैसे धर्म विभवा अपि कहिए धर्म रूप विभव संजुक्त मानस्तंभ हैं तेऊ तीन पीठ युक्त सोभै हैं । ऐसै जिनालयका वर्णन जाननां ॥ १०१४ ॥

इतिश्री नेमिचंद्राचार्यविरचित त्रिलोकसारमें छटा

नरतिर्यग्लोकका अधिकार समाप्त भया ॥ ६ ॥



मूलग्रंथका ह्य वक्तव्य ।

आगैं ग्रंथका अंत विषै मंगल करनैकौं सर्व जे सर्वज्ञके प्रतिबिंब तिनकौं वंदना करै हैं;—

जिणासिद्धाणं पडिमा अकिट्टिमा किट्टिमा दु अदिसोहा ।

रंयणमया हेममया रूपमया ताणि वंदांमि ॥ १०१५ ॥

जिनसिद्धानां प्रतिमा अकृत्रिमाः कृत्रिमास्तु अतिशोभाः ।

रत्नमया हेममया रूप्यमया ताः वंदे ॥ १०१५ ॥

अर्थ—अकृत्रिम तौ अनादि निधन अर कृत्रिम करी हुई ऐसी रत्नमय वा सुवर्णमय रूपामय जे अरहंतनिकी अर सिद्धनिकी प्रतिमा तिन बिंबनिकौं मैं बंदौं हौं ॥ १०१५ ॥

बहुरि अंत संबंधी मंगलकै ही अर्थि संख्या करि संयुक्त जे समुदायरूप जिन मंदिर तिनकौं नमस्कार करत संता सूत्र कहै हैं;—

कोडी लख सहस्रं अट्टय छप्पण सत्तणउदी य ।

चउसदमेगासीदी गगणगए चेदिए वंदे ॥ १०१६ ॥

कोट्यः लक्ष्याणि सहस्राणि अष्ट षट्पंचाशत् सप्तनवतिः च ।

चतुःशतमेकाशीतिः गगनगतानि चैत्यानि वंदे ॥ १०१६ ॥

अर्थ—आठ कोडि छप्पन लाख सत्याणवै हजार च्यारिसै इन्धासी लोकाकाशविषै प्राप्त जे चैत्यालय तिनकौं मैं बंदौं हौं । यह भवनवासी वैमानिक देव अर मेरु आदि मध्य लोकसंबंधी चैत्यालयनिकी संख्या जाननी । ज्योतिष्क व्यंतरसंबंधी चैत्यालय असंख्यात हैं तातें गणना विषै न कहे ॥ १०१६ ॥

अब इस शास्त्रकौं समाप्त करता संता आचार्य अंतसंबंधी मंगलकै ही अर्थि त्रिलोकविषै प्राप्त जे अकृत्रिम वा कृत्रिम जिन मंदिर संबंधी वंदना करत संता गाथा सूत्र कहै हैं;—

तिहुयणजिणंदगेहे अकिट्टिमे किट्टिमे तिकालभवे ।

वणकुमारविडंगामरणरखेचरवंदिए वंदे ॥ १०१७ ॥

त्रिभुवनजिनेंद्रगेहान् अकृत्रिमान् कृत्रिमान् त्रिकालभवान् ।

वानकुमारवियुतांगामरणरखेचरवंदितान् वंदे ॥ १०१७ ॥

अर्थ—अकृत्रिम अर कृत्रिम अतीत अनागत वर्तमान त्रिकाल संबंधी जे व्यंतर भवनवासी ज्योतिष्क कल्पवासी मनुक्ष विद्याधरनि करि वंदित त्रिभुवन स्थित जिनेन्द्र मंदिर तिनकौं मैं बंदौं हौं ॥ १०१७ ॥

अंतसंबंधी मंगलकै अनंतरि ग्रंथकर्ता है सो अपनी उद्धतताकौं परिहरै हैं;—

इदि नेमिचंदमुणिणा अप्पसुदेणभयणंदिवच्छेण ।

रइयो तिलोयसारो खमंतु तं बहुसुदाइरिया ॥ १०१८ ॥

इति नेमिचंद्रमुनिना अल्पश्रुतेनाभयनंदिवत्सेन ।

रचितस्त्रिलोकसारः क्षमंतु तं बहुश्रुताचार्याः ॥ १०१८ ॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुतज्ञानका धारी अर अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तीका वत्स शिष्य अंसा नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यहु त्रिलोकसार नामा ग्रंथ रच्या है । ताकौ बहुश्रुत धारक-आचार्य है ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करौ ॥ १०१८ ॥

संस्कृत टीकाकारका वक्तव्य ।

अब तिस त्रिलोकसारकौ अलंकार रूप जानै किया अंसा माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अपनी उद्धतताकौ त्यागै है;—

गुरुणोमिचंद्रसम्मदकादिवयगाहा तहिं तहिं रइदा ।

माहवचंद्रतिविज्जेणिणमणुसरणिज्जमज्जेहिं ॥ १ ॥

गुरुनेमिचंद्रसमतकतिपयगाथाः तत्र तत्र रचिताः ।

माधवचंद्रत्रैविद्येनेदमनुसरणीयमार्यैः ॥ १ ॥

अर्थ—अपना गुरु नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती तिनके सम्मत लिणं उपदेश लिणं अथवा ग्रंथकरता नेमिचंद्र सिद्धांती देव तिनके अभिप्रायका अनुसार लिणं केती एक गाथा इस ग्रंथविषै माधवचंद्र त्रैविद्य देव करि भी तहां तहां रची है । अंसा भी आर्य जे प्रधान आचार्य तिन करि अनुसारि जाननां ॥ १ ॥

अब ग्रंथका अलंकार रूप सोधनादि रूप कर्ता श्री माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अंतसंबंधी मंगल करतसंता अपनां अभीष्ट फलकी यांचा करै है;—

अरहंतसिद्धआइरियुवज्जयासाहु पंचपरमेष्ठी ।

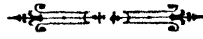
इय पंचणमोकारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ २ ॥

अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः पंचपरमेष्ठिनः ।

इति पंचनमस्कारः भवे भवं मम सुखं ददतु ॥ २ ॥

अर्थ—च्यारि वाति कर्म रहित अनंत चतुष्टय युक्त अरहंत, अर सर्व कर्म रहित कृतकृत्य दशाकौ प्राप्त सिद्ध, अर मुनि संघ विषै प्रधान आचार्य, अर ग्रंथाभ्यास अधिकारी उपाध्याय, अर सामान्यमुनि साधु ए पंच परमेष्ठी है । आत्माके सर्व प्रकार हितसाधक परम इष्ट है तातै इनकौ परमेष्ठी कहिए । इस प्रकार इन पंच परमेष्ठिनिका नमस्काररूप जो पंच नमस्कार मंत्र है सो भव भव विषै मोकहुं सुख देहु । सुख नाम निराकुलताका है निराकुलता वीतरागभावनितै हो है । तातै परमवीतराग भावरूप शुद्धात्मस्वरूप जनित परम आनंदकी प्राप्ति करहु ॥ २ ॥

भाषाटीकाकारका वक्तव्य ।



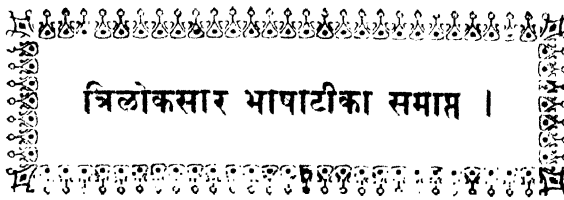
कवित्त—ग्रंथ त्रिलोकसारकी भाषाटीका पूरन भई प्रमान,
याके जानै जानतु है सब नानारूप लोक संस्थान ।
तातै ध्यावै धर्म ध्यानकौ पावै सकल प्रकाशक ज्ञान,
पाय त्रिलोकसार गुणमहिमा अविचल पद पईए निरवान ॥ १ ॥

चौपाई—वाचक शब्द वाच्य है अर्थ, इनिकै यहू संबंध समर्थ ।
इनिका कर्ता नाहीं कोय, जानै इनिको ज्ञाता होय ॥ २ ॥

सवैया इकतिसा ।

पृथ्वी शब्द पृथ्वी अर्थ इनके संबंध ऐसो पृथ्वी शब्द जाननेतै पृथ्वी अर्थ जानिए,
ऐसै सांचे शब्द अर सांचे अर्थ जगमांहि तिनिके संबंध सो स्वभाव ही तै मानिए ।
तातै इस ग्रंथ मांहि जेते शब्द जेते अर्थ तिनको नवीन कर्ता कोऊ नाहि मानिए,
तिनको जो जानै अर भापै जोरि शब्दतिकौ व्यवहारमात्र सो तौ कर्ता पहिचानिए ॥ ३ ॥
ऐसी परिपाटी मांहि इहां वर्धमान जिन भए तिनहनै तिनिको स्वरूप जान्यौ है,
इच्छा विन दिव्यध्वनि तिनके प्रगट भयी ताकरि स्वरूप किछू तैसो ही बखान्यौ है ।
गोतम गणेश मुनि ऐसो उपकार कीनौ ताको अनुसार सब ग्रंथनिमें आन्यौ है,
तिनिकरि ज्ञानवंत होइ छोटे ग्रंथ जोरि किनिहनै नाना भांति अर्थ प्रमान्यौ है ॥ ४ ॥

इति श्रीपंडितवर टोडरमल्लजीकृत त्रिलोकसारकी भाषावचनिका समाप्त हुई ॥



त्रिलोकसार भाषाटीका समाप्त ।

